सचित्र

समवायांग सूत्र

श्रुताचार्य प्रवर्त्तक श्री अमर मुनि

ILLUSTRATED

SAMVAYANG SUTRA

Shrutacharya Pravartak
Shri Amar Muni

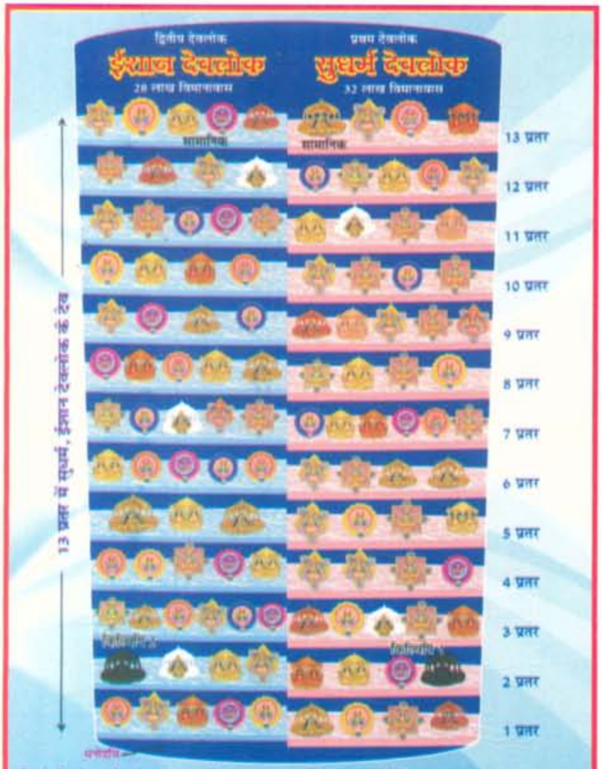

समवायांग सूत्र

'अध्यात्म' सुप्त चेतना को जाग्रत करने का माध्यम है। 'जैन अध्यात्म' जैनागमों में गुम्फित है। जैनागम श्रमण भगवान महावीर स्वामी की विमलवाणी का संकलित रूप है जिसे गणधरों ने सूत्रबद्ध किया है। जैनागमों के अध्ययन-अध्यापन से जीवन में प्रच्छादित अज्ञान और मोहरूपी गहन अन्धकार तिरोहित होता है तथा आत्मा का प्रकाश प्रदीप्त होता है।

'समवायांग सूत्र' जैनागम के बारह अंगों में चतुर्थ अंग के रूप में परिगणित है। सम, अवाय और अंग इन तीन शब्दों से मिलकर बना समवायांग का अर्थ-अभिप्राय है - प्रतिनियत संख्या वाले पदार्थों का सम-सम्यक् प्रकार से अवाय अर्थात् निश्चय या परिज्ञान कराने वाला अंग। जैनागमों में समवायांग सूत्र का वैशिष्ट्य बिम्बित है। इस सूत्र के माध्यम से जैनधर्म-दर्शन व संस्कृति की प्राचीनता, ऐतिहासिकता को सरलता व सहजता के साथ समझा जा सकता है। इसमें भगवान महावीर स्वामी द्वारा प्ररूपित तत्त्व विज्ञानादि विविध विषयों के साथ एक से लेकर सौ स्थानक-समवायों में तथा कुल 677 सूत्रों में प्रभावक रूप से सविस्तार वर्णित हैं।

SAMVAYANG SUTRA

Spirituality is the medium to awaken the inert consciousness. Jain spirituality is engraved in Jain Agamas. Jain Agamas are the compiled form of the discourses and sermons of Bhagwan Mahavir Swami and composed by Gandhar later on. The dense darkness of delusion and arrogancy covering ones life gets removed through the study and teaching of Jain Agamas and the glow of "SELF" is manifested.

Samvayanga Sutra is fourth one among the twelve canons. The word Samvayang consists of three words namely 'Sam', Avaya and Inga. Samvayanga has got its shape means the canon that gives the knowledge of 'Avaya' righteously and of matter which has the fixed numerical position. The speciality of 'Samvayanga Sutra' has been reflected in Jain Agamas. The chronicles and history of Jain Philosophy and culture can be understood by the study of this Agams. The basic principles propounded by Bhagwan Mahavir Swamy alongwith various science like subjects from number one to one hundred as "Sthanak Samvaya" in 677 sutras have been explained elaborately and fluently.

तीर्थंकर

चक्रवर्ती

बलदेव

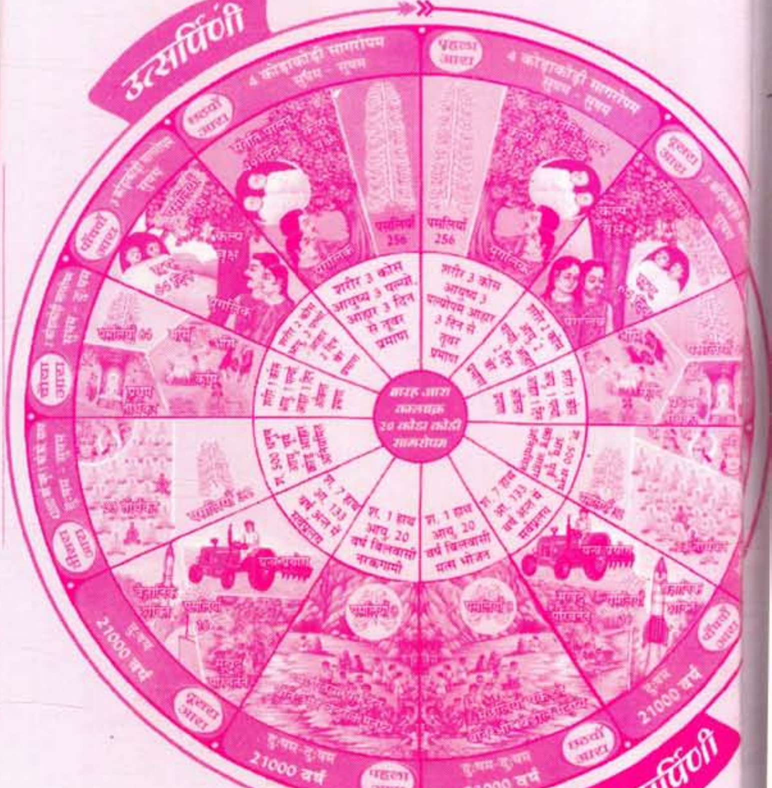

वासुदेव

प्रतिवासुदेव

सचित्र

समवायाङ्ग सूत्र

श्रुत आचार्य प्रवर्त्तक श्री अमर मुनि

ILLUSTRATED

SAMVAYANG SUTRA

Shrut Acharya Pravartak Shri Amar Muni

।।卐।। श्री वर्धमानाय नमः।।卐।।

राष्ट्र सन्त उत्तर भारतीय प्रवर्तक अनंत उपकारी गुरूदेव भण्डारी प.पू. **श्री पद्म चन्द्र जी म.सा.** की पुण्य स्मृति में साहित्य सम्राट श्रुताचार्य पूज्य प्रवर्तक वाणी भूषण गुरूदेव प.पू. **श्री अमर मुनि जी म.सा.** द्वारा संपादित एवं पद्म प्रकाशन द्वारा विश्व में प्रथम बार प्रकाशित (सचित्र, मूल, हिन्दी-इंगलिश अनुवाद सहित) जैनागम सादर सप्रेम भेंट।

भेंटकर्त्ता : श्रुतसेवा लाभार्थी सौभाग्यशाली परिवार

श्रीमती मीराबाई रमेशलालजी लुणिया
(समस्त परिवार)

सचित्र

समवायाङ्ग सूत्र

(मूल पाठ, हिंदी-अंग्रेजी अनुवाद,
विवेचन एवं रंगीन चित्रों सहित)

प्रधान सम्पादक:

उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक भण्डारी
श्री पद्मचन्द्र जी महाराज के सुशिष्य

श्रुताचार्य प्रवर्त्तक श्री अमर मुनि जी महाराज

प्रकाशक

पद्म प्रकाशन, पद्म धाम,

नरेला मण्डी, दिल्ली-110040

श्रुताचार्य उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक महाश्रमण आराध्य गुरुदेव

श्री अमर मुनि जी महाराज

की पावन स्मृति में

सचित्र आगम माला का पच्चीसवां पुष्प

- **सचित्र समवायांग सूत्र**
- प्रधान संपादक : श्रुताचार्य प्रवर्त्तक श्री अमर मुनि जी महाराज
- संपादक : श्री वरुण मुनि जी महाराज 'अमर शिष्य' डबल एम.ए.
  : साहित्यकार श्री श्रीचन्द जी सुराणा 'सरस'
- सह-संपादक : युवा साहित्यकार श्री विनोद शर्मा
- अंग्रेजी अनुवादक : पद्मरत्न सुश्रावक श्री राजकुमार जैन, मधुबन, दिल्ली
  : सुश्रावक श्री एम. एल. जैन, रोहिणी, दिल्ली
- चित्रांकन : श्री संजय सुराणा, आगरा
  : श्री अनुज के. भटनागर, विकासपुरी, दिल्ली

- प्रथमावृत्ति : 1 मई, 2013
- प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान : श्री महेन्द्र जैन (अध्यक्ष) (मो.) 9810027225
  पद्म प्रकाशन, पद्म धाम, नरेला मण्डी, दिल्ली-40
- मुद्रक : कोमल प्रकाशन, प्रेमनगर दिल्ली-8
  मो.: 9210480385
- मूल्य : 500 रुपये मात्र

सर्वाधिकार : पद्म प्रकाशन, दिल्ली

आगम आप्त पुरूष
सरस्वती पुत्र
श्रुताचार्य
साहित्य सम्राट
पूज्य प्रवर्त्तक
महाश्रमण गुरुदेव
श्री अमर मुनि जी
महाराज की पावन स्मृति में
सादर सविनय

समर्पण

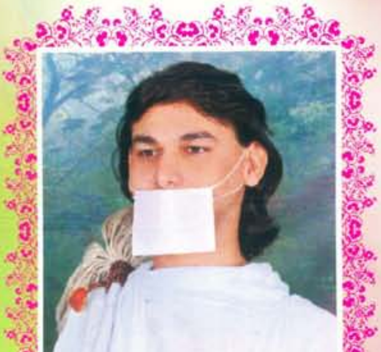

ललित लेखक
वरूण मुनि
'अमर शिष्य'

आगम प्रकाशन के आधार स्तंभ

श्रमणी सूर्या उप प्र. महासती
डॉ. श्री सरिता जी महाराज

परम गुरूभक्त श्री सुभाष जी शशि जैन
(विवेक विहार, दिल्ली)

दानवीर स्व. ला. फकीर चन्द जी राम देवी जैन
(मानसा)

पदम रत्न सुश्रावक श्री राज कुमार जी जैन
(मधुबन, दिल्ली)

विद्वद मनीषी श्री मुन्ना लाल जी जैन
(रोहिणी, दिल्ली)

आगम प्रकाशन में परम सहयोगी गुरु भक्त परिवार

दानवीर शिरोमणि श्री ज्ञाननंदन जी-
श्रीमती अंगूरी देवी जैन
(अरिहन्त नगर, दिल्ली)

परम गुरू भक्त श्री आदीश जी- संगीता जैन
(अरिहन्त नगर, दिल्ली)

युवा रत्न श्री रवि जी - बबिता जैन
(अरिहन्त नगर, दिल्ली)

परम गुरू भक्त श्री अंकित जी
स्वाति जैन
(गुड़गांव)

नन्हे गुरू भक्त
मास्टर कुनाल जैन - सौम्या जैन
(अरिहन्त नगर, दिल्ली)

युवा गुरू भक्त
श्री अंकुश जैन
(अरिहन्त नगर, दिल्ली)

श्रुत सेवा में समर्पित गुरु भक्त

उदारमना श्री लेखराज जी जैन
(मंडी गोविंदगढ़)

परम गुरुभक्त श्री सुरेश जी - त्रिशला जैन
(हलालपुर वाले, दिल्ली)

परम गुरुभक्त प्रो. श्री अनिल जी - अदीति सूद
(मोगा)

परम गुरुभक्त श्री पवन जी - सुमन बांसल
(सावन पार्क, पानीपत)

परम गुरुभक्त डॉ. जगमोहन जी
निर्मल गोयल (खन्ना)

ILLUSTRATED

SAMVAYANG SUTRA

(Original text, Hindi-English translation, Exposition alongwith coloured pictures)

Chief Editor

Disciple of Uttar Bharat Pravartak Bhandari

Shri Padmachand Ji Maharaj

Shrutaacharya Pravartak

Gurudev Shri Amarmuni Ji Maharaj

Publisher:

Padma Prakashan, Padma Dham,

Narela Mandi, Delhi–110040

In Loving memory of Uttar Bharat Pravartak

Gurudev Shri Amar Muni Ji Maharaj

in Illustrate Series of Agams Twenty Fifth

- **Sachitra Samvayang Sutra**
- *Chief Editor* : Shrutaacharya Pravartak Shri Amar Muni Ji Maharaj
- *Editor* : Shri Varun Muni JI Maharaj 'Amar Shishya' Double M.A.
  : Shrichand Ji Suranaa 'Saras'
- *Co-editor* : Sh. Vinod Sharma
- *English Translation* : Padamratan Sh. Rajkumar Jain, Madhuban, Delhi
  : Sh. M. L. Jain, Rohini, Delhi
- *Illustration* : Sh. Sanjay Surana, Agra
  : Sh. Anuj K. Bhatnagar, Vikaspuri, Delhi
- *First Edition* : 1 May, 2013
- *Publisher* : Mahender Jain, (President–9810027225)
  Padma Prakashan, Padma Dham, Narela Mandi
  Delhi–110 040
- *Printer* : Komal Prakashan, Prem Nagar, Delhi-110008
  (M) : 9210480385
- *Price* : Five Hundred Rupees Only

© (All rights reserved : Padma Prakashan, Delhi)

प्रकाशकीय

"सचित्र समवायांग सूत्र" उत्तरभारतीय प्रवर्तक श्रुताचार्य गुरुदेव श्री अमरमुनि जी महाराज के संपादकत्व में प्रकाशित होने वाला **"पद्म प्रकाशन"** का पच्चीसवां आगम पुष्प है। विगत वर्ष दिसम्बर महीने में चौबीसवें आगम पुष्प के रूप में **"सचित्र आवश्यक सूत्र"** का प्रकाशन संपन्न हुआ था।

अतीव खेद का विषय है कि आराध्य गुरुदेव पूज्य प्रवर्तक श्री जी स्वरचित इस आगम पुष्प को मुमुक्षु पाठक वर्ग को अपने कर-कमलों द्वारा अर्पित नहीं कर पाये। दिनांक १३.०२.१३ को गुरुदेव स्वर्ग सिधार गए। उनके इस प्रकार अदृश्य में विलीन होने से समग्र जैन जगत आहत है। परंतु यह संतोष का विषय है कि श्रद्धेय गुरुदेव ने अपने कर-कमलों द्वारा सचित्र बत्तीसी को एक स्वरूप दिया है। आराध्य गुरुदेव के अदृष्ट आशीष से हम उन द्वारा संकल्पित - रचित इस श्रुतयज्ञ को संपन्न करने में सफल होंगे ऐसा हमारा सुदृढ़ विश्वास है।

श्रद्धेय श्रुताचार्य श्री के शिष्य सत्तम श्रुतनिष्ठ युवामनीषी श्री वरुण मुनि जी महाराज की जंबू-जिज्ञासा भी हृदय को आंदोलित करने वाली है। आगम-संपादन-प्रकाशन कार्य में इनकी तत्परता समकालीन युवा मुनियों की पंक्ति में इन्हें सबसे अग्रिम पायदान पर प्रतिष्ठित करती है।

अनन्य श्रुतनिष्ठ शिष्य सत्तम श्री वरुण मुनि जी म. के निर्देशन-संपादन में सूत्रकृतांग, प्रज्ञापना एवं निशीथ सूत्र का कार्य भी द्रुत गति से प्रगतिमान है। श्रद्धेय गुरुदेव की पावन प्रेरणा से प्रतिष्ठित **"पद्म प्रकाशन"** इस आगम प्रकाशन अभियान में पूर्णतः समर्पण भाव से संलग्न है। हमारे इस समर्पण का सारा श्रेय भी स्व. आराध्य गुरुराज को ही है।

-महेन्द्र जैन
अध्यक्ष : पद्म प्रकाशन
पद्म धाम, नरेला मण्डी (दिल्ली)

Publisher's Note

The illustrated "Samvayanga Sutra" is the twenty fifth "Agama flower" of Padam Prakashan "to be published under the editorship of His Excellency" North India's Parvartak "Shruta-Acharya Reverend Gurudev Shri Amar Muni Ji Maharaj. In the month of December last year the publication of "Illustrated Avashayaka Sutra" the twenty fourth "Agama Flower" had been released.

It is a matter of grave disappoint for all the disciples of Rev. Pravartak Gurudev Sh. Amar Muni Ji that we could not publish his magnum-opus, which contain the nactor of the highest form spirituality, which we can use in our daily life, in its most simple form, as he abode to the heavens on Feb 13, 2013.

But we can take salvo as he already, had painstakingly compiled the enormous volumes of 32 Jain Aqams. All his hindi & English disciples - readers can use his gigantic book as a guide.

The desire of the humble, submissive, dedicated and obedient disciple of Reverend Shri Ji the "SHRUT NISTH" a young monk Shri Varun Muni Ji is also heart touching and heart pleasing. Alongwith the services offered day and night for the betterment of physical health, the readiness and alertness of Sh. Varun Muni Ji is worth seeing for the Agama Publication and Editing. It has established him on the foremost step of the footstep in the line of contemporary young monks.

In the edit-direction of this great "Shrut Nisth" disciple of his reverend Guruji the editing work of "Shrutkritanga, Pragyapana and Nishith Sutra" is also expeditdly progressing. The "Padam Prakashan" established with the auspicious and pious inspirations of Reverend Gurudev ji is engaged with its full dedication in the expedition of Publication of this Agama. The entire and full credit goes to Late Shree Gurudev ji of our perfect dedication.

Mahender Jain
President
Padam Prakashan, Padam Dham,
Narela Mandi, Delhi

सम्पादकीय

'अध्यात्म' कर्म-कषायों के कल्मष को प्रक्षालित करने में अद्‌भुत शक्ति रखता है, अस्तु यह जीवन प्रदायिनी संजीवनी है। लेकिन आज मानव इस संजीवनी को छोड़कर भौतिक सम्पदा के पीछे भाग-दौड़ कर रहा है। उसकी यह भाग-दौड़ वैसी ही है जैसे कोई पारस पत्थर को महत्त्व न देता हुआ स्वर्ण को पाने में अपनी सुध-बुध खो बैठता है। उसका यह निरर्थक प्रयास मृगमरीचिकावत् है जहाँ कुछ पाना नहीं होता है अपितु समस्त ऊर्जा व्यर्थ-गर्त में चली जाती है। मानव जीवन जो परम पुरुषार्थ से मिला है वह ऐसी ही भाग-दौड़ में निरर्थक बीतता चला जाए तो इससे बड़ी भूल और क्या हो सकती है? मानव यह भूल अपनी सुप्त चेतना के कारण आज से नहीं, युगों-युगों से करता आ रहा है और इस प्रकार चतुर्गति में भ्रमण-परिभ्रमण करता हुआ दुःखी व संतप्त है।

'अध्यात्म' सुप्त चेतना को जाग्रत करने का माध्यम है। 'जैन अध्यात्म' जैनागमों में गुम्फित है। जैनागम श्रमण भगवान महावीर स्वामी की विमलवाणी का संकलित रूप है जिसे गणधरों ने सूत्रबद्ध किया है। जैनागमों के अध्ययन-अध्यापन से जीवन में प्रच्छादित अज्ञान और मोहरूपी गहन अन्धकार तिरोहित होता है तथा आत्मा का प्रकाश प्रदीप्त होता है।

'समवायांग सूत्र' जैनागम के बारह अंगों में चतुर्थ अंग के रूप में परिगणित है। सम, अवाय और इंग इन तीन शब्दों से मिलकर बना समवायांग का अर्थ-अभिप्राय है - प्रतिनियत संख्या वाले पदार्थों का सम-सम्यक् प्रकार से अवाय अर्थात् निश्चय या परिज्ञान कराने वाला अंग। जैनागमों में समवायांग सूत्र का वैशिष्ट्य बिम्बित है। इस सूत्र के माध्यम से जैनधर्म-दर्शन व संस्कृति की प्राचीनता, ऐतिहासिकता को सरलता व सहजता के साथ समझा जा सकता है। इसमें भगवान द्वारा प्ररूपित तत्त्व विज्ञानादि विविध विषयों के साथ एक से लेकर सौ स्थानक-समवायों में तथा कुल 677 सूत्रों में प्रभावक रूप से सविस्तार वर्णित है। समवायांग सूत्र में समवाय-स्थानकों में संख्यापरक पदार्थों का सुन्दर ढंग से विवेचन हुआ है। जैसे-एकस्थानक-समवाय में एक संख्या वाले पदार्थों का विवेचन, द्विस्थानक-समवाय में दो संख्या वाले पदार्थों का विवेचन आदि-आदि। यहाँ समस्त विवेचन या कथन 'नय' की अपेक्षा से प्रतिपादित है। उदाहरण के लिए प्रथम स्थानक-समवाय में जीव, अजीव आदि तत्त्वों के प्रतिपादन में आत्मा, अनात्मा, दण्ड, अदण्ड, क्रिया, अक्रिया, लोक, अलोक, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, पुण्य, पाप, बन्ध, आस्रव, संवर, वेदना, निर्जरा आदि को अनेक होते हुए भी संग्रहनय की दृष्टि से एक-एक बताया गया है। इसी प्रकार एक-एक लाख योजन वाले जम्बूद्वीप, पालक, यान, विमान, एक-एक तारा वाले तीन नक्षत्र-आर्द्रा, चित्रा,

स्वाति, देवों की स्थिति के वर्णन के साथ, आहार-श्वासोच्छ्वास, सिद्धि आदि का वर्णन भी एक-एक संख्या रूप में किया गया है। इसी प्रकार द्वितीय, तृतीय से लेकर शत पर्यन्त स्थानक-समवायों में जो विषय व्यवहृत हैं उनका संक्षित प्रमाण व परिणाम दोनों रूपों में परिलक्षित है। इससे अध्ययन करने वाले को पदार्थों के स्वरूपादि को क्रमरूप से व वैज्ञानिक ढंग से समझने में जहाँ सुगमता रहती है वहाँ दुरूह विषयों का भी उसे बोध होने लगता है। इस दृष्टि से समवायांग सूत्र का अध्ययन-अंनुशीलन उपयोगी एवं उपादेयी है।

४५० सूत्रों में निबद्ध शत स्थानक-समवाय के उपरान्त अनेकोत्तरिका वृद्धि-समवाय साठ सूत्रों में (सूत्र ४५१ से ५१०) तीर्थंकर, देवलोक, पर्वत, चक्रवर्ती, कुलकर आदि महत्त्वपूर्ण विषय जिनकी संख्या सार्धशत से कोटा-कोटि पर्यन्त बतायी गई है, व्यवहृत है। तदनंतर अध्येयताओं व अनुसंधित्सुओं के लिए द्वादशांग गणि-पिटक सूत्र ५११ से ५७४ तक अर्थात् ६३ सूत्रों में आचारांग सूत्र, सूत्रकृतांग सूत्र, स्थानांग सूत्र, समवायांग सूत्र, व्याख्याप्रज्ञप्ति, ज्ञाताधर्मकथा, उपासकदशा, अन्तकृद्दशा, अनुत्तरौपपातिकदशा, प्रश्नव्याकरण, विपाकश्रुत एवं दृष्टिवाद के बारे में भी संक्षिप्त रूप से वर्णन हुआ है। इसके उपरान्त ५२ सूत्रों में (सूत्र संख्या ५७६ से ६२८ तक) जीवाजीव राशियाँ, अनुत्तरोपपातिक देव, नारकजीव, रत्नप्रभा आदि पृथ्वियों प्रभृति विविध विषय निरूपित हैं। अन्त में (सूत्रांक ६२९ से ६७७ तक) ४८ सूत्रों में अतीत-अनागतकालिक महापुरुषों का विवेचन परिलक्षित है।

इस प्रकार 'समवायांग सूत्र' में स्थानक-समवाय स्तर पर अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों का वर्णन हुआ है जिनका अध्ययन कर अध्येयता निश्चित रूप से ज्ञानार्णव में अवगाहन कर अपने जीवन को सार्थक करने के लिए सम्प्रेरित होगा। इसके अतिरिक्त महत्त्वपूर्ण विषयों को रोचक बनाने के लिए तथा अधिक स्पष्ट रूप से समझने के लिए विषयानुरूप रंगीन भावपूर्ण चित्रों को भी संजोया गया है। हिन्दी भावानुवाद के साथ-साथ अंग्रेजी अनुवाद की प्रस्तुति भी प्रस्तुत आगम के प्रकाशन की अभिनव विशेषता कही जा सकती है, जो आधुनिक नई पीढ़ी के स्वाध्यायियों के लिए विशेषरूप से परम उपयोगी सिद्ध होगी।

आराध्य गुरुदेव उत्तरभारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द जी म. की प्रेरणा-प्रकाश में प्रारंभ हुआ यह श्रुत-यज्ञ अपनी संपन्नता की दिशा में धीरे-धीरें आगे बढ़ रहा है। स्वास्थ्य-कारणों से इस कार्य की गति मन्थर तो अवश्य हुई है परन्तु अवरुद्ध नहीं हुई। इस का पूरा श्रेय मेरे गुरुदेव के आशीष को ही है।

साथ ही प्रिय सुशिष्य श्रुत-सेवा निष्ठ मुनिवर वरुण का सतत अप्रमत्त सहयोग इस कार्य को आगे बढ़ा रहा है। इनकी सेवा, गुरुभक्ति और श्रुतनिष्ठा किसी भी गुरु को संतोष देने वाली है।

इसके अतिरिक्त हिन्दी - अंग्रेजी अनुवादन, संपादन तथा प्रकाशन आदि कार्यों से जुड़े समस्त सहयोगियों को साधुवाद प्रदान करते हुए कलम को विश्राम देता हूं।

-अमर मुनि

(उत्तरभारतीय प्रवर्तक, श्रुताचार्य)

Spirituality has an extraordinary power of purifying the dirt of passion So it is said to be a life giving herb (Sanjivani). But the human being is running after it collecting the physical wealth abandoning this life giving herb. Forgetting himself leaving the touchstone aside he is like trying to grab one gold. This one is his meaningless endeavour as mirage where nothing is achieved but entire energy gets wasted. To take birth as a human being is the outcome of supreme deeds. If it is wasted in gathering the mundane treasure then what graver mistake can be there? This kind of mistake the human being has been committing since innumerable births due to his inert consciousness, so he suffers of pain and miseries and transmigrating in four gati.

Spirituality is the medium to awaken the inert consciousness. Jain spirituality is engraved in Jain Agamas. Jain Agamas are the compiled form of the discourses and sermons of Bhagwan Mahavir Swami and composed by Gandhar later on. The dense darkness of delusion and arrogancy covering ones life gets removed through the study and teaching of Jain Agamas and the glow of "SELF" is manifested.

Samvayanga Sutra is fourth one among the twelve canons. The word Samvayang consists of three words namely 'Sam', Avaya and Inga. Samvayanga has got its shape means the canon that gives the knowledge of 'Avaya' righteously and of matter which has the fixed numerical position. The speciality of 'Samvayanga Sutra' has been reflected in Jain Agamas. The chronicles and history of Jain Philosophy and culture can be understood by the study of this Agams. The basic principles propounded by Bhagwan Mahavir Swamy alongwith various science like subjects from number one to one hundred as "Sthanak Samvaya" in 677 sutras have been explained elaborately and fluently. The numerical subject matters in Sthanak Samvaya of Samvayanga Sutra have been discussed in a beautiful way namely: In Sthanak Samvaya one the subject matter that has only 'one' number has been discussed and in Samvaya Sthanak two the discussion of subject matter that has two members. Here in each

discussion is established with regards of 'Naya' (view point), for example while explaining the natural state of Jeeva and Ajeeva, even having more than one number, the AtamnAnatamn, DandAdand, KriyaAkriya, LokaAloka, DharmastikayaAdharmastikaya, PunyaPaapa, Bandh, Vedana, Niyara etc., have been stated one each according to the synthetical viewpoint (Sangrahnaya). In the same way along with the description of Jambu continent of one lakh yojana, Paalakyan, celestial vehicles, three constellations namely Adra, Chitra and Swati of one star each, the life span of celestial being, the description of ford, inspiration and Sidhi in the form of one each has been made. Thus, from second and third to one hundredth Sthanak Samvaya the subject matter that is to be narrated both in proof and outcome is explained briefly. Where easiness exists to understand scientifically and systematically the subject matter for a reader even the difficult subject matter, too, becomes cognitive for him. Accordingly it is the study of Samvayang Sutra is very useful and beneficial. After the hundredth Sthanak Samvaya, those have been written in 450 sutras, manifold increasing numbers samvaya in sixty sutras from 451 to 510 the important description of Ford-makers, heavens, mountains, supreme lords, kulkar etc., whose numbers are from 150 to Kotakoti (muthn millions) have been narrated.

It is just practical. After it the brief description of Acharanga Sutra, Sutrakritanga Sutra, Sthananga Sutra, Samvayanga Sutra, Vyakhyapragpti, Gyatadharamkathanga, Upashakdasha, Ankritdasha, Anuttrapapatikdasha, Prashan-Vyakaran, Vipak Sutra and Dristhivad of these twelve canons "Ganipitaka" Sutra No. 511 to 574 has been made for the share of readers and researchers. After it the description of subject matters related to Jeeva-Ajeeva, Rasi, Anottrapapatik celestial beings, the hellish beings, the Ratanprabha and others hells has been made in Sutra No. 576, 628. At the end in Sutra No. 629 to 677 total in 48 Sutra.

The great persons (Shlagha-Purush) of past and future have been described. Thus, many important subject matters at Sthanak Samvaya level in "Samvayanga Sutra" have been narrated. By virtue of reading these Sutras and making his life meaningful the reader will be inspired. Besides the subject matters interacting and to apprehend more precisely the colourful sentimental pictures have been illustrated subject matter wise. Alongwith the Hindi translation English translation can be stated as a new speciality of this publication. It will make Agamas of great use and benefit for readers of modern new generation.

This "Shrut Yagya" was started in the brightness of the motivated light of reverend Gurudev Uttarbhartiya Pravartak Bhandari Shri Padamchand Ji Maharaj and it is gradually progressing ahead towards its completion. Due to the health problems the publication work of Agamas rather progressed slowly but it now not held up. All credit goes to the blessing of my reverend Gurudev Ji.

The continuous and careful co-operation of my dear and affectionate disciple Shrut Sevabhavi Munivar Varun in carrying on this work ahead. His services and devotion towards his gurudeva and shrut integrity is a matter of satisfaction to any Guru.

Besides it, I cordially bless all the persons who are associated with the publication, translation in Hindi and English and in any kind of editing job. Blessing them I stop my writing.

- Amar Muni
(Uttarbhartiya Pravartak Shrutacharya)

हार्दिक कृतज्ञता - ज्ञापन

श्रमण भगवान महावीर द्वारा प्ररूपित द्वादश अंगों में ''समवायांग सूत्र'' का चतुर्थ स्थान है। इस सूत्र में जीव-अजीव आदि समस्त पदार्थों का संख्याक्रम एक से शुरू करके कोटानुकोटि संख्या पर्यंत वर्णन हुआ है। इसमें द्रव्य दृष्टि से जीव, अजीव, धर्म, अधर्म आदि द्रव्यों, क्षेत्र दृष्टि से लोक, अलोक, सिद्धालय आदि क्षेत्रों, काल की दृष्टि से समय, आवलिका, मुहूर्त्त, पल्योपम, सागरोपम, उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी एवं पुद्गल परावर्तन तक काल के विविध परिमाणों और भाव की दृष्टि से ज्ञान, दर्शन, चारित्र आदि जीव के भावों तथा वर्ण, गंध, रस, स्पर्श आदि अजीव के भावों का कोष शैली में निरूपण हुआ है। कलेवर की दृष्टि से यह आगम भले ही छोटा है, परन्तु विषय बहुलता की दृष्टि से यह एक बृहद् आगम है। शेष इकतीस आगमों में जिन-जिन तत्वों और भावों का संक्षिप्त और विस्तृत वर्णन हुआ है उन समस्त तत्वों और भावों को संख्याक्रम से इस आगम में सूत्रबद्ध किया गया है। इस दृष्टि से इस आगम को शेष समस्त आगमों की आधारभूमि अथवा आधारशिला कहा जा सकता है।

समवायांग सूत्र एक महत्वपूर्ण आगम है। इसके विषय को हृदयंगम करना सामान्य पाठकों के लिए सरल नहीं है। विशिष्ट मेधावी साधक ही इस आगम की विषयवस्तु को सम्यक् रूप से हृदयंगम कर सकता है। देवलोकों में विराजित आराध्य गुरुदेव उत्तरभारतीय प्रवर्तक श्रुताचार्य पूज्य श्री अमर मुनि जी महाराज ने प्रस्तुत सूत्र का बारीकी से श्रवण-मनन-अध्ययन-अध्यापन कर इसका अनुवादन प्रस्तुत किया है।

हमारे लिए यह अत्यंत कष्टप्रद और निराशाजनक है कि गुरुदेव के सशरीर मौजूदगी में हम इस ग्रंथ को पुस्तक रूप में प्रस्तुत नहीं कर पाये। दिनांक १३.२.२०१३ को आराध्य गुरुदेव अपनी लोक यात्रा संपन्न कर परलोक सिधार गए। परंतु यह किंचित् संतोषप्रद है कि गुरुदेव द्वारा रचित विशाल श्रुतराशि हमारे पास है। गुरुदेव का यह महान अवदान शताब्दियों तक हिन्दी और अंग्रेजी के पाठकों का पथ पाथेय बना रहेगा।

गुरुदेव की इस आगम-संपादन यात्रा का मैं भी एक छोटा-सा सहयात्री हूं। इस यात्रा-पथ पर

गमन जितना-क्लिष्ट और दुर्गम रहा है, उतना ही सरस और अंत: तोष प्रदाता भी रहा है। आगम के एक-एक अक्षर, एक-एक पद और एक-एक सूत्र का अर्थ-विश्लेषण गुरुदेव ने किया, जिसे मैंने कलमबद्ध किया। आराध्य गुरुदेव द्वारा व्याख्यायित समग्र सामग्री को यदि यथावत् प्रस्तुत किया जाता, तो ग्रन्थ का आकार बहुत विशाल हो जाता। श्रद्धेय गुरुदेव स्वयं चाहते थे कि ग्रन्थ का आकार संक्षिप्त रहे। अनुवाद में केवल मूल विषय को ही स्पष्ट किया जाए। गुरुदेव श्री की भावना के अनुरूप ही प्रस्तुत आगम की अनुवाद शैली को संक्षिप्त रखा गया है।

अनुवादन-संपादन में समवायांग सूत्र के कई संस्करणों का अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हुआ। परंतु श्रद्धेय युवाचार्य श्री मधुकर मुनि जी म. सा. द्वारा संपादित आगम को ही हमने इस संस्करण का प्रमुख आधार बनाया है। तदर्थ ग्रंथ के संपादक एवं प्रकाशक का हम हृदय से आभार प्रकट करते हैं।

हिन्दी अनुवाद में साहित्य मनीषी डॉ. राजीव प्रचण्डिया अलीगढ़ एवं अंग्रेजी अनुवाद में श्रावकरत्न श्री मुन्नालाल जैन, दिल्ली व पद्मरत्न सुश्रावक श्री राजकुमार जैन, मधुबन दिल्ली का विशेष सहयोग रहा। महानुभाव-त्रय के इस समर्पित सहयोग को ''धन्यवाद'' नामक शब्द की सीमा में आबद्ध कर मैं सीमित नहीं करना चाहूंगा।

चित्रांकन में साहित्य मनीषी श्री संजय सुराणा एवं श्री अनुज भटनागर का कलात्मक सहयोग हृदय को गद्‌गद करने वाला है। टंकण, प्रूफ संशोधन एवं प्रिंटिंग के शेष दायित्वों को श्री विनोद शर्मा (कोमल प्रकाशन) दिल्ली ने अपनी चिरपरिचित शैली में संपन्न किया है। सामग्री संयोजन में युवारत्न श्री सचिन जैन (विश्वा अपार्टमेन्ट) दिल्ली ने पूर्ण तत्परता का निर्वहन कर अपनी गुरुभक्ति का सुंदर परिचय दिया है।

उपरोक्त सभी महानुभावों को आराध्य गुरुराज की ओर से शत-शत अदृष्ट आशीष एवं मेरी ओर से सादर स्नेह।

– वरुण मुनि 'अमर शिष्य'

ACKNOWLEDGEMENT

"Samvayanga Sutra" has the fourth place among the twelve canons propounded by Shraman Bhagwan Mahavir. In this sutra all the substances like animates and inanimates beginning from serial number one to millions have been narrated.

According to the practical view point living and non-living, Dharam and Adharam etc., according to the space view point-cosmos and trans-cosmos, Sidhalaya etc., through the "Kaal" view point-time Avalika, instant time, Palyopama, Sagropama, Ascending time cycle (Utsarpini Kaal), Descending time cycle (Avasarpini Kaal) and upto the transformation of matter (Pudgals), the various measurement of time and the dispositions as knowledge, perception, conduct etc. of beings, the qualities of non-living as—colour, smell, taste and touch etc., have been expounded in numbers style. With regards to the framework of this canon although it is a small one, but in respect of vastness of the subject this canon is a fabulous one. The substances and dispositions that are narrated in brief or elaborate form in the remaining thirty one canons, all those substances and dispositions have been narrated in this canon in the form of "Sutra" in series of numbers. Therefore, according to the above stated view point this canon can be said the foundations stone or basic treatise of all the other Agamas.

Samvayanaga Sutra is an important canon. It is not easy to the general reader to grasp the subject matter of this canon. Only the seeker of extraordinary genius can grasp the subject-matter in the righteous form of this canon. Having completed minutely study, teaching, contemplation and listening "Reverend-Acharya" Pujya Shri Amar Muni Ji has presented its interpretation.

It is a matter of extreme disappointment for us that we could not publish this book during the life time of our Guru as he abode to heaven on February 13, 2013. But it is a matter of some relief that the vast Literature

written by him is with us. This great work shall some as a guide for seveal readers to the redeem in English and Hindi.

I am, just, a little co-traveller of the Editing group of Pujya Gurudev ji of Samvayanga Sutra. Though this journey has been very difficult and unpassable but it has been an elegant and inner satisfaction. Each and every letter, paragraph and aphorism analysed meaning- fully by Gurudev ji, but it was written by me. If the full subject matter that has been explained by Shri Gurudev ji were to be presented then the shape of this canon, its volume would have been a very large. Sh. Gurudeva Ji himself wants that the shape of it should be in brief and only the basic subject-matter should be explained in translation. Respecting the feelings of Gurudev ji the interpretation style of this proposed Agama has been kept in brief form.

During this period I got so many opportunities to go through some of the Editions of "Samvayanga Sutra" to translate and edit it. But we made prominent base to the Agama edited by Supreme venerated, Yuva-Acharya Shri Madhukar Muni Ji for this volume. We express our gratitudes from the core of our hearts of the Publsiher and Editor of this treatise.

Dr. Rajeev Parchandia of Aligarh has helped in Hindi translation, Sh. M.L. Jain of Delhi and Shri Raj Kumar Jain of Madhuvan, Delhi has rendered their special co-operation in producing English Translation. I will not like to bind the dedicating and co-operation of these three great personalities only into the "Thanks giving" limit.

The artistic co-operation of Shri Anuj Bhatnagar of Delhi and Sh. Sanjay Surana of Agra in drawing pictures is excellent and commendable.

The remaining duties of type-writing, proof reading and printing etc. have been accomplished by Sh. Vinod Sharma of "Komal Prakashan", Delhi in his already known style.

Yuva-ratan Sh. Sachin Jain (Vishava-Apartment) Delhi has beautifully shown his great and praise worthy devotion and dedication towards Shri Gurudev Ji in organizing the material.

Myriads Blessings to all these gentlemen of Param Pujya Reverend Gurudev ji and love with honour from my side.

—Varun Muni

'Amar Shishay'

विषयानुक्रमणिका

समवायांग सूत्र 1

पहला समवाय 5

आत्मा, अनात्मा, दंड, अदंड, क्रिया, लोक, अलोक, धर्म, अधर्म, पुण्य, पाप, बन्ध, मोक्ष, आस्रव, संवर, वेदना, निर्जरा। पालक यान विमान, सर्वार्थसिद्धविमान, आर्द्रानक्षद्भत्र, चित्रानक्षत्र, स्वातिनक्षत्र, स्थिति, आहार, श्वासोच्छ्वास, सिद्धि।

दूसरा समवाय 8

दंड, राशि, बन्धन, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

तीसरा समवाय 10

दंड, गुप्ति, शल्य, गारव, विराधना, मृगशिर-पुष्य-ज्येष्ठा-अभिजित-श्रवण-अश्विनी-भरणी-नक्षत्र, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

चौथा समवाय 13

कषाय, ध्यान, विकथा, संज्ञा, बन्ध, अनुराधा-पूर्वाषाढा-उत्तराषाढा नक्षत्र, स्थिति, श्वासोच्छ्वास सिद्धि।

पांचवां समवाय 15

क्रिया, महाव्रत, कामगुण, आस्रवद्वार, संवरद्वार, निर्जरास्थान, समिति, अस्तिकाय, रोहिणी-पुनर्वसु-हस्त-विशाखा-धनिष्ठा नक्षत्र, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

छठा समवाय 19

लेश्या, जीवनिकाय, तप, छाद्मस्थिक समुद्घात, अर्थावग्रह, कृत्तिका-आश्लेषा नक्षत्र, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

सातवां-समवाय 23

भयस्थान, समुद्घात, भ. महावीर की अवगाहना, वर्षधर पर्वत, वर्ष, कर्मप्रकृतिवेदन, मघानक्षत्र, पूर्व-दक्षिण, पश्चिम-उत्तरद्वारिक नक्षत्र-निरूपण, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

आठवां समवाय 26

मदस्थान, प्रवचनमाता, वाणव्यन्तरों के चैत्यवृक्ष, जंबू सुदर्शन, कूटशाल्मली, जम्बूद्वीपजगती, केवलिसमुद्घात, पार्श्वनाथ के गण-गणधर, नक्षत्र, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

नवां समवाय 30

ब्रह्मचर्यगुप्तियाँ, अगुप्तियाँ, ब्रह्मचर्य-अध्ययन, पार्श्वनाथ की अवगाहना, नक्षत्र, तारा-संचार, जम्बूद्वीप में मत्स्यप्रवेश, विजयद्वार, वाण-व्यन्तरों की सुधर्मा सभा, दर्शनावरण की प्रकृतियाँ, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

दसवां समवाय 36

श्रमणधर्म, समाधिस्थान, मन्दर पर्वत, अरिष्टनेमि-अवगाहना, ज्ञानवृद्धिकारी नक्षत्र, कल्पवृक्ष, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

ग्यारहवां समवाय 42

उपासकप्रतिमा, ज्योतिश्चक्र, भ. महावीर के गणधर, मूलनक्षत्र, ग्रैवेयक, मंदर पर्वत, स्थिति श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

बारहवां समवाय 45

भिक्षुप्रतिमा, संभोग, कृतिकर्म, विजया राजधानी, राम बलदेव, मन्दर-चूलिका, जम्बूद्वीपवेदिका, जघन्य रात्रि-दिवस, ईषत्प्राग्भार पृथ्वी, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

तेरहवां समवाय 50

क्रियास्थान, विमानप्रस्तट, जलचरपंचेन्द्रिय जीवों की कुलकोटि, प्राणायुपूर्व की वस्तु, प्रयोग, सूर्यमंडल का विस्तार, स्थिति, श्वासोच्छ्वास आहार, सिद्धि।

चौदहवां समवाय 54

भूतग्राम, पूर्व, जीवस्थान, भरत-ऐरवत-जीवा, चक्रवर्तीरत्न, महानदी, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

पंद्रहवां समवाय 61

परमाधार्मिक देव, नमि अर्हत् की अवगाहना, ध्रुवराहु, नक्षत्र, 15 मुहूर्त के दिन-रात्रि, विद्यानुवादपूर्व के वस्तु, मनुष्य प्रयोग, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

सोलहवां समवाय 67

गाथाषोडशक, कषाय, मन्दर-नाम, पार्श्व की श्रमणसंपदा, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

सतरहवां समवाय 71

असंयम, संयम, मानुषोत्तर पर्वत, आवास पर्वत, चारणगति, चमर का उत्पात पर्वत, मरण, कर्मप्रकृतिवेदन, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

आठरहवां समवाय 77

ब्रह्मचर्य, अरिष्टनेमि की श्रमणसम्पदा, निर्ग्रन्थस्थान, आचारांग-पद, ब्राह्मीलिपि के लेखविधान, अस्तिनास्तिप्रवाद के वस्तु, धूमप्रभा पृथ्वी, उत्कृष्ट रात-दिन, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

उन्नीसवां समवाय 82

ज्ञाता-अध्ययन, जम्बूद्वीप में सूर्य, शुक्र महाग्रह, जम्बूद्वीप, तीर्थकरों का अगारवास, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

बीसवां समवाय 85

असमाधिस्थान, मुनिसुव्रत की अवगाहना, घनोदधि का बाहल्य, प्राणतेन्द्र के सामानिक देव, कर्मस्थिति, प्रत्याख्यानपूर्व के वस्तु, कालचक्र, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

इक्कीसवां समवाय 89

शबल दोष, कर्मप्रकृति, पंचम-षष्ठ आरक का कालप्रमाण, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

बाईसवां समवाय 94

परीषह, दृष्टिवाद, पुद्गल परिणाम, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

तेईसवां समवाय 97

सूत्रकृतांग के अध्ययन, तेईस तीर्थंकरों को सूर्योदयकाल में केवलज्ञान, पूर्वभव में एकादशांगी, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

चौबीसवां समवाय 100

देवाधिदेव (तीर्थंकर), चुल्लहिमवंत-शिखरिजीवा, स-इन्द्र देवस्थान, उत्तरायणसूर्य, गंगा-सिन्धु महानदी, रक्ता-रक्तोदा महानदी, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

पच्चीसवां समवाय 103

पंच यामों की भावनाएँ, मल्लिनाथ की अवगाहना, दीर्घवैताढ्य पर्वत, दूसरी पृथ्वी के नारकावास, आचारांग के अध्ययन, मिथ्यादृष्टि-विकलेन्द्रिय का कर्मप्रकृतिबंध, गंगा-सिन्धु, रक्ता-रक्तवती महानदी, लोकबिन्दुसार के वस्तु, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

छब्बीसवां समवाय 110

दशा-कल्प-व्यवहार के उद्देशनकाल, कर्मप्रकृतिसत्ता, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

सत्ताईसवां समवाय 112

अनगार-गुण, नक्षत्रों से व्यवहार, नक्षत्रमास, सौधर्म-ईशान कल्प की पृथ्वी का बाहल्य, कर्म-प्रकृति, सूर्य का चार, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

अट्ठाईसवां समवाय 115

आचारप्रकल्प, मोहकर्म की सत्ता, आभिनिबोधिक ज्ञान, ईशान कल्प में विमानों की संख्या, कर्मप्रकृतिबन्ध, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

उनत्तीसवां समवाय 122

पापश्रुतप्रसंग, आषाढ आदि मासों में रात्रि-दिवस की संख्या, देवों में उत्पत्ति, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

तीसवां समवाय 125

मोहनीय-स्थान, मंडितपुत्र की श्रमणपर्याय, तीस मुहूर्तों के तीस नाम, अर तीर्थंकर की अवगाहना, सहस्रारेन्द्र के सामानिक देव, पार्श्वनाथ का गृहवास, महावीर का गृहवास, रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकावास, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

इकत्तीसवां समवाय 137

सिद्धों के आदिगुण, मंदरपर्वत, सूर्य का संचार, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

बत्तीसवां समवाय 141

योगसंग्रह, देवेन्द्र, कुन्थु अर्हत् के केवली, सौधर्मकल्प में विमान, रेवती नक्षत्र के तारे, नाट्य के प्रकार, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

तेतीसवां समवाय 146

आसातनाएँ, चमरेन्द्र के भौम, स्थिति, श्वासोच्छ्वास, आहार, सिद्धि।

चौंतीसवां समवाय 155

तीर्थंकरों के अतिशय, चक्रवर्ती-विजय, चमरेन्द्र के भवनावास, नारकावास।

पैंतीसवां समवाय 160

सत्यवचन के अतिशय, कुन्थु अर्हत् की अवगाहना, दत्त वासुदेव की अवगाहना, नन्दन बलदेव की अवगाहना, माणवक चैत्यस्तंभ, नारकावास संख्या।

छत्तीसवां समवाय 162

उत्तराध्ययन, चमरेन्द्र की सुधर्मा सभा, महावीर की आर्यिकाएँ, सूर्य की पौरुषी-छाया।

सैंतीसवां समवाय 163

कुन्थुनाथ के गणधर, हैमवत-ऐरण्यवत की जीवा, विजयादि विमानों के प्रकार, क्षुद्रिका विमानविभक्ति के उद्देशनकाल, सूर्य की छाया।

अड़तीसवां समवाय 164

पार्श्व जिन की आर्यिकाएँ, हैमवत-ऐरण्यवत की जीवाओं का धनु:पृष्ठ, मेरु के दूसरे काण्ड की ऊँचाई, विमानविभक्ति के उद्देशनकाल।

उनतालीसवां समवाय 165

नमि जिन के अवधिज्ञानी मुनि, नारकावास, कर्मप्रकृतियाँ।

चालीसवां समवाय 166

अरिष्टनेमि की आर्यिकाएँ, मंदरचूलिका, भूतानन्द के भवनावास, विमानविभक्ति के तृतीय वर्ग के उद्देशनकाल, सूर्य की छाया, महाशुक्र कल्प के विमानावास।

इकतालीसवां समवाय 168

नमि जिन की आर्यिकाएँ, नारकावास, महाविमानविभक्ति के प्रथम वर्ग के उद्देशनकाल।

बयालीसवां समवाय 168

महावीर की श्रामण्यपर्याय, आवास पर्वतों का अन्तर, कालोद समुद्र में चन्द्र-सूर्य, भुजपरिसर्पों की स्थिति, नामकर्म की प्रकृतियाँ, लवणसमुद्र की वेला, विमानविभक्ति के द्वितीय वर्ग के उद्देशनकाल, पंचम-षष्ठ आरों का कालपरिमाण।

तेयालीसवां समवाय 172

कर्मविपाक अध्ययन, नारकावास, धर्म जिन की अवगाहना, मंदर पर्वत का अन्तर, नक्षत्र, महाविमानविभक्ति के पंचम वर्ग के उद्देशनकाल।

चवालीसवां समवाय 173

पैंतालीसवां समवाय 174

छियालीसवां समवाय 175

दृष्टिवाद के मातृकापद, प्रभंजनेन्द्र के भवनावास।

सैंतालीसवां समवाय 176

सूर्य का दृष्टिगोचर होना, अग्निभूति का गृहवास।

अड़तालीसवां समवाय 177

चक्रवर्ती के पट्टन, धर्म जिन के गण और गणधर, सूर्यमंडल का विस्तार।

उनचासवां समवाय 177

भिक्षुप्रतिमा, देवकुरु-उत्तरकुरु के मनुष्य, त्रीन्द्रिय जीवों की उत्कृष्ट स्थिति।

पचासवां समवाय 178

मुनिसुव्रत जिन की आर्याएँ, दीर्घवैताढ्यों का विष्कंभ, लान्तककल्प के विमानावास, तिमिस्रखण्डप्रपात गुफाओं की लम्बाई, कांचनक पर्वतों का विस्तार।

इक्यावनवां समवाय 179

आचारांग-प्रथम श्रुतस्कन्ध के उद्देशनकाल, चमरेन्द्र की सुधर्मा सभा, सुप्रभ बलदेव का आयुष्य, उत्तर कर्म-प्रकृतियाँ।

बावनवां समवाय 180

मोहनीय कर्म के नाम, गोस्तूभ आदि पर्वतों का अन्तर, कर्मप्रकृतियाँ, सौधर्म-सनत्कुमार माहेन्द्र के विमानावास।

तिरेपनवां समवाय 182

देवकुरु आदि की जीवाएँ, भ. महावीर के श्रमणों का अनुत्तरविमानों में जन्म, संमूर्च्छिम उरपरिसर्पों की उत्कृष्ट स्थिति।

चौपनवां समवाय 183

महापुरुषों का जन्म, अरिष्टनेमि की छद्मस्थपर्याय, भ. महावीर द्वारा एक दिन में 54 व्याख्यान, अनन्त जिन के गण, गणधर।

पचपनवां समवाय 184

मल्ली अर्हत् का आयुष्य, मन्दर और विजयादि द्वारों का अन्तर, भ. महावीर द्वारा पुण्य-पापविपाकदर्शक अध्ययनों का प्रतिपादन, नारकावास, कर्मप्रकृतियाँ।

छप्पनवां समवाय 186

नक्षत्रयोग, विमल जिन के गण और गणधर

सत्तावनवां समवाय 187

तीन गणिपिटक के अध्ययन, गोस्तूभ पर्वत और महापातल का अन्तर, मल्ली जिन के मनः-पर्यवज्ञानी, महाहिमवन्त और रुक्मि पर्वतों की जीवा का धनुः पृष्ठ।

अट्ठावनवां समवाय 188

नारकावास, कर्मप्रकृतियाँ, गोस्तूभ और वडवामुख आदि का अन्तर।

उनसठवां समवाय 189

चन्द्रसंवत्सर, संभव जिन का गृहवास, मल्ली जिन के अवधिज्ञानी मुनि

साठवां समवाय 190

सूर्य की मण्डलपूर्त्ति, लवणसमुद्र का अग्रोदक, विमल जिन की अवगाहना, बलीन्द्र और ब्रह्म देवेन्द्र के सामानिक देव, सौधर्म-ईशान कल्प के विमानावास।

इकसठवां समवाय 191

ऋतुमास, मन्दर पर्वत का प्रथम काण्ड, चन्द्रमण्डल।

बासठवां समवाय 192

पंचसांवत्सरिक युग में पूर्णिमाएँ-अमावस्याएँ, वायुपूज्य जिन के गण-गणधर, चन्द्र-कलाओं की वृद्धि-हानि, सौधर्म-ईशान कल्प के विमानावास, वैमानिक-विमानप्रस्तट।

तिरेसठवां समवाय 193

ऋषभ जिन का महाराज-काल, हरिवास-रम्यकवास के मनुष्यों का यौवन, निषध-नीलवन्त पर्वत पर सूर्योदय।

चौसठवां समवाय 193

अष्टाष्टमिका भिक्षुप्रतिमा, असुरकुमारावास, दधिमुख पर्वत, विमानावास।

पैंसठवां समवाय 195

जम्बूद्वीप में सूर्यमण्डल, मौर्यपुत्र का गृहवास, सौधर्मावतंसक विमान की एक-एक दिशा में भवन।

छियासठवां समवाय 196

मनुष्यक्षेत्र में चन्द्र-सूर्य, श्रेयांस जिन के गण और गणधर, आभिनिबोधिक ज्ञान की उत्कृष्ट स्थिति।

सड़सठवां समवाय 197

नक्षत्रमास, हैमवत-ऐरण्यवत की भुजाएँ, मन्दर पर्वत, नक्षत्रों का सीमा विष्कम्भ।

अड़सठवां समवाय 198

धातकीखण्ड में विजय, राजधानियाँ, तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव, विमल जिन की श्रमणसम्पदा।

उनहत्तरवां समवाय 199

समयक्षेत्र में वर्ष और वर्षधर पर्वत, मंदर पर्वत का अन्तर, कर्म-प्रकृतियाँ।

सत्तरवां समवाय 199

श्रमण भ. महावीर का वर्षावास, पार्श्व जिन की श्रमण पर्याय, वासुपूज्य, जिन की अवगाहना, मोहनीय कर्म की स्थिति, माहेन्द्र देवराज के सामानिक देव।

इकहत्तरवां समवाय 201

चन्द्रमा का अयन-परिवर्तन, वीर्यप्रवाद पूर्व के प्राभृत, अजित जिन का गृहवासकाल, सगर चक्रवर्ती का गृहवासकाल और श्रामण्य।

बहत्तरवां समवाय 202

सुपर्णकुमारों के आवास, लवणसमुद्र की वेला का धारण, महावीर जिन का आयुष्य, आभ्यन्तर पुष्करार्ध में चन्द्र-सूर्य, बहत्तर कलाएँ, खेचरों की स्थिति।

तिहत्तरवां समवाय 205

हरिवास-रम्यकवास की जीवाएँ, विजय बलदेव की सिद्धि।

चौहत्तरवां समवाय 206

अग्निभूति की आयु, सीतोदा तथा सीता महानदी, नारकावास।

पचहत्तरवां समवाय 207

सुविधि जिन के केवली, शीतल और शान्तिनाथ का गृहवास।

छिहत्तरवां समवाय 208

विद्युत्कुमार आदि भवनपतियों का आवास।

सतहतरवां समवाय 209

भरत चक्रवर्ती, अंगवंश के राजाओं की प्रव्रज्या, गर्दतोय तुषित लोकान्तिकों का परिवार, मुहूर्त्त का परिमाण।

अठहत्तरवां समवाय 210

वैश्रमण लोकपाल, स्थविर अकंपित, सूर्य-संचार से दिन रात्रि के वृद्धि-ह्रास का नियम।

उन्यासीवां समवाय 211

रत्नप्रभा पृथ्वी से वलयामुख पाताल का तथा अन्य पातालों का अन्तर, छठी पृथ्वी और घनोदधि का अन्तर, जम्बूद्वीप के एक द्वार से दूसरे द्वार का अन्तर।

अस्सीवां समवाय 212

श्रेयांस जिन की अवगाहना, त्रिपृष्ठ वासुदेव की अवगाहना, अचल बलदेव की अवगाहना, त्रिपृष्ठ वासुदेव का राजकाल, अप्-बहुल काण्ड की मोटाई, ईशानेन्द्र के सामानिक देव, जम्बूद्वीप में प्रथम मंडल में सूर्योदय।

इक्यासीवां समवाय 213

भिक्षुप्रतिमा, कुन्थु जिन के मन:पर्यवज्ञानी, व्याख्याप्रज्ञप्ति के महायुग्मशत।

बयासीवां समवाय 213

सूर्य-संचार, भ. महावीर का गर्भापहरण, महाहिमवन्त एवं रुक्मि पर्वत के सौगंधिक काण्ड का अन्तर।

तिरासीवां समवाय 214

भ. महावीर का गर्भापहार, शीतल जिन के गण और गणधर, मंडितपुत्र का आयुष्य, ऋषभ का गृहवासकाल, भरत राजा का गृहस्थकाल।

चौरासीवां समवाय 216

नारकावास, ऋषभ जिन का आयुष्य, भरत, बाहुबली, ब्राह्मी और सुन्दरी का आयुष्य, श्रेयांस जिन का आयुष्य, त्रिपृष्ठ वासुदेव का नरक में उत्पाद, देवेन्द्र शक्र के सामानिक देव, जम्बूद्वीप के बाहर के मंदरों और अंजनक पर्वतों की ऊंचाई, हरिवर्ष एवं रम्यकवर्ष की जीवाओं के धनु: पृष्ठ का परिक्षेप, पंकबहुल काण्ड के चरमान्तों का अन्तर, व्याख्याप्रज्ञप्ति के पद, नागकुमारावास, प्रकीर्णक, जीवयोनियाँ, पूर्वादि संख्याओं का गुणाकार, ऋषभ जिन की श्रमणसम्पदा, विमानावास।

पचासीवां समवाय 219

आचारांग के उद्देशनकाल, धातकीखंड के मंदर, रुचकद्वीप के माण्डलिक पर्वतों की ऊंचाई, नन्दनवन।

छियासीवां समवाय 220

सुविधि जिन के गण और गणधर, सुपार्श्व जिन की वादी-सम्पदा, दूसरी पृथ्वी से घनोदधि का अन्तर।

सत्तासीवां समवाय 220

मन्दर पर्वत, कर्मप्रकृति, महाहिमवन्तपर्वत एवं सौगंधिक कूट का अन्तर।

अठासीवां समवाय 222

सूर्य-चन्द्र के महाग्रह, दृष्टिवाद के सूत्र, मन्दर एवं गोस्तूभ पर्वत का अन्तर, सूर्यसंचार से दिवस-रात्रिक्षेत्र का वृद्धि-ह्रास।

नवासीवां समवाय 223

ऋषभ जिन का सिद्धिकाल, महावीर जिन का निर्वाणकाल, हरिषेण चक्रवर्ती का राजकाल, शान्ति जिन की आर्याएँ।

नब्बेवां समवाय 224

शीतलनाथ की अवगाहना, स्वयंभू वासुदेव का विजयकाल, वैताढ्य पर्वत और सौगंधिक काण्ड का अन्तर।

इक्यानवां समवाय 225

परवैयावृत्यकर्म, कालोद समुद्र की परिधि, कुन्थुनाथ के अवधिज्ञानी श्रमण, कर्मप्रकृतियाँ।

बानवां समवाय 226

प्रतिमा, इन्द्रभूति का आयुष्य, मंदर और गोस्तूभ पर्वत का अन्तर।

तिरानवां समवाय 227

चन्द्रप्रभ जिन के गण और गणधर, शान्तिनाथ के चतुर्दशपूर्वी मुनियों की संख्या, सूर्यसंचार।

चौरानवां समवाय 228

निषध-नीलवन्त पर्वतों की जीवाएँ, अजितनाथ के अवधिज्ञानी मुनियों की संख्या।

पंचानवां समवाय 228

सुपार्श्वनाथ के गण और गणधर, चार महापाताल, लवण-समुद्र के पार्श्वों की गहराई और ऊँचाई कुन्थुनाथ की आयु, स्थविर मौर्यपुत्र की आयु।

छयानवां समवाय 229

चक्रवर्ती के ग्राम, वायुकुमारों के आवास, व्यावहारिक दंड, धनुष, नालिका, युग, अक्ष और मूसल का माप, सूर्यसंचार।

सत्तानवां समवाय 230

मन्दर और गोस्तूभ पर्वत का अन्तर, उत्तर कर्मप्रकृतियाँ, हरिषेण चक्रवर्ती का गृहवासकाल।

अट्ठानवां समवाय 231

नन्दनवन-पाण्डुकवन का अन्तर, मन्दर गोस्तूभ पर्वत का अन्तर, दक्षिण भारत का धनुपृष्ठ, सूर्यसंचार, रेवती आदि नक्षत्रों के तारे।

निन्यानवां समवाय 233

मंदर पर्वत की ऊँचाई, नन्दन वन के पूर्वी-पश्चिमी चरमान्त का तथा दक्षिण-उत्तरी चरमान्त का अन्तर, सूर्यमंडल का आयाम-विष्कम्भ, रत्नप्रभा पृथ्वी और वानव्यन्तरों के आवासों का अन्तर।

सौवां समवाय 234

दशदशमिका भिक्षुप्रतिमा, शतभिषक् नक्षत्र के तारे, सुविधि-पुष्पदन्त की अवगाहना, पार्श्व जिन का आयुष्य, विभिन्न पर्वतों की ऊँचाई।

अनेकोत्तरिका वृद्धि समवाय 236

विविध विषय

द्वादशाङ्ग गणिपिटक

बारह अंगों का वर्णन 251

विविधविषय निरूपण 296

राशि-पर्याप्तापर्याप्त-आवास-स्थिति-शरीर-अवधि-वेदना-लेश्या-आहार-आयुबन्ध-उत्पाद-उद्वर्त्तनाविरह-आकर्ष-संहनन-संस्थान-वेद-समवसरण-कुलकर-तीर्थंकर-चक्रवर्ती-बलदेव-वासुदेव-ऐरवततीर्थंकर-भावी तीर्थंकर-भावी चक्रवर्ती-भावी बलदेव-वासुदेव-ऐरवत क्षेत्र के भावी तीर्थंकर-चक्रवर्ती बल्लदेव-वासुदेव।

अतीत अनागतकालीन महापुरुष 328

परिशिष्ट 361

Contents

Samvayang Sutra — *1*

First Samvaya : — 5

Soul, Soulless, Dand, Adand, Activity, Devoid of activity, Cosmos, Trans cosmos, Dharam, Adharam, Meritorious deed sin, Bondage, Liberation, Inflow, Samvar, feeling, Nirjara, Palak celestial vehicles, Sarvarthsidh celestial vehicles, aardra constellation, Chitra constellation, Swati constellation, Duration of karmas, Food, Inhaling and exhaling, Attainment of liberation (sidhi).

Second Samvaya : — 8

Dand, Rashi, Bondage, Poorva phalguni, Uttara phalguni, Poorva bhadarpad, Uttara bhadarpad constellation, duration of karmas, Respiration, Food, Sidhi.

Third Samvaya : — 10

Dand, Restraint (Gupti), Thorn (Shalya), Pride Gaurav, Viradhana, Margshir, Pushya, Jyestha, Abhijeet, Shravana, Ashvani, Bharani constellations, Stheti, Respiration, Food and Sidhi.

Fourth Samvaya : — 13

Passions, Contemplations, Waste and worldly discussion, Sangya, Bondage, Anuradha, Poorvashadh, Uttarashadh Constellations, Duration, Respiration, Exhaling, Food, Sidhi.

Fifth Samvaya : — 15

Activities, Great vows, Copulative attributes, Influx, Stoppage of karmas, Nirjarasthana, Carefulness (samiti), Astikaya, Rohini, Punarvasu, Hast, Vishakha, Dhamistha constellation, Sthithi, Inhaling and Exhaling.

Sixth Samvaya: — 19

Thought colouration (leshya), Jeeva nikaya, Penance, Chhadmasthik (not completely detached) Samudghat, Arthavagrah, Kritika, Ashlesha constellations, Stheti, Inhaling and exhaling, food, Sidhi.

Seventh Samvaya : 23

Places of fear, Samudghat, The height of Lord Mahavir, The mountain Varshdhar, Region, Karamprakritivadan, Magha constellation the counstellation situated in East-South, West-North directions, Sthithi, Inhaling and exhaling, Food, Sidhi.

Eighth Samvaya : 26

Pride-places, Parvachan-mother, The charity trees of forest dwelling gods, Jambu, Sudarshana, Kutshalmati, Boundary wall of Jambu continent, Kewali-samudghat, The head disciples of lord Parshavanath, Constellation, Duration, Inhalinga and exhaling, Food, Sidhi.

Ninth Samvaya : 30

Celebacy-restraint, Non-restraint activities, Celebacy-text, the height of lord Parshava Nath, Counstellations, Stars-movement, Entrance of the fish into Jambu continent, Vijaydwar, The assembly of peripatetic gods, the tendencies of perception-obscuring deeds, Duration, Inhaling and exhaling, Food, Sidhi.

Tenth Samvaya : 36

Ascetic conduct, Absolute meditative position, Mountain Mandar, The body structure of Lord Arishthnemi, Knowledge enhancing constellations, Wish tree (Kalpvarksh), Duration, Inhaling and exhaling, Food, Sidhi.

Eleventh Samvaya : 42

Householders special vows (Pratima), Stellary cycle, The head disciple of Lord Mahavira, Mool constellation, Graiveyaka, Mountain Mandar, Duration, Inhaling and Exhaling, Food, Sidhi.

Twelveth Samvaya : 45

Ascetic's special vows (Pratima), Sambhog, Kartikarama, Capital vijaya, Ram Baldeva, The summit of Mandar mountain, Jambu-dweep-vedika, The minimum duration of a day and a night, Ishatpragbhar-prithvi, Duration, Inhaling and exhaling, Food, Sidhi.

Thirteenth Samvaya : 50

Kriyasthana, Vehicle dimensions, The total species of water-bodied living beings, The subject matter of Pranvayu poorva, Usage, The expansion of Sun-orbit sthiti, Inhaling and exhaling, Food, Sidhi.

Fourteenth Samvaya : 54

Bhootgram, Poorva, Jeevasthana, The radious of Bharat and Airavat regions, Jewels of Supreme Lord (Chakaravarti), Great rivers, Duration, Inhaling and exhaling, Food, Sidhi.

Fifteenth Samvaya: 61

Paramadharmik (extremely cruel) email Gods, The height of Arihant Nami, Dhruva Rahu, Constellations, The days and nights of fifteen muhurats, The subject matter of Vidyanuvad poorva, Human-usages, Duration, Inhaling and exhaling, Food, Sidhi.

Sixteenth Samvaya: 67

Sixteenth Chapter Gatha, Passions, Name of Mandar, The ascetic-wealth of Lord Parshava Nath, Duration, Inhaling and exhaling, Food, Sidhi.

Seventeenth Samvaya: 71

Non-restraint, Restraint, the Manushotar mountain, aavas mountains, Chaarangati, The reincarnation mountain of chaamar, Death, Karam-prakriti-vedan, Stithi, Inhaling and exhaling, Food, Sidhi.

Eighteenth Samvaya: 77

Celibacy, The ascetic-wealth of Lord Arishthnemi, Nirgranth-sthana, Acharnga-pad, Writing method of Brahmi-script, The matter of Astinaasta-pravad, The hell of Dhoom-prabha, Maxmum duration of a day and a night, Stithi, Inhaling and exhaling, Food, Sidhi.

Nineteenth Samvaya: 82

The number of Chapters of Gyatadharma kathanga, The number of suns in Jambu continent, The great planet "Shukra", Jambu continent, As household stay of Ford-makers, Stithi, Inhaling and exhaling, Food, Sidhi.

Twentieth Samvaya: 85

Pains giving places (Asamadhi-sthana), The height of Lord Munisuvart, The boundary expansion of Ganodadhi, The samanik gods of the lord of the pranat heaven, Karam-sthiti, The matter of Prathyakhan-poorva, Time cycle, Stithi, Inhaling and exhaling, Food, Sidhi.

Twenty One Samvaya: 89

Shabal (major) faults, Karam divisions, Time period of V & VI Ara (spoke), Stithi, Inhaling and exhaling, Food, Sidhi.

Twenty Two Samvaya: 94

Afflictions, Daristivad matter's overcome, Stithi, Inhaling and exhaling, Food, Sidhi.

Twenty Three Samvaya: 97

The texts of Sutrakritanga, Attained omniscience at the time of 'Sun Dawn' by

twenty three Ford-makers, Ekadashangi in previous births, Stithi, Inhaling and exhaling, Food, Sidhi.

Twenty Four Samvaya: 100

Gods of gods (Thirthankar), The radius of the summit of Chulhimvant celestial vehicles occupied by Indra, Northward Sun, The great rivers Ganga and Sindhu, The great rivers Rakta-Raktoda, Stithi, Inhaling and exhaling, Food, Sidhi.

Twenty Five Samvaya: 103

The reflections of the five yama, The height of Lord Mallinatha, Dirghvaitadhya mountain, The residences of second hell. The chapters of Acharanga, The tendencies-bondage of two senses wrong faith beings, The great rivers Ganga-Sindhu, Rakta-Raktodya, the matter of Lokbindusar, Duration, Respiration, Food,Sidhi.

Twenty Six Samvaya: 110

The sub-chapters of Dasa-kalp-vyavhar, Karam-tendencies satta, Stithi, Respiration, Food, Sidhi.

Twenty Seven Samvaya: 112

Ascetics, attributions, Movement with constellations, constellation mouth, the structure of celestial vehicle of Soudharma-Ishan kalp, Karam-tendencies, movement of Sun, Stithi, Respiration, Food, Sidhi.

Twenty Eight Samvaya: 115

Conduct-system, the domination of delusive karma, Sensory knowledge, the numbers of the celestial vehicles of Ishan-kalp, Bondage of Karama-tendencies, Stithi, Respiration, Food, Sidhi.

Twenty Nine Samvaya: 122

Reference ot sinful sutra, The numbers of days and nights in the months of Ashadha etc. The reincarnation a celestial beings, Stithi, Respiration, Food, Sidhi.

Thirty Samvaya: 125

Places of delusion, The ascetic height life of Manditputra, The thirty names of thirty muhurats, Arihant Arhnath, The samanik gods of Sahsrarender celestial. The household duration of Food-maker Parshava-nath, Laity duration of Lord Mahavira, The infernal residences of Ratan Prabh hell, Stithi, Respiration, Food, Sidhi.

Thirty One Samvaya: 137

The origin-attributes of liberated one, Mountain-mandar, The movement of the "Sun", Stithi, Respiration, Food, Sidhi.

Thirty Two Samvaya: 141

Yogesangrah, Davendra, The omniscient Arihant Kunthu, The celestial vehicles of Soudharmakalp, The number of the stars of Revati constellation, The kinds of dances, Stithi, Respiration, Food, Sidhi.

Thirty Three Samvaya: 146

Astanaya, The residences of Chamarendra, Stithi, Respiration, Food, Sidhi.

Thirty Four Samvaya: 155

The extraordinary miracles of Ford-makers, Vijay-occupied by Chakaravarty, The residences of Chamarendra, Infernal residences.

Thirty Five Samvaya: 160

The extra-ordinary miracles of true-words, The height of Arihant Kunthu Nath, The height of Vasudev-Datt, The body's length of Nandan Baldeva, the Chaitya stambh namely Manvak, The numbers of hell residences.

Thirty Six Samvaya: 162

Utteradhayana, The Soudharma-assembly of Chamarendra, The nuns of Lord Mahavira, The paurishi-shadow of Sun.

Thirty Seven Samvaya: 163

The head ascetics (Gandhar) of Arihant Kunthu Nath, the radius of Hemvant and Airanyavant, The types of celestial vehicles etc., Uddeshan kaal of Chhudrika-viman-vibhakti, Sun's shadow.

Thirty Eight Samvaya: 164

The nuns of Arihant Parshavanath, The summits of Mountain Mandar, Back portion of the radius of Hemvat and Airanyavat, The uddeshan-kaal of viman-vibhakti.

Thirty Nine Samvaya: 165

The clairvayant ascetic of Arihant Nami, Infernal residences, Karam-tendencies.

Forty Samvaya: 166

The number of the nuns of Arihant Arishthnemi, The summit of Mandar, The residences of Bootanand, The Uddeshan-kaal of the third section of viman-vibhakti, Sun's shadow, the celestial residences of Mahashukara-kalp.

Forty One Samvaya: 168

The numbers of the Nuns of 'Nami', The Ford-makders, Infernal residences, The Uddeshan-kaal of the first section of the great viman-vibhakti.

Forty Two Samvaya: 168

The ascetic life of Arihant Mahavira, The distance between residences-mountains, The number of Suns and Moons of Kalodadhi-ocean, The life duration of arms serpentile beings, The tendencies of physique determining karmas, The height of waves of Lavan ocean. The uddeshan-kaal of the second section of viman-vibhakti, The time measurement of the Vth and VIth ARa (spoke).

Forty Three Samvaya: 172

The chapter of karma—fruition, infernal residences, The height of the body of Arihant Dharam Nath, The distance of Mountain mandar, Constellations, The Uddeshan-Kaal of the fifth section of the great viman-vibhakti.

Forty Four Samvaya: 173

Forty Five Samvaya: 174

Forty Six Samvaya: 175

Forty Seven Samvaya: 176

Visibility of Sun, laity of Gandhar Agnibhuti.

Forty Eight Samvaya: 177

The parts of supreme lords (Chakaravarti), The ascetic groups and heads of ascetics of Arihant Dharam-Nath, The expansion of Sun-orbit.

Forty Nine Samvaya: 177

The special resolves (Pratima) of an ascetic, The human beings of Utterkuru-Devakuru, the maximum, life duration of three sensed beings.

Fifty Samvaya: 178

The numbers of the Nuns of Arihant Munisuvarat. The expansion of Dirghvaitadhaya, The celestial residences of Lantak-kalp, The length of the "Timisra-Khandprapat caves, The expansion of Mountains Kanchan.

Fifty One Samvaya: 179

Uddeshana-kaal of the first shrutskand of Acharanga, The Soudharma assembly of Chamarendra, The life spanof Baldev.

Fifty Two Samvaya: 180

The names of delusion Karmas, The distance betweenGoastub mountains, Karam-tendencies, the celestial residences of Soudharma—Sanat Kumar and Mahendra-kalp.

Fifty Three Samvaya: 182

The radius of Devkuru etc., The reincarnation in the Anuttar celestial vehicles of the ascetics of Arihant Mahavir, The maximum life span of the serpentiles move by their chests.

Fifty Four Samvaya: 183

The birth of great persons, the chhadmost mode (ascetic life prior to omniscient) of Arihant Arishthnemi, 54 discourses of Arihant Mahavira in a single day. The ascetic groups (Gan) and head of ascetic (Gandhara) of Arihant Anant nath.

Fifty Five Samvaya: 184

The life duration of Arihant Malli Nath, The distance betweenthe gates of the mandar Mountain and Vijay etc., propoundation the chapters of explaining the fraction of meritorious and dementorious deeds by Arihant Mahavira, infernal residences, karam-tendencies.

Fifty Six Samvaya: 186

Nakshatra-yoga, the ascetic groups (Gan) and Head of the ascetics (Gandhar) of Arihant Vimal Nath.

Fifty Seven Samvaya: 187

The chapters of three Ganipitak, the distance between Mountain Goustubh and great under-world land, the numbers of mental-mode knowledge holder of Arihant Mallinath, The Dhanush-back of the radius of the mountains Mahahimvant and Rukmi.

Fifty Eight Samvaya: 188

Infernal residences, Karama-Tendencies, The distance between Goustubh and Vadavamukh Mahabataal.

Fifty Nine Samvaya: 189

Moon's Samvatsar, Arihant Shri Sambhava Nath's staying period as householder, clairvoyant monks of Arihant Malli-Nath.

Sixty Samvaya: 190

Orbit rotation of Sun, Agrodak of ocean lavan, the height of the physical body of Arihant Vimal Nath, The co-chief (Samanik) gods of the Devendra named Balindra and Brahmas, The celestial vehicles Soudharma_Ishan Kalp.

Sixty One Samvaya: 191

Seasons-Mouth, First part of Mountain Mandar, Moon's orbit.

Sixty Two Samvaya: 192

The full bright fortnight and full dark fortnight in five somvatran epoch, The ascetic groups (Gan) and head of the group (Gandhar) of Arihant Vasupujya Ji, Decreasing and increasing Moon light day by day, The celestial vehicles of Soudharm-Ishan Kalp, The width and length of the celestial vehicles.

Sixty Three Samvaya: 193

Emperorship duration of Arihant Rishabh Dev, The adolescently of the human beings of Harivas–Ramyakvas, the dawn of Sun at upon Nidhadh-Neelvant mountains.

Sixty Four Samvaya: 193

The Ashashtamika special vows (Pratima) of the ascetic, the residences of Malevolent gods, The mountain Dadhimukh, residences of gods.

Sixty Five Samvaya: 195

Sun-orbit in Jambu continent, laity Head ascetic Mauryaputra, the residences in each direction of Soudharmavatansak celestial vehicles.

Sixty Six Samvaya: 196

The number of Suns and Moons in the region of human beings, the number of the ascetic groups (Gan) and the Head of the ascetic groups (gandhar) of Arihant Shreyans, the maximum duration of sensory knowledge.

Sixty Seven Samvaya: 197

The counstellation-months, The arms of the Hemvant and Airanyavat Mountains, The Mandar Mountain, the Boundary expansion of constellations.

Sixty Eight Samvaya: 198

The Vijay, Capitals, Ford-makers, Supreme lords (Chakravarti), Co-lords (Baldev), Lords (Vasudeva) in Dhatkikhand, The total ascetic of Arihant Vimal Nath.

Sixty Nine Samvaya: 199

The total number of the Varsh and Varshdhar mountins in the Time-region, The distancesof Mandar mountains, Karam-tendencies.

Seventy Samvaya: 199

The rainy season stay (Chaturmasik stay) of lord Mahavira, The ascetic life duration of Arihant Parshava Nath, The height of Arihant Vasupujya, The duration of delusion Karmas, The Samanik gods of Devender Mahendra.

Seventy One Samvaya: 201

The changes of Moon's ayana, Prabhrit of the poorva of Viriyaparvad, As householder Arihant Ajitnath, The laity and ascetic life of supreme lord (Chakaravarti) 'Sagar'.

Seventy Two Samvaya: 202

The residences of Suparan Kumar, the fence holder of ocean "Lavan". The age of Arihant Mahavira, the number of Suns and Moons in the "Inner Pushkarardha", Seventy two artistic skills the life duration of flying beings.

Seventy Three Samvaya: 205

The radius of Harivas-Ramyakvas, Sidhi of Vijay Baldev.

Seventy Four Samvaya: 206

The life span of Gandhar Agnibhuti, The rivers sitoda and Sita, The hellish residences.

Seventy Five Samvaya: 207

The omniscient of Arihant Suvidhinath, the duration as householder of Shital and Shantinath.

Seventy Six Samvaya: 208

The residencies of Vidyut Kumar etc., Residents occupied Gods.

Seventy Seven Samvaya: 209

Chakravarti Bharat the consecration of the Kings of Angvans, The family of the Gardtoya Tushit Lakantika Gods, The measurement of a muhrat.

Seventy Eight Samvaya: 210

Vaishraman lokpal, senior ascetic Ankpit, The law of decreasing and increasing the time duration of day and night through the sun's movement.

Seventy Nine Samvaya: 211

The distanceof Valyamukh Pataal (underwater places) and others pataals from Ratan Prabha hell, the distance between Vith hell and Ghamododhu, The distance between one gate of Jambu continent to other gate.

Eighty Samvaya: 212

The height of Arihant Shreyans, The height of Vasudeva-Triprishth, The height of Baldeva Achal, The emperorship of Vasudeva–Triprishta, The thickness of Upp-Bahul Khand, The Sermanik gods of Ishanendra, The rise of Sun in the first orbit of Jambu continent.

Eighty One Samvaya: 213

Special vows (Paritama) of ascetics, Mental-mode knowledge holder of Arihant Kunthu Nath, Mahayugamshat of Vyakhyapragapti.

Eighty Two Samvaya: 213

Sun-rotation, Fentus kidnapping of Mahavir Swami, The distance between Sougandhik Kand of Mahahimvant and Rukmi Mountains.

Eighty Three Samvaya: 214

Bhagwan Mahavir's fentus kidnapping, The ascetic groups and head of ascetic groups of Arihant Shitalnath, The age of Gandhar Manditputra, The duration as householder of Rishabh Deva, The duration as householder of Emperor Bharat.

Eighty Four Samvaya: 216

Hellish residences, the age of Arihant Rishabh, The life span of Bharat, Bahubali, Brahmi and Sundry, The age of Arihant Shreyans, the reincarnation of Vasudeva Triprishth into the hell, The Samanik gods of Devender Shakra, The height of the Mountains namely Mandar and Anjanak situated out of Jambu continents, circumference of the Dhanuh-back of the radius of harivarsh and Ramyakvarsh, The distance between the extreme ends of the Pankbahul Kand, The total verses of Vijakhyapragyapti, The residences of Nagkumar, Prakiraus, Jevayonia, Multitude of the numbers of Poorva etc., The total number of ascetic wealth of Arihant Rishabh Deva celestial vehicles.

Eighty Five Samvaya: 219

Uddeshan Kaal of Acharanga, Mountain Mandar of Dhatki Khand, The height of the Mandalik mountains of Ruchak island, Nandan forest.

Eighty Six Samvaya: 220

The total ascetic groups and head of the ascetic groups of Arihant Suvidhi Nath, the number of the debators of Arihant Suparshava Nath, The distance of second half from Ghanodadhi.

Eighty Seven Samvaya: 220

Mountain Mandar, Karam-tendencies, The distance between Sougandhak Kut and mountain Mahahimvant.

Eighty Eight Samvaya: 222

The great planets of Sun and Moon, the aphorism of Daristivada, The distance between mountain Mandar and Goastubh, The decreasing and increasing of day and night region through Sun's movement.

Eighty Nine Samvaya: 223

The Sidhi-time of Arihant Rishabh Deva, the liberation-time of Arihant Mahavira, The emperorship of Chakarvarti Harishen, The Nuns of Arihant Shantinath.

Ninety Samvaya: 224

The height of Arihant Shital Nath, the winning period of Vasudeva Sawayambhu, The distance between Mountain Viatadhya and Soagandhik Kand.

Ninety One Samvaya: 225

Vaiyavant Karma, the circumference of Kalḍadhi ocean, the clairvoyant monks of Arihant Kunthu Nath, Karam-tendencies.

Ninety Two Samvaya: 226

Special vows (Pratima), The age of Gandhar Inderbhuti, The distance between mountain Goushtubh and Mandar.

Ninety Three Samvaya: 227

The ascetic groups (Gan) and the Head of the groups (Gandhar) of Arihant Chanderbrabahu, The number of the monks of Arihant Shanti Nath having the knowledge of fourteen Poorvas, Sun's movement

Ninety Four Samvaya: 228

The radius of mountain Nishadh-Neelvant, the number of the clairvoyant Monks of Arihant Ajitnath.

Ninety Five Samvaya: 228

The ascetic groups (Gan) and head of the groups (Gandhar) of Arihant Suparshava Nath, Four great subterranean regions the depth and height of the Parshwas of Ocean 'Laven', The age of Arihant Kunthu Nath, The age of Gandhar Mauryaputra.

Ninety Six Samvaya: 229

The number of villages of Chakravarti, the residences of Vayu Kumar, the measurement of usable bamboo stick, Bow, Nalika, Yuga, Aksh and a club, Sun movement.

Ninety Seven Samvayu : 230

The distance between Mandar and Goustubh mountains, Utter-karan-tendencies, Householder life of Harishen 'Supreme Lord'.

Ninety Eight Samvaya: 231

The distance between Nandan and Panduk forests, the distance between Mandar

and Goushtubh mountains, The Dhanuh-Prishth of South Bharat, The movement of the sun, The number of stars of Raveti etc. constellations.

Ninety Nine Samvaya: 233

The height of mountain Mandar, the distance between the East-West extreme end and North-South extreme and of Nandanvan, The transmission both of Sun movement, The distance between the residences of Ratan Prabha Hell and Peripatetic gods.

Hundred Samvaya: 234

Dasdasmika Bhikshu Pratima, the number of the stars of Shatbhisha constellation, The height of Arihant Suvidhi-Pushpadant, The age of Arihant Parshava Nath, The height of various Mountains.

Multiplier Increasing Samvaya : 236

Twelve Cannons – Ganipitak 251

Propoundation of various subjects 296

Great persons of past and future 328

Annexure 365

सचित्र

समवायाङ्ग सूत्र

श्रुत आचार्य प्रवर्त्तक श्री अमर मुनि

ILLUSTRATED

SAMVAYANG SUTRA

Shrut Acharya Pravartak Shri Amar Muni

समवायाङ्ग सूत्र

SAMVAYANG SUTRA

१–सुयं मे आउसं! तेणं भगवया एवमक्खायं–[इह खलु समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं सयंसंबुद्धेणं पुरिसुत्तमेणं पुरिससीहेणं पुरिसवरपुंडरीएणं पुरिसवरगंधहत्थिणा लोगुत्तमेणं लोगनाहेणं लोगहिएणं लोगपईवेणं लोगपज्जोअगरेणं अभयदएणं चक्खुदएणं मग्गदएणं सरणदएणं जीवदएणं बोहिदएणं धम्मदएणं धम्मदेसएणं धम्मनायगेणं धम्मसारिहिणा धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टिणा अप्पडिहय-वर-नाण-दंसणधरेणं वियट्टछउमेणं जिणेणं जावएणं तिन्नेणं तारएणं बुद्धेणं बोहएणं मुत्तेणं मोयगेणं सव्वन्नुणा सव्वदरिसिणा सिवमयल-मरुयमणंतमक्खय मव्वाबाहमपुणरा-वित्तिसिद्धि-गइनामधेयं ठाणं संपाविउकामेणं इमे दुवालसंगे गणिपिडगे पन्नत्ते।] तं जहा–

आयारे १, सूयगडे २, ठाणे ३, समवाए ४, विवाहपन्नत्ती ५, नायाधम्मकहाओ ६, उवासग- दसाओ ७, अंतगडदसाओ ८, अणुत्तरोववाइयदसाओ ९, पण्हावागरणं १०, विवागसुयं ११, दिट्ठिवाए १२।

श्रमण भगवान महावीर ने जैसा कहा है, उसे मैंने सुना है, वह इस प्रकार है–भगवान महावीर श्रुत धर्म के आदि प्रणेता, तीर्थंकर एवं सम्यक् बोधि प्राप्त किए हुए हैं। वे पुरुषों में अतिशय रूपवान आदि विशिष्ट गुणों से युक्त तथा उत्तम वृत्तियों से संयुक्त पुरुषोत्तम हैं। वे पुरुषसिंह अर्थात् सिंह सदृश पराक्रमी तथा पुरुषवर पुण्डरीक अर्थात् उत्तम सहस्र पत्र वाले श्वेत कमल सदृश श्रेष्ठ पुरुष हैं। वे पुरुषों में श्रेष्ठ गन्धहस्ती हैं जिसकी गन्ध से प्रवादी रूपी हाथी टिक नहीं पाते हैं अर्थात् पलायन कर जाते हैं। वे लोक में उत्तम पुरुष हैं, असाधारण ज्ञान गुण के आगार हैं तथा तीनों लोकों के अधिपतियों (स्वामियों) द्वारा पूज्य हैं, अस्तु त्रिलोकी नाथ हैं अर्थात् तीनों लोकों के नाथ और स्वामी हैं। वे लोक का हित करने वाले तथा लोक में उद्योत और प्रकाश फैलाने वाले हैं इसलिए उन्हें लोकहितकर, लोकप्रद्योतकर तथा लोकप्रदीप कहा जाता है। वे प्राणिमात्र के अभय प्रदाता हैं, अस्तु दयालु व करुणाशील हैं। वे अज्ञान-अन्धकार में डूबे प्राणियों को सन्मार्ग प्रकाशक तथा सन्मार्गदाता हैं। वे संसार

के सभी जीवों को शरण देने वाले, जन्म-मरण के चक्र से मुक्त कराने वाले, सम्यक् बोधिप्रदान करने वाले, दुर्गतियों में गिरते हुए जीवों को बचाने वाले तथा सद्धर्म का उपदेश देने वाले शरणदाता, अक्षय जीवनदाता, बोधिप्रदाता, धर्म-दाता तथा धर्मोपदेशक व धर्मनायक हैं। भगवान महावीर धर्म रूपी रथ के सारथी हैं तथा धर्मवर चातुरन्त चक्रवर्ती हैं अर्थात् धर्मरूपी रथ के चारों दिशाओं-गतियों के प्रवर्तक हैं। वे प्रतिघात रहित निरावरण श्रेष्ठ केवलज्ञान-दर्शन के धारक हैं। वे व्यावृत्त छद्म (सर्वथा निर्दोष) हैं अर्थात् छद्म (आवरण) और छल-प्रपंच से सर्वथा मुक्त या निवृत्त हैं। वे जिन (विषय-कषायों को जीतने वाले) हैं, ज्ञापक (दूसरों के भी विषय-कषायों को छुड़ाने वाले) हैं और जय-प्रापक (विषय-कषायों पर विजय प्राप्त कराने का मार्ग बताने वाले) हैं। वे संसार-सागर से स्वयं उत्तीर्ण हैं और दूसरों को उत्तीर्ण कराने वाले हैं। वे बुद्ध हैं, बोधक हैं तथा कर्मों से मुक्त हैं, मोचक हैं अर्थात् स्वयं बोध को प्राप्त होने वाले, दूसरों को बोध देने वाले तथा स्व कर्मों से मुक्ति पाने वाले, दूसरों को भी कर्मों से मुक्ति दिलाने वाले हैं। वे सर्वज्ञ (समस्त जगत को जानने वाले) और सर्वदर्शी (समस्त लोक के द्रष्टा) हैं। वे अचल, अरुज (रोग-रहित) अनन्त, अक्षय, अव्याबाध (बाधाओं से रहित) और आवागमन से रहित सिद्ध-गति नामक स्थान को प्राप्त करने वाले हैं। ऐसे विशिष्ट गुणों से युक्त उन महावीर भगवान ने द्वादशाङ्ग रूप गणिपिटक कहा है। वह इस प्रकार है-

१. **आचारांग**–इसमें ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य — पांच प्रकार के आचार धर्म का निरूपण है।

२. **सूत्रकृतांग**–इसमें विविध मतों का विवेचन तथा जीवादि नौ पदार्थों का निरूपण है।

३. **स्थानाङ्ग**–इसमें एक से लेकर दश स्थानों के द्वारा एक-एक, दो-दो आदि की संख्या वाले स्थानों या पदार्थों का निरूपण है।

४. **समवायाङ्ग**–इसमें एक, दो आदि संख्या वाले पदार्थों से लेकर सहस्रों पदार्थों के समुदाय का विवरण है।

५. **व्याख्याप्रज्ञप्ति अंग**–इसमें गणधर देव के द्वारा पूछे गए छत्तीस हजार प्रश्नों का और भगवान महावीर के द्वारा दिए गए उत्तरों का संकलन है।

६. **ज्ञाताधर्मकथाङ्ग**–इसमें परीषह-उपसर्ग विजेता पुरुषों के अर्थ-गर्भित दृष्टान्त एवं धार्मिक पुरुषों के कथानकों का वर्णन है।

७. **उपासकदशाङ्ग**–इसमें श्रावकों के परम धर्म व दश महाश्रावकों के चरित्रों आदि का निरूपण है।

८. **अंतकृद्दशाङ्ग**–इसमें उसी भव में मोक्षगामी नब्बे अनगारों के चरित्रों का वर्णन है।

९. **अनुत्तरौपपातिकदशाङ्ग**–इसमें पाँच अनुत्तर महा विमानों में उत्पन्न होने वाले अनगारों का वर्णन है।

१०. **प्रश्नव्याकरणाङ्ग**—इसमें स्व-पर समय विषयक प्रश्नों का, मन्त्र, विद्या आदि के साधने का और उनके अतिशयों का वर्णन।

११. **विपाकसूत्राङ्ग**—इसमें पापी-पुरुषों और पुण्यात्मा जीवों का चरित्र वर्णन है।

१२. **दृष्टिवादाङ्ग**—इसमें गणितशास्त्र का, तीन सौ तिरेसठ अन्य मतों का, चौदह पूर्वों का, महापुरुषों के चरित्रों का, पांच चूलिकाओं का विस्तृत विवेचन है।

I have listened the same as Lord Mahavira preached. It is like this Bhagwan Mahavira, the first propagator of 'Shrut Dharma', the Tirthankara was attainer of right knowledge. Among the individuals Lord Mahavira was the most handsome endowed with the extraordinary attributions. He was as valorous as a vigorous lion and he was like the best lotus which means the most excellent person like a superior white lotus having one hundred leaves. Lord Mahavira is like the fragrant elephant by whose smell the opponent elephant does not stand before him means escapes from him. He is the supreme in this universe. He is an abode of extraordinary virtues and he is being worshipped by all the Supreme Masters of Three Lokas (cosmos). Today he is the supreme lord of all the three Lokas. He is the benefactor of this universe. So, he is called loka benevolent, illuminator and the light of the universe. He makes everyone undaunted means he is a kind hearted and compassionate one. He is one who illuminates the right path for those who are drowned into the ocean of darkness and ignorance and he makes the mankind to follow the right path. He is one who gives shelter to all the creatures of this universe, liberates them from the cycle of life and death, giver of perfect right knowledge, a protector of the creatures who are near to fall into the pit of sins, ill luck, preaches of right religion, a protector, indestructive life giver, perfect knowledge giver, religion giver, a true preacher, and you are the chief of spirituality. Bhagwan Mahavira is a charioteer of the chariot of spirituality. Lord Mahavira is the 'Chakravarti of Dharma' of four dimensions. He is, devoid of repulsion and opposition, a holder of uncovered supreme ultimate knowledge and perception. He is absolutely faultless-means crystal clear. He is absolutely free of any kind of conceit and deceit. He is called 'Jina' (one who is conqueror of all the passions). He is the reliever (one who gets relieved others from amorous enjoyment and a conqueror (showing the way to win the passions). He has crossed the worldly ocean himself and making others to cross. He is enlightened, a religion informer, free from all the Karmas, a liberator (one who is liberated and makes others to liberate, one who is realised and makes others to realise). He is omniscient (knower of entire universe). He is unmovable, wholesome (without any ailment), limitless, indestructible, hinderless (without any hindrance) and is without

reincarnation and one who is going to attain the ultimate goal of his life i.e. 'Sidh Gati'. That Lord Mahavira endowed with the extraordinary virtues has narrated in 'Ganipittak' in the form of twelve limbs (Angas).

These are as follows :

1. **Acharanga :** (knowledge, perception, conduct, austerity and energy five types of conduct).
2. **Sutrakritanga :** (Analysis and evaluation of different philosophies and exposition of the nine elements such as 'jeeva' etc.
3. **Sthananga :** (Defining the substance and places having number from one to hundred).
4. **Samvayanga :** (Defining the substance having one, two etc. to the group of one thousand of numbers).
5. **Vyakhya Pragyapti Anga:** (The collection of the answers of the questions asked by Indrabhuti Gautam to Lord Mahavira).
6. **Jnata Dharam Kathang:** (The description of the meaningful illustrations regarding affliction conqueror persons and the stories of religious personalities).
7. **Upasak Dasang :** (Description of the twelve partial vows of the householders devotees and the exposition of the character of the Chief Ten Shrawakas of that time).
8. **Antkritdasang :** (Description of austere character of the ascetics).
9. **Anuttropapatic Dashang :** (The description of five ascetics who reincarnated into the celestial vehicles of five 'Anuttar Maha Vimanas').
10. **Prashna Vyakaran Sutra:** ('Samaya' related questions, spiritual instructions to be practised and the description of their excessive virtues).
11. **Vipak Sutranga :** (The description of the characters of the meritorious and sinful human beings).
12. **Drasthivadanga :** (An elaborate exposition of mathematics, 363 other philosophies, fourteen 'Purvas', the life sketch of great personalities and five 'Chulikas' (annexure).

२–तत्थ णं जे से चउत्थे अंगे समवाए त्ति आहिते तस्स णं अयमट्ठे पन्नत्ते। तं जहा–

द्वादशांग श्रुतरूप गणिपिटक में यह समवायांग चतुर्थ अंग है। उसका अर्थ इस प्रकार है-

The holy scripture 'Samvayang' is the fourth limb in the series of twelve limbs of Jainism. The meaning of this 'Sutra' is as under :-

पहला समवाय

The First Samvaya

३–एगे आया, एगे अणाया। एगे दंडे, एगे अदंडे। एगा किरिया, एगा अकिरिया। एगे लोए, एगे अलोए। एगे धम्मे, एगे अधम्मे। एगे पुण्णे, एगे पावे। एगे बंधे, एगे मोक्खे। एगे आसवे, एगे संवरे। एगा वेयणा, एगा णिज्जरा।

आत्मा-अनात्मा एक-एक हैं। दण्ड-अदण्ड एक-एक हैं। क्रिया-अक्रिया एक-एक हैं। लोक-अलोक एक-एक हैं। धर्म-अधर्म एक-एक हैं। पुण्य-पाप एक-एक हैं। बन्ध-मोक्ष एक-एक हैं। आस्रव-संवर एक-एक हैं। वेदना-निर्जरा एक-एक हैं। उपर्युक्त कथन संग्रह नय की अपेक्षा से प्रतिपादित है क्योंकि जैन सिद्धान्त में सारे कथन नयों की अपेक्षा से किये जाते हैं।

The living & non living are one each. The Dand & Non Dand are one each. Active and Non Active are one each. Cosmos and Trans Cosmos are one each. Dharam & Adharam are one each. Merit & Demerit are one each. Bondage & liberation are one each. Ashrav (influx of Karmas) and Samvar (stoppage of Karmas) are one each. The above mentioned facts are propounded according to the 'Sangrah view point' because all the statements are stated in reference to 'Naya' (philosophical viewpoint).

४–जंबुद्दीवे दीवे एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं पन्नत्ते। पालए जाणविमाणे एगं जोयणसयसहस्सं आयाम-विक्खंभेणं पन्नत्ते। सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे एगं जोयणसयसहस्सं आयाम-विक्खंभेणं पन्नत्ते।

जम्बूद्वीप नाम का द्वीप लम्बाई और चौड़ाई की अपेक्षा से एक लाख योजन वाला है। आभियोग्य देव की विक्रिया से विनिर्मित सौधर्मेन्द्र का पालक यान भी लम्बाई और चौड़ाई की अपेक्षा से सौ सहस्र अर्थात् एक लाख योजन वाला कहा गया है। सर्वार्थसिद्ध नामक अनुत्तर महाविमान की लम्बाई, चौड़ाई भी एक लाख योजन है। इस प्रकार से तीनों ही एक-एक लाख योजन विस्तार वाले कहे गए हैं।

The length and width of the island named 'Jambudweep' is 'One Lac Yojan'. The vehicle of Sodharmendra's God made by the'Abhiyogikgod' is said of One Lac Yojan in length and width. The length and width of the vehicle of 'Sarvarth Sidh Annuttra Viman' is also told of One Lac Yojan. Hence all these three (Viman) vehicles are told of expansion of One Lac Yojan each.

५–अद्दानक्खत्ते एगतारे पन्नत्ते। चित्तानक्खत्ते एगतारे पन्नत्ते। सातिनखत्ते एगतारे पन्नत्ते।

तीन नक्षत्र–आर्द्रा, चित्रा और स्वाति एक-एक तारा वाले कहे गए हैं।

Three Constellations Ardra, Chitra and Swati are said having one star each.

६–इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता। इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं एगं सागरोवंम ठिई पन्नत्ता। दोच्चाए पुढवीए नेरइयाणं जहन्नेणं एगं सागरोवमं ठिई पन्नत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं उक्कोसेणं एगं साहियं सागरोवमं ठिई पन्नत्ता। असुरकुमारिंद-वज्जियाणं भोमिज्जाणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता। असंखिज्जवासाउ-असन्नि-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणियाणं अत्थेगइयाणं एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता। असंखिज्जवासाउय-गब्भवक्कंतियसन्निमणुयाणं अत्थेगइयाणं एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता।

इसी रत्नप्रभा पृथ्वी में कितने ही नारकों की स्थिति एक पल्योपम और उनकी उत्कृष्ट स्थिति एक सागरोपम कही गई है। दूसरी शर्करा पृथ्वी में नारकों की जघन्य स्थिति एक सागरोपम है। असुर कुमार देवों की स्थिति एक पल्योपम और उत्कृष्ट स्थिति एक सागरोपम से कुछ अधिक अभिव्यक्त है। असुर कुमार देवों को छोड़कर शेष भवनवासी देवों की स्थिति एक पल्योपम बतायी गई है। इसी प्रकार असंख्यात वर्षायुष्क संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीवों की स्थिति और असंख्यात वर्षायुष्क गर्भोपक्रान्तिक संज्ञी मनुष्यों की स्थिति एक-एक पल्योपम व्यवहृत है।

In Ratan Prabh hell the life span of the hellish beings is of one Palyopama and the maximum life has been said of one Sagropama. In the second hell named 'Sharkara' the minimum life is of one 'Sagropama' and the life span of the (malevolent demon) Asur Kumar gods is of one Palyopama and the maximum is a little more than one Sagropama. Except Asur Kumar, the life span of other gods of Bhuvanpati (residential) is said of one Palyopama duration. Hence the life span of innumerable Versapusk being of (rational) Sanjni Panchendriya animal yoni and innumerable Varsapusk Garbho-Krantik Sangi human beings are said of one Palyopama duration.

७–वाणमंतराणं देवाणं उक्कोसेणं एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता। जोइसियाणं देवाणं उक्कोसेणं एगं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं ठिई पन्नत्ता। सोहम्मे कप्पे देवाणं जहन्नेणं एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता। सोहम्मे कप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं एगं सागरोवमं ठिई पन्नत्ता। ईसाणे कप्पे देवाणं जहन्नेणं साइरेगं एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता। ईसाणे कप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं एगं सागरोवमं ठिई पन्नत्ता।

वाणव्यन्तर देवों की उत्कृष्ट स्थिति एक पल्योपम तथा ज्योतिष्क देवों की उत्कृष्ट स्थिति एक लाख वर्ष से अधिक एक पल्योपम कही गई है। सौधर्मकल्प में देवों की जघन्य स्थिति एक पल्योपम

है तथा उत्कृष्ट स्थिति एक सागरोपम कही गई है। ईशानकल्पवासी देवों की जघन्य स्थिति कुछ अधिक एक पल्योपम तथा उत्कृष्ट स्थिति एक सागरोपम कही गई है।

The life span of Vanvyantra (paripatetic) gods is one Palyopama duration and the maximum life span of the stellar gods are said of one Lac plus one Palyopama duration. In the celestial vehicle of Sodharma kalp the minimum life span of celestial beings is said to be of one Palyopama and maximum life span is said to be of one Sagropama.

८–जे देवा सागरं सुसागरं सागरकंत भवं मणुं माणुसोत्तरं लोगहियं विमाणं देवत्ताए उववन्ना, तेसिं णं देवाणं उक्कोसेणं एगं सागरोवमं ठिई पन्नत्ता। ते णं देवा एकस्स अद्धमासस्स आणमंति वा पाणमंति वा उस्ससंति वा नीससंति वा। तेसिं णं देवाणं एगस्स वाससहस्सस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ। संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे एगेणं भवग्गहणेणं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

सागर, सुसागर, सागरकंत, भव, मनु, मानुषोत्तर और लोकहित विमानों में उत्पन्न देवों की उत्कृष्ट स्थिति एक सागरोपम है। वे देव पन्द्रह दिन अर्थात् एक अर्द्धमास में आन-प्राण अथवा उच्छ्वास-नि:श्वास क्रियाएँ करते हैं। उन देवों में एक हजार वर्ष के अन्तराल में आहार लेने की इच्छा जागती है। कितने ही भव्यसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो मनुष्य भव में उत्पन्न होकर सिद्ध, बुद्ध, कर्मों से मुक्त तथा परम निर्वाण को प्राप्त होंगे। वे सर्व दु:खों का नाश (अन्त) करने वाले होंगे।

The maximum life span of the celestial beings who take birth in the vehicle of Devsagar, Susagar, Sagarkant, Bhav, Manasottar and Lokhit is said of One 'Sagropama'. These gods inhale and exhale once in fifteen days. The desire of these gods to take meal takes place after completion of full one year. The beings who fall in this category of 'Bhavsidhik Jeeva' (capable of salvation) will get salvation and will be liberated and will attain Nirvana taking only one birth in the form of a human being. They will annihilate their entire miseries and sufferings at last.

।। पहला समवाय समाप्त ।।

।। The End of first Samvaya ।।

दूसरा समवाय

The Second Samvaya

९–दो दंडा पन्नत्ता, तं जहा–अट्ठादंडे चेव, अणत्थादंडे चेव। दुवे रासी पण्णत्ता, तं जहा–जीवरासी चेव, अजीवरासी चेव। दुविहे बंधणे पन्नत्ते। तं जहा–रागबंधणे चेव, दोसबंधणे चेव।

दण्ड (हिंसादि पाप रूप प्रवृत्ति) दो प्रकार के कहे गए हैं–एक, अर्थदण्ड (स्व-पर उपकारार्थ प्रयोजन वश किया जाने वाला) तथा दूसरा अनर्थदण्ड (बिना किसी प्रयोजन के निरर्थक किया जाने वाला पापरूप दण्ड)। राशियों के भी दो भेद निरूपित हैं– एक, जीव राशि तथा दूसरी अजीव राशि। इसी प्रकार दो प्रकार के बन्धन (कर्मों का बन्ध कराने वाले) हैं–एक, राग बन्धन (माया और लोभ कषाय से युक्त) तथा दूसरा, द्वेष बन्धन (क्रोध, मान कषायजन्य)।

Dand (violence & sinful activities) are said to be of two kinds—One 'Arthadand' (for the benefit of self and others) and second, 'Anarthadand' (the action that has been performed for no use, it means sinful activities). Two kinds of 'Rasi' has been determined- First (living being) 'Jeeva Rasi' and 'Ajeev Rasi' (Non living beings), like it there are two kinds of bondages which help in Karma Bondage. One is bondage of attachment (deceit and greed passion) and second bondage of aversion (anger and conceit passion).

१०–पुव्वा फग्गुणी नक्खत्ते दुतारे पन्नत्ते। उत्तराफग्गुणी नक्खत्ते दुतारे पन्नत्ते। पुव्वाभद्दवया नक्खत्ते दुतारे पन्नत्ते। उत्तराभद्दवया नक्खत्ते दुतारे पन्नत्ते।

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र, पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र तथा उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र — ये प्रत्येक दो-दो तारों वाले कहे गए हैं।

Constellation (Uttra Phalguni, Purva Phalguni, Purva Bhadrapad, Uttra Bhadrapad have two-two stars each.

११–इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं दो पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता। दुच्चाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता।

प्रथम रत्नप्रभा पृथ्वी के नारकों की स्थिति दो पल्योपम तथा दूसरी शर्करा पृथ्वी के नारकों की स्थिति दो सागरोपम कही गई है।

The duration of life of the hellish beings of 'Ratan Prabha' has been said of two Palyopama and the life of the hellish beings of second hell the Sharkara has been said of two 'Sagropama'.

१२–असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं दो पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता। असुरकुमारिंदवज्जियाणं भोमिज्जाणं उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता। असंखिज्जवासाउय-सन्निपंचिंदिय-तिरिक्खजोणियाणं अत्थेगइयाणं दो पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता। असंखिज्जवास-उयगब्भवक्कंतिय-सन्निपंचिंदिय-मणुस्साणं अत्थेगइयाणं, दो पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता।

कितने ही असुर कुमार देवों की स्थिति दो पल्योपम कही गई है। असुरकुमारेन्द्रों को छोड़कर शेष भवनवासी देवों की उत्कृष्ट स्थिति दो पल्योपम से कुछ कम बतायी गई है। असंख्यात वर्षायुष्क संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीव तथा असंख्यात वर्षायुष्क गर्भोपक्रान्तिक पंचेन्द्रिय संज्ञी मनुष्य दो-दो पल्योपम वाली स्थिति से निरूपित हैं।

The duration of life of 'Asura Kumar' (semi gods) has been said of two Palyopama. Barring the Indra of Asura Kumar the age of the remaining Bhavanpati (residential) gods has been mentioned a little less than two Palyopama. The age of the innumerable Varshayusk Sangi Panchendriya animals beings and innumerable Varshayusk Garbhopkrantic five sensed sangi human beings have been said of two-two Palyopama each.

१३–सोहम्मे कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं दो पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता। ईसाणे कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं दो पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता। सोहम्मे कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। ईसाणे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं साहियाइं दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। सणंकुमारे कप्पे देवाणं जहण्णेणं दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। माहिंदे कप्पे देवाणं जहण्णेणं साहियाई दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता।

सौधर्मकल्प के देव और ईशान कल्प के देव दो-दो पल्योपम वाली स्थिति के कहे गए हैं। सौधर्म कल्प में देवों की उत्कृष्ट स्थिति दो सागरोपम तथा ईशान कल्प में देवों की उत्कृष्ट स्थिति दो सागरोपम से कुछ अधिक कही गई है। सनत्कुमारकल्प के और माहेन्द्रकल्प के देवों की जघन्य स्थिति क्रमशः दो सागरोपम और दो सागरोपम से कुछ अधिक बताई गई है।

The duration of life of the celestial beings of Sodharma Kalp and Ishan Kalpa has been determined of two-two Palyopama. The maximum life span of the gods of the Sodharma Kalp has been said of two Sagropama and the maximum life span of the gods of the Ishan Kalp has been determinded a little more than two Sagropama. The minimum age of the gods of the Sanatkumar Kalp and Mahendra Kalp has been determinded of two Sagropama and a little more than two Sagropama respectively.

१४–जे देवा सुभं सुभकंतं सुभवण्णं सुभगंधं सुभलेस्सं सुभफासं सोहम्मवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसिं णं देवाणं उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। ते णं देवा दोण्हं

अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा। तेसिं णं देवाणं दोहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ। अत्थेगइया भवसिद्धियाजीवा जे दोहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

शुभ, शुभकान्त, शुभवर्ण, शुभगन्ध, शुभलेश्य, शुभ स्पर्श वाले सौधर्मावतंसक विशिष्ट विमानों के देवों की उत्कृष्ट स्थिति दो सागरोपम कही गई है। इन विमानों में उत्पन्न देव दो अर्धमासों में अर्थात् एक मास में आन-प्राण या उच्छ्वास-निःश्वास की क्रिया करते हैं। इन देवों में दो हजार वर्ष के उपरान्त आहार ग्रहण करने की इच्छा उत्पन्न होती है। कुछ भव्यसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो दो भव ग्रहण करके सिद्ध, बुद्ध, कर्मों से मुक्त तथा परम निर्वाण को प्राप्त होंगे तथा समस्त दुःखों का अन्त करेंगे।

The maximum life span of the gods of the Shubh, Shubhkant, Shubhvarsh, Shubhgandh, Shubhleshya and the exclusive vehicles of the auspicious touchable Shoudharmavtarsak god's has been said of two Sagropama, the gods who have reincarnated in these celestial vehicles inhale and exhale once in a month. The desire of these gods to take meal grows after two thousand years. A few are Bhavsidhik Jeeva (capable of salvations) who will become Sidh, Budh and be liberated from the bondage of Karma and attain Salvation after taking only two births in future. They will terminate all the miseries of life ultimately.

।। दूसरा समवाय समाप्त ।।

|| The End of Second Samvaya ||

तीसरा समवाय

The Third Samvaya

१५–तओ दंडा पण्णत्ता, तं जहा–मणदंडे वयदंडे कायदंडे। तओ गुत्तीओ पन्नत्ताओ, तं जहा–मणगुत्ती, वयगुत्ती, कायगुत्ती। तओ सल्ला पन्नत्ता। तं जहा–मायासल्ले णं नियाणसल्ले णं मिच्छादंसणसल्ले णं। तओ गारवा पन्नत्ता, तं जहा–इड्ढीगारवे णं रसगारवे णं सायागारवे णं। तओ विराहणा पन्नत्ता, तं जहा–नाणविराहणा दंसणविराहणा चरित्तविराहणा।

दण्ड (चारित्र रूप ऐश्वर्य का तिरस्कार होना तथा आत्मा का दण्डित होना) तीन प्रकार के गए हैं, यथा — १. मनदण्ड, २. वचन दण्ड, ३. कायदण्ड। गुप्ति (सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान पूर्वक मन, वचन और काया की प्रवृत्ति को अपने मार्ग में स्थापित करना अर्थात् अशुभ प्रवृत्ति को रोकना और शुभ प्रवृत्ति को करना) के तीन भेद हैं, यथा —१. मनगुप्ति, २. वचन गुप्ति, ३. कायगुप्ति। शल्य (अन्तरंग में वेदना या कष्ट देने वाली) के भी तीन भेद बताए गए हैं यथा —१. माया शल्य, २. निदान शल्य,

३. मिथ्यादर्शन शल्य। गौरव (अभिमान व लोभ आदि द्वारा अपनी आत्मा को गुरु या भारी बनाना) तीन रूपों में निरूपित है, यथा—१. ऋद्धि गौरव, २. रस गौरव, ३. साता गौरव। विराधना (सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन और सम्यग्चारित्र रूप रत्नत्रय का हनन) तीन भागों में बंटी हुई है, यथा—१. ज्ञान विराधना, २. दर्शन विराधना, ३. चारित्र विराधना।

Dand (to be disgraced of the grandeur of conduct and to be penalized of soul) has been said of three kinds as :—1. Dand of mind, 2. Dand of speech, 3. Dand of body Guptis (to establish the activities of mind, speech and body with right perception, right knowledge in its own path – it means to resist the inauspicious activities) are said to be three:—1. Control/Restrain of mind, 2. Restrain/Control of speech, 3. Control/Restrain of body. Shalya (thorns) (which gives inner pain) is of three kinds as :– 1. Deceitthorn, 2. Nidan Shalya (thorn), 3. False perception thorn. Gaurav(to make ones soul heavy through greed and conceit etc.) has been said of three kinds as :- 1. Gaurav of grandeur, 2. Gaurav of relief, 3. Gaurava of false faith (the destruction of three jewels i.e. right knowledge, right perception and right conduct). It has been divided into three Viradhnas (obstructions) as Knowledge Viradhna, Perception Viradhna and Conduct Viradhna.

१६—मिगसिरनक्खत्ते तितारे पन्नत्ते। पुस्सनक्खत्ते तितारे पन्नत्ते। जेट्ठानक्खत्ते तितारे पन्नत्ते। अभीइनक्खत्ते तितारे पन्नत्ते। सवणनक्खत्ते तितारे पन्नत्ते। अस्सिणिनक्खत्ते तितारे पन्नत्ते। भरणीनक्खत्ते तितारे पन्नत्ते।

मृगशिर, पुष्य, ज्येष्ठा, अभिजित्, श्रवण, अश्विनी और भरणी नामक नक्षत्र तीन-तीन तारों वाले कहे गए हैं।

The constellation name of Mrigsira, Pushya, Jyeshtha, Abhijit, Shravan, Ashvini and Bharini have three stars each.

१७—इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं णेरइयाणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता। दोच्चाए णं पुढवीए णेरइयाणं उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। तच्चाए णं पुढवीए णेरइयाणं जहण्णेणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता।

रत्नप्रभा पृथ्वी में नारकों की स्थिति तीन पल्योपम तथा शर्करा पृथ्वी में नारकों की उत्कृष्ट स्थिति तीन सागरोपम और वालुका पृथ्वी में नारकों की जघन्य स्थिति तीन सागरोपम बतायी गई है।

The life span of the hellish beings of Ratan Prabha hell has been said of three Palyopama and in the hell of Sharkara Prabha maximum age of hellish being is three Sagropama and the lifespan of the jeeva of third hell the 'Baluka', has been told minimum of three Sagropama.

१८-असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता। असंखिज्ज-वासाउयसन्नि पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता। असंखिज्जवासाउयसन्निगब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता।

असुरकुमार देवों की स्थिति तीन पल्योपम, असंख्यात वर्षायुष्क संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीवों की उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्योपम तथा असंख्यात वर्षायुष्क संज्ञी गर्भोपक्रान्तिक मनुष्यों की उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्योपम कही गई है।

The duration of the Asur Kumar (fiendish) god has been said of three Palyopama. Innumerable Varshpusk sangi Panchendriya animal beings have maximum age of three Palyopama and innumerable Varshpusk sangi Garbhokrantic human beings have the maximum life span of three Palyopama.

१९-सणंकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। जे देवा आभंकरं-पभंकरं आभंकर-पभंकरं चंदं चंदावत्तं चंदप्पभं चंदकंतं चंदवण्णं चंदलेसं चंदज्झयं चंदसिंगं चंदसिट्ठं चंदकूडं चंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसिं णं देवाणं उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, ते णं देवा तिण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा, तेसिं णं देवाणं तिहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे तिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति, बुज्झिस्संति, मुच्चिस्संति, परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

सनत्कुमार-माहेन्द्रकल्पों के देव तीन सागरोपम वाली स्थिति के कहे गए हैं। आभंकर, प्रभंकर, आभंकर-प्रभंकर, चन्द्र, चन्द्रावर्त, चन्द्रप्रभ, चन्द्रकान्त, चन्द्रवर्ण, चन्द्रलेश्य, चन्द्रध्वज, चन्द्रशृंग, चन्द्रसृष्ट, चन्द्रकूट और चन्द्रोत्तरावतंसक नामक विशिष्ट विमानों के देवों की उत्कृष्ट स्थिति तीन सागरोपम कही गई है। ये देव तीन अर्धमासों यानी पैंतालीस दिनों के अन्तराल में आन-प्राण अर्थात् उच्छ्वास-निःश्वास की प्रक्रिया अपनाते हैं। ये देव तीन हजार वर्ष के उपरान्त आहार की इच्छा रखते हैं।

कितने ही भव्यसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो तीन भव ग्रहण करने के उपरान्त सिद्ध, बुद्ध, कर्मों से मुक्त होंगे और परमनिर्वाण को प्राप्त करेंगे। ऐसे भव्यसिद्धिक जीव समस्त प्रकार के दुःखों का शमन (अन्त) करेंगे।

The celestial beings of the Sanat Kumar & Mahendra Kalpa have been said of the three Sagropama life span. The maximum duration of life of the gods of Abhyankar, Prabhyankar, Abhyankar-Prabhyankar, Chandra, Chandravrat, Chandraprabh, Chandrakant, Chandravarn, Chandraleshya, Chandradhvaj, Chandrasring, Chandrasrist, Chandrakoot, Chandravartansk celestial vehicles is said to be of three Sagropama. These above mentioned celestial beings adopt the process of inhaling and exhaling after passing the duration of 45 days. These gods show their desire to take food once after three thousand years.

These Bahavasidhik jeeva will attain 'Sidhi' (liberation) after taking three births. They will attain salvation, get liberation and achieve ultimate truth after their third reincarnation. Eventually these Bhavyasidhik jeeva will end all their miseries and sufferings.

।। तीसरा समवाय समाप्त ।।

(The End of Third Samvaya)

चौथा समवाय

The Fourth Samvaya

२०–चत्तारि कसाया पन्नत्ता, तं जहा–कोहकसाए माणकसाए मायाकसाए लोभकसाए। चत्तारि झाणा पन्नत्ता, तं जहा–अट्टज्झाणे रुद्दज्झाणे धम्मज्झाणे सुक्कज्झाणे। चत्तारि विकहाओ पन्नत्ताओ, तं जहा–इत्थिकहा भत्तकहा रायकहा देसकहा। चत्तारि सण्णा पन्नत्ता, तं जहा–आहारसण्णा भयसण्णा मेहुणसण्णा परिगहसण्णा। चउव्विहे बंधे पन्नत्ते, तं जहा–पगइबंधे ठिइबंधे अणुभावबंधे पएसबंधे। चउगाउए जोयणे पन्नत्ते।

कषाय (आत्मा के परिणामों को कलुषित करने वाले भाव) चार प्रकार के बताए गए हैं, यथा — १. क्रोध कषाय, २. मान कषाय, ३. माया कषाय, ४. लोभ कषाय। ध्यान (चित्त की एकाग्रता) के भी चार भेद निरूपित हैं, यथा — १. आर्त्तध्यान, २. रौद्रध्यान, ३. धर्मध्यान, ४. शुक्लध्यान। विकथा (राग-द्वेष वर्धक निरर्थक कथा) चार भागों में विभक्त है, यथा — १. स्त्रीकथा, २. भक्तकथा, ३. राजकथा, ४. देशकथा। संज्ञा (इन्द्रियों की विषय-प्रवृत्ति) के चार रूप बताए गए हैं, यथा — १. आहार संज्ञा, २. भय संज्ञा, ३. मैथुन संज्ञा, ४. परिग्रह संज्ञा। बन्ध (कर्मों का आत्मा के साथ सम्बद्ध होना) चार प्रकार के कहे गए हैं, यथा — १. प्रकृति बन्ध, २. स्थिति बन्ध, ३. अनुभाव बन्ध, ४. प्रदेश बन्ध। एक योजन चार गव्यूति (चार कोश) का कहा गया है।

Passions (to defile the disposition of soul) are said of four kinds as:— 1. Passion of Anger, 2. Passion of Conceit, 3. Passion of Deceit,4. Passion of Greed. Meditation/Contemplation (concentration of mind) is also said of four kinds as :—1. Aart Dhyan, 2. Raudra Dhyan, 3. Dharam Dhyan, 4. Shukla Dhyan.

Vikatha (baseless talks increasing of attachment and aversion) has been divided into four parts i.e. 1. Istri Katha (conversation about women), 2. Bhakt Katha (of food), 3. Raj Katha (politics), 4. Desh Katha (country). There are four forms of Sanjna (instincts) as :—1. Aahar (food) Sanjna, 2. Bhaya (fear) Sanjna, 3. Maithun (copulation) Sanjna, 4. Parigrih (material possessive) Sanjna. Bandh

(bondage of Karmas to the soul) has been said of four kinds as :- 1.Prakriti (nature of) Bandh, 2. Stithi (duration) Bandh, 3. Anubhav (potency) Bandh, 4. Pradeshik (space points) Bandh. One Yojan is measured equal to four Kos (four gayuti).

२१–अणुराहानक्खत्ते चउत्तारे पन्नत्ते, पुव्वासाढानक्खत्ते चउत्तारे पन्नत्ते। उत्तरासाढानक्खत्ते चउत्तारे पन्नत्ते।

तीन नक्षत्र—अनुराधा, पूर्वाषाढा और उत्तराषाढा, चार-चार तारों वाले कहे गए हैं।

Three constellations namely of Anuradha, Purvashadha and Uttrashadha have been said of four stars each.

२२–इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता। तच्चाए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चत्तारि सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

रत्नप्रभा पृथ्वी में और बालुकाप्रभा पृथ्वी में नारकों की स्थिति क्रमशः चार पल्योपम और चार सागरोपम कही गयी है। असुरकुमार देव चार पल्योपम की स्थिति के कहे गए हैं और सौधर्म-ईशान कल्पों में देवों की स्थिति चार पल्योपम की है।

The life span of the hellish beings of Rattan Prabha (hell) and Balukuprabha (hell) has been described of four Palyopama and four Sagropama duration respectively. The duration of life of Asur Kumar (fiendish) gods is said to be four Palyopama and the celestial beings of Sodharmik and Ishan Kalpahave the age of four Palyopama.

२३–सणंकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। जे देवा किट्ठिं सुकिट्ठिं किट्ठियावत्तं किट्ठिप्पभं किट्ठिजुत्तं किट्ठिवण्णं किट्ठिलेसं किट्ठिज्झयं किट्ठिसिंगं किट्ठिसिट्ठं किट्ठिकूडं किट्ठुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसिं णं देवाणं उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। ते णं देवा चउण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा, ऊससंति वा नीससंति वा। तेसिं देवाणं चउहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

सनत्कुमार-माहेन्द्र कल्पों के देव चार सागरोपम वाली स्थिति के कहे गए हैं। कृष्टि, सुकृष्टि, कृष्टि-आवर्त, कृष्टिप्रभ, कृष्टियुक्त, कृष्टिवर्ण, कृष्टिलेश्य, कृष्टिध्वज, कृष्टि शृंग, कृष्टि सृष्ट, कृष्टिकूट और कृष्टि-उत्तरावतंसक विमानों के देवों की उत्कृष्ट स्थिति चार सागरोपम से अभिव्यक्त है। वे चार अर्धमासों अर्थात् दो मास के अन्तराल में आन-प्राण अथवा उच्छ्वास-निःश्वास की क्रिया करते हैं। वे देव चार हजार वर्ष में आहार लेने की इच्छा रखते हैं।

The celestial beings of Sanat Kalpa and Mahendra Kalpa have been said of the age of four Sagropama. The maximum life span of rhe gods of the vehicle of Krishti, Sukrishti, Krishtivrat, Krishtiprabh, Krishtiyukta, Krishtivarna, Krishtileshya, Krishtidhvja, Krishtisrang, Krishtisarsth, Krishtikut and Krishtiuttravantsak are described of maximum life span of four Sagropama. They inhale and exhale once in a duration of two months. They desire for food once after completion of every four thousand years.

२४–अत्थेगइया भवसिद्धिया जीवा जे चउहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

कितने ही भव्य-सिद्धिक जीव चार भव लेंगे, इसके उपरान्त सिद्ध, बुद्ध और कर्मों से मुक्त होंगे और अन्ततः परम निर्वाण को प्राप्त होंगे। वे भव्यसिद्धिक जीव सर्वप्रकार के दुःखों-कष्टों का शमन अर्थात् अन्त करेंगे।

The beings of Bhavyasidhik will reincarnate only for four times in future. After it they will become Sidh, Budh and get salvation from the bondage of all the Karmas and in the end will attain liberation. These Bhavyasidhik beings will terminate all kinds of miseries.

॥ चौथा समवाय समाप्त ॥

(The End of Fourth Samvaya)

पांचवां समवाय

The Fifth Samvaya

२५–पंच किरिया पन्नत्ता, तं जहा–काइया अहिगरणिया पाउसिया पारितावणिआ पाणाइवाय-किरिया। पंच महव्वया पन्नत्ता, तं जहा–सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं, सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं।

पाँच प्रकार की क्रियाएँ (कर्मबन्ध में कारण बनने वाली चेष्टाएँ अर्थात् मन, वचन और काया के दुष्ट व्यापार-विशेष) उल्लिखित हैं, यथा — १. कायिकी क्रिया (शरीर से होने वाली चेष्टा), २. आधिकरणिकी क्रिया (हिंसा के अधिकरण तलवार, भाला आदि के निर्माण करने की क्रिया), ३. प्राद्वेषिकी क्रिया (प्रद्वेष या मत्सरभाव से अनुप्राणित क्रिया), ४. पारितापनिकी क्रिया (प्राणियों को कष्ट, ताड़न-परितापन आदि पहुँचाने वाली क्रिया), ५. प्राणातिपातक्रिया (प्राणियों के प्राण या घात

करने वाली क्रिया)। महाव्रत (समस्त प्रकार की हिंसादि का त्याग) पाँच प्रकार के बताए गए हैं, यथा — १. सर्व प्राणातिपात से विरमण, २. सर्व मृषावाद से विरमण, ३. सर्व अदत्तादान से विरमण, ४. सर्व मैथुन से विरमण, ५. सर्व परिग्रह से विरमण।

Five kinds of activities (endeavour that causes bondage of Karmas, it means the malicious action of mind, body and speech) are illustrated as :- 1. Physical Body Activity. 2. Adhikarini Kriya (activity of making some weapon like a sword, spear etc. for violence), 3. Pradveshki Kriya (the activity full of aversion), 4. Paritapaini Kriya (the activities which persecute, afflict, annoy, terrorize, torment other beings), 5. Pranipat Kriya (The activity that kills other). The great vows are described as five :- 1. Non- violence, 2. Truthfullness, 3. Non stealing, 4. Celebacy, 5. Non-possession.

२६–पंच कामगुणा पन्नत्ता, तं जहा–सद्दा रूवा रसा गंधा फासा। पंच आसवदारा पन्नत्ता, तं जहा–मिच्छत्तं अविरई पमाया कसाया जोगा। पंच संवरदारा पन्नत्ता, तं जहा–सम्मत्तं विरई अप्पमत्तया अकसाया अजोगया। पंच णिज्जरट्ठाणा पन्नत्ता, तं जहा–पाणाइवायाओ वेरमणं, मुसावायाओ वेरमणं, अदिन्नादाणाओ वेरमणं, मेहुणाओ वेरमणं, परिग्गहाओ वेरमणं। पंच समिईओ पन्नत्ताओ, तं जहा–ईरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाणभंडमत्त-निक्खेवणासमिई, उच्चार पासवण-खेल-सिंघाण-जल्लपारिट्ठावणियासमिई।

पांच प्रकार के काम गुण (इन्द्रियों के विषय) बताए गए हैं, यथा — १. शब्द (श्रोत्रेन्द्रिय का विषय), २. रूप (चक्षुरिन्द्रिय का विषय), ३. रस (रसनेन्द्रिय का विषय), ४. गन्ध (घ्राणेन्द्रिय का विषय), ४. स्पर्श (स्पर्शनेन्द्रिय का विषय)। आस्रवद्वार (कर्मों के आगमन के मार्ग) पाँच प्रकार के कहे गए हैं, यथा — १. मिथ्यात्व, २. अविरति, ३. प्रमाद, ४. कषाय, ५. योग। संवर द्वार (कर्मों को रोकने के उपाय) पाँच प्रकार के हैं, यथा — १. सम्यक्त्व, २. विरति, ३. अप्रमत्तता, ४. अकषायता, ५. अयोगता (योगों की प्रवृत्ति का निरोध)। निर्जरा (संचित कर्मों से छूटने की विधि) पाँच प्रकार की कही गई है, यथा — १. प्राणातिपात-विरमण, २. मृषावाद-विरमण, ३. अदत्तादान विरमण, ४. मैथुन-विरमण, ५. परिग्रह-विरमण। पाँच समितियाँ (सम्यक् प्रवृत्तियाँ अथवा यतना पूर्वक की जाने वाली प्रवृत्तियाँ) निरूपित हैं, यथा — १. ईर्या समिति (गमनागमन में सावधानी रखना), २. भाषा समिति, ३. एषणा समिति (अनुद्दिष्ट भिक्षा ग्रहण करना अथवा गोचरी में सावधानी रखना), ४. आदानभांडमात्र निक्षेपणा समिति (संयम के साधक वस्त्रादि ग्रहण करने और रखने में सावधानी रखना), ५. प्रतिष्ठापना समिति (मल-मूत्रादि परित्याग करने में सावधानी रखना)।

Kaam Guna (Sensual pleasures) has been told of five kinds as :-1. Word (pleasure of ear), 2. Form (the virtue of eyes) 3. Taste (the enjoyment of tongue), 4. Touch (the attraction of skin), 5. Smell (the pleasure of nose). Asravdwar (the

inflow of Karmas) are said to be five as :- 1. Wrong perception (Mithyatva), 2. Avirati (Non-restraint), 3. Pramada (inertia), 4. Kshaya (passion), 5. Yoga (activities of mind, body and speech). Samvar Dvar (stoppage of influx of Karmas) 1. right perception, 2. Avow, 3. Alertness (Non-laxity) absence of Pramada, 4. Non passion (Akashaya), 5. Ayoga (restraint of body, speech and mind). Nirjra (the way or method of destroying the accumulated Karmas) are said to be of five kinds :–1. Absolute resistance of violence, 2. Absolute avoidance of telling lies, 3. Absolute avoidance (resistance) of stealing, 4. Absolute celebacy, 5. Absolute avoidance (resistance) of possesiveness. There are five Samities (Attitude of carefulness) (Activities which are performed with full attention or right tendency) as :—1. Irya Samiti (regulation of movement), 2. Bhasha Samiti (carefulness of language), 3. Eshna Samiti (to take food that is not specially prepared for ascetic or to be careful during seeking alms), 4. Aadan-Bhand-Matra Nikshepan Samiti (to be careful in making bed and taking clothes for ascetic), 5.Pratisthapna Samiti (to be careful at the time of nature call in using right place for it)

२७–पंच अत्थिकाया पन्नत्ता, तं जहा–धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए।

अस्तिकाय द्रव्य (बहुप्रदेशी द्रव्य) पाँच प्रकार के बताए गए हैं, यथा —१. धर्मास्तिकाय द्रव्य, २. अधर्मास्तिकाय द्रव्य, ३. आकाशास्तिकाय द्रव्य, ४. जीवास्तिकाय द्रव्य, ५. पुद्‌गलास्तिकाय द्रव्य।

विशेष–इन द्रव्यों में धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय असंख्यात प्रदेशी, आकाशास्तिकाय अनन्त प्रदेशी, जीवास्तिकाय असंख्यात प्रदेशी तथा पुद्‌गलास्तिकाय संख्यात, असंख्यात और अनन्तप्रदेशी होते हैं।

Multi space-point matter—Astikaya dravya has been told of five types i.e. 1. Dharmastikaya (medium of movement), 2.Adharmastikaya (medium of rest), 3. Aakashstikaya (space), 4. Pudglastikaya (matter), 5. Jeevastikaya (living beings).

Note : In these Dravyas Dharmastikaya (medium of movement) & Adharmastikaya (medium of rest) are said of innumerable space points, Aakashstikaya (space)are infinite space point, Jeevastikaya (living beings are of innumerable space points and Puglastikaya (matter) has numerable, innumerable and infinite space points.

२८–रोहिणीनक्खत्ते पंचतारे पन्नत्ते। पुणव्वसुनक्खत्ते पंचतारे पन्नत्ते। हत्थनक्खत्ते पंचतारे पन्नत्ते, विसाहानक्खत्ते पंचतारे पन्नत्ते, धणिट्ठानक्खत्ते पंचतारे पन्नत्ते।

नक्षत्रों में रोहिणी, पुनर्वसु, हस्त, विशाखा और धनिष्ठा नक्षत्र पाँच-पाँच तारों वाले कहे गए हैं।

The constellations named Rohini, Punarvasu, Hast, Vishakha and Dhanishtha have been said of five stars each.

२९–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पंच पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता। तच्चाए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पंच सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं पंच पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं पंच पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता।

रत्नप्रभापृथ्वी तथा बालुकाप्रभा पृथ्वी के कितने ही नारकों की स्थिति क्रमशः पाँच पल्योपम तथा पाँच सागरोपम कही गई है। सौधर्म-ईशान कल्पों के कितने ही देव पाँच पल्योपम स्थिति के कहे गए हैं।

The life duration of the hellish beings of the Ratanprabha and Baluka-prabha hells have been described of five Palyopama and five Sagropama respectively. The age duration of the celestial beings of the Sodharma and Ishan kalpas has been said of five Palyopama.

३०–सणंकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं पंच सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। जे देवा वायं सुवायं वायावत्तं वायप्पभं वायकंतं वायवण्णं वायलेसं वायज्झयं वायसिंगं वायसिट्ठं वायकूडं वाउत्तरवडिंसगं सूरं सुसूरं सूरावत्तं सूरप्पभं सूरकंतं सूरवण्णं सूरलेसं सूरज्झयं सूरसिंगं सूरसिट्ठं सूरकूडं सूरूत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसिं णं देवाणं उक्कोसेणं पंच सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। ते णं देवा पंचण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा, ऊससंति वा नीससंति वा, तेसिं णं देवाणं पंचहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे पंचहि भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

सनत्कुमार-माहेन्द्र कल्पों के कितने ही देव पाँच सागरोपम स्थिति वाले कहे गए हैं। वात, सुवात, वातावर्त, वातप्रभ, वातकान्त, वातवर्ण, वातलेश्य, वातध्वज, वातशृंग, वातसृष्ट, वातकूट, वातोत्तरावतंसक, सूर, सुसूर, सूरावर्त, सूरप्रभ, सूरकान्त, सूरवर्ण, सूर लेश्य, सूरध्वज, सूरशृंग, सूरसृष्ट, सूरकूट और सूरोत्तरावतंसक नामक चौबीस विशिष्ट विमानों के देवों की उत्कृष्ट स्थिति पाँच सागरोपम बतायी गई है। वे देव पाँच अर्धमासों (ढाई मास) में उच्छ्वास-निःश्वास अर्थात् आन-प्रान की क्रियाएँ करते हैं। वे देव पाँच हजार वर्ष के अन्तराल से आहार की इच्छा रखते हैं।

कितने ही भव्य सिद्धिक जीव पाँच भव ग्रहण करेंगे, इसके उपरान्त सिद्ध, बुद्ध, तथा कर्मों से मुक्त होंगे। कर्ममुक्त होकर परम निर्वाण को प्राप्त होंगे। वे भव्यसिद्धिक जीव समस्त दुःखों का शमन (अन्त) करेंगे।

The life span of the celestial beings of the Sanath Kumar and Mahendra Kalpa have been said of five thousand Sagropama duration. The maximum life span of the celestial beings of the special 24 celestial vehicles named Vat, Suvat, Vatvrat, Vatprabh, Vatkant, Vatvarn, Vatleshya, Vatdhvja, Vatsring, Vatsrisht, Vatkut, Vatoktaravantsk, Soor, Susoor, Soorvrat, Soorprabh, Soorkant, Soorvarn, Soorleshya, Soordhvja, Soorsring, Soorsrisht, Soorkut, Sooravantaravantsk has been described of a duration of five-five thousand Sagropama each. They inhale and exhale or do the activity of breathing in and breathing out is after the passage of five fortnight means after two and a half months. The beings capable of salvation will take five births in future and after that they will attain liberation getting abandoned all the accumulated Karmas of previous lives. They will attain the state of absolute emancipation after that. Thereafter all they would destroy all their miseries and sufferings.

।। पांचवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Fifth Samvaya)

छठा समवाय

The Sixth Samvaya

३१–छ लेसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–कण्हलेसा नीललेसा काउलेसा तेउलेसा पम्हलेसा सुक्कलेसा। छ जीवनिकाया पण्णत्ता, तं जहा–पुढवीकाए आऊकाए तेउकाए वाउकाए वणस्सइकाए तसकाए। छव्विहे बाहिरे तवोकम्मे पण्णत्ते, तं जहा–अणसणे ऊणोयरिया वित्तीसंखेवो रसपरिच्चाओ कायकिलेसो संलीणया। छव्विहे अभिंतरे तवोकम्मे पण्णत्ते, तं जहा–पायच्छित्तं विणओ वेयावच्चं सज्झाओ झाणं उस्सग्गो।

लेश्याएँ (तीव्र-मन्दादि रूप कषायों के उदय से तथा कृष्ण आदि द्रव्यों के सहयोग से आत्मा की परिणति) छह प्रकार की कही गई हैं, यथा —१. कृष्ण लेश्या (अतिसंक्लेश रूप रौद्र परिणाम), २. नील लेश्या (संक्लेशरूप रौद्र परिणाम), ३. कापोत लेश्या (मंद सक्लेश रूप आर्त्तध्यान रूप परिणाम), ४. तेजो लेश्या (दान, परोपकार आदि से उत्पन्न शुभ परिणाम), ५. पद्म लेश्या (विवेक, प्रशम भाव, संवेग के जागरण से उत्पन्न परिणाम), ६. शुक्ल लेश्या (निर्मलता का होना)। जीवनिकायों (समुदायों) की संख्या छह मानी गई है यथा —१. पृथ्वीकाय, २. अप्काय, ३. तेजस्काय, ४. वायुकाय, ५. वनस्पतिकाय, ६. त्रसकाय। ये जीव संसारी जीव हैं। बाह्य तपों की संख्या भी छह बतायी गई है, यथा —१. अनशन तप, २. ऊनोदर्य तप, ३. वृत्ति संक्षेप तप, ४. रसपरित्याग पत, ५. कायक्लेश तप,

६. संलीनता तप। इसी प्रकार आभ्यन्तर तप भी छह बताए गए हैं, यथा — १. प्रायश्चित्त, २. विनय, ३. वैयावृत्य, ४. स्वाध्याय, ५. ध्यान, ६. व्युत्सर्ग। इन दो प्रकार के तपों में बाह्यतप, अन्तरंग तपों की वृद्धि के कारण हैं तथा अन्तरंग तप, असंख्यात गुणी कर्म-निर्जरा के हेतु कहे गए हैं।

Leshyas (thought colouration) – (the appearance of soul due to the effect of high and low passion or consequence of black or bright coloured matter etc.) are said to be of six types i.e. 1. Dark Black Leshya (due to the result of extra outrage state), 2. Neel Leshya (due to outrage's outcome), 3. Kapot Leshya (the result of contemplation of misery with mild anger), 4. Tejo Leshya (auspicious disposition cultivated through charity & benevolence), 5. Padma Leshya (result arising from the awakening wisdom, peaceful disposition and contemplation), 6. Shukla Leshya (absolute purity). The number of Jeevanikaya (living beings) has been told six i.e. 1. Earth-bodied, 2. Water-bodied, 3. Fire-bodied, 4. Air-bodied, 5. Plant-beings, 6. Moveable beings. All these jeevas (beings) are worldly jeevas. Bahya Taps (external austerities) are said to be of six kinds i.e. 1. Ansan Tap (observing fast), 2. Unodari Tap (to eat less than appetite), 3. Variti Sankshep Tap, 4. Rasparv Tyag Tap (to seek unsavoury food or undelicious food), 5. Kaya Klesh Tap (not caring and tolerating the affliction of body), 6. Samlipt Tap (to control the sensual pleasures). In this way the types of the inner Taps are also said of to be six i.e. 1. Prayschita (expiation), 2.Vinaya (submissiveness), 3. Vayyavachch (service), 4. Swadhyaya (study of scriptures), 5. Dhyan (meditation), 6. Vayutsarga (Nonattachment). The external austerities are the base of the enhancement of inner austerities, these inner austerities are said to be the cause of Karma Nirjara (destruction of accumulated Karmas).

३२–छ छाउमत्थिया समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा–वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घए मारणंतिअसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए तेयसमुग्घाए आहारसमुग्घाए।

छाद्मस्थिक (केवलज्ञान की पूर्वावस्था वाले समस्त जीव) समुद्घात (निमित्त के माध्यम से जीवों के कुछ प्रदेशों का बाहर निकलना) छह प्रकार के कहे गए हैं, यथा — १. वेदना समुद्घात (वेदना होने पर कुछ जीव प्रदेशों का बाहर निकलना), २. कषाय समुद्घात (कषायिक तीव्रता में कुछ जीव-प्रदेशों का बाहर निकलना), ३. मारणान्तिक समुद्घात (मृत्यु से पूर्व कुछ जीव-प्रदेशों का बाहर निकलना), ४. वैक्रिय समुद्घात (अणिमादि विक्रिया के समय जीव प्रदेशों का फैलना), ५. तैजस समुद्घात (तेजोलब्धि का प्रयोग करते हुए जीव प्रदेशों का बाहर निकलना), ६. आहारक समुद्घात (चौदह पूर्वों के ज्ञाता महामुनि के तत्त्व-शंका के समाधान हेतु केवली भगवान के अभाव के कारण उन तक पहुँचने के लिए मस्तक से एक हाथ के पुतले का निकलना)।

Chhadmasthic (The entire jeevas having the prestate of Kewal Gyan [absolute knowledge]) Samudghat - soul of the space points of jeevas to come out through some direct cause [Nimita] are said to be of six types i.e. 1. Vaidana Samudghat (A few space point of the jeeva come out of the body due to Vaidana), 2. Kashaya Samudghat (To come out some of the jeeva's space point due to passion's effect), 3. Marnantik Samudghat (Before death a few space pointof jeeva come out of the body), 4. Vaikriya Samudghat (Expansionof space point of jeeva at the time of Vaikriya state of body), 5. Tejas Samudghat (Coming out of some space point of jeeva while using the force of Tejas Labdhi), 6. Aaharak Samudghat (In the absence of Bhagwan Kewali, to get removed some of his doubts, the great saints having the knowledge of 14 Purvas, reach out upto the Tirthankara of Mahavideh Kshetra produce an effigy out of his brain in the form of Aaharukshaur [conveyance body] of the size of equal to one hand [cubit].

३३–छव्विहे अत्थुग्गहे पण्णत्ते, तं जहा–सोइंदियअत्थुग्गहे चक्खुइंदियअत्थुग्गहे घाणिंदियअत्थुग्गहे जिब्भिंदियअत्थुग्गहे फासिंदियअत्थुग्गहे नोइंदियअत्थुग्गहे।

अर्थावग्रह (व्यञ्जनावग्रह के उपरान्त अर्थ का ग्रहण अथवा वस्तु का सामान्य ज्ञान) की संख्या छह बतायी गई है, यथा — १. श्रोत्रेन्द्रिय अर्थावग्रह, २. चक्षुरिन्द्रिय अर्थावग्रह, ३. घ्राणेन्द्रिय अर्थावग्रह, ४. जिह्वेन्द्रिय अर्थावग्रह, ५. स्पर्शनेन्द्रिय अर्थावग्रह, ६. नोइन्द्रिय अर्थावग्रह।

Arthavagraha [object awareness] (second is Vyanjanavagraha [contact awareness] Arthavagraha means the general knowledge of matter). It has been told six in numbers. 1. Shrotendriya Arthavagraha (comprehension through ear), 2. Chakshuendriya Arthavagraha (comprehension through eyes), 3. Ghranendriya Arthavagraha (comprehension through nose), 4. Jivhaendriya Arthavagraha (knowledge through tongue), 5. Sparshendriya Arthavagraha (comprehension through skin), 6. NoendriyaArthavagraha (knowledge through mind).

३४–कत्तियाणक्खत्ते छत्तारे पण्णत्ते। असिलेसानखत्ते छत्तारे पण्णत्ते।

नक्षत्रों में कृत्तिका और आश्लेषा नक्षत्र छह-छह तारों वाले बताए गए हैं।

Constellations named Krittika and Ashlesha have been told of six types each.

३५–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। तच्चाए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं छ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं छ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

रत्नप्रभा पृथ्वी में कितने ही नारक छह पल्योपम तथा बालुका प्रभा पृथ्वी में कितने ही नारक छह सागरोपम की स्थिति के कहे गए हैं। असुरकुमार तथा सौधर्म-ईशान कल्पों के कितने ही देव छह-छह पल्योपम की स्थिति वाले कहे गए हैं।

The hellish beings of Ratanprabha and Balukaprabha hell have been described of six Palyopama and six Sagropama duration respectively. The life span of Asurkumar (fiendish) and celestial beings of Sodharma kalpa and Ishan kalpa have been said of six Palyopama duration each.

३६–सणंकुमार-माहिंदेसु [कप्पेसु] अत्थेगइयाणं देवाणं छ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। जे देवा सयंभुं सयंभुरमणं घोसं सुघोसं महाघोसं किट्ठिघोसं वीरं सुवीरं वीरगतं वीरसेणियं वीरावत्तं वीरप्पभं वीरकंतं वीरवण्णं वीरलेसं वीरज्झयं वीरसिंगं वीरसिट्ठं वीरकूडं वीरुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसिं णं देवाणं उक्कोसेणं छ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। ते णं देवा छण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा, ऊससंति वा नीससंति वा, तेसिं णं देवाणं छहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे छहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्पों के कितने ही देवों की स्थिति छह सागरोपम है। इतनी ही उत्कृष्ट स्थिति उन देवों की है जो विशिष्ट विमानों में देवरूप में उत्पन्न होते हैं। उन विशिष्ट विमानों के नाम इस प्रकार हैं — स्वयम्भू, स्वयम्भूरमण, घोष, सुघोष, महाघोष, कृष्टिघोष, वीर, सुवीर, वीरगत, वीर-श्रेणिक, वीरावर्त, वीरप्रभ, वीरकान्त, वीरवर्ण, वीर-लेश्य, वीरध्वज, वीर शृंग, वीर सृष्ट, वीरकूट, और वीरोत्तरावतंसक। वे देव छह अर्धमासों अर्थात् तीन मासों के अन्तराल में उच्छ्वास-निःश्वास अथवा आन-प्राण की क्रियाएँ करते हैं। छह हजार वर्षों के उपरान्त वे देव आहार की इच्छा रखते हैं।

कितने ही भव्यसिद्धिक जीव छह भवों को ग्रहण करने के उपरान्त सिद्ध, बुद्ध व कर्मों से मुक्त होंगे। तदुपरान्त परम निर्वाण को प्राप्त होंगे। वे जीव अन्ततः समस्त दुःखों का शमन (अन्त) करेंगे।

The duration of the life of the celestial being of the Sanat Kumar and Mahendra Kalpa is six Sagropama. The same maximum lifespan is said of the celestial beings who reincarnated in the exclusive celestial vehicles of gods. The name of the special (exclusive) vehicles of gods are as follows :- Devswayambhu, Swayambhuraman, Ghos, Sughos, Mahaghos, Krishthghos, Veer, Suveer, Veergat, Veershrenik, Veervrata, Veerprabh, Veerkant, Veervarn, Veerlesya, Veerdhvaj, Veershring, Veershristh, Veerkut and Veeravantashk. All these gods inhale and exhale once after completion of three months. They need food once after three thousand years.

सात प्रकार के भय

1. इहलोक भय
2. परलोक भय
3. आदान भय
मेरा धन कोई चुरा तो नहीं लेगा!
4. अकस्मात् भय
5. मरण भय
6. आजीव भय
इस नये शहर में मुझे नौकरी मिलेगी या नहीं!
7. अपयश भय
अगर मैं पकड़ा गया तो मेरा बहुत अपयश होगा!

सात प्रकार के भय

मोहनीय कर्म की प्रकृति के उदय से उत्पन्न हुए आत्मा के परिणामविशेष को भय कहते हैं। इसके परिणामस्वरूप प्राणी डरने लगता है। भय के कारणों को भयस्थान कहते हैं। वे सात हैं। भय की अवस्था वास्तविक घटना होने से पहले उसकी कल्पना से पैदा होती है। सात भयस्थान इस प्रकार हैं–

1. **इहलोक भय**–अपनी ही जाति के प्राणी से डरना इहलोक भय है। जैसे-मनुष्य का मनुष्य से, देव का देव से, तिर्यंच का तिर्यंच से और नारकी का नारकी से डरना।
2. **परलोक भय**–दूसरी जाति के जीवों से डरना परलोक भय है। जैसे-मनुष्य का देव से डरना परलोक भय है।
3. **आदान भय**–धन की रक्षा के लिए चोर आदि से भय।
4. **अकस्मात् भय**–बिना किसी बाह्य कारण के अचानक अपने ही मानसिक विकल्पों से डर लगना अकस्मात् भय है।
5. **आजीव भय**–अपनी आजीविका के सम्बन्ध में भय।
6. **मरण भय**–मृत्यु का भय।
7. **अश्लोक अथवा अपयश भय**–निन्दा या अपकीर्ति का भय।

–समवाय 7, सूत्र 37

Seven Places of Fear

The acquired result of the soul that has been brought about from the rise of the Tendencies of delusion is called "Fear". The causes of the fear are called the places of the fear. Those are seven in numbers. The state of fear occurs in imagination well before it takes place in reality, the seven fears are as follows:

1. Fear of Ihloka : Fear from the creature of the same race is called Ihloka Bhay, i.e., the human beings from the human beings, the gods from gods, the animals from animals and the hellish beings from hellish beings.
2. Fear of the Par-loka : The fear of the other paces as : Fear to human beings from god is called Par-loka Fear.
3. Aadan Fear: The fear of thief for the protection of wealth.
4. Akasmat Fear : Fear of his own mental ambiguity without any outside disturbances.
5. Ajeeva Fear : The fear of his own livelihood.
6. Maran Fear : The fear of death.
7. Ashloka or Apyosha Fear : The fear of blame and defamation.

Samvayang 7, Sutra 37

Capable of salvation (Bhavyasidhik jeevas) beings will get Sidhi, become Budh (enlightened) and will be liberated from the bondage of Karmas after completion of six reincarnations in future. After that they will attain the state of Nirvana. Eventually they would end all of their miseries and sufferings.

।। छठा समवाय समाप्त

(The End of Sixth Samvaya)

सातवां समवाय

The Seventh Samvaya

३७– सत्त भयट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा–इहलोगभए परलोगभए आदाणभए अकम्हाभए आजीवभए मरणभए असिलोगभए। सत्त समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा–वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए तेयसमुग्घाए आहारसमुग्घाए केवलिसमुग्घाए।

भय-स्थान सात प्रकार के कहे गए हैं, यथा — १. इहलोक भय, २. परलोक भय, ३. आदान भय, ४. अकस्मात् भय, ५. आजीव भय (जीविका सम्बन्धी भय), ६. मरण भय, ७. अश्लोक भय (निन्दा या अपकीर्त्ति का भय)। समुद्घातों की संख्या सात बतायी गई है यथा — १. वेदना समुद्घात, २. कषाय समुद्घात, ३. मारणान्तिक समुद्घात, ४. वैक्रिय समुद्घात, ५. तेजस समुद्घात, ६. आहारक समुद्घात, ७. केवलि समुद्घात।

The fears (Bhaya) have been said of seven types i.e. 1. Ihloka Bhaya (The fear of this world), 2. Parloka Bhaya (The fear of otherworld), 3. Aadan Bhaya (The fear of taking something), 4. Aksmat Bhaya (The fear of sudden happening), 5. Ajeevika Bhaya (The fear of earning of livelihood), 6. Marana Bhaya (The fear of death), 7. Asloka Bhaya (The fear of humiliation and criticism). The number of Samudghat has been told of seven types i.e. 1. Vedna Samudghat, 2. Kshaya Samudghat, 3. Marnantik Samudghat, 4.Vaikriya Samudghat, 5. Tejas Samudghat, 6. Aaharak Samudghat, 7. Kewali Samudghat (Expansion of space point of the jeeva throughout the three realms (lokas) at the time of attaining the absolute knowledge Kewal Gyan (omniscience).

३८– समणे भगवं महावीरे सत्त रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेण होत्था।

श्रमण भगवान महावीर का शरीर सात रत्नि–हाथ प्रमाण ऊँचा था।

The height of the body of Shri Mahavira Bhagwan was equal to seven cubit.

३९–इहेव जंबुद्दीवे दीवे सत्त वासहरपव्वया पण्णत्ता, तं जहा–चुल्लहिमवंते महाहिमवंते निसढे नीलवंते रुप्पी सिहरी मन्दरे। इहेव जंबुद्दीवे दीवे सत्त वासा पण्णत्ता, तं जहा–भरहे हेमवते हरिवासे महाविदेहे रम्मए एरण्णवए एरवए।

जम्बूद्वीप में सात वर्षधर पर्वत कहे गए हैं, यथा — १. क्षुल्लक हिमवंत, २. महाहिमवंत, ३. निषध, ४. नीलवंत, ५. रुक्मी, ६. शिखरी, ७. मन्दर (सुमेरु पर्वत)। इस जम्बूद्वीप में क्षेत्रों की संख्या सात बतायी गई है, यथा — १. भरत क्षेत्र, २. हैमवत क्षेत्र, ३. हरिवर्ष क्षेत्र, ४. महाविदेह क्षेत्र, ५. रम्यक क्षेत्र, ६. ऐरण्यवत क्षेत्र, ७. ऐरवत क्षेत्र।

In Jambu Continent seven kinds of Varsdhar (Mountains) are described i.e. 1. Kshulak Himvant, 2. Mahahimvant, 3. Nishadh, 4. Neelvant, 5. Rukmi, 6. Shikhari, 7. Mandar (Sumeru Mountain).The number of regions (Kshetras) are seven in the continent of Jambu i.e. 1. Bharat Kshetra, 2. Himvant Kshetra, 3. HarivarsakKshetra, 4. Mahavideh Kshetra, 5. Ramyak Kshetra, 6. Airanyavat Kshetra, 7. Airavat Kshetra.

४०–खीणमोहेणं भगवया मोहणिज्जवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ वेए (ज) ई।

बारहवें गुणस्थान में पहुँचकर साधक क्षीण मोह वीतराग मोहनीय कर्म का वेदन नहीं करते हैं। वे शेष सात कर्मों का वेदन करते हैं।

The seeker having reached in the 12th Gunsthan (spiritual purification) does not experience the Kshin Mohania (delusion subsidence) and the Karmas of unattached delusions (Vitraaga Mohaniya Karmas) as he has destroyed deluding karma. He experiences remaining seven Karmas.

४१–महानक्खत्ते सत्ततारे पण्णत्ते। कत्तिआइआ सत्तनक्खत्ता पुव्वदारिआ पण्णत्ता। [पाठा०–अभियाइया सत्त नक्खत्ता]। महाइया सत्त नक्खत्ता दाहिणदारिआ पण्णत्ता। अणुराहाइआ सत्त नक्खत्ता अवरदारिआ पण्णत्ता। धणिट्ठाइया सत्त नक्खत्ता उत्तरदारिआ पण्णत्ता।

मघा, कृत्तिका, अनुराधा, धनिष्ठा नक्षत्रों के सात-सात तारे व नक्षत्र कहे गए हैं। जिनमें कृत्तिका आदि सात नक्षत्र पूर्व दिशा की ओर द्वार वाले कहे गए हैं। जबकि पाठान्तर के अनुसार अभिजित् आदि सात नक्षत्र पूर्व दिशा की ओर द्वार वाले बताए गए हैं। मघा आदि सात नक्षत्र, अनुराधा आदि सात नक्षत्र तथा धनिष्ठा आदि सात नक्षत्र क्रमशः दक्षिण दिशा की ओर द्वार वाले, पश्चिम दिशा की ओर द्वार वाले तथा उत्तर दिशा की ओर द्वार वाले कहे गए हैं।

The stars and nakshtras of the Magha, Krittika, Anuradha andDhanishtha constellations have been told seven each. Out of them the Krittika etc. seven

constellations are said to be having their entrance gates in the East. Some say that the gates of the seven constellations including Abhijit etc. are situated in the East including Magha. Seven constellations, seven nakshtra including Anuradha and seven constellations including Dhanishtha are the Nakshtra having their gates in the directions of South, West and North respectively.

४२–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्त पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। तच्चाए णं पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। चउत्थीए णं पुढवीए नेरइयाणं जहण्णेणं सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्त पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सत्त पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। सणंकुमारे कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। माहिंदे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं साइरेगाइं सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

रत्नप्रभा पृथ्वी में कितने ही नारक सात पल्योपम वाली स्थिति के कहे गए हैं। बालुका पृथ्वी में नारक सात सागरोपम वाली उत्कृष्ट स्थिति के कहे गए हैं। पंक प्रभा-पृथ्वी में नारक सात सागरोपम वाली जघन्य स्थिति के हैं। असुरकुमार देवों तथा सौधर्म-ईशान कल्पों के देवों की स्थिति सात-सात पल्योपम की कही गई है। सनत्कुमार कल्प और माहेन्द्र कल्प के देवों की उत्कृष्ट स्थिति क्रमशः सात सागरोपम और सात सागरोपम से कुछ अधिक है।

The beings of the Ratanprabha hell have been told of the life span of seven Palyopama. The maximum life span of the beings of the Balukaprabh hell has been said of seven Sagropama duration. The life span of the gods of Asurkumar and Sodharma - Ishankalpa has been said of maximum of seven Sagropama and the maximum life span of gods of Mahendra Kalp and Sand Karma Kalpa is little more than seven Sagropama respectively.

४३–बंभलोए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं सत्त साहिया सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। जे देवा समं समप्पभं महापभं पभासं भासुरं विमलं कंचणकूडं सणंकुमारवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसिं णं देवाणं उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। ते णं देवा सत्तण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा, तेसिं णं देवाणं सत्तहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

संतेगइया भवसिद्धिया जीव जे णं सत्तहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

ब्रह्मलोक के कितने ही देव सात सागरोपम से कुछ अधिक स्थिति वाले बताए गए हैं। जो देव विशिष्ट विमानों में देवरूप से उत्पन्न होते हैं, उनकी उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपम है। इन विशिष्ट

विमानों की संख्या आठ बतायी गई है, यथा — १. सम, २. समप्रभ, ३. महाप्रभ, ४. प्रभास, ५. भासुर, ६. विमल, ७. कांचन कूट, ८. सनत्कुमारावतंसक। वे देव सात अर्धमासों यानि साढ़े तीन मासों के अन्तराल में उच्छ्वास-निःश्वास अथवा आण-प्राण की क्रियाएँ सम्पन्न करते हैं। वे देव सात हजार वर्षों के उपरान्त आहार की इच्छा रखते हैं।

कितने ही भव्य सिद्धिक जीव सात भव ग्रहण करेंगे। इसके उपरान्त वे सिद्ध, बुद्ध होंगे। वे कर्मों से मुक्त होकर परम निर्वाण को प्राप्त होंगे। वे देव सर्व प्रकार के दुःखों का शमन (अन्त) करेंगे।

The celestial beings of the Brahma Loka are said to be having the lifespan of a little more than seven Sagropama. The gods who are reincarnated into the (specific) vehicles of celestial beings have a life span of seven Sagropama. The number of these special vehicles has been stated to be eight i.e., 1. Sam, 2. Samprabh, 3.Mahaprabh, 4. Prabhas, 5. Bhasur, 6. Vimal, 7. Kanchankut, 8.Sanatkumaravantsak. The celestial beings of these special celestial vehicles inhale and exhale once after the completion of three and a half months. They desire foods once after the passage of seven thousand years.

These Bhavsidhik jeevas (capable of salvation) will take birth only for seven Bhava. After that they will become Sidha and Budha. Getting liberated from all the accumulated Karmas they will get ultimate Nirvana. Ultimately these gods will end all their miseries.

।। सातवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Seventh Samvaya)

आठवां समवाय

The Eighth Samvaya

४४–अट्ठमयट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा–जातिमए कुलमए बलमए रूवमए तवमए सुयमए लाभमए इस्सरियमए। अट्ठ पवयणमायाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–ईरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाणभंडमत्तणिक्खेवणासमिई उच्चार-पासवण-खेल-जल्ल-सिंघाणपारिट्ठा-वणियासमिई मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती।

मद स्थानों (अहंकार या अभिमान के कारणभूत स्थान) की संख्या आठ बतायी गई है, यथा — १. जाति मद, २. कुल मद, ३. बल मद, ४. रूप मद, ५. तपो मद, ६. श्रुत मद, ७. लाभ मद, ८. ऐश्वर्य मद। प्रवचन माताएँ (माता की तरह द्वादशांग प्रवचनों की रक्षिका) आठ हैं। यथा — १. ईर्या समिति, २. भाषा समिति, ३. एषणा समिति, ४. आदान-भांड-मात्र निक्षेपणा समिति, ५. उच्चार-प्रस्रवण-खेल-जल्ल-सिंघाण-परिष्ठापन समिति, ६. मनो गुप्ति, ७. वचन गुप्ति, ८. काय गुप्ति।

Maddsthan—Pride (The root cause of ego and pride) has been told eight in number i.e. 1. Jati Madd (pride of creed), 2. Kul Madd (pride of clan), 3. Bal Madd (pride of physical strength), 4. Roop Madd (pride of beauty), 5. Tap Madd (pride of austerity), 6. Shrut Madd (pride of knowledge of scriptures), 7. Labh Madd (pride of earning more), 8.Aishwarya Madd (pride of grandeour).

The Pravachan Mata (mother of discourses) are eight as namely : 1. Irya Samiti (Regulation of movement), 2. Bhasha Samiti (Regulation of language), 3. Aishana Samiti (Regulation in seeking alms), 4. Aadan-Bhand Matra Nikshep Samiti (Regulation in taking and putting utensils), 5. Uchar Prasarvan - Khel Jall Singhan Pristha Samiti (Regulation while going for natural call and urinating), 6. Mano Gupti (attitude of restraint of mind), 7. VachanGupti (attitude at restraint of speech), 8. Kaya Gupti (attitude of restraint of body).

४५–वाणमंतराणं देवाणं चेइयरुक्खा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता। जंबू णं सुदंसणा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता। कूडसामली णं गरुलावासे अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते। जंबुद्दीवस्स णं जगई अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

वाणव्यन्तर देवों के आठ-आठ योजन ऊँचे चैत्यवृक्ष कहे गए हैं। जम्बू सुदर्शन वृक्ष उत्तरकुरु में स्थित है। यह वृक्ष आठ योजन ऊँचा है। कूट शाल्मली वृक्ष देवकुरु में स्थित है। यह वृक्ष गरुड़ का आवास स्थल है। इस वृक्ष की ऊँचाई आठ योजन कही गई है। जम्बूद्वीप की जगती (प्राकार के समान पाली) की ऊँचाई भी आठ योजन बतायी गई है।

The Chaitya trees of the gods of Vanvyantar (forest dwellers) are said of the height of eight yojana. The tree named Jambu Sudershan is situated in the region of Uttarkuru. The height of this tree is 8 eight yojana. The tree named Kutshamli is situated in the region of Devkuru. This tree is native place of the Garud (Eagle) and is also a haunted place. The height has been said of 8(eight) yojana. The fence or the wall surrounding the Jambu continent is eight yojana high.

४६–अट्ठसामइएकेवलिसमुग्घाए पण्णत्ते, तं जहा–पढमे समए दंडं करेइ, बीए समए कवाडं करेइ, तइयसमए मंथं करेइ, चउत्थे समए मंथंतराइं पूरेइ, पंचमे समए मंथंतराइं पडिसाहरइ, छट्ठे समए मंथं पडिसाहरइ। सत्तमे समए कवाडं पडिसाहरइ, अट्ठमे समए दंडं पडिसाहरइ। ततो पच्छा सरीरत्थे भवइ।

केवली समुद्घात के आठ समय कहे गए हैं। इसके उपरान्त उनके आत्म-प्रदेश शरीर प्रमाण हो जाते हैं। आठ समय इस प्रकार हैं—१. दंड समुद्घात (केवली भगवान द्वारा प्रथम समय में किया जाना), २. कपाट समुद्घात (केवली भगवान द्वारा द्वितीय समय में किया जाना), ३. मन्थान समुद्घात

(केवली भगवान द्वारा तीसरे समय में किया जाना), ४. लोक पूरण समुद्घात (केवली भगवान द्वारा चौथे समय में मन्थान के अन्तरालों को पूरना), ५. आत्म प्रदेशों का प्रतिसंहार (संकोच) (पाँचवें समय में केवली भगवान द्वारा मन्थान के अन्तराल से किया जाना), ६. मन्थान समुद्घात का प्रतिसंहार (केवली भगवान द्वारा छठे समय में किया जाना), ७. कपाट समुद्घात का प्रतिसंहार (केवली भगवान द्वारा सातवें समय में किया जाना), ८. दण्ड समुद्घात का प्रतिसंहार (केवली भगवान द्वारा आठवें समय में किया जाना)।

The time of the Kewali Samudghat is said of the duration of eight Samay (the smallest fraction of the time). After Kewali Samudghat the space points (pradesha) of soul take the shape of its bodysize. The eight types of Samaya (time) are as follows : 1. Dand Samudghat (Kewali Bhagwan [omniscient] transform space points of soul into a think stick at the very Ist Samaya), 2. Kapat Samudghat (converts in the form of a Monk at IInd Samaya), 3. Manthan Samudghat (churns at IIIrd Samaya), 4. Lok Puran Samudghat (Kewali Bhagwan [omniscient] fills the gaps of Manthaan Samudghats at the IVth Samaya), 5. Atman Pradesha Pratisamhara (contraction of the space points of the soul through Manthaan), 6. The contraction of Manthaan (It has been done at the VIth samaya by Kewali Bhagwan), 7. The contraction of Kapaat Samudghat (Kewali Bhagwan does it at VIIth samaya), 8. Dand Samudghat's contraction (Kewali Bhagwan performs it in the duration of VIIIth samaya).

४७– पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणिअस्स अट्ठ गणा अट्ठ गणहरा होत्था, तं जहा–

सुभे य सुभघोसे य वसिट्ठे बंभयारि य।
सोमे सिरिधरे चेव वीरभद्दे जसे इय॥१॥

पुरुषादानीय (जन सामान्य द्वारा जिनका नाम श्रद्धा और आदर भाव पूर्वक स्मरण किया जाता है) पार्श्वनाथ तीर्थंकर देव के आठ गण और आठ गणधर कहे गए हैं जो इस प्रकार हैं—१. शुभ, २. शुभ घोष, ३. वशिष्ठ, ४. ब्रह्मचारी, ५. सोम, ६. श्रीधर, ७. वीरभद्र, ८. यश।

Purusadaniya (one who is reverent or respected by the common people) Parsvanath, the 23rd Tirthankar Bhagwan had eight gana (group of elder ascetics) and eight gandhar (the head of the congregation of the ascetics) as follows :-1. Shubh, 2. Shubhghos, 3. Vashishth, 4. Brahamchari, 5. Som, 6. Shridhar, 7.Veerbhadra, and 8. Yash.

४८–अट्ठ नक्खत्ता चंदेणं सद्धिं पमद्दं जोगं जोएंति, तं जहा–कत्तिया १, रोहणी २, पुणव्वसू ३, महा ४, चित्ता ५, विसाहा ६, अणुराहा ७, जेट्ठा ८।

आठ नक्षत्र चन्द्रमा के साथ प्रमर्दयोग (चन्द्रमा का नक्षत्रों के मध्य से गमन करते समय उसके उत्तर और दक्षिण पार्श्व से उनका चन्द्रमा के साथ संयोग) करते हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं, यथा — १. कृत्तिका नक्षत्र, २. रोहिणी नक्षत्र, ३. पुनर्वसु नक्षत्र, ४. मघा नक्षत्र, ५. चित्रा नक्षत्र, ६. विशाखा नक्षत्र, ७. अनुराधा नक्षत्र, ८. ज्येष्ठा नक्षत्र।

The constellations which do Pramadyoga with the moon (the combination of the constellations with Moon while Moon travels through these Nakshtras from their North and South flanks). The number of these constellations are said be eight i.e. 1. Krittika Nakshatra, 2. Rohini Nakshatra, 3. Punarvasu Nakshatra, *4. Magha Nakshatra, 5. Chitra Nakshatra, 6. Vishakha Nakshatra, 7.Anuradha* Nakshatra, 8. Jyeshtha Nakshatra.

४९–इमीसे णं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। चउत्थीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं अट्ठ पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

रत्नप्रभा पृथ्वी में कितने ही नारकों की स्थिति आठ पल्योपम बतायी गयी है। पंकप्रभा जो चौथी पृथ्वी है उसके कितने ही नारक आठ सागरोपम वाली स्थिति के कहे गए हैं। कितने ही असुरकुमार देव, तथा सौधर्म-ईशान कल्प के देव आठ-आठ पल्योपम वाली स्थिति के कहे गए हैं।

The duration of life of the hellish beings of the Ratanprabha hell has been told of eight Palyopama. Pankprabha the IVth hell has the hellish beings having the life span of eight Sagropama that Asurkumar Dev (fiendish) and the celestial beings of the Sodharma Kalp and Ishan Kalp have the life of eight Palyopama duration.

५०–बंभलोए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं अट्ठ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। जे देवा अच्चिं १, अच्चिमालिं २, बइरोयणं ३, पभंकरं ४, चंदाभं ५, सूराभं ६, सुपइट्ठाभं ७, अग्गिच्चाभं ८, रिट्ठाभं ९, अरुणाभं १०, अणुत्तरवडिंसगं ११, विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसिं णं देवाणं उक्कोसेणं अट्ठ सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। ते णं देवा अट्ठण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा, ऊससंति वा नीससंति वा। तेसिं णं देवाणं अट्ठहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे अट्ठहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

ब्रह्मलोक कल्प में कितने ही देव आठ सागरोपम स्थिति के हैं। वहाँ जो देव ग्यारह विमानों में देव रूप से उत्पन्न होते हैं, वे देव आठ सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति के कहे गए हैं। ये विमान इस प्रकार

हैं—१. अर्चि, २. अर्चिमाली, ३. वैरोचन, ४. प्रभंकर, ५. चन्द्राभ, ६. सूराभ, ७. सुप्रतिष्ठाभ, ८. अग्नि अर्च्याभ, ९. रिष्टाभ, १०. अरुणाभ, ११. अनुत्तरावतंसक। इन विमानों के देव आठ अर्द्धमासों में आन-प्राण की क्रियाएँ करते हैं। वे देव आठ हजार वर्षों के उपरान्त आहार की इच्छा रखते हैं।

अनेकों भव्य सिद्धिक जीव आठ भव ग्रहण करेंगे। इसके पश्चात् वे सिद्ध-बुद्ध होंगे, तथा कर्मों से मुक्त होकर परम निर्वाण को प्राप्त होंगे। वे देव अन्ततः समस्त प्रकार के दुःखों का शमन (अन्त) करेंगे।

The life span of the celestial beings of the Brahmn Loka has been said of eight Sagropama duration. There the celestial beings who reincarnate in the eleven vehicles (Vimanas) in the form of a god have the maximum life span of eight Sagropama.

The names of these eleven celestial vehicles are as follows :– 1. Archi, 2. Archimali, 3. Vairochan, 4. Prabhankar, 5. Chandrabh, 6. Surabh, 7. Supratisthabh, 8. Agni-Archyarbh, 9. Rishabh, 10. Arunabh, 11. Anuttaravatansak. The celestial beings of these vehicles inhale and exhale once after interval of four months (eight fortnight). They desire for food once after the completion of eight thousand years.

The beings capable of salvation (The Bhavyasidhik jeevas) will take eight births in future. There after they will be Sidh and Budh and having liberated from the bondage of Karmas will attain ultimate Nirvana (salvation). Ultimately they would end all their miseries and sufferings.

।। आठवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Eighth Samvaya)

नौवां समवाय

The Nineth Samvaya

५१–नव बंभचेरगुत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–नो इत्थि-पसु-पंडगसंसत्ताणि सिज्जासणाणि सेवित्ता भवइ १, नो इत्थीणं कहं कहित्ता भवइ २, नो इत्थीणं गणाइं सेवित्ता भवइ ३, नो इत्थीणं इंदियाणि मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता भवइ ४, नो पणीयरसभोई भवइ ५, नो पाणभोयणस्स अइमायायाए आहारइत्ता भवइ ६, नो इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलिआइं समरइत्ता भवइ ७, नो सद्दाणुवाई, नो रूवाणुवाई, नो गंधाणुवाई, नो रसाणुवाई, नो फासाणुवाई, नो सिलोगाणुवाई भवइ ८, नो सायासोक्खपडिबद्धे यावि भवइ ९।

ब्रह्मचर्य की रक्षार्थ नौ प्रकार की गुप्तियाँ कही गई हैं, यथा — १. स्त्री, पशु और नपुंसक से संसक्त शय्या और आसन का प्रयोग न करना, २. स्त्रीकथा का निषेध अर्थात् स्त्री से सम्बन्धित कथाओं को न कहना और न सुनना, ३. स्त्रीगणों का प्रशंसक-उपासक न होना, ४. स्त्री के अंगों-उपांगों को न देखना और न उनके बारे में सोचना, ५. गरिष्ठ व सरस भोजन को ग्रहण न करना, ६. अपरिमित आहारादि का सेवन न करना यानि अधिक मात्रा में न खाना, ७. पूर्व में किए गए स्त्री संसर्गादि के बारे में स्मरण न करना, ८. ब्रह्मचर्य को स्खलित करने वाले उत्तेजक या कामोद्दीपक शब्दों को न सुनना, रूपों को न देखना, गन्धों को न सूँघना, रसों का स्वाद न लेना और न कोमल-मुलायम शय्यादि का स्पर्श करना, ९. सातावेदनीय के उदय से मिलने वाले सुखों में रुचि या आसक्ति न होना।

Nine regulations have been described to protect celibacy i.e. 1.Not to use the same bed or seat which has been used by the female, animal and eunuch. 2. Resistance of conversation related to women. It means not to narrate or listen the stories related to womenfolk. 3. Not to appreciate and analyze the women's beauty. 4. Not to see and think over the limbs of women. 5. Not to take fatty &delicious food. 6. Not to take too much meal. It means limitless food should not be consumed. 7. Never remember the past relationship and experiences with women, if any. 8. Not to listen the words which arouse the sexuality and erection, not to see the beauty, not to smell the odour, not to taste the flavour and not to enjoy the tender mattress that affects the celibacy. 9. Not to infatuate or to be fond of the sensual enjoyments which come through the fruit of Sata Vaidniya Karmas (pleasure giving deeds).

५२—नव बंभेचर-अगुत्तीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—इत्थी-पसु-पंडगसंसत्ताणं सिज्जासणाणं सेवित्ता भवइ १, इत्थीणं कहं कहित्ता भवइ २, इत्थीणं गणाइं सेवित्ता भवइ ३, इत्थीणं इंदियाणं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता भवइ ४, पणीयरसभोई भवति ५, पाण-भोयणस्स अइमायाए आहारइत्ता भवइ ६, इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकेलिआइं समरइत्ता भवइ ७, सद्दाणुवाई रूवाणुवाई गंधाणुवाई रसाणुवाई फासाणुवाई सिलोगाणुवाई भवइ ८, सायासुक्खपडिबद्धे यावि भवइ ९।

जिन कार्यों से ब्रह्मचर्य नष्ट या खण्डित होता है, उन्हें ब्रह्मचर्य की अगुप्ति कहा गया है। ये अगुप्तियाँ नौ प्रकार की हैं, यथा — १. स्त्री, पशु, और नपुंसक से संसक्त शय्या अथवा आसन का प्रयोग करना, २. स्त्री सम्बन्धित चर्चाओं में, कथाओं में रुचि लेना, ३. स्त्री गणों का प्रशंसक या उपासक होना, ४. स्त्री के अंगों-उपांगों को देखना और उनके बारे में सोचना, ५. गरिष्ठ व सरस भोजन को ग्रहण करना, ६. अपरिमित आहारादि का सेवन करना यानि अधिक मात्रा में खाना, ७. पूर्व में किए गए स्त्री संसर्गादि के बारे में स्मरण करना, ८. ब्रह्मचर्य का विनाश करने वाले उत्तेजक या

कामोद्दीपक शब्दों को सुनना, रूपों को देखना, गन्धों को सूंघना, रसों का स्वाद लेना, कोमल-मुलायम शय्यादि का स्पर्श करना, ९. सातावेदनीय के उदय से मिलने वाले सुखों में रुचि या आसक्त होना।

By which deeds the celibacy is destroyed or broken has been called Agupti (irregulations of mind, body and speech). These Agupti are nine in number i.e. 1. To use the bed or seat that has been occupied by woman, animal or eunuch. 2. To be fond of in the listening of stories regarding women. 3. To splendor appreciator of the qualities of a woman. 4. To see and think over the limbs of the women. 5. To take or consume tasty and delicious food. 6. To eat more in quantity than appetite. 7. To recall the past experiences with woman. 8. Listening the words which arouse the sexual desire and erection, seeing the beauty, to smell the fragrance, to be infatuated by taste, to use the bed made of tender mattress that destroy the celibacy. 9. To be fond of or infatuated by the joys which is the fruit of Sata Vaidniya Karmas (meritorious deed of past lives).

५३–नव बंभेचरा पण्णत्ता, तं जहा–

सत्थपरिण्णा[१] लोगविजयो[२] सीओसणिज्ज[३] सम्मत्त[४]।
आवंति[५] धुत[६] विमोहा[७] [यणं] उवहाणसुयं[८] महापरिण्णा[९] ।।१।।

ब्रह्मचर्य अध्ययन नौ प्रकार के कहे गए हैं यथा—१. शस्त्र परिज्ञा, २. लोक विजय, ३. शीतोष्णीय, ४. सम्यक्त्व, ५. आवन्ती, ६. धूत, ७. विमोह, ८. उपधान श्रुत, ९. महापरिज्ञा।

The chapters (Adhyyana) about celibacy are nine i.e. 1. Shastra Prijna.2. Lok Vijay (conquer of world). 3. Shitosniya (cold and warm). 4. Samvyakt (righteousness). 5. Awariti. 6. Dhoot (gamble). 7. Vimoh(illusion). 8.Updhan Shrut. 9. Maha Prijna.

५४–पासे णं अरहा पुरिसादाणीए नव रयणीओ उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

जनसामान्य में आदरणीय पुरुष अर्थात् पुरुषादानीय भगवान पार्श्वनाथ नौ रत्नि (हाथ) ऊँचे थे।

The height of Purusadaniya Bhagwan Parsvnath the respected and revered man among the general people was nine cubits.

५५–अभीजीनक्खत्ते साइरेगे नव मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोगं जोएइ। अभीजियाइया नव नक्खत्ता चंदस्स उत्तरेणं जोगं जोएंति, तं जहा–अभीजीसवणो जाव भरणी।

जो नक्षत्र नौ मुहूर्त से कुछ अधिक तक चन्द्रमा के साथ योग करता है या रहता है, वह अभिजित नक्षत्र है। अभिजित आदि नौ नक्षत्र चन्द्रमा का उत्तर दिशा की ओर से योग करते हैं। ये नौ नक्षत्र हैं—१. अभिजित नक्षत्र, २. रेवती नक्षत्र, ३. उत्तरभाद्रपदा नक्षत्र, ४. श्रवण नक्षत्र, ५. धनिष्ठा नक्षत्र, ६. शतभिषक् नक्षत्र, ७. पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र, ८. अश्विनी नक्षत्र, ९. भरणी नक्षत्र।

The nakshtra which stays or comes into touch with moon for a little more than nine muhurtas is called Abhijit Nakshtra. Abhijit and other nine Nakshtras experience their contact with moon from the North. These nine constellations are as follows :—1. Abhijit. 2. Revati. 3. Uttrabhadrapad. 4. Shravan. 5. Dhanishttha. 6. Shatbhisha. 7. Purvabhadrapad. 8. Ashwani. 9. Bharani Nakshtra.

५६–इमीसे णं रयणप्पभाए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ नव जोयणसए उड्ढं अबाहाए उवरिल्ले ताराख्वे चारं चरइ। जम्बुद्दीवे णं दीवे नवजोयणिया मच्छा पविसिंसु वा पविसंति वा पविसिस्संति वा। विजयस्स णं दारस्स एगमेगाए बाहाए नव नव भोमा पण्णत्ता।

रत्नप्रभा पृथ्वी में एक बहुसम रमणीय भूमि भाग है। वहाँ से नौ सौ योजन ऊपर उपरितन भाग है। इस उपरितन भाग में ताराएँ संचरण करती हैं। जम्बूद्वीप में नौ योजन वाले मत्स्य हैं। ये मत्स्य नदी मुखों से प्रवेश करते हैं। इनका नदीमुखों से प्रवेश भूत-वर्तमान और भविष्य तीनों कालों में बताया गया है। जम्बूद्वीप में विजय नामक पूर्व द्वार है। इस द्वार की एक-एक बाहु अर्थात् भुजा पर नौ-नौ भौम (विशिष्ट स्थान या नगर) का उल्लेख है।

There is a (flat beautiful) piece of land in the Ratanprabhahell. From there at the height of nine hundred yojana there is a place called Uparitan. In this Uparitan part the group of stars travel. The fishes of the length of nine yojana are found in the Jambu continent. The movement and entrance of these fishes were into the mouths of the rivers have been said to be in the past, present and future. There is an eastern entrance called Vijaya entrance in the Jambu continent. On each and every arm of this gate it is stated that there are nine Bhaum (special places or cities).

५७–वाणमंतराणं देवाणं सभाओ सुहम्माओ नव जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ताओ।

वाणव्यन्तर देवों की सुधर्म सभाएँ नौ योजन ऊँची कही गई हैं।

The Sudharma Assemblies of Vanvyanter Devas (the gods of forests) are said of the height of nine yojanas.

५८–दंसणावरणिज्जस्स णं कम्मस्स नव उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–निद्दा पयला निद्दानिद्दा पयलापयला थीणद्धी चक्खुदंसणावरणे अचक्खुदंसणावरणे ओहिंदंसणावरणे केवलदंसणावरणे।

दर्शनावरणीय कर्म की उत्तर प्रकृतियों की संख्या नौ बतायी गई है। यथा —१. निद्रा, २. प्रचला, ३. निद्रानिद्रा, ४. प्रचलाप्रचला, ५. स्त्यानर्द्धि, ६. चक्षुदर्शनावरण, ७. अचक्षुदर्शनावरण, ८. अवधिदर्शनावरण, ९. केवल दर्शनावरण।

The number of the Uttar Prakriti (tendencies) of the perception obscured Karmas are nine i.e. 1. Nidra (sleep), 2. Prachala (standing in sleep), 3. Nidra-nidra (very deep sleep), 4. Prachala-a-prachala (walking in sleep), 5. Satyanidhi (commit violent act in sleep), 6. Chakshudarshnavarniya (karma causing obstruction in faulty of seeing), 7. Achakshudarshanavarniya, 8. Avadhi-darshanavarniya (karma causing obstruction in gaining danvayanu perception), 9. Kewal (omni perception) darshanavarniya (karma causing obstruction in gaining omniscience).

५९–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं नव पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। चउत्थीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं नव सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं नव पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

रत्नप्रभा पृथ्वी के कितने ही नारक नौ पल्योपम वाली स्थिति के कहे गए हैं। चौथी पृथ्वी पंकप्रभा है। इसमें कितने ही नारकों की स्थिति नौ सागरोपम बतायी गई है। कितने ही असुरकुमार देव नौ पल्योपम वाली स्थिति के हैं।

The life span of the hellish beings of the Ratanprabha hell has been said to be Nine Palyopama. The name of the fourth hell is Pankprabha. The life span of the hellish beings of this hell has been said of Nine Sagropama. The duration of life of Asurkumar gods is nine Palyopama.

६०–सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं नव पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। बंभलोए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं नव सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। जे देवा पम्हं सुपम्हं पम्हावत्तं पम्हप्पभं पम्हकंतं पम्हवण्णं पम्हलेसं पम्हज्झयं पम्हसिंगं पम्हसिट्ठं पम्हकूडं पम्हुत्तरवडिंसगं, सुज्जं सुसुज्जं सुज्जावत्तं सुज्जपभं सुज्जकंतं सुज्जवण्णं सुज्जलेसं सुज्जज्झयं सुज्झसिंगं सुज्जसिट्ठं सुज्जकूडं सुज्जुत्तरवडिंसगं, [रुइल्लं] रुइल्लवत्तं रुइल्लप्पभं रुइल्लकंतं रुइल्लवण्णं रुइल्ललेसं रुइल्लज्झयं रुइल्लसिंगं रुइल्लसिट्ठं रुइल्लकूडं रुइल्लुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसिं णं देवाणं नव सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, ते णं देवा नवण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा, ऊससंति वा नीससंति वा। तेसिं णं देवाणं नवहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे नवहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

सौधर्म-ईशान तथा ब्रह्मलोक कल्पों के कितने ही देव क्रमशः नौ पल्योपम तथा नौ सागरोपम स्थिति वाले कहे गए हैं। वहाँ जो देव विशिष्ट विमानों में देव रूप से उत्पन्न होते हैं, उनकी स्थिति नौ सागरोपम है। इन विशिष्ट विमानों की संख्या पैंतीस बतायी गई है यथा — १. पक्ष्म, २. सुपक्ष्म, ३.

पक्ष्मावर्त्त, ४. पक्ष्म प्रभ, ५. पक्ष्मकान्त, ६. पक्ष्मवर्ण, ७. पक्ष्मलेश्य, ८. पक्ष्मध्वज, ९. पक्ष्मशृंग, १०. पक्ष्मसृष्ट, ११. पक्ष्मकूट, १२. पक्ष्मोत्तरावतंसक, १३. सूर्य, १४. सुसूर्य, १५. सूर्यावर्त्त, १६. सूर्यप्रभ, १७. सूर्यकान्त, १८. सूर्यवर्ण, १९. सूर्यलेश्य, २०. सूर्यध्वज, २१. सूर्यशृंग, २२. सूर्यसृष्ट, २३. सूर्यकूट, २४. सूर्योत्तरावतंसक, २५. रुचिर, २६. रुचिरावर्त्त, २७. रुचिरप्रभ, २८. रुचिरकान्त, २९. रुचिरवर्ण, ३०. रुचिरलेश्य, ३१. रुचिरध्वज, ३२. रुचिरशृंग, ३३. रुचिर सृष्ट, ३४. रुचिर कूट, ३५. रुचिरोत्तरावतंसक। इन विमानों में उत्पन्न होने वाले देव नौ अर्द्धमासों यानि साढ़े चार मासों के उपरान्त उच्छ्वास-निःश्वास या आन-प्राण की क्रियाएँ करते हैं। वे देव नौ हजार वर्ष के बाद आहार की इच्छा रखते हैं।

कितने ही भव्य सिद्धिक जीव नौ भव ग्रहण करेंगे। इसके उपरान्त वे सिद्ध-बुद्ध होंगे। वे जीव कर्मों से मुक्त होकर परम निर्वाण को प्राप्त करेंगे। वे जीव अन्ततः सर्व प्रकार के दुःखों का शमन या अन्त करेंगे।

The life span of the celestial beings of Sodharma Kalpa, Ishan Kalpa and Brahmn Lokas is mentioned as nine Palyopama and nine Sagropama respectively, the jeevas (beings) that reincarnate in these special celestial vehicles in the form of gods. These special vehicles have been told thirty three i.e. 1. Paksham, 2. Supaksham,3. Pakshamavart, 4. Pakshamprabh, 5. Pakshamkant, 6. Pakshamvarna, 7. Pakshamleshya,8. Pakshamdhvaja, 9. Pakshamshring, 10. Pakshamsarisht, 11. Pakshamkut, 12. Pakshamtravatansak, 13. Surya, 14. Susurya, 15. Suryaktar, 16. Suryaprabh, 17, Suryakant, 18. Suryavarna, 19. Suryaleshya, 20. Suryadhvaj, 21. Suryasring, 22. Suryasristh, 23. Suryakut-Suryattravantsk, 24. Ruchiravrat, (Ruchir) 25. Ruchirprabh, 26. Ruchirkant, 27. Ruchirvaran, 28. Ruchirlesya, 29. Ruchirdhvaj, 30. Ruchirsring, 31. Ruchirsrisht, 32. Ruchirkut, 33. Ruchirottravatansk. The gods who reincarnated in these above mentioned celestial vehicles of god do the activities of inhaling and exhaling once after the interval of four and a half months (i.e. after nine fortnights).

They intend for food once after the expiry of nine thousand years. The beings capable of salvation (Bhavsidhik jeeva) will take only nine rebirths in future. After it they will become Sidh & Budh. After destroying all the previous accumulated Karmas they will get ultimate salvation and Nirvana. Eventually, they will end their all kinds of miseries.

।। नौवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Nineth Samvaya)

दसवां समवाय

The Tenth Samvaya

६१–दसविहे समणधम्मे पण्णत्ते, तं जहा–खंती १, मुत्ती २, अज्जवे ३, मद्दवे ४, लाघवे ५, सच्चे ६, संजमे ७, तवे ८, चियाए ९, बंभचेरवासे १०।

श्रमण के दश धर्म कहे गए हैं। यथा — १. क्षान्ति, २. मुक्ति, ३. आर्जव, ४. मार्दव, ५. लाघव, ६. सत्य, ७. संयम, ८. तप, ९. त्याग, १०. ब्रह्मचर्यवास।

श्रमण उपरोक्त दशविध सद्‌गुणों की सुवास से सुवासित रहता है।

Ten Dharmas (principles to be adopted) have been narrated for an ascetic (shraman) i.e. 1. Kshanti (free from anger), 2. Mukti (free from greed),3. Arjava (simplicity), 4. Mardava (humility), 5. Laghav (non-attachment), 6. Satya (truthfulness), 7. Sanyam (restraint), 8. Tap(austerity), 9. Tyaga (renunciation), 10. Brahmacharya (celebacy).

Note :-Through the fragrance of these ten types of auspicious virtues the shraman (the ascetic) remains filled with fragrance.

६२–दस चित्तसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा–धम्मचिंता वा से असमुप्पण्णपुव्वा समुप्पज्जिज्जा सव्वं धम्मं जाणित्तए १, सुमिणदंसणे वा से असमुप्पण्णे पुव्वे समुपज्जिज्जा अहातच्चं सुमिणं पासित्तए २, सण्णिणाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा पुव्वभवे सुमरित्तए ३, देवदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं पासित्तए ४, ओहिनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा ओहिणा लोगं जाणित्तए ५, ओहिदंसणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा ओहिणा लोगं पासित्तए ६, मणपज्जवनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज़िज्जा जाव [अड्ढतईअदीवसमुद्देसु सण्णीणं पंचिंदियाणं पज्जत्तगाणं] मणोगए भावे जाणित्तए ७, केवलनाणे वा से असमुप्पण्णपुव्वे समुप्पज्जिज्जा केवलं लोगं जाणित्तए ८, केवलदंसणे वा से असमुप्पणपुव्वे समुप्पज्जिज्जा केवलं लोगं पासित्तए ९, केवलिमरणं वा मरिज्जा सव्वदुक्खप्पहीणाए १०।

दस प्रकार की चित्त-समाधि का उल्लेख है- यथा — १. धर्म (सर्वज्ञ-भाषित श्रुत और चारित्र रूप) चिन्ता, जिसके होने पर ही धर्म का अभूतपूर्व परिज्ञान और आराधन सम्भव है। यह चित्त-समाधि का पहला स्थान है। २. याथातथ्य (भविष्य में यथार्थ फल को देने वाले) स्वप्न का देखना जो पहले कभी नहीं देखा। यह चित्त-समाधि का दूसरा स्थान है। ३. पूर्वभव का स्मरण करने वाला संज्ञिज्ञान (जाति स्मरण), जो पहले कभी नहीं उत्पन्न हुआ। यह चित्त-समाधि का तीसरा स्थान है। जातिस्मरण

से संवेग और निर्वेद पूर्वक चित्त में परम प्रशमभाव जाग्रत होता है। ४. अभूतपूर्व देव-दर्शन होना, जिसमें देवों की दिव्य ऋद्धि व दिव्य द्युति का दिखाई देना तथा दिव्य देवानुभाव अर्थात् उत्तम विक्रियादि का प्रभाव दिखाई देना भी सम्मिलित है। इस प्रकार के देव-दर्शन से धर्म के प्रति श्रद्धा घनीभूत होती है। यह चित्त-समाधि का चौथा स्थान है। ५. लोक अर्थात् मूर्त्त पदार्थों को प्रत्यक्ष रूप से जानने वाला अवधिज्ञान का होना, जिसके उत्पन्न होने पर मन शांति और प्रसन्नता का अनुभव करता। है। यह अवधिज्ञान पहले कभी उत्पन्न नहीं हुआ। यह चित्तसमाधि का पाँचवाँ स्थान है। ६. लोक अर्थात् मूर्त्त पदार्थों को प्रत्यक्ष रूप से देखने वाला अवधिदर्शन का होना, जो पहले कभी उत्पन्न नहीं हुआ। यह चित्त-समाधि का छठा स्थान है। ७. मनःपर्याय ज्ञान का होना। यह अढ़ाई द्वीप-समुद्रवर्ती संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवों के मनोगत भावों का जानने वाला ज्ञान है, जो पहले कभी उत्पन्न नहीं हुआ। यह चित्त-समाधि का सातवाँ स्थान है। ८. केवलज्ञान उत्पन्न होना। यह सम्पूर्ण लोक को प्रत्यक्ष यानि त्रिकालवर्ती पर्यायों के साथ जानने वाला ज्ञान है, जो पहले कभी उत्पन्न नहीं हुआ। यह चित्त-समाधि का आठवाँ स्थान है। ९. केवल दर्शन उत्पन्न होना, जो लोक को यानि समस्त चराचर को देखने वाला है। यह पहले कभी उत्पन्न नहीं हुआ। यह चित्त-समाधि का नौवाँ स्थान है। १०. केवलिमरण से मृत्यु को प्राप्त होना। यह सर्व दुःखों का विनाशक है। यह चित्त-समाधि का दशवाँ स्थान है।

चित्त-समाधि के होने पर यह आत्मा समस्त दुःखों से मुक्त होकर सिद्ध-बुद्ध हो जाती है और अन्ततः अनन्त सुख को प्राप्त हो जाती है।

Ten types of Chit Samadhi (profound meditative state of consciousness) are explained as: 1. Theology (in the perception and form of conduct uttered by omniscient), contemplation which alone can lead to the unattainable knowledge and propagation of SELF is possible. This is the first Sthan of the profound meditation state of consciousness. 2. Yathatathya (giver of genuine results [fruits] in future) - to see a dream that has not been seen earlier. This is the second Sthan of Chit Samadhi. 3. Jatisamarangyan-Sangi gyan (reflection)—that reminds the occurrence of previous birth, which has not ever been experienced earlier. It is the third Sthan of Chit Samadhi. The supreme tranquil disposition that awakens into the chit full of Nirved (disregard) and Samveg (detachment) through Jatisamrangyan. 4. Apoorva perception of deities. In which the divine opulence, the divine radiance of the gods is seen and it includes the divine Devanubhav means the impact of the fluid bodies of the gods. Through Dev Darshan (sight of gods) ones faith towards religion gets enhanced. It is the fourth Sthan of Chit Samadhi. 5. Loka—it means attaining the clairvoyance knowledge (avadhigyan) that knows directly the concrete matters. Through one experiences the inner peace and pleasure of the mind. This kind of clairvoyance had never occurred earlier. This one is the fifth Sthan of the Chit Samadhi. 6.

Loka means attaining the clairvoyance that perceives the concrete matters directly, that has not attained so far. This one is the sixth Sthan of Chit Samadhi. 7. Attaining the Manah Prayava (mind reading knowledge). With this knowledge one knows the notions of the mind of Sangi and Panchendriya Paryaptak (five-sensed developed) jeevas who live in two and a half continents and oceans situated within these continents. This kind of knowledge could not be attained earlier. It is the seventh Sthan of Chit Samadhi. 8. Attaining Kewal Gyan (omniscience) one who is the knower of all the three realms directly concerning all the three period time i.e. present, past and future. It did not attain earlier. This one is the eighth Sthan of Chit Samadhi. 9. Kewal Darshan (ultimate perception) - it means one who perceives all the three lokas (realms) including all the moving and non-moving beings of the universe. This knowledge could not be attained earlier. This is the Nineth Sthanak Chit Samadhi. 10. Death through Kewali Maran (omniscient) - It is the destroyer of all the miseries and agonies. It is the tenth Sthan of Chit Samadhi.

After getting the Chit Samadhi the SELF (soul) becomes Sidhaand Budha annihilating the miseries absolutely and attains theabsolute and infinite state of blissfulness eventually.

६३–मंदरे णं पव्वए मूले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पण्णत्ते।

सुमेरु (मन्दर) पर्वत मूल में दस हजार योजन विष्कंभ (विस्तार) वाला बताया गया है।

At the root of expansion of Sumeru Mountain has been told often thousand yojanas.

६४–अरिहा णं अरिट्ठनेमि दस धणूइं उद्धं उच्चत्तेणं होत्था। कण्हे णं वासुदेवे दस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था। रामे णं बलदेवे दस धणूइं उद्धं उच्चत्तेणं होत्था।

बाईसवें तीर्थंकर अरिष्टनेमि, कृष्ण वासुदेव तथा राम बलराम दश-दश धनुष ऊँचे बताए गए हैं।

The height of Ford Maker (Tirthankara) Arishtnemi was ten bow i.e. sixty cubit high. Shri Krishan Vasudeva was ten bows i.e. sixty cubits high. Ram Balram was ten bow i.e. sixty cubit high.

६५–दस नक्खत्ता नाणबुड्ढिकरा पण्णत्ता, तं जहा–

मिगसिर अद्दा पुस्सो तिण्णि य पुव्वा य मूलमस्सेसा।
हत्थो चित्तो य तहा दस बुड्ढिकराइं नाणस्स।।१।।

ज्ञान की वृद्धि करने वाले नक्षत्रों की संख्या दस बतायी गई है। यथा—१. मृगशिर, २. आर्द्रा,

३. पुष्य, ४. पूर्वा फाल्गुनी, ५. पूर्वाषाढ़ा तथा ६. पूर्वा भाद्रपदा, ७. मूल, ८. आश्लेषा, ९. हस्त, १०. चित्रा। इन नक्षत्रों में पढ़ना-लिखना प्रारम्भ करने वाले को ज्ञान शीघ्र और विपुल परिमाण में मिलता है।

Ten constellations have been said of knowledge enhancers as—Mrigshir, Ardra, Pushya, all the three poorvas (Poorva Phalguni, Poorvashadh, Poorva Bhadrapad), Mool, Ashlesha, Hast, Chitraall these constellations enhance the knowledge i.e. if one starts to learn under the influence of these constellations he obtains the knowledge very sharp in abundance.

६६–अकम्मभूमियाणं मणुआणं दसविहा रुक्खा उवभोगत्ताए उवत्थिया पण्णत्ता, तं जहा–

मत्तंगया य भिंगा, तुडिअंगा दीव जोइ चित्तंगा।
चित्तरसा मणिअंगा, गेहागारा अनिगिणा य॥२॥

अकर्म भूमि अथवा भोगभूमि (जहाँ मनुष्यों को आजीविका सम्बन्धी कोई भी कार्य या श्रम नहीं करना पड़ता) में उत्पन्न मनुष्य कल्पवृक्षों से अपना उपभोग करता है। इन कल्पवृक्षों की संख्या दश बतायी गई है। यथा—१. मद्यांग कल्पवृक्ष (मधुर मदिरा प्राप्त कराने वाले), २. भृंग कल्पवृक्ष (भाजन-पात्र प्राप्त कराने वाले), ३. तूर्यांग कल्पवृक्ष (वादित्र प्राप्त कराने वाले), ४. दीपांग कल्पवृक्ष (दीपक की भाँति प्रकाश करने वाले), ५. ज्योतिरंग कल्पवृक्ष (अग्नि के समान प्रकाश करने वाले), ६. चित्रांग कल्पवृक्ष (विभिन्न प्रकार के रंग-बिरंगे पुष्पों की प्राप्ति कराने वाले), ७. चित्तरस कल्पवृक्ष (षट्रसों के आस्वादन से युक्त भोजन प्राप्त कराने वाले), ८. मण्यंग कल्पवृक्ष (आभूषण प्राप्त कराने वाले), ९. गेहाकार कल्पवृक्ष (निवास स्थान यानि घर प्राप्त कराने वाले), १०. अनग्नांग कल्पवृक्ष (वस्त्रादि प्राप्त कराने वाले)।

There in the land of enjoyment (bhog bhoomi) ten types of wish tree (kalpa vriksh) remains present as—Madyang, Bhrang, Turyang,Deepang, Jyotirang, Chitrang, Chitras, Manyang, Gehakar and Anangang.

There in the Enjoyment Land the human beings have to do no work related to sustenance like Asi, Masi, Krishi (war, trade and agriculture). Every sort of necessity are fulfilled by these wish trees. The tree named Madyang gives wine, Bhring gives vessels for food, Turyang gives musical instruments, Deepang tree gives lamp, Jyotirang gives light similar to fire, Chitrang gives flowers of different colours, Chitras tree gives tasty food, Manyang gives ornaments, Gehakar gives lodgings and Anangang tree gives them the cloth.

६७–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं

ठिई पण्णत्ता। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं दस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। चउत्थीए पुढवीए दस निरयावाससयसहस्साइं पण्णत्ताइं। चतुत्थीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं जहेण्णेणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

इस रत्नप्रभा पृथ्वी के कितने ही नारक दस हजार वर्ष की जघन्य स्थिति वाले कहे गए हैं। इस पृथ्वी के कितने ही नारकों की स्थिति दस पल्योपम है। चौथी नरक भूमि में नारकों के आवासों की संख्या दस लाख बतायी गई है। और चौथी भूमि के कितने ही नारक दस सागरोपम वाली स्थिति के बताए गए हैं। पाँचवीं पृथ्वी में कितने ही नारकों की जघन्य स्थिति दस सागरोपम है।

The hellish beings of the Ratanprabha hell are said minimum often thousand years of life span. The life span of the hellish beings of this land is hell of Ten Palyopama. The number of the residences of the fourth hell has been told has One million (ten lacs) and the life span of the hellish beings of these hells has been said of the duration of Ten Sagropama. In the sixth hell the duration of life of the hellish beings is minimum of Ten Sagropama.

६८–असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता। असुरिंद-वज्जाणं भोमिज्जाणं देवाणं अत्थेगइयाणं जहण्णेणं दस वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं दस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। वायरवणस्सइकायाणं उक्कोसेणं दस वाससहस्साइं ठिई पन्नत्ता। वाणमंतराणं देवाणं अत्थेगइयाणं जहण्णेण दस वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता।

कितने ही असुरकुमार देव दश हजार वर्ष की जघन्य स्थिति वाले हैं। असुरेन्द्रों को छोड़कर शेष कितने ही भवनवासी देव भी दश हजार वर्ष की जघन्य स्थिति वाले कहे गए हैं। इसी प्रकार कितने ही वाणव्यन्तर देवों की जघन्य स्थिति भी दश हजार वर्ष है। कितने ही असुरकुमार देव दश पल्योपम स्थिति वाले हैं। बादर वनस्पतिकायिकी जीव दस हजार वर्षों की उत्कृष्ट स्थिति के कहे गए हैं।

Asurkumar Devas (Malevolent demons) are said to have a minimum of Ten thousand years duration of life. Barring the Asurendra the life span of the other remaining Bhavanvasi Devas (residential gods) is minimum of Ten thousand years likewise the duration of life of the Vanvayantra (gods of forest) Devas is stated to be minimum of Ten thousand years. The Asurkumars are of Ten Palyopama's life span and the beings of gross vegetate also have the age of maximum of Ten thousand years.

६९–सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं दस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। बंभलोए कप्पे देवाणं उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

सौधर्म-ईशान कल्पों के कितने ही देव तथा ब्रह्मलोक कल्प के देव क्रमशः दश पल्योपम स्थिति के और दश सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति के कहे गए हैं।

The maximum life span of the gods of the Sodharma, Ishan Kalpas and Brahmnlokas has been said as Ten Palyopama and Ten Sagropama respectively.

७०–लंतए कप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं जहण्णेणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। जे देवा घोसं सुघोसं महाघोसं नंदिघोसं सुसरं मणोरमं रम्मं रम्मगं रमणिज्जं मंगलावत्तं बंभलोगवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसिं णं देवाणं उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, ते णं देवा दसण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा, तेसिं णं देवाणं दसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे दसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

लान्तककल्प के कितने ही देव दश सागरोपम जघन्य स्थिति के कहे गए हैं। लान्तक कल्प में विमानों में देव रूप से उत्पन्न देवों की उत्कृष्ट स्थिति दश सागरोपम कही गई है। इन विमानों की संख्या ग्यारह है। यथा — १. घोष, २. सुघोष, ३. महाघोष, ४. नन्दिघोष, ५. सुस्वर, ६. मनोरम, ७. रम्य, ८. रम्यक्, ९. रमणीय, १०. मगलावर्त, ११. ब्रह्मलोकावतंसक। वे देव आन-प्राण या उच्छ्वास-निःश्वास की क्रियाएँ दश अर्द्धमासों (पाँच मासों) के उपरान्त करते हैं और उन देवों को आहार की इच्छा दश हजार वर्षों के पश्चात् होती है।

कितने ही भव्यसिद्धिक जीव दश भव ग्रहण करने वाले होंगे। इसके उपरान्त वे जीव सिद्ध-बुद्ध होंगे। वे जीव कर्मों से मुक्त होकर परम निर्वाण को प्राप्त होंगे। वे जीव अन्ततोगत्वा समस्त दुःखों का शमन या अन्त करेंगे।

The minimum life span of the gods of the Lokantak Kalpa has been narrated as Ten Sagropama. The gods who take birth into the vehicle of Lokantak gods have been described having the maximum life span of Ten Sagropama. The numbers of these vehicles of gods are eleven :—1. Devghos, 2. Sughos, 3. Mahaghos, 4. Nandighos, 5. Susvar, 6. Manoram, 7. Ramya, 8. Ramyak, 9. Ramniya, 10. Mangalavrat, 11. Brahmalok avatansk. After completion of five months these gods do the activities of inhaling &exhaling and they desire for food once after the completion of Ten thousand years. The beings capable of salvation (Bhavyasidhik jeevas) among them will take 10 births in

future. After it these jeevas will become Sidha & Budha. Having annihilated all the Karmas they will get ultimate truth i.e. Nirvana (At the end these jeevas). Ultimately they will destroy all the miseries of their lives.

॥ दसवां समवाय समाप्त ॥

(The End of Tenth Samvaya)

ग्यारहवां समवाय

The Eleventh Samvaya

७१–एक्कारस उवासगपडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–दंसणसावए १, कयव्वयकम्मे २, सामाइयकडे ३, पोसहोववासनिरए ४, दिया बंभयारी रत्तिं परिमाणकडे ५, दिआ वि राओ वि बंभयारी असिणाई वियडभोजी मोलिकडे ६, सचित्तपरिण्णाए ७, आरंभपरिण्णाए ८, पेसपरिण्णाए ९, उद्दिट्ठभत्तपरिण्णाए १०, समणभूए ११, आवि भवइ समणाउसो!

ग्यारह उपासक-श्रावक प्रतिमाएँ उल्लिखित हैं। यथा — १. दर्शन प्रतिमा, २. कृतव्रतकर्मा प्रतिमा, ३. सामायिककृत प्रतिमा, ४. पौषधोपवासनिरत प्रतिमा, ५. दिवाब्रह्मचारी, रात्रि-परिमाण कृत प्रतिमा, ६. दिवा-रात्रि ब्रह्मचारी, अस्नायी विकट-भोजी और मौलिकृत प्रतिमा, ७. सचित्त परिज्ञात प्रतिमा, ८. आरंभ परिज्ञात प्रतिमा, ९. प्रेष्य परिज्ञात प्रतिमा, १०. उद्दिष्ट परिज्ञात प्रतिमा, ११. श्रमणभूत प्रतिमा।

उत्तर-उत्तर प्रतिमाधारियों को पूर्व-पूर्व प्रतिमाओं के आचार का परिपालन करना जरूरी बताया गया है।

Eleven Pratima (regularity of timely vows) of Householder are mentioned as 1. Darshan Shravak Pratima resolve (Pratima of perception), 2. Kritvart Karma Pratima (resolve of abstinence, 3. Samayak Krit Pratima, 4. Poshadhaupvas Nirat Pratima, 5. Diva-Brahmachari-Ratri Parman Krit Pratima, 6. Diva-Ratri Brahmachari-Asnai-Vikat-Bhojiand Maulikrit Pratima, 7. Sachit Parigyat Pratima, 8. Preshya Parigyat Pratima, 9. Uddrishtt Parigyat Pratima, 10. Shramanbhoot Pratima, and 11. Maranantik Pratima.

Note : It is essential for the observer of the Pratimas before adapting the next Pratima the conduct of the previous Pratima hasto be observed/obeyed.

७२–लोगंताओ इक्कारसएहिं एक्कारेहिं अबाहाए जोइसंते पण्णत्ते। जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स एक्कारसएहिं एक्कवीसेहिं जोयणसएहिं जोइसे चारं चरइ।

लोकान्त से ग्यारह सौ ग्यारह योजन के अन्तराल पर ज्योतिश्चक्र स्थित है। यह ज्योतिश्चक्र जम्बूद्वीप में मन्दर पर्वत से ग्यारह सौ इक्कीस योजन के अन्तराल पर संचार करता है।

The Jyotish Chakra (astrological cycle) is situated at the distance of eleven hundred eleven yojana from the lokant (termination) gods. This stellar/astrological cycles (Jyotish Chakra) moves at the distance of eleven hundred twenty one yojan from the mount of Sumeru Mountain of Jambu continent.

७३–समणस्स णं भगवओ महावीरस्स एक्कारस्स गणहरा होत्था, तं जहा–इंदभूई अग्गिभूई वायुभूई विअत्ते सोहम्मे मंडिए मोरियपुत्ते अकंपिए अयलभाए मेअज्जे पभासे।

श्रमण भगवान महावीर के गणधरों की संख्या ग्यारह बतायी गई है। यथा — १. इन्द्रभूति गणधर, २. अग्निभूति गणधर, ३. वायुभूति गणधर, ४. व्यक्त गणधर, ५. सुधर्म गणधर, ६. मंडित गणधर, ७. मौर्यपुत्र गणधर, ८. अकम्पित गणधर, ९. अचलभ्राता गणधर, १०. मेतार्य गणधर, ११. प्रभास गणधर।

The number of the head ascetics (gandhravas) of Lord Mahavirahas been mentioned as eleven i.e. They are : 1. Gandhar Indrabhuti, 2. Gandhar Agnibhuti, 3. Gandhar Vayubhuti, 4. Gandhar Vyakta Swami, 5. Gandhar Sudharma, 6. Gandhar Manditputra, 7. Gandhar Mauryaputra, 8. Gandhar Akampit, 9. Gandhar Achalbhrata, 10. Gandhar Metarya, 11. Gandhar Prabhas.

७४–मूले नक्खत्ते एक्कारस तारे पण्णत्ते। हेट्ठिमगेविज्जयाणं देवाणं एक्कारसमुत्तरं गेविज्जविमाणसतं भवइत्ति मक्खायं। मंदरे णं पव्वए धरणितलाओ सिहरतले एक्कारस भागपरिहीणे उच्चत्तेणं पण्णत्ते।

मूल नक्षत्र के ग्यारह तारे कहे गए हैं। अधस्तन ग्रैवेयक-देवों के विमान हैं जिनकी संख्या एक सौ ग्यारह बतायी गई है। धरणीतल से शिखर तल पर ऊँचाई की अपेक्षा ग्यारहवें भाग से हीन विस्तार वाला मन्दर पर्वत है।

Eleven stars have been said of the Mool Nakshatra, the number of the celestial vehicles of the lowest Graivayak celestial beings has been said one hundred eleven comparing the height at the summit to the foundation. There is a mountain Mandar is short expansion eleventh part of its height.

७५–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एक्कारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

इस रत्नप्रभा पृथ्वी में ग्यारह पल्योपम स्थिति के कितने ही नारक कहे गए हैं। पाँचवीं पृथ्वी धूमप्रभा है। इस पृथ्वी में कितने ही नारकों की स्थिति ग्यारह सागरोपम है। कितने ही असुरकुमार देव ग्यारह पल्योपम स्थिति के कहे गए हैं। इसी प्रकार सौधर्म-ईशान कल्पों के कितने ही देव भी ग्यारह पल्योपम स्थिति के बताए गए हैं।

In this Ratanprabha hell same hellish beings have been said of the life span of eleven Palyopama duration. The name of the fifth hell is Dhumprabha. The life-span of the hellish beings of this hell is of eleven Sagropama. The malevolent demon of this hell have been said of eleven Palyopama duration, the life span of the celestial beings of Sodharma and Ishan celestial vehicles kalpas has also been told of eleven Palyopama duration.

७६–लंतए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। जे देवा बंभं सुबंभं बंभावत्तं बंभप्पभं बंभकंतं बंभवण्णं बंभलेसं बंभज्झयं बंभसिंगं बंभसिट्ठं बंभकूडं बंभुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसिं णं देवाणं एक्कारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। ते णं देवा एक्कारसण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा, ऊससंति वा नीससंति वा। तेसिं णं देवाणं एक्कारसण्हं वाससहस्साणं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे एक्कारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

लान्तक कल्प के कितने ही देवों की स्थिति ग्यारह सागरोपम कही गई है। जो जीव लान्तक कल्प के विमानों में देवों के रूप में उत्पन्न होते हैं, उनकी स्थिति ग्यारह सागरोपम कही गई है। विमानों की संख्या बारह बतायी गई है, यथा — १. ब्रह्म, २. सुब्रह्म, ३. ब्रह्मावर्त, ४. ब्रह्मप्रभ, ५. ब्रह्मकान्त, ६. ब्रह्मवर्ण, ७. ब्रह्मलेश्य, ८. ब्रह्मध्वज, ९. ब्रह्मशृंग, १०. ब्रह्मसृष्ट, ११. ब्रह्मकूट, १२. ब्रह्मोत्तरावतंसक। वे देव ग्यारह अर्धमासों (साढ़े पाँच मासों) के अन्तराल से उच्छ्वास-निःश्वास या आन-प्राण की क्रियाएँ करते हैं। वे देव ग्यारह हजार वर्ष बाद आहार की इच्छा रखते हैं।

कितने ही भव्यसिद्धिक जीव ग्यारह भव जन्म ग्रहण करेंगे। उसके उपरान्त वे सिद्ध-बुद्ध होंगे। वे कर्मों से मुक्ति पाकर परमनिर्वाण को प्राप्त होंगे। वे अन्ततोगत्वा सर्वदुःखों का शमन (अन्त) करेंगे।

The celestial beings of Lantak kalpa are told of the duration of eleven Sagropama. The celestial beings who reincarnate as a celestial beings in the vehicles have the life duration of is eleven Sagropama. The number of these Vimanas has been said twelve as:-1. Brahma, 2. Subrahma, 3.Brahmavrat, 4.Brahmaprabh, 5. Brahmakant, 6. Brahmavan, 7. Brahmleshya, 8. Brahmadhvaja, 9. Brahmashring, 10. Brahmasrisht, 11. Brahmakut, 12. Brahmottaravatansak. They do the activities of breathing in and breathing out or

inhale or exhale after the interval of eleven fortnight means after five and a half months. They desire for food once after the completion of eleven thousand years.

Bhavyasidhik jeevas will reincarnate for eleven times in future and after that they will become Sidha and Budha. These gods getting liberation from all the Karmas will attain ultimate Nirvana. Eventually they will destroy all their accumulated Karmas.

।। ग्यारहवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Eleventh Samvaya)

बारहवां समवाय

The Twelveth Samvaya

७७–बारस भिक्खुपडिमाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–मासिआ भिक्खुपडिमा, दो मासिआ भिक्खुपडिमा, तिमासिआ भिक्खुपडिमा, चउमासिआ भिक्खुपडिमा, पंचमासिआ भिक्खुपडिमा, छमासिआ भिक्खुपडिमा, सत्तमासिआ भिक्खुपडिमा, पढमा सत्तराइंदिया भिक्खुपडिमा, दोच्चा सत्तराइंदिया भिक्खुपडिमा, तच्चा सत्तराइंदिया भिक्खुपडिमा, अहोराइया भिक्खुपडिमा, एगराइया भिक्खुपडिमा।

विशिष्ट अभिग्रहों को स्वीकार करने वाले संयम साधक तथा आगम सम्मत प्रतिमाओं को धारण करने वाले भिक्षु कहलाते हैं। बारह भिक्षुप्रतिमाएँ उल्लिखित हैं। यथा —१. एकमासिकी भिक्षु प्रतिमा, २. दो मासिकी भिक्षु प्रतिमा, ३. तीन मासिकी भिक्षुप्रतिमा, ४. चार मासिकी भिक्षु प्रतिमा, ५. पाँच मासिकी भिक्षु प्रतिमा, ६. छह मासिकी भिक्षु प्रतिमा, ७. सात मासिकी भिक्षु प्रतिमा, ८. प्रथम सप्तरात्रिंदिवा भिक्षु प्रतिमा, ९. द्वितीय सप्तरात्रिंदिवा भिक्षु प्रतिमा, १०. तृतीय सप्तरात्रिंदिवा भिक्षु प्रतिमा, ११. अहोरात्रिक भिक्षु प्रतिमा, १२. एकरात्रिकं भिक्षु प्रतिमा।

विशेषः-उत्तरोत्तर मासों के प्रतिमाधारी भिक्षुओं को अपने कर्त्तव्यों के साथ-साथ पूर्व मासों के प्रतिमाधारी भिक्षुओं के सभी कर्त्तव्यों का भी पालन करना होता है।

The ascetics those observer secret/mental vows (Abhigrah) and are adaptor of scriptures propagated special vows are called Bhikshu (alm seeker). Twelve Bhikshu special vows are narrated as :—1. One month duration Pratima, 2. Two months duration Pratima,3. Three months duration Pratima, 4. Four months duration Pratima, 5. Five months duration Pratima, 6. Six months duration Pratima, 7. Seven months duration Pratima, 8. 1st seven days and

night Bhikshu Pratima, 9. Second seven days and night Pratima, 10. Third seven night days Pratima, 11. Day and night Bhikshu Pratima, 12. One single night Bhikshu Pratima.

Note : While performing their duties the alm seekers, who haveadopted the above mentioned next to next month's Pratimas have to perform all the duties of the alm seekers who prescribed for the Pratimas of the previous months, too.

७८–दुवालसविहे सम्भोगे पण्णत्ते, तं जहा–

उवही सुअ भत्त पाणे अंजली पग्गहे त्ति य।
दायणे य निकाए अ अब्भुट्ठाणे ति आवरे ।।१।।

किइकम्मस्स य करणे वेयावच्चाकरणे इ अ।
समोसरणं संनिसिज्जा य कहाए आ पबंधणे ।।२।।

सम्भोग की संख्या बारह बतायी गयी है। यथा — १. उपधि-विषयक सम्भोग (साधु द्वारा वस्त्र-प्रात्रादि विषयक मर्यादा का पालन), २. श्रुत-विषयक सम्भोग (साधु द्वारा श्रुत-विषयक वाचनादि निर्दोष विधि का पालन), ३. भक्तपान विषयक सम्भोग (साधु द्वारा भक्त-पान विषयक निर्दोष, मर्यादा का पालन, ४. अंजली-प्रग्रह सम्भोग (साधुओं की पारस्परिक वंदना और हाथों की अंजलि जोड़कर नमस्कारादि का पालन), ५. दान विषयक सम्भोग (साधु द्वारा अपने वस्त्र-पात्रादि को अन्य साम्भोगिक साधु को देना), ६. निकाचन-विषयक सम्भोग (साधु द्वारा यथाविधि अन्य साम्भोगिक साधु को शुद्ध वस्त्र, पात्र या भक्तपानादि देने का निमन्त्रण देना), ७. अभ्युत्थान विषयक सम्भोग (अधिक दीक्षा पर्याय वाले साधु का यथोचित अभिवादन-सत्कार करना), ८. कृतिकर्मकरण सम्भोग (साधु द्वारा कृतिकर्म वन्दनादि यथाविधि करना), ९. वैयावृत्य-करण सम्भोग (साधु द्वारा वृद्ध, बाल, रोगी प्रभृति साधुओं की यथाविधि वैयावृत्य करना), १०. समवसरण-सम्भोग (प्रवचन-भवन आदि स्थानों पर साधुओं का मर्यादा पूर्वक पारस्परिक मिलना, उठना-बैठना), ११. संनिषद्या सम्भोग (साधु द्वारा अपने आसन से उठकर गुरुजन से प्रश्न पूछना या उनके द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर (देना), १२. कथा प्रबन्धन सम्भोग (साधु द्वारा गुरु के साथ तत्त्व चर्चा या धर्मकथा के दौरान वाद-कथा सम्बन्धी नियमों अर्थात् मर्यादाओं का पालन करना)।

संकेतः–साधु द्वारा अपने संघ के नियमों का मर्यादापूर्वक पालन करना सम्भोग है और उल्लंघन करना विसम्भोग कहलाता है।

The number of mutual enjoyment (Sambhog) has been told twelve as :- 1. Mutual enjoyment related to articles (to abide by the rule of the limit of clothes and utencils of the Monk), 2. Mutual enjoyment of scriptures (to abide by the rules related to discourse about of scriptures) 3. Mutual enjoyment related to

food (to abide by the rules related to taking faultless food and water), 4. Mutual enjoyment of salutation through folding hands (to abide by the rules related to greeting each other with folding hands), 5. Mutual enjoyment of donation and charity (giving and donating their cloths and utencils to other ascetics), 6. Mutual enjoyment regarding invitation (Invitation by the monks to another monks with due regard to after them pure cloths, utencils and food etc.), 7. Mutual enjoyment of seniority (to pay due respect to the senior ascetics who is senior in initiation), 8. Right enjoyment of do-able deeds (Kriti Karma the ascetics are obliged to do obeisance deeds) with due respect to each other, 9. Right enjoyment of offering services (services to be offered towards the old, ill, newly initiated and senior ascetics with due sincerity by the monks, 10. Right enjoyment in assembly lecture (to see and meet other co-monks adopting the due rules of meeting & conversation at the preaching assembly), 11. Right enjoyment of nearness and closeness to the Guru (teacher) standing from his sitting place going near the guru and asking the questions with due respect, 12. Right enjoyment of management of telling stories (the ascetic must abide by the rules and limits while talking to his elder ascetic (Guru ji) on religious matters and religious stories etc.

Note : To abide by the limits and rules of his organization (sangh)by the ascetic is called Sambhog (right enjoyment) and to transgress the rules is called Non-right enjoyment.

७९–दुवालसावत्ते कितिकम्मे पण्णत्ते, तं जहा–

दुओणयं जहाजायं कितिकम्मं बारसावयं।
चउसिरं तिगुत्तं च दुपवेसं एगनिक्खमणं।।१।।

कृतिकर्म के बारह आवर्त्त बताए गए हैं, यथा — दो अवनत (नमस्कार), यथाजात रूप का धारण, बारह आवर्त, चार शिरोनति, तीन गुप्ति, दो प्रवेश और एक निष्क्रमण।

Twelve do-ables essential deeds of bowing (salutation) by monks are mentioned as :– Two bowing salutation, four kinds of head bowing, three stoppages of mind, body and speech, two entrance and one departure bowings.

८०–विजया णं रायहाणी दुवालसजोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ता। रामे णं बलदेवे दुवालसवाससयाइं सव्वाउयं पालित्ता देवत्तं गए। मंदरस्स णं पव्वयस्स चूलिया मूले दुवालसजोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता। जंबूदीवस्स णं दीवस्स वेइया मूले दुवालसजोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता।

जम्बूदीप के पूर्व दिशा में विजयद्वार है जिसके स्वामी विजय नामक देव हैं। उनकी राजधानी विजया है जो यहाँ से असंख्यात योजन दूरी पर है। विजया बारह लाख योजन आयाम-विष्कम्भ वाली कही गई है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम, जो बलदेव कहे गए हैं, की आयु बारह सौ वर्ष बतायी गई है, वे अपनी आयु पूर्णकर देवत्व को प्राप्त हुए अर्थात् देव गति को गए। मूल में बारह योजन विस्तार वाली मन्दरपर्वत की चूलिका है। जम्बूद्वीप नामक इस द्वीप की वेदिका मूल में बारह योजन विस्तार वाली बतायी गई है।

The Vijaydwar is situated in East direction of Jambu continent and the name of the chief god of this Vijaydwar is Vijay, the capital is Vijaya which is innumerable yojanas far away from here. The length and width of this city has been said of twelve lacs yojana, the life span of Ram, who has been said co-lord (Baldev) has been said as twelve hundred years, who having completed his age reincarnated as god(celestial being). At the root, the summit (Chulika) of mountain Mander has the expansion of twelve yojanas. There is a platform (Vedika) of the continent of Jambu Dweep, the expansion of the root of the Vedika has been told of twelve yojanas.

८१–सव्वजहण्णिया राई दुवालसमुहुत्तिआ पण्णत्ता। एवं दिवसोवि नायव्वो।

सबसे छोटी रात अर्थात् सर्वजघन्य रात्रि और सबसे छोटा दिन बारह-बारह मुहूर्त्त के कहे गए हैं। अर्थात् बारह मुहूर्त्त की सबसे छोटी रात और बारह मुहूर्त्त का ही सबसे छोटा दिन होता है।

The time span of the shortest night and the shortest day is said to be of twelve-twelve (muhurat) respectively, it means the shortest night has a maximum time span of twelve muhurat and the shortest day also has a maximum time span of twelve muhurat.

८२–सव्वट्ठसिद्धस्स णं महाविमाणस्स उवरिल्लाओ थुभिअग्गाओ दुवालस जोयणाइं उड्ढं उप्पइया ईसिपब्भार नाम पुढवी पण्णत्ता। ईसिपब्भाराए णं पुढवीए दुवालस नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा–ईसि त्ति वा, ईसिपब्भारा त्ति वा, तणू इ वा, तणुयतरि त्ति वा, सिद्धि त्ति वा, सिद्धालए त्ति वा, मुत्ती त्ति वा, मुत्तालए त्ति वा, बंभे त्ति वा, बंभवडिंसए त्ति वा, लोकपडिपूरणे त्ति वा लोगग्गचूलिआई वा।

ईषत् प्राग्भारपृथ्वी, सर्वार्थसिद्ध महाविमान की उपरिम स्तूपिका यानि चूलिका से बारह योजन ऊपर कही गई है। यह पृथ्वी बारह नामों से अभिहित है, यथा — १. ईषत् पृथ्वी, २. ईषत् प्राग्भार पृथ्वी, ३. तनु पृथ्वी, ४. तनुतरी पृथ्वी, ५. सिद्धि पृथ्वी, ६. सिद्धालय, ७. मुक्ति, ८. मुक्तालय, ९. ब्रह्म, १०. ब्रह्मावतंसक, ११. लोक प्रतिपूरणा, १२. लोकाग्रचूलिका।

The Ishtpragbhara Prithvi (seat of the liberated souls), has been said to be situated twelve yojana above the summit on (Chulika) of the 26th Sarvarthsidh great celestial vehicle. This land has been known by twelve names as follows :– 1. Isht, 2. Ishtpragbhara, 3. Tanu Prithvi, 4. Tanutari Land, 5. Sidhi Land, 6. Sidhalya, 7. Mukti, 8. Muktalya, 9. Brahm, 10. Brahmavantsk, 11. Lokparitpurna, 12.Lokagrachulika.

८३–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं बारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं बारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

इस रत्नप्रभा पृथ्वी में बारह पल्योपम वाली स्थिति के नारक कहे गए हैं। इसी प्रकार पाँचवीं धूमप्रभा पृथ्वी में कितने ही नारकों की स्थिति बारह सागरोपम कही गई है। कितने ही असुरकुमार देव भी बारह पल्योपम स्थिति के कहे गए हैं। सौधर्म-ईशान कल्पों में भी कितने ही देवों की स्थिति बारह पल्योपम है।

The infernal beings of this Ratanprabha hell have been said of the life span of twelve Palyopama, likewise the life duration of the hellish beings of the Dhumprabha Prithvi has been said of twelve sagaropama. The fiendish (Asurkumar Dev) gods have been told of twelve Palyopama duration. The duration of lives of the celestial beings of Sodharma and Ishan kalpa is also of twelve Palyopama.

८४–लंतए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं बारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। जे देवा महिंदं महिंदज्झयं कंबुं कंबुग्गीयं पुंखं सुपुंखं महापुंखं पुंडं सुपुंडं महापुंडं नरिंदं नरिंदकंतं नरिंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसिं णं देवाणं उक्कोसेणं बारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। ते णं देवा बारसण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा, ऊससंति वा नीससंति वा। तेसिं णं देवाणं बारसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे बारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

लान्तक कल्प में कितने ही देवों की स्थिति बारह सागरोपम कही गई है। इस कल्प के देव विशिष्ट विमानों में देवरूप से उत्पन्न होते हैं। इन विशिष्ट विमानों की नामावली इस प्रकार है– माहेन्द्र, माहेन्द्रध्वज, कम्बु, कम्बुग्रीव, पुंख, सुपुंख, महापुंख, पुंड, सुपुंड, महापुंड, नरेन्द्र, नरेन्द्रकान्त, नरेन्द्रोत्तरावतंसक। इन देवों की उत्कृष्ट स्थिति बारह सागरोपम कही गई है। ये देव बारह अर्धमासों

यानि छह मासों के अन्तराल से उच्छ्वास-निःश्वास या आन-प्राण की क्रियाएँ करते हैं। ये देव बारह हजार वर्ष के उपरान्त आहर की इच्छा रखते हैं।

कितने भव्यसिद्धिक जीव ऐसे हैं जो बारह भव (जन्म) ग्रहण करेंगे। उसके बाद वे सिद्ध-बुद्ध होंगे। वे कर्मों से मुक्ति पाकर परमनिर्वाण को प्राप्त होंगे। अन्ततोगत्वा वे सर्व दुःखों का शमन (अन्त) करेंगे।

The native celestial beings of the vehicles of terminal gods (Lokantak kalpa) has the life span of twelve Sagropama. The celestial beings of this kalpa are reincarnated in these particular celestial vehicles as a gods. The numbers of these special celestial vehicles are as follows :–1. Mahendra, 2. Mahendra Dhvja, 3. Kambu, 4. Kanmbugriv, 5. Pankh, 6. Supankh, 7. Mahapankh, 8. Pund, 9. Supund, 10. Mahapund, 11. Narendra, 12. Narendrakant, 13. Narendra-vantarvantsk. The maximum life span of these celestial beings has been said of twelve Sagropama.

These celestial beings inhale and exhale or breathe in and breathe out after completion of a period of six months duration or half yearly. These gods desire to have food once after a period of twelve thousand years.

There the beings in numbers are capable of salvation. They will be reincarnated after completion of twelve states of life cycle. After twelfth reincarnation they will attain liberation. After destruction of all the accumulated previous Karmas, they will get emancipation. At last these celestial beings will end their miseries.

।। बारहवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Twelveth Samvaya)

तेरहवां समवाय

The Thirteenth Samvaya

८५–तेरस किरियाठाणा पण्णत्ता, तं जहा–अत्थादंडे अणत्थादंडे हिंसादण्डे अकम्हादंडे दिट्ठिविपरिआसिआदंडे मुसावायवत्तिए अदिन्नादाणवत्तिए अज्झत्थिए मानवत्तिए मित्तदोसवत्तिए मायावत्तिए लोभवत्तिए इरियावहिए नामं तेरसमे।

क्रियास्थान (कर्मबंध की कारणभूत चेष्टा वाले भेद या स्थान) की संख्या तेरह कही गई है। यथा – १. अर्थदण्ड क्रिया स्थान, २. अनर्थदण्ड क्रिया स्थान, ३. हिंसादण्ड क्रिया स्थान,

४. अकस्माद्दण्ड क्रियास्थान, ५. दृष्टि-विपर्यासदण्डक्रियास्थान, ६. मृषावादप्रत्ययदण्ड क्रिया स्थान, ७. अदत्तादानप्रत्ययदंड क्रियास्थान, ८. आध्यात्मिकदण्ड क्रियास्थान, ९. मानप्रत्ययदण्ड क्रिया स्थान, १०. मित्रद्वेष-प्रत्ययदण्ड क्रियास्थान, ११. मायाप्रत्ययदण्ड क्रियास्थान, १२. लोभप्रत्ययदण्ड क्रियास्थान, १३. ईर्यापथिकदण्ड क्रियास्थान।

The number of activities (the types or places of the activities responsible for accumulation of Karmas) has been said thirteen as:—1. Purposeful activities, 2. Purposeless activities, 3. Violence mingled activities, 4. Sudden occurrence activities, 5. Vision transition activities, 6. Lying causing activities, 7. Relating to stealing activities, 8. Bad mental activities, 9. Conceit related activities, 10. Grudge related with friend activities, 11. Deceit related activities, 12. Greed related activities, 13. Movement related activities.

८६–सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु तेरस विमाणपत्थडा पण्णत्ता। सोहम्मवडिंसगे णं विमाणे अद्धतेरसजोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते। एवं ईसाणवडिंसगे वि। जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिआणं अद्धतेरस जाइकुल-कोडीजोणीपमुहसयसहस्साइं पण्णत्ता।

सौधर्म-ईशान कल्पों में विमान-प्रस्तट (प्रस्तार, पटल या पाथड़े) की संख्या तेरह बतायी गई है। अर्ध-त्रयोदश अर्थात् साढ़े बारह लाख योजन आयाम-विष्कम्भ वाला सौधर्मावतंसक कहा गया है। इसी प्रकार ईशानावतंसक विमान की स्थिति को भी जानना चाहिए। जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक जीवों की जाति कुल-कोटियाँ साढ़े बारह लाख कही गई हैं।

The number of the platforms of the celestial vehicles of Sodharma and Ishan Kalpa has been told as thirteen. The width of the Sodharmavatansak platform has been told twelve and half lacs yojana. The measurement of the vehicle of Ishanvartansak should be known as the same. It has been told about the five sensed aquatic beings that the number of species of these beings are twelve and a half lacs.

८७–पाणाउस्स णं पुव्वस्स तेरस वत्थू पण्णत्ता।

प्राणायु नामक बारहवें पूर्व के तेरह वस्तु नामक अर्थाधिकार बताए गए हैं।

In the chapter named Pranayu of twelveth Poorva, has been told about the 13 Arthadhikar (object perception chapter) chapters.

८८–गब्भवक्कंतिअपंचिदियतिरिक्खजोणिआणं तेरसविहे पओगे पण्णत्ते, तं जहा– सच्चमणपओगे मोसमणपओगे सच्चामोसमणपओगे असच्चामोसमणपओगे सच्चवइपओगे मोसवइपओगे सच्चामोसवइपओगे असच्चामोसवइपओगे ओरालियसरीरकायपओगे

ओरालियमीससरीरकायपओगे वेउव्वियसरीरकायपओगे वेउव्वियमीससरीरकायपओगे कम्मइयसरीरकायपओगे।

गर्भज (गर्भ से उत्पन्न होने वाले) पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीव कहे गए हैं। इनमें तेरह प्रकार के योग या प्रयोग हैं। यथा — १. सत्यमनःप्रयोग, २. मृषामनःप्रयोग, ३. सत्यमृषामनःप्रयोग, ४. असत्यामृषामनःप्रयोग, ५. सत्यवचनप्रयोग, ६. मृषावचनप्रयोग, ७. सत्यमृषावचनप्रयोग, ८. असत्यामृषावचनप्रयोग, ९. औदारिक-शरीरकायप्रयोग, १०. औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोग, ११. वैक्रियशरीरकायप्रयोग, १२. वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोग, १३. कार्मणशरीरकायप्रयोग।

Uterus born placenta have been said five sensed animal beings. They have thirteen types of urges or activities as : 1. Urge of true mind, 2. Urge of untrue mind, 3. Urge of bilateral mind, 4. Urge of untrue and non-false mind,.5. Urge of true speech, 6. Urge of untrue speech, 7. True and lie mind urge, 8. Practical speech urge, 9.The gross body urge, 10. The gross mixed body urge, 11. Transformable body urge, 12. Protean or transformable mixed body urge, 13. Karmic body urge.

८९–सूरमंडलं जोयणेणं तेरसेहिं एगसट्ठिभागेहिं जोयणस्स ऊणं पण्णत्ते।

सूर्यमण्डल का निरूपण करते हुए कहा गया है कि यह ४८/६१ योजन विस्तार वाला है यानि एक योजन के इकसठ भागों से तेरह भाग १३/६१ से न्यून इसकी स्थिति है।

Illustrating about the sun's movement it has been said that it has the expansion of its movement of 48/61 yojanas, it means out of one yojana it has less than 13/61 (thirteen parts out of sixty one parts) of its movement situation.

९०–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइआणं नेरइयाणं तेरसपलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। पंचमीए पुढवीए अत्थेगइआणं नेरइयाणं तेरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइआणं देवाणं तेरस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

इस रत्नप्रभा पृथ्वी में तेरह पल्योपम वाली स्थिति के अनेकों नारक हैं। धूमप्रभा पृथ्वी जो पाँचवी पृथ्वी है, उसमें कितने ही नारक तेरह सागरोपम स्थिति वाले बताए गए हैं। इसी प्रकार सौधर्म-ईशान कल्पों में कितने ही देव तेरह पल्योपम स्थिति के कहे गए हैं।

There are some infernal beings. Who have the life span of thirteen Palyopama in Ratanprabha hell? In the fifth hell named Dhumprabha, some infernal beings have been said to be thirteen Sagropama duration. Likewise the life duration of the celestial beings of the Sodharma-Ishan Kalpa has been told of thirteen Palyopama duration.

११-लंतए कप्पे अत्थेगइआणं देवाणं तेरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। जे देवा वज्जं सुवज्जं वज्जावत्तं [वज्जप्पभं] वज्जकंतं वज्जवण्णं वज्जलेसं वज्जरूवं वज्जसिंगं वज्जसिट्ठं वज्जकूडं वज्जुत्तरवडिंसगं वइरं वइरावत्तं वइरप्पभं वइरकंतं वइरवण्णं वइरलेसं वइररूवं वइरसिंगं वइरसिट्ठं वइरकूडं वइरुत्तरवडिंसगं लोगं लोगावत्तं लोगप्पभं लोगकंतं लोगवण्णं लोगलेसं लोगरूवं लोगसिंगं लोगसिट्ठं लोगकूडं लोगुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसिं णं देवाणं उक्कोसेणं तेरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। ते णं देवा तेरसहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा, ऊससंति वा नीससंति वा। तेसिं णं देवाणं तेरसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे तेरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

लान्तक कल्प में कितने ही देवों की तेरह सागरोपम स्थिति का निरूपण है। वहाँ के देव तेत्तीस प्रकार के विमानों में देव रूप से उत्पन्न होते हैं। ये विमान इस प्रकार से हैं— १. वज्र विमान, २. सुवज्र विमान, ३. वज्रावर्त (वज्रप्रभ) विमान, ४. वज्रकान्त विमान, ५. वज्रवर्ण विमान, ६. वज्रलेश्य विमान, ७. वज्ररूप विमान, ८. वज्रशृंग विमान, ९. वज्रसृष्ट विमान, १०. वज्रकूट विमान, ११. वज्रोत्तरावतंसक विमान, १२. वइर विमान, १३. वइरावर्त विमान, १४. वइरप्रभ विमान, १५. वइरकान्त विमान, १६. वइरवर्ण विमान, १७. वइरलेश्य विमान, १८. वइररूप विमान, १९. वइरशृंग विमान, २०. वइरसृष्ट विमान, २१. वइरंकूट विमान, २२. वइरोत्तरावतंसक विमान, २३. लोक विमान, २४. लोकावर्त विमान, २५. लोकप्रभविमान, २६. लोककान्त विमान, २७. लोकवर्ण विमान, २८. लोकलेश्य विमान, २९. लोकरूप विमान, ३०. लोकशृंग विमान, ३१. लोकसृष्ट विमान, ३२. लोककूट विमान, ३३. लोकोत्तरावतंसक विमान। इन विमानों में उत्पन्न देवों की उत्कृष्ट स्थिति तेरह सागरोपम कही गई है। वे देव तेरह अर्धमासों यानि साढ़े छह मासों के अन्तराल से उच्छ्वास व निःश्वास तथा आन और प्राण की क्रियाएँ करते हैं। उन देवों में तेरह हजार वर्ष के बाद आहार लेने की इच्छा उत्पन्न होती है।

कितनेक भव्य सिद्धिक जीव हैं जो तेरह भव (तेरह बार जन्म) ग्रहण करेंगे। उसके बाद वे जीव सिद्ध-बुद्ध होंगे। वे जीव कर्मों से मुक्त होकर परमनिर्वाण को प्राप्त होंगे। वे जीव अन्ततोगत्वा सर्व दुःखों का शमन (अन्त) करेंगे।

The life duration of the celestial beings of the celestial vehicles of Lantak Kalpa has been expounded of thirteen Palyopama. The celestial beings of these celestial vehicles take birth into thirty three types of celestial vehicles. The names of these vehicles are asfollows :- 1. Vajra Viman, 2. Suvajra Viman, 3. Vajravart (vajraprabh) Viman, 4. Vajrakant Viman, 5. Vajravarn Viman, 6. VajraleshyaViman, 7. Vajraroop Viman, 8. Vajrashring Viman, 9. VajrashrasthViman, 10. Vajrakut Viman, 11. Vajrattaravatansak Viman, 12.

Vadur Viman, 13. Vaduravart Viman, 14. Vadurprabh Viman, 15. Vadurkant Viman, 16. Vadurvarn Viman, 17. Vadurleshya Viman, 18. Vaduraroop Viman, 19. Vadurshring Viman, 20. Vadursrasth Viman, 21. Vadurkut Viman, 22. Vadurottaravatansak Viman, 23. Lok Viman, 24. Lokavart Viman, 25. Lokprabha Viman, 26. Lokant Viman, 27. Lokvarn Viman, 28. Lokleshya Viman, 29. Lokroop Viman, 30. Lokshring Viman, 31. Lokasrisht Viman, 32. Lokakut Viman, 33. Lokottravatansak Viman. The maximum age duration of the celestial beings reincarnated into these Vimans has been said thirteen Sagropama. These celestial beings do the activity of inhaling and exhaling or breathing in and breathing out after an interval of six and a half months only. After the passage of thirteen thousand years these celestial beings desire once for food.

Many of these beings capable of salvation will take thirteen births after completion of thirteen incarnations. Thereafter these beings would attain liberations. These beings after getting salvation will get the ultimate emancipation. Ultimately they will destroy all their miseries.

।। तेरहवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Thirteenth Samvaya)

चौदहवां समवाय

The Fourteenth Samvaya

९२– चउद्दस भूअग्गामा पण्णत्ता, तं जहा–सुहुमा अपज्जत्तया, सुहुमा पज्जत्तया, बादरा अपज्जत्तया, बादरा पज्जत्तया, बेइंदिया अपज्जत्तया, बेइंदिया पज्जत्तया, तेइंदिया अपज्जत्तया, तेइंदिया पज्जत्तया, चउरिंदिया अपज्जत्तया, चउरिंदिया पज्जत्तया, पंचिंदिया असन्नि-अपज्जत्तया, पंचिंदिया असन्नि-पज्जत्तया, पंचिंदिया सन्नि-अपज्जत्तया, पंचिंदिया सन्नि-पज्जत्तया।

भूतग्राम यानि जीव समास (जीवों के समूह) का वर्णन किया गया है। इनकी संख्या चौदह कही गई है। यथा —१. सूक्ष्म अपर्याप्तक एकेन्द्रिय भूतग्राम, २. सूक्ष्म पर्याप्तक एकेन्द्रिय भूतग्राम, ३. बादर अपर्याप्तक एकेन्द्रिय भूतग्राम, ४. बादर पर्याप्तक एकेन्द्रिय भूतग्राम, ५. द्वीन्द्रिय अपर्याप्तक भूतग्राम, ६. द्वीन्द्रिय पर्याप्तक भूतग्राम, ७. त्रीन्द्रिय अपर्याप्तक भूतग्राम, ८. त्रीन्द्रिय पर्याप्तक भूतग्राम, ९. चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तक भूतग्राम, १०. चतुरिन्द्रिय पर्याप्तक भूतग्राम, ११. पंचेन्द्रिय असंज्ञी अपर्याप्तक भूतग्राम, १२. पंचेन्द्रिय असंज्ञी पर्याप्तक भूतग्राम, १३. पंचेन्द्रिय संज्ञी अपर्याप्तक भूतग्राम, १४. पंचेन्द्रिय संज्ञी पर्याप्तक भूतग्राम।

विशेष-पर्याप्ति (आहार, शरीर, इन्द्रियादि के योग्य पुद्गलों को ग्रहण कर उन्हें तद्रूप परिणत करने की योग्यता की पूर्णता) को प्राप्त करने वाले को पर्याप्त और शेष को अपर्याप्त कहते हैं। इनकी पूर्ति का काल अन्तर्मुहूर्त्त बताया गया है।

Bhootgram means Bhootsamas (the group of beings) have been narrated here. The number of these groups of beings has been said to be fourteen as:- 1. Subtle immature one sensed living beings group, 2. Subtle mature one sensed living beings group, 3. Gross immature one sensed living beings group, 4. Gross mature one sensed living beings group, 5. Two sensed immature living beings group, 6. Two sensed mature living beings group, 7. Three sensed immature living beings group, 8. Three sensed mature living beings group, 9. Four sensed immature living beings group, 10. Four sensed mature living beings group, 11. Five sensed non-rational immature living beings group, 12. Five sensed non-rational mature living beings group, 13. Five sensed rational immature living beings group, 14. Five sensed rational mature living beings group.

Note : Maturity of organs (the perfectness of the ability to imbibe the matter particles worthy to eat, to physique making, senses making etc. and to convert them to work accordingly), is called Payarpti and the remaining beings are called Apayarpt. The time of their compliance has been told as less than a muhurat.

१३– चउद्दस पुव्वा पण्णत्ता, तं जहा–

उप्पायपुव्वयग्गेणियं च तइयं च वीरियं पुव्वं।
अत्थीनत्थिपवायं तत्तो नाणप्पवायं च।।१।।

सच्चप्पवास पुव्वं तत्तो आयप्पवायपुव्वं च।
कम्मप्पवायपुव्वं पच्चाक्खाणं भवे नवमं।।२।।

विज्जाअनुप्पवायं अबंझपाणाउ बारसं पुव्वं।
तत्तो किरियविसालं पुव्वं तह बिंदुसारं च।।३।।

जैनागमों में बारहवाँ अंग दृष्टिवाद है। दृष्टिवाद के अन्तर्गत चौदह पूर्व निरूपित हैं। यथा — १. उत्पाद-पूर्व (उत्पाद का आश्रय लेकर द्रव्यों के पर्यायों का प्ररूपण), २. अग्रायणीय-पूर्व (द्रव्यों के अग्रपरिमाण का आश्रय लेकर उनका प्ररूपण), ३. वीर्य-प्रवाद-पूर्व (जीवादि द्रव्यों की वीर्य-शक्ति का निरूपण), ४. अस्तिनास्ति प्रवाद-पूर्व (द्रव्यों के स्वद्रव्य और परद्रव्य की अपेक्षा से अस्तित्व-नास्तित्व धर्म का प्ररूपण), ५. ज्ञान प्रवाद-पूर्व (मतिज्ञानादि ज्ञानों के भेद-प्रभेदों का सस्वरूप निरूपण), ६. सत्यप्रवाद-पूर्व (सत्य-असत्य, संयम-असंयम तथा उनके भेद-प्रभेदों का विस्तृत निरूपण), ७.

आत्मप्रवाद-पूर्व (आत्मा के अस्तित्व को सिद्ध कर अनेक नयों से उसके भेद-प्रभेदों का निरूपण), ८. कर्मप्रवाद-पूर्व (ज्ञानावरणादि कर्मों के अस्तित्व, भेद-प्रभेद एवं उदय-उदीरणादि विविध दशाओं का सविस्तार वर्णन), ९. प्रत्याख्यान प्रवाद-पूर्व (यम-नियम, उनके अतिचार और प्रायश्चित्त का विस्तारपूर्वक विवेचन), १०. विद्यानुवाद-पूर्व (मन्त्र-तन्त्रों एवं रोहिणी आदि महाविद्याओं तथा अंगुष्ठ प्रश्नादि लघुविद्याओं की विधिपूर्वक साधना का विवेचन), ११. अबन्ध्य-पूर्व (अतिशयों का, चमत्कारों का, तथा तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध बाँधने वाली भावनाओं का निरूपण), १२. प्राणावाय-पूर्व (आयुर्वेद के अष्टांगों का विस्तृत विवेचन), १३. क्रियाविशाल-पूर्व (विविध कलाओं का, मानसिक, वाचनिक और कायिक क्रिया का सभेद विस्तृत विवेचन), १४. लोकबिन्दुसार-पूर्व (लोक का स्वरूप, तथा मोक्ष के कारणभूत रत्नत्रय धर्म का सूक्ष्म विवेचन)।

Among the Jain Agams (holy scriptures), Drishtivad is twelveth canon. Fourteen Poorvas have been mentioned in Drishtivad as :-1.Utpad Poorva (taking the help of generation describing the modes of matters or substance), 2. Agrayaniya Poorva (taking the preinnate nature of the substance into consideration to describe living beings, 3. Potency Virya Pravad Poorva (the description of the potency power of the living beings), 4. Exist or not existing (asti-nasti) Pravad Poorvas (the definition of existence and non-existence mode of matter with regard of self substance and other substance), 5. Knowledge (Pravad) Poorva—the definition of types of Knowledge on the basis of-sense based knowledge etc.), 6. Truth discourse (Pravad) Poorva (the elaborate investigation of truth, falsehood, restraint and non-restraint activities and their division and sub-division, 7. Soul discourse (Pravad) Poorva (establishing the existence of soul to define its types and sub types on the basis of several a view points, 8. Karma discourse (Pravad) Poorva (an elaborate description of different states of the existence of knowledge obscuring Karmas their division and sub division, their types of function and subsidence, 9. Pratyakhyan (renouncable discourse) Pravad Poorva (an elaborated illustration of vows, rules and norms, its transgressions and repentances or expiations, 10. Learning discourse Poorva (the definition of the systematic practice of talisman sorcery, the vast incarnation learning's of Rohini etc. and the learning of small spells regarding thumb questionnaire etc.), 11. The Poorva of unbounded activities (the definition of observances of Tirathankara-Name-Karma binding deeds miracles and extra qualities), 12. Poorva related to health (Pranavay) discourse & elaborate description of eight limbed Ayurveda (Indian medicine course), 13. Poorva of Artistic Activities (Kirya visual) An elaborate description of different kinds of arts alongwith its mental, physical and speech related types and sub types, 14. Poorva related to cosmos structure (lokabindusar) (A subtle description of the mode of the cosmos and three jeweled religion the cause of liberation).

चौदह गुणस्थान

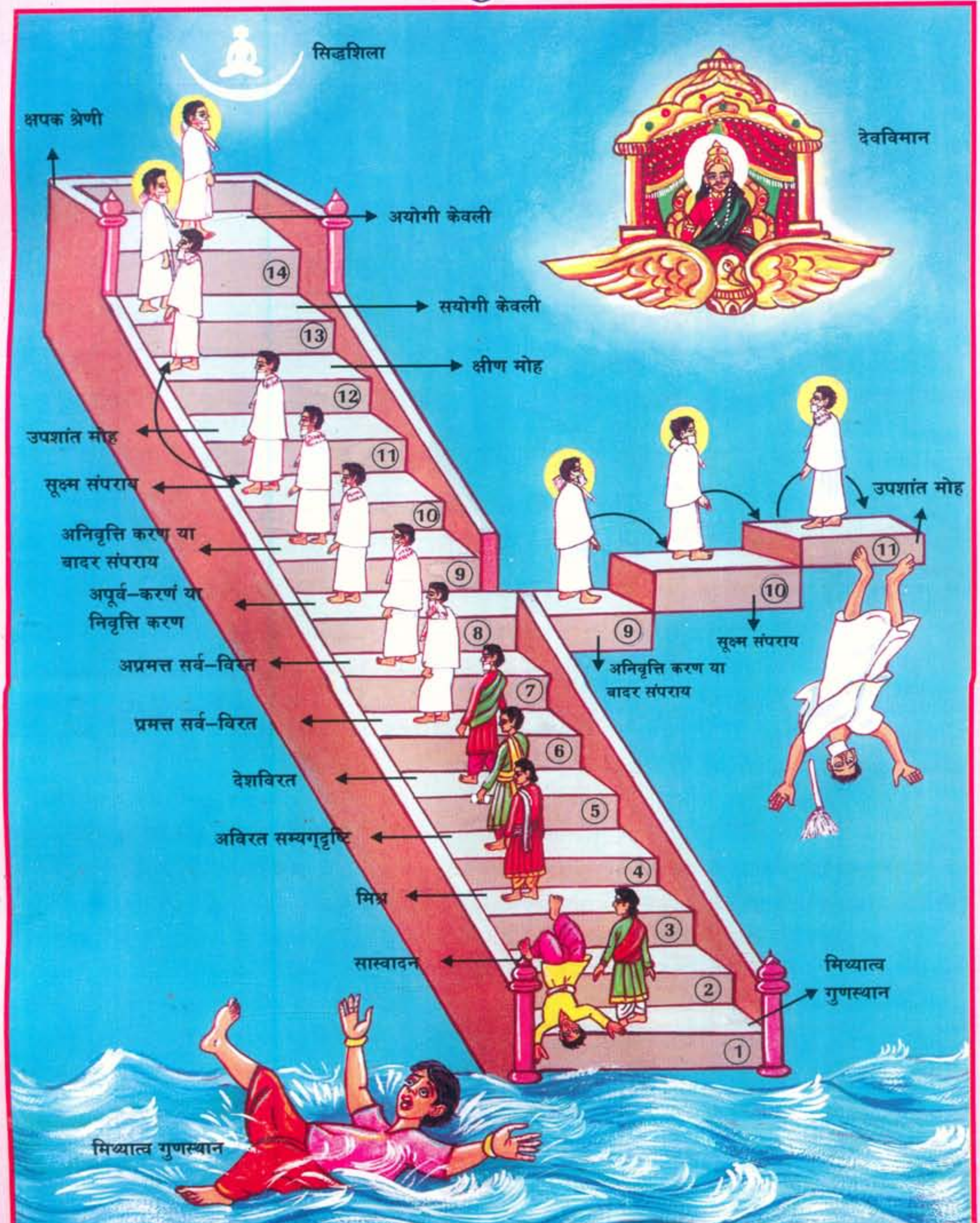

सिद्धशिला
क्षपक श्रेणी
देवविमान
अयोगी केवली
14
सयोगी केवली
13
क्षीण मोह
12
उपशांत मोह
11
सूक्ष्म संपराय
10
अनिवृत्ति करण या
बादर संपराय
9
अपूर्व–करणं या
निवृत्ति करण
8
अप्रमत्त सर्व–विरत
7
प्रमत्त सर्व–विरत
6
देशविरत
5
अविरत सम्यग्दृष्टि
4
मिश्र
3
सास्वादन
2
1
मिथ्यात्व
गुणस्थान
9
10
11
उपशांत मोह
सूक्ष्म संपराय
अनिवृत्ति करण या
बादर संपराय
मिथ्यात्व गुणस्थान

चौदह गुणस्थान

सूत्र संख्या 95 में कर्मों की विशुद्धि की गवेषणा करने वाले उपायों की अपेक्षा से चौदह जीवस्थान कहे गए हैं। कर्मग्रन्थ में इन्हें ही गुणस्थान कहा गया है। गुणस्थान शब्द ही अधिक प्रचलित भी है।

चौदह गुणस्थान एक आरोहण क्रम है। जीव जैसे-जैसे अपना शुद्धिकरण करता जाता है वैसे-वैसे उसका ऊर्ध्वारोहण होता जाता है। चौथे गुणस्थान में जीव सम्यक्त्व धारण करता है। यहां से उसकी यात्रा सम्यक् स्वरूप धारण करती है। पांचवें गुणस्थान में व्यक्ति श्रावकधर्म अंगीकार करता है और छठे में श्रमण-धर्म की आराधना करता है। आगे-आगे के गुणस्थानों में प्रमाद और कषायों को पतला करता है। बारहवें गुणस्थान में मोह को क्षीण करता है। मोह का सर्वथा क्षय होते ही वह तेरहवें गुणस्थान में प्रविष्ट होता है। यही कैवल्य अवस्था है। चौदहवां गुणस्थान अयोगी केवली है। यहां केवली शरीर का विसर्जन कर मोक्ष को प्राप्त हो जाता है।

सूत्र संख्या 95

Fourteen "Gunsthan"

In aphorism no. 95 with regards the search of the purification of Karmas fourteen "Jeeva Sthan" has been stated. In Holy Scriptures these just have been said "Gunsthan". The term "Gunsthan" is more in use just today also.

Fourteen Gunsthan are actually an ascending order. Such as the being goes purifying himself so as his escalation starts. In fourth Gunsthan, the being holds the righteousness here forth his journey holds the mode of equanimity.

In the fifth Gunsthan the person adopts the householder vows and in the sixth Gunsthan propiates the monks vows and in the proceeding Gunsthans the person thins his pramad and passions. In the twelveth Gunsthan destroys all the delusions.

As soon as the delusions are destroyed he enters in the thirteenth Gunsthan. This one is the state of omniscient. The fourteenth Gunsthan is the state of 'Ayog Kewali'. Here, in this Gunsthan the being abandoning physical body attains liberation.

१४–अग्गेणिअस्स णं पुव्वस्स चउद्दस वत्थू पण्णत्ता।

समणस्स णं भगवओ महावीरस्स चउद्दस समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपया होत्था।

अग्रायणी पूर्व के वस्तु नामक चौदह अर्थाधिकार निरूपित हैं।

श्रमण भगवान महावीर की उत्कृष्ट श्रमण-सम्पदा चौदह हजार साधुओं की कही गई है।

The fourteen Arthadhikar (knowable clauses) relating to Agrayani Poorva has been defined. The maximum total numbers of the disciple ascetics of Lord Mahavira have been mentioned as fourteen thousand.

१५–कम्मविसोहिमग्गणं पडुच्च चउद्दस जीवट्ठाणा पण्णत्ता, तं जहा–मिच्छादिट्ठी, सासायणसम्मदिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी, अविरयसम्मदिट्ठी, विरयाविरए, पमत्तसंजय, अप्पमत्तसंजए, निअट्टिबायरे, अनिअट्टिबायरे, सुहुमसंपराए–उवसामए वा खवए वा, उवसंतमोहे, खीणमोहे, सजोगी केवली, अयोगी केवली।

कर्मों की विशुद्धि यानि निराकरण की गवेषणा करने वाले जीवस्थान कहे गए हैं। ये उपायों की अपेक्षा से चौदह हैं। यथा —१. मिथ्यादृष्टि जीव स्थान, २. सासादन सम्यग्दृष्टि जीव स्थान, ३. सम्यग्मिथ्या दृष्टि जीव स्थान, ४. अविरत सम्यग्दृष्टि जीव स्थान, ५. विरताविरत जीव स्थान, ६. प्रमत्तसंयत जीव स्थान, ७. अप्रमत्तसंयत जीव स्थान, ८. निवृत्तिबादर जीव स्थान, ९. अनिवृत्तिबादर जीव स्थान, १०. सूक्ष्म साम्पराय उपशामक-क्षपक जीव स्थान, ११. उपशान्त मोह जीव स्थान, १२. क्षीण मोह जीव स्थान, १३. सयोगिकेवली जीवस्थान, १४. अयोगि-केवली जीव स्थान।

The beings who are investigating the ways to inhibit the accumulated Karmas–means to purify the self are called Jeeva Sthan (state of being). With regard to the capability they have been said fourteen in number, 1. Wrong belief (Mithyadrishti) perception Jeevsthan, 2. Sasadan right belief Jeevasthan, 3. Right and wrong belief (Samyak Mithya) Jeevasthan, 4. Non avowed right belief Jeevasthan (Avirat samyak drishti), 5. Viratavirat Jeevasthan (observing minor vows Jeevasthan), 6. Pramat-Samyat Jeevasthan (slight negligent restraint Jeevasthan), 7. Apramat-Samyat Jeevasthan (Non-negligent restraint Jeevasthan), 8. Nivartibadar Jeevasthan (formative gross Jeevasthan), 9. Anivarti badar Jeevasthan (nonformative gross Jeevasthan), 10. Sukshamsampray Upshamak-kshayak Jeevasthan, 11. Upshant Mohniya Jeevasthan (subsidence deluding Jeevasthan), 12. Kshina mohaniyaJeevasthan (deluding destructive Jeevasthan), 13. Sayogi Kewali Jeevasthan (omniscient with activities of mind, body and speech Jeevasthan, 14. Ayogi Kewali Jeevasthan (absolute omniscient state of being abstaining all activities of mind, speech and body.).

१६–भरहेरवयाओ णं जीवाओ चउद्दस चउद्दस जोयणसहस्साइं चत्तारि अ एगुत्तरे जोयणसए छच्च एगूणवीसे भागे जोयणस्स आयामेणं पण्णत्ताओ।

भरत और ऐरवत क्षेत्र का आकार डोरी चढ़े हुए धनुष के समान है। इन क्षेत्रों की जीवाएँ (डोरी रूप लम्बाई) प्रत्येक चौदह हजार चार सौ एक योजन और एक योजन के उन्नीस भागों में से छह भाग प्रमाण लम्बी कही गई हैं।

The formation of region of Bharat and Airavat is similar to a string draws bow. The longest chord of these areas has been said equal to the measurement of fourteen thousand four hundred one yojana and6/19 of a yojana each.

१७–एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स चउद्दस रयणा पण्णत्ता, तं जहा–इत्थीरयणे, सेणावइरयणे, गाहावइरयणे, पुरोहियरयणे, बड्ढइरयणे, आसरयणे, हत्थिरयणे, असिरयणे, दण्डरयणे, चक्करयणे, छत्तरयणे, चम्मरयणे, मणिरयणे, कागिणिरयणे।

चक्रवर्ती राजाओं के विषय में कहा गया है कि प्रत्येक चातुरन्त चक्रवर्ती राजा के चौदह-चौदह रत्न होते हैं। यथा — १. स्त्री रत्न (सर्वश्रेष्ठ सुन्दर स्त्री), २. सेनापति रत्न (प्रधान सेना नायक), ३. गृहपति रत्न (प्रधान कोठारी या भण्डारी), ४. पुरोहित रत्न (शान्तिकर्म आदि कराने वाले श्रेष्ठ पुरोहित), ५. वर्धकी रत्न (रथादि का निर्माण करने वाला श्रेष्ठ बढ़ई), ६. अश्वरत्न (सर्वोत्तम घोड़ा), ७. हस्ति रत्न (सर्वश्रेष्ठ हाथी), ८. असिरत्न (सर्वोत्तम अस्त्र), ९. दंड रत्न (श्रेष्ठ दण्ड), १०. चक्र रत्न (श्रेष्ठ चक्र), ११. छत्र रत्न (श्रेष्ठ छत्र), १२. चर्म रत्न (सर्वोत्तम चर्म), १३. मणिरत्न (श्रेष्ठ मणि), १४. काकिणिरत्न (श्रेष्ठ काकिणि)।

विशेष:–उपर्युक्त चौदह रत्नों में प्रथम सातों रत्न पंचेन्द्रिय रत्न और शेष सातों रत्न एकेन्द्रिय काय वाले रत्न हैं। प्रत्येक रत्न की एक-एक हजार देव सेवा करते हैं।

Chakravarti King Emperors: It has been described that every supreme lord has fourteen jewels as :– 1. Consort Jewels (Istree Ratan) the most beautiful wife, 2. Senapati Ratan (Chief of the Army Jewels), 3. Grahpati Ratan (The Chief treasurer or wealth manager), 4. Purohit Ratan (A supreme priest performer of religious activities), 5. Vardhiki Ratan (The excellent builder of excellent chariot etc.), 6. Horse Ratan (The supreme horse), 7. Hasti Ratan (The supreme elephant), 8. Asi Ratan (The supreme sword), 9. Dand Ratan (The supreme stick), 10. Chakara Ratan (The supreme round weapon, 11.Chhatra Ratan (The super most umbrella), 12. Charam Ratan (The supreme auspicious hair broom), 13. Mani Ratan (The invaluable supreme gem), 14. Kakini Ratan (The supreme Kakini coin).

Note : Among the aforesaid Jewels the first seven jewels fall in the category of five sensed jewels and the remaining seven jewels fall in the category of one sensed body jewels. Each jewel is served by one thousand celestial beings.

१८–जंबुद्दीवे णं दीवे चउद्दस महानईओ पुव्वावरेण लवणसमुद्दं समप्पेंति, तं जहा– गंगा, सिंधू, रोहिआ, रोहिअंसा, हरी, हरिकंता, सीआ, सीओदा, नरकंता, नारीकंता, सुवण्णकूला, रुप्पकूला, रत्ता, रत्तवई।

जम्बूद्वीप का वर्णन करते हुए कहा गया है कि इस द्वीप में प्रवहमान महानदियाँ पूर्व और पश्चिम दिशा से लवण समुद्र में जाकर मिलती हैं। इन महानदियों की संख्या चौदह बतायी गई है। यथा — १. गंगा नदी, २. सिन्धु नदी, ३. रोहिता नदी, ४. रोहितांसा नदी, ५. हरी नदी, ६. हरिकान्ता नदी, ७. सीता नदी, ८. सीतोदा नदी, ९. नरकान्ता नदी, १०. नारीकान्ता नदी, ११. सुवर्णकूला नदी, १२. रुप्यकूला नदी, १३. रक्ता नदी, १४. रक्तवती नदी।

While describing about the Jambu continent it has been said that continuous/constant floating great rivers merge into the lavan/salty ocean from East and West directions. The number of these great rivers has been told as fourteen. They are: 1. Ganga River, 2. Sindhu River, 3. Rohita River, 4. Rohitasa River, 5. Hari River, 6. Harikanta River, 7. Sita River, 8. Sitoda River, 9. Narkanta River, 10. Narikanta River, 11. Suvarnakanta River, 12. Ruppyakula River, 13. Rakta River, 14. Raktavati River.

१९–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउद्दस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। पंचमीए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउद्दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं चउद्दस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं चउद्दस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। लंतए कप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं चउद्दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

नारक और देवों की स्थिति का वर्णन निरूपित है जिसमें कहा गया है कि इस रत्नप्रभा पृथ्वी में चौदह पल्योमप स्थिति वाले कितने ही नारक हैं। पाँचवीं पृथ्वी में कहीं-कहीं चौदह सागरोपम स्थिति वाले नारक हैं। कितने ही असुर कुमार देवों की स्थिति चौदह पल्योपम कही गई है। सौधर्म और ईशान कल्पों के कितने ही देव चौदह पल्योपम स्थिति के कहे गए हैं। लान्तक कल्प में चौदह सागरोपम स्थिति वाले देवों का वर्णन है।

The life duration of the celestial beings and hellish beings is described as:— there are infernal beings whose life span is of fourteen Palyopama duration. The duration of life of hellish beings at some places of fifth hell has been described as fourteen Palyopama. The age duration of the fiendish demons has been narrated fourteen Palyopama. The celestial beings of Sudharma and Ishan kalpa are said to have the life span of fourteen Palyopama. The description of the celestial beings of Lantak kalpa having the life duration of fourteen Sagropama is also there.

१००–महासुक्के कप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं जहण्णेण चउद्दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। जे देवा सिरिकंतं सिरिमहिअं सिरिसोमनसं लंतयं काविट्ठं महिंदं महिंदकंतं महिंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसिं णं देवाणं उक्कोसेणं चउद्दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। ते णं देवा चउद्दसहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा। तेसिं णं देवाणं चउद्दसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे चउद्दसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

महाशुक्र कल्प के कितने ही देव चौदह सागरोपम जघन्य स्थिति वाले कहे गए हैं। वहाँ के देव विशिष्ट विमानों में देवरूप से उत्पन्न होते हैं। इन विशिष्ट विमानों की संख्या आठ निरूपित है। यथा — १. श्रीकान्त विमान, २. श्रीमहित विमान, ३. श्री सौमनस विमान, ४. लान्तक विमान, ५. कापिष्ठ विमान, ६. महेन्द्र विमान, ७. महेन्द्र कान्त विमान, ८. महेन्द्रोत्तरावतंसक विमान। वे देव चौदह सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति वाले कहे गए हैं। वे देव चौदह अर्धमासों यानि सात मासों के अन्तराल से उच्छ्वास और निःश्वास अथवा आन व प्राण की क्रिया सम्पन्न करते हैं। वे देव चौदह हजार वर्षों के उपरान्त आहार ग्रहण करने की इच्छा रखते हैं।

कितनेक भव्यसिद्धिक जीव हैं जो चौदह भव (चौदह बार जन्म) ग्रहण करेंगे। उसके उपरान्त वे जीव सिद्ध-बुद्ध होंगे। वे जीव कर्मों से मुक्ति पाकर परमनिर्वाण को प्राप्त होंगे। वे जीव अन्ततोगत्वा समस्त दुःखों का शमन (अन्त) करेंगे।

The celestial beings of Mahashukra kalpa have minimum life-span of fourteen Sagropama. The celestial beings of these kalpas reincarnated in the form of celestial beings in the special celestial vehicles. They have been described eight in number: 1. Shreekant Viman, 2. Shreemahit Viman, 3. Shree Somnas Viman, 4. Lantak Viman, 5. Kayisth Viman, 6.Mahendra Viman, 7. Mahendrakant Viman, 8. Mahendravatansak Viman. The maximum life duration of the celestial beings of the sevimanas has been stated as fourteen Sagropama. They complete the activity of inhaling and exhaling once after the interval of fourteen half months means seven months. They desire for food once after the completion of fourteen years. Out of them, those capable of salvation will take only fourteen births in future. After that they will get ultimate truth. After destroying all their accumulated Karmas they will get liberation. Eventually, these beings will destroy all their miseries and sufferings.

।। चौदहवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Fourteenth Samvaya)

पंद्रहवां समवाय

The Fifteenth Samvaya

१०१–पन्नरस परमाहम्मिआ पण्णत्ता, तं जहा–

[1]अंबे [2]अंबरिसी चेव [3]सामे [4]सबलेत्ति आवरे।
[5]रुद्दो [6]वरुद्द [7]काले अ [8]महाकालेत्ति आवरे॥१॥
[9]असिपत्ते [10]धणु [11]कुम्भे [12]वालुए वे [13]अरणी ति अ।
[14]खरस्सरे [15]महाघोसे एते पन्नरसाहिआ॥२॥

परम अधार्मिक देवों के विषय में कहा गया है कि इन देवों की संख्या पन्द्रह है। यथा — १. अम्ब परम अधार्मिक देव (नारकों को खींचकर उनके स्थान से नीचे गिराना और बाँधकर खुले आकाश में छोड़ देना), २. अम्बरिषी परम अधार्मिक देव (नारक को गंडासों से काट-काट कर भाड़ में पकाने के योग्य टुकड़े-टुकड़े कर डालना), ३. श्याम परम अधार्मिक देव (नारकों को कोड़ों से तथा हाथ के प्रहार आदि से मारना-पीटना), ४. शबल परम अधार्मिक देव (नारकों को चीर-फाड़ कर उनके शरीर से आंत, चर्बी, हृदय आदि निकालना), ५. रुद्र परम अधार्मिक देव (नारकों को भाले-बर्छे आदि से छिन्न-भिन्न कर ऊपर लटकाना), ६. उपरुद्र परम अधार्मिक देव (अत्यन्त क्रूरता के साथ भाले-बर्छे आदि से नारकों के शरीर को छेदन-भेदन कर ऊपर लटकाना), ७. काल परम अधार्मिक देव (नारकों को कण्डु आदि में पकाना), ८. महाकाल परम अधार्मिक देव (नारकों के पके मांस को टुकड़े-टुकड़े कर खाना), ९. असि पत्र परम अधार्मिक देव (सेमल वृक्ष का रूप धारण कर इस वृक्ष के नीचे छाया हेतु आने वाले नारकों को तलवार की धार के सदृश तीक्ष्ण पत्ते गिराकर कष्ट पहुँचाना), १०. धनु परम अधार्मिक देव (धनुष द्वारा छोड़े गए तीक्ष्ण नोक वाले वाणों से नारकियों के अंगों का छेदन-भेदन करना), ११. कुम्भ परम अधार्मिक देव (नारकों को कुम्भ आदि में पकाना), १२. वालुका परम अधार्मिक देव (वालु, कदम्ब पुष्प और वज्र के आकार-रूप धारण कर उष्ण वालु में, गर्म भाड़ में चने के समान नारकों को भूनना), १३. वैतरणी परम अधार्मिक देव (पीव, रक्त आदि से भरी हुई तप्त जल वाली नदी का रूप धारण करके प्यासे नारकों को क्षार उष्ण जल से पीड़ा पहुँचाना), १४. खरस्वर परम अधार्मिक देव (वज्रमय कंटकाकीर्ण सेमल वृक्ष पर नारकों को बार-बार चढ़ाना-उतारना), १५. महाघोष परम अधार्मिक देव (भय से भागते हुए नारकियों को बाड़ों में घेरकर उन्हें नाना प्रकार की यातनाएँ देना)।

It has been said while describing the Paramadharmik gods (extraordinary irreligious gods) that the numbers of these gods are fifteen as :- 1. Ambparamadharmik dev (they fell the hellish beings pulling them down from

their places and leave them into the open space after tying them up), 2. Ambrishi Parama adharmik dev (they cut the hellish beings into pieces with spears to make them worthy of roasting in the furnace), 3. Shyam Parama adharmik dev (engaged in beating and slapping the hellish beings with whips and with the strong blow of the hands), 4. Shabal Paramaadharmik dev (who after chopping and cutting the body of the hellish beings takeout the intestine flab and heart etc. from the body), 5. Rudra Param adharmik dev (who hang the hellish beings up after piercing them with spear and trident etc.), 6. Uprudra Parama adharmik dev (who hang the body of the hellish beings after brutally cutting and piercing them with their spear and dagger with great cruelty), 7. Kaal Parama adharmik dev (who boil the body of the hellish beings in cauldron etc.), 8. Mahakaal Parama adharmik dev (who serve the roasted and boiled meat dividing it into pieces), 9. Asipatra Paramaadharmik dev (who torture the hellish beings in disguise of Semal tree during under the shadow of Semal tree; felling them on the sword like strong edged leaves of the Semal trees), 10. Dhanu Parama adharmik dev (who cut and pierce the limbs through the sharp edged arrows shot from bows), 11. Kumbh Parama adharmik dev (who boil the hellish beings in the pitchers), 12. Baluka Parama adharmik dev (they disguise of sand, the flowers of the Kadamb and thunderbolt roast like of a gram of the hellish beings into the burning furnace in hot sand), 13. Vaitarni Parama adharmik dev(taking the form of the river filled with the water full of blood and pus torture the thirsty hellish beings by offering them that hot and salty saline water), 14. Kharswar Parama adharmik dev (they make the hellish being climb up and climb down again and again on the thunderbolt like thorny Samal tree), 15. Mahaghosh Parama adharmik dev (they give many fold sufferings and tortures to the hellish beings running out of fear by entrapping them into the fence (edgy) enclosure.

१०२–णमी णं अरहा पन्नरस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

नमि अर्हत् की ऊँचाई पन्द्रह धनुष निरूपित है।

The height of the omniscient Lord Shri Nemi Nath has been told as equal to fifteen bows length.

१०३–धुवराहू णं बहुलपक्खस्स पडिवए पन्नरसभागं पन्नरस भागेणं चंदस्सलेसं आवरेत्ताण चिट्ठति, तं जहा–पढमाए पढमं भागं, बीआए दुभागं, तइआए तिभागं, चउत्थीए चउभागं, पंचमीए पंचभागं, छट्ठीए छभागं, सत्तमीए सत्तभागं, अट्ठमीए अट्ठभागं, नवमीए नवभागं, दसमीए दसभागं, एक्कारसीए एक्कारसभागं, बारसीए बारसभागं, तेरसीए तेरसभागं, चउद्दसीए चउद्दसभागं, पन्नरसेसु पन्नरसभागं, [आवरेत्ताण चिट्ठति] तं चेव सुक्कपक्खस्स य उवदंसेमाणे

उवदंसेमणे चिट्ठति, तं जहा–पढमाए पढमभागं जाव पन्नरसेसु पन्नरसभागं उवदंसेमाणे उवदंसेमाणे चिट्ठति।

पर्वराहु और ध्रुवराहु का विवेचन करते हुए कहा गया है कि ध्रुवराहु कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा के दिन से चन्द्रलेश्या (चन्द्रमा की दीप्ति या प्रकाश) के पन्द्रहवें-पन्द्रहवें दीप्तिरूप भाग को अपने श्यामवर्ण से आवृत्त करता रहता है। जैसे – प्रतिपदा के दिन प्रथम भाग को, द्वितीया के दिन द्वितीय भाग को, तृतीया के दिन, तृतीय भाग को, चतुर्थी के दिन चतुर्थ भाग को, पंचमी के दिन पंचम भाग को, षष्ठी के दिन षष्ठ भाग को, सप्तमी के दिन सप्तम भाग को, अष्टमी के दिन अष्टम भाग को, नवमी के दिन नवम भाग को, दशमी के दिन दशम भाग को, एकादशी के दिन एकादश भाग को, द्वादशी के दिन द्वादश भाग को, त्रयोदशी के दिन त्रयोदश भाग को, चतुर्दशी के दिन चतुर्दश भाग को और पन्द्रहवीं यानि अमावस्या के दिन पन्द्रहवें भाग को आवृत किए रहता है। वही ध्रुवराहु शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा के पन्द्रहवें-पन्द्रहवें भाग को उपदर्शन कराता रहता है। जैसे-शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के दिन पन्द्रहवें भाग को प्रकट करता है, द्वितीया के दिन द्वितीय पन्द्रहवें भाग को प्रकट करता है। इसी प्रकार पूर्णमासी के दिन पन्द्रहवें भाग को प्रकटकर पूर्ण चन्द्र को प्रकाशित करता है।

विशेष : ध्रुव राहु चन्द्र विमान से चार अंगुल नीचे विचरण करता हुआ चन्द्र की एक-एक कला को कृष्ण पक्ष में आवृत्त और शुक्ल पक्ष में एक-एक कला को प्रकाशित करता रहता है।

While narrating Prav Rahu and Dhruv Rahu it has been said that from the 1st day of the dark fortnight the Dhruv Rahu covers the brightness of the moon upto its fifteenth part by his dark hue as on the first day covers the first part on second day the second part, on third day the third part, on fourth day the fourth part, on fifth day the fifth part, on sixth day the sixth part, on seventh day the seventh part, on eighth day the eighth part, on Nineth day the Nineth part, on tenth day the tenth part, on eleventh day the eleventh part, on twelfth day the twelfth part, on thirteenth day the thirteenth part, on fourteenth day the fourteenth part and on fifteenth day mean the full dark day covers the fifteenth part of the moon. And the same Dhruv Rahu in the bright fortnight uncovers the fifteen parts of the moon each day one by one as on 1st day of bright fortnight it uncovers the fifteenth part of the moon, on second day uncovers the second fifteenth part of the moon. In this way brightens the full moon by uncovering the fifteenth part of the bright day.

Note : The vehicle (Viman) of Dhruv Rahu moving four finger below the vehicle of moon covers one-fifteenth part of moon everyday in dark fortnight and brightens one-fifteenth part of moon everyday in bright fortnight.

१०४–छ णक्खत्ता पन्नरसमुहुत्तसंजुत्ता, तं जहा–

सत्तभिसय भरणि अद्दा असलेसा साई तहा जेट्ठा।
एते छण्णक्खता पन्नरसमुहुत्तसंजुत्ता।।१।।

चन्द्र के साथ पन्द्रह मुहूर्त्त तक छह नक्षत्रों के रहने का वर्णन है। यथा — १. शत भिषक् नक्षत्र, २. भरणी नक्षत्र, ३. आर्द्रा नक्षत्र, ४. आश्लेषा नक्षत्र, ५. स्वाति नक्षत्र, ६. ज्येष्ठा नक्षत्र। ये छह नक्षत्र पन्द्रह मुहूर्त्त तक चन्द्र के साथ संयोग करके रहते हैं।

There is a description that six constellation stay with moon for the duration of fifteen muhurat. They are:—1. Shatbhishak Nakshtra, 2. Bharni Nakshtra, 3. Ardra Nakshtra, 4. Ashlesha Nakshtra, 5. Swati Nakshtra, 6. Jyeshtha Nakshtra. These six constellations dwell in combination with moon for a period of fifteen muhurat.

१०५–चेत्तासोएसु णं मासेसु पन्नरसमुहुत्तो दिवसो भवति। एवं चेत्तासोयमासेसु पण्णरसमुहुत्ता राई भवति।

चैत्र और आश्विन (आसौज) मास में दिन पन्द्रह-पन्द्रह मुहूर्त्त का होता है। इसी प्रकार चैत्र और आश्विन (आसोज) मास में रात्रि भी पन्द्रह-पन्द्रह मुहूर्त्त की होती है अर्थात् चैत्र और आश्विन (आसोज) माह में पन्द्रह-पन्द्रह मुहूर्त्त के दिन व रात्रि होते हैं।

In the month of Chaitra and Ashvin the length of the day remains fifteen muhurat hours. In the same way the length of the night has been of fifteen muhurat in the month of Chaitra and Ashvin. It means the length of the day and night is of fifteen muhurat in the month of Chaitra and Ashvin.

१०६–विज्जाअणुप्पवायस्स णं पुव्वस्स पन्नरस वत्थू पण्णत्ता।

विद्यानुवाद पूर्व के वस्तु नामक पन्द्रह अर्थाधिकारों का उल्लेख है।

— In the Vaasty Namak Pravad of poorva of Vidyanuvad fifteen Arthadhikars are illustrated.

१०७–मणूसाणं पण्णरसविहे पओगे पण्णत्ते, तं जहा–सच्चमणपओगे (१), मोसमणपओगे (२), सच्चमोसमणपओगे (३), असच्चामोसमणपओगे (४), सच्चवइपओगे (५), मोसवइपओगे (६), सच्चामोसवइपओगे (७), असच्चामोसवइपओगे (८), ओरालिअसरीरकायपओगे (९), ओरालिअमीससरीरकायपओगे (१०), वेउव्वियसरीर-कायपओगे (११), वेउव्विअमीससरीरकायपओगे (१२), आहारयसरीरकायप्पओगे (१३), आहारयमीससरीरकायप्पओगे (१४), कम्मयसरीरकायप्पओगे (१५)।

मनुष्य के पन्द्रह प्रकार के प्रयोगों (आत्मा के परिस्पन्द क्रिया परिणाम या व्यापार) का वर्णन है। यथा — १. सत्यमनः प्रयोग (सत्य अर्थ का चिन्तन रूप व्यापार), २. मृषामनः प्रयोग (असत्य अर्थ का चिन्तन रूप व्यापार), ३. सत्यमृषामनः प्रयोग (सत्यासत्य मिश्रित अर्थ-चिन्तन रूप व्यापार), ४. असत्यामृषामनः प्रयोग (सत्य-मृषा से रहित अनुभव अर्थरूप चिन्तन), ५. सत्यवचन प्रयोग, ६. मृषावचन प्रयोग, ७. सत्यमृषावचन प्रयोग, ८. असत्यामृषा वचन प्रयोग, ९.औदारिक शरीर काय प्रयोग *(औदारिक शरीर वाले पर्याप्तक मनुष्य-तिर्यञ्चों के शरीर-व्यापार)*, १०. औदारिक मिश्र शरीर काय प्रयोग (औदारिक अपर्याप्तक मनुष्य-तिर्यञ्चों के शरीर व्यापार), ११. वैक्रिय शरीर काय प्रयोग (पर्याप्तक देव-नारकों के वैक्रिय शरीर-व्यापार), १२. वैक्रियमिश्र शरीरकाय प्रयोग (अपर्याप्तक देव-नारकों के वैक्रिय शरीर-व्यापार), १३. आहारक शरीर काय प्रयोग (आहारक शरीर के व्यापार के समय), १४. आहारक मिश्र शरीरकाय प्रयोग (आहारक शरीरी होकर औदारिक शरीर पुनः ग्रहण करते समय के व्यापार), १५.कार्मण शरीर काय प्रयोग (विग्रह गति में यानि एक गति को छोड़कर अन्य गति को जाते हुए जीव का योग)।

Fifteen types of urges (prayogas) (the vibrating activity of soul) have been narrated as:–1. Satyaman the true mind urge (the activity of true mental awareness), 2. False mind (urge pondering over the mode of perverse awareness), 3. True and false mind urge (the activity pertaining to pondering both the false and true combination), 4. Untrue and non-false mind urge (contemplation devoid of true and false mode of carefulness), 5. True speech urge, 6. False speech urge, 7. Combination of True and false speech urge, 8. Untrue and falseless namely practical speech urge, 9. The gross body urge (the activities of the bodies of the human and animal class beings having complete gross body, 10. Mixed gross physical body urge. The business of immature grossed physical body of human animal beings, 11. Fluid body urge (the activities of the fluid body of the celestial beings and hellish beings, 12. Mixed fluid body of the celestial and infernal beings, 13. Assimilative fluid body urge (at the time of activity of assimilative body), 14. Mixed assimilative physical body urge (the activity at the time the assimilative physical body taking again the form of the gross physical body), 15. Karman Physical body urge (formulating realm means the activity of Jeeva during movement from one state of existence to another state of existence.

१०८–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइआणं नेरइयाणं पन्नरस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। पंचमीए पुढवीए अत्थेगइआणं नेरइयाणं पन्नरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइआणं पन्नरस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइआणं देवाणं पन्नरस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

इस रत्नप्रभा पृथ्वी में पन्द्रह पल्योपम वाली स्थिति के कितने ही नारक कहे गए हैं। पाँचवीं धूमप्रभा पृथ्वी में पन्द्रह सागरोपम वाली स्थिति के कितने ही नारकों का उल्लेख है। कितने ही असुरकुमार देवों की स्थिति भी पन्द्रह पल्योपम कही गई है। सौधर्म, ईशान कल्पों में कितने ही देवों की स्थिति पन्द्रह पल्योपम कही गई है।

In the Ratanprabha hell the hellish being have been said of fifteen Palyopama life duration. In the fifth hell named Dhuma Prabha, there is a description of the infernal beings of the life duration of fifteen Sagropama. The life span of the malevolent demons has been said of fifteen Palyopama. In the Sodharma and Ishan kalpa the age duration of the celestial beings has been told of fifteen Palyopama.

१०९–महासुक्के कप्पे अत्थेगइआणं देवाणं पन्नरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। जे देवा णंदं सुणंदं णंदावत्तं णंदप्पभं णंदकंतं णंदवण्णं णंदलेसं णंदज्झयं णंदसिंगं णंदसिट्ठं णंदकूडं णंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं पन्नरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। ते णं देवा पण्णरसण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा। तेसि णं देवाण पण्णरसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

संतेगइआ भवसिद्धिया जीवा जे पण्णरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

महाशुक्र कल्प के कितने ही देव पन्द्रह सागरोपम स्थिति के कहे गए हैं। वे देव विशिष्ट विमानों में देवरूप से उत्पन्न होते हैं। इन विशिष्ट विमानों की संख्या बारह है। यथा — १. नन्द विमान, २. सुनन्द विमान, ३. नन्दावर्त विमान, ४. नन्दप्रभ विमान, ५. नन्दकान्त विमान, ६. नन्दवर्ण विमान, ७. नन्दलेश्य विमान, ८. नन्दध्वज विमान, ९. नन्दशृंग विमान, १०. नन्दसृष्ट विमान, ११. नन्दकूट विमान, १२. नन्दोत्तरावतंसक विमान। वे देव पन्द्रह सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति वाले होते हैं। वे देव पन्द्रह अर्धमासों (साढ़े सात मासों) के अन्तराल से उच्छ्‌वास व निःश्वास तथा आन व प्राण की क्रिया करते हैं। वे देव पन्द्रह हजार वर्षों के उपरान्त आहार की इच्छा करते हैं।

कितनेक भव्य सिद्धिक जीव हैं जो पन्द्रह भव (पन्द्रह बार जन्म) ग्रहण करेंगे। उसके बाद वे जीव सिद्ध-बुद्ध होंगे। वे जीव कर्मों से मुक्ति पाकर परमनिर्वाण को प्राप्त होंगे। वे जीव अन्ततोगत्वा समस्त दुःखों का शमन (अन्त) करेंगे।

Life of the span celestial beings of Mahashukra kalpa has beensaid of fifteen Sagropama. The celestial beings of these vehicles take birth in the unique celestial vehicles. Thenumber of these exclusive vehicles are twelve. They are: 1. Devanand Viman, 2. Sunand Viman, 3. Nandavart Viman, 4. Nand-prabh

Viman, 5. Nand-kant Viman, 6. Nand-varn Viman, 7. Nand-leshya Viman, 8. Nand-dhvja Viman, 9. Nand-shring Viman, 10. Nand-srisht Viman, 11. Nand-kut Viman, 12. Nando-travatansak Viman. These celestial beings have the maximum life span of fifteen Sagropama duration. They inhale and exhale or breath in and breath out after an interval of fifteen fortnight means after the completion of seven and a half months. They desire for food once after the completion of fifteen years. There are many beings capable of salvation among them who will take only fifteen births in future. After that they will attain salvation. After abandoning all their accumulated previous kamas they will get supreme liberation. They will destroy all their miseries in the end.

।। पंद्रहवां समवाय समाप्त ।।

(The end of Fifteenth Samvaya)

सोलहवां समवाय

The Sixteenth Samvaya

११०–सोलस य गाहा-सोलसगा पण्णत्ता, तं जहा–[१]समए [२]वेयालिए [३]उवसग्गपरिन्ना [४]इत्थीपरिण्णा [५]निरयविभत्ती [६]महावीरथुई [७]कुसीलपरिभासिए [८]वीरिए [९]धम्मे [१०]समाही [११]मग्गे [१२]समोसरणे [१३]आहातहिए [१४]गंथे [१५]जमईए गाहासोलसमे [१६]सोलसगे।

गाथा-षोडशक में सोलह गाथाएँ (अध्ययन) निरूपित हैं। यथा —१. समय अध्ययन (नास्तिक आदि के सिद्धान्तों या मतों का प्रतिपादन), २. वैतालीय अध्ययन, ३. उपसर्ग परिज्ञा अध्ययन, ४. स्त्री परिज्ञा अध्ययन, ५. नरक विभक्ति अध्ययन, ६. महावीर स्तुति अध्ययन, ७. कुशील परिभाषित अध्ययन, ८. वीर्य अध्ययन, ९. धर्म अध्ययन, १०. समाधि अध्ययन, ११. मार्ग अध्ययन, १२. समवशरण अध्ययन (तीन सौ तिरेसठ मतों का समुच्चय रूप से वर्णन), १३. याथातथ्य अध्ययन, १४. ग्रन्थ अध्ययन, १५. यमकीय अध्ययन, १६. सोलहवाँ गाथा अध्ययन।

In the sixteenth aphorism sixteen chapters have been described. They are as follows :- 1. Samay Chapter (it expounds the tenets and faiths of the atheists etc., 2. Vaitalya Chapter, 3. Upsarg Prigya Chapter (about calamities), 4. Istri Prigya Chapter (about women), 5. Narak Vibhakti Chapter (about hell), 6. Mahavir Stuti Chapter (about hymn), 7. Kushil Paribhashit Chapter, 8. Virya Chapter (about humility), 9.Dharama Chapter, 10. Samadhi Chapter, 11. Marg Chapter (about path to salvation), 12. Samavsaran Chapter (description of three hundred sixty three faiths in the integrated form), 13. Yathatatthiya Chapter

(about discipline), 14. Granth Chapter (about knots), 15. Yamkeeya Chapter, 16. Sixteenth aphorism (recitation of above said fifteen aphorisms).

१११–सोलस कसाया पण्णत्ता, तं जहा–अणंताणुबंधी कोहे, अणंताणुबंधी माणे, अणंताणुबंधी माया, अणंताणुबंधी लोभे, अपच्चक्खाणकसाए कोहे, अपच्चक्खाणकसाए माणे अपच्चक्खाण कसाए माया अपच्चक्खाणकसाए लोभे, पच्चक्खाणावरणे कोहे, पच्चक्खाणावरणे माणे, पच्चक्खाणावरणा माया, पच्चक्खाणावरणे लोभे, संजलणे कोहे, संजलणे माणे, संजलणा माया, संजलणे लोभे।

अनन्तानुबंधी आदि सोलह कषाय कहे गए हैं। जैसे—१. अनन्तानुबन्धी क्रोध , २. अनन्तानुबन्धी मान, ३. अनन्तानुबन्धी माया, ४. अनन्तानुबन्धी लोभ, ५. अप्रत्याख्यान कषाय क्रोध, ६. अप्रत्याख्यान कषाय मान, ७. अप्रत्याख्यान कषाय माया, ८. अप्रत्याख्यान कषाय लोभ, ९. प्रत्याख्यानावरण क्रोध, १०. प्रत्याख्यानावरण मान, ११. प्रत्याख्यानावरण माया, १२. प्रत्याख्यानावरण लोभ, १३. संज्वलन क्रोध, १४. संज्वलन मान, १५. संज्वलन माया, १६. संज्वलन लोभ।

Sixteen Infinite passions etc. have been explained as :– 1. Infinite anger, 2. Infinite ego, 3. Infinite deceit, 4. Infinite greed, 5. Unrestrained anger, 6. Intense passion of conceit, 7. Intense passion of deceit, 8. Intense passion of greed, 9. Mild passion of anger, 10. Mild passion conceit, 11. Mild passion deceit, 12. Mild passion greed, 13. Flickering anger, 14. Flickering conceit, 15. Flickering deceit, 16. Flickering greed.

११२–मंदरस्स णं पव्वयस्स सोलस नामधेया पण्णत्ता, तं जहा–

मंदर[१] मेरु[२] मणोरण[३] सुदंसण[४] सयंपभे[५] य गिरिराया[६]।
रयणुच्चय[७] पियदंसण[८] मज्झे लोगस्स[९] नाभी[१०] य।।१।।
अत्थे[११] अ सूरिआवत्ते[१२] सूरिआ[१३] वरणे त्ति अ।
उत्तरे[१४] अ दिसाई अ[१५] वडिंसे[१६] इअ सोलसे।।२।।

मंदर पर्वत के सोलह नाम निरूपित हैं। यथा —१. मन्दर पर्वत, २. मेरु पर्वत, ३. मनोरम पर्वत, ४. सुदर्शन पर्वत, ५. स्वयम्प्रभ पर्वत, ६. गिरिराज पर्वत, ७. रत्नोच्चय पर्वत, ८. प्रियदर्शन पर्वत, ९. लोकमध्य पर्वत, १०. लोकनाभि पर्वत, ११. अर्थपर्वत, १२. सूर्यावर्त पर्वत, १३. सूर्यावरण पर्वत, १४. उत्तर पर्वत, १५. दिशादि पर्वत, १६. अवतंस पर्वत।

Sixteen names have been christened of the Mandar Mountain as :– 1. Mountain Mandar, 2. Mountain Meru, 3. Mountain Manoram, 4. Mountain Sudarshan, 5. Mountain Swayamprabh, 6. Mountain Giriraj, 7. Mountain Ratanochchaya, 8. Mountain Priyadarshan, 9. Mountain Lokamadhya, 10.

Mountain Lokanabhi, 11. Mountain Arth, 12. Mountain Suryavart, 13. Mountain Suryavarat, 14. Mountain North, 15. Mountain Dishadi, 16. Mountain Avahans.

११३–पासस्स णं अरहतो पुरिसादाणीयस्स सोलस समणसाहस्सीओ उक्कोसिआ समणसंपदा होत्था। आयप्पवायस्स णं पुव्वस सोलस वत्थू पण्णत्ता। चमरबलीणं ओवारियालेणे सोलस जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते। लवणे णं समुद्दे सोलस जोयणसहस्साइं उस्सेहपरिवुड्डीए पण्णत्ते।

पुरुषादानीय पार्श्व अर्हत् के सोलह हजार श्रमण कहे गए हैं। भगवान पार्श्व की यह उत्कृष्ट श्रमण सम्पदा कही गई है। आत्मप्रवाद-पूर्व के वस्तु नामक जो अर्थाधिकार कहे गए हैं, उनकी संख्या सोलह है। चमरचंचा और बलीचंचा राजधानी का सोलह हजार योजन का आयाम विष्कम्भ कहा गया है। यह स्थिति इन राजधानियों के मध्य भाग में उतार-चढ़ाव रूप अवतारिकालयन वृत्ताकार वाले होने से है। लवण समुद्र के मध्य भाग में जल के उत्सेध की वृद्धि सोलह हजार योजन निरूपित है।

The number of the ascetics of the supreme Lord Shri Parshvanath, the super most among the human beings have been stated as sixteen thousand. It has been told the maximum ascetics wealth of supreme Lord Shri Parshvanathji. The number of the Arthadhikar (knowable) of the Vastu titled chapter of has been said as sixteen. The length and width of the capital of Chamarchancha and Balichancha has been mentioned sixteen thousand yojans. This state happens due to the circular shape of the avatarika in the middle part of these capitals. The height of the tides of the water in the middle part of the Lavan ocean has been said sixteen thousand yojanas.

११४–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सोलस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सोलस सागरोवमा ठिई पण्णत्ता। असुरकुमाराणं अत्थेगइआणं सोलस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सोलस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

इस रत्नप्रभा पृथ्वी में सोलह पल्योपम वाली स्थिति के नारक कहे गए हैं। धूमप्रभा जो पाँचवीं पृथ्वी है, उसमें नारकियों की स्थिति सोलह सागरोपम कही गई है। असुरकुमार देवों और सौधर्म-ईशान कल्पों के देवों की स्थिति सोलह-सोलह पल्योपम कही गई है।

The life span of the hellish beings of this Ratanprabha hell has been described sixteen Palyopama duration. In the Dhumprabha which is the fifth hell, the life duration of the hellish beings has been said of sixteen thousand Sagropama. The life span of the malevolent demons and the celestial beings of the Saudharma and Ishan kalpa hasbeen described of sixteen Palyopama each.

११५–महासुक्के कप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं सोलस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। जे देवा आवत्तं विआवत्तं नंदिआवत्तं महाणंदिआवत्तं अंकुसं अंकुसपलंबं भद्दं सुभद्दं महाभद्दं सव्वओभद्दं भद्दुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं सोलस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। ते णं देवा सोलसण्हं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा, उस्ससंति वा, नीससंति वा। तेसि णं देवाणं सोलसवाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

संतेगइया भवसिद्धिआ जीवा जे सोलसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

महाशुक्र कल्प के कितने ही देव सोलह सागरोपम स्थिति वाले कहे गए हैं। वे देव विशिष्ट विमानों में देव रूप से उत्पन्न होते हैं। इन विशिष्ट विमानों की संख्या ग्यारह है। यथा — १. आवर्त विमान, २. व्यावर्त विमान, ३. नन्द्यावर्त विमान, ४. महानन्द्यावर्त विमान, ५. अंकुश विमान, ६. अंकुश प्रलम्ब विमान, ७. भद्र विमान, ८. सुभद्र विमान, ९. महाभद्र विमान, १०. सर्वतोभद्र विमान, ११. भद्रोत्तरावतंसक विमान। वे देव सोलह सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति के होते हैं। वे देव सोलह अर्धमासों (आठ मासों) के अन्तराल से उच्छ्वास व निःश्वास तथा आन व प्राण की क्रिया करते हैं। वे देव सोलह हजार वर्षों के उपरान्त आहार की इच्छा करते हैं।

कितनेक भव्य सिद्धिक जीव हैं जो सोलह भव (सोलह बार जन्म) ग्रहण करेंगे। उसके बाद वे जीव सिद्ध-बुद्ध होंगे। वे जीव कर्मों से मुक्ति पाकर परमनिर्वाण को प्राप्त होंगे। वे जीव अन्ततोगत्वा समस्त दुःखों का शमन (अन्त) करेंगे।

The celestial beings of the Mahashukra kalpa have been said of the life span of sixteen Palyopama duration. These celestial beings reincarnate into the special celestial vehicles of cosmos, the number of these special celestials vehicles are eleven as :- 1. Avrat Viman, 2. Vayavrat Viman, 3. Nandyavrat Viman, 4. Mahanandyavrat Viman, 5. AnkusViman, 6. Ankus Pralamb Viman, 7. Bhadra Viman, 8.Subhadra Viman, 9. Mahabhadra Viman, 10. Sarvatobhadra Viman, 11. Bhadroantaravatansak Viman. In these above mentioned celestial vehicles celestial beings have the maximum life duration of sixteen Sagropama. They do the activity of inhaling and exhaling or breathing in and breathing out after the interval of sixteen fortnight means after completion of eight months. They desire for food after the completion of sixteen thousand years.

Many of them capable of the salvation will take sixteen births in future and after that they will attain salvation. After having annihilated all their accumulated previous karmas they will attain liberation. Eventually these beings will destroy all their miseries and sufferings.

।। सोलहवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Sixteenth Samvaya)

सतरहवां समवाय

The Seventeenth Samvaya

११६–सत्तरसविहे असंजमे पण्णत्ते, तं जहा–पुढविकायअसंजमे आउकायअसंजमे तेउकायअसंजमे वाउकायअसंजमे वणस्सइकायअसंजमे बेइंदिअसंजमे तेइंदियअसंजमे चउरिंदियअसंजमे पंचिंदिअअसंजमे अजीवकायअसंजमे पेहाअसंजमे उवेहाअसंजमे अवहट्टुअसंजमे अप्पमज्जणाअसंजमे मणअंसजमे वइअसंजमे कायअसंजमे।

असंयम (अयतनापूर्वक प्रवृत्ति करना या इन्द्रिय-मन पर अनियन्त्रण) के विषय में चर्चा करते हुए कहा गया है कि असंयम के सत्रह प्रकार हैं। यथा — १. पृथ्वी काय-असंयम, २. अप्काय-असंयम, ३. तेजस्काय-असंयम, ४. वायुकाय-असंयम, ५. वनस्पतिकाय-असंयम, ६. द्वीन्द्रिय-असंयम, ७. त्रीन्द्रिय-असंयम, ८. चतुरिन्द्रिय-असंयम, ९. पंचेन्द्रिय-असंयम, १०. अजीवकाय-असंयम, ११. प्रेक्षा-असंयम, १२. उपेक्षा-असंयम, १३. अपहृत्य-असंयम, १४. अप्रमार्जना-असंयम, १५. मनः असंयम, १६. वचन-असंयम, १७. काय-असंयम।

Describing the non-restraint (Asanyam) (activities with carelessness or no control on senses and mind) it has been said that there are seventeen types of non-restraint (Asanyam) as :– 1. Earth-bodied non restraint, 2. Water-body non restraint, 3. Fire- body non restraint, 4. Air-body non restraint, 5. Vegetable body non restraint, 6. Two sense body non restraint, 7. Three sense body non restraint, 8. Four sense body non restraint, 9. Five sense body non restraint, 10. Non-living being body non restraint, 11. Preksha (visuable) non restraints, 12. Upeksha (indifference) non restraints, 13.Uphritya non restraints, 14. Apramarjana (not to clean) non restraints, 15.Mind non restraints, 16. Speech non restraints, 17. Body non restraints.

११७–सत्तरसविहे संजमे पण्णत्ते, तं जहा–पुढविकायसंजमे आउकायसंजमे तेउकायसंजमे वाउकायसंजमे वणस्सइकायसंजमे बेइंदियसंजमे तेइंदियसंजमे चउरिंदियसंजमे पंचिंदियसंजमे अजीवकायसंजमे पेहासंजमे उवेहासंजमे अवहट्टुसंजमे पमज्जणासंजमे मणसंजमे वइसंजमे कायसंजमे।

संयम (समिति या सावधानी पूर्वक यम-नियमों का पालन अथवा यतनापूर्वक प्रवृत्ति करना या प्रवृत्ति मात्र से निवृत्त होना), सत्रह प्रकार का कहा गया है। यथा — १. पृथ्वीकाय-संयम, २. अप्काय-संयम, ३. तेजस्काय-संयम, ४. वायुकाय-संयम, ५. वनस्पतिकाय-संयम, ६. द्वीन्द्रिय-संयम, ७. त्रीन्द्रिय-संयम, ८. चतुरिन्द्रिय-संयम, ९. पंचेन्द्रिय-संयम, १०. अजीवकाय-संयम, ११. प्रेक्षा-संयम (स्थान,

उपकरण, वस्त्र-पात्रादि का विधि पूर्वक पर्यवेक्षण करना), १२. उपेक्षा संयम (शत्रु-मित्र में, इष्ट-अनिष्ट वस्तुओं में राग-द्वेष न करना या उनमें माध्यस्थ भाव रखना), १३. अपहृत्य-संयम (जीवों को दूर कर निर्जीव भूमि में विधि पूर्वक मल-मूत्रादि का परठना), १४. प्रमार्जना-संयम (पात्रादि का विधिपूर्वक प्रमार्जन करना), १५. मनः-संयम, १६. वचन-संयम, १७. काय-संयम।

Samyam (restraint) (to abide by or to foster all the rules, tenets and other norms with great carefulness or alertness) has been said of seventeen types as :- 1. Prithvikaya Samyama (restraint about earth-bodied beings), 2. Apkay (water-bodied) Samyama, 3. Tejaskay (fire-bodied) Samyama, 4. Vayukay (air-bodied) Samyama, 5. Vanaspati (plant-bodied) Samyama, 6. Dviendriya (two-sensed beings) Samyama, 7. Triendriya (three-sensed beings) Samyama, 8. Chaurendriya (four-sensed beings) Samyama, 9. Panchendriya (five-sensed beings) Samyama, 10. Ajeevakay (non-living beings) Samyama, 11. Preksha Samyama (to examine with care the cloths, utencils, place and other usable implements), 12. Upeksha Samyama (not having any attachment or aversion towards friend and foe, favourable and unfavourable articles or to have a neutral disposition, 13. Aprihatya Samyama (to throw the excreta and urine on the lifeless land after removing living beings from that land, 14. Pramajana Samyama (cleaning the used utencils with great care and with due method, 15. Mind restraint, 16. Speech restraint,17. Body restraint.

११८-माणुसुत्तरे णं पव्वए सत्तरस एक्कीवीसे जोयणसए उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते। सव्वेसिं पि णं वेलंधर-अणुवेलंधरणागराईणं आवासपव्वया सत्तरसएक्कवीसाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता। लवणे णं समुद्दे सत्तरस जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं पण्णत्ते।

मानुषोत्तर पर्वत के विषय में कहा गया है कि यह सत्रह सौ इक्कीस (१७२१) योजन ऊँचा है। समस्त नागराजों-वेलन्धर और अनुवेलन्धर के आवास पर्वत की ऊँचाई सत्रह सौ इक्कीस (१७२१) योजन कही गयी है। सत्रह हजार (१७०००) योजन ऊँची लवण समुद्र की सर्वाग्र शिखा है।

The height of the mountain Manusotara has been said of seventeen hundred and twenty one yojana, the height of the residence Mountain of species of the entire kings of serpent, veludhar and anuveludhar gods has been said of seventeen hundred and twenty one yojans. The highest peak of the Lavan ocean tide or wave is seventeen thousand yojana high.

११९-इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सातिरेगाइं सत्तरस जोयणसहस्साइं उड्ढं उप्पतित्ता ततो पच्छा चारणाणं तिरिआ गती पवत्तति।

इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुसम रमणीय भूमि भाग से कुछ अधिक सत्रह हजार (१७०००) योजन

ऊपर उठकर तत्पश्चात् चारण ऋद्धि धारी मुनियों (साधकों) की नन्दीश्वर, रुचक आदि द्वीपों में जाने के लिए तिरछी गति होती है।

Ratanprabha has many charming spots. From this land a little above of seventeen thousand yojanas, after soaring high the ascetics having extra ordinary power of flying on toes, travel towards Nandishavar, Ruchak etc. islands taking moving in oblique direction.

१२०–चमरस्स णं असुरिंदस्स असुररण्णो तिगिंछिकूडे उप्पायपव्वए सत्तरस एक्कवीसाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते। बलिस्स णं असुरिंदस्स रुअगिंदे उप्पायपव्वए सत्तरस एक्कवीसाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते।

असुरेन्द्र असुरराज चमर का तिगिंछि कूट नामक उत्पात पर्वत है जिसकी ऊँचाई सत्रह सौ इक्कीस (१७२१) योजन कही गई है। सत्रह सौ इक्कीस (१७२१) योजन ऊँचा असुरेन्द्र बलि का रुचकेन्द्र नामक उत्पात पर्वत कहा गया है।

The height of the Tingichhikut Utpat Mountain of Chamerendra, King God of Asuras has been said of seventeen thousand and twenty one yojanas. Seventeen thousand and twenty one yojanas high is Ruchkendra Utpat Mountain belongs to Asurendra Bali has been described.

१२१– सत्तरसविहे मरणे पण्णत्ते। तं जहा–आवीईमरणे ओहिमरणे आयंतियमरणे बलायमरणे वसट्टमरणे अंतोसल्लमरणे तब्भवमरणे बालमरणे पंडितमरणे बालपंडितमरणे छउमत्थमरणे केवलिमरणे वेहाणसमरणे गिद्धपिट्ठमरणे भत्तपच्चक्खाणमरणे इंगिणिमरणे पाओवगमणमरणे।

सत्रह प्रकार के मरण निरूपित हैं। यथा — १. आवीचिमरण (विच्छेद या व्यवधान रहित मरण), २. अवधिमरण (मर्यादा सहित मरण), ३. आत्यन्तिक मरण (नारकादि के वर्तमान आयुकर्म को भोगकर मरना और मरकर भविष्य में उस आयु को भोगकर नहीं मरना, ऐसे जीव के वर्तमान भव का मरण), ४. वलन्मरण (अव्रतदशा में मरण), ५. वशार्तमरण (इन्द्रियविषयों से पीड़ित या उनके वशीभूत होकर मरना), ६. अन्तः शल्य् मरण (मन में किसी प्रकार के शल्य रखकर मरण), ७. तद्भव मरण (वर्तमान भव में जिस आयु को भोगा जा रहा है, उसी भव के योग्य आयु को बाँधकर मरना), ८. बालमरण (मिथ्या-दृष्टि और असंयमी जीवों का मरण), ९. पंडितमरण (संयमी सम्यग्दृष्टि जीव का मरण), १०. बालपंडित मरण (देशसंयमी पंचम गुणस्थानवर्ती श्रावक व्रती मनुष्य या तिर्यञ्च पंचेन्द्रियों का मरण), ११. छद्मस्थ मरण (छद्मस्थों अर्थात् केवलज्ञान उत्पन्न होने के पूर्व बारहवें गुणस्थान तक के जीवों का मरण), १२. केवलि मरण (केवलज्ञान के धारक अयोगिकेवली के सर्वदुःखों का अन्त करने वाला मरण), १३. वैहायस मरण (गले में फाँसी लगाकर या किसी वृक्षादि से अधर लटक कर मरना),

१४. गृद्ध्रस्पृष्ट या गृद्ध्रपृष्ठ मरण (गिद्ध-चील प्रभृति पक्षियों द्वारा मांस नोंच-नोंच कर खाए जाने पर या मृत हाथी-ऊँट आदि के शरीर में प्रवेश कर अपने शरीर को गिद्धों आदि का भक्ष्य बनाकर मरने वाले जीवों का मरण), १५. भक्त प्रत्याख्यान मरण (संलेखना या संन्यास धारण कर मरने वाले मनुष्य का मरण), १६. इंगिनी मरण (ऐसा भक्तप्रत्याख्यानी जो दूसरों के द्वारा की जाने वाली वैयावृत्त्य का त्यागकर सामर्थ्यानुसार स्वयं ही प्रतिनियत देश में उठता-बैठता और अपनी सेवा-टहल करता है, उसका मरण), १७. पादपोपगमन मरण (महासाधु भक्त-पान का यावज्जीवन परित्याग कर, स्व-पर की वैयावृत्त्य का भी त्यागकर, कायोत्सर्ग, पद्मासन या मृतकासन आदि किसी आसन से आत्म चिन्तन करते हुए तदवस्थ रहकर प्राण त्यागना)।

Seventeen types of Death (maran) have been expounded. They are:-1. Avichi Maran (normal death), 2. Avadhi Maran (death within established norms), 3. Atyantic Maran (death after completing the life span as the hellish being at present and in future not to ever die as life of a hellish being, the present end of life of the jeeva, 4. Valan Maran (death not in a vowed condition), 5. Vashart Maran (to die under the influence of sufferings caused by of the senses, 6. Antah Shalya Maran (to die having some kid of stone or thorn like feeling in mind), 7. Tadbhava Maran (whatever kind of life is being living at present birth, to die after binding the Karmas, to be reincarnated as the same type of living beings in the next birth), 8. Bal Maran (the death of the living being of wrong belief and non-restraint), 9. Pandit Maran (the death of a right perception living being), 10. Bal Pandit Maran (the death of a pleasures state of the fifth Gunsthan (spiritual purity place) of human being and the five sense animal being, 11. Chhadmast Maran (the death of the chhadmast (chhadmast means the death of jeeva is in any of the first twelve stages spiritual elevation i.e. one stage before the attainment of omniscient position (kewal gyan), 12. Kewali Maran (the death of the attainer of the stage of omniscient (kewal gyani) with four non obscuring karmas andthe destroyer of the miseries, 13. Vaihas Maran (to die after hanging himself with the branch of a tree or lying up with the loop of a rope, 14. Griddharsaprisht or Griddhaaprisht Death (death due to entering into or dead bodies of elephant, camel etc. and being eaten by the birds like vultures, eagles and other meat eaters, 15. Bhaktpratyakhyan Death (the death of a person who dies after observing the vows of Samlekhna (pure death or getting initiated in ascetic fold, 16. Ingni Death (the death of a person who abandoning the services offered by another colleague ascetic and performs all his daily activities according to his body strength through doing them living in the already designated place of worship by moving here and there), 17. Padopagaman Death (renouncing taking the food for good, renouncing all kinds of service offered by others and to keep by

himself always in Lotus posture, meditation or lying like a dead body when a great ascetic contemplating on self deed dies it is called a Padopagaman Death).

१२२–सुहुमसंपराए णं भगवं सुहुमसंपरायभावे वट्टमाणे सत्तरस कम्मपगडीओ णिबंधति, तं जहा–आभिणिबोहियणाणावरणे सुयणाणावरणे ओहिणाणावरणे मणपज्जवणाणावरणे केवलणाणावरणे चक्खुदंसणावरणे अचक्खुदंसणावरणे ओहिदंसणावरणे केवलदंसणावरणे सायावेयणिज्जं जसोकित्तिनामं उच्चागोयं दाणंतरायं लाभंतरायं भोगंतरायं उवभोगंतरायं वीरिअअंतरायं।

दशवें सूक्ष्मसंपराय गुणस्थान में प्रकृतियों के बंध के सन्दर्भ में चर्चा करते हुए कहा गया है कि सूक्ष्मसाम्पराय भाव में वर्तमान सूक्ष्मसाम्पराय भगवान केवल सत्रह कर्म-प्रकृतियों को बाँधते हैं। वे सत्रह कर्म-प्रकृतियाँ इस प्रकार हैं - १. आभिनिबोधिकज्ञानावरण कर्म-प्रकृति, २. श्रुतज्ञानावरण कर्म-प्रकृति, ३. अवधिज्ञानावरण कर्म-प्रकृति, ४. मनःपर्ययज्ञानावरण कर्म-प्रकृति, ५. केवलज्ञानावरण कर्म-प्रकृति, ६. चक्षुदर्शनावरण कर्म-प्रकृति, ७. अचक्षुदर्शनावरण कर्म-प्रकृति, ८. अवधिदर्शनावरण कर्म-प्रकृति, ९. केवलदर्शनावरण कर्म-प्रकृति, १०. सातावेदनीय कर्म-प्रकृति, ११. यशस्कीर्तिनाम कर्म-प्रकृति, १२. उच्च गोत्र कर्म-प्रकृति, १३. दानान्तराय कर्म-प्रकृति, १४. लाभान्तराय कर्म-प्रकृति, १५. भोगान्तराय कर्म-प्रकृति, १६. उपभोगान्तराय कर्म-प्रकृति, १७. वीर्यान्तराय कर्म-प्रकृति।

In the Tenth stage of spiritual elevation tilled as subtle passion in context of accumulation of the tendencies of Karma it has been said in that state of subtle passion binds only seventeen karmas tendencies. Those Karmas tendencies are as follows :- 1. Deve cognition knowledge obscuring Karma Tendency, 2. Scriptural knowledge obscuring Karma Tendency, 3. Clairvoyance knowledge obscuring Karma Tendency, 4.Mental mode obscuring Karma Tendency, 5. Omniscience obscuring Karma Tendency, 6. Ocular precipitous obscuring Karma Tendency, 7. Non ocular precipitous obscuring Karma Tendency, 8. Clairvoyance perception obscuring Karma Tendency, 9. Omniscient perception obscuring Karma Tendency, 10. Misery and pleasure feeling Karmas Tendency, 11. Karam Tendency of earning name and fame Karmas, 12. Karma Tendency status determining, 13. Karma Tendency of charity impediments, 14. Karma Tendency of profit making impediments, 15. Karma Tendency of impediments of enjoyment, 16. Impediment Karma Tendency of repeated enjoyments, 17. Karma Tendency of potency impediment activity.

१२३–पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं उक्कोसेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं जहण्णेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्तरस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु

अत्थेगइयाणं देवाणं सत्तरस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। महासुक्के कप्पे देवाणं उक्कोसेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

पाँचवीं व छठी पृथ्वियों में नारकों की स्थितियों का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि पाँचवीं पृथ्वी जो धूम प्रभा के नाम से अभिहित है उसमें कितने ही नारकों की उत्कृष्ट स्थिति सत्रह सागरोपम है। इसी प्रकार छठी पृथ्वी जो तम:प्रभा के नाम से अभिहित है, उसमें किन्हीं-किन्हीं नारकों की जघन्य स्थिति सत्रह सागरोपम है। सत्रह पल्योपम स्थिति के असुरकुमार देव कहे गए हैं। सौधर्म-ईशान कल्पों के कितने ही देव सत्रह पल्योपम स्थिति वाले हैं। महाशुक्र कल्प में देवों की उत्कृष्ट स्थिति सत्रह सागरोपम कही गई है।

It has been described while illustrating the life duration of the hellish beings of the fifth and sixth hells that the fifth hell described as Dhumprabha hell the maximum life span of the hellish beings of this area is seventeen Sagropama duration and some of the hellish beings of tamah-pretha the sixth hell have the minimum lifespan equal to seventeen Sagropama duration. Some malevalent demons have been stated to have the life span of seventeen Palyopama duration. The celestial beings of the Sodharma and Ishan kalpa have the life duration of seventeen Palyopama. The maximum life duration of the celestial beings of the Mahashukra kalpa has been said of seventeen Sagropama.

१२४–सहस्सारे कप्पे देवाणं जहण्णेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। जे देवा सामाणं सुसामाणं महासामाणं पउमं महापउमं कुमुदं महाकुमुदं नलिणं महानलिणं पोंडरीअं महापोंडरीअं सुक्कं महासुक्कं सीहं सीहकंतं सीहवीअं भाविअं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। ते णं देवा सत्तरसहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा पाणमंति वा, उस्ससंति वा नीससंति वा। तेसि णं देवाणं सत्तरसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे सत्तरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

सहस्रार कल्प के देव सत्रह सागरोपम जघन्य स्थिति वाले कहे गए हैं। वहाँ देव विशिष्ट विमानों में देवरूप से उत्पन्न होते हैं। उन विशिष्ट विमानो की संख्या सत्रह कही गई है। यथा — १. सामान विमान, २. सुसामान विमान, ३. महासामान विमान, ४. पद्म विमान, ५. महापद्म विमान, ६. कुमुद विमान, ७. महाकुमुद विमान, ८. नलिन विमान, ९. महानलिन विमान, १०. पौण्डरीक विमान, ११. महापौण्डरीक विमान, १२. शुक्र विमान, १३. महाशुक्र विमान, १४. सिंह विमान, १५. सिंहकान्त विमान, १६. सिंहबीज विमान, १७. भावित विमान। वे देव सत्रह सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति वाले होते हैं। वे

देव सत्रह अर्धमासों (साढ़े आठ मासों) के अन्तराल से उच्छ्वास व निःश्वास तथा आन व प्राण की क्रियाएँ करते हैं। वे देव सत्रह हजार वर्षों के बाद आहार की इच्छा करते हैं।

कितने ही भव्य सिद्धिक जीव हैं जो सत्रह भव (सत्रह बार जन्म) ग्रहण करेंगे। उसके बाद वे जीव सिद्ध-बुद्ध होंगे। वे जीव कर्मों से मुक्ति पाकर परमनिर्वाण को प्राप्त होंगे। ऐसे भव्यसिद्धिक जीव अन्ततोगत्वा समस्त दुःखों का शमन (अन्त) करेंगे।

The celestial beings of the Sahsrar kalpa have been said of minimum seventeen Sagropama duration. They reincarnate as celestial beings into there specific celestial vehicles, the number of these specific celestial vehicles have been stated as seventeen. They are:- 1. Saman Viman, 2. Susaman Viman,3. Mahasaman Viman, 4. Padam Viman, 5. MahapadamViman, 6. Kumud Viman, 7. Mahakumud Viman, 8. Nalni Viman, 9. Mahanalni Viman, 10. Pondrik Viman, 11. Mahapondrik Viman, 12. Shukra Viman, 13. Mahashukra Viman, 14. Singh Viman, 15. Singhakant Viman, 16. Singhbeej Viman, 17. Bhavit Viman. These celestial being shave been told of the age duration of maximum seventeen Sagropama. They perform the activity of respiration or inhale and exhale after the interval of seventeen fortnight means after eight and a half months. They like to take food only once after the expiry of seventeen thousand years. There are many beings capable of salvation beings. They will take only seventeen births in future. After that they will attain salvation. They destroying all their accumulated previous karmas will get liberation. These living beings capable of salvation ultimately inhillate all their miseries and sufferings.

।। सतरहवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Seventeenth Samvaya)

अठारहवां समवाय

The Eighteenth Samvaya

१२५–अट्ठारसविहे बंभे पण्णत्ते, तं जहा–ओरालिए कामभोगे णेव सयं मणेणं सेवइ १, नोवि अण्णं मणेणं सेवावेइ २, मणेणं सेवंतं पि अण्णं न समणुजाणाइ ३, ओरालिए कामभोगे णेव सयं वायाए सेवइ ४, नोवि अण्णं वायाए सेवावेइ ५, वायाए सेवंतं पि अण्णं न समणुजाणाइ ६। ओरालिए कामभोगे णेव सयं काएणं सेवइ ७, णोवि य अण्णं काएणं सेवावेइ ८, काएणं सेवंतं पि अण्णं न समणुजाणाइ ९। दिव्वे कामभोगे णेव सयं मणेणं सेवइ १०, णोवि अण्णं मणेणं सेवावेइ ११, मणेणं सेवंतं पि अण्णं न समणुजाणाइ १२।

दिव्वे कामभोगे णेव सयं वायाए सेवइ १३, णोवि अण्णं वायाए सेवावेइ १४, वायाए सेवंतं पि अण्णं न समणुजाणाइ १५। दिव्वे कामभोगे णेव सयं काएणं सेवइ १६, णोवि अण्णं काएणं सेवावेइ १७, काएणं सेवंतं पि अण्णं न समणुजाणाइ १८।

अठारह प्रकार का ब्रह्मचर्य कहा गया है। यथा —१. औदारिक (शरीर वाले मनुष्य-तिर्यञ्चों के) काम-भोगों को न मन से स्वयं सेवन करना, २. न अन्य को मन से सेवन कराना, ३. न मन से सेवन करते हुए अन्य की अनुमोदना करना, ४. औदारिक काम-भोगों को न वचन से स्वयं सेवन करना, ५. न वचन से अन्य को सेवन कराना, ६. न ही वचन से सेवन करते हुए अन्य की अनुमोदना करना, ७. औदारिक-काम-भोगों को न काय से स्वयं सेवन करना, ८. न अन्य को काय से सेवन कराना, ९. न काय से सेवन करते हुए अन्य की अनुमोदना करना, १०. दिव्य (देव-देवी सम्बन्धी) काम-भोगों को न मन से स्वयं सेवन करना, ११. न अन्य को मन से सेवन कराना, १२. न मन से सेवन करते हुए अन्य की अनुमोदना करना, १३. दिव्य-काम-भोगों को न वचन से स्वयं सेवन करना, १४. न अन्य को वचन से सेवन कराना, १५. न वचन से सेवन करते हुए अन्य की अनुमोदना करना, १६. दिव्य-काम-भोगों को न काय से स्वयं सेवन करना, १७. न अन्य को काय से सेवन कराना, १८. न काय से सेवन करते हुए अन्य की अनुमोदना करना।

Fifteen types of celibacy has been described as :– 1. Gross bodied human and animal beings who don't enjoy amorous or sexual enjoyment even in their own mind, 2. Nor get others to enjoy, 3. Neither approve others sexual enjoyment activities mentally mind, 4. Neither enjoy the gross body sexual enjoyment in their own speech, 5. Nor get the others to enjoy, 6. Nor approve others sexual activities through speech, 7. Not to do his own the gross body sexual activities of enjoyment through their physical body, 8. Nor to get others to do that, 9. Nor to approve other's sexual intercourse activities through physical body, 10. They do not think of Divine (related to gods and goddesses) amorous enjoyments with their own minds, 11. Nor they get done from others, 12. Nor approve others doing so, 13. Divine sexual enjoyment neither they enjoy through their own speech, 14. Nor get others to enjoy, 15. Nor approve others to enjoy the sexual intercourse through speech, 16. Neither enjoy the amorous enjoyments through physical body themselves, 17. Nor get others to enjoy, 18. Nor approve others to enjoy this sexual enjoyment through their physical body.

१२६–अरहतो णं अरिट्ठनेमिस्स अट्ठारस समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपया होत्था। समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं णिग्गंथाणं सखुड्डयविअत्ताणं अट्ठारस ठाणा पण्णत्ता, तं जहा–

वयछक्कं[६] कायछक्कं[१२] अकप्पो[१३] गिहिभायणं[१४]।
पलियंक[१५] निसिज्जा[१६] य सिणाणं[१७] सोभवज्जणं[१८]।। १।।

अर्हन्त अरिष्टनेमि के अठारह हजार श्रमणों का उल्लेख है। यह उनकी उत्कृष्ट श्रमण सम्पदा है। श्रमण भगवान महावीर ने संयम रक्षार्थ सक्षुद्रक व्यक्त श्रमणों अर्थात् सभी श्रमण निर्ग्रन्थों के अठारह स्थान कहे हैं। यथा — १-६. छह व्रत षट्क (हिंसादि पाँच पापों का तथा रात्रि-भोजन का यावज्जीवन सर्वथा त्याग), ७-१२. काय षट् (पृथ्वी आदि छह काया के जीवों की रक्षा करना), १३. अकल्प (वस्त्र, पात्र, भक्त-पानादि का त्याग), १४. गृहि भाजन (गृहस्थ के पात्र का उपयोग न करना), १५. पर्यङ्क (पलंगादि पर नही सोना), १६. निषद्या (स्त्री-संसक्त अर्थात् स्त्री के साथ एक आसन पर नहीं बैठना), १७. स्नान (स्नान न करना), १८. शरीर-शोभा-शृंगारादि नहीं करना।

It is mentioned that the number of the ascetics of omniscient of Lord Arishtnemi was eighteen thousand. It was the maximum ascetic wealth of Lord Arishtnemi. Lord Mahaviraha has described eighteen steps (sthans) of all the unbound ascetics for the protection of their monk hood as :-1. Six vows sixer (to renounce the five types of mundane activities related to violence etc. sins throughout life permanently not to take meal after sunset). 2. Twelve bodies sixer (to protect six types of living beings like earth-bodied beings etc.). 3. Thirteen Akalp (to renounce food, liquid, cloths and utensils etc.). 4. Fourteen utensils of a laity (not to use the utensils of the householder). 5. Fifteen Prayank (not to sleep on cot etc.). 6. Sixteen Nishadhya (not to occupy the same seat on which the female is sitting means sitting with any female gender). 7. Seventeen Bath (not to bathe). 8. Eighteen (not to decorate the physical body in any form).

१२७–आयारस्स णं भगवतो सचूलियागस्स अट्ठारस पयसहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ता।

चूलिका-सहित भगवद्-आचारांग सूत्र के पद-प्रमाण से अठारह हजार पद कहे गए हैं।

Including the verses of Chulika (annexure) the number of aphorisms of the 1st canon of Jainism namely Acharang Sutra are eighteen thousand.

१२८–बंभीए णं लिवीए अट्ठारसविहे लेखविहाणे पण्णत्ते, तं जहा–बंभी १, जवणालिया २, दोसऊरिया ३, खरोट्ठिया ४, खरसाविआ ५, पहाराइया ६, उच्चत्तरिआ ७, अक्खरपुट्ठिया ८, भोगवइता ९, वेणतिया १०, णिण्हइया ११, अंकलिवी १२, गणिअलिवी १३, गंधव्वलिवी [भूयलिवी] १४, आदंसलिवी १५, माहेसरीलिवी १६, दामिलिवी १७, वोलिंदलिवी १८।

ब्राह्मीलिपि के अठारह प्रकार के लेख-विधानों का उल्लेख है। यथा — १. ब्राह्मी लिपि, २. यावनी लिपि, ३. दोषउपरिका लिपि, ४. खरोष्ट्रिका लिपि, ५. खर-शाविका लिपि, ६. प्रहारातिका लिपि, ७. उच्चत्तरिका लिपि, ८. अक्षरपृष्ठिका लिपि, ९. भोगवतिका लिपि, १०. वैणकियालिपि, ११. निह्नविका लिपि, १२. अंक लिपि, १३. गणित लिपि, १४. गन्धर्व लिपि (भूतलिपि), १५. आदर्श लिपि, १६. माहेश्वरी लिपि, १७. दामि लिपि, १८. पोलिन्दी लिपि।

It has been mentioned that there are eighteen types of scripts of Brahmi alphabet as :- 1. Brahmi Script or Alphabet, 2. Yavani Alphabet, 3. Doshuprika Alphabet, 4. Kharoshtrika Alphabet, 5. Khar-Shivika Alphabet, 6. Praharatika Alphabet, 7. Uchchattarika Alphabet, 8. Akshar-Varishthika Alphabet, 9. Bhogvatika Alphabet, 10. Vainkiya Alphabet, 11. Nihanavika Alphabet, 12. Ank Alphabet, 13. Mathematics Alphabet, 14.Gandharv Alphabet, 15. Adarsh (ideal) Alphabet, 16.Maheshvari Alphabet, 17. Daami Alphabet, 18. Polindi Alphabet.

१२९–अत्थिनत्थिप्पवायस्स णं पुव्वस्स अट्ठारस वत्थू पण्णत्ता।

अस्तिनास्ति प्रवाद पूर्व के अठारह वस्तु नामक अर्थाधिकार कहे गए हैं।

Eighteen Vastu Namak Arthadhikar (chapters) have been described of (asti-nasti) Poorva. (It explains simultaneous existence and non-existence).

१३०–धूमप्पभा णं पुढवी अट्ठारसुत्तरं जोयणसयसहस्सं बाहल्लेणं पण्णत्ता।

पोसासाढेसु णं मासेसु सइ उक्कोसेणं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, सइ उक्कोसेणं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवइ।

धूमप्रभा पाँचवीं पृथ्वी है जिसकी मौटाई एक लाख अठारह हजार (१,१८०००) योजन कही गई है। पौष और आषाढ़ मास के सन्दर्भ में कहा गया है कि इन दो मासों में एक बार उत्कृष्ट रात और दिन क्रमशः अठारह-अठारह मुहूर्त्त के होते हैं अर्थात् पौष मास में सबसे बड़ी रात अठारह मुहूर्त्त की होती है तथा आषाढ़ मास में सबसे बड़ा दिन अठारह मुहूर्त्त का होता है।

The thickness of the fifth hell named the Dhumprabha hell has been told as one lac eighteen thousand yojanas. In respect of the Indian months named Paush and Ashadha, it has been said that the length of the night and day is maximum eighteen-eighteen (muhurats). It means that the maximum duration of the longest night in the month of Paush is eighteen muhurat and the length of the longest day in Asadh month is eighteen muhurat.

१३१–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठारस पलिओवमाई ठिई पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं अट्ठारस पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। सहस्सारे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

इस रत्नप्रभा पृथ्वी में अठारह पल्योपम उत्कृष्ट स्थिति वाले नारकों का निरूपण हुआ है। कितने ही असुरकुमार देवों की स्थिति अठारह पल्योपम है। सौधर्म-ईशान और सहस्रार कल्पों में देव क्रमशः अठारह पल्योपम स्थिति के व अठारह सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति के कहे गए हैं।

The maximum life duration of the hellish beings in the land of Ratanprabha hell has been expounded eighteen Palyopama. Asurkumar (malevolent demons) have the life duration of eighteen Palyopama. The celestial beings of the Sodharma-Ishan and Sahasarar kalp have the maximum life span of eighteen Palyopama and eighteen Sagropama duration respectively.

१३२–आणए कप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं जहण्णेणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। जे देवा कालं सुकालं महाकालं अंजणं रिट्ठं सालं समाणं दुमं महादुमं विसालं सुसालं पउमं पउमगुम्मं कुमुदं कुमुदगुम्मं नलिणं नलिणगुम्मं पुंडरीअं पुंडरीयगुम्मं सहस्सारवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। ते णं देवाणं अट्ठारसहिं अद्धमासेहिं आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा। तेसि णं देवाणं अट्ठारस वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

संतेगइआ भवसिद्धिया जीवा जे अट्ठारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

आनत कल्प में अठारह सागरोपम जघन्य स्थिति वाले देव कहे गए हैं। वहाँ देव विशिष्ट विमानों में देव रूप से उत्पन्न होते हैं। उन विशिष्ट विमानों की संख्या बीस कही गई है। यथा — १. काल विमान, २. सुकाल विमान, ३. महाकाल विमान, ४. अंजन विमान, ५. रिष्ट विमान, ६. साल विमान, ७. समान विमान, ८. द्रुम विमान, ९. महाद्रुम विमान, १०. विशाल विमान, ११. सुशाल विमान, १२. पद्म विमान, १३. पद्मगुल्म विमान, १४. कुमुदविमान, १५. कुमुदगुल्म विमान, १६. नलिन विमान, १७. नलिन गुल्म विमान; १८. पुण्डरीक विमान, १९. पुण्डरीक गुल्म विमान, २०. सहस्रारावतंसक विमान। वे देव अठारह सागरोपम स्थिति वाले होते हैं। वे देव अठारह अर्धमासों (नौ मासों) के अन्तराल से उच्छ्वास-नि:श्वास अथवा आन-प्राण की क्रियाएँ करते हैं। वे देव अठारह हजार वर्ष के उपरान्त आहार ग्रहण करने की इच्छा करते हैं।

कितने ही भव्यसिद्धिक जीवों के सन्दर्भ में कहा गया है कि वे अठारह भव (अठारह बार जन्म) ग्रहण करेंगे। इसके पश्चात् वे सिद्ध-बुद्ध होंगे। वे भव्य सिद्धिक जीव कर्मों से मुक्ति पाकर परम निर्वाण को प्राप्त होंगे। वे जीव अन्ततोगत्वा सर्वदु:खों का शमन (अन्त) करेंगे।

In Aanat kalpa the minimum life duration of the celestial beings has been said eighteen Sagropama. There the gods reincarnate into the specific celestial vehicles (vimans). The number of these specific vimans has been described twenty as :- 1. Kaal Vimans, 2. Sukaal Vimans, 3. Mahakaal Vimans, 4. Anjan Vimans, 5. Rishat Vimans, 6. Saal Vimans, 7. Samaan Vimans, 8. Drum Vimans, 9. Mahadrum Vimans, 10. Vishal Vimans, 11. Sushaal Vimans, 12. Padam Vimans, 13. Padam Gulm Vimans, 14. Kumud Vimans,

15. Kumudgulm Vimans, 16. Nalin Vimans, 17. Nalingulm Vimans, 18. Pundrik Vimans, 19. Pundrikgulm Vimans, 20. Sahasaravatansak Vimans. These celestial beings have the life duration of eighteen Sagropama. They respirate or inhale and exhale once after the interval of eighteen half months means after nine months. These celestial beings desire to eat food once after eighteen thousand years. It has been said in respect of the Bhavsidhik (capable of salvation) beings that they would take eighteen births in future. After that they would attain salvation. They will attain liberation after annihilating all their accumulated Karmas of previous births. Ultimately they would destroy their all the miseries and sufferings.

।। अठारहवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Eighteenth Samvaya)

उन्नीसवां समवाय

The Nineteenth Samvaya

१३३–एगूणवीसं णायज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–

[१]उक्खित्तणाए, [२]संघाडे, [३]अंडे, [४]कुम्मे अ, [५]सेलए।
[६]तुंबे अ, [७]रोहिणी, [८]मल्ली, [९]मांगदी, [१०]चंदिमाति अ।।१।।
[११]दावद्दवे, [१२]उदगणाए, [१३]मंडुक्के, [१४]तेतली इ अ।
[१५]नंदिफले, [१६]अवरकंका, [१७]आइण्णे, [१८]सुंसुमा इ अ।।२।।
अवरे अ, [१९]पोण्डरीए णाए एगूणवीसइमे।

ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र के प्रथम श्रुतस्कन्ध के उन्नीस अध्ययन निरूपित हैं। यथा — १. उत्क्षिप्तज्ञात अध्ययन, २. संघाट अध्ययन, ३. अंड अध्ययन, ४. कूर्म अध्ययन, ५. शैलक अध्ययन, ६. तुम्ब अध्ययन, ७. रोहिणी अध्ययन, ८. मल्ली अध्ययन, ९. माकन्दी अध्ययन, १०. चन्द्रिमा अध्ययन, ११. दावद्रव अध्ययन, १२. उदक ज्ञात अध्ययन, १३. मंडूक अध्ययन, १४. तेतली अध्ययन, १५. नन्दिफल अध्ययन, १६. अपरकंका अध्ययन, १७. आकीर्ण अध्ययन, १८. सुंसुमा अध्ययन, १९. पुण्डरीकज्ञात अध्ययन।

Nineteen chapters of the 1st Shrut Skandh (1st volume) of the Jnatya Dharam Kathang Sutra have been expounded as:- 1. Utkshipt Jnat chapter, 2. Sanghat chapter, 3. Egg chapter, 4. Koorm (Frog) chapter, 5. Shailak chapter, 6. Tumb (Gourd) chapter, 7. Rohini chapter, 8. Malli chapter, 9. Makandi chapter, 10. Chandrima chapter, 11. Davdravya chapter, 12. Udakjnat Adhyana,

जम्बूद्वीप में सूर्य उत्कृष्ट रूप से एक हजार नौ सौ योजन ऊपर और नीचे प्रकाश करते हैं।
सूर्य की ऊँचाई रत्नप्रभा पृथ्वी के तल से 800 योजन है। वहां से ऊपर 100 योजन तक और नीचे लवण समुद्र की गहराई में 1000 योजन तक प्रकाश करते हैं।
100 योजन
100 योजन
800 योजन
800 योजन
मेरु पर्वत
जम्बूद्वीप
लवण समुद्र
लवण समुद्र
1000 योजन
1000 योजन

सूर्य का प्रकाश

ज्योतिष चक्र की सर्व ऊँचाई पृथ्वीतल से 900 योजन तक है। सूर्य विमान 800 योजन पर अवस्थित है। सूर्य का प्रकाश ऊपर की ओर ज्योतिष चक्र की सीमा तक जाता है। अर्थात् पृथ्वी तल से 900 योजन ऊपर तक। पृथ्वीतल से लवण समुद्र 1,000 योजन गहरा है। लवण समुद्र के तल तक सूर्य का प्रकाश जाता है। इस प्रकार सूर्य का प्रकाश पृथ्वीतल से ऊपर 900 योजन तथा नीचे 1,000 योजन, कुल 1,900 योजन क्षेत्र को प्रकाशित करता है।

–समवाय 19, सूत्र सं. 134

Sun Light

The height of stellar cycle from the surface of the earth is upto 900 yojans. The vehicle of Sun is situated at the height of 800 yojans. The light of the Sun reflects high upto the limit of stellar cycle, it means that upto the height of 900 yojan from the surface of earth. The depth of the Lavana Ocean is 1000 yojan from the surface of earth. The light of the sun goes upto deep upto the bottom of the ocean "Lavana". Thus, the light of the sun illuminates a total area of 1900 yojan from the surface of the earth, 900 yojans high and 1000 yojans under the water.

Samvayanga Sutra 19, Sutra 34

13. Mandook chapter, 14. Tetali chapter, 15. Nandiphal Adhyan, 16. Upperkanka chapter, 17. Aakiran chapter, 18. Sumsurna chapter, 19. Pundrikjnat chapter.

१३४–जंबूदीवे णं दीवे सूरिआ उक्कोसेणं एगूणवीसं जोयणसयाइं उड्ढमहो तवयंति।

जम्बूद्वीप नामक द्वीप में सूर्य उन्नीस सौ (१९००) योजन के क्षेत्र को संतप्त करता है, अर्थात् तपता है।

The sun brightens and warms the area measuring nineteen hundred yojana in the Jambu continent.

१३५–सुक्के णं महग्गहे अवरेणं उदिए समाणे एगूणवीसं णक्खत्ताइं समं चारं चरित्ता अवरेणं अत्थमणं उवागच्छइ।

शुक्र महाग्रह पश्चिम दिशा से उदित होता है और उन्नीस नक्षत्रों के साथ गमन करता हुआ अन्ततोगत्वा पश्चिम दिशा में ही अस्त होता है।

The great planet Shukra rises in the direction of the West and travelling in association with nineteen constellation (nakshtra) sets in west.

१३६–जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स कलाओ एगूणवीसं छेअणाओ पण्णत्ताओ।

जम्बूद्वीप नामक इस द्वीप में उन्नीस छेदनक (भागरूप) कलाओं का उल्लेख किया गया है।

There in Jambu continent the description of nineteen piercing stellar arts have been described.

१३७–एगूणवीसं तित्थयरा अगारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारिअं पव्वइआ।

वासुपूज्य, मल्ली, अरिष्टनेमि, पार्श्वनाथ और महावीर, इन पाँच तीर्थंकरों को छोड़कर शेष उन्नीस तीर्थंकर अगार-वास (गृहवास) में रहे फिर मुण्डित होकर गृहवास त्यागकर अगार से अनगार प्रव्रज्या ग्रहण की यानि दीक्षित हुए।

Except Lord Vasupujya, Mallinath, Arishtnemi, Parshvanath and Mahavir the remaining nineteen Ford makers (Tiranthankara) remained as the house holders. Later they renouncing the life of house holder, tonsuring the head, adopted the life of an ascetic or got initiated.

१३८–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइआणं नेरइयाणं एगूणवीसपलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणवीसपलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एगूणवीसपलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। आणयकप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं उक्कोसेणं एगूणवीससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

इस रत्नप्रभा पृथ्वी में कितने ही नारक तथा असुरकुमार देव उन्नीस-उन्नीस पल्योपम स्थिति वाले कहे गए हैं। सौधर्म ईशान कल्प के देव भी उन्नीस पल्योपम स्थिति के कहे गए हैं। आनतकल्प में देवों की उत्कृष्ट स्थिति उन्नीस सागरोपम कही गई है।

The life span of the hellish beings and fiendish gods has been described of nineteen Palyopama in the Ratanprabh hell (land). The life duration of the celestial beings of the celestial vehicles named Sodharma-Ishan kalpas has been told of nineteen Palyopama. The maximum life stay of the celestial beings of Aanatkalp has been said of nineteen Sagropama.

१३९–पाणए कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं जहण्णेणं एगूणवीससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। जे देवा आणतं पाणतं णतं विणतं घणं सुसिरं इंदं इंदोकंतं इंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एगूणवीससागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। ते णं देवा एगूणवीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा, पाणमंति वा, उस्ससंति वा नीससंति वा तेसि णं देवाणं एगूणवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

संतेगइआ भवसिद्धिया जीवा जे एगूणवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

प्राणत कल्प में उन्नीस सागरोपम जघन्य स्थिति वाले देवों का उल्लेख हुआ है। वहाँ के देव विशिष्ट विमानों में देवरूप से उत्पन्न होते हैं। उन विशिष्ट विमानों की संख्या नौ निरूपित है। यथा — १. आनत विमान, २. प्राणत विमान, ३. नत विमान, ४. विनत विमान, ५. घन विमान, ६. सुषिर विमान, ७. इन्द्र विमान, ८. इन्द्रकान्त विमान, ९. इन्द्रोत्तरावतंसक विमान। वे देव उन्नीस सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति वाले कहे गए हैं। वे देव उन्नीस अर्धमासों (साढ़े नौ मासों) के उपरान्त उच्छ्वास-निःश्वास अथवा आन-प्राण की क्रियाएँ करते हैं। वे देव उन्नीस हजार वर्षों के उपरान्त आहार की इच्छा करते हैं।

कितने ही भव्यसिद्धिक जीव उन्नीस भव (जन्म) ग्रहण करेंगे। इसके उपरान्त वे सिद्ध-बुद्ध होंगे। वे भव्य सिद्धिक जीव कर्मों से विमुक्त होकर परमनिर्वाण को प्राप्त होंगे। अन्ततोगत्वा सर्व दुःखों का शमन (अन्त) करेंगे।

It has been narrated that the celestial beings of the Pranat celestial beings have minimum life-span of nineteen Sagropama. The celestial beings of these vehicles take birth into the exclusive celestial vehicles, the number of these special celestial vehicles are nine, as follows :- 1. Anat Viman (celestial vehicle), 2. Pranat Viman, 3. Nat Viman, 4. Vinat Viman, 5. Ghan Viman, 6. Sushir Viman, 7. Inder Viman, 8.Inderkant Viman, 9. Inderotaravatansak Viman. They are said to have the maximum life of nineteen Sagropama. These celestial beings do the activity of respiration or inhale and exhale once after the completion of nineteen

half months means nine & a half months. They desire for food once after the interval of nineteen thousand years. There the beings who are capable of salvation (Bhavsidhik jeeva). They would take only nineteen births in future. After it they will attain salvation. These beings destroying all their accumulated karmas of previous lives would achieve their goal of Param Nirvan (absolute truth). Eventually, they will annihilate all their mistakes and sufferings in the end.

।। उन्नीसवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Nineteenth Samvaya)

बीसवां समवाय

The Twentieth Samvaya

१४०–वीसं असमाहिठाणा पणत्ता, तं जहा–दवदवचारि यावि भवइ १, अप्पमज्जियचारि यावि भवइ २, दुप्पमज्जियचारि यावि भवइ ३, अतिरित्तसेज्जाणिए ४, रातिणियपरिभासी ५, थेरोवघाइए ६, भूओवघाइए ७, संजलणे ८, कोहणे ९, पिट्ठिमंसिए १०, अभिक्खणं अभिक्खणं ओहारइत्ता भवइ ११, णवाणं अधिकरणाणं अणुप्पण्णाणं उप्पाएत्ता भवइ १२, पोराणाणं अधिकरणाणं खामिअ विउसविआणं पुणोदीरेत्ता भवइ १३, ससरक्खपाणिपाए १४, अकालसज्झायकारए यावि भवइ १५, कलहकरे १६, सद्दकरे १७, झंझकरे १८, सूरप्पमाणभोई १९, एसणाऽसमिते आवि भवइ २०।

बीस असमाधिस्थान (जिन कार्यों को करने से स्वयं के या दूसरों के चित्त में संक्लेश उत्पन्न हो) निरूपित हैं। यथा — १. दव-दव या धपधप करते हुए जल्दी-जल्दी तीव्र गति से चलना या गतिमान होना, २. अप्रमार्जितचारी होना, ३. दुष्प्रमार्जितचारी होना, ४. अतिरिक्त शय्या आसन रखना, ५. रात्निक साधुओं का पराभव करना, ६. स्थविर साधुओं को दोष लगाकर उनका उपघात या अपमान करना, ७. भूतों (एकेन्द्रिय जीवों) का व्यर्थ उपघात करना, ८. सदा रोषयुक्त प्रवृत्ति करना, ९. अति क्रोध करना, १०. पीठ पीछे दूसरे का अवर्णवाद करना, ११. निरन्तर सदा ही दूसरों के गुणों का विलोप करना, जो व्यक्ति दास या चोर नहीं है, उसे दास या चोर आदि कहना, १२. नित्य नए अधिकरणों जैसे कलह अथवा यन्त्रादिकों को उत्पन्न करना, १३. क्षमा किए हुए या उपशान्त हुए अधिकरणों यानि लड़ाई-झगड़ों को पुनः पुनः जागृत करना, १४. सरजस्क यानि सचेतन धूलि आदि से सम्पृक्त अर्थात् सरजस्क हाथ वाले व्यक्ति से भिक्षा ग्रहण करना और सरजस्क स्थंडिल आदि पर चलना, सरजस्क आसनादि पर बैठना, १५. काल का विचार न करते हुए अकाल में स्वाध्याय करना और काल में स्वाध्याय न करना, १६. कलह करना, १७. रात्रि में उच्च स्वर से स्वाध्याय और वार्तालाप

करना, १८. गण या संघ में फूट डालने वाले वचन बोलना, १९. सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त होने तक खाते-पीते रहना अर्थात् दिनभर कुछ न कुछ मुँह में डालते रहना, २०. एषणा समिति का पालन नहीं करना और अनेषणीय भक्त-पान को ग्रहण करना।

Twenty Asmadhisthan (the activities by which the own mind as well of others get tortured) has been described as :- 1.To walk (hurriedly) too quickly in a great haste by making the voice of stumping, 2. To be Apramaarjitchari (to act in absurd way), 3. To become Dushprabhajitchari (act mischievously), 4. To keep extra bed sheets, 5. To be disgraced of the nocturnal ascetics, 6. To humiliate the senior ascetics by blaming them, 7. To disgrace the one sense living being without proper reasons, 8. Activities always with anger, 9. To be over angry, 10. To criticize others at the back, 11. To always and continuously discard others virtues as calling a person a thief or slave when he is not so, 12. To bring about new means of chaos and confusion daily, 13. To incite again and again the struggle that has already have been forgiven, 14. To keep hands rubbed with living earth occupied mud and to accept alms a person with wet mud hands or to sit on a wet seat or from walk for natural call on the mud which is occupied by live dust, 15. To study, not taking into consideration the appropriate time for study of scriptures and not to study scriptures at scheduled time alloted for study, 16. To create fuss, 17. To study or talk in a high pitch voice at night, 18. To utter such words that bring disharmony in the organisation of asectics, 19. To keep busy in eating since sunrise to sunset or to keep on pouring something to eat into the month for all the day throughout, 20. Not to abide by the rules of alm seeking with care (Aishna samiti) and to accept the alms that is not acceptable.

१४१–मुणिसुव्वए णं अरहा वीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था। सव्वेवि अ घणोदही वीसं जोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ता। पाणयस्स णं देविंदस्स देवरण्णो वीसं सामाणिअसाहस्सीओ पण्णत्ताओ। णपुंसयवेयणिज्जस्स णं कम्मस्स वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ बंधओ बंधठिई पण्णत्ता। पच्चक्खाणस्स णं पुव्वस्स वीसं वत्थू पण्णत्ता। उस्सप्पिणिओसप्पिणिमंडले वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ कालो पण्णत्तो।

वर्तमान काल के चौबीस तीर्थंकरों में बीसवें तीर्थंकर अर्हत् मुनिसुव्रत की ऊँचाई बीस धनुष कही गई है। सभी घनोदधिवातवलय बीस हजार योजन मोटे कहे गए हैं। प्राणत देवराज देवेन्द्र के बीस हजार सामानिक देव कहे गए हैं। नवीन कर्म बन्ध भी अपेक्षा से नपुंसक वेदनीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति बीस कोड़ा कोड़ी सागरोपम कही गई है। प्रत्याख्यान पूर्व के बीस वस्तु नामक अर्थाधिकार का निरूपण हुआ है। बीस कोटाकोटि (कोड़ा-कोड़ी) सागरोपम का कालचक्र (उत्सर्पिणी-अवसर्पिणी मण्डल यानि आरा-चक्र) कहा गया है। कहने का तात्पर्य है कि दस कोड़ा कोड़ी सागरोपम का

उत्सर्पिणी काल और दस कोड़ा कोड़ी सागरोपम का अवसर्पिणी काल मिलकर बीस कोटाकोटि सागरोपम का एक कालचक्र कहलाता है।

The height of twentieth ford maker (Tirthankara) the omniscient Lord Shri Munisuvrat one of this present series of twenty four Tirthankaras was equal to twenty bows. The thickness of circle of all the Ghanodadhi Vaat (thick air around desirous) has been said of twenty yojanas. The number of the co-chief of the chief god of the Pranat celestial vehicle has been narrated twenty thousand. With regard to bound new karmas, the life span of the hermophroditic (Napunsak) feeling karmas has been said to be maximum of 200 millions crore Sagropama. (The chapter of named 'Twenty Vastu of Pratyakhyan Poorva' has been narrated full time cycle of Utsarpini and Avsarpini kaal (decreasing time and increasing time cycle duration) the time period of one time cycle i.e. Utsarpini avasarpani kaal is equal to 100 million crore Sagropama and 100 million crore Sagropama of Avasarpini kaal totalling 200 million crore Sagropama period.

१४२–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं वीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं णेरइयाणं वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं वीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं वीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। पाणते कप्पे देवाणं उक्कोसेणं वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

इस रत्नप्रभा पृथ्वी में बीस पल्योपम स्थिति वाले कितने ही नारकों का वर्णन हुआ है। छठी पृथ्वी तमः प्रभा है इसमें कितने ही नारकों की स्थिति बीस सागरोपम उल्लिखित है। कितने ही असुर कुमार देव बीस पल्योपम स्थिति वाले कहे गए हैं। सौधर्म ईशान कल्पों में कितने ही देवों की स्थिति बीस पल्योपम निरूपित है। प्राणतकल्प में देव बीस सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति वाले कहे गए हैं।

In this Ratanprabha hell the description of the infernal beings has been made of whose life duration is twenty Palyopama. In the sixth hell named Tamhprabha. The life duration of hellish beings has been described of twenty Sagropama. The malevolent demons have been stated to the life-span of twenty Palyopama. The life span of the celestial beings of the Sodharma-Ishan kalpa has been expounded of twenty Palyopama duration. The celestial beings of Pranat kalpa have been said of maximum twenty Sagropama duration.

१४३–आरणे कप्पे देवाणं जहण्णेणं वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। जे देवा सायं विसायं सुविसायं सिद्धत्थं उप्पलं भित्तिलं, तिगिच्छं दिसासोवत्थियं पलंबं रुइलं पुप्फं सुपुप्फं पुप्फावत्तं पुप्फपभं पुप्फकंतं पुप्फवण्णं पुप्फलेसं पुप्फज्झयं पुप्फसिंगं पुप्फसिद्धं पुप्फुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। ते णं

देवा वीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा, पाणमंति वा, उस्ससंति वा, नीससंति वा, तेसिं ण देवाणं वीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

संतेगइआ भवसिद्धिआ जीवा जे वीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

आरणकल्प में देव बीस सागरोपम जघन्य स्थिति वाले कहे गए हैं। वहाँ देव विशिष्ट विमानों में देव रूप से उत्पन्न होते हैं। विशिष्ट विमानों की संख्या इक्कीस है। यथा —१. सात विमान, २. विसात विमान, ३. सुविसात विमान, ४. सिद्धार्थ विमान, ५. उत्पल विमान, ६. भित्तिल विमान, ७. तिगिंछ विमान, ८. दिशासौवस्तिक विमान, ९. प्रलम्ब विमान, १०. रुचिर विमान, ११. पुष्प विमान, १२. सुपुष्प विमान, १३. पुष्पावर्त विमान, १४. पुष्पप्रभ विमान, १५. पुष्पकान्त विमान, १६. पुष्पवर्ण विमान, १७. पुष्पलेश्य विमान, १८. पुष्पध्वज विमान, १९. पुष्पशृंग विमान, २०. पुष्पसिद्ध (पुष्पसृष्ट) विमान, २१. पुष्पोत्तरावतंसक विमान। वे देव बीस सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति वाले कहे गए हैं। वे देव बीस अर्धमासों (दश मासों) के उपरान्त उच्छ्‌वास-निःश्वास या आन-प्राण की क्रिया करते हैं। वे देव बीस हजार वर्षों के अन्तराल से आहार की इच्छा करते हैं।

कितने ही भव्यसिद्धिक जीव बीस भव (जन्म) ग्रहण करेंगे। इसके उपरान्त वे सिद्ध-बुद्ध होंगे। वे भव्यसिद्धिक जीव कर्मों से मुक्ति पाकर परम निर्वाण को प्राप्त होंगे। वे अन्ततोगत्वा सर्व दुःखों का शमन (अन्त) करेंगे।

In the celestial vehicle named Aranya the life duration of the native gods of this vehicle has been said as minimum of twenty Sagropama. These gods take birth as a celestial being into this special celestial vehicles. These special vehicles are twenty in number/count as:- 1. Sat Viman, 2. Visat Viman, 3. Suvisat Viman, 4. Sidharth Viman, 5. Utpat Viman, 6. Bhital Viman, 7. Tiganchu Viman, 8. Dishasovastik Viman, 9. Pralamb Viman, 10. Ruchir Viman, 11. Pushp Viman, 12. Supushp Viman, 13. Pushpovart Viman, 14. Pushpprabh Viman, 15. Pushpkant Viman, 16. Pushppvarn Viman, 17. Pushpleshya Viman, 18. Pushpdhvja Viman, 19. Pushpsidh (Pushprisht) Viman, 20. Pushpotaravantsk Viman. The life-span duration of these gods have been said maximum of twenty Sagropama. They respirate or inhale and exhale once after the interval of twenty half months means after ten months duration. They desire for food after the interval of twenty thousand years.

There the beings capable of salvation (Bhavyasidhik) wouldtake only twenty births in future. After that they would attain liberation. These beings after annihilating all their karmas would get salvation. At the end they would destroy all their miseries and sufferings for good.

।। बीसवां समवाय समाप्त ।। (The End of Twentieth Samvaya)

इक्कीसवां समवाय

The Twenty First Samvaya

१४४–एक्कवीसं सबला पण्णत्ता, तं जहा–हत्थकम्मं करेमाणे सबले १, मेहुणं पडिसेवमाणे सबले २, राइभोअणं भुंजमाणे सबले ३, आहाकम्मं भुंजमाणे सबले ४, सागारियं पिंडं भुंजमाणे सबले ५, उद्देसियं कीयं आहट्टु दिज्जमाणं भुंजमाणे सबले ६, अभिक्खणं पडियाइक्खेत्ता णं भुंजमाणे सबले ७, अंतो छण्हं मासाणं गणाओ गणं संकममाणे सबले ८, अंतो मासस्स तओ दगलेवे करेमाणे सबले ९, अंतो मासस्स तओ माईठाणे सेवमाणे सबले १०, रायपिंडं भुंजमाणे सबले ११, आउट्टिआए पाणाइवायं करेमाणे सबले १२, आउट्टिआए मुसावायं वदमाणे सबले १३, आउट्टियाए आदिण्णादाणं गिण्हमाणे सबले १४, आउट्टियाए अणंतरहिआए पुढवीए ठाणं वा निसीहियं वा चेतेमाणे सबले १५, एवं आउट्टिआ चित्तमंताए पुढवीए, एवं आउट्टिआ चित्तमंताए सिलाए कोलावासंसि वा दारुए अण्णयरे वा तहप्पगारे ठाणं वा सिज्जं वा निसीहियं वा चेतेमाणे सबले १६, जीवपइट्ठिए सपाणे सबीए सहरिए सउत्तिंगे पणग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणए तहप्पगारे ठाणं वा सिज्जं वा निसीहियं वा चेतेमाणे सबले १७, आउट्टिआए मूलभोयणं वा कंदभोयणं वा तयाभोयणं वा, पवालभोयणं वा पुप्फभोयणं वा फलभोयणं वा हरियभोयणं वा भुंजमाणे सबले १८, अंतो संवच्छरस्स दस दगलेवे करेमाणे सबले १९, अंतो संवच्छरस्स दस माइठाणाइं सेवमाणे सबले २०, अभिक्खणं अभिक्खणं सीतोदयवियडवग्घारियपाणिणा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिगाहित्ता भुंजमाणे सबले २१।

इक्कीस प्रकार के शबल दोष - चारित्र को कर्बुरित, मलिन या धब्बों से दूषित करने वाले दोष निरूपित हैं। यथा —१. हस्त-मैथुन करने वाला शबल, २. स्त्री आदि के साथ मैथुन सेवन करने वाला शबल, ३. रात में भोजन करने वाला शबल, ४. आधा-कर्मिक भोजन को सेवन करने वाला शबल, ५. शय्यातर (स्थान-दाता) यानि सागारिक का भोजन-पिंड ग्रहण करने वाला शबल, ६. औद्देशिक, बाजार से क्रीत (खरीदे गए) और अन्यत्र से लाकर दिए गए यानि अभ्याहृत भोजन को खाने वाला शबल, ७. बार-बार प्रत्याख्यान अर्थात् परित्याग कर पुनः उसी वस्तु का प्रयोग या सेवन करने वाला शबल, ८. षड्मास (छह माह) के भीतर एक गण से दूसरे गण में जाने वाला शबल, ९. एक माह के भीतर तीन बार नाभि-प्रमाण जल में अवगाहन या प्रवेश करने वाला शबल, १०. एक माह के भीतर तीन बार माया स्थान को सेवन करने वाला शबल, ११. राजपिण्ड खाने वाला शबल, १२. जान-बूझकर पृथ्वी आदि जीवों का घात करने वाला शबल, १३. जानबूझकर असत्य वचन का प्रयोग करने वाला शबल, १४. जान-बूझकर बिना दी हुई वस्तु को ग्रहण करने वाला शबल, १५. जान-बूझकर

सचित्त पृथ्वी पर स्थान, आसन, कायोत्सर्ग आदि करने वाला शबल, १६. इसी प्रकार जान-बूझकर सचेतन पृथ्वी पर, सचेतन शिला पर और कोलावास यानी घुन वाली लकड़ी आदि पर स्थान, शयन-आसन आदि करने वाला शबल, १७. जीव-प्रतिष्ठित, प्राण-युक्त, सबीज, हरित-सहित, कीड़े-मकोड़े वाले, पनक, उदक, मृत्तिका कीड़ी नगरा वाले एवं इसी प्रकार के अन्य स्थान पर अवस्थान, शयन, आसनादि करने वाला शबल, १८. जान-बूझकर मूल-भोजन, कन्द-भोजन, त्वक्-भोजन, प्रवाल-भोजन, पुष्प-भोजन, फल-भोजन और हरित-भोजन करने वाला शबल, १९. एक वर्ष के भीतर दश बार जलावगाहन या जल में प्रवेश करने वाला शबल, २०. एक वर्ष के भीतर दश बार मायास्थानों का सेवन करने वाला शबल, २१. बार-बार शीतल जल से व्याप्त हाथों से अशन, पान, खादिम और स्वादिम पदार्थों को ग्रहण कर खाने वाला शबल।

Twenty one types of profound faults. Shabal Dosh (The faults or wrong deeds performed through fault induced activities which make one's character malevolent and polluted) has been described as :- 1. The fault of copulation, 2. The fault of sexual intercourse with women, 3. The fault of taking food after sun set, 4. The fault of taking half boiled or unboiled food, 5. Fault of accepting the alm from a person who has accorded permission to stay in the house or Jain Upashraya, 6. The fault regarding eating the food that has been purchased from the market or has been borrowed from other householder i.e. Abhyahrit food (the food brought in the upashrya for offering to the monk), 7. Fault of consuming (the same food again that has been renounced earlier), 8. The fault of shifting his loyalty from one ascetic organisation to another ascetic organisation within a period of six months, 9. The fault of entering into the flowing water having the surface upto the ones navel thrice in a month, 10. The fault of converting thrice the activities of deceit within a month i.e. Mayasthan activities, 11. The fault of seeking alms from the King's kitchen i.e. Rajpind, 12. The fault of killing the living beings of earth or prithvi kaya knowingly, 13. The fault of tilling lies knowingly, 14. The fault of taking any commodity knowingly which has not been given to him, 15. The fault regarding the activities having been performed knowingly or doing the religious activities like sitting, body relaxation etc. at the place occupied by living beings i.e. Sachit Prithvi (earth-bodied beings), 16. The fault of using the place, rock and worm eaten woods knowingly for making bed and sleeping while it has been occupied by living being. 17. Fault of staying at a place occupied by living beings, place full of vital force beings with seeds, occupied by vegetation, occupied by insects, worms, flies, termite etc. and to make bed, sitting arrangements at the places having the similar conditions, 18. The fault regarding to consumption root food, root stem food, tvakt food, sea food, flowers food, fruits food etc. knowingly i.e.

to consume green sachet food, 19. The fault of entering into the water of ten times within a duration of one year, 20. The fault related to visit places for a period of ten times within a year, those are called, prohibited places i.e. Mara Sthan for monks and nuns, 21. The fault regarding of taking cereal, liquid, tasty, fats foods with the hands which are washed, cleaned again and again with cold water.

१४५–णिअट्टिबादरस्स णं खवित्तसत्तयस्स मोहणिज्जस्स कम्मस्स एक्कवीसं कम्मंसा संतकम्मा पण्णत्ता, तं जहा–अप्पच्चक्खाणकसाए कोहे, अप्पच्चक्खाणकसाए माणे, अप्पच्चक्खाणकसाए माया, अप्पच्चक्खाणकसाए लोभे, पच्चक्खाणावरणकसाए कोहे, पच्चक्खाणावरणकसाए माणे पच्चक्खाणावरणकसाए माया पच्चक्खाणावरणकसाए लोहे, [संजलणकसाए कोहे, संजलणकसाए माणे, संजलणकसाए माया, संजलणकसाए लोहे] इत्थिवेदे पुंवेदे णपुंवेदे हासे अरति-रति-भय-सोग-दुगुंछा।

मोहनीय कर्म की अनन्तानुबंधी चार और दर्शनत्रिक (मिथ्यात्व, मिश्र व सम्यक्त्वमोहनीय) इन सात प्रकृतियों का क्षय करने वाले निवृत्ति बादर नामक आठवें गुणस्थानवर्ती जीव के मोहनीय की इक्कीस कर्म प्रकृतियां सत्ता में रहती हैं। वे इस प्रकार हैं, यथा — १. अप्रत्याख्यान क्रोध कषाय, २. अप्रत्याख्यान मान कषाय, ३. अप्रत्याख्यान माया कषाय, ४. अप्रत्याख्यान लोभ कषाय, ५. प्रत्याख्यानावरण क्रोध कषाय, ६. प्रत्याख्यानवरण मान कषाय, ७. प्रत्याख्यानावरण माया कषाय, ८. प्रत्याख्यानावरण लोभ कषाय, ९. संज्वलन क्रोध कषाय, १०. संज्वलन मान कषाय, ११. संज्वलन माया कषाय, १२. संज्वलन लोभ कषाय, १३. स्त्रीवेद, १४. पुरुषवेद, १५. नपुंसक वेद, १६. हास्य, १७. अरति, १८. रति, १९. भय, २०. शोक, २१. दुगुंछा (जुगुप्सा)।

The seven tendencies consisting of infinite and wrong belief, compound & slight delusion means the destroyable gross particles of perceptual delusion are stated as having the twenty one tendencies of delusion karmas as the eighth stage of spiritual purification (gunsthan) named as Kshapak Naivarti Badar Gunsthan. They are: 1. Passion of anger (unregulated), 2. Passion of conceit (unregulated), 3. Passion of deceit (unregulated), 4. Passion of greed (unregulated), 5. Mild (regulated) passion of anger, 6. Mild (regulated) passion of conceit, 7. Mild (regulated) passion of deceit, 8. Mild (regulated) passion of greed, 9. Flickering passion of anger, 10. Flickering passion of conceit, 11. Flickering passion of deceit, 12. Flickering passion of greed, 13. Feminity, 14. Masculinity, 15. Sexual feeling towards both male and female, Hermaphroditic, 16. Joking, 17. Non-absorbed, 18. Absorbed (interested in restraint), 19. Fear, 20. Sorrow, 21. Disgust (in mundane pleasures).

१४६–एक्कमेक्काए णं ओसप्पिणीए पंचम-छट्ठाओ समाओ एक्कवीसं एक्कवीसं वाससहस्साइं कालेणं पण्णत्ताओ, तं जहा–दूसमा, दूसमदूसमा, एगमेगाए णं उस्सप्पिणीए पढम-बितिआओ समाओ एक्कवीसं एक्कवीसं वाससहस्साइं कालेणं पण्णत्ताओ, तं जहा–दूसमदूसमाए, दूसमाए य।

इक्कीस-इक्कीस हजार वर्ष के काल वाले प्रत्येक अवसर्पिणी के पाँचवें और छठे आरे कहे गए हैं, यथा — दुःषमा और दुषम-दुषमा। इसी प्रकार इक्कीस-इक्कीस हजार वर्ष के काल वाले प्रत्येक उत्सर्पिणी के प्रथम और द्वितीय आरे कहे गए हैं, यथा — दुःषम-दुःषमा और दुःषमा।

The time period of the fifth & sixth aeon of every decreasing time cycle i.e. Avasarpini kaal has been described of twenty one thousand years each as :– The Dushama and Dushama-Dushama. Such is the first and 2nd spoke (Ara) of increasing time cycle i.e. Utsarpini kaal. They have been narrated of twenty one thousand years each as Dushama-Dushama and Dushama.

१४७–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

इस रत्नप्रभा पृथ्वी में इक्कीस पल्योपम स्थिति वाले कितने ही नारकों का वर्णन निरूपित है। छठी पृथ्वी जो तमप्रभा है, उसमें इक्कीस सागरोपम स्थिति वाले कितने ही नारक कहे गए हैं। कितने ही असुर कुमार देवों की स्थिति इक्कीस पल्योपम कही गई है।

The description of the hellish beings of the Ratanprabha hell having the life duration of twenty one Palyopama has been expounded. In the sixth land hell namely Tamh Prabha the hellish beings having a life duration of twenty one Sagropama have been described. The life duration of the malevolent demons (Asur kumar) has been said as twenty one Palyopama.

१४८–सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। आरणे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं एक्कवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

सौधर्म-ईशान कल्पों में कितने ही देव इक्कीस पल्योपम स्थिति वाले कहे गए हैं। आरणकल्प में देव इक्कीस सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति वाले निरूपित हैं।

The celestial beings of the celestial vehicles of Sodharma-Ishankalpa have been stated as having life duration of twenty one Palyopama. The maximum life duration of the native celestial beings of the Aarankalpa has been mentioned as twenty one Sagropama.

१४९–अच्चुते कप्पे देवाणं जहण्णेणं एक्कवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। जे देवा सिरिवच्छं सिरिदामकंडं मल्लं किट्टं चावोण्णतं अरण्णवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं एक्कवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। ते णं देवा एक्कवीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा, पाणमंति वा, उस्ससंति वा, नीससंति वा। तेसि णं देवाणं एक्कवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

संतेगइया भवसिद्धिआ जीवा जे एक्कवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

अच्युत कल्प में देव इक्कीस सागरोपम जघन्य स्थिति के कहे गए हैं। वहाँ देव विशिष्ट विमानों में देव रूप से उत्पन्न होते हैं। उन विशिष्ट विमानों की संख्या छह कही गई है। यथा—१. श्रीवत्स विमान, २. श्रीदामकाण्ड विमान, ३. मल्ल विमान, ४. कृष्ट विमान, ५. चापोन्नत विमान, ६. आरणावतंसक विमान। वे देव इक्कीस सागरोपम स्थिति के कहे गए हैं। वे देव इक्कीस अर्धमासों (साढ़े दश मासों) के उपरान्त उच्छ्वास-निःश्वास या आन-प्राण की क्रियाएँ करते हैं। वे देव इक्कीस हजार वर्षों के पश्चात् आहार की इच्छा करते हैं।

वहाँ कितने ही भव्यसिद्धिक जीव इक्कीस भव (जन्म) ग्रहण करेंगे। तदुपरान्त वे सिद्ध-बुद्ध होंगे। वे भव्यसिद्धिक जीव कर्मों से विमुक्त हो कर परम निर्वाण को प्राप्त होंगे। वे अन्ततोगत्वा सर्व दुःखों का शमन (अन्त) करेंगे।

The minimum life span of the celestial beings of (Achyut Viman) has been narrated as twenty one Sagropama duration. There the celestial beings take birth the exclusive celestial vehicles (Vimans) prescribed six in numbers. They are: 1. Shrivats Viman, 2. Shri Daamkaand Viman, 3. Mall Viman, 4. Krisht Viman, 5. Chaponat Viman, 6. Aaranavatansak Viman. The duration of these gods has been stated as twenty one Sagropama. They do the activity of respiration or inhale and exhale after passage a period of twenty one half months or after ten and a half months duration. They desire for food once after the expiry of twenty one thousand years. Many of them capable of salvation (Bhavyasidhik jeevas) would take birth twenty one times in future. After that they would attain emancipation. These Bhavsidhik jeevas after renouncing their all the accumulated karmas of previous lives would get ultimate goal of their lives. Ultimately they would destroy their all the miseries and sufferings at the end.

।। इक्कीसवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Twenty First Samvaya)

बाईसवां समवाय

The Twenty Second Samvaya

१५०–वावीसं परीसहा पण्णत्ता, तं जहा–दिगिंछापरीसहे १, पिवासापरीसहे २, सीतपरीसहे ३, उसिणपरीसहे ४, दंसमसगपरीसहे ५, अचेलपरीसहे ६, अरइपरीसहे ७, इत्थीपरीसहे ८, चरिआपरीसहे ९, निसीहिआपरीसहे १०, सिज्जापरीसहे ११, अक्कोसपरीसहे १२, वहपरीसहे १३, जायणापरीसहे १४, अलाभपरीसहे १५, रोगपरीसहे १६, तणफासपरीसहे १७, जल्लपरीसहे १८, सक्कारपुरक्कारपरीसहे १९, पण्णापरीसहे २०, अण्णाणपरीसहे २१, अदंसणपरीसहे २२।

बाईस परीषह (कर्म-निर्जरा हेतु भूख-प्यास, शीत-उष्ण, डांस-मच्छर आदि बाधाओं या कष्टों को समतापूर्वक सहना) निरूपित हैं। यथा —१. दिगिंच्छा (बुभुक्षा) परीषह, २. पिपासा परीषह, ३. शीत परीषह, ४. उष्ण परीषह, ५. दंशमशक परीषह, ६. अचेल परीषह, ७. अरति परीषह, ८. स्त्री परीषह, ९. चर्या परीषह, १०. निषद्या परीषह, ११. शय्या परीषह, १२. आक्रोश परीषह, १३. वध परीषह, १४. याचना परीषह, १५. अलाभ परीषह, १६. रोग परीषह, १७. तृण स्पर्श परीषह, १८. जल्ल परीषह, १९. सत्कार-पुरस्कार परीषह, २०. प्रज्ञा परीषह, २१. अज्ञान परीषह, २२. अदर्शन परीषह।

The number of afflictions has been stated as twenty two. In order to destroy Karma one should bear with equanimity the hunger and thirst induced pains, warm and cold and the mosquitoes and flies induced obstructions. They are:– 1. Affliction of hunger, 2. Affliction of thirst, 3. Affliction of cold, 4. Affliction of heat, 5. Affliction of insects bites, 6. Affliction of nudity, 7. Affliction of non-absorption, 8. Femininitive Afflictions, 9. Affliction of movement and conduct, 10. Affliction of sitting, 11. Affliction of bed, 12. Affliction of exasperation, 13. Affliction of killing, 14. Affliction of seeking alms, 15. Affliction of not gaining in alms, 16. Affliction of disease, 17. Affliction of straw sting touch, 18. Affliction of ailment, 19. Affliction of infatuation due to honour and getting prizes, 20. Affliction of knowledge, 21. Affliction of ignorance, 22. Affliction of non-faith.

१५१–दिट्ठिवायस्स णं वावीसं सुत्ताइं छिन्नछेयणइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए, वावीसं सुत्ताइं अच्छिन्नछेयणइयाइं आजीवियसुत्तपरिवाडीए, वावीसं सुत्ताइं तिकणइयाइं तेरासियसुत्तपरिवाडीए, वावीसं सुत्ताइं चउक्कणइयाइं समयसुत्तपरिवाडीए।

बारहवाँ अंग दृष्टिवाद है। इसमें बाईस सूत्र स्वसमय सूत्र परीपाटी से छिन्न-छेदनयिक हैं। बाईस सूत्र आजीविक सूत्र परिपाटी से अच्छिन्न-छेदनयिक हैं। इसी प्रकार त्रैराशिक सूत्र परिपाटी से नयत्रिक सम्बन्धी बाईस सूत्र हैं। चार नयों (सूत्र संग्रह, व्यवहार, ऋजु सूत्र और शब्दादित्रिक) की अपेक्षा से बाईस सूत्र चतुष्कनयिक कहे गए हैं।

The Drishtivad canon is twelfth one. In it the twenty two aphorism name as of Swasamaya Sutra are related to chhinn-chhedan tradition. In the same way twenty two aphorism relate to destiny. Another twenty two tradition relate to three groups of being. There are twenty two aphorism related to three philosophical view points. With regard to the four philosophical view points i.e. general view point, distributive viewpoint, actual viewpoint and three literal i.e. literal, conventional and specific view points. These twenty two aphorism are of there four view points.

१५२–वावीसविहे पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते, तं जहा–कालवण्णपरिणामे, नीलवण्णपरिणामे, लोहियवण्णपरिणामे, हलिद्दवण्णपरिणामे, सुक्किल्लवण्णपरिणामे, सुब्भिगंधपरिणामे, दुब्भिगंधपरिणामे, तित्तरसपरिणामे, कडुयरसपरिणामे, कसायरसपरिणामे, अंबिलरसपरिणामे, महुररसपरिणामे, कक्खडफासपरिणामे, मउयफासपरिणामे, गुरुफासपरिणामे, लहुफासपरिणामे, सीतफासपरिणामे, उसिणफासपरिणामे, णिद्धफासपरिणामे, लुक्खफासपरिणामे, अगुरुलहुफासपरिणामे, गुरुलहुफासपरिणामे।

पुद्गल के परिणाम (धर्म) कहे गए हैं। इनके बाईस प्रकार हैं। यथा — १. कृष्णवर्ण परिणाम, २. नील वर्ण परिणाम, ३. लोहित वर्ण परिणाम, ४. हारिद्रवर्ण परिणाम, ५. शुक्लवर्ण परिणाम, ६. सुरभिगन्ध परिणाम, ७. दुरभिगन्ध परिणाम, ८. तिक्तरस परिणाम, ९. कटुकरस परिणाम, १०. कषायरस परिणाम, ११. आम्ल रस परिणाम, १२. मधुरस परिणाम, १३. कर्कशस्पर्श परिणाम, १४. मृदुस्पर्श परिणाम, १५. गुरु स्पर्श परिणाम, १६. लघुस्पर्श परिणाम, १७. शीत स्पर्श परिणाम, १८. उष्णस्पर्श परिणाम, १९. स्निग्ध स्पर्श परिणाम, २०. रूक्षस्पर्श परिणाम, २१. अगुरुलघुस्पर्श परिणाम, २२. गुरुलघुस्पर्श परिणाम।

The description of the inherent nature (properties) of the matter (pudgal) has been discussed. The total number of these properties are twenty two. They are:– 1. Black coloured form, 2. Blue coloured, 3. Red coloured, 4. Green coloured. 5. White coloured form, 6. Sweet smell property, 7. Foul smell property, 8. Pungent taste property, 9. Bitter taste property, 10. Saline savoury property, 11. Sour savoury property, 12. Sweet taste property, 13. Hard touch property, 14. Soft touch property, 15. Heavy touch property, 16. Light touch property, 17. Cold feeling of touch property, 18. Hot feeling property, 19. Smooth feeling property, 20. Tough touch feeling property, 21. Neither heavy nor light feeling touch property, 22. Heavy light feeling touch property.

१५३–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं वावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं वावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। अहेसत्तमाए पुढवीए

अत्थेगइयाणं नेरइयाणं जहण्णेणं वावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं वावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं वावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

इस रत्नप्रभा पृथ्वी में बाईस पल्योपम स्थिति के कितने ही नारक कहे गए हैं। छठी पृथ्वी तमःप्रभा है, उसमें नारक बाईस सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति के कहे गए हैं। इसके नीचे तमस्तमा नामक सातवीं पृथ्वी है। इसमें नारकों की जघन्य स्थिति बाईस सागरोपम कही गई है। कितने ही असुरकुमार देव बाईस पल्योपम स्थिति के कहे गए हैं। सौधर्म-ईशान कल्पों में भी कितने ही देवों की स्थिति बाईस पल्योपम बतायी गई है।

In the hell of Ratanprabha the hellish beings have been narrated of life span of twenty two Palyopama duration. The sixth hell (prithvi) is Tamhprabha in which the hellish being shave been said of the life duration maximum of twenty two Sagropama. Below it there is situated the seventh Prithvi (hell)named Tamhstambha in which the life span of the hellish beings has been described minimum of twenty two Sagropama duration Sodharma-Ishan kalps's celestial being shave been said having the life span of twenty two Palyopama duration.

१५४–अच्चुते कप्पे देवाणं [उक्कोसेणं] वावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। हेट्ठिम-हेट्ठिम-गेवेज्जगाणं देवाणं जहण्णेणं वावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। जे देवा महियं विसूहियं विमलं पभासं वणमालं अच्चुतवडिंसगं विमाणं देवत्ताए अववण्णा, तेसिं णं देवाणं उक्कोसेणं वावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। ते णं देवा [वावीसं अद्धमासाणं आणमंति वा पाणमंति वा, उस्ससंति वा नीससंति वा।] तेसिं णं देवाणं वावीसवाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

संतेगइया भवसिद्धिआ जीवा जे वावीसं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

अच्युतकल्प में देव बाईस सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति के कहे गए हैं। अधस्तन-अधस्तन ग्रैवेयक देव बाईस सागरोपम जघन्य स्थिति के हैं। वहाँ देव विशिष्ट विमानों में देव रूप से उत्पन्न होते हैं। उन विमानों की संख्या छह कही गई है। यथा — १. महित विमान, २. विसूहित (विश्रुत) विमान, ३. विमल विमान, ४. प्रभास विमान, ५. वनमाल विमान, ६. अच्युतावतंसक विमान। वे देव बाईस सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति के कहे गए हैं। वे देव बाईस अर्धमासों (ग्यारह मासों) के उपरान्त उच्छ्वास-निःश्वास या आन-प्राण की क्रिया करते हैं। वे देव बाईस हजार वर्षों के पश्चात् आहार की इच्छा करते हैं।

वहाँ कितने ही भव्यसिद्धिक जीव बाईस भव (जन्म) ग्रहण करेंगे। इसके उपरान्त वे सिद्ध-बुद्ध होंगे। तदनन्तर वे भव्यसिद्धिक जीव कर्मों से विमुक्त होकर परमनिर्वाण को प्राप्त होंगे। वे जीव अन्ततोगत्वा सर्व दुःखों का शमन (अन्त) करेंगे।

The life duration of the celestial beings into the Achyutkalpa has been expounded maximum of twenty two Sagropama. The life span of the celestial beings of the lowest graivayak celestial vehicle has been said minimum of twenty two Sagropama duration. There the gods who take birth into the specific celestial vehicles as celestial beings. The number of those celestial beings are six, described as follows :- 1. MohitViman, 2. Visuhit (Vishrut) Viman, 3. Vimal Viman, 4. Prabhas Viman, 5. Vanmal Viman, 6. Achyutvatansak Viman. These godshave been said maximum of twenty two Sagropama duration. They inhale and exhale or do the activity of respiration after the completion of twenty two fortnight means after eleven months. They desire for food once after the interval of twenty two thousand years.

There the beings capable of salvation (Bhavyasidhik jeevas) will take twenty two births in future. Then they will be enlightened. Accordingly destroying their all the accumulated karmas they would attain supreme nirvan. Ultimately they would annihilate all the miseries and sufferings in the end.

।। बाईसवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Twenty Second Samvaya)

तेईसवां समवाय

The Twenty Third Samvaya

१५५–तेवीसं सूयगडज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–समए १, वेतालिए २, उवसग्गपरिण्णा ३, थीपरिण्णा ४, नरयविभत्ती ५, महावीरथुई ६, कुसीलपरिभासिए ७, विरिए ८, धम्मे ९, समाही १०, मग्गे ११, समोसरणे १२, आहत्तहिए १३, गंथे १४, जमईए १५, गाथा १६, पुण्डरीए १७, किरियाठाण १८, आहारपरिण्णा १९, अपच्चक्खाणकिरिआ २०, अणगारसुयं २१, अद्दइज्जं २२, णालंदइज्जं २३।

सूत्रकृतांग में तेईस अध्ययन निरूपित हैं। यथा — १. समय अध्ययन, २. वैतालिक अध्ययन, ३. उपसर्ग परिज्ञा अध्ययन, ४. स्त्री परिज्ञा अध्ययन, ५. नरक विभक्ति अध्ययन, ६. महावीर स्तुति अध्ययन, ७. कुशील परिभाषित अध्ययन, ८. वीर्य अध्ययन, ९. धर्म अध्ययन, १०. समाधि अध्ययन, ११. मार्ग अध्ययन, १२. समवसरण अध्ययन, १३. याथातथ्य (आख्यातहित) अध्ययन, १४. ग्रन्थ अध्ययन, १५. यमक अध्ययन, १६. गाथा अध्ययन, १७. पुण्डरीक अध्ययन, १८. क्रियास्थान अध्ययन, १९. आहार परिज्ञा अध्ययन, २०. अप्रत्याख्यान क्रिया अध्ययन, २१. अनगारश्रुत अध्ययन, २२. आर्द्रीय अध्ययन, २३. नालन्दीय अध्ययन।

In the holy scripture named 'Sutrakritang' twenty three chapters have been expounded as :– 1. Samaya Adhyana(chapter of time [instant]), 2. Vaitalika Chapter, 3. Upsarg (Calamity) Pragya Chapter (knowledge regarding afflictions), 4. Istripragya Chapter (knowledge regarding females), 5. NarakVibhakti Chapter (chapter regarding division of hells), 6.Mahavir Stuti Chapter (chapter regarding Lord Mahavira's Eulogy), 7. Kusheel Paribhashit Adhyana (chapter related to perverted manifestations), 8. Veerya Adhyana (chapter of potency/energy), 9. Dharama Adhyana (chapter of religions), 10. Samadhi Adhyana (chapter of absolute meditation), 11. Marg Adhyana (chapter regarding religious), 12. Samvasaran Adhyana (path of salvation assembly), 13. Yathatathya (Akhyaathit) Adhyana (chapter of retrospective facts), 14.Granth Adhyana (chapter on scriptures), 15. Yamak Adhyana, 16. Gatha Adhyana (chapter regarding aphorism), 17. Pundrik Adhyana (chapter of lotus), 18. Kriyasthan Adhyana (chapter regarding monks activities), 19. Aharprigya Adhyana (chapter concerning seeking of alms), 20. Apratyakhyan Kriya Adhyana (chapter regarding unvowed activities), 21. Anagar Shrut Adhyana (chapter regarding house hold scriptures, 22. Aaradriya Adhyana, 23. Nalandiya Adhyana.

१५६–जम्बुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीणे णं ओसप्पिणीए तेवीसाए जिणाणं सूरुग्गमणमुहुत्तंसि केवलवरनाण-दंसणे समुप्पण्णे। जंबुद्दीवे णं दीवे इमीसे णं ओसप्पिणीए तेवीसं तित्थयरा पुव्वभवे एक्कारसंगिणो होत्था। तं जहा–अजित-सम्भव-अभिणंदण-सुमई जाव पासो वद्धमाणो य। उसभे णं अरहा कोसलिए चोद्दसपुव्वी होत्था।

जम्बूद्वीप नामक इस द्वीप के अंतर्गत भारतवर्ष में इसी अवसर्पिणी काल में तेईस तीर्थंकर जिनवरों को सूर्योदय मुहूर्त्त (सूर्योदय के समय) में केवल-वर-ज्ञान और केवल-वर-दर्शन समुत्पन्न हुए। जम्बूद्वीप नामक इस द्वीप में इस अवसर्पिणी काल के आद्य तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव को छोड़कर, शेष तेईस तीर्थंकर पूर्वभव में ग्यारह अंगश्रुत के ज्ञाता थे। यथा –तीर्थंकर अजित, सम्भव, अभिनन्दन, सुमति यावत् भगवान पार्श्वनाथ तथा तीर्थंकर भगवान महावीर। तीर्थंकर ऋषभदेव यानि कौशलिक ऋषभ अर्हत् चतुर्दश पूर्वी थे अर्थात् चौदह पूर्वों के ज्ञाता थे।

In continent Jambu the region of Bharat is situated. In the decreasing cycle of time 'Avsarpini kaal' twenty three ford makers (Tirthankaras) of this Jambu continent attained omniscience and omni perception (kewal gyan and kewal darshan) at the time of sunrise. Barring the 1st ford maker (Tirthankara) ShriRishabh Dev ji Maharaj of this Jambu continent all of the remaining ford makers (Tirthankara) had the knowledge of eleven canons (11 Agmas) in their previous (reincarnation) lives. There are : Omniscient Ajit, Sambhav,

Abhinandan, Sumti so on upto Lord Parshvanath and Lord Mahavira. Tirthankara Rishabh Dev means was of Kaushal clan be omniscient Rishabh had the knowledge of fourteen poorvas.

१५७–जम्बुद्दीवे णं दीवे इमीसे ओसप्पिणीए तेवीसं तित्थयरा पुव्वभवे मंडलियरायाणो होत्था। तं जहा–अजित-सम्भव-अभिणंदण जाव पासो वद्धमाणे य। उसभे णं अरहा कोसलिए पुव्वभवे चक्कवट्टी होत्था।

जम्बूद्वीप में इस अवसर्पिणी काल के आद्य तीर्थंकर ऋषभदेव को छोड़कर शेष तेईस तीर्थंकर पूर्वभव में मांडलिक राजा थे। यथा —अजित, संभव, अभिनंदन यावत् भगवान पार्श्वनाथ तथा वर्धमान। किन्तु इस काल के कौशलिक ऋषभ अर्हत् यानि प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव पूर्वभव में चक्रवर्ती राजा थे।

Barring the 1st ford maker the Adi Tirthankara Bhagwan Rishabh Dev in this decreasing time cycle i.e. Avasarpini kaal of Jambu continent the remaining twenty three ford makers (Tirthankara) were Mandalik kings in their previous births. They are: Tirthankara Ajit, Sambhav, Abhinandan so on upto Lord Parshvanath and Lord Mahavira. The first Tirthankara (ford maker) Lord Rishabh Dev was a supreme lord (Chakravarti) in his previous birth.

१५८–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। अहे सत्तमाए णं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं तेवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। सोहम्मीसाणाणं देवाणं अत्थेगइयाणं तेवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

इस रत्नप्रभा पृथ्वी में तेईस पल्योपम स्थिति के अनेकों नारक कहे गए हैं। अधस्तन सातवीं पृथ्वी तमस्तमा है। इसमें कितने ही नारकियों की स्थिति तेईस सागरोपम कही गई है। कितने ही असुरकुमार देव तेईस पल्योपम स्थिति के कहे गए हैं। सौधर्म-ईशान कल्प में भी कितने ही देव तेईस पल्योपम स्थिति के कहे गए हैं।

The hellish beings of this Ratanprabh (hell) have been described of twenty three Palyopama life duration. The hell situated extremely below the seventh prithvi (hell) called Tamhstambha. The life span of the hellish beings of this land has been narrated of twenty three Sagropama duration. The Asurkumar fiendish gods have been described of twenty three Palyopama duration the celestial beings of Sodharma-Ishan kalpa have been said of twenty three Palyopama duration.

१५९– हेट्ठिममज्झिमगेविज्जाणं देवाणं जहण्णेणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। जे देवा हेट्ठिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

ते णं देवा तेवीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा। तेसि णं देवाणं तेवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जई।

संतेगइआ भवसिद्धिआ जीवा जे तेवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

अधस्तन-मध्यम ग्रैवेयक के देव तेईस सागरोपम जघन्य स्थिति के कहे गए हैं। अधस्तन ग्रैवेयक विमानों में देव देवरूप से उत्पन्न होते हैं। वे देव तेईस सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति के कहे गए हैं। वे देव तेईस अर्धमासों (साढ़े ग्यारह मासों) के उपरान्त उच्छ्‌वास-नि:श्वास या आन-प्राण की क्रिया करते हैं। वे देव तेईस हजार वर्षों के उपरान्त आहार की इच्छा करते हैं।

अनेकों भव्यसिद्धिक जीव तेईस भव (जन्म) ग्रहण करेंगे। इसके पश्चात् वे सिद्ध-बुद्ध होंगे। तदनन्तर वे भव्यसिद्धिक जीव कर्मों से मुक्ति पाकर परम निर्वाण को प्राप्त होंगे। वे जीव अन्ततोगत्वा सर्व दु:खों का शमन (अन्त) करेंगे।

The life span of the celestial beings dwelling in the lowest and middle graivayak celestial vehicles have been narrated of twenty three Sagropama life duration, the gods take births into the lowest graivayak celestial vehicles as celestial beings. They have the life span maximum of twenty three Sagropama duration. These celestial beings inhale and exhale or do the respiratory activities after the interval of twenty three fortnight i.e. after eleven and a half months. They intend for food once after twenty three thousand years. There the beings capable of salvation (Bhavyasidhik jeevas) will take only twenty three births in future. After that they will annihilate all the accumulated karmas of previous lives and would attain ultimate goal of life i.e. Param Nirvan. At the end they will destroy their all the miseries and sufferings completely.

।। तेईसवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Twenty Third Samvaya)

चौबीसवां समवाय

The Twenty Fourth Samvaya

१६०- चउव्वीसं देवाहिदेवा पण्णत्ता। तं जहा-उसभ-अजित-संभव-अभिणंदण-सुमइ-पउमप्पह-सुपास-चंदप्पह-सुविधि-सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्ज-विमल-अणंत-धम्म-संति-कुंथु-अर-मल्ली-मुणिसुव्वय-नमि-नेमी-पास-वद्धमाणा।

देवाधिदेव चौबीस तीर्थंकर निरूपित हैं। यथा — १. ऋषभ, २. अजित, ३. संभव, ४. अभिनन्दन, ५. सुमति, ६. पद्मप्रभ, ७. सुपार्श्व, ८. चन्द्रप्रभ, ९. सुविधि (पुष्पदन्त), १०. शीतल, ११. श्रेयांस, १२. वासुपूज्य, १३. विमल, १४. अनन्त, १५. धर्म, १६. शान्ति, १७. कुन्थु, १८. अर, १९. मल्ली, २०. मुनिसुव्रत, २१. नमि, २२. नेमि, २३. पार्श्वनाथ, २४. वर्धमान।

The supreme gods (Tirthankara) Ford Makers are twenty four. They are: 1. Rishabh, 2. Ajit, 3. Sambhav, 4. Abhinandan, 5. Sumati, 6. Padam Prabhu, 7. Suparshav, 8. Chanda Prabhu, 9. Suvidhi (Pushpdant), 10. Sheetal, 11. Shreyans, 12. Vasupujya, 13. Vimal, 14. Anant, 15. Dharam, 16. Shanti, 17. Kunthu, 18. Arah, 19. Malli, 20. Munisuvrat, 21. Nami, 22. Nemi, 23. Parshvanath, 24. Vardhman.

१६१–चुल्लहिमवंत सिहरीणं वासहरपव्वयाणं जीवाओ चउव्वीसं चउव्वीसं जोयणसहस्साइं णव-वत्तीसे जोयणसए एगं अट्ठत्तीसइ भागं जोयणस्स किंचि विसेसाहियाओ आयामेणं पण्णत्ता।

क्षुल्लक हिमवन्त और शिखरी वर्षधर पर्वतों की जीवाएँ उल्लिखित हैं। ये जीवाएँ चौबीस-चौबीस हजार नौ सौ बत्तीस योजन और एक योजन के अड़तीस भागों में से एक भाग से कुछ अधिक लम्बी कही गई हैं।

There is a description regarding the radius of the Kshullak (small) Himvant and Shikhari Mountains. The length of the base have been described of twenty four thousand nine hundred thirty yojanas and a little more than the one part of the forty eighth part of one yojana.

१६२–चउवीसं देवट्ठाणा सइंदया पण्णत्ता, सेसा अहमिंद अनिंदा अपुरोहिआ।

इन्द्र सहित चौबीस देव-स्थानों (दश जाति के भवनवासी देवों के दस स्थान, आठ जाति के व्यन्तर देवों के आठ स्थान, पाँच प्रकार के ज्योतिष्क देवों के पाँच स्थान तथा सौधर्मादि कल्पवासी देवों का एक स्थान) का उल्लेख किया गया है। शेष देव-स्थान इन्द्र रहित (अनिन्द्र) व पुरोहित रहित (अपुरोहित) हैं। वहाँ के देव अहमिन्द्र कहलाते हैं।

Including the Indra the staying places of the gods & celestial beings (ten types of 10 residential gods, eight residences of eight peripatetic gods, five dwelling places of five stellar gods and one residential place of celestial beings of Sodharmadi kalpavasi) have been narrated twenty totaling four in number. The remaining Devsthans are mentioned as without Indra (lord of gods) and without Purohit (custodian gods). The celestial beings therein are called Ahmindra.

१६३–उत्तरायणगते णं सूरिए चउवीसंगुलिए पोरिसिछायं णिव्वत्तइत्ता णं णिअट्टत्ति। गंगा-सिंधूओ णं महाणदीओ पवाहे सातिरेगेणं चउवीसं कोसे वित्थारेणं पण्णत्ते। रत्त-रत्तवतीओ णं महाणदीओ पवाहे सातिरेगेणं चउवीसं कोसे वित्थारेणं पण्णत्ते।

चौबीस अंगुल वाली उत्तरायण गत सूर्य की पौरुषी छाया का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि सूर्य ऐसी स्थिति में कर्क संक्रान्ति के दिन सर्वाभ्यन्तर मंडल से निवृत्त होता है अर्थात् दूसरे मंडल पर आता है। गंगा-सिन्धु महानदियाँ प्रवाह (उद्‌गम)- स्थान पर कुछ अधिक चौबीस-चौबीस कोश विस्तार वाली कही गई हैं।

By narrating the Porushi shadow of the sun moving towards the northern side equal to twenty four finger-thickness it has been said that in this situation on the day of movement on the line of cancer the sun turns back from Sarvabhyantar Mandal (innermost block) it means the sun comes over the another block. The great rivers Ganga and Sindhu have been said of twenty four kosh expansion at their origin place.

१६४–इमीणे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं ठिई चउवीसं पलिओवमाइं पण्णत्ता। अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं चउवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। सोहम्मीसाणे णं देवाणं अत्थेगइयाणं चउवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

रत्नप्रभा पृथ्वी में चौबीस पल्योपम स्थिति के कितने ही नारक कहे गए हैं। अधस्तन सातवीं पृथ्वी में चौबीस सागरोपम स्थिति वाले कितने ही नारक कहे गए हैं। कितने ही असुरकुमार देव चौबीस पल्योपम स्थिति के कहे गए हैं। सौधर्म-ईशान कल्प में कितने ही देवों की स्थिति चौबीस पल्योपम कही गई है।

The hellish beings in the hell of Ratanprabha have been described of twenty four Palyopama life duration. There is a seventh hell Adhsathan in which the hellish beings have been said of twenty four Sagropama life duration. The fiendish gods (Asur kumar) have been described of twenty four Palyopama life duration. The life span of the celestial beings of Sodharma-Ishan kalpa has been expounded of twenty four Palyopama duration.

१६५–हेट्ठिम-उवरिमगेवेज्जाणं देवाणं जहण्णेणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। जे देवा हेट्ठिममज्झिमगेवेज्जय विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। ते णं देवा चउवीसाए अद्धमासाणं आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा णीससंति वा। तेसि णं देवाणं चउवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे चउवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

चौबीस सागरोपम जघन्य स्थिति के अधस्तन-उपरिम ग्रैवेयक देव कहे गए हैं। जो देव अधस्तन मध्यम ग्रैवेयक विमानों में देव रूप से उत्पन्न होते हैं, वे देव चौबीस सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति के कहे गए हैं। वे देव चौबीस अर्धमासों (बारह मासों) के उपरान्त उच्छ्वास-निःश्वास या आन-प्राण की क्रिया करते हैं। वे देव चौबीस हजार वर्षों के पश्चात् आहार की इच्छा करते हैं।

कितने ही भव्यसिद्धिक जीव चौबीस भव (जन्म) ग्रहण करेंगे। तदनन्तर वे सिद्ध बुद्ध होंगे। वे भव्यसिद्धिक जीव कर्मों से मुक्ति पाकर परम निर्वाण को प्राप्त होंगे। वे अन्ततोगत्वा सर्व दुःखों का शमन (अन्त) करेंगे।

At below level the celestial beings of Uprim Graivayak celestial vehicles have been narrated having minimum life duration of twenty four Sagropama. They take birth into the below level and middle graivayak celestial vehicles in the form of celestial beings. The life span of these celestial beings has been said maximum of twenty four Sagropama duration. They respirator inhale and exhale once after the expiry of twenty four fortnight i.e. after 12 months they desire for food once after the interval of twenty four thousand years. There the beings capable of salvation (Bhavyasidhik jeevas) would take twenty four births in future. After that they will attain salvation. Then Bhavyasidhik beings having liberated from their past karmas would attain supreme goal of life i.e. Param Nirvana.

Eventually these celestial beings destroy all their the miseries and sufferings.

।। चौबीसवां समवाय समास ।।

(The End of Twenty Fourth Samvaya)

पच्चीसवां समवाय

The Twenty Fifth Samvaya

१६६–पुरिम-पच्छिमगाणं तित्थयराणं पंचजामस्स पणवीसं भावणाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–ईरिआसमिई मणगुत्ती वयगुत्ती आलोयपाणभोयणं आदाण-भंड-मत्तणिक्खेवणासमिई ५, अणुवीतिभासणया कोहविवेगे लोभविवेगे भयविवेगे हासविवेगे ५, उग्गहअणुण्णवणया उग्गहसीमजाणणया सयमेव उग्गहं अणुगिण्हणया साहम्मिय उग्गहं अणुण्णविय परिभुंजणया साहारणभत्तपाणं अणुण्णविय पडिभुंजणया ५, इत्थी-पसु-पंडगसंसत्तगसयणा-

सणवज्जणया इत्थीकहविवज्जणया इत्थीणं इंदियाणमालोयणवज्जणया पुव्वरय-पुव्व-कीलिआणं अणणुसरणया पणीताहारविवज्जणया ५, सोइंदियरागोवरई चक्खिंदियरागोवरई घाणिंदियरागोवरई जिब्भिदियरागोवरई फासिंदियरागोवरई ५।

प्रथम और अन्तिम तीर्थंकरों (भगवान ऋषभ देव और भगवान महावीर) के पंच याम यानि पाँच महाव्रतों की पच्चीस भावनाएँ कही गई हैं। यथा — १. ईर्या समिति भावना (जीवों की रक्षार्थ सावधानी पूर्वक यानि देखभाल कर चलना), २. मनोगुप्ति भावना (मन की चंचलता पर नियन्त्रण रखना), ३. वचन गुप्ति भावना (वाक् नियन्त्रण रखते हुए हित, मित, प्रिय वचन बोलना),. ४. आलोकित पान-भोजन भावना (सूर्य के प्रकाश में यथोचित स्थान पर देख-शोध कर खान-पान करना), ५. आदान भांड-मात्र निक्षेपणा समिति (वस्त्र-पात्र आदि को उठाते-रखते समय सावधानी रखना।) ये उपर्युक्त पांच भावनाएँ प्राणातिपात-विरमण (अहिंसा महाव्रत) की भावनाएँ हैं। मृषावाद-विरमण या सत्य महाव्रत की पाँच भावनाएँ इस प्रकार हैं, यथा — १. अनुवीचि भाषण भावना (खूब सोच-विचार कर बोलना), २. क्रोध-विवेक भावना, ३. लोभ-विवेक भावना, ४. भय-विवेक भावना, ५. हास्य-विवेक भावना। इसी प्रकार अदत्तादान-विरमण (अचौर्य महाव्रत) की पाँच भावनाएँ इस प्रकार हैं — १. अवग्रह-अनुज्ञापनता भावना (वस्तु ग्रहण करने से पूर्व उसके स्वामी से अनुज्ञा या स्वीकृति प्राप्त करना), २. अवग्रहसीम-ज्ञापनता भावना, ३. स्वयमेव अवग्रह-अनुग्रहणता भावना (स्वयं याचना करके वस्तु ग्रहण करना), ४. साधर्मिक अवग्रह-अनुज्ञापनता भावना (अपने साधर्मिकों को आहार-पानी के लिए आमन्त्रण देकर खान-पान करना), ५. साधारण भक्त पान-अनुज्ञाप्य परिभुंजनता भावना (याचना करके लाए हुए भक्त-पानादि को गुरुजनों से अनुज्ञा प्राप्त कर उपभोग करना)। मैथुन-विरमण (ब्रह्मचर्य महाव्रत) की पाँच भावनाएँ इस प्रकार हैं— १. स्त्री-पशु-नपुंसक-संसक्त शयन-आसनवर्जनता भावना, २. स्त्री कथा विवर्जनता भावना, ३. स्त्री इन्द्रिय (मनोहर-अंग) आलोकन वर्जनता भावना, ४. पूर्वरत-पूर्वक्रीडा-अननुस्मरणता भावना, ५. प्रणीत-आहार-विवर्जनता भावना। अपरिग्रह महाव्रत की पाँच भावनाएँ इस प्रकार हैं— १. श्रोत्रेन्द्रिय-रागोपरति भावना, २. चक्षुरिन्द्रिय-रागोपरति भावना, ३. घ्राणेन्द्रियरागोपरति भावना, ४. जिह्वेन्द्रिय-रागोपरति भावना, ५. स्पर्शनेन्द्रिय-रागोपरति भावना।

Twenty five observances of five great vows i.e five fold vows established by the 1st and last Ford Makers (Tirthankara) Lord Rishabh Dev and Lord Mahavira have been narrated as :- 1. Iriya Samiti Bhavna (for the protection of organism, to walk with great care), 2. Manogupti Bhavna (to have control over the flickerness of mind), 3. Vachan Gupti Bhavna (to speak sweet, lovely and beneficial words controlling the tongue), 4. Alokitpan Bhojan Bhavna (to take food after a careful inspection at a proper place under the light of sun),5. Adanbhand Patra Nikshepan Samiti (to be careful while taking or keeping the cloths, utensils, vessels etc.), These above mentioned observances come under

great vow of non-violence. The five observances of the great vow of truthfulness i.e. keep away from telling lies are mentioned as below :- 1. Anuvichi Bhashan Bhavana (to speak with great mindfulness or with great awareness), 2. Krodh Vivek Bhavana (observance of awareness about anger), 3. Lobh Vivek Bhavana (observance of carefulness of greed), 4. Bhaya Vivek Bhavana (awareness of fear reflection), 5. Hasya Vivek Bhavana (awareness of jokes reflection). As similarly the same five observances of the great vow of non-stealing i.e. to keep away from taking what is not delivered are as under:–1. Avgrah Anugyapanta Bhavana (permission of the owner of the commodity prior to taking it), 2. Avgrahsim Gyapanta Bhavana (to accept the commodity with great care according to rule and limitations), 3. Swayamev Avagrah Anugranta Bhavana (to accept the good only after seeking of alms of his own), 4. Sadharmik Avagrah-Anugyapanta Bhavana (to take meal after inviting the co-ascetics for it), 5. Sadharam Bhaktpan Anugyapantya Punbhunjanta Bhavana (to consume the food that has been brought as alms after taking the due permission of the head ascetic (guru). The five observances of the great vow of celibacy i.e.(non indulgence in copulation) are as under :- 1. Istri—Pashu-Napunsk occupied seat- Varjant Bhavna (not to occupy seats that has already been occupied by women, animals and eunuch etc.), 2. Istri Katha Viverjanta Bhavna (not to indulge in stories or conversation related to women), 3. Istri Indriya (beautiful limbs) Alokana Varjanta Bhavna (not to look at the beautiful limbs of women), 4. Poorvarat-Poorva Krida Unanusamranta Bhavna (not to recall the sexual activities performed with any one previously), 5. Sprashendriya Ragoprit Bhavna (not to touch or look at the skin and complexion of any body).

१६७–मल्लीणं अरहा पणवीसं धणुइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

सव्वे वि दीहवेयड्ढपव्वया पणवीसं जोयणाणि उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता। पणवीसं पणवीसं गाउआणि उव्विद्धेणं पण्णत्ता।

दोच्चाए णं पुढवीए पणवीसं णिरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

वर्तमान काल के उन्नीसवें तीर्थंकर मल्ली अर्हन् की ऊँचाई पच्चीस धनुष कही गई है। समस्त दीर्घ वैताढ्य पर्वत पच्चीस योजन ऊँचे हैं। वे पर्वत पच्चीस कोश भूमि में गहरे कहे गए हैं। दूसरी पृथ्वी में यानि दूसरे नरक के पच्चीस लाख नारकावास हैं।

The height of Lord Mallinath, the nineteenth Ford maker (Tirthankara) of this decreasing time cycle i.e. Avsarpini Kaal has been said as equal to twenty five bows. All the large mountain Vaitadhya are twenty five yojanas high. They are stated to be twenty five kos deep down under the surface of the land. In the second hell named Shakarprabh. There are twenty five lacs infernal residences,

१६८–आयारस्स णं भगवओ सचूलियाग पणवीसं अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–

सत्थपरिण्णा[1] लोगविजओ[2] सीओसणीअ[3] सम्मत्तं[4]।
आवंति[5] धुय[6] विमोह[7] उवहाण[8] सुयं महपरिण्णा[9]॥१॥
पिंडेसण[10] सिज्जिरि[11] आ[12] भासज्झयणा[13] य वत्थ[14] पाएसा[15]।
उग्गहपडिमा[16] सत्तिक्कसत्तया[17-23] भावण[24] विमुत्ती[25]॥२॥

णिसीहज्झयणं पणुवीसइमं।

भगवद् आचारांग सूत्र के पच्चीस अध्ययन चूलिका सहित कहे गए हैं। यथा —१. शस्त्र परिज्ञा अध्ययन, २. लोकविजय अध्ययन, ३. शीतोष्णीय अध्ययन, ४. सम्यक्त्व अध्ययन, ५. आवन्ती अध्ययन, ६. धूत अध्ययन, ७. विमोह अध्ययन, ८. उपधानश्रुत अध्ययन, ९. महापरिज्ञा अध्ययन, १०. पिण्डैषणा अध्ययन, ११. शय्या अध्ययन, १२. ईर्या अध्ययन, १३. भाषाध्ययन, १४. वस्त्रैषणा अध्ययन, १५. पात्रैषणा अध्ययन, १६. अवग्रह प्रतिमा अध्ययन, १७.-२३. सप्तैकक अध्ययन (१७. स्थान, १८. निषीधिका, १९. उच्चार प्रस्रवण, २०. शब्द, २१. रूप, २२. परक्रिया, २३. अन्योन्य क्रिया), २४. भावना अध्ययन, २५. विमुक्ति अध्ययन।

अन्तिम विमुक्ति अध्ययन निशीथ अध्ययन सहित पच्चीसवाँ है।

Twenty five chapters (Adhyana) including the (chulika) annexure are of the great scripture Acharang sutra. They have been described as :—1. Shastra Prigya Adhyana (chapter of regarding knowledge weapons of violence to other beings), 2. Lok Vijay Adhyana (chapter of cosmos knowledge), 3. Shitoshaniya Adhyana (chapter of feeling cold & hot), 4. Samyakt Adhyana (chapter of right perception), 5. Avanti Adhyana, 6. Dhoot Adhyana (chapter related to gambling), 7. Vimoh Adhyana (chapter of infatuation), 8. Updhyan Srut Adhyana, 9. Mahaprigya Adhyana (chapter of great understanding), 10. Pindeshana Adhyana (chapter regarding seeking alms), 11. Shayya Adhyana (chapter regarding bedding), 12. Irya Adhyan (chapter of discrimination in walking), 13. Bhasha Adhyana (speech chapter), 14. Vastra Aishna Adhyana (chapter of seeking cloths), 15. Patra Aishna Adhyana (chapter of seeking utensils and vessels), 16. Avagrah Pratima Adhyana, 17. Seven type Adhyana at serial number from 17 to 23 i.e. 7 place, 18. Nishdhika (discomfortable of posture), 19. Uchchar pravarsvan (urination and excretation), 20. Shabd (sound), 21. Roop(mode), 22. Prakriya (process), 23. Anyonya Kriya (others activities), 24. Bhavana Adhyana (chapter of observances),25. Vimukti Adhyana (chapter of getting riden off) the lastvimukti Adhyana including the Nishith Adhyana is twenty fifth one.

१६९–मिच्छादिट्ठिविगलिंदिए णं अपज्जत्तए णं संकिलिट्ठपरिणामे णामस्स कम्मस्स पणवीसं उत्तरपयडीओ णिबंधति–तिरियगतिनामं १, विगलिंदियजातिनामं २, ओरालियसरीरणामं ३, तेअगसरीरनामं ४, कम्मणसरीरनामं ५, हुंडगसंठाणनामं ६, ओरालिअसरीरंगोवंगनामं ७, छेवट्ठसंघयणनामं ८, वण्णनामं ९, गंधनामं १०, रसनामं ११, फासनामं १२, तिरिआणु– पुव्विनामं १३, अगुरुलहुनामं १४, उवघायनामं १५, तसनामं १६, बादरनामं १७, अपज्जत्तयनामं १८, पत्तेयसरीरनामं १९, अथिरनामं २०, असुभनामं २१, दुभगनामं २२, अणादेज्जनामं २३, अजसोकित्तिनामं २४, निम्माणनामं २५।

अपर्याप्तक मिथ्यादृष्टि विकलेन्द्रिय यानि द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जीव अत्यन्त संक्लेष परिणाम वाले कहे गए हैं। वे जीव नामकर्म की पच्चीस उत्तर प्रकृतियों को बाँधते हैं। यथा —१. तिर्यग्गति नाम उत्तर प्रकृति, २. विकलेन्द्रिय जाति नाम उत्तर प्रकृति, ३. औदारिक शरीर नाम उत्तर प्रकृति, ४. तैजसशरीर नाम उत्तर प्रकृति, ५. कार्मणशरीर नाम उत्तर प्रकृति, ६. हुंडकसंस्थान नाम उत्तर प्रकृति, ७. औदारिक शरीराङ्गोपाङ्गनाम उत्तर प्रकृति, ८. सेवार्त्त संहनननाम उत्तर प्रकृति, ९. वर्णनाम उत्तर प्रकृति, १०. गन्धनाम उत्तर प्रकृति, ११. रसनाम उत्तर प्रकृति, १२. स्पर्शनाम उत्तर प्रकृति, १३. तिर्यंचानुपूर्वी नाम उत्तर प्रकृति, १४. अगुरुलघुनाम उत्तर प्रकृति, १५. उपघात नाम उत्तर प्रकृति, १६. त्रसनाम उत्तर प्रकृति, १७. बादरनाम उत्तर प्रकृति, १८. अपर्याप्तक नाम उत्तर प्रकृति, १९. प्रत्येक शरीर नाम उत्तर प्रकृति, २०. अस्थिर नाम उत्तर प्रकृति, २१. अशुभनाम उत्तर प्रकृति, २२. दुर्भगनाम उत्तर प्रकृति, २३. अनादेय नाम उत्तर प्रकृति, २४. अयशस्कीर्ति नाम उत्तर प्रकृति, २५. निर्माण नाम उत्तर प्रकृति।

Immature false vision bisensual beings of having two senses, three senses and four senses have been said of too much chaotic modification. These living beings bind twenty five post tendencies of physical body as :- 1. Triyang gatiman uttar prakriti (post tendency of physical body of plant and animals realm), 2. Tendency of two senses physical body class. 3. Gross physical body named post tendency, 4. Post tendency of fire bodied beings physical body, 5. Post tendency of Karman body, 6. Hundak sansthan name uttar prakriti (dwarf posture physical body post tendency), 7. Gross bodied limbs and organs shape post tendency, 8. Sevart Samhanan name uttar prakriti, 9. Varnname post tendency, 10. 'Gandh name post tendency, 11.Rasnam uttar prakriti, 12. Sparshnam Uttar prakriti, 13. Triyanchan poorvinam uttar prakriti, 14. Agurulabhnam uttar prakriti (neither light nor heavy), 15. Upghatnam uttar prakriti, 16. Trasnam Uttar Prakriti (mobile nature), 17. Badarnam uttar prakriti (grow being), 18. Immature physical body post tendency, 19. Pratyek shareer name uttar prakriti (individual physical body post tendency, 20. Asthirnam uttarprakriti (not stable name post tendency), 21. Ashubh namuttar prakriti (unauspicious name post tendency), 22. Durbhag (disrespects) nam uttar prakriti,

23. Anuday nam uttar prakriti, 24. Apyashstithier nam uttar prakriti, 25. Nirman nam uttar prakriti (proper structure of body).

१७०–गंगा-सिंधूओ णं महानदीओ पणवीसं गाउयाणिं पुहुत्तेणं दुहओ घडमुहपवित्तिएणं मुत्तावलिहारसंठिएणं पवातेण पडंति। रत्ता-रत्तावईओ णं महाणदीओ पणवीसं गाउयाणि पुहुत्तेणं मकरमुहपवित्तिएणं मुत्तावलिहारसंठिएणं पवातेण पडंति।

गंगा-सिन्धु महानदियाँ पच्चीस कोश पृथुल (मोटी) घड़े के मुख-समान मुख में प्रवेश करती हैं। वे महानदियाँ मकर यानि मगर के मुख की जिह्वा के समान पनाले से निकलती हैं और मुक्तावली हार के आकार से प्रपातद्रह में गिरती हैं। इसी प्रकार रक्त-रक्तवती महानदियाँ भी पच्चीस पृथुल घड़े के मुख समान मुख में प्रवेश करती हैं। वे महानदियाँ मकर के मुख की जिह्वा के समान पनाले से निकलती हैं और मुक्तावली हार के आकार से प्रपात द्रह में गिरती हैं।

The great rivers Ganga and Sindhu enter into the mouth that is compared to a pitcher whose mouth is twenty five kos thick. These two rivers emerge from a water channel that has a shape like the tongue of a crocodile and then fall into Prapatdrah (water fall lake) taking the shape of Muktawati rosary. The greatrivers named Rakt and Raktavati enter and fall in the sameway, too.

१७१–लोगबिंदुसारस्स णं पुव्वस्स पणवीसं वत्थू पण्णत्ता।

चौदहवाँ पूर्व लोक बिन्दुसार है। इसके वस्तु नामक पच्चीस अर्थाधिकार कहे गए हैं।

The fourteen poorva has been mentioned as Bindusar. Its chapter Vastu has been said of twenty five Arthadhikar [clauses].

१७२–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पणवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं पणवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेणं देवाणं अत्थेगइयाणं पणवीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

इस रत्नप्रभा पृथ्वी में पच्चीस पल्योपम स्थिति के अनेकों नारक कहे गए हैं। अधस्तन सातवीं महातमः पृथ्वी है। इसमें कितने ही नारकों की स्थिति पच्चीस सागरोपम उल्लिखित है। कितने ही असुरकुमार देव पच्चीस पल्योपम स्थिति के कहे गए हैं। सौधर्म-ईशान कल्प में भी कितने ही देवों की स्थिति पच्चीस पल्योपम निरूपित है।

The hellish beings of this Ratanprabha hell have been described of twenty five Palyopama duration. Below there is the seventh hell named Mahatamh Prithvi, the life span of hellish beings of this hell has been said of twenty five

Sagropama duration. The life duration of the celestial beings of Sodharma-Ishan kalpa too, has been said of twenty five Palyopama.

१७३–मज्झिमहेट्ठिमगेवेज्जाणं देवाणं जहण्णेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। जे देवा हेट्ठिमउवरिमगेवेज्जगविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। ते णं देवा पणवीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा, पाणमंति वा, उस्ससंति वा, नीससंति वा। तेसि णं देवाणं पणवीसं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे पणवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

मध्यम-अधस्तन ग्रैवेयक देव कहे गए हैं। उन देवों की जघन्य स्थिति पच्चीस सागरोपम कही गई है। वे देव अधस्तन उपरिम ग्रैवेयक विमानों में देवरूप से उत्पन्न होते हैं। वे देव पच्चीस सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति के कहे गए हैं। वे देव पच्चीस अर्धमासों (साढ़े बारह मासों) के उपरान्त श्वासोच्छ्वास या आन-प्राण की क्रिया करते हैं। वे देव पच्चीस हजार वर्षों के पश्चात् आहार की इच्छा करते हैं।

कितने ही भव्यसिद्धिक जीव पच्चीस भव (जन्म) ग्रहण करेंगे। तदनन्तर वे जीव सिद्ध-बुद्ध होंगे। वे भव्य सिद्धिक जीव कर्मों से मुक्ति पाकर परम निर्वाण को प्राप्त होंगे। वे जीव अन्ततोगत्वा सर्व दुःखों का शमन (अन्त) करेंगे।

It has been said about the Madhyam Adhsthan graivayak in which the life span of the celestial beings has been said of minimum twenty five Sagropama duration. These gods take births into the Adhsthan Uprim graivayak celestial vehicles in the form of celestial beings. They have been said of maximum twenty five Sagropama duration. They respirate or inhale and exhale once after the interval of twenty five half months i.e. after twelve and a half months. They desire for food once after the expiry of twenty five thousand years.

There some of the Bhavyasidhik jeevas (the beings capable of salvation) will take twenty five births in future. After that they would get liberation destroying all their accumulated karmas of previous lives and attain the ultimate goal of life i.e. "Param Nirvan". They will annihilate all their miseries and sufferings in the end.

।। पच्चीसवां समवाय समाप्त ।। (The End of Twenty Fifth Samvaya)

छब्बीसवां समवाय

The Twenty Sixth Samvaya

१७४–छव्वीसं दसकप्पववहाराणं उद्देसणकाला पण्णत्ता, तं जहा–दस दसाणं, छ कप्पस्स, दस ववहारस्स।

दशाश्रुतस्कन्ध, कल्प सूत्र और व्यवहार सूत्र के छब्बीस उद्देशनकाल (आगम या शास्त्र की वाचना देने का काल) कहे गए हैं। यथा — दशासूत्र यानि दशाश्रुतस्कन्ध के दश, कल्प सूत्र के छह और व्यवहार सूत्र के दश उद्देशन काल (१०+६+१०=२६)।

The preaching time of limbs—Dashaskand Kalp Sutra and Vyavhar Sutra (the time in relation to vachana of the Agama and scriptures) has been mentioned twenty six as:- Ten of Dashasutra i.e. Dashashrut Skand, six of Kalpa sutra and ten of Vyavhar sutra 10+6+10=26.

१७५–अभवसिद्धियाणं जीवाणं मोहणिज्जस्स कम्मस्स छव्वीसं कम्मंसा संतकम्मा पण्णत्ता, तं जहा–मिच्छत्तमोहणिज्जं, सोलस कसाया, इत्थीवेदे पुरिसवेदे नपुंसकवेदे हासं अरति रति भयं सोगं दुगुंछा।

अभव्य सिद्धिक जीव निरूपति हैं। उन जीवों के मोहनीय के छब्बीस कर्मांश यानि प्रकृतियाँ सत्ता में उल्लिखित हैं, यथा — १. मिथ्यात्व मोहनीय, २-१७. सोलह कषाय, १८. स्त्री वेद, १९. पुरुष वेद, २०. नपुंसक वेद, २१. हास्य, २२. अरति, २३. रति, २४. भय, २५. शोक, २६. जुगुप्सा (१+१६+१+१+१+१+१+१+१+१+१=२६)।

The description regarding the beings not capable of salvation (Abhavya-sidhik jeevas) has been made and the twenty six tendencies of delusion karmas are in existence of the beings. In the scriptures they have been mentioned as :- 1. Wrong belief delusion, 2. Sixteen passions, 3. Female-gender feelings, 4.Male gender feelings, 5. Neuter gender feelings, 6. Jokes, 7. Non-indulgence in restraint, 8. Indulgence in mundane pleasures Rati, 9. Fear, 10. Worry, 11. Disgust (1+16+1+ 1+1+ 1+ 1+1+1+ 1+1=26)

१७६–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छव्वीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छव्वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं छव्वीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। सोहम्मीसाणे णं देवाणं अत्थेगइयाणं छव्वीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

इस रत्नप्रभा पृथ्वी में छब्बीस पल्योपम स्थिति के अनेकों नारक कहे गए हैं। अधस्तन सातवीं महातम: प्रभा पृथ्वी में कितने ही नारकों की स्थिति छब्बीस सागरोपम है। कितने ही असुरकुमार देव भी छब्बीस पल्योपम स्थिति के कहे गए हैं। इसी प्रकार सौधर्म-ईशान कल्प में निवास करने वाले कितने ही देव छब्बीस पल्योपम स्थिति के कहे गए हैं।

In this Ratanprabha (prithvi) hell the life span of some hellish beings has been narrated of twenty six Palyopama duration. Below the seventh (prithvi) hell has been said in the name of Mahatamh prabh hell in which the life span of the hellish beings has been mentioned of twenty six Sagropama duration. Some Asur kumar (the fiendish god) also have the life span of twenty six Palyopama duration likewise the life span of the celestial beings of Sodharma-Ishan kalpas has been mentioned of twenty six Palyopama duration each.

१७७–मज्झिममज्झिमगेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं छव्वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। जे देवा मज्झिमहेट्ठिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं छव्वीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। ते णं देवा छव्वीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा। तेसि णं देवाणं छव्वीसं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे छव्वीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

मध्यम-मध्यम ग्रैवेयक देव निरूपित हैं। उनकी जघन्य स्थिति छब्बीस सागरोपम कही गई है। वे देव मध्यम अधस्तन ग्रैवेयक विमानों में देवरूप से उत्पन्न होते हैं। वे देव छब्बीस सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति वाले कहे गए हैं। वे देव छब्बीस अर्धमासों (तेरह मासों) के उपरान्त उच्छ्वास-नि:श्वास या आन-प्राण की क्रिया करते हैं। वे देव छब्बीस हजार वर्षों के पश्चात् आहार की इच्छा करते हैं।

कितने ही भव्यसिद्धिक जीव छब्बीस भव (जन्म) ग्रहण करेंगे। तदुपरान्त वे जीव सिद्ध-बुद्ध होंगे। वे भव्य सिद्धिक जीव कर्मों से मुक्ति पाकर परिनिर्वाण को प्राप्त होंगे। वे जीव अन्ततोगत्वा सर्व दु:खों का शमन (अन्त) करेंगे।

Madhyam-Madhyam Graivayak celestial beings have been mentioned in which the life span of these celestial beings has been mentioned minimum of twenty six Sagropama duration. They take birth into the Madhyam Adhstan graivayak celestial vehicles in the form of celestial beings, they have been said maximum of twenty six life duration. They respirate or inhale and exhale once after a period of twenty six half months i.e. after thirteen months. They desire for food once after the interval of twenty six thousand years.

॥ छब्बीसवां समवाय समाप्त ॥

(The End of Twenty Six Samvaya)

सत्ताईसवां समवाय

The Twenty Seventh Samvaya

१७८—सत्तावीसं अणगारगुणा पण्णत्ता, तं जहा—पाणाइवायाओ वेरमणं १, मुसावायाओ वेरमणं २, अदिन्नादाणाओ वेरमणं ३, मेहुणाओ वेरमणं ४, परिग्गहाओ वेरमणं ५, सोइंदियणिग्गहे ६, चक्खिंदियणिग्गहे ७, घाणिंदियणिग्गहे ८, जिब्भिंदियणिग्गहे ९, फासिंदियणिग्गहे १०, कोहविवेगे ११, माणविवेगे १२, मायाविवेगे १३, लोभविवेगे १४, भावसच्चे १५, करणसच्चे १६, जोगसच्चे १७, खमा १८, विरागया १९, मणसमाहरणया २०, वयसमाहरणया २१, कायसमाहरणया २२, णाणसंपण्णया २३, दंसणसंपण्णया २४, चरित्तसंपण्णया २५, वेयण अहियासणया २६, मारणंतिय अहियासणया २७।

अनगार-निर्ग्रन्थ साधुओं (अनगार श्रमण) के सत्ताईस गुण (पाँच मूल गुण और शेष बाईस उत्तर गुण) निरूपित हैं। यथा —१. प्राणातिपात-विरमण मूल गुण, २. मृषावाद-विरमण मूल गुण, ३. अदत्तादान-विरमण मूल गुण, ४. मैथुन-विरमण मूल गुण, ५. परिग्रह-विरमण मूल गुण, ६. श्रोत्रेन्द्रियनिग्रह उत्तर गुण, ७. चक्षुरिन्द्रिय निग्रह उत्तर गुण, ८. घ्राणेन्द्रिय-निग्रह उत्तर गुण, ९. जिह्वेन्द्रिय-निग्रह उत्तर गुण, १०. स्पर्शनेन्द्रिय-निग्रह उत्तर गुण, ११. क्रोधविवेक उत्तर गुण, १२. मान विवेक उत्तर गुण, १३. माया विवेक उत्तर गुण, १४. लोभ विवेक उत्तर गुण, १५. भावसत्य उत्तर गुण, १६. करण सत्य उत्तर गुण, १७. योग सत्य उत्तर गुण, १८. क्षमा उत्तर गुण, १९. विरागता उत्तर गुण, २०. मनः समाहरणता उत्तर गुण, २१. वचन समाहरणता उत्तर गुण, २२. काय समाहरणता उत्तर गुण, २३. ज्ञान सम्पन्नता उत्तर गुण, २४. दर्शन सम्पन्नता उत्तर गुण, २५. चारित्र सम्पन्नता उत्तर गुण, २६. वेदनाति सहनता उत्तर गुण, २७. मारणान्तिकाति सहनता उत्तर गुण (मरण के समय परीषहों-उपसर्गों को सहना तथा किसी व्यक्ति के द्वारा होने वाले मारणान्तिक कष्ट को सहते हुए भी उस पर कल्याणकारी मित्र की बुद्धि रखना)।

It has been narrated that there are twenty seven attributes (five main (radical) virtues and twenty two subsequent virtues) as :– 1. Main virtue of killing, 2. Main virtue of renouncing of telling lies, 3. Main (radical) attribution of taking the things which have not been given, 4. Main virtue of renouncing of copulation, 5. Main virtue of renouncing the possessiveness, 6. Subsequent attribute of controlling the sense of hearing, 7. Subsequent virtue of checking the sense of seeing, 8. Virtue of controlling the smelling sense of smell, 9. Subsequent attribute of restraining the senses of taste, 10. Subsequent virtue of restraining the sense of touch, 11. Subsequent attribute of anger discernment, 12. Subsequent virtue of conceit discernment, 13. Subsequent virtue of deceit

साधु के सत्ताईस गुण

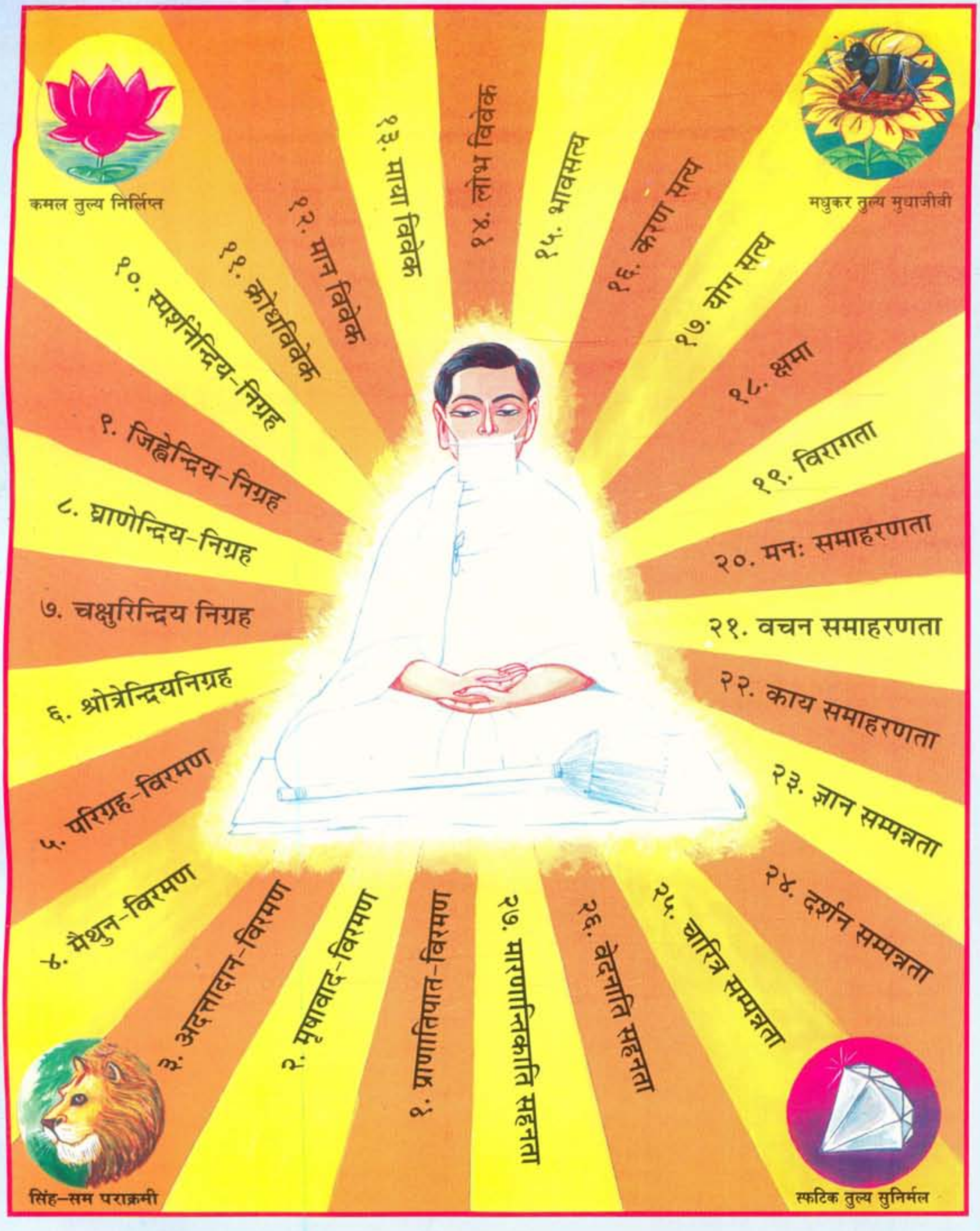
कमल तुल्य निर्लिप्त
मधुकर तुल्य मुधाजीवी
सिंह–सम पराक्रमी
स्फटिक तुल्य सुनिर्मल
१. प्राणातिपात-विरमण
२. मृषावाद-विरमण
३. अदत्तादान-विरमण
४. मैथुन-विरमण
५. परिग्रह-विरमण
६. श्रोत्रेन्द्रियनिग्रह
७. चक्षुरिन्द्रिय निग्रह
८. घ्राणेन्द्रिय-निग्रह
९. जिह्वेन्द्रिय-निग्रह
१०. स्पर्शनेन्द्रिय-निग्रह
११. क्रोधविवेक
१२. मान विवेक
१३. माया विवेक
१४. लोभ विवेक
१५. भावसत्य
१६. करण सत्य
१७. योग सत्य
१८. क्षमा
१९. विरागता
२०. मनः समाहरणता
२१. वचन समाहरणता
२२. काय समाहरणता
२३. ज्ञान सम्पन्नता
२४. दर्शन सम्पन्नता
२५. चारित्र सम्पन्नता
२६. वेदनाति सहनता
२७. मारणान्तिकाति सहनता

साधु के सत्ताईस गुण

मन, वचन, काय को पाप जनक क्रियाओं से हटाकर धर्म-क्रियाओं में संयोजित करने वाला साधु होता है। मन, वचन और कर्म-इन तीनों स्तरों पर साधु स्वयं को पूर्णतः साध लेता है। इस साधना से उसके जीवन के सभी दुर्गुण दूर हो जाते हैं। वह सद्‌गुणों का अक्षय कोष बन जाता है।

सूत्र संख्या 178 में साधु के सत्ताईस गुणों का उल्लेख हुआ है। इन सत्ताईस प्रधान गुणों में ही अन्य असंख्य गुणों का समावेश हो जाता है।

चित्र के चारों कोनों पर इन्सैट चित्रों का भावार्थ इस प्रकार है–

(1) कमल : जैसे जल में रहकर भी कमल उससे अछूता रहता है, ऐसे ही साधु संसार में रहकर भी उससे अछूता रहता है।

(2) भंवरा : जैसे भंवरा फूलों को नुकसान पहुंचाये बिना ही उनसे उदर-पोषण कर लेता है, ऐसे ही साधु गृहस्थों पर भार न बनकर थोड़ा-थोड़ा आहार प्राप्त कर उदरपोषण कर लेता है।

(3) जैसे सिंह निर्भय होकर जंगल में घूमता है, ऐसे ही साधु निर्भय-मन से साधना-मार्ग में विचरण करता है।

(4) जैसे हीरा किसी भी प्रहार को झेल लेता है ऐसे ही साधु सभी परीषहों को समभाव से झेल लेता है।

–सूत्र 178

27 Attributions of an Ascetic

An ascetic is one who is indulged in religious activities driving off sinful activities of mind, speech and body. The ascetic absolutely get accomplished himself at the level of all the three-mind, speech and body. Through this accomplishment he remains away from all the perverted activities. He becomes the indestructive treasure of pious virtues.

In aphorism no. 178 the twenty seven virtues of monk have been described. The other innumerable virtues are automatically gets included in these twenty seven main virtues.

The implied meaning of the picture in inset at all the four corner of the illustration is as under:

1. Lotus : As the lotus remains untouched by the water white staying in water such as the ascetic remains untouched white performing mundane activities.
2. Black bee : As such the black bee collects food from the flowers without hurting them so as the ascetic feeds himself by collected food in a little quarterly from so many households without disturbing any one householder.
3. Such as the lion wanders undaunted in the forest so as the ascetic moves forward on the path of spirituality having no fear in mind.
4. Such as the diamond can endure the heaviest stroke so as the ascetic faces all the afflictions with equanimity. [Sutra 178]

discernment, 14. Subsequent attribute of greed discernment, 15. Subsequent virtue of truth-disposition, 16. Subsequent attribution truth in reasons, 17. Subsequent quality of activities regarding truth, 18. Subsequent virtue of forgiveness, 19. Subsequent virtue of non-attachment, 20. Subsequent virtue of controlling the mind, 21. Subsequent virtue of controlling the speech, 22. Subsequent virtue of controlling the bodies activities, 23. Subsequent virtue of wealth of knowledge, 24. Subsequent virtue of perception accomplishment, 25. Subsequent virtue of conduct affluency, 26. Subsequent attribute of tolerance of sufferings, 27. Subsequent virtue of forbearance of death agony (to bear the afflictions at the time of death and to keep equanimity and wisdom towards a beatitutic friend and a person who has given death like pains and miseries.

१७९–जंबुद्दीवे दीवे अभिइवज्जेहिं सत्तावीसाए णक्खत्तेहिं संववहारे वट्टति। एगमेगे णं णक्खत्तमासे सत्तावीसाहिं राइंदियाहिं राइंदियग्गेणं पण्णत्ते। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणपुढवी सत्तावीसं जोयणसयाइं बाहल्लेणं पण्णत्ता।

जम्बूद्वीप नामक द्वीप निरूपित है। इस द्वीप में अभिजित् नक्षत्र को छोड़कर शेष नक्षत्रों के द्वारा मास आदि का व्यवहार-प्रवर्तता है। (अभिजित् नक्षत्र का उत्तराषाढा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में प्रवेश हो जाता है।) नक्षत्र मास के सत्ताईस दिन-रात की प्रधानता का वर्णन किया गया है। अर्थात् नक्षत्र मास में सत्ताईस दिन होते हैं। सौधर्म ईशान कल्पों में उनके विमानों की पृथ्वी सत्ताईस सौ योजन मोटी कही गई है।

There is a Jambu continent. In this continent barring the constellation Abhijit the remaining constellations have the whirling deal of months etc. Abhijit Nakshtra gets entered into the fourth part/step of the Uttrashada Nakshtra. The importance of twenty seven days and night comprising constellation month has been narrated. It means a Nakshtra month has twenty seven days. The thickness of the land (prithvi) of the celestial vehicles of Sodharma-Ishan kalpa has been said of twenty seven hundred yojanas.

१८०–वेयगसम्मत्तबंधोवरयस्स णं मोहणिज्जस्स कम्मस्स सत्तावीसं उत्तरपगडीओ संतकम्मंसा पण्णत्ता। सावणसुद्धसत्तमीसु णं सूरिए सत्तावीसंगुलियं पोरिसिच्छायं णिव्वत्तइत्ता णं दिवसखेत्तं नियट्टमाणे रयणिखेत्तं अभिणिवट्टमाणे चारं चरइ।

वेदक सम्यक्त्व के बन्ध रहित जीव के मोहनीय कर्म की सत्ताईस प्रकृतियाँ निरूपित हैं। श्रावण सुदी सप्तमी के दिन सूर्य सत्ताईस अंगुली की पौरुषी छाया करता है, तदुपरान्त दिवस क्षेत्र (सूर्य से प्रकाशित आकाश) की ओर लौटता हुआ रजनी क्षेत्र यानि प्रकाश की हानि करता और अन्धकार को बढ़ता हुआ संचार करता है।

Devoid of the bondage of Vedak righteuosness twenty seven tendencies of the delusion karma of a living being have been described. On the seventh bright day of Shravan the sun produces the Porushi shadow of twenty seven fingers. After that it travels from the day time to night i.e. returning from the sun illuminated sky towards the dark side reducing its brightness & advances towards night.

१८१–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्तावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्तावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सत्तावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

इस रत्नप्रभा पृथ्वी में सत्ताईस पल्योपम स्थिति के अनेकों नारक कहे गए हैं। अधस्तन सप्तम पृथ्वी महातमःप्रभा है जिसमें सत्ताईस सागरोपम स्थिति के नारक हैं। कितने ही असुरकुमार देव सत्ताईस पल्योपम स्थिति के कहे गए हैं। सौधर्म-ईशान कल्पों में भी कितनेक देव सत्ताईस पल्योपम स्थिति के कहे गए हैं।

In this hell of Ratanprabha the life duration of the hellish beings has been said of twenty seven Palyopama. Below is the seventh land (hell) named Mahatamh prabha in which the hellish beings have been said of twenty seven Sagropama duration. The Asur Kumar (malevolent demons) have been said of twenty seven Palyopama duration. The celestial beings of the celestial vehicle of Sodharma-Ishan kalpa have been told of twenty seven Palyopama duration.

१८२–मज्झिम-उवरिमगेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। जे देवा मज्झिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। ते णं देवा सत्तावीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा, पाणमंति वा, उस्ससंति वा, नीससंति वा। तेसि णं देवाणं सत्तावीसं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे सत्तावीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

मध्यम-उपरिम ग्रैवेयक देव सत्ताईस सागरोपम जघन्य स्थिति के कहे गए हैं। वे देव मध्यम ग्रैवेयक विमानों में देवरूप से उत्पन्न होते हैं। वे सत्ताईस सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति के देव कहे गए हैं। वे सत्ताईस अर्धमासों (साढ़े तेरह मासों) के उपरान्त उच्छ्वास-निःश्वास यानि आन-प्राण की क्रिया करते हैं। वे देव सत्ताईस हजार वर्षों के पश्चात् आहार की इच्छा करते हैं।

वहाँ अनेकों भव्य सिद्धिक जीव हैं। वे सत्ताईस भव (जन्म) ग्रहण करेंगे। वे जीव तदनन्तर सिद्ध-

बुद्ध होंगे। वे भव्यसिद्धिक जीव कर्मों से मुक्ति पाकर परिनिर्वाण को प्राप्त होंगे। वे अन्ततोगत्वा सर्व-दुःखों का शमन (अन्त) करेंगे।

Middle-upper graivayak gods have been described minimum of twenty seven Sagropama life duration. They take birth as acelestial beings into the Middle Graivayak celestial vehicles. These celestial beings have been narrated maximum of twenty seven Sagropama duration and inhale and exhale or do this activity of respiration after the lapse of a period of twenty seven fortnight i.e. after thirteen and a half months. They desire for food once after the expiry of twenty seven thousand years.

Bhavyasidhik jeevas - the beings capable of salvation are found there, they will take only twenty seven births in future and after that will been lightened. These Bhavyasidhik beings after annihilating all there past karmas would attain the ultimate truth & Param Nirvana. In the end they would destroy all their miseries and sufferings.

॥ **सत्ताईसवां समवाय समाप्त** ॥

(The End of Twenty Seventh Samvaya)

अट्ठाईसवां समवाय

The Twenty Eighth Samvaya

१८३–अट्ठावीसविहे आयारपकप्पे पण्णत्ते, तं जहा–मासिआ आरोवणा १, सपंचराई मासिआ आरोवणा २, सदसराईमासिया आरोवणा ३। [सपण्णरसराइ–मासिआ आरोवणा ४, सवीसइराईमासिआ आरोवणा ५, सपंचवीसराइ मासिआ आरोवणा ६- एवं चेव दो मासिआ आरोवणा सपंचराई दो मासिआ आरोवणा ०६। एवं तिमासिया आरोवणा ६, चउमासिया आरोवणा ६, उवघाइया आरोवणा २५, अणुवघाइया आरोवणा २६, कसिणा आरोवणा २७, अकसिणा आरोवणा २८। एतावता आयारपकप्पे एताव ताव आयरियव्वे।

अट्ठाईस प्रकार का आचार-प्रकल्प (अध्ययन विशेष) कहा गया है। यथा - १. मासिकी आरोपणा आचार प्रकल्प (अनाचार-अपराध जिसकी शुद्धि एक मास के तप से सम्भव हो, तो ऐसे दोषी-साधु को उसी पूर्व प्रदत्त प्रायश्चित्त में मास भर का प्रायश्चित्त दिया जाना), २. सपंचरात्रिमासिकी आरोपणा आचार-प्रकल्प (अनाचार-अपराध जिसकी शुद्धि पाँच दिन-रात्रि के तप के साथ एक मास के तप से हो, तो ऐसे दोषी-साधु को उसी पूर्व प्रदत्त प्रायश्चित्त में पाँच दिन-रात सहित एक मास का प्रायश्चित्त दिया जाना), ३. सदशरात्रि मासिकी आरोपणा आचार-प्रकल्प (अनाचार-अपराध जिसकी शुद्धि दश

दिन-रात्रि सहित एक मास के तप से हो तो ऐसे दोषी-साधु को उसी पूर्व प्रदत्त प्रायश्चित्त में दश दिन-रात सहित एक मास का प्रायश्चित्त दिया जाना), ४. सपंचदश रात्रि मासिकी आरोपणा आचार प्रकल्प (इसी प्रकार मास सहित पन्द्रह दिन-रात्रि के तप से होने वाली शुद्धि हेतु दोषी-साधु को उसी पूर्व प्रदत्त प्रायश्चित्त में पन्द्रह दिन-रात सहित एक मास का प्रायश्चित्त दिया जाना), ५. सविंशतिरात्रि मासिकी आरोपणा आचार प्रकल्प (बीस-दिन-रात्रि का मासिक प्रायश्चित), ६. सपंचविंशति रात्रि मासिकी आरोपणा आचार-प्रकल्प (इसी प्रकार पच्चीस दिन-रात के वहन योग्य मासिक प्रायश्चित)। इसी पकार द्विमासिकी आरोपणा आचार-प्रकल्प के छह भेद, ८. त्रिमासिकी आरोपणा आचार-प्रकल्प के छह भेद, ९. चतुर्मासिकी आरोपणा आचार-प्रकल्प के छह भेद। इस प्रकार चारों मासिकी आरोपणा आचार-प्रकल्प के चौबीस भेद निरूपित हैं। (६-४=२४), २५. उपघातिका आरोपणा आचार प्रकल्प, २६. अनुपघातिका आरोपणा आचार-प्रकल्प २७. कृत्स्ना आरोपणा आचार प्रकल्प, २८. अकृत्स्ना आरोपणा आचार-प्रकल्प। यह तब तक आचरणीय है जब तक कि आचरित दोष की शुद्धि न हो जावे।

संकेत—अपराध कितना ही बड़ा हो, पर छह मास से अधिक तप का विधान नहीं है।

The twenty eight types of conduct enterprise (special chapters) have been narrated. They are: 1. Monthly attribution to conduct enterprises (purification is possible of any improper act or crime done by an ascetic through observation of one month duration austerity (tap) then one month's long repentance should be given with the already observed expiation), 2. Five days and nights monthly attribution to conduct enterprise (purification of any improper and wrong deed within a period of five days and nights alongwith the (Tap) austerity of one month then repentance for a period of five days and night alongwith one month expiation should be given to that guilty ascetic, 3. With ten days and nights monthly attribution to conduct enterprises (purification of any improper deed and crime committed by any monk or nun through the observation often days and nights attribution alongwith the one month (Tap) austerity then the repentance for a period of ten days and nights alongwith already given one month repentance should be awarded to that guilty ascetic, 4. With fifteen days and nights monthly attribution conduct enterprise (likewise the purification through observing austerity for a period of fifteen days and nights alongwith one months expiation should be given, 5. With twenty days and nights monthly attribution to conduct enterprise (expiation for a period of twenty days and nights with expiation of one month, 6. With twenty five days and nights monthly attribution conduct enterprise (expiation worthy to be observed for a period of twenty five days and nights alongwith a month long expiation, 7. Thus two months attribution to conduct enterprise and its six types, 8. Six division of conduct enterprise for three months attribution, 9. Four months

attribution to the six division of conduct enterprise. In this way twenty four divisions of these four months attributions of conduct enterprise have been expounded (6×4 = 24), 25.Upghatika attribution, 26. Anupghatika attribution to conduct enterprise, 27. Kritsna attribution, 28. Akritsna attribution to conduct enterprise. These attributions are to be performed till then the committed fault has not been purified.

Note : How severe the crime may be but there is not any legislation/rite to observe austerity for more than six months.

१८४–भवसिद्धियाणं जीवाणं अत्थेगइयाणं मोहणिज्जस्स कम्मस्स अट्ठावीसं कम्मंसा संतकम्मा पण्णत्ता, तं जहा–सम्मत्तवेयणिज्जं मिच्छत्तवेयणिज्जं सम्मामिच्छत्तवेयणिज्जं, सोलस कसाय, णव णोकसाया।

कितने ही भव्य सिद्धिक जीवों के मोहनीय कर्म की अट्ठाईस प्रकृतियाँ कही गई हैं। यथा — १. सम्यक्त्व वेदनीय कर्म प्रकृति, २. मिथ्यात्व वेदनीय कर्म प्रकृति, ३. सम्यग्मिथ्यात्व वेदनीय कर्म प्रकृति, ४. सोलह कषाय, ५. नौ नोकषाय (१+१+१+१६+९=२८)

Twenty eight tendencies of delusion karmas of beings capable to salvation (Bhavyasidhik jeevas) have been expounded as :- 1. Righteousness feeling karmas tendency, 2. Faslehood feelings karma tendency, 3. Righteousness falsehood feeling karma tendency, 4. Sixteen passions, 5. Nine quasi passions (No-kashaya) (1+1+1+16+ 9 = 28)

१८५–आभिणिबोहियणाणे अट्ठावीसविहे पण्णत्ते तं जहा–सोइंदियअत्थावग्गहे १, चक्खिंदियअत्थावग्गहे २, घाणिंदियअत्थावग्गहे ३, जिब्भिंदियअत्थावग्गहे ४, फासिंदिय-अत्थावग्गहे ५, णोइंदियअत्थावग्गहे ६, सोइंदियवंजणोवग्गहे ७, घाणिंदियवंजणोवग्गहे ८, जिब्भिंदियवंजणोवग्गहे ९, फासिंदियवंजणोवग्गहे १०, सोतिंदियईहा ११, चक्खिंदियईहा १२, घाणिंदियईहा १३, जिब्भिंदियईहा १४, फासिंदियईहा १५, णोइंदियईहा १६, सोतिंदिया-वाए १७, चक्खिंदियावाए १८, घाणिंदियावाए, १९, जिब्भिंदियावाए २०, फासिंदियावाए २१, णोइंदियावाए २२, सोइंदियधारणा २३, चक्खिंदियधारणा २४, घाणिंदियधारणा २५, जिब्भिंदियधारणा २६, फासिंदियधारणा २७, णोइंदियधारणा २८।

आभिनिबोधिक ज्ञान के अट्ठाईस प्रकार कहे गए हैं। यथा— १. श्रोत्रेन्द्रिय-अर्थावग्रह आभिनिबोधिक ज्ञान, २. चक्षुरिन्द्रिय-अर्थावग्रह आभिनिबोधिक ज्ञान, ३. घ्राणेन्द्रिय-अर्थावग्रह आभिनिबोधिक ज्ञान, ४. जिह्वेन्द्रिय-अर्थावग्रह आभिनिबोधिक ज्ञान, ५. स्पर्शनेन्द्रिय-अर्थावग्रह आभिनिबोधिक ज्ञान, ६. नोइन्द्रिय-अर्थावग्रह आभिनिबोधिकज्ञान, ७. श्रोत्रेन्द्रिय-व्यंजनावग्रह आभिनिबोधिक ज्ञान, ८.

घ्राणेन्द्रिय-व्यंजनावग्रह आभिनिबोधिक ज्ञान, ९. जिह्वेन्द्रिय-व्यंजनावग्रह आभिनिबोधिक ज्ञान, १०. स्पर्शनेन्द्रियव्यंजनावग्रह आभिनिबोधिक ज्ञान, ११. श्रोत्रेन्द्रिय-ईहा आभिनिबोधिक ज्ञान, १२. चक्षुरिन्द्रिय-ईहा आभिनिबोधिक ज्ञान, १३. घ्राणेन्द्रिय-ईहा आभिनिबोधिक ज्ञान, १४. जिह्वेन्द्रिय ईहा आभिनिबोधिक ज्ञान, १५. स्पर्शनेन्द्रिय-ईहा आभिनिबोधिक ज्ञान, १६. नोइन्द्रिय-ईहा आभिनिबोधिक ज्ञान, १७. श्रोत्रेन्द्रिय-अवाय आभिनिबोधिक ज्ञान, १८. चक्षुरिन्द्रिय-अवाय आभिनिबोधिकज्ञान, १९. घ्राणेन्द्रिय-अवाय आभिनिबोधिक ज्ञान, २०. जिह्वेन्द्रिय-अवाय आभिनिबोधिकज्ञान, २१. स्पर्शनेन्द्रिय-अवाय आभिनिबोधिक ज्ञान, २२. नोइन्द्रिय-अवाय आभिनिबोधिकज्ञान, २३. श्रोत्रेन्द्रियधारणा आभिनिबोधिक ज्ञान, २४. चक्षुरिन्द्रिय धारणा आभिनिबोधिक ज्ञान, २५. घ्राणेन्द्रिय-धारणा आभिनिबोधिक ज्ञान, २६. जिह्वेन्द्रिय-धारणा आभिनिबोधिक ज्ञान, २७. स्पर्शनेन्द्रिय-धारणा आभिनिबोधिकज्ञान, २८. नोइन्द्रिय धारणा आभिनिबोधिक ज्ञान।

Twenty eight types of deductive cognition knowledge have been expounded as :- 1. Deductive cognition knowledge of through sense of hearing perception/ awareness, 2. Through object awareness of deductive cognition knowledge, 3. Through object perception deductive cognition knowledge, 4. Through object perception deductive cognition knowledge, 5. Touch senses object awareness deductive cognition knowledge, 6. Noendriya (mind) object awareness deductive cognition knowledge, 7. Shrotendriya contact perception deductive cognition knowledge, 8. Ghranendriya (organ of smell) contact awareness deductive cognition knowledge, 9. Jihvendriya (organ of taste) contact perception deductive cognition knowledge, 10. Sparshendriya contact awareness deductive cognition knowledge, 11. Hearing sense discriminating speculative deductive cognition knowledge, 12. Ocular senses speculative deductive cognition knowledge, 13. Smelling senses speculative deductive cognition knowledge, 14. Tongue senses discriminative deductive cognition knowledge, 15. Touch senses speculation deductive cognition knowledge, 16. Super sense (mind) speculative deductive cognition knowledge, 17. Hearing senses avaya (perceptual judgement) deductive cognition knowledge, 18. Seeing senses perceptual judgement deductive cognition knowledge, 19. Smelling senses perceptual judgement deductive cognition knowledge,20. Tongue senses perceptual judgement deductive cognition knowledge, 21. Touch senses perceptual judgement deductive cognition knowledge, 22. Super sense (mind) perceptual judgement deductive cognition knowledge, 23. Hearing senses retention (dharana) deductive cognition knowledge, 24. Ocular senses retention deductive cognition knowledge, 25. Smelling senses retention deductive cognition knowledge, 26. Tongue retention deductive cognition knowledge, 27. Touch senses retention deductive cognition knowledge, 28. Super sense (mind) retention deductive cognition knowledge.

१८६–ईसाणे णं कप्पे अट्ठावीसं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

ईशान कल्प में अट्ठाईस लाख विमानावास कहे गए हैं।

The number of celestial vehicles (viman) in Ishan kalpa has been narrated twenty eight lacs.

१८७–जीवे णं देवगइम्मि बंधमाणे नामस्स कम्मस्स अट्ठावीसं उत्तरपगडीओ बंधति, तं जहा–देवगतिनामं १, पंचिंदियजातिनामं २, वेउव्वियसरीरनामं ३, तेयगसरीरनामं ४, कम्मणसरीरनामं ५, समचउरंससंठाणनामं ६, वेउव्वियसरीरगोवंगनामं ७, वण्णनामं ८, गंधनामं ९, रसनामं १०, फासनामं ११, देवाणुपुव्विनामं १२, अगुरुलहुनामं १३, उवघायनामं १४, पराघायनामं १५, उस्सासनामं १६, पसत्थविहायोगइनामं १७, तसनामं १८, बायरनामं १९, पज्जत्तनामं २०, पत्तेयसरीरनामं २१, थिराथिराणं सुभासुभाणं आएज्जाणाएज्जाणं दोण्हं अण्णयरं एग नामं २४, निबंधइ। [सुभगनामं २५, सुस्सरनामं २६-, जसोकित्तिनामं २७, निम्माणनामं २८।

देव गति को बांधने वाला जीव नाम कर्म की अट्ठाईस उत्तर प्रकृतियों को बाँधता है। वे अट्ठाईस उत्तर प्रकृतियाँ इस प्रकार हैं– १. देवगति नाम, २. पंचेन्द्रिय जाति नाम, ३. वैक्रियशरीर नाम, ४. तैजस शरीर नाम, ५. कार्मण शरीर नाम, ६. समचतुरस्र संस्थान नाम, ७. वैक्रियशरीराङ्गोपाङ्गनाम, ८. वर्ण नाम, ९. गन्ध नाम, १०. रस नाम, ११. स्पर्श नाम, १२. देवानुपूर्वी नाम, १३. अगुरुलघु नाम, १४. उपघात नाम, १५. पराघात नाम, १६. उच्छ्वास नाम, १७. प्रशस्त विहायोगति नाम, १८. त्रस नाम, १९. बादर नाम, २०. पर्याप्त नाम, २१. प्रत्येक शरीर नाम, २२. स्थिर-अस्थिर नामों में से कोई एक नाम, २३. शुभ-अशुभ नामों में से कोई एक नाम, २४. आदेय-अनादेय नामों में से कोई एक नाम, २५. सुभग नाम, २६. सुस्वर नाम, २७. यशस्कीर्ति नाम, २८. निर्माण नाम।

The living beings who bind the karma causing birth as a celestial being the twenty eight tendencies of fluid body making karmas as follows :– 1. godly state body making, 2. five sense class making, 3. fluid body realm body making, 4. electric body making, 5. Karman body making, 6. Samchaturasna Sansthan (balanced body shape), 7. fluid body limbs and organs body making, 8. colour body making, 9. Smell body making, 10. taste body making, 11. touch body making, 12. Devanupoorvi body making, 13. neither heavy nor light body making, 14. Upghat body making, 15. Paraghat body making, 16. exhaling inhaling body making, 17. commendable movement body making, 18.Movable body making, 19. gross (Baadar) body making, 20. complete body making, 21. individual body making, 22. any one body out of stable and non-stable body making, 23. any one body among the auspicious and non-auspicious body

making, 24. Any one body among the Adeya-Anadeya (blessed or unblessed) body making, 25. Sobhagya (fortunate) body making, 26. Suswar (nice voice) body making, 27. Yash kirti (fame and glory) producing karma, 28. Nirman (proper formation of) body making.

१८८–एवं चेव नेरइया वि, णाणत्तं–अप्पसत्थविहायोगइनामं हुंडगसंठाणणामं अथिरणामं दुब्भगणामं असुभणामं दुस्सरणामं अणादिज्जणामं अजसोकित्तिणामं निम्माणणामं।

इसी प्रकार नरक गति का बंध बाँधने वाला जीव भी नाम कर्म की अट्ठाईस प्रकृतियों को बाँधता है किन्तु वह प्रशस्त प्रकृतियों के स्थान पर अप्रशस्त कर्म प्रकृतियों को बाँधता है। यथा — अप्रशस्त विहायो गति नाम, हुंडकसंस्थान नाम, अस्थिर नाम, दुर्भग नाम, अशुभ नाम, दुःस्वर नाम, अनादेयनाम, अयशस्कीर्ति नाम और निर्माण नाम। इतनी मात्र ही भिन्नता है।

Thus the being who binds the karmas of the hell realm also bunch the twenty eight tendencies of body making karmas but he binds non-auspicious tendencies of body making karmas in place of auspicious tendencies as :- 1. Non-commendable/ auspicious gait making, 2.Dwarf shape body making, 3. Unstable body making, 4. Inauspicious body making, 5. Bad voice body making, 6. Anadeya body making, 7. Inglorious body making and improper form of body making. The differences are merely to this extend.

१८९–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठावीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

इस रत्नप्रभा पृथ्वी में कितने ही नारकों की स्थिति अट्ठाईस पल्योपम है। अधस्तन सातवीं पृथ्वी महातमः प्रभा है। उसमें अट्ठाईस सागरोपम स्थिति के नारक कहे गए हैं। कितने ही असुकुमार देवों की स्थिति अट्ठाईस पल्योपम निरूपित है। सौधर्म-ईशान कल्पों में भी कितने ही देव अट्ठाईस पल्योपम के कहे गए हैं।

In this hell of Ratanprabha the life duration of infernal beings is of twenty eight Palyopama. Below there is land named(Mahatamh prithvi) in which the life of the hellish beings has been said of twenty eight Sagropama duration. The life span of Asurkumars (fiendish gods) has been expounded of twenty eight Palyopama duration. The celestial beings of Sodharma-Ishan kalpas have been said of twenty eight Palyopama duration.

१९०–उवरिमहेट्ठिमगेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। जे देवा मज्झिमउवरिमगेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। ते णं देवा अट्ठावीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा। तेसि णं देवाणं अट्ठावीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

संतेइगया भवसिद्धिया जीवा जे अट्ठावीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

उपरिम-अधस्तन ग्रैवेयक विमान वासी देव अट्ठाईस सागरोपम जघन्य स्थिति के कहे गए हैं। जो देव मध्यम-उपरिम ग्रैवेयक विमानों में देव रूप से उत्पन्न होते हैं वे अट्ठाईस सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति के कहे गए हैं। वे देव अट्ठाईस अर्धमासों (चौदह मासों) के बाद आन-प्राण या उच्छ्वास-निःश्वास की क्रिया करते हैं। वे देव अट्ठाईस हजार वर्षों के उपरान्त आहार की इच्छा करते हैं।

वहाँ कितने ही भव्यसिद्धिक जीवों का उल्लेख है। वे जीव अट्ठाईस भव (जन्म) ग्रहण करेंगे। वे भव्य सिद्धिक जीव इसके उपरान्त सिद्ध-बुद्ध होंगे। तदनन्तर वे कर्मों से मुक्ति पाकर परिनिर्वाण को प्राप्त होंगे। वे अन्ततोगत्वा सर्व दुःखों का शमन (अन्त) करेंगे।

The celestial beings residing in (upper below) Uprim-Adhsthan graivayak celestial vehicles (viman) have been said of minimum twenty eight Sagropama duration, They take birth as a celestial beings into these Madhyam-Uprim graivayak celestial vehicles (viman). These celestial beings have been said of maximum twenty eight Sagropama life duration. They do the activity of inhaling and exhaling or respiration once after twenty eight fortnight i.e. after fourteen months. They desire for food once after the interval of twenty eight thousand years.

There the Bhavyasidhik jeevas (beings capable of salvation have been described who will take only twenty eight births in future. After that they will be enlightened and get salvation. Having annihilated all their accumulated karmas of previous births they will attain liberation i.e. Param Nirvan. At last they would destroy all their miseries and sufferings in the end.

।। अट्ठाईसवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Twenty Eighth Samvaya)

उनतीसवां समवाय

The Twenty Nineth Samvaya

१९१–एगूणतीसइविहे पावसुयपसंगे णं पण्णत्ते, तं जहा–भोमे उप्पाए सुमिणे अंतलिक्खे अंगे सरे वंजणे लक्खणे ८। भोमे तिविहे पण्णत्ते। तं जहा–सुत्ते वित्ती वत्तिए ३। एवं एक्केक्कं तिविहं २४। विकहाणुजोगे २५, विज्जाणुजोगे २६, मंताणुजोगे २७, जोगाणुजोगे २८, अण्णतित्थियपवत्ताणुजोगे २९।

पापों के उपार्जन करने वाले शास्त्रों का श्रवण-सेवन पापश्रुत प्रसंग कहे गए हैं क्योंकि मिथ्याशास्त्र की आराधना भी पाप का निमित्त बन सकती है। पाप श्रुत प्रसंग उनतीस प्रकार के बताए गए हैं यथा — १. भौमश्रुत (भूमि-विकार, भूकम्प आदि का फल बताने वाला निमित्त शास्त्र), २. उत्पात श्रुत (अचानक रक्त-वर्षा जैसे उत्पातों का फल बताने वाला निमित्त शास्त्र), ३. स्वप्न श्रुत (शुभाशुभ स्वप्नों का फल बताने वाला शास्त्र), ४. अन्तरिक्ष श्रुत (ताराओं के टूटने, सूर्यादिग्रहण, आकाश में विचरने वाले ग्रहों के युद्धादि होने आदि का फल बताने वाला शास्त्र), ५. अंगश्रुत (शारीरिक अंगों के हीनाधिक होने तथा नेत्र, भुजा आदि के फकड़ने का फल बताने वाला शास्त्र), ६. स्वरश्रुत (मनुष्य, पशु-पक्षी, काष्ठपाषाणादि जनित स्वरों-शब्दों को सुनकर तदनुरूप उनके फल को बताने वाला शास्त्र), ७. व्यंजन श्रुत (शरीर में उत्पन्न तिल, मषा आदि का फल बताने वाला शास्त्र), ८. लक्षणश्रुत (चक्र, खड्ग, शंखादि शारीरिक चिन्हों का फल बताने वाला शास्त्र) भौम श्रुत तीन प्रकार का कहा गया है। यथा – १. सूत्र भौम श्रुत, २. वृत्ति भौम श्रुत, ३. वार्त्तिक भौम श्रुत। इन तीन प्रकार के भौम श्रुत को उपर्युक्त आठ प्रकार के श्रुतों के साथ गुणा करने पर चौबीस भेद हो जाते हैं, यथा–८-३=२४। २५. विकथानुयोग श्रुत (स्त्री, भोजन-पान आदि से सन्दर्भित तथा अर्थ-काम आदि की प्ररूपणा करने वाले पाक शास्त्र, अर्थशास्त्र व काम शास्त्र), २६. विद्यानुयोग श्रुत (रोहिणी, प्रज्ञप्ति, अंगुष्ठप्रसेनादि विद्याओं को साधने के उपाय-उपयोग बताने वाला शास्त्र), २७. मन्त्रानुयोगश्रुत (लौकिक प्रयोजनार्थ अनेक मन्त्रों का साधन बताने वाला शास्त्र), २८. योगानुयोगश्रुत (स्त्री पुरुषादि को वश में करने के लिए अंजन, गुटिका आदि का निरूपण करने वाला शास्त्र), २९. अन्य तीर्थिक प्रवृत्तानुयोग (कपिल, बौद्ध आदि अन्य मतावलम्बियों द्वारा रचित शास्त्र)।

The listening of the shrut that encourages sins, have been put under the category of (paap shrut prasang) sinful scriptures. The study of false scriptures could be the cause of sins. The number of these sinful scriptures have been described twenty nine as :– 1. Bhom Shrut (the book of omen that predicts regarding earth disturbances (Bhumi Vikar) and earthquakes etc.), 2. Utpat Shrut (the omen book that predicts about the disturbances created by sudden

blood-like rain etc.), 3. Dream Shrut (the scripture that predicts the fruit of auspicious and inauspicious dreams), 4. Antriksh Shrut (the scripture that predicts to the effect of movement of stars, sun eclipse and the battle among the roaming planets in the sky), 5. Ang Shrut (the scripture that predicts about the fruits of the body limbs expansion and abstrsction and eyelids and arms flutter), 6. Swar Shrut (the scripture that tells the impending event by hearing the words and voices uttered by human beings, animals, birds, a log of woods and stone, 7. Vyanjan Shrut (the omen book that tells the fruits of scars moles etc. emerging on the physical body), 8. Lakshan Shrut (the omen book that predicts about the spot such as discuss, conch shells on the body). The omen book related to earth movements has been told of three types as (1) Sutra - Bhaum Shrut (2) Vriti Bhaum Shrut (3) Vartik Bhaum Shrut – by multiplying these three types with the above mentioned eight types we get 24 (twenty four) divisions and the twenty fifth one is called Shrut Vikathanuyoga shrut (the narration with reference to women, food and drinks or the scriptures that expounded about to cookery, economics and sexology related material), 26. Vidyanuyoga Shrut (the scripture that tell about the methods acquiring the knowledge of using and practice of the science pertaining to Rohini, Prajapati and Angushth-prasen Vidya, 27. Mantranuyoga Shrut (the scripture that tells the methods to experience many mantras (spells chants) to obtain mundane possessions), 28. Yoganuyoga Shrut (the treatise that tells about the effect of collyrium, magical ball etc. to overpower the other woman or man, 29. (Anya tirthak Parvatanuyoga (to study the scripture written by Kapil, Budha and these propounders of the other faiths.

१९२–आसाढे णं मासे एगूणतीसराइंदिआइं राइंदियग्गेण पण्णत्ता। [एवं चेव] भद्दवए णं मासे, कत्तिए णं मासे, पोसे णं मासे, फग्गुणे णं मासे, वइसाहे णं मासे। चंददिणे णं एगूणतीसं मुहुत्ते सातिरेगे मुहुत्तग्गेणं पण्णत्ते।

आषाढ़ मास उनतीस रात-दिन का कहा गया है। (इसी प्रकार) भाद्रपद मास, कार्तिक मास, पौष मास, फाल्गुन मास और वैशाख मास भी उनतीस-उनतीस रात-दिन के कहे गए हैं। चन्द्रदिन मुहूर्त्त गणना की अपेक्षा कुछ अधिक उनतीस मुहूर्त्त का कहा गया है।

The month of Ashad has been told of twenty nine days and nights. Similarly the duration of the months Bhadrapad, Kartik,Paush, Phalguna and Vaishakha has been said of twenty nine days and nights. With regard to the counting of Indian time (the muhurat) the moon day has been said of a little more than twenty nine (muhurat).

१९३– जीवे णं पसत्थज्झवसाणजुत्ते भविए सम्मदिट्ठी तित्थकरनामसहिआओ णामस्स णियमा एगूणतीसं उत्तरपगडीओ णिबंधित्ता वेमाणिएसु देवेसु देवत्ताए उववज्जइ।

सम्यग्दृष्टि भव्यजीव प्रशस्त अध्यवसान अर्थात् परिणाम से युक्त है, ऐसा भव्य जीव तीर्थंकर नाम सहित नामकर्म की उनतीस प्रकृतियों को बाँधता है और नियम से वैमानिक देवों में देवरूप से उत्पन्न होता है।

The right living being perceptual, capable of salvation, has meritorious reflection with (Prashast Adyaavsan). Such a being binds the twenty nine tendencies of physique making karmas including the ford maker tendencies and as a rule reincarnates as a celestial being into the celestial vehicle.

१९४–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणतीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणतीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणतीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

इस रत्नप्रभा पृथ्वी में उनतीस पल्योपम स्थिति वाले अनेकों नारकों का वर्णन है। अधस्तन सातवीं पृथ्वी में उनतीस सागरोपम स्थिति वाले कितने ही नारक कहे गए हैं। कितने ही असुरकुमार देवों तथा सौधर्म-ईशान कल्पों के देवों की स्थिति उनतीस-उनतीस पल्योपम की बतायी गई है।

In this land of Ratanprabha hell the hellish beings have been narrated of the life span of twenty nine Palyopama duration. Below in the seventh land (Mahatamah hell) the life duration of the infernal beings has been narrated of twenty nine Sagropama. The life span of the malevolent demons and the celestial beings of Sodharma-Ishan celestial vehicles have been told of twenty nine Palyopama each.

१९५–उवरिममज्झिमगेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। जे देवा उवरिमहेट्ठिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। ते णं देवा एगूणतीसाए अद्धमासेहि आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा। तेसि णं देवाणं एगूणतीसं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे एगूणतीसभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

उपरिम-मध्यम ग्रैवेयक देवों के विषय में कहा गया है कि इनकी जघन्य स्थिति उनतीस सागरोपम है। उपरिम अधस्तन ग्रैवेयक विमानों में देवरूप से उत्पन्न होने वाले देवों की उत्कृष्ट स्थिति उनतीस सागरोपम उल्लिखित है। वे देव उनतीस अर्धमासों यानि साढ़े चौदह मासों के उपरान्त उच्छ्वास-निःश्वास अर्थात् आन-प्राण की क्रिया करते हैं। वे देव उनतीस हजार वर्षों के पश्चात् आहार की इच्छा करते हैं।

वहाँ भव्य सिद्धिक जीवों का उल्लेख है। वे जीव उनतीस भव (जन्म) ग्रहण करेंगे, तदुपरान्त वे भव्य सिद्धिक जीव सिद्ध होंगे। तदनन्तर वे कर्मों से मुक्ति पाकर परिनिर्वाण को प्राप्त होंगे। वे अन्ततोगत्वा सर्व दु:खों का शमन (अन्त) करेंगे।

It has been said about the Upper-middle graivayak celestial beings that the minimum life span of these gods is twenty nine Sagropama duration. The maximum life span of the celestial beings of upper and lower graivayak celestial vehicles is narrated as twenty nine Sagropama duration. They inhale and exhale or breathe in and breathe out after an interval of twenty nine half months. They desire for food once after the completion of twenty nine thousand years.

There the description of the (Bhavyasidhik) beings capable of salvation is given. These beings would take twenty nine births in future and after that would attain salvation. Then after getting annihilated all their karmas they will attain the ultimate goal i.e. Param Nirvan. They will destroy all their miseries and sufferings inthe end.

।। उनतीसवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Twenty Nineth Samvaya)

तीसवां समवाय

The Thirtieth Samvaya

१९६–तीसं मोहणीयठाणा पण्णत्ता, तं जहा–

जे यावि तसे पाणे वारिमज्झे विगाहिआ।
उदएण क्कम्म मारेइ महामोहं पकुव्वइ ।।१।।

सीसावेढेण जे केई आवेढेइ अभिक्खणं।
तिव्वासुभसमायारे महामोहं पकुव्वइ ।।२।।

पाणिणा संपिहित्ताणं सोयमावरिय पाणिणं।
अंतोनदंतं मारेइ महामोहं पकुव्वइ ।।३।।

जायतेयं समारब्भ बहुं आरंभिया जणं।
अंतोधूमेण मारेई महामोहं पकुव्वइ ।।४।।

सिस्सम्मि [सीसम्मि] जे पहणइ उत्तमंगम्मि चेयसा।
विभज्ज मत्थयं फाले महामोहं पकुव्वइ ।।५।।

पुणो पुणो पणिधिए हणित्ता उवहसे जणं।
फलेणं अदुवा दंडेणं महामोहं पकुव्वइ।।६।।

गूढायारी निगूहिज्जा मायं मायाए छायए।
असच्चवाई णिण्हाई महामोहं पकुव्वइ।।७।।

धंसेइ जो अभूएणं अकम्मं अत्तकम्मुणा।
अदुवा तुम कासि त्ति महामोहं पकुव्वइ।।८।।

जाणमाणो परिसओ सच्चामोसाणि भासइ।
अक्खीणझंझे पुरिसे महामोहं पकुव्वइ।।९।।

अणागयस्स नयवं दारे तस्सेव धंसिया।
विउलं विक्खोभइत्ताणं किच्चा णं पडिबाहिरं।।१०।।

उवगसंतं पि झंपित्ता पडिलोमाइं वग्गुहिं।
भोगभोगे वियारेई माहमोहं पकुव्वइ।।११।।

अकुमारभूए जे केई कुमारभूए त्तिहं वए।
इत्थीहिं गिद्धे वसए महामोहं पकुव्वइ।।१२।।

अबंभयारी जे केई बंभयारि त्ति हं वए।
गद्दहे व्व गवां मज्झे विस्सरं नयई नदं।।१३।।

अप्पणो अहिए बाले मायामोसं बहुं भसे।
इत्थीविसयगेहीए महामोहं पकुव्वइ।।१४।।

जं निस्सिए उव्वहइ जससाहिगमेण वा।
तस्स लुब्भइ वित्तम्मि महामोहं पकुव्वइ।।१५।।

ईसरेण अदुवा गामेणं अणीसरे ईसरीकए।
तस्स संपयहीणस्स सिरी अतुलमागया।।१६।।

ईसादोसेण आविट्ठे कलुसाविलचेयसे।
जे अंतरायं चेएइ महामोहं पकुव्वइ।।१७।।

सप्पी जहा अंडउडं भत्तारं जो विहिंसइ।
सेणावइं पसत्थारं महामोहं पकुव्वइ।।१८।।

जे नायगं च रट्ठस्स नेयारं निगमस्स वा।
सेट्ठिं बहुरवं हंता महामोहं पकुव्वइ।।१९।।

बहुजणस्स णेयारं दीवं ताणं च पाणिणं।
एयारिसं नरं हंता महामोहं पकुव्वइ।।२०।।

उवट्ठियं पडिविरयं संजयं सुतवस्सियं।
वुक्कम्म धम्माओ भंसेइ महामोहं पकुव्वइ।।२१।।

तहेवाणंतणाणीणं जिणाणं वरदंसिणं।
तेसिं अवण्णवं बाले महामोहं पकुव्वई।।२२।।

नेयाउअस्स मग्गस्स दुट्ठे अवयरई बहुं।
तं पिप्पयंतो भावेइ महामोहं पकुव्वइ।।२३।।

आयरिय-उवज्झाएहिं सुयं विणयं च गाहिए।
ते चेव खिंसई बाले महामोहं पकुव्वइ।।२४।।

आयरिय-उवज्झायाणं सम्मं नो पडितप्पइ।
अप्पडिपूयए थद्धे महामोहं पकुवइ।।२५।।

अबहुस्सुए य जे केई सुएणं पविकत्थई।
सज्झायवायं वयइ महामोहं पकुव्वइ।।२६।।

अतवस्सीए य जे केई तवेण पविकत्थइ।
सव्वलोयपरे तेणे महामोहं पकुव्वइ।।२७।।

साहारणट्ठा जे केई गिलाणम्मि उवट्ठिए।
पभू णं कुणई किच्चं मज्झं पि से न कुव्वइ।।२८।।

सढे नियडीपण्णाणे कलुसाउलचेयसे।
अप्पणो य अबोही य महामोहं पकुव्वइ।।२९।।

जे कहाहिगरणाइं संपउंजे पुणो पुणो।
सव्वतित्थाण भेयाणं महामोहं पकुव्वइ।।३०।।

जे य आहम्मिए जोए संपउंजे पुणो पुणो।
सहाहेउं सहीहेउं महामोहं पकुव्वइ।।३१।।

जे अ माणुस्सए भोए अदुवा पारलोइए।
तेऽतिप्पयंतो आसयइ महामोहं पकुव्वइ।।३२।।

इड्ढी जुई जसो वण्णो देवाणं बल-वीरियं।
तेसिं अवण्णवं बाले महामोहं पकुव्वइ।।३३।।

अपस्समाणो पस्सामि देवे जक्खे य गुज्झगे।
अण्णाणी जिणपूयट्ठी महामोहं पकुव्वइ।।३४।।

मोहनीय कर्म बाँधने के तीस स्थान कहे गए हैं। यथा —

१. पहला मोहनीय स्थान है कि जो कोई भी व्यक्ति, स्त्री-पुरुष आदि त्रस जीवों को जल में प्रवेश कराता है और पैरों को नीचे दबाकर जल में ही उन्हें मारता है, वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

२. दूसरा मोहनीय स्थान है कि जो कोई किसी मनुष्य आदि के शिर को गीले चर्म से वेष्टित (लपेटता) करता है और निरन्तर तीव्र अशुभ पापमय कार्यों में लिप्त रहता है, वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

३. तीसरा मोहनीय स्थान है कि जो कोई किसी जीव के मुख को हाथ से बन्द करता है और गला दबाकर मारता है, वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

४. चौथा मोहनीय स्थान है कि जो कोई अग्नि को जलाता है अथवा अग्नि का महान आरम्भ करता है और किसी मनुष्य-पशु-पक्षी आदि त्रस जीवों को उसमें जलाता है अथवा अत्यन्त धुएँ से युक्त अग्नि-स्थान में प्रवेश कराकर धुएँ से उनका दम घोंटता है, वह महामोहनीय कर्म का बन्ध करता है।

५. पाँचवाँ मोहनीय स्थान है कि जो कोई किसी जीव के उत्तम अंग यानि शिर पर मुद्गर आदि से प्रहार (चोट) करता है अथवा अति संक्लेशयुक्त चित्त से उसके माथे को फरसा आदि हथियार से काटकर मार डालता है, वह महामोहनीय कर्म का बन्ध करता है।

६. छठा मोहनीय स्थान है कि जो कपट करके किसी मनुष्य का घात करता है और कुटिल हँसी हँसता है तथा किसी मंत्रित फल आदि को खिलाकर अथवा डंडे से मारता-पीटता है यानि प्रहार करता है, वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

७. सातवाँ मोहनीय स्थान है कि जो गूढ़ यानि गुप्त पापों का आचरण करने वाला मायाचार का व्यवहार करते हुए अपनी माया को छिपाता है, असत्य बोलता है तथा सूत्रार्थ का अपलाप करता है, वह महामोहनीय कर्म का बन्ध करता है।

८. आठवाँ मोहनीय स्थान है कि जो अपने द्वारा किए ऋषिघात आदि घोर दुष्कर्म को दूसरों पर लादता है अथवा अन्य व्यक्ति के द्वारा किए गए दुष्कर्म को किसी दूसरे पर आरोपित करता है कि यह दुष्कर्म तुमने किया है, वह महामोहनीय कर्म का बन्ध करता है।

९. नौवां मोहनीय स्थान है कि जो असत्य को जानता हुआ भी सत्य नहीं बोलता यानि यह बात असत्य है ऐसा जानता हुआ भी जो सभा में सत्यामृषा (जिसमें सत्यांश कम और असत्यांश अधिक है ऐसी) भाषा का प्रयोग करता है तथा लोगों से सदा कलह करता रहता है, वह महामोहनीय कर्म का बन्ध करता है।

१०. दशवाँ मोहनीय स्थान है कि राजा का जो मन्त्री यानि अमात्य अपने ही राजा की दाराओं (स्त्रियों) को या धन आगमन-द्वारों को विध्वंस कर तथा अनेक सामन्तों आदि को विक्षुब्ध करके राजा को अनधिकारी करके राज्य पर, रानियों पर तथा राज्य के धनागमन के द्वारों पर स्वयं अधिकार जमा लेता है, वह महामोहनीय कर्म का बन्ध करता है।

११. ग्यारहवाँ मोहनीय स्थान है कि जिसका सर्वस्व हरण कर लिया है, वह व्यक्ति भेंट आदि लेकर तथा दीन वचन बोलकर अनुकूल बनाने के लिए यदि किसी के समीप आता है, ऐसे पुरुष के लिए जो प्रतिकूल वचन बोलकर उसके भोग-उपभोग के साधनों को नष्ट-विनष्ट करता है, वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

१२. बारहवाँ मोहनीय स्थान है कि जो पुरुष स्वयं विवाहित होते हुए भी अविवाहित होने का नाटक करता है और स्त्रियों में गृद्ध (आसक्त) और उनके अधीन रहता है, वह महामोहनीय कर्म का बन्ध करता है। जो कोई पुरुष स्वयं अब्रह्मचारी होते हुए भी मैं ब्रह्मचारी हूँ ऐसा बोलता है, वह बैलों के मध्य में गधे के समान विस्वर (बेसुरा) नाद (शब्द) करता हुआ यानि रेंकता हुआ महामोहनीय कर्म का बन्ध करता है तथा उक्त प्रकार से जो अज्ञानी पुरुष अपना ही अहित करने वाले मायाचार युक्त बहुत अधिक असत्य वचन बोलता है और स्त्रियों के विषयों में आसक्त रहता है, वह महामोहनीय कर्म का बन्ध करता है।

१३. तेरहवाँ मोहनीय स्थान है कि जो राजा या मन्त्री आदि का सगा-सम्बन्धी है या जो राजादि की ख्याति-प्रसिद्धि से अपना जीवन निर्वाह यानि आजीविका के लिए सेवा करता हो, फिर उसी के धन में लुब्ध होता हो, वह पुरुष महामोहनीय कर्म का बन्ध करता है।

१४. चौदहवाँ मोहनीय स्थान है कि जो किसी ऐश्वर्यवान पुरुष के द्वारा अथवा जन-समूह के द्वारा कोई ऐश्वर्य रहित निर्धन पुरुष ऐश्वर्यशाली बना दिया गया हो, तब उस सम्पत्ति-विहीन पुरुष के अतुल यानि अपार लक्ष्मी हो गई और यदि वह ईर्ष्या द्वेष से प्रेरित होकर, कालुष्य चित्त से उस उपकारी पुरुष के या जन-समूह के भोग-उपभोगादि में अन्तराय या व्यवच्छेद डालने का विचार करता है, तो वह महामोहनीय कर्म का बन्ध करता है।

१५. पन्द्रहवाँ मोहनीय स्थान है कि जो व्यक्ति अपना ही भला करने वाले का विनाश करता है, जैसे सर्पिणी या नागिन अपने ही अण्डों को खा जाती है, उसी प्रकार जो पुरुष अपना ही भला करने वाले स्वामी का अथवा धर्मपाठक का विनाश करता है, तो वह महामोहनीय कर्म का बन्ध करता है।

१६. सोलहवाँ मोहनीय स्थान है कि जो व्यक्ति राष्ट्र के नायक का या निगम यानि विशाल नगर के नेता का अथवा महायशस्वी सेठ का घात करता है, वह महामोहनीय कर्म का बन्ध करता है।

१७. सत्रहवाँ मोहनीय स्थान है कि जो जन सामान्य के नेता का , दीपक सदृश उनके मार्गदर्शक का एवं इसी प्रकार के जन-जन के उपकारी पुरुष का घात (विनाश) करता है, वह महामोहनीय कर्म का बन्ध करता है।

१८. अठारहवाँ मोहनीय स्थान है कि जो दीक्षार्थी (दीक्षा लेने के लिए उपस्थित या उद्यत व्यक्ति) को, भोगों से विरक्त जन को, संयमी-साधक को या परम तेजस्वी-तपस्वी व्यक्ति को अनेक प्रकार से भड़का कर या प्रलोभनों के माध्यम से धर्म मार्ग से विमुख यानि धर्म से भ्रष्ट करता है, वह महामोहनीय कर्म का बन्ध करता है।

१९. उन्नीसवाँ मोहनीय स्थान है कि जो अज्ञानी पुरुष अनन्तदर्शी व अनन्तज्ञानी जिनेन्द्र भगवान का अवर्णवाद करता है, वह महामोहनीय कर्म का बन्ध करता है।

२०. बीसवाँ मोहनीय स्थान है कि जो दुष्ट पुरुष न्याय-युक्त मोक्षमार्ग का अपकार करता हैं और अधिकांश लोगों को उससे च्युत करता है तथा मोक्षमार्ग की निंदा करता हुआ अपने आपको उससे भावित करता है, अर्थात् उन अशुभ-मलिन (दुष्ट) विचारों से लिप्त रहता है, वह महामोहनीय कर्म का बन्ध करता है।

२१. इक्कीसवाँ मोहनीय स्थान है कि आचार्यों और उपाध्यायों से श्रुत और विनय धर्म को प्राप्त करने वाला अज्ञानी पुरुष यदि उन आचार्यों और उपाध्यायों की निंदा करता है, उन्हें चारित्र से भ्रष्ट बताता है और उन्हें अज्ञानी बताकर उनकी बदनामी करता है, तो वह महामोहनीय कर्म का बन्ध करता है।

२२. बाईसवाँ मोहनीय स्थान है कि जो गुरुजन (आचार्य-उपाध्याय) एवं उपकारक जनों को सम्यक् प्रकार से संतृप्त नहीं करता यानि सम्यक् प्रकार से उनकी सेवा, पूजा, सम्मान नहीं करता है अपितु अभिमान करता है, वह महामोहनीय कर्म का बन्ध करता है।

२३. तेईसवाँ मोहनीय स्थान है कि जो अबहुश्रुत (अल्पश्रुत का धारक) अपने को बहुश्रुत यानी बहुत बड़ा शास्त्र ज्ञानी कहता है तथा स्वाध्यायवादी और शास्त्र-पाठक बतलाता है, वह महामोहनीय कर्म का बंध करता है।

२४. चौबीसवाँ मोहनीय स्थान है कि जो तपस्वी नहीं होने पर भी अपने को परम तपस्वी कहता है ऐसा पुरुष भाव-चोर होने के कारण सबसे बड़ा चोर है और वह महामोहनीय कर्म का बन्ध करता है।

२५. पच्चीसवाँ मोहनीय स्थान है कि जो मायाचारी व्यवहार करता है अर्थात् सेवा-शुश्रूषा या उपकार हेतु किसी रोगी, आचार्य या साधु के पधारने पर स्वयं समर्थ होते हुए भी इस अभिप्राय से कि यह मेरा कुछ भी कार्य नही करता है उसकी सेवा आदि न कर अपने कर्त्तव्य का पालन नही

करता है, वह शठ यानि धूर्त व मायाचार में पटु, कलुषित होकर (भवान्तर में) अपनी अबोधि अर्थात् रत्नत्रय धर्म की अप्राप्ति का कारण बनता है और वह महामोहनीय कर्म का बन्ध करता है।

२६. छब्बीसवाँ मोहनीय स्थान है कि जो स्त्रीकथा व भोजन-कथा में रुचिवन्त है और बारम्बार इन्हीं विकथाओं से घिरा रहता है तथा मन्त्र-यन्त्रादि प्रयोग करता है, कलह करता है, साथ ही संसारतारक सम्यग्दर्शनादि समस्त तीर्थों के भेदन करने के लिए सदा प्रवृत्ति करता है, वह महामोहनीय कर्म का बन्ध करता है।

२७. सत्ताईसवाँ मोहनीय स्थान है कि जो प्रशंसार्थ मित्रों के निमित्त अधार्मिक योगों का अर्थात् वशीकरण आदि प्रयोगों का बार-बार उपयोग करता है, वह महामोहनीय कर्म का बन्ध करता है।

२८. अट्ठाईसवाँ मोहनीय स्थान है कि जो भोगों में सदा अभिलषित रहता है और कभी तृप्त नहीं हो पाता, चाहे भोग मनुष्य या पारलौकिक सम्बन्धी ही क्यों न हों, वह महामोहनीय कर्म का बन्ध करता है।

२९. उनतीसवाँ मोहनीय स्थान है, जो अज्ञानी व्यक्ति देवों की ऋद्धि, द्युति, यश और वर्ण (शोभा) का तथा उनके बल-वीर्य का अवर्णवाद करता है, वह महामोहनीय कर्म का बन्ध करता है।

३०. तीसवाँ मोहनीय स्थान है कि जो अज्ञानी पुरुष जिनदेव के समान अपनी पूजा की अभिलाषा (इच्छा) रखता है और देवों, यक्षों व गुह्यकों (व्यन्तरों) को न देखता हुआ भी मैं उनको देखता हूँ, ऐसा कहता है, वह महामोहनीय कर्म का बन्ध करता है।

Thirty activities, through which the being binds the delusion karmas, have been said as :-

1. The 1st delusion karma is that when any individual either male or female takes a movable living being into the water and kills him there in the water by stumping him with his legs. Doing so binds the Maha Mohaniya karmas,
2. The 2nd place of delusion karma is that when any one covers the head of any other person with the wet leather and ceaselessly indulges in intense inauspicious sinful deeds- he binds the strong delusion karmas,
3. The 3rd delusion karma is when any one kills a being by keeping shut his mouth with his strong grip and strangulates him - he binds a Maha Mohaniya karmas,
4. The 4th delusion karma : one who burns the fire and burns any movable living being, like human, animal and bird with it or make it to suffocate taking them into dense smoke - he binds the Maha Mohaniya karmas,

5. The 5th delusion karma : when any one strikes any other's limbs i.e. on the head with hammer or kills by chopping the head with hatchet full of intense frustrated mind- He binds the Maha Mohaniya karmas,

6. The 6th delusion karma : When someone kills any one crookedly and laughs wickedly and makes him to eat spell chanted fruit or beats him with stick - he binds the Maha Mohaniya karmas,

7. The7th delusion karma : the person who commits deplorable i.e. secret sinful activities conceal his sinful activities, tells a lie and disregards the scriptural reality - he binds the Maha Mohaniya karmas,

8. The 8th delusion karma : one who blames others for his terrible heinous deed of killing as ascetics or blames others for his misdeeds blaming that this heinous act has been done by the others. Doing so he binds the Maha Mohaniya karmas,

9. The 9th delusion karma : one who does not speak the truth deliberately knowing the fact that it is untrue. Even knowing that it is untrue he uses the double standard mixed language in a meeting (a language in which the truth is lesser than lie) and indulges always in chaotic activities binds Maha Mohaniya karmas,

10. The 10th place of delusion karma : Any minister destroys the source of earnings and illegally controls the queens of ones own king and through frightening of the feudatory princes removing the king from the throne establishes control over the kingdom, treasury and queen etc. – he binds the intense delusion karmas,

11. The 11th delusion karma : whose everything has been stolen, reaches out to someone for help, seeks favour by speaking humble words, if any body instead of helping him tortures and abuse by destroying his means of enjoyment and re-enjoyment earns the acute delusion karmas,

12. The 12th delusion karma : one who is already married but pretends to be bachelor always remains infatuated towards women and remains under their control, binds acute delusion karmas, one who is not a celibate but pretends to be a celibate he is like an ass among the oxen roaring incoherently binds the acute delusion karmas such an ignorant one speaks untruthful speeches full of deceit even unbeneficial to him and remains attracted to women folk. He binds the intense delusion karmas,

13. The 13th place of delusion karma : One who is the relative of a king or minister etc. or sustenance through the glory and fame of the king or serves for lively-hood. But later on becomes covetous towards king's wealth binds the intense delusion karmas,

14. The 14th place of delusion karma : If some one, who is living a life of poverty has been made affluent and prosperous by the affluent one or by the group of people. But after getting this affluency and prosperity if he is motivated by the ill will, through the wicked mind tries to be impediment in the enjoyment and re-enjoyment of that benevolent person or the group of the people or thinks to harm him, binds the acute delusion karmas,

15. The 15th place of delusion karmas : One who annihilates his own benevolent person like as the snake or the serpent that eats her own eggs in this same way the person who destroys his own benevolent master or the religious teacher binds the intense delusion karmas,

16. The 16th place of delusion karma : One who kills the head of the nation or municipality or at big metropolitan city or a great famous wealthy person, binds the acute delusion karmas,

17. The 17th delusion karma : One who annihilates the leader of the public, their lamp like guide or philanthropist binds the acute delusion karmas,

18. The 18th place of delusion karma : One who averts from the religious path an initiator (one who is ready to be consecrated), a detached one from mundane enjoyment or towards worldly pleasures a supreme radiant ascetic by alluring him binds dense delusion karmas,

19. The 19th place of delusion karma : An ignorant one who condemns the omniscient and omnipotent Jin Bhagwan binds the acute delusion karmas,

20. The 20th place of delusion karmas : A wicked person who detriments the right path of salvation and advises most of the people to avoid this path and criticizes the path of liberation and reflects upon it himself i.e. indulges himself with these inauspicious and malign thoughts binds the intense delusion karmas,

21. The 21st place of delusion karma : An ignorant person who obtains knowledge of scriptures and religion of submissiveness from the perceptors and religious teachers if he criticizes the perspectives and religious teachers and calls them polluted of conducts and defame them calling them ignorant then he binds acute delusion karmas,

22. The 22nd place of delusion karma : One who does not righteously serve the perceptors and religious teachers i.e. does not serve, propitiate, respect them harmoniously nonetheless is proud of himself binds dense delusion karmas,

23. The 23rd place of delusion karmas : One who declares himself a great Bahushrut (knowledgeable of scripture) while he is least knowable of scriptures and describes himself a great studious reader of scriptures, he binds acute delusion karmas,

24. The 24th place of delusion karma : One who is not an ascetic but poses to be a great ascetic, such a person being a mentally thief is the greatest thief and binds the intense delusion karmas,

25. The 25th place of delusion karmas one who acts deceitfully i.e. although knowing he is capable but does not serve or does not fulfills his duties at the time when any ailing receptor or ascetic comes to him for services imagining that "he is of no use for me" that wicked person expert in deceitful conduct becomes the cause of not obtaining the three jewels of religion or state of enlightenment in future births. He binds acute delusion karma.

26. The 26th place of delusion :- One who is interested in the woman related and food related stories, tales or conversations and frequently keeps himself busy in these baseless conversations and experiences the spell bounding activities creates fuss and indulges himself in discriminating the entire fords of right perception etc. activities that liberate the self binds the dense delusion karmas,

27. The 27th place of delusion karmas :- One who again and again uses the experiments of overpowering or does the irreligious activities for the sake of the friends who praise him binds the intense delusion karmas,

28. The 28th place of delusion karmas :- One who always longs for enjoyments and never gets satisfied whether these longings belong to this world or the metaphysics binds intense delusion karmas,

29. The 29th place of delusion karmas :- One who disrespects the potency, glory, fame, affluency, prosperity and brightness of any ignored celestial being binds the acute delusion karmas,

30. The 30th place of delusion karmas :- The ignorant one who longs for be worshipped like Lord Jina and declares that he is witnessing the dieties, gods, forest dwelling gods etc. whereas he is not seeing them binds dense delusion karmas.

१९७–थेरे णं मंडियपुत्ते तीसं वासाइं सामण्णपरियायं पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे।

स्थविर मंडितपुत्र ने तीस वर्ष तक श्रमणपर्याय का पालन किया तदुपरान्त वे सिद्ध-बुद्ध हुए। अन्ततोगत्वा वे सर्व दुःखों से रहित हो गए।

The elder monk Manditputra observed the monkhood position continuously for thirty years. Thereafter he attained salvation. Thus he annihilated all his miseries and sufferings.

१९८–एगमेगे णं अहोरत्ते तीसमुहुत्ते मुहुत्तग्गेणं पण्णत्ते। एएसिं णं तीसाए मुहुत्ताणं तीसं नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा–रोद्दे सत्ते मित्ते वाऊ सुपीए ५, अभिचंदे माहिंदे पलंबे बंभे सच्चे १०, आणंदे विजए विस्ससेणे पायावच्चे उवसमे १५, ईसाणे तट्ठे भाविअप्पा वेसमणे वरुणे २०, सतरिसभे गंधव्वे अग्गिवेसायणे आतवे आवत्ते २५, तट्ठवे भूमहे रिसभे सव्वट्ठसिद्धे रक्खसे ३०।

एक-एक अहोरात्र यानि दिन-रात तीस मुहूर्त्त का कहा गया है। यह तीस मुहूर्त्त, मुहूर्त्त-गणना की अपेक्षा से है। इन तीस मुहूर्त्तों के तीस नाम इस प्रकार हैं, यथा —१. रौद्र, २. शक्त, ३. मित्र, ४. वायु, ५. सुपीत, ६. अभिचन्द्र, ७. माहेन्द्र, ८. प्रलम्ब, ९. ब्रह्म, १०. सत्य, ११. आनन्द, १२. विजय, १३. शिवसेन, १४. प्राजापत्य, १५. उपशम, १६. ईशान, १७. तष्ट, १८. भावितात्मा, १९. वैश्रमण, २०. वरुण, २१. शत ऋषभ, २२. गन्धर्व, २३. अग्निवैशायन, २४. आतप, २५. आवर्त, २६. तष्टवान, २७. भूमह (महान), २८. ऋषभ, २९. सर्वार्थसिद्ध, ३०. राक्षस।

The duration of day and night has been said of thirty (muhurat). This counting of muhurat is with regard today of thirty muhurats. The names of these thirty muhurats are as follows :- 1. Rudra, 2. Shakt, 3. Mitra, 4. Vayu, 5. Supit, 6. Abhichandra, 7. Mahendra, 8. Pralamb, 9. Brahma, 10. Satya, 11. Anand, 12. Vijay, 13. Shivsen, 14. Prajapatya, 15.Upsham, 16. Ishan, 17. Tashat, 18. Bhavitatma, 19. Vaishraman, 20. Varun, 21. Shat Rishabh, 22. Gandharva, 23. Agnivaishyan, 24. Atap, 25. Avart, 26. Tashtvan, 27. Bhumah (Mahan), 28. Rishabh, 29. Sarvarthsidh, 30. Rakshas.

१९९–अरे णं अरहा तीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

अठारहवें अर अर्हन् के बारे में कहा गया है कि वे तीस धनुष ऊँचे थे।

It has been said that the height of the eighteenth Lord (Arihant) Shri Arhanath was equal to thirty bows.

२००–सहस्सारस्स णं देविंदस्स देवरण्णो तीसं सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ।

सहस्रार देवेन्द्र देवराज के विषय में कहा गया है कि उनके तीस हजार सामानिक देव हैं।

It has been said in respect of the head celestial being of sahasrar celestial vehicle that the number of the Samanik gods are thirty thousand.

२०१–पासे णं अरहा तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए। समणे णं भगवं महावीरे तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए।

तीर्थंकर भ० पार्श्वनाथ अर्थात् पार्श्व अर्हन् तीस वर्ष तक अगार अवस्था अर्थात् गृह-वास में रहे। इसके उपरान्त वे अगार से अनगारिता में प्रव्रजित हुए।

श्रमण भगवान महावीर भी तीस वर्ष अगार अवस्था अर्थात् गृह-वास में रहे। इसके उपरान्त वे अगार से अनगारिता में प्रव्रजित हुए।

The Ford maker (Tirathankara) Lord Parshvanath remained as house holder for a period of thirty years. After that he renouncing the household got consecrated.

Shraman Bhagwan Mahavir too, remained as householder for thirty years and after that got consecrated.

२०२–रयणप्पभाए णं पुढवीए तीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

रत्नप्रभा पृथ्वी के विषय में कहा गया है कि वहाँ तीस लाख नारकावास हैं।

इस रत्नप्रभा पृथ्वी में तीस पल्योपम स्थिति के अनेकों नारक कहे गए हैं। अधस्तन सातवीं पृथ्वी तीस सागरोपम स्थिति के नारकों का वर्णन है। कितने ही असुरकुमार देवों की स्थिति तीस पल्योपम कही गई है।

In respect of Ratanprabha hell it has been said that the number of hells is thirty lacs. The life span of these infernal beings of Ratanprabha hasbeen said of thirty Palyopama duration. Far below there is a seventh hell in which the life span of the hellish beings of this land has been described of thirty Sagropama duration. The life span of many malevolant demons has been said of thirty Palyopama.

२०३–उवरिमउवरिमगेवेज्जयाणं देवाणं जहण्णेणं तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। जे देवा उवरिममज्झिमगेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। ते णं देवा तीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा, पाणमंति वा, उस्ससंति वा, नीससंति वा। तेसि णं देवाणं तीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

उपरिम-उपरिम ग्रैवेयक देवों की जघन्य स्थिति तीस सागरोपम बतायी गई है। जो देव उपरिम-मध्यम ग्रैवेयक विमानों में देव रूप से उत्पन्न होते हैं उन देवों की उत्कृष्ट स्थिति के बारे में कहा गया है कि वे तीस सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति वाले देव हैं। वे देव तीस अर्धमासों यानि पन्द्रह मासों के उपरान्त उच्छ्वास-निःश्वास और आन-प्राण की क्रिया सम्पन्न करते हैं। वे देव तीस हजार वर्ष के पश्चात् आहार की इच्छा रखते हैं यानि उनमें तीस हजार वर्ष के अन्तराल से आहार की इच्छा उत्पन्न होती है।

Graivayak celestial beings have been described of minimum thirty Sagropama duration. The celestial beings who reincarnate as gods in the upper and middle graivayak celestial vehicles have been said of maximum thirty Sagropama duration. They complete the activity of inhaling and exhaling or the activity of respiration once after the interval of thirty half months or after fifteen months. They desire or long for food once after the completion of thirty thousand years.

२०४–संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे तीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

अनेकों भव्यसिद्धिक जीव ऐसे हैं, जो तीस भव ग्रहण करेंगे। तदुपरान्त वे सिद्ध-बुद्ध होंगे। वे कर्मों से मुक्त होंगे और परिनिर्वाण को प्राप्त होंगे। अन्ततोगत्वा वे सर्व दुःखों का अन्त करेंगे।

There the beings who are capable of salvation (bhavyasidhik jeevas) will get thirty births in future. After that they will enlightened, get salvation having annihilated all their accumulated get karmas of previous births, will be liberated i.e. get Param Nirvan. Eventually they will end all their miseries and sufferings.

।। तीसवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Thirtieth Samvaya)

इकतीसवां समवाय

The Thirty First Samvaya

२०५– एकत्तीसं सिद्धाइगुणा पण्णत्ता तं जहा–खीणे आभिनिबोहियणाणावरणे १, खीणे सुयणाणावरणे २, खीणे ओहिणाणावरणे ३, खीणे मणपज्जवणाणावरणे ४, खीणे केवलणाणावरणे ५, खीणे चक्खुदंसणावरणे ६, खीणे अचक्खुदंसणावरणे ७, खीणे ओहिदंसणावरणे ८, खीणे केवलदंसणावरणे ९, खीणे णिद्दा १०, खीणे णिद्दाणिद्दा ११, खीणे पयला १२, खीणे पयलापयला १३, खीणे थीणद्धी १४, खीणे सायावेयणिज्जे १५, खीणे असायावेयणिज्जे १६, खीणे दंसणमोहणिज्जे १७, खीणे चरित्तमोहणिज्जे १८, खीणे नेरइआउए १९, खीणे तिरिआउए २०, खीणे मणुस्साउए २१, खीणे देवाउए २२, खीणे उच्चागोए २३, खीणे नीयागोए २४, खीणे सुभणामे २५, खीणे असुभणामे २६, खीणे दाणंतराए २७, खीणे लाभंतराए २८, खीणे भोगंतराए २९, खीणे उवभोगंतराए ३०, खीणे वीरिअंतराए ३१।

सिद्धों के इकत्तीस गुण कहे गए हैं यानि सिद्धत्व पर्याय प्राप्त करने के प्रथम समय में इकत्तीस गुणों की चर्चा हुई है। यथा — १. क्षीण आभिनिबोधिक ज्ञानावरण, २. क्षीण श्रुतज्ञानावरण, ३. क्षीण अवधिज्ञानावरण, ४. क्षीण मन: पर्यवज्ञानावरण, ५. क्षीण केवलज्ञानावरण, ६. क्षीण चक्षुदर्शनावरण, ७. क्षीण अचक्षुदर्शनावरण, ८. क्षीण अवधिदर्शनावरण, ९. क्षीण केवल दर्शनावरण, १०. क्षीण निद्रा, ११. क्षीण निद्रानिद्रा, १२. क्षीण प्रचला, १३. क्षीण प्रचलाप्रचला, १४. क्षीण स्त्यानर्द्धि, १५. क्षीण सातावेदनीय, १६. क्षीण असातावेदनीय, १७. क्षीण दर्शन मोहनीय, १८. क्षीण चारित्र मोहनीय, १९. क्षीण नरकायु, २०. क्षीण तिर्यगायु, २१. क्षीण मनुष्यायु, २२. क्षीण देवायु, २३. क्षीण उच्चागोत्र, २४. क्षीण नीच गोत्र, २५. क्षीण शुभनाम, २६. क्षीण अशुभ नाम, २७. क्षीण दानान्तराय, २८. क्षीण लाभान्तराय, २९. क्षीण भोगान्तराय, ३०. क्षीण उपभोगान्तराय, ३१. क्षीण वीर्यान्तराय।

Thirty one virtues of liberated ones have been described i.e. the description of thirty one virtues at the very first instant of attaining liberation have been done as :- 1. Completely destroying deductive cognitive knowledge (obscuring ksheen abhinibodhik gyanavarniya), 2. Completely destroying scripture knowledge obscuring (ksheen shrut obscuring), 3. Completely destroying clairvoyance obscuring (ksheen avadhigyanavarniya), 4. Completely destroying mental mode obscuring (Mansaprayaya gyanavarniya), 5. Completely destroying omniscient obscuring (ksheen kewalgyanavarniya), 6. Completely destroying ocular perception obscuring (ksheen chakshugyanavarniya), 7. Completely destroying diminished non-ocular perception obscuring (ksheen achakshug-yanavarniya), 8. Completely destroying clairvoyance perception obscuring (ksheenavadhi darshanavarniya), 9. Completely destroying omniscient obscuring (ksheen kewalgyanavarniya), 10. Completely destroying slumber (ksheen nindra), 11. Completely destroying slumber cum slumber (ksheen nindra-nindra), 12. Completely destroying walking sleepness (ksheen prachala), 13. Completely destroying walking sleepness cum sleepness (ksheen prachala-prachala), 14. Completely destroying styanardhi, 15. Completely destroying pleasure feeling (ksheen satavaidniya), 16. Completely destroying agony feeling (ksheen asatavaidniya), 17. Completely destroying perception delusion (ksheen darshan mohniya), 18. Completely destroying conduct delusion (ksheen charitra mohaniya), 19. Completely destroying life span of hell (skeennarakayu), 20. Completely destroying animal realm life span (ksheen trigayu), 21. Completely destroying human being life span (ksheen manushyayu), 22. Completely destroying gods life span (ksheen devayu), 23. Completely destroying high status (ksheen uchch gotra), 24. Completely destroying low status (ksheen neech gotra), 25. Completely destroying auspicious physical body making (ksheen shubhnama), 26. Completely destroying inauspicious physical bodymaking (ksheen ashubhnama), 27. Completely destroying impediment charity karma (ksheen dana-antraya), 28. Completely destroying impediments of

gain (ksheen labhantraya), 29. Completely destroying impediment of enjoyment (ksheen bhogantraya), 30. Completely destroying impediments of re-enjoyment (ksheen upbhogantraya), 31. Completely destroying impediment of potency (ksheen virya-antraya).

२०६–मंदरे णं पव्वए धरणितले एक्कत्तीसं जोयणसहस्साइं छच्चेव तेवीसे जोयणसए किंचि देसूणे परिक्खेवेणं पण्णत्ते। जया णं सूरिए सव्वबाहिरियं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ, तया णं इहगयस्स मणुस्सस्स एक्कत्तीसाए जोयणसहस्सेहिं अट्ठहि अ एकत्तीसेहिं जोयणसएहिं तीसाए सट्ठिभागे जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ। अभिवड्ढिए णं मासे एक्कत्तीसं सातिरेगाइं राइंदियाइं राइंदियग्गेणं पण्णत्ते। आइच्चे णं मासे एक्कत्तीसं राइंदियाइं किंचि विसेसूणाइं राइंदियग्गेणं पण्णत्ते।

धरती-तल पर मन्दर पर्वत स्थित है। यह पर्वत भूतल पर परिक्षेप यानि परिधि की अपेक्षा से इकतीस हजार छह सौ तेईस योजन से कुछ कम कहा गया है। भरत क्षेत्र में स्थित मनुष्य को इकतीस हजार आठसौ इकतीस और एक योजन के साठ भागों में से तीस भाग अर्थात् ३१८३१-३०/६० की दूरी से सूर्य दृष्टि गोचर होता है लेकिन यह स्थिति तब बनती है जब सूर्य सबसे बाहरी मण्डल में जाकर संचार (विचरण) करता है। अभिवर्धित मास में रात्रि-दिवस की गणना से कुछ अधिक इकतीस रात-दिन कहे गए हैं। इसी प्रकार रात्रि-दिवस की गणना से सूर्यमास कुछ विशेष हीन इकतीस रात-दिन का कहा गया है।

On the surface of the earth the Mount Mandar is situated. The circumference of this mountain has been said of a little lesser than thirty one thousand six hundred twenty three yojanas. The sun is visible to the native human beings of the Bharat area from a distance of thirtieth part of sixty parts and thirty one thousand eight hundred and thirty one yojana but this situation occurs only when the sun moves in the out most orbit. In the increasing month with regard the counting of the days and nights, the numbers of days and nights has been said thirty one. In the same way according to the nights and days counting night and days have been said of some what less than thirty one nights and days.

२०७–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एकत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एक्कत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

रत्नप्रभा पृथ्वी के विषय में कहा गया है कि इसमें इकतीस पल्योपम स्थिति के नारक हैं। अधस्तन सातवीं पृथ्वी में कितने ही नारक इकतीस सागरोपम स्थिति के कहे गए हैं। कितने ही असुरकुमार देव

इकतीस पल्योपम स्थिति के हैं। सौधर्म-ईशान कल्पों के कितने ही देव भी इकतीस पल्योपम स्थिति के कहे गए हैं।

In respect of Ratanprabha hell it has been said that there are the hellish beings of minimum thirty one Palyopama duration. Far below it the seventh hell is situated in which the hellish beings have been said of thirty one Sagropama duration. The fiendish gods are of the thirty one Palyopama duration. The celestial beings of the Sodharma-Ishan kalpahave been described of thirty one Palyopama duration each.

२०८– विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजिआणं देवाणं जहण्णेणं एकत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। जे देवा उवरिम-उवरिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं उक्कोसेणं एकत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। ते णं देवा एक्कत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा, पाणमंति वा, उस्ससंति वा, नीससंति वा। तेसि णं देवाणं एक्कत्तीसं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे एक्कत्तीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

विजय देवों, वैजयन्त देवों, जयंत देवों तथा अपराजित देवों की जघन्य स्थिति इकतीस सागरोपम कही गई है। उपरिम-उपरिम ग्रैवेयक विमानों में देवरूप से उत्पन्न देव इकतीस सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति के कहे गए हैं। वे देव इकतीस अर्धमासों यानि साढ़े पन्द्रह मासों के उपरान्त उच्छ्वास-निःश्वास अथवा आन-प्राण की क्रिया करते हैं। वे देव इकतीस हजार वर्ष के पश्चात् आहार की इच्छा रखते हैं यानि उनमें इकतीस हजार वर्ष के अन्तराल से आहार की इच्छा उत्पन्न होती है।

वहाँ जो भव्य सिद्धिक हैं, वे इकतीस भव ग्रहण करेंगे तदुपरान्त वे सिद्ध-बुद्ध होंगे। वे कर्मों से मुक्त होंगे, तदनन्तर वे परिनिर्वाण को प्राप्त होंगे। अन्ततोगत्वा वे सर्व दुःखों का शमन (अन्त) करेंगे।

The minimum life span of the celestial beings of vijay, vaijayant and aprajit celestial vehicles have been described of thirty one Sagropama duration. The life span of the celestial beings of the upper-upper graivayak celestial vehicles has been said maximum of thirty one Sagropama duration. They do the activity of inhaling and exhaling after thirty one half months i.e. after fifteen and a half month. These gods desire for food once after an interval of thirty one thousand years. There the beings capable of salvation (Bhavyasidhik jeevas) will get thirty one births in future. After that they will become enlightened. They will annihilate all their karmas and attain liberation i.e. Param Nirvana. In the end they will destroy all their miseries and sufferings.

।। इकत्तीसवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Thirty First Samvaya)

बत्तीसवां समवाय

The Thirty Second Samvaya

२०१– बत्तीसं जोगसंगहा पण्णत्ता। तं जहा–

आलोयण १, निरवलावे २, आवईसु दढधम्मया ३।
अणिस्सिओवहाणे ४–य, सिक्खा ५, निप्पडिकम्मया ६।।१।।

अण्णायया ७, अलोभे ८, य, तितिक्खा ९, अज्जवे १०, सुई ११।
सम्मदिट्ठी १२, समाही १३,य, आयारे १४, विणओवए १५।।२।।

धिइमई १६, य, संवेगे १७, पणिही १८, सुविहि १९, संवरे २०।
अत्तदोसोवसंहारे २१, सव्वकामविरत्तया २२।।३।।

पच्चक्खाणे २३-२४, विउस्सग्गे २५, अप्पमादे २६ लवालवे २७।
झाणसंवरजोगे २८, य, उदए मारणंतिए २९।।४।।

संगाणं च परिण्णाया ३०, पायच्छित्तकरणे वि य ३१।
आराहणा य मरणंते ३२, बत्तीसं जोगसंगहा।।५।।

बत्तीस योग संग्रह कहे गए हैं। मोक्ष-साधक के लिए मन, वचन, काय के प्रशस्त व्यापार योग संग्रह हैं। योग संग्रहों के माध्यम से मोक्ष की साधना सम्पन्न होती है। बत्तीस योग संग्रह की नामावली इस प्रकार है, यथा –

(1) **आलोचना**–गुरुजनों के समक्ष अपने दोषों की आलोचना करना।

(2) **निरपलाप**–किसी की आलोचना सुनकर दूसरों के समक्ष प्रकट नहीं करना।

(3) **दृढ़धर्मिता**–उपसर्गों में भी दृढ़ता पूर्वक धर्मपथ पर डटे रहना।

(4) **अनिश्रितोपधान**–दूसरों की सहायता की अपेक्षा नहीं रखते हुए तप करना।

(5) **शिक्षा**–अध्ययन-अध्यापन की कलाओं और शिक्षाओं का अभ्यास करना।

(6) **निष्प्रतिकर्मता**–शारीरिक शृंगार नहीं करना।

(7) **अज्ञातता**–पूजा-प्रतिष्ठा की भावना से ऊपर उठकर गुप्त तप करना।

(8) **अलोभता**–लोभ का परिहार करना।

(9) **तितिक्षा**–समभाव से कष्टों को सहना।

(10) **आर्जव**–सरलभाव धारण करना।

(11) **शुचि**–सत्य एवं संयम की पवित्रता रखना।

(12) **सम्यग्दृष्टिता**–सम्यक्त्व की विशुद्धि।

(13) **समाधि**–मानसिक स्वास्थ्य एवं एकाग्रता।

(14) **आचारोपगत**–पंचविध आचार का निरतिचार पालन करना।

(15) **विनयोपगत**–विनम्रभाव धारण करना।

(16) **धृति-मति**–धैर्य रखना।

(17) **संवेग**–मोक्ष की अभिलाषा रखना।

(18) **प्रणिधि**–माया का त्याग करना।

(19) **सुविधि**–श्रेष्ठ अनुष्ठान में संलग्न रहना।

(20) **संवर**–आस्रव-द्वारों को रोकना।

(21) **आत्मदोषोपसंहार**–अपने दोषों का उपसंहार करना।

(22) **सर्वकाम विरक्तता**–काम-भोगों से विरक्त होना।

(23) **प्रत्याख्यान**–मूल गुणों की शुद्ध आराधना करना।

(24) **प्रत्याख्यान**–उत्तरगुणों की शुद्ध आराधना करना।

(25) **व्युत्सर्ग**–शारीरिक ममता का त्याग करना।

(26) **अप्रमाद**–प्रमाद नहीं करना।

(27) **लवालव**–समाचारी के पालन में सतत सावधान रहना।

(28) **ध्यान संवरयोग**–धर्म-शुक्ल रूप शुभ ध्यानों की आराधना करना।

(29) **उदए मारणन्तिए**–मारणान्तिक कष्ट के समय भी अधीर न होना।

(30) **संग-त्याग**–संग का त्याग करना।

(31) **प्रायश्चित्त करण**–दोषों की निवृत्ति के लिए प्रायश्चित्त लेना।

(32) **आराहणा य मरणंते**–शारीरिक और काषायिक क्षीणता के लिए संलेखना करना।

The number of yoga samgrah has been said twenty two. The correct/right activity/business of mind, body and speech of a seeker of moksha/liberation is called yoga samgrah. The practice of liberation/moksha could be completed through yoga samgrah as :–

1. Confession: To confess voluntarily before the head of the order

बत्तीस योग संग्रह – 1

बत्तीस योग संग्रह – 2

बत्तीस योग संग्रह – 3

बत्तीस योग संग्रह सूत्र

"योग" जैन पारिभाषिक शब्द है जिसका अर्थ है–मन, वचन और काय की प्रवृत्ति। यह प्रवृत्ति दो प्रकार की होती है–शुभ और अशुभ।

मन, वचन, काय की शुभ प्रवृत्तियों को प्रस्तुत सूत्र में "योग संग्रह" नाम से संग्रहित किया गया है। शिष्य अथवा साधक को सूत्र में कथित आलोचना से लेकर मारणांतिक आराधना पर्यंत बत्तीस योग संग्रहों की आराधना में संलग्न रहना चाहिए।

सूत्र सं. 209

Aphorism of Thirty Two Yoga Sangrah

The 'yoga' is Jain technical term it means the tendency of mind-speech and body. This tendency is called of two types–1. Auspicious, 2. Inauspicious. In this present aphorism the auspicious tendencies of mind-speech and body have been collected in the name of 'Yoga Sangrah'. The disciple and the practiser should be engaged from self criticism till death in proportion of 32 'Yoga Sangrah' as narrated in this sutra.

[Sutra No. 209]

2. Not to tell others about the confession made to him
3. to remain firm on the religious track even when one is facing dreadful troubles
4. Not to expect support from others during practice of austerities
5. To practice methods of studies and methods of teaching
6. Not to beautify the physical body
7. to engage in austerities silently and not to lure for worship or fame
8. to avoid greed
9. to endure troubles in a state of equanimity
10. To imbibe simplicity
11. To remain chaste and truthful
12. To remain in extremely right faith
13. To remain mentally healthy and steadfast
14. To follow five types of conduct deligently
15. Humility
16. To remain patient
17. To have desire of liberation
18. To avoid deceit
19. To remain engaged in sublime activities
20. To stop inflow of kamic matter
21. To condemn ones faults
22. To detach oneself from all worldly enjoyments
23. To practice basic characteristics diligently
24. To practice secondary qualities diligently
25. To discard physical attachment
26. To avoid slackness
27. To remain completely vigilant about practice of the code of conduct
28. To engage in good meditations such as pure (Shukla) or righteous (Dhama) concentration

29. Not to become restless even in fatal illness

30. To detach oneself from others

31. To repent and accept punishment for faults

32. To do self-analysis for reducing intensity of passions and mortification of flesh.

२१०–बत्तीसं देविंदा पण्णत्ता तं जहा–चमरे बली धरणे भूआणंदे जाव घोसे महाघोसे, चंदे सूरे सक्के ईसाणे सणंकुमारे जाव पाणए अच्चुए।

बत्तीस देवेन्द्र (भवनवासी देवों के बीस इन्द्र, ज्योतिष्क देवों के दो इन्द्र, वैमानिक देवों के दश इन्द्र) कहे गए हैं। यथा — १. चमर देवेन्द्र, २. बली देवेन्द्र, ३. धरण देवेन्द्र, ४. भूतानन्द देवेन्द्र, ५. वेणुदेव देवेन्द्र, ६. वेणुदाली देवेन्द्र, ७. हरिकान्त देवेन्द्र, ८. हरिस्सह देवेन्द्र, ९. अग्निशिख देवेन्द्र, १०. अग्निमाणव देवेन्द्र, ११. पूर्ण देवेन्द्र, १२. वशिष्ठ देवेन्द्र, १३. जलकन्त देवेन्द्र, १४. जलप्रभ देवेन्द्र, १५. अमितगति देवेन्द्र, १६. अमित वाहन देवेन्द्र, १७. वेलम्ब देवेन्द्र, १८. प्रभंजन देवेन्द्र, १९. घोष देवेन्द्र, २०. महाघोष देवेन्द्र, २१. चन्द्र देवेन्द्र, २२. सूर्य देवेन्द्र, २३. शक्र देवेन्द्र, २४. ईशान देवेन्द्र, २५. सनत्कुमार देवेन्द्र, २६. माहेन्द्र देवेन्द्र, २७. ब्रह्म देवेन्द्र, २८. लान्तक देवेन्द्र, २९. शुक्र देवेन्द्र, ३०. सहस्रार देवेन्द्र, ३१. प्राणत देवेन्द्र, ३२. अच्युत देवेन्द्र।

The number of head gods (Devendra) has been said to be thirty two. They are: twenty Indra of residential gods, two Indras of stellar gods, ten Indra of gods of celestial vehicles. They are described as follows :– 1. Chamar Devendra, 2. Bali Devendra, 3. Dharam Devendra, 4. Bhutanand Devendra, 5. Venudev Devendra, 6. Venudev Devendra, 7. Harikant Devendra, 8. Harissah Devendra, 9. Agnishikha Devendra, 10. Agnimanav Devendra, 11. Puran Devendra, 12. Vashishth Devendra, 13. Jalkant Devendra, 14. Jalprabh Devendra, 15. Amitgati Devendra, 16. Amitvachan Devendra, 17. Velambh Devendra, 18. Prabhanjan Devendra, 19. Ghosh Devendra, 20. Mahaghosh Devendra, 21. Chander Devendra, 22. SuryaDevendra, 23. Shakra Devendra, 24. Ishan Devendra, 25. Sanant Kumar Devendra, 26. Mahendra Devendra, 27. Brahma Devendra, 28. Lantak Devendra, 29. Shukra Devendra, 30. Sahsarasar Devendra, 31. Pranat Devendra, 32. Achyut Devendra.

२११–कुंथुस्स णं अरहओ बत्तीससहिआ बत्तीसं जिणसया होत्था।

कुन्थु अर्हत् के बत्तीस सौ बत्तीस केवली जिन थे।

The number of Omniscients of (Arihant) Lord Kunthu Swamiwas thirty two hundred and thirty two.

२१२–सोहम्मे कप्पे बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

रेवइणक्खत्ते बत्तीसइतारे पण्णत्ते।

बत्तीसतिविहे णट्टे पण्णत्ते।

सौधर्म कल्प में बत्तीस लाख विमानावास कहे गए हैं।

रेवती नक्षत्र में बत्तीस तारे कहे गए हैं।

बत्तीस प्रकार की नाट्य-विधि (नृत्य) कही गई है।

The celestial vehicles (vimans) in the Sodharma heaven have been thirty two. The number of the stars in Revati constellation has been said as thirty two. The dancing methods have been described as of thirty two types.

२१३–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं बत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं बत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

रत्नप्रभा पृथ्वी में बत्तीस पल्योपम स्थिति के अनेकों नारक कहे गए हैं। इसके नीचे सातवीं पृथ्वी है जिसमें कितने ही नारक बत्तीस सागरोपम स्थिति वाले कहे गए हैं। कितने ही असुरकुमार देव बत्तीस पल्योपम स्थिति के हैं। सौधर्म-ईशान कल्पों में भी कितने ही देवों की स्थिति बत्तीस पल्योपम कही गई है।

About Ratanprabha hell it has been said that the life duration of the hellish beings of this hell is thirty two Palyopama. Far below it the seventh hell (land) is situated in which the life span of the infernal beings has been said of thirty two Sagropama duration. The fiendish gods have a life span of thirty two Palyopama duration. The life duration of the celestial beings of Sodharma-Ishan heavens have been said as thirty two Palyopama.

२१४–जे देवा विजय-वेजयंत-जयंत-अवराजियविमाणेसु देवत्ताए उववण्णा तेसि णं देवाणं अत्थेगइयाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। ते णं देवा बत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा, पाणमंति वा, उस्ससंति वा, नीससंति वा। तेसि णं देवाणं बत्तीसवाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे बत्तीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

—जो देव विजय-वैजयन्त, जयन्त-अपराजित विमानों में देवरूप से उत्पन्न होते हैं, उन देवों की स्थिति बत्तीस सागरोपम कही गई है। वे देव बत्तीस अर्धमासों (सोलह मासों) के पश्चात् उच्छ्वास-

नि:श्वास अथवा आन-प्राण की क्रिया सम्पन्न करते हैं। वे देव बत्तीस हजार वर्ष के बाद आहार की इच्छा रखते हैं यानि उनमें बत्तीस हजार वर्ष के अन्तराल से आहार की इच्छा उत्पन्न होती है।

वहाँ जो भव्य सिद्धिक जीव हैं, उनमें से कितने ही बत्तीस भव (जन्म) ग्रहण करेंगे, तदुपरान्त वे सिद्ध-बुद्ध होंगे। वे कर्मों से मुक्त होकर परिनिर्वाण को प्राप्त होंगे। अन्ततोगत्वा वे सर्व-दु:खों का शमन (अन्त) करेंगे।

The gods who reincarnated into the celestial vehicles of Vijay, Vaijayant, Jayant and Aprajit as a celestial beings have been described of thirty two Sagropama life duration. They inhale and exhale i.e. do the activity of respiration once after the completion of thirty two half months i.e. after sixteen months. They desire for food once after the expiry of thirty two thousand years.

The beings capable of salvation (Bhavyasidhik jeeva) who reside there, will take thirty two births in future. After that they will get enlightenment. After liberation from the accumulated karmas they will attain salvation i.e. Param Nirvana. At last they will destroy all the miseries and sufferings.

।। बत्तीसवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Thirty Second Samvaya)

तेतीसवां समवाय

The Thirty Three Samvaya

२१५–तेत्तीसं आसायणाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–

१. सेहे रायणियस्स आसन्नं गंता भवइ आसायणा सेहस्स।

२. सेहे रायणियस्स परओ गंता भवइ आसायणा सेहस्स।

३. सेहे रायणियस्स सपक्खं गंता भवइ, आसायणा सेहस्स।

४. सेहे रायणियस्स आसन्नं ठिच्चा भवइ, आसायणा सेहस्स जाव।

५. सेहे रायणियस्स पुरओ ठिच्चा भवइ, आसायणा सेहस्स।

६. सेहे रायणियस्स सपक्खं ठिच्चा भवइ, आसायणा सेहस्स।

७. सेहे रायणियस्स आसन्नं निसीइत्ता भवइ, आसायणा सेहस्स।

८. सेहे रायणियस्स पुरओ निसीइत्ता भवइ, आसायणा सेहस्स।

९. सेहे रायणियस्स सद्धिं सपक्खं निसीइत्ता भवइ, आसायणा सेहस्स।

१०. सेहे रायणियस्स सद्धिं बहिया वियारभूमिं निक्खंते समाणे पुव्वामेव सेहतराए आयामेइ पच्छा रयणिए, आसायणा सेहस्स।

११. सेहे रायणिए सद्धिं बहिया विहारभूमिं वा वियारभूमिं वा निक्खंते समाणे तत्थ पुव्वामेव सेहतराए आलोएति पच्छा रायणिए, आसायणा सेहस्स।

१२. सेहे रायणियस्स रातो वा वियाले वा वाहरमाणस्स अज्जो! के सुत्ते! के जागरे! तत्थ सेहे जागरमाणे रायणियस्स अपडिसुणेत्ता भवति, आसायणा सेहस्स।

१३. केइ रायणियस्स पुव्वं संलवित्तए सिया, तं सेहे पुव्वतरागं आलवेति पच्छा रायणिए, आसायणा सेहस्स।

१४. सेहे असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिगाहेत्ता तं पुव्वमेव सेहतरागस्स आलोएइ, पच्छा रायणियस्स, आसायणा सेहस्स।

१५. सेहे असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिगाहेत्ता तं पुव्वमेव सेहतरागस्स अवदंसेति, पच्छा रायणियस्स, आसायणा सेहस्स।

१६. सेहे असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिगाहेत्ता तं पुव्वामेव सेहतरागं उवणिमंतेइ, पच्छा रायणियं, आसायणा सेहस्स।

१७. सेहे रायणिएणं सद्धिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिगाहेत्ता तं रायणियं अणापुच्छित्ता जस्स-जस्स इच्छइ तस्स-तस्स खद्धं-खद्धं दलयइ, आसायणा सेहस्स।

१८. सेहे असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिगाहेत्ता रायणिएणं सद्धिं आहरेमाणे तत्थ सेहे खद्धं-खद्धं डायं-डायं ऊसढं-ऊसढं रसितं-रसितं मणुण्णं-मणुण्णं मणामं-मणामं निद्धं-निद्धं लुक्खं-लुक्खं आहरेत्ता भवइ, आसायणा सेहस्स।

१९. सेहे रायणियस्स वाहरमाणस्स अपडिसुणेत्ता भवइ, आसायणा सेहस्स।

२०. सेहे रायणियस्स खद्धं-खद्धं वत्ता भवइ, आसायणा सेहस्स।

२१. सेहे रायणियस्स 'किं' ति वइत्ता भवइ, आसायणा सेहस्स।

२२. सेहे रायणियं 'तुमं' ति वइत्ता भवइ, आसायणा सेहस्स।

२३. सेहे रायणियं तज्जाएण-तज्जाएण पडिभणित्ता भवइ, आसायणा सेहस्स।

२४. सेहे रायणियस्स कहं कहेमाणस्स 'इति एवं' ति वत्ता न भवति, आसायणा सेहस्स।

२५. सेहे रायणियस्स कहं कहेमाणस्स 'नो तुमरती' ति वत्ता न भवति, आसायणा सेहस्स।

२६. सेहे रायणियस्स कहं कहेमाणस्स कहं अच्छिंदित्ता भवति, आसायणा सेहस्स।

२७. सेहे रायणियस्स कहं कहेमाणस्स परिसं भेत्ता भवइ, आसायणा सेहस्स।

२८. सेहे रायणियस्स कहं कहेमाणस्स तीसे परिसाए अणुट्ठिताए अभिन्नाए अवुच्छिन्नाए अव्वोगडाए दोच्चं पि तमेव कहं कहित्ता भवति, आसायणा सेहस्स।

२९. सेहे रायणियस्स सेज्जा-संथारगं पाएणं संघट्टित्ता, हत्थेणं अणणुण्णवित्ता गच्छति, आसायणा सेहस्स।

३०. सेहे रायणियस्स सेज्जा-संथारए चिट्ठित्ता वा निसीइता वा तुयट्टित्ता वा भवइ, आसायणा सेहस्स।

३१. सेहे रायणियस्स उच्चासणे चिट्ठित्ता वा निसीइत्ता वा तुयट्टित्ता बा भवति, आसायणा सेहस्स।

३२. सेहे रायणियस्स समासणे चिट्ठित्ता वा निसीइत्ता वा तुयट्टित्ता वा भवति, आसायणा सेहस्स।

३३. सेहे रायणियस्स आलवमाणस्स तत्थगए चेव पडिसुणित्ता भवइ, आसायणा सेहस्स।

सम्यग्दर्शनादि धर्म की विराधनारूप आशातनाएँ कही गई हैं जिनकी संख्या तेंतीस हैं। यथा —

१. शैक्ष साधु (नवदीक्षित या अल्प दीक्षा-पर्याय वाला साधु) रात्निक (अधिक दीक्षा पर्याय वाले) साधु के अति निकट होकर गमन करे। यह शैक्षसाधु की प्रथम आशातना है।

२. शैक्ष साधु की दूसरी आशातना है कि वह रात्निक साधु से आगे-आगे गमन करे।

३. शैक्ष साधु की तीसरी आशातना है कि वह रात्निक साधु के संग-संग यानि बराबरी से गमन करे।

४. शैक्ष साधु की चौथी आशातना है कि वह रात्निक साधु के आगे खड़ा हो।

५. शैक्ष साधु की पाँचवीं आशातना है कि वह रात्निक साधु के साथ बराबरी से खड़ा हो।

६. शैक्ष साधु की छठी आशातना है कि वह रात्निक साधु के अति निकट खड़ा हो।

७. शैक्ष साधु की सातवीं आशातना है कि वह रात्निक साधु के आगे बैठे।

८. शैक्ष साधु की आठवीं आशातना है कि वह रात्निक साधु के साथ बराबरी से बैठे।

९. शैक्ष साधु की नवीं आशातना है कि वह रात्निक साधु के अति निकट बैठे।

१०. शैक्ष साधु की दसवीं आशातना है कि वह रात्निक साधु के साथ बाहर विहार भूमि के लिए निकले तो वह रात्निक साधु के पूर्व आचमन (शौच-शुद्धि) की क्रिया सम्पन्न करे।

११. शैक्ष साधु की ग्यारहवीं आशातना है कि वह रात्निक साधु के साथ बाहर विचार भूमि या विहारभूमि के लिए निकले तो वह रात्निक साधु से पूर्व आलोचना करे और रात्निक साधु पीछे करे।

१२. शैक्ष साधु की बारहवीं आशातना है कि जब कोई साधु या गृहस्थ रात्निक साधु के साथ पहले से बात कर रहा हो तो वह रात्निक साधु से पहले ही बोले और रात्निक साधु पीछे बोले।

१३. शैक्ष साधु की तेरहवीं आशातना है कि रात्निक साधु रात्रि में या विकाल में उससे पूछे कि आर्य! कौन सो रहे हैं और कौन जाग रहे हैं? यह सुनकर भी वह अनसुनी करके कोई उत्तर न दे।

१४. शैक्ष साधु की चौदहवीं आशातना है कि वह अशन, पान, खादिम या स्वादिम लाकर सबसे पहले किसी अन्य शैक्ष साधु के सामने आलोचना करे तदुपरान्त रात्निक साधु के सामने आलोचना करे।

१५. शैक्ष साधु की पन्द्रहवीं आशातना है कि वह अशन, पान, खादिम या स्वादिम को लाकर पहले किसी अन्य शैक्ष साधु को दिखलावे तदुपरान्त रात्निक साधु को दिखावे।

१६. शैक्ष साधु की सोलहवीं आशातना है कि वह अशन, पान, खादिम या स्वादिम - आहार लाकर पहले किसी अन्य शैक्ष साधु को भोजन के लिए निमन्त्रण दे, तदुपरान्त रात्निक साधु को निमन्त्रण दे।

१७. शैक्ष साधु की सत्तरहवीं आशातना है कि वह रात्निक साधु के साथ अशन, पान, खादिम और स्वादिम आहार को लाकर रात्निक साधु से बिना पूछे उस आहार को किसी को दे।

१८. शैक्ष साधु की अठारहवीं आशातना है कि वह अशन पान, खादिम, स्वादिम आहार लाकर रात्निक साधु के साथ भोजन करते हुए उत्तम भोज्य पदार्थों को जल्दी-जल्दी बड़े-बड़े कवलों से खाए।

१९. शैक्ष साधु की उन्नीसवीं आशातना है कि वह रात्निक साधु के द्वारा कुछ कहे जाने पर उसे अनसुना कर दे।

२०. शैक्ष साधु की बीसवीं आशातना है कि वह रात्निक साधु के द्वारा कुछ कहे जाने पर अपने स्थान पर ही बैठे हुए सुने।

२१. शैक्ष साधु की इक्कीसवीं आशातना है कि वह रात्निक साधु के द्वारा कुछ कहे जाने पर क्या कहा ? इस प्रकार से कहे।

२२. शैक्ष साधु की बाईसवीं आशातना है कि वह रात्निक साधु को "तुम" कहकर बोले यानि तुच्छ शब्दों का प्रयोग करे।

२३. शैक्ष साधु की तेईसवीं आशातना है कि वह रात्निक साधु से चप-चप करता हुआ उद्दंडता से बोले।

२४. शैक्ष साधु की चौबीसवीं आशातना है कि वह रात्निक साधु के कथा करते हुए "जी हाँ" आदि शब्दों से अनुमोदना न करे।

२५. शैक्ष साधु की पच्चीसवीं आशातना है कि वह रात्निक साधु के द्वारा धर्म कथा कहते समय "तुम्हें स्मरण नहीं" इस प्रकार से बोले।

२६. शैक्ष साधु की छब्बीसवीं आशातना है कि वह रात्निक साधु के द्वारा धर्मकथा कहते समय "बस करो" इत्यादि कहे।

२७. शैक्ष साधु की सत्ताईसवीं आशातना है कि वह रात्निक साधु के द्वारा धर्मकथा कहते समय परिषद् का भेदन करे।

२८. शैक्ष साधु की अट्ठाईसवीं आशातना है कि वह रात्निक साधु के धर्मकथा कहते हुए उस सभा के नहीं उठने पर दूसरी-तीसरी बार भी उसी कथा को कहे।

२९. शैक्ष साधु की उनतीसवीं आशातना है कि वह रात्निक साधु के शय्या-संतारक को पैर से ठुकरावे।

३०. शैक्ष साधु की तीसवीं आशातना है कि वह रात्निक साधु के शय्या या आसन पर खड़ा होवे, बैठे-सोये।

३१-३२. शैक्ष साधु की इकत्तीसवीं - बत्तीसवीं आशातना है कि वह रात्निक साधु से ऊँचे या समान आसन पर बैठे।

३३. शैक्ष साधु की तेतीसवीं आशातना है कि वह रात्निक साधु के कुछ कहने पर अपने आसन पर बैठा-बैठा उत्तर दे।

There has been a description of impropitious discourtesies of right perception religion. Their numbers is thirty three. They are –

1. If the Shaiksh Sadhu (newly initiated monk) moves very close to the senior monk, this is the first ashatana of the newly initiated monk.

2. The second ashatana (discourtesy) of the newly initiated monk is to walk in front or ahead of the senior monk.

रात्निक : अधिक दीक्षा पर्याय वाला

तेतीस आशातना – 1

शैक्ष : नवदीक्षित (छोटा साधु)

तेतीस आशातना – 2

12
गुरुदेव! जम्बूद्वीप कितना बड़ा है?
एक लाख योजन।
रात्निक से पहले बोलना
13
वत्स! कौन–कौन जाग रहा है?
रात्निक के पूछने पर जवाब न देना
14
गोचरी लाकर शैक्ष के समक्ष आलोचना करे।
15
गोचरी लाकर शैक्ष को पहले दिखावे।
16
गोचरी के लिए पधारिए।
भोजन के लिए पहले शैक्ष को निमन्त्रण दे।
17
रात्निक से पूछे बिना दूसरों को परोस देवे।
18
अच्छा भोजन रात्निक से पहले जल्दी–जल्दी खा ले।
19
आर्य! कहाँ जा रहे हो?
रात्निक की बात अनसुनी कर देवे।
20
वत्स! सुनो
क्या है?
रात्निक के कुछ कहने पर भी अपने स्थान पर बैठे–बैठे सुनना
21
वत्स! क्या तुम इधर आओगे?
थोड़ी देर रुको।
रात्निक के पूछने पर बैठे–बैठे जवाब दे।
22
तुमने क्या कहा?
रात्निक से तुच्छ शब्दों में बोले।

तेतीस आशातना – 3

23
यहाँ कहाँ जा रहे हो?
चुपचाप पीछे–पीछे आ जाओ।
रात्निक के साथ उद्दंडतापूर्वक बोलना।
24
आगमकार ने बताया है......
रात्निक की बात नहीं सुने।
25
...के बीच में।
जम्बूद्वीप में मेरु पर्वत है...
धर्मकथा करते समय गुरु के बीच में बोलना।
26
बस करो, बहुत हो गया।
धर्मकथा करते समय रात्निक को टोकना।
27
मेरे पास आओ ! मैं तुम्हें इनसे अच्छी कथा सुनाऊँगा।
शैक्ष रात्निक की परिषद् का भेदन करे।
28
अरे अब तो मेरे पास आ जाओ। मैं तुम्हें इनसे अच्छी कथा सुनाता हूँ।
बार–बार परिषद भेदने का प्रयास करे।
29
भगवान महावीर......
चलो उठो, कथा समाप्त हो गई।
रात्निक की धर्मकथा को बीच में समाप्त कर देना।
30
रात्निक की शय्या या आसन पर खड़े होना।
31
रात्निक की शय्या–संस्तारक को पैर से ठुकराना।
32
रात्निक से ऊँचे आसन पर बैठना।
33
आर्य! मेरी माला कहाँ है।
वहाँ नीचे पड़ी है।
रात्निक को बैठे–बैठे ही जवाब देना।

तेतीस आशातना सूत्र

सम्यग्दर्शन आदि गुणों का घात करने वाली अविनयपूर्ण क्रियाओं को आशातना कहते हैं। वस्तुतः विनय की नींव पर ही धर्म का प्रासाद (महल) खड़ा होता है। विनय के अभाव में सभी धर्म क्रियाएं व्यर्थ हैं।

शैक्ष (छोटी दीक्षा वाले साधु) को रत्नाधिक या रात्निक (बड़ी दीक्षा वाले साधु या गुरु) की विनय भक्ति करनी चाहिए। यही उसके लिए शास्त्रों का आदेश और मोक्ष का मार्ग है।

सूत्र सं. 215 में तेतीस आशातनाओं का वर्णन है। सुज्ञ शैक्ष मुनि को रात्निक के प्रति उक्त विपरीत व्यवहारों में सदैव सावधान रहना चाहिए।

सूत्र सं. 215

Thirty Three Asatana Sutra

The activities performed stunbornly, destroying the attributions of right perception etc. are called 'Asatana'. Virtually, the palace of spirituality is erected on the foundation of submissiveness. Without humility all the religious activities are baseless.

The newly initiated monk must serve his elder, senior and learned ascetics. This one is the advice of scriptures and is the way to liberation.

33 Asatana are narrated in sutra no. 215. The humbles newly consecrated monk should always be careful in not performing there activities towards his senior ascetics.

[Sutra No. 215]

3. The third ashatana of the newly initiated monk is to walk flanking with the elder monk.
4. The fourth ashatana of a newly initiated monk is to stand ahead of the elder/seniormonk.
5. The fifth ashatana of a newly initiated monk to stand flanking with the senior monk.
6. The sixth ashatana of the newly initiated monk is to stand very near to senior monk.
7. The seventh ashatana of the newly initiated monk is to sit ahead of a senior monk.
8. The eighth ashatana of the newly initiated monk is to sit flanking with the senior ascetic.
9. The nineth ashatana of the newly initiated monk is to sit very near to elder monk.
10. The tenth ashatana of the newly initiated monk is if he goes along with the elder monk for natural call and does the activities of ablution well before the elder ascetic.
11. The eleventh ashatana if the newly initiated monk is at the time of going for natural call or any another place if he repents earlier than the elder ascetic and the senior monk does it later on.
12. The twelfth ashatana of the newly initiated monk is if he talks before the elder/senior monk with some one who is already talking to the elder monk.
13. The thirteenth ashatana of the newly initiated monk is if he does not answer or avoid an elder ascetic when he asks him about who is sleeping or who is not. Even after listening the question if he keeps mum.
14. The fourteenth ashatana of the newly initiated monk is if he repents before another newly initiated monk after bringing food, water, nutrients and delicious food and repents before the elder ascetic.
15. The fifteenth ashatana of the newly initiated monk is if after bringing cereal, water, nutrients and delicious food, he first shows to another newly initiated monk and later to the elder one.

16. The sixteenth ashatana of the newly initiated monk is if he invited first the another newly initiated monk (after bringing cereal, water, nutrients and delicious food to consume) and then invites the elder monks.

17. The seventeenth ashatana of the newly initiated monk is if he after bringing cereal, water, nutrients and delicious food while going with the elder monks, he gives it to any one else without taking the permission of the senior ascetic.

18. If the newly initiated monk consumes sumptuous food'hurriedly taking big morsel of while taking food in the company of his elder monks then it is the eighteenth discourtesy of newly initiated monk.

19. The nineteenth discourtesy of the newly initiated monk is if he pretends of not listening when elder monks say something.

20. The twentieth discourtesy of the newly initiated monk is if he listens his elder monks while sitting on seat.

21. The twenty first ashatana of the newly initiated monk is if the senior monks asks him to do some thing and he says, "what did he say?"

22. The twenty second discourtesy of newly initiated monk is if he calls his elder monk as 'Tum' or by using contemptible words.

23. The twenty third discourtesy of the newly initiated monk is if the speaks arrogantly, rebelliously, boasting himself before the elder monk.

24. The twenty fourth discourtesy of the newly initiated monk is if he does not consent to his senior monk by saying "Yes Sir" while he is delivering a discourse.

25. The twenty fifth discourtesy of a newly initiated monk is if he raises any objection, at the time when the elder ascetic is delivering his sermons by saying "you have forgotten".

26. The twenty sixth discourtesy is if he obstructs his elder monks his preaching by saying "now stop".

27. The twenty seventh indecorum of the newly initiated monk is if he disturbs the religious assembly while elder monk is delivering sermons.

28. The twenty eighth discourtesy of the newly initiated monk is if the religious assembly/congregation having listened the discourse of the elder monk is still sitting there and he repeats that discourse twice and thrice.

29. The twenty nineth ashatana of the newly initiated monk is if he kicks the bed and bed sheets of senior monk with his feet.

30. The thirtieth ashatana of a newly initiated monk is if he keeps standing on the bed or seat of the elder monk or does the activities of sleeping or sitting.

31-32. The thirty first and thirty second ashatana of the newly initiated monk is if he sits on a higher seat than his elder monk or sits by his side on at same level.

33. The thirty third discourtesy of newly initiated monk is if he replies while sitting on his seat whenever any question is asked by his senior monk.

२१६–चमरस्स णं असुरिंदस्स असुररण्णो चमरचंचाए रायहाणीए एक्कमेक्कदाराए तेत्तीसं-तेत्तीसं भोमा पण्णत्ता। महाविदेहे णं वासे तेत्तीसं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं विक्खंभेणं पण्णत्ते। जया णं सूरिए बाहिराणंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता णं चारं चरइ तया णं इहगयस्स पुरिसस्स तेत्तीसाए जोयणसहस्सेहिं किंचि विसेसूणेहिं चक्खुप्फासं हव्वमागच्छइ।

चमरचंचा नगरी असुरेन्द्र असुरराज चमर की राजधानी है जिसके प्रत्येक द्वार के बाहर तेतीस-तेतीस भौम यानि नगर के आकार वाले विशिष्ट स्थान हैं। महाविदेह वर्ष (क्षेत्र) तेतीस हजार योजन से कुछ अधिक योजन विस्तार वाला कहा गया है। सूर्य इस भरत क्षेत्र-गत मनुष्य को तेतीस हजार योजन से कुछ विशेष कम योजन की दूरी से दृष्टिगोचर होता है लेकिन यह स्थिति तब बनती है जब सूर्य सर्व बाह्य मण्डल से भीतर की ओर तीसरे मण्डल पर आकर संचरण या विचरण करे।

The capital city of demon king Asurendra Chamar is Chamar Chanchcha at the each gate of which there are thirty three bhoam i.e. special places of the size of a city. The Mahavideh region is a little more than thirty three thousand yojanas in expansion. The sun is visible to the human beings of this Bharat region from the distance of a fixed little over of thirty three thousand yojanas but this condition takes place only when the sun moves inner side of the third orbit of its outer most orbit.

२१७–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। अहेसत्तमाए पुढवीए काल-महाकाल-रोरुय-महारोरुएसु नेरइयाणं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। अप्पइट्ठाणनरए नेरइयाणं अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। असुरकुमाराणं अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। सोहम्मीसाणेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

रत्नप्रभा पृथ्वी के विषय में कहा गया है कि इसमें तेतीस पल्योपम स्थिति के कितने ही नारक हैं। इसके नीचे सातवीं पृथ्वी है जिसमें काल, महाकाल, रौरुक और महारौरुक नारकावासों के नारकों की उत्कृष्ट स्थिति तेतीस सागरोपम कही गई है। उसी सातवीं पृथ्वी के अप्रतिष्ठान नरक में नारकों की अजघन्य-अनुत्कृष्ट यानि जघन्य और उत्कृष्ट के भेद से रहित पूरी तेतीस सागरोपम स्थिति कही गई है। कितने ही असुरकुमार देव तेतीस पल्योपम स्थिति के कहे गए हैं। कितने ही सौधर्म-ईशान कल्पों के देव तेतीस पल्योपम स्थिति वाले हैं।

In respect of Ratanprabha hell it has been said that the lifespan of the hellish beings of the land is of thirty three Palyopama duration. Below it the seventh hell is situated in which the maximum life span of the infernal beings of Kaal, Mahakaal, Roarak and Maharoarak hells has been narrated thirty three Sagropama duration. In the Apritishtthan of that seventh (hell) the life span of hellish beings has been narrated without discriminating the minimum and maximum, exactly of thirty three Sagropama duration. The fiendish demons have been of thirty three Palyopama life duration. The celestial beings of Sodharma-Ishan kalpas have been of thirty three Palyopama life-span.

२१८–विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजिएसु विमाणेसु उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। जे देवा सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववण्णा, तेसि णं देवाणं अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। ते णं देवा तेत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमंति वा, पाणमंति वा, उस्ससंति वा, नीससंति वा। तेसि णं देवाणं तेत्तीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे तेत्तीसं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति।

विजय-वैजयन्त-जयन्त-अपराजित इन चार अनुत्तर विमानों में देवों की उत्कृष्ट स्थिति तेतीस सागरोपम कही गई है। सर्वार्थसिद्ध नामक पाँचवाँ अनुत्तर महाविमान है। इसमें जो देव, देवरूप से उत्पन्न होते हैं उन देवों की अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थिति पूरे तेतीस सागरोपम कही गई है। वे देव तेतीस अर्धमासों यानि साढ़े सोलह मासों के उपरान्त उच्छ्वास-निःश्वास अथवा आन-प्राण की क्रिया सम्पन्न करते हैं। वे देव तेतीस हजार वर्षों के पश्चात् आहार की इच्छा रखते हैं यानि उनमें तेतीस हजार वर्षों के अन्तराल से आहार की इच्छा उत्पन्न होती है।

वहाँ जो भव्य सिद्धिक जीव हैं, वे तेतीस भव (जन्म) ग्रहण करेंगे। तदुपरान्त वे सिद्ध-बुद्ध होंगे। वे देव कर्मों से मुक्त होंगे, तदनन्तर वे परिनिर्वाण को प्राप्त होंगे। अन्ततोगत्वा वे सर्व दुःखों का शमन (अन्त) करेंगे।

विशेष: एक बात ध्यातव्य है कि सर्वार्थसिद्ध महाविमान के देव तो नियम से एक भव (जन्म) ग्रहण करके मुक्त होंगे किन्तु विजयादि शेष चार विमानों के देवों में से कोई एक भव और कोई दो भव ग्रहण करके मुक्त होते हैं।

It has been told that there are four Anuttar celestial vehicles is namely, Vijay, Vaijayant, Jayant, Aprajit in which the lifespan of celestial beings has been stated as maximum of thirty three Sagropama duration. The fifth Anuttar great celestial vehicle is Sarvarthsidhi in which whoever gods reincarnates as a celestial beings his life span has been said, without taking consideration of minimum and maximum, exactly thirty three Sagropama. They do the activity of inhaling and exhaling or respiration once after the interval of thirty three half months i.e. after sixteen and a half months. They long for food once after the expiry of thirty three thousand years.

There the (Bhavyasidhik jeevas beings) capable of salvation will take thirty three births in future. After that they will be annihilate all their accumulated karmas and attain ultimate goal of life i.e. Param Nirvana. Eventually, they will destroy all their miseries and sufferings.

Note : Here one thing is to be considered that the celestial beings of great Sarvarthsidhi celestial vehicle will get salvation only after taking only one birth in future but the celestial beings of Vijay, Vaijayant, Jayant and Aprajit viman get liberation after taking one or maximum two births in future.

॥ तेतीसवां समवाय समाप्त ॥

(The End of Thirty Three Samvaya)

चौंतीसवां समवाय

The Thirty Fourth Samvaya

२१९–चोत्तीसं बुद्धाइसेसा पण्णत्ता, तं जहा–अवट्ठिए केस-मंसु-रोम-नहे १, निरामया निरुवलेवा गायलट्ठी २, गोक्खीरपंडुरे मंससोणिए ३, पउमुप्पलगंधिए उस्सासनिस्सासे ४, पच्छन्ने आहार-नीहारे अदिस्से मंसचक्खुणा ५, आगासगयं चक्कं ६, आगासगयं छत्तं ७, आगासगयाओ सेयवरचामराओ ८, आगासफालिआमयं सपायपीढं सीहासणं ९, आगासगओ कुडभीसहस्सपरिमंडिआभिरामो इंदज्झओ पुरओ गच्छइ १०, जत्थ जत्थ वि य णं अरहंता भगवंतो चिट्ठंति वा निसीयंति वा तत्थ तत्थ वि य णं जक्खा देवा संछन्नपत्त-पुप्फ-पल्लवसमाउलो सच्छत्तो सज्झओ संघटो सपडागो असोगवरपायवो अभिसंजायइ ११, ईसिं पिट्ठओ मउडठाणंमि

तेयमंडलं अभिसंजाइ, अंधकारे वि य णं दस दिसाओ पभासेइ १२, बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे १३, अहोसिरा कंटया भवंति १४, उउविवरीया सुहफासा भवंति १५, सीयलेणं सुहफासेणं सुरभिणा मारुएणं जोयणपरिमंडल सव्वओ समंता-संपमज्जिज्जइ १६, जुत्तफुसिएणं मेहेण य निहयरयरेणूयं किज्जइ १७, जल-थलभासुरपभूतेणं विंटट्ठाइणा दसद्धवण्णेणं कुसुमेणं जाणुस्सेहप्पमाणमित्ते पुप्फोवयारे किज्जइ १८, अमणुण्णाणं सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाणं अवकरिसो भवइ १९, मणुण्णाणं सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाणं पाउब्भावो भवइ २०, पच्चाहरओ वि य णं हिययगमणीओ जोयणनीहारी सरो २१, भगवं च णं अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ २२, सा वि य णं अद्धमागही भासा भासिज्जमाणी तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं दुप्पय-चउप्पय-मिय-पसु-पक्खि-सरीसिवाणं अप्पणो हिय-सिव-सुहय-भासत्ताए परिणमइ २३, पुव्वबद्धवेरा वि य णं देवासुर-नगा-सुवण्ण-जक्ख-रक्खस-किंनर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगा अरहओ पायमूले पसंतचित्तमाणसा धम्मं निसामंति २४, अण्णउत्थियपावयणिया वि य णं आगया वंदंति २५, आगया समाणा अरहओ पायमूले निप्पलिवयणा हवंति २६, जओ जओ वि य णं अरहंतो भगवंतो विहरंति तओ तओ वि य णं जोयणपणवीसाएणं ईती न भवइ २७, मारी न भवइ २८, सचक्कं न भवइ २९, परचक्कं न भवइ ३०, अइवुट्ठी न भवइ ३१, अणावुट्ठी न भवइ ३२, दुब्भिक्खं न भवइ ३३, पुव्वुप्पण्णा वि य णं उप्पाइया वाहीओ खिप्पमेव उवसमंति ३४।

बुद्धों यानि तीर्थंकर भगवन्तों के चौंतीस अतिशय कहे गए हैं, यथा—

१. नख (नाखून), केश, श्मश्रु, व रोम आदि का नहीं बढ़ना।

२. रोगादि से रहित तथा मलरहित निर्मल देह-लता होना।

३. गाय के दुग्ध के समान रक्त (रुधिर) और मांस का श्वेत वर्ण होना।

४. पद्म-कमल सदृश सुगन्धित उच्छ्वास-निःश्वास होना।

५. चर्म-चक्षु से अदृश्य प्रच्छन्न आहार-नीहार होना।

६. आकाश में धर्मचक्र का चलना।

७. आकाश में तीन छत्रों का घूमते रहना।

८. आकाश में उत्तम श्वेत चामरों का ढोला जाना।

९. आकाश सदृश निर्मल स्फटिकमय पाद-पीठ युक्त सिंहासन का होना।

१०. आकाश में हजार लघु पताकाओं से युक्त इन्द्र-ध्वज का आगे-आगे चलना।

११. जहाँ-जहाँ भी अरहन्त-भगवन्त ठहरते-बैठते हैं, वहाँ-वहाँ यक्ष-देवों के द्वारा पत्र, पुष्प, पल्लवों से व्याप्त, छत्र, ध्वजा, घंटा और पताका से युक्त श्रेष्ठ अशोक वृक्ष का निर्मित होना।

१२. अंधकार में यानि रात्रि के समय भी दशों दिशाओं को प्रकाशित करता हुआ मस्तक के कुछ पीछे तेज मण्डल यानि भामण्डल का होना।

१३. जहाँ भी तीर्थंकर-भगवन्तों का विहार हो, उस भूमि-भाग का बहुसम और रमणीय होना।

१४. विहार-स्थल (जहाँ से तीर्थंकर-भगवन्तों का विहार हो, वह स्थान विशेष) के काँटों का अधोमुख हो जाना।

१५. समस्त ऋतुओं का शरीर के अनुकूल-सुखद स्पर्श वाली होना।

१६. जहाँ तीर्थंकर विराजते हैं, वहाँ की एक योजन भूमि का शीतल, सुख स्पर्श युक्त सुगन्धित पवन से सर्व ओर संप्रमार्जन होना।

१७. मन्द सुगन्धित जल-बिन्दुओं से मेघ के द्वारा भूमि का धूल रहित होना।

१८. जल-थल में खिलने वाले पाँच वर्ण के पुष्पों से घुटने प्रमाण भूमि भाग का पुष्पोपचार होना अर्थात् आच्छादित किया जाना।

१९. अमनोज्ञ यानि अप्रिय शब्द, स्पर्श, रस, रूप व गन्ध का अभाव होना।

२०. मनोज्ञ (प्रिय) शब्द, स्पर्श, रस, रूप व गन्ध का प्रादुर्भाव होना।

२१. धर्मोपदेश के समय हृदय को प्रिय लगने वाला और एक योजन फैलने वाला स्वर होना।

२२. अर्धमागधी भाषा में भगवान का धर्मोपदेश होना।

२३. वह अर्धमागधी भाषा बोली जाती हुई समस्त आर्य-अनार्य पुरुषों के लिए तथा द्विपद पक्षी व चतुष्पद मृग-पशु आदि के लिए और सरीसृपों यानि पेट के बल रेंगने वाले सर्पादि के लिए अपनी-अपनी हितकर, शिवकर (कल्याणकारी) सुखद भाषारूप से परिणत हो जाती है।

२४. पूर्वबद्ध वैर वाले भी (मनुष्य), देव, असुर, नाग, सुपर्ण, यक्ष, राक्षस, किन्नर, किम्पुरुष, गरुड़, गन्धर्व और महोरग भी अरहन्तों के पादमूल में प्रशान्त चित्त होकर यानि परस्पर वैर-विरोध भूलकर हर्षित मन से धर्म श्रवण करते हैं।

२५. अन्यतीर्थिक यानि परमतावलम्बी प्रावचनिक यानि व्याख्यान दाता पुरुष भी आकर भगवान की वन्दना करते हैं।

२६. वे वादी लोग भी अरहन्त के पादमूल में वचन रहित अर्थात् निरुत्तर हो जाते हैं।

२७. जहाँ-जहाँ भी अरहन्त-भगवन्त विहार करते हैं, वहाँ-वहाँ पच्चीस योजन तक ईति-भीति नहीं होती है।

२८. मनुष्यों में घातक बिमारी जैसे—हैजा, प्लेग आदि भयंकर बीमारी नहीं होती हैं।

२९. स्वचक्र यानि अपने राज्य की सेना का भय नहीं होता।

३०. परचक्र यानि शत्रु की सेना का भय नहीं होता।

३१. अतिवृष्टि यानि घनघोर वर्षा नहीं होती।

३२. अनावृष्टि नहीं होती यानि सूखा नहीं पड़ता।

३३. दुर्भिक्ष या दुष्काल नहीं होता।

३४. भगवान के विहार से पूर्व उत्पन्न हुई व्याधियाँ भी शीघ्र ही शान्त हो जाती हैं और रक्त-वर्षा आदि उत्पात नहीं होते हैं।

It has been narrated that the enlightened one i.e. the Ford Makers (Tirthankara Bhagwan) have thirty four extraordinary miraculous attributes as :

1. Their Nails, hair and pores do not increase. They do not perspire.
2. The physical body is clean. It remains without any ailment and is devoid of any dirt and excretion.
3. The colour of the blood & flesh is as white as cow's milk.
4. The breathing in and breathing out is fragrant. It erects to the fragrance of lotus flower.
5. Hidden & covered eating & seeing without flesh eyes.
6. There is movement of 'Dharam Chakra' in the sky.
7. With their movement three umbrellas (chhatra) in the sky.
8. Supreme fly whisk move in the space over them.
9. There is a throne with legs resting desk crystal clear as like of the clean sky.
10. Moving infront of the Indra flag the other myriad flags.
11. The construction by the gods of Ashoka tree covered with leaves, flowers and combined with umbrella, flags, ringing bell and welcome arches on the way where there the Arihant Bhagwan stays and sits.
12. The presence of halo just behind the head illuminating all the ten dimensions, even in the dark night.
13. The land, where the ford makers wanders becomes smooth and charming.

14. Becoming the paths thornless where lord ford maker moves.
15. Becoming of all the six weathers favourable to the body.
16. Where the ford maker stays there within the area of one yojana blows cool, fragrant and pleasure giving air.
17. Becoming the land devoid of dust by the clouds of slow and fragrant drizzling.
18. The area to be covered with the five coloured flowers upto the height of knees bloom in soil and water.
19. The absence of unpleasant words, touch, taste, form and smell.
20. Presence of pleasant words, touch, taste, form and smell.
21. Presence of a voice that can be heard upto distance of one yojana and heart blessing voice at the time of delivering sermons.
22. Delivering sermons in Ardhmagdhi language.
23. The Ardhmagdhi language automatically converts into the beneficial, beatific, pleasant language to be comprehend by the civilized and uncivilized persons, avian having bipeds, animals having quadrupeds deers etc. and snakes like reptiles.
24. The persons, gods, fiendish, serpents, great serpents, treasure keeps (yaksh) demons, musician, obsessed, (kinnar) kimparush, grura musician (gandharva) who have enmity of previous birth even sit into the lotus feet of Arihant Bhagwan forgetting their past hostility and listen the sermons with great care, calm and peacefully.
25. Even non believer or the anyathirthak, orator or preacher pay obeisance to the ford maker.
26. Even these speakers become answerless or speech-less into the lotus feet of Arihant Bhagwan.
27. Within the area of twenty five yojanas where the Arihant Dev wanders becomes dauntless.
28. There is no existence of chronic disease like cholera, plague etc. among the people.
29. There is no fear of mutiny.
30. There is no fear of hostile army too.
31. It never rains heavily or fear of floods.
32. The drought condition never occurs,

33. Famine situation never occurs.

34. Anguishes, afflictions, illness, diseases disappear on the arrival of Arihant Dev and it never occurs of blood rains etc.

२२०–जम्बुद्दीवे णं दीवे चउत्तीसं चक्कवट्टिविजया पण्णत्ता। तं जहा–बत्तीसं महाविदेहे, दो भरहे एरवए। जम्बुद्दीवे णं दीवे चोत्तीसं दीहवेयड्ढा पण्णत्ता। जंबुद्दीवे णं दीवे उक्कोसए चोत्तीसं तित्थंकरा समुप्पज्जंति।

जम्बूद्वीप में चक्रवर्ती के चौतीस विजय क्षेत्र कहे गये हैं यथा — महाविदेह क्षेत्र में बत्तीस, भरत क्षेत्र एक और ऐरवत क्षेत्र एक। जम्बूद्वीप नामक इस द्वीप में दीर्घ वैताढ्य की संख्या चौतीस कही गई है। जम्बूद्वीप नामक द्वीप में उत्कृष्ट रूप से चौतीस तीर्थंकर एक साथ उत्पन्न होते हैं।

Thirty four Vijay territories have been said of supreme emperors (Chakravarti) in the Jambu continent as :-Thirty two of the Mahavideh area, one each of Bharat and Airavat region. The number of long Vaitadhya in the Jambu continent has been described thirty four. In this Jambu continent maximum thirty four ford makers take birth at a time.

२२१–चमरस्स णं असुरिंदस्स असुररण्णो चोत्तीसं भवणावाससयसहस्सा पण्णत्ता। पढम-पंचम-छट्ठी-सत्तमासु चउसु पुढवीसु चोत्तीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

— असुरेन्द्र असुरराज चमर के भवनावासों का उल्लेख है जिनकी संख्या चौतीस लाख कही गई है। पहली पृथ्वी, पाँचवी, पृथ्वी, छठी, पृथ्वी, सातवीं पृथ्वी-इन चार पृथ्वियों में चौतीस लाख नारकावास कहे गए हैं।

The number of the residences of residential Asurendra malevolant demons chaamor have been said thirty four. In four lands (hells) i.e. Ist land, fifth land, sixth land and seventh land thirty four lacs infernal residences have been said.

।। चौतीसवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Thirty Fourth Samvaya)

पैंतीसवां समवाय

The Thirty Fifth Samvaya

२२२–पणतीसं सच्चवयणाइसेसा पण्णत्ता।

सत्यवचन के अतिशय कहे गए हैं जिनकी संख्या पैंतीस है। यथा — संस्कारवत्त्व, उदात्तत्व, उपचारोपेतत्त्व, गम्भीरशब्दत्व आदि।

The extraordinary qualities of true speech have been stated as thirty five. They are : Samanskarvatva (well nurtured), Udatatva (loud), Upcharopotatva (suitable to the occasion), Gambhir Shabadatva (having deeper meaning) etc.

२२३–कुंथु णं अरहा पणतीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था। दत्ते णं वासुदेवे पणतीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था। नंदणे णं बलदेवे पणतीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

कुन्थु अर्हन् पैंतीस धनुष, दत्त वासुदेव पैंतीस धनुष तथा नन्द बलदेव पैंतीस धनुष ऊँचे थे।

The height of Arihant Kunthu Nath, Dutt Vasudev and Nand Baldev were thirty five bows each.

२२४–सोहम्मे कप्पे सुहम्माए सभाए माणवए चेइयक्खंभे हेट्ठा उवरिं च अद्धतेरस जोयणाणि वज्जेत्ता मज्झे पणतीसं जोयणेसु वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु जिणसकहाओ पण्णत्ताओ।

सौधर्मकल्प में सुधर्मा सभा का माणवक चैत्यस्तम्भ है, उसमें नीचे और ऊपर साढ़े बारह-साढ़े बारह योजन छोड़कर मध्यवर्ती पैंतीस योजनों में वज्रमय, गोल वर्तुलाकार पेटियों में जिनों की यानि मनुष्य-लोक में मुक्त हुए तीर्थंकरों की अस्थियाँ रखी हुई हैं।

Manvak Chaitya pillars are situated in the Sudharma assembly of Sodharma Kalpa in which barring the upper and lower portion measuring twelve and a half yojanas respectively, in the middle part measuring thirty five yojanas the remains (asthiyan) of ford makers, Jinas - who have attained liberations from this human world, have been kept in the thunderbolt like round and circular boxes.

२२५–बितिय-चउत्थीसु दोसु पुढवीए पणतीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

दूसरी व चौथी पृथ्वियों में (दोनों के मिलाकर) पैंतीस (२५+१०=३५) लाख नारकावास कहे गए हैं।

In the second and fourth lands (hells) there are 25 + 10 = 35 (thirty five) hells in total of both hells.

।। पैंतीसवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Thirty Fifth Samvaya)

छत्तीसवां समवाय

The Thirty Sixth Samvaya

२२६–छत्तीसं उत्तरज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–विणयसुयं १, परीसहो २, चाउरंगिज्जं ३, असंखयं ४, अकाममरणिज्जं ५, पुरिसविज्जा ६, उरब्भिज्जं ७, काविलियं ८, नमिपव्वज्जा ९, दुमपत्तयं १०, बहुसुयपूजा ११, हरिएसिज्जं १२, चित्तसंभूयं १३, उसुयारिज्जं १४, सभिक्खुगं १५, सामाहिठाणाइं १६, पावसमणिज्जं १७, संजइज्जं १८, मियचारिया १९, अणाहपव्वज्जा २०, समुद्दपालिज्जं २१, रहनेमिज्जं २२, गोयम-केसिज्जं २३, समितीओ २४, जन्नतिज्जं २५, सामायारी २६, खलुंकिज्जं २७, मोक्खमग्गगई २८, अप्पमाओ २९, तवोमग्गो ३०, चरणविही ३१, पमायठाणाइं ३२, कम्मपयडी ३३, लेसज्झयणं ३४, अणगारमग्गे ३५, जीवाजीवविभत्ती य ३६।

उत्तराध्ययन सूत्र के छत्तीस अध्ययन कहे गए हैं। यथा —१. विनय श्रुत अध्ययन, २. परीषह अध्ययन, ३. चातुरङ्गीय अध्ययन, ४. असंस्कृत अध्ययन, ५. अकाममरणीय अध्ययन, ६. पुरुष विद्या अध्ययन (क्षुल्लक निर्ग्रन्थीय अध्ययन), ७. औरभ्रीय अध्ययन, ८. कापिलीय अध्ययन, ९. नमिप्रव्रज्या अध्ययन, १०. द्रुमपत्रक अध्ययन, ११. बहुश्रुत पूजा अध्ययन, १२. हरिकेशीय अध्ययन, १३. चित्तसंभूतीय अध्ययन, १४. इषुकारीय अध्ययन, १५. सभिक्षु अध्ययन, १६. समाधिस्थान अध्ययन, १७. पापश्रमणीय अध्ययन, १८. संयतीय अध्ययन, १९. मृगापुत्रीय अध्ययन, २०. अनाथ प्रव्रज्या अध्ययन, २१. समुद्रपालीय अध्ययन, २२. रथनेमीय अध्ययन, २३. गौतमकेशीय अध्ययन, २४. समिति अध्ययन, २५. यज्ञीय अध्ययन, २६. सामाचारी अध्ययन, २७. खलुंकीय अध्ययन, २८. मोक्षमार्गगति अध्ययन, २९. अप्रमाद अध्ययन (सम्यक्त्व पराक्रम), ३०. तपोमार्ग अध्ययन, ३१. चरणविधि अध्ययन, ३२. प्रमादस्थान अध्ययन, ३३. कर्म प्रकृति अध्ययन, ३४. लेश्या अध्ययन, ३५. अनगारमार्ग अध्ययन, ३६. जीवाजीवविभक्ति अध्ययन।

The chapters of Uttradhyan Sutra have been mentioned thirty six in number as :- 1. Chapter of Vinayshrut submissiveness, 2. Afflictions Chapter, 3. Four limbs Chapter, 4. Asanskrit Chapter (uncatharsis), 5. Akam Maraniya Adhyana (lustless death), 6. Purushvrittiya Adhyana (chapter of Kshulak unbounded ascetic), 7.Aarbhirya Adhyan, 8. Kapilaya Adhyan, 9. Nami initiation chapter, 10. Tree leaf chapter, 11. Senior ascetic worship chapter, 12. Harikeshiya chapter, 13.Chitsambhut chapter, 14. Ishukaiya chapter, 15. Sabhikshu chapter, 16. Samadhisthan chapter, 17. Sinful monk chapter, 18. Chapter of restraint, 19. Chapter of Mrigaputra, 20. Orphan initiation chapter, 21. Samunderpaliya chapter, 22. Rathnemi chapter, 23. Gautam-

Keshiya chapter, 24. Chapter of awareness (samiti), 25. Yajnya chapter, 26. Chapter of code of conduct for ascetics, 27. Khalunkiya chapter, 28. Mokshamarg gati Adhyan (movement towards the path of liberation chapter), 29. Apramad Adhyan (samayaktprakram - vigilant chapter), 30. Tapomarg Adhyan (chapter of observing austerity), 31. Charanvidhi Adhyan, 32. Pramad Adhyan (non vigilant chapter), 33. Karama Prakrit Adhyan, 34. Leshya Adhyan - thought colouration chapter, 35. Anagaar Marg Adhyan - Chapter of Non-householder path, 36. Jeeva and Ajeeva Vibhakti Adhyana (living being & non living being division chapter).

२२७–चमरस्स णं असुरिंदस्स असुररण्णो सभा सुहम्मा छत्तीसं जोयणाणि उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

असुरेन्द्र असुरराज चमर की सुधर्मा सभा का उल्लेख है जो छत्तीस योजन ऊँची कही गई है।

The height of the Sudharma assembly of Asurendra Asur-Raj Chamar is said of thirty six yojanas.

२२८–समणस्स णं भगवओ महावीरस्स छत्तीसं अज्जाणं साहस्सीओ होत्था।

श्रमण भगवान महावीर के संघ में छत्तीस हजार आर्यिकाएँ थीं।

There were thirty six thousand nuns in the religious organisation of Lord Mahavira.

२२९–चेत्तासोएसु णं मासेसु सइ छत्तीसंगुलियं सूरिए पोरिसीछायं निव्वत्तइ।

चैत्र और आसोज मास में सूर्य एक बार छत्तीस अंगुल की पौरुषी छाया करता है।

In the month of Asoj and Chaitra the sun reflects the human shadows once equal to thirty six fingers.

।। छत्तीसवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Thirty Six Samvaya)

सैंतीसवां समवाय

The Thirty Seventh Samvaya

२३०–कुंथुस्स णं अरहओ सत्ततीसं गणा, सत्ततीसं गणहरा होत्था।

कुन्थु अर्हन् के गण और गणधरों का उल्लेख है जिनकी संख्या सैंतीस-सैंतीस कही गई है।

The number of ascetic groups and head of the ascetic groups of Arihant Kunthu Nath were thirty seven, thirty seven respectively.

२३१–हेमवय-हेरण्णवइयाओ णं जीवाओ सत्ततीसं जोयणसहस्साइं छच्च चउसत्तरे जोयणसए सोलसयएगूणवीसइभाए जोयणस्स किंचिविसेसूणाओ आयामेणं पण्णत्ताओ। सव्वासु णं विजय-वैजयंत-जयंत-अपराजियासु रायहाणीसु पागारा सत्ततीसं सत्ततीसं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

हैमवत और हैरण्यवत क्षेत्र का उल्लेख है। इनकी जीवाएँ सैंतीस हजार छह सौ चौहत्तर योजन और एक योजन के उन्नीस भागों में से कुछ कम सोलह भाग लम्बी कही गई हैं।

There is a description of Haimavat and Hairnyavat regions. The length of their diameters have been said of a little less than sixteen parts of nineteen parts of one yojana & thirty seven thousand six hundred seventy fouryojanas.

२३२–खुड्डियाएणं विमाणपविभत्तीए पढमे वग्गे सत्ततीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता।

क्षुद्रिका विमान प्रविभक्ति नामक कालिक श्रुत के प्रथम वर्ग में सैंतीस उद्देशन काल कहे गए हैं।

In the Ist volume of the Kshudrika Viman Pravibhaktinama kalikshrut thirty seven udeshan kaal have been said.

२३३–कत्तियबहुलसत्तमीए णं सूरिए सत्ततीसंगुलियं पोरिसीछायं निव्वत्तइत्ता णं चारं चरइ।

सूर्य सैंतीस अंगुल की पौरुषी छाया करता हुआ संचार करता है लेकिन यह स्थिति कार्तिक कृष्णा सप्तमी के दिन होती है।

The sun moves reflecting the poarushi shadow of thirty seven fingers but this situation occurs on the seventh dark day of the month of Kartik.

।। सैंतीसवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Thirty Seventh Samvaya)

अड़तीसवां समवाय

The Thirty Eighth Samvaya

२३४–पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अट्ठत्तीसं अज्जिआसाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंपया होत्था।

पुरुषादानीय पार्श्व अर्हत् के संघ में अड़तीस हजार आर्यिकाओं का उल्लेख है। यह उनके संघ में उत्कृष्ट आर्यिका-सम्पदा थी।

In the religious organization of the supreme human being Arihant Parshvanath there were thirty eight thousand supreme nuns.

२३५–हेमवय-एरण्णवइयाणं जीवाणं धणुपिट्ठे अट्ठत्तीसं जोयणसहस्साइं सत्त य चत्ताले जोयणसए दसएगूणवीसइभागे जोयणस्स किंचि विसेसूणा परिक्खेवेणं पण्णत्ते। अत्थस्स णं पव्वयरण्णो बितिए कंडे अट्ठत्तीसं जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

हैमवत और ऐरण्यवत क्षेत्रों की जीवाओं के विषय में कहा गया है कि उन जीवाओं का धनुः पृष्ठ अड़तीस हजार सात सौ चालीस योजन और एक योजन के उन्नीस भागों में से दश भाग से कुछ कम परिक्षेप वाला है। जहाँ सूर्य अस्त होता है, उस पर्वतराज मेरु का दूसरा कांड अड़तीस हजार योजन ऊँचा है।

About the diameters of Haimvat and Airanyavat region it has been said that the Dhanupristh of these diameters is a little less than the ten parts of nineteen part of one yojana and thirty eight thousand seven hundred forty yojanas. The second wing of the Mount Meru where the sun sets is thirty eight yojana high.

२३६–खुड्डियाए णं विमाणपविभत्तीए बितिए वग्गे अट्ठत्तीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता।

क्षुद्रिका विमान-प्रविभक्ति नामक कालिक श्रुत के द्वितीय वर्ग में अड़तीस उद्देशन काल कहे गए हैं।

In second volume of the Kshudrika Viman pravibhaktinamak kaalik shrut thirty eight udeshan kaal have beensaid.

।। अड़तीसवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Thirty Eighth Samvaya)

उनतालीसवां समवाय

The Thirty Nineth Samvaya

२३७–नमिस्स णं अरहओ एगूणचत्तालीसं आहोहियसया होत्था।

समयखेत्ते एगूणचत्तालीसं कुलपव्वया पण्णत्ता, तं जहा–तीसं वासहरा, पंच मंदरा,

चत्तारि उसुकारा। दोच्च-चउत्थ-पंचम-छट्ठ-सत्तमासु णं पंचसु पुढवीसु एगूणचत्तालीसं निरयावास–सयसहस्सा पण्णत्ता।

नमि अर्हत् के उनतालीस सौ (३९००) नियत (परिमित) क्षेत्र को जानने वाले अवधिज्ञानी मुनि थे। समय क्षेत्र (अढ़ाई द्वीप) में उनतालीस कुलपर्वतों का उल्लेख है, यथा — तीस वर्षधर पर्वत, पाँच मन्दर (मेरु) पर्वत तथा चार इषुकार पर्वत - दूसरी पृथ्वी - चौथी पृथ्वी - पाँचवीं पृथ्वी - छठी पृथ्वी - सातवीं पृथ्वी इन पांच पृथ्वियों में नारकावासों का उल्लेख है जिनकी संख्या उनतालीस लाख कही गई है। (२५+१०+३+पाँच कम एक लाख और ५=३९)।

Thirty nine hundred fixed (measured) regions under the domain of Arihant Nami have been said. There were monks having the clairvoyance knowledge are known of these regions. In the time regions (two and a half continent) thirty nine common mountains have been narrated as:- Thirty Varshdhar Mountains, Five Meru Mountains and four Ikshukar Mountains 30 + 5 + 4 = 39. In these five lands (hell) in second land, fourth land, fifth land, sixth land and seventh land the numbers of infernal residences have been said thirty nine in total as (25 + 10 + 3 + five less one lack and five = 39)

२३८–नाणावरणिज्जस्स मोहणिज्जस्स गोत्तस्स आउयस्स एयासि णं चउण्हं कम्मपगडीणं एगूणचत्तालीसं उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ।

ज्ञानावरणीय, मोहनीय, गोत्र व आयुकर्म इन चारों कर्मों की उनतालीस-उनतालीस उत्तर प्रकृतियाँ कही गई हैं। यथा — ज्ञानावरणीय की पाँच, मोहनीय की अट्ठाईस, गोत्र की दो तथा आयुकर्म की चार उत्तर प्रकृतियाँ।

There is a description of four karmas i.e. knowledge obscuring, delusive, status making and life span determining. The number of Utter tendencies of these four karmas have been said thirty nine as :- five of knowledge obscuring, twenty eight of delusion karmas, two of status making, four of life span determining karmas.

।। उनतालीसवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Thirty Nineth Samvaya)

चालीसवां समवाय

The Fourtieth Samvaya

२३९–अरहओ णं अरिट्ठनेमिस्स चत्तालीसं अज्जिया साहस्सीओ होत्था।

अरिष्टनेमि अर्हन् के संघ में चालीस हजार आर्यिकाएँ थीं।

There were forty thousand nuns (Aryikas) in the religious organization of Arihant Arishtnemi.

२४०–मंदरचूलिया णं चत्तालीसं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

संती अरहा चत्तालीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

मन्दर-चूलिकाएँ कही गई हैं जो चालीस योजन ऊँची हैं। शान्ति अर्हन् चालीस धनुष ऊँचे थे।

The height of the summits of the Mandar Mountain is forty yojanas each. The height of Arihant Shanti Nath wasequal to forty bows.

२४१–भूयाणंदस्स णं नागकुमारस्स नागरन्नो चत्तालीसं भवणावाससयसहस्सा पण्णत्ता। खुड्डियाए णं विमाणपविभत्तीए तइए वग्गे चत्तालीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता।

नागकुमार, नागराज भूतानन्द के भवनावासों की संख्या चालीस लाख कही गई है। क्षुद्रिका विमानप्रविभक्ति के तीसरे वर्ग में चालीस उद्देशन काल कहे गए हैं।

The numbers of the residences of the Naag Kumars, Nagraj Bhutananda have been said as forty lacs. In the third volume of the Kshudrika Viman Pravibhakti forty Udeshan (chapters) have been mentioned.

२४२–फग्गुणपुण्णिमासिणीए णं सूरिए चत्तालीसंगुलियं पोरिसीछायं निव्वट्टइत्ता णं चारं चरइ। एवं कत्तियाए वि पुण्णिमाए।

फाल्गुन पूर्णमासी तथा कार्तिकी पूर्णिमा को सूर्य चालीस अंगुल की पौरुषी छाया करके संचार करता है।

The sun moves reflecting human shadow on the full moon night of the month of Phalgun. This shadow has been said of equal to width forty fingers.

२४३–महासुक्के कप्पे चत्तालीसं विमाणावाससहस्सा पण्णत्ता।

महाशुक्र कल्प में चालीस हजार विमानावास कहे गए हैं।

In the celestial vehicle of Mahashukra kalpa forty thousand residences of these vimans have been said.

।। चालीसवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Fourtieth Samvaya)

इकतालीसवां समवाय

The Forty One Samvaya

२४४–नमिस्स णं अरहओ एकचत्तालीसं अज्जियासाहस्सीओ होत्था।

नमि अर्हत् के संघ में इकतालीस हजार आर्यिकाएँ कही गई हैं।

The number of nuns (Aryikas) in the religious organization of Arihant Nami have been said as forty one thousand.

२४५–चउसु पुढवीसु एक्कचत्तालीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता, तं जहा– रयणप्पभाए पंकप्पभाए तमाए तमतमाए।

चार पृथ्वियों में कुल इकतालीस लाख नारकावास कहे गए हैं। यथा — १. रत्नप्रभा पृथ्वी में तीस लाख, २. पंकप्रभा पृथ्वी में दस लाख, ३. तमःप्रभा पृथ्वी में पाँच कम एक लाख, ४. महातमःप्रभा पृथ्वी में पाँच नारक वास। (३०+१०+५ कम १ लाख +५=४१ लाख)।

In four lands (hells) namely Ratanprabha (gem hue), Pankprabha (mud hue), Tamhprabha land (dark hue), Mahatamh hell (dense dark hue land) forty one infernal residences have been said.

२४६– महालियाए णं विमाणपविभत्तीए पढमे वग्गे एक्कचत्तालीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता।

महालिका (महत्ती) विमान प्रविभक्ति के प्रथम वर्ग में इकतालीस उद्देशन काल कहे गए हैं।

In the first volume of Mahalika Viman Pravibhakti contains forty one Udeshna (chapters).

॥ इकतालीसवां समवाय समाप्त ॥

(The End of Forty One Samvaya)

बयालीसवां समवाय

The Forty Two Samvaya

२४७–समणे भगवं महावीरे बायालीसं वासाइं साहियाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता सिद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे।

श्रमण भगवान महावीर ने बयालीस वर्ष से कुछ अधिक वर्ष तक श्रमण पर्याय पाला, तत्पश्चात् वे सिद्ध-बुद्ध हो गए। यावत् सर्व दुःखों से रहित हो गए।

Shraman Bhagwan Mahavir led the a life of penancera little more than forty two years and after that became enlightened. Annihilating all his karmas attained Parinirvana (the ultimate goal of life i.e. Sidhi).At last Lord Mahavira became devoid of all the miseries and sufferings.

२४८–जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ गोथूभस्स णं आवासपव्वयस्स पच्चच्छिमिल्ले चरमंते एस णं वायालीसं जोयणसहस्साइं अबाहातो अंतरं पन्नत्तं। एवं चउद्दिसिं पि दओभासे, संखे, दयसीमे य।

जम्बूद्वीप नामक इस द्वीप की जगती की बाहरी परिधि के पूर्वी चरमान्त भाग से लेकर वेलन्धर नागराज के गोस्तूभ नामक आवास पर्वत के पश्चिमी चरमान्त भाग तक मध्यवर्ती क्षेत्र का बिना किसी बाधा या व्यवधान के अन्तर बयालीस हजार योजन कहा गया है। इसी प्रकार चार दिशाओं में भी उदकभास, शंख और उदकसीम का अन्तर जानना चाहिए।

The outer circumference of the surface of the continent of Jambudweep has been said from the extreme east end to Gostoobh residential Mountain of Vailandher Nagraj of which the distance form its middle upto the extreme westend part, without any hindrance obstructions has been said of forty two thousand yojanas. In the same way the distances of Udakmosh, Shankh and Udakseem in the four directions should be understood.

२४९–कालोए णं समुद्दे वायालीसं चंदा जोइंसु वा, जोइंति वा, जोइस्संति वा। वायालीसं सूरिया पभासिंसु वा, पभासंति वा, पभासिस्संति वा।

कालोद समुद्र में बयालीस चन्द्र उद्योत करते थे, करते हैं और करेंगे। इसी प्रकार बयालीस सूर्य हैं जो प्रकाश करते थे, करते हैं और करेंगे।

In the region of Kalod ocean, about the radiance of Moon, it has been described that there are forty two moons that radiance of moon, that illuminated, illuminates and will illuminate. In the same way there are forty two suns that illuminated, illuminates and will illuminate.

२५०–सम्मुच्छिमभुयपरिसप्पाणं उक्कोसेणं वायालीसं वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता।

सम्मूर्च्छिम भुजपरिसर्प कहे गए हैं जिनकी उत्कृष्ट स्थिति बयालीस हजार वर्ष है।

The maximum life span of the (sammuaichhin) spontaneous innate moving with arms reptiles is of forty two thousand years duration.

२५१–नामकम्मे वायालीसविहे पण्णत्ते, तं जहा–गइनामे १, जाइनामे २, सरीरनामे ३, सरीरंगोवंग नामे ४, सरीरबंधणनामे ५, सरीरसंघायणनामे ६, संघयणनामे ७, संठाणनामे ८,

वण्णनामे ९, गंधनामे १०, रसनामे ११, फासनामे १२, अगुरुलहुयनामे १३, उवघायनामे १४, पराघायनामे १५, आणुपुव्वीनामे १६, उस्सासनामे १७, आयवनामे १८, उज्जोयनामे १९, विहगगइनामे २०, तसनामे २१, थावरनामे २२, सुहुमनामे २३, बायरनामे २४, पज्जत्तनामे २५, अपज्जत्तनामे २६, साहारणसरीरनामे २७, पत्तेयसरीरनामे २८, थिरनामे २९, अथिरनामे ३०, सुभनामे ३१, असुभनामे ३२, सुभगनामे ३३, दुब्भगनामे ३४, सुस्सरनामे ३५, दुस्सरनामे ३६, आएज्जनामे ३७, अणाएज्जनामे ३८, जसोकित्तिनामे ३९, अजसोकित्तिनामे ४०, निम्माणनामे ४१, तित्थकरनामे ४२।

नामकर्म के बयालीस भेद कहे गए हैं। यथा—१. गति नामकर्म, २. जाति नामकर्म, ३. शरीर नामकर्म, ४. शरीराङ्गोपाङ्ग नामकर्म, ५. शरीरबन्धन नामकर्म, ६. शरीर संघातन नामकर्म, ७. संहनन नामकर्म, ८. संस्थान नामकर्म, ९. वर्ण नामकर्म, १०. गन्ध नामकर्म, ११. रस नामकर्म, १२. स्पर्श नामकर्म, १३. अगुरुलघु नामकर्म, १४. उपघात नामकर्म, १५. पराघात नामकर्म, १६. आनुपूर्वी नामकर्म, १७. उच्छ्वास नामकर्म, १८. आतप नामकर्म, १९. उद्योत नामकर्म, २०. विहायोगति नामकर्म, २१. त्रस नामकर्म, २२. स्थावर नामकर्म, २३. सूक्ष्म नामकर्म, २४. बादर नामकर्म, २५. पर्याप्त नामकर्म, २६. अपर्याप्त नामकर्म, २७. साधारण शरीर नामकर्म, २८. प्रत्येक शरीर नामकर्म, २९. स्थिर नामकर्म, ३०. अस्थिर नामकर्म, ३१. शुभ नामकर्म, ३२. अशुभ नामकर्म, ३३. सुभग नामकर्म, ३४. दुर्भग नामकर्म, ३५. सुस्वर नामकर्म, ३६. दुःस्वर नामकर्म, ३७. आदेय नामकर्म, ३८. अनादेय नामकर्म, ३९. यशस्कीर्त्ति नामकर्म, ४०. अयशस्कीर्त्ति नामकर्म, ४१. निर्माण नामकर्म, ४२. तीर्थंकर नामकर्म।

Forty two types of the physique determining karmas have been said as :- 1. Gatinaam Karma, 2. Jatinaam Karma, 3. Sharirnaam Karma, 4. Sharirogpang naam Karma, 5. Sharirbandhan naam Karma, 6. Sharirsangathan naam Karma, 7. Samhnan naam Karma, 8. Sansthan naam Karma, 9. Varan (colour) naam Karma, 10. Gandh (smell) naam Karma, 11. Ras (taste) naam Karma, 12. Sparsh (touch) naam Karma, 13. Agurulaghu naam Karma, 14. Upghatnaam Karma, 15. Praghatnaam Karma, 16. Anupurvi (movement of soul with a turn) naam Karma, 17. Uchchhvas (breathing) naam Karma, 18. Atap (hard light) naam Karma, 19. Udyot (soft light) naam Karma, 20. Vihayogati (movement) naam Karma, 21. Tras (mobile) naam Karma, 22. Sthavar (immobile) naam Karma, 23. Suksham (subtle) naam Karma, 24. Badar (gross) naam Karma, 25. Paryapt (complete) naam Karma, 26. Aprayapt (incomplete) naam Karma, 27. Sadharan Sharir (infinite soul in one body) naam Karma, 28. Pratyek (countable soul in one) Sharirnaam Karma, 29. Sthir (stable) naam Karma, 30. Asthir (unstable body limbs) naam Karma, 31. Shubh (good) naam Karma, 32. Ashubh (perverse) naam Karma, 33. Subhag (lucky) naam Karma, 34. Durbhag

(Unlucky) naam Karma, 35. Suswar (sweet voice) naam Karma, 36. Duswar (harsh voice) naam Karma, 37. Adeya (worthy) naam Karma, 38. Anadeya (worthless) naam Karma, 39. Yashkirti (prominent) naam Karma, 40. Ayashkirti (ill fame) naam Karma, 41. Nirman (formations) naam Karma, 42. Tirthankar (omniscient) naam Karma.

२५२–लवणे णं समुद्दे वायालीसं नागसाहस्सीओ अब्भितरियं वेलं धारंति।

लवण समुद्र की भीतरी वेला के विषय में कहा गया है कि इसको बयालीस हजार नाग धारण करते हैं।

About the inner boundary of the Lavan ocean it has been said that it has been held by forty two thousand serpents.

२५३–महालियाए णं विमाणपविभत्तीए वितिए वग्गे वायालीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता।

महालिका विमान प्रविभक्ति के द्वितीय वर्ग में बयालीस उद्देशन काल कहे गए हैं।

In the second volume of Mahalika Viman Pravibhaktiforty two Udeshyan kaals have been said.

२५४–एगमेगाए ओसप्पिणीए पंचम-छट्ठओ समाओ वायालीसं वाससहस्साइं कालेणं पण्णत्ताओ। एगमेगाए उस्सप्पिणीए पढम-बीयाओ समाओ वायालीसं वाससहस्साइं कालेणं पण्णत्ताओ।

प्रत्येक अवसर्पिणी काल के पाँचवें-छठे आरा के विषय में कहा गया है कि ये दोनों मिलकर बयालीस हजार वर्ष के हैं। प्रत्येक उत्सर्पिणी काल का प्रथम-द्वितीय आरा संयुक्त गणितानुसार बयालीस हजार वर्ष का कहा गया है।

In every diminishing time cycle (Avsarpinikaal) the total duration the both of the fifth and sixth aeons (Ara) has been said of forty two years. In the same way the 1st and 2nd spoke (Ara) of ascending time cycle (utsarpini kaal) together have been said of forty two thousand years.

।। बयालीसवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Forty Two Samvaya)

तेयालीसवां समवाय

The Forty Three Samvaya

२५५–तेयालीसं कम्मविवागज्झयणा पण्णत्ता।

कर्मों का शुभाशुभ फल बताने वाला अध्ययन कर्म विपाक सूत्र है। इसके तेयालीस अध्ययन कहे गए हैं।

The chapter that tells the auspicious and in auspicious fruits of the karmas is Karma Vipak Sutra. It has forty three chapters.

२५६–पढम-चउत्थ-पंचमासु पुढवीसु तेयालीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता। जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ गोथूभस्स णं आवासपव्वयस्स पच्चच्छिमिल्ले चरमंते एस णं तेयालीसं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। एवं चउद्दिसिं पि दगभासे संखे दयसीमे।

पहली, चौथी और पाँचवीं पृथ्वी में नारकावास कहे गए हैं। इन नारकावासों की संख्या तेयालीस लाख (३०+१०+३=४३) है। जम्बूद्वीप नामक इस द्वीप के पूर्व जगती के चरमान्त गोस्तूभ आवास पर्वत का पश्चिमी चरमान्त का बिना किसी बाधा या व्यवधान के तेयालीस हजार योजन अन्तर कहा गया है। इसी प्रकार चारों ही दिशाओं में जाना जा सकता है। विशेषता यह है कि दक्षिण दिशा में दकभास, पश्चिम दिशा में शंख आवास पर्वत हैं और उत्तर दिशा में दकसीम आवास पर्वत है।

The infernal residences have been said in 1st, 4th and5th hell. The total number of these residences are forty three lacs (30 + 10 + 3 = 43). In the continent of Jambu Dweep there is a Gostoobh residence mountain from the extreme east surface of this Jambudweep. The distance of this mountain from the extreme westend without any obstruction or hinderance has been said of forty three yojanas. All the four directions could be known in the same way, the speciality is it that Mount Dakabhas is in south Shankh mount is situated in west and Dakaseem mountain is situated in the north.

२५७–महालियाए णं विमाणपविभत्तीए तइए वग्गे तेयालीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता।

महालिका विमान प्रविभक्ति के तृतीय वर्ग में तेयालीस उद्देशन काल कहे गए हैं।

In the third volume of Mahalika viman pravibhakti fortythree udeshan kaal have been said.

।। तेयालीसवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Forty Three Samvaya)

चवालीसवां समवाय

The Forty Fourth Samvaya

२५८–चोयालीसं अज्झयणा इसिभासिया दियलोगचुया भासिया पण्णत्ता।

चवालीस ऋषिभाषित अध्ययन कहे गए हैं जिन्हें देवलोक से च्युत हुए ऋषियों ने कहा है।

There are forty four Rishibhashit chapters. These have been narrated by the Rishis (monks) who had descended from the heaven (devloka).

२५९–विमलस्स णं अरहओ णं चउआलीसं पुरिसजुगाइं अणुपिट्ठिं सिद्धाइं जाव सव्वदुक्खप्पहीणाइं।

विमल अर्हत् के पश्चात् चवालीस पुरुषयुग (पीढ़ी) के विषय में कहा गया है कि वे अनुक्रम से एक के पीछे एक सिद्ध-बुद्ध, कर्मों से मुक्त, परिनिर्वाण को प्राप्त एवं सर्व दुःखों से रहित हो गए।

After the period of Arihant Vimal about forty four ancestors epoch (generations) have been discussed. They will attain omniscience gradually one after the other. After that they getting liberation from all their accumulated karmas will get Parinirvana. They will be relieved of all their miseries and sufferings in the end.

२६०–धरणस्स णं नागिंदस्स नागरण्णो चोयालीसं भवणावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

नागेन्द्र नागराज धरण के चवालीस लाख भवनावास कहे गए हैं।

Forty four lacs residences have been said of the head serpent god Nagraj.

२६१– महालियाए णं विमाणपविभत्तीए चउत्थे वग्गे चोयालीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता।

महालिका विमान प्रविभक्ति के चतुर्थ वर्ग में चवालीस उद्देशन काल कहे गए हैं।

In the fourth volume of Mahalika Viman Pravibhakti forty four Udeshan kaal (chapters) have been narrated.

।। चवालीसवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Forty Fourth Samvaya)

पैंतालीसवां समवाय

The Forty Fifth Samvaya

२६२–समयक्खेत्ते णं पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते। सीमंतए णं नरए पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते। एवं उडुविमाणे वि। ईसिपब्भारा णं पुढवी एवं चेव।

समय क्षेत्र यानि अढ़ाई द्वीप के विषय में कहा गया है कि यह पैंतालीस लाख योजन लम्बा-चौड़ा है। इसी प्रकार ऋतु (उडु) (सौधर्म-ईशान देवलोक में प्रथम पाथड़े में चार विमान-अवलिकाओं के मध्यभाग में रहा हुआ गोल विमान) तथा ईषत्प्राग्भारा पृथ्वी (सिद्धि स्थान) भी पैंतालीस-पैंतालीस लाख योजन फैला हुआ समझना चाहिए।

It has been said about the time region (two and a half continents) that its length and width is equal to forty five lac yojanas. In the same way the round celestial vehicle situated in the middle part of four rows of celestial vehicles in the first layer of Ritu (udu) Sodharam-Ishan Devloka, be considered so and the summit of the cosmos (loka) i.e. Ishatpragbhara land (sidhsthana), too to be understood of an expansion of forty five lac yojanas.

२६३–धम्मे णं अरहा पणयालीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

धर्म अर्हत् पैंतालीस धनुष ऊँचे थे।

The height of Arihant Dharam Nath was forty five Dhanush (bows).

२६४–मदंरस्स णं पव्वयस्स चउद्दिसिं पि पणयालीसं पणयालीसं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

मन्दर पर्वत, जो धरणीतल पर दश हजार योजन फैलाव लिए हुए है, की चारों ही दिशाओं में लवण समुद्र की भीतरी परिधि की अपेक्षा पैंतालीस हजार योजन अन्तर बिना किसी बाधा के कहा गया है।

The mountain Mandar (Meru) at the surface and ground has an expansion of ten thousand yojanas, around it with regard the inner circumference of lavan ocean in all the four directions the distance without any obstruction has been said of forty five thousand yojanas.

२६५–सव्वे वि णं दिवड्ढखेत्तिया नक्खत्ता पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोगं जोइंसु वा, जोइंति वा, जोइस्संति वा।

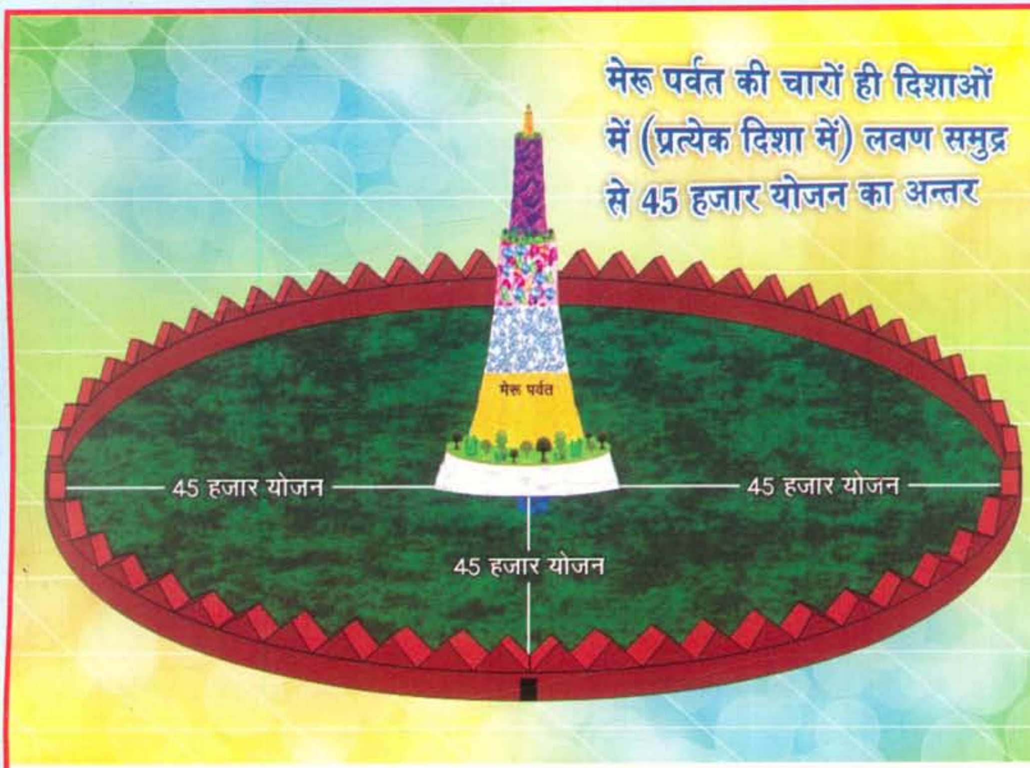

45 लाख योजन प्रमाण समय क्षेत्र की आकृति

मेरु पर्वत से लवण समुद्र की दूरी

जम्बूद्वीप पूर्व-पश्चिम और उत्तर-दक्षिण में एक लाख योजन लम्बा-चौड़ा गोलाकार है। इसके चारों ओर रत्नमय जगति (दीवार) है। उसके आगे लवण समुद्र है। मेरु पर्वत इसके बीचों-बीच स्थित है। इसका विस्तार धरती तल पर दस हजार योजन है। अत: इसके प्रत्येक किनारे से लवण समुद्र तक की दूरी इस प्रकार है–

जम्बूद्वीप की कुल लम्बाई-चौड़ाई	=	1 लाख योजन
घटाया:मेरु पर्वत की पृथ्वीतल पर चौड़ाई	=	10 हजार योजन
शेष	=	90,000 हजार योजन

क्योंकि मेरु पर्वत जम्बूद्वीप के बीचों-बीच स्थित है, अत: दोनों ओर की लवण समुद्र से दूरी 90,000 योजन की आधी अर्थात् 45-45 हजार योजन रहेगी।–समवाय 45, सूत्र सं. 264

समय क्षेत्र की लम्बाई–चौड़ाई

जम्बूद्वीप, लवण समुद्र, धातकीखण्ड, कालादधि समुद्र और अर्धपुष्करवर द्वीप मिलकर अढ़ाई द्वीप के 45 लाख योजन का क्षेत्र, समय क्षेत्र है। क्योंकि सम्पूर्ण लोक में से मात्र इसी अढ़ाई द्वीप में ही सूर्य-चन्द्र के विमान मेरु पर्वत के चारों ओर गति करते हैं, जिसके कारण इस क्षेत्र में दिवस-रात्रि होते हैं, समय का व्यवहार होता है इसलिए इसे समय क्षेत्र कहते हैं।

इसके अन्तर्गत आने वाले जम्बूद्वीप (एक लाख योजन), लवण समुद्र (दो लाख योजन), धातकी खण्ड (चार लाख योजन), कालोदधि समुद्र (आठ लाख योजन) और पुष्करवर द्वीप का आधा भाग (आठ लाख योजन) विस्तार वाले हैं। इस प्रकार इस क्षेत्र की कुल लम्बाई-चौड़ाई इस प्रकार है–

(.5 लाख यो. + 2 लाख यो. + 4 लाख यो. + 8 लाख यो. + 8 लाख यो.) गुणा 2 = 45 लाख योजन।

–समवाय 45, सूत्र 262

The distance of 'Mountain Meru' from ocean "Lavana"

The Jambu continent is long, wide and circular equal to one lakh yojan in the North-South and East-West directions. There is a jewel like boundary wall round it. Next to it is "Lavana Ocean". The Meru Mountain is situated in the centre of this continent. Its expansion on the surface of the earth is 10 thousand yojans. So, the distance of Mountain Meru from the boundary "Lavana Ocean" is as follows:

The length and width of Jambu continent is one lakh yojans minus the expansion of Mountain Meru at earth surface ie 10 thousand yojans balance 90,000 yojans.

Mountain Meru is situated in the centre of Jambu continent so on both the sides the distance of Ocean Lavana is 45,000 yojan, each half of the 90,000 yojans on each side.

Samvaya 45 Sutra 264

The length and width of "The Time Region".

The area equal to 45 lakh yojans of two and half continents including continent 'Jambu' Ocean Lavana, Dhatkikhand, Ocean 'Kalodadhi' and half continent of Pushkar is called "The Time Region." In the entre cosmos the vehicles of Sun and Moon move around the Mountain Meru only in there two and a half areas. So it the day and night take from here only in this area and the "Time" takes practical shape here. So it is called "The Time Region".

This region, consisting of the expansion of Jambu Continent (one lakh yojana), Ocean Lavana (Two lakhs yojans), Dhatkikhand (four lakhs yojans), Ocean Kalododhi (eight lakh yojans), is long and wide total as under (5 + 2 + 4 + 8 + 8 lakh yojans) × 2 = 45 lakh yojans.

Samvayang 45 Sutra 262

तिन्नेव उत्तराइं पुण्णवसू रोहिणी विसाहा य।
एए छ नक्खत्ता पणयालमुहुत्तसंजोगा।।१।।

समस्त द्व्यर्ध क्षेत्रीय नक्षत्रों ने पैंतालीस मुहूर्त तक चन्द्रमा के साथ योग किया है, योग करते हैं और योग करेंगे।

तीनों उत्तरा, पुनर्वसु, रोहिणी और विशाखा —ये छह नक्षत्र पैंतालीस मुहूर्त तक चन्द्र के साथ संयोग वाले कहे गए हैं।

The constellations having Divyardh area conjuncutred, conjuctures and will conjucture for a period of forty five muhurat with moon. (Divyardh = Moon rotates for a period of forty five Muhuratas with any heavenly body). All these six constellations named all the three Uttara, Punarvasu, Rohini and Vishakha have been said that they conjucture with moon for a period of forty fiveMuhurata (Indian time).

२६६–महालियाए विमाणपविभत्तीए पंचमे वग्गे पणयालीसं उद्देसणकाला पण्णत्ता।

महालिका विमान प्रविभक्ति सूत्र के पंचमवर्ग में पैंतालीस उद्देशन कहे गए हैं।

In the fifth volume of Mahalika Viman Pravibhakti Sutraforty five Udeshan Kaal have been narrated.

।। पैंतालीसवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Forty Fifth Samvaya)

छियालीसवां समवाय

The Forty Sixth Samvaya

२६७–दिट्ठिवायस्स णं छायालीसं माउयापया पण्णत्ता। बंभीए णं लिवीए छायालीसं माउयक्खरा पण्णत्ता।

बारहवाँ अंग दृष्टिवाद है, इसके छियालीस मातृका पद कहे गए हैं। इसी प्रकार ब्राह्मी लिपि के भी छियालीस मातृ अक्षर- (बारह स्वर, पच्चीस व्यंजन, चार अन्तःस्थ, चार ऊष्म वर्ण तथा ह-) कहे गए हैं।

The twelfth canon is named as Drishtivad. It has forty six title verses (Matrikapad) have been said. In the same way there are six Matrika (original) alphabets in Brahami scripts - twelve vowels, twenty five consonants, four semi vowels and liquid consonants, four harsh words and 'h'.

२६८– पभंजणस्स णं वाउकुमारिंदस्स छायालीसं भवणावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

वायुकुमारेन्द्र प्रभंजन के छियालीस लाख भवनावासों का उल्लेख है।

A description of forty six lacs residences of Vayukumarendra Prabhanjan gods is in it.

।। छियालीसवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Forty Sixth Samvaya)

सैंतालीसवां समवाय

The Forty Seventh Samvaya

२६९–जया णं सूरिए सव्वब्भितरमंडलं उवसंकमित्ता णं चारं चरइ तया णं इहगयस्स मणुस्सस्स सत्तचत्तालीसं जोयणसहस्सेहिं दोहि य तेवट्ठेहिं जोयणसएहिं एक्कवीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुफासं हव्वमागच्छइ।

इस भरतक्षेत्र गत मनुष्य को सूर्य सैंतालीस हजार दो सौ तिरेसठ योजन और एक योजन के साठ भागों में इक्कीस भाग की दूरी से दिखाई देता है किन्तु यह स्थिति तब बनती है जब सूर्य सबसे भीतरी मण्डल में आकर संचार करता है।

The sun is visible to the human beings of this Bharatregion at the distance of twenty one parts of sixty parts of one yojana and forty seven thousand two hundred sixty three yojanas but this condition occurs only when the sun moves coming into its most internal orbit.

२७०–थेरे णं अग्गिभूई सत्तचत्तालीसं वासाइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए।

अग्निभूति स्थविर के विषय में कहा गया है कि वे सैंतालीस वर्ष तक गृहवास में रहे। तत्पश्चात् वे मुंडित होकर अगार से अनगारिता में प्रव्रजित हुए।

In respect of Agnibhuti the Elder ascetic it has been said that he remained as a householder for a period of forty seven years. After that he got tonsured and consecrated from the state of householder to that of ascetic.

।। सैंतालीसवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Forty Seventh Samvaya)

अड़तालीसवां समवाय

The Forty Eighth Samvaya

२७१–एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स अडयालीसं पट्टणसहस्सा पण्णत्ता।

प्रत्येक चातुरन्त चक्रवर्ती राजा के अड़तालीस हजार पट्टण कहे गए हैं।

Forty eight thousands ports have been said of each and every supreme lord (Chakravarti).

२७२–धम्मस्स णं अरहओ अडयालीसं गणा, अडयालीसं गणहरा होत्था।

धर्म अर्हत् के गण और गणधरों की संख्या अड़तालीस-अड़तालीस कही गई है।

The numbers of ascetics groups (Gan) and head of the ascetic groups (Gandhar of Arihant Dharam) had been forty eight, forty eight respectively.

२७३–सूरमंडले णं अडयालीसं एकसट्ठिभागे जोयणस्स विक्खंभेणं पण्णत्ते।

सूर्यमण्डल एक योजन के इकसठ भागों में से अड़तालीस भाग-प्रमाण विस्तार वाला निरूपित है।

The orbit of the Sun has been expounded of the expansion of forty eighth parts out of sixty one parts of one yojana.

।। अड़तालीसवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Forty Eighth Samvaya)

उनचासवां समवाय

The Forty Nineth Samvaya

२७४–सत्त-सत्तमियाए णं भिक्खुपडिमाए एगूणपन्नाए राइंदिएहिं छन्नउइभिक्खासएणं अहासुत्तं जाव [अहाकप्पं अहातच्चं सम्मं काएणं फासित्ता पालित्ता सोहित्ता तीरित्ता किट्टित्ता आणाए अणुपालित्ता] आराहिया भवइ।

सप्त-सप्तमिका भिक्षु प्रतिमा (सात-सात दिन के सात सप्ताह का अभिग्रह-विशेष) उनचास रात्रि-दिवसों से तथा एक सौ छियानवें भिक्षाओं से यथासूत्र यथामार्ग से (यथाकल्प से, यथा तत्त्व से, सम्यक् प्रकार काय से स्पर्शकर पालकर शोधन कर, पारकर, कीर्तन कर आज्ञा से अनुपालन कर) आराधित होती है।

The seventh-seven ascetic Pratima is based on special Abhigrah worship (a vow observed without disclosing to it any one) for a period of seven weeks of seven days each i.e. forty nine days and nights and through one hundred ninety six ascetics with already decided path of Sutras (as According Kalpas, according substance through rightful activities by touching, fostering, improving, crossing, reciting and abide by the permission).

२७५–देवकुरु-उत्तरकुरुएसु णं मणुया एगूणपण्णास-राइंदिएहिं संपन्नजोव्वणा भवंति।

देवकुरु-उत्तरकुरु में मनुष्य उनचास रात-दिनों में पूर्ण यौवन से सम्पन्न हो जाते हैं।

In the region of Devkuru and Utterkuru the human beings grow to full & perfect youth within forty nine days.

२७६–तेइंदियाणं उक्कोसेणं एगूणपण्णं राइंदिया ठिई।

त्रीन्द्रिय जीवों की उत्कृष्ट स्थिति उनचास रात-दिन की कही गई है।

The maximum life span of the three senses living beings has been stated as forty nine days.

॥ उनचासवां समवाय समाप्त ॥

(The End of Forty Nineth Samvaya)

पचासवां समवाय

The Fiftieth Samvaya

२७७–मुणिसुव्वयस्स णं अरहओ पंचासं अज्जियासाहस्सीओ होत्था। अणंते णं अरहा पन्नासं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था। पुरिसुत्तमे णं वासुदेवे पन्नासं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

मुनिसुव्रत अर्हत् के संघ में पचास हजार आर्यिकाएँ कही गई हैं। अनन्तनाथ अर्हत् की ऊँचाई पचास धनुष थी। पुरुषोत्तम वासुदेव की भी ऊँचाई पचास धनुष थी।

In the religious organisation of Arihant Muni Suvrat fifty thousand nuns (Aryikas) have been said. The height of Arihant Anant Nath has been told of fifty bows. The height of the Supreme Vasudeva (Purushotama), too was equal to fifty bows.

२७८–सव्वे वि णं दीहवेयड्ढा मूले पन्नासं पन्नासं जोयणाणि विक्खंभेणं पण्णत्ता।

समस्त दीर्घ वैताढ्य पर्वत मूल में पचास योजन फैलाव वाले कहे गए हैं।

At the root all the long Vaitadhya Mountains have been said of the expansion of fifty yojanas.

२७९–लंतए कप्पे पन्नासं विमाणावाससहस्सा पण्णत्ता। सव्वाओ णं तिमिस्सगुहा-खंडगप्पवायगुहाओ पन्नासं पन्नासं जोयणाइं आयामेणं पण्णत्ताओ। सव्वे वि णं कंचणगपव्वया सिहरतले पन्नासं पन्नासं जोयणाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता।

लान्तक कल्प में विमानावास का उल्लेख है। ये विमानावास पचास हजार कहे गए हैं। समस्त तिमिस्र गुफाएँ और खण्ड-प्रपात गुफाएँ पचास-पचास योजन लम्बी कही गई हैं। सभी कांचन पर्वत शिखर तल पर पचास-पचास योजन विस्तार वाले कहे गए हैं।

The residences of Lantak (celestial vehicles) kalpa have been narrated as fifty thousand in all. The length of Timiṣra Cave Khand and Prapat Cave has been said of fifty yojanas each. All the Kanchan Mountains at the base of its summit have been said of the expansion of fifty each yojanas.

।। पचासवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Fiftieth Samvaya)

इक्यावनवां समवाय

The Fifty First Samvaya

२८०–नवण्हं बंभचेराणं एकावन्नं उद्देसणकाला पण्णत्ता।

नवों ब्रह्मचर्यों के इक्यावन उद्देशन काल कहे गए हैं।

Fifty one Udeshan kaal have been said of all the nine celebacies

२८१– चमरस्स णं असुरिंदस्स असुररन्नो सभा सुधम्मा एकावन्नखंभसयसंनिविट्ठा पण्णत्ता। एवं चेव बलिस्स वि।

असुरेन्द्र असुरराज चमर की सुधर्मासभा के विषय में कहा गया है कि यह इक्यावन सौ खम्भों से रचित है। इसी प्रकार बलि की सभा के विषय में भी जानना चाहिए।

In respect of Sudharma Assembly of Asurendra, head of Asur God. Chamar it has been said that it has fifty one hundred pillars. In the same way Bali's Assembly, too, should be known.

२८२– सुप्पभे णं बलदेवे एकावन्नं वाससयसहस्साइं परमाउं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे।

सुप्रभ बलदेव के विषय में कहा गया है कि उन्होंने इक्यावन हजार वर्ष की परम आयु का पालन किया। इसके पश्चात् वे सिद्ध-बुद्ध हुए, कर्मों से मुक्त, परिनिर्वाण को प्राप्त तथा सर्व दुःखों से रहित हुए।

In respect of Suprabh Baldeva it has been said that he spent a supreme life of fifty one thousand years. After that he attained salvation. He got liberation from all his karmas and attained Parinirvana. Eventually he annihilated all his miseries and sufferings.

२८३–दंसणावरण-नामाणं दोण्हं कम्माणं एकावन्नं उत्तरकम्मपगडीओ पण्णत्ताओ।

दर्शनावरण कर्म और नामकर्म इन दोनों कर्मों की इक्यावन उत्तर प्रकृतियाँ कही गई हैं जिनमें दर्शनावरण कर्म की नौ और नामकर्म की बयालीस उत्तर प्रकृतियाँ हैं।

In all fifty one Uttar tendencies of perception obscuring karmas and physique determining karmas have been said out of which there are forty two tendencies of physique determining karmas and nine of perception obscuring karmas.

।। इक्यावनवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Fifty First Samvaya)

बावनवां समवाय

The Fifty Second Samvaya

२८४–मोहणिज्जस्स णं कम्मस्स वावन्नं नामधेज्जा पण्णत्ता। तं जहा–कोहे कोवे रोसे दोसे अखमा संजलणे कलहे चंडिक्के भंडणे विवाए १०, माणे मदे दप्पे थंभे अत्तक्कोसे गव्वे परपरिवाए अवक्कोसे (परिभवे) उन्नए २०, उन्नामे माया उवही नियडी वलए गहणे णूमे कक्के कुरुए दंभे ३०, कूडे जिम्हे किव्विसे अणायरणया गूहणया वंचणया पलिकुंचणया सातिजोगे लोभे इच्छा ४०; मुच्छा कंसा गेही तिण्हा भिज्जा अभिज्जा कामासा भोगासा जीवियासा मरणासा ५०, नन्दी रागे ५२।

मोहनीय कर्म के बावन नाम प्रतिपादित हैं। यथा —१. क्रोध, २. कोप, ३. रोष, ४. द्वेष, ५. अक्षमा, ६. संज्वलन, ७. कलह, ८. चंडिक्य, ९. भण्डन, १०. विवाद—ये दश क्रोध कषाय के नाम हैं। ११. मान, १२. मद, १३. दर्प, १४. स्तम्भ, १५. आत्मोत्कर्ष, १६. गर्व, १७. परपरिवाद, १८. अपकर्ष, (१९. परिभव), २०. उन्नत, २१. उन्नाम—ये ग्यारह नाम मान कषाय के हैं। २२. माया, २३. उपाधि, २४.

निकृति, २५. वलय, २६. गहन, २७. न्यवम, २८. कल्क, २९. कुरुक, ३०. दंभ, ३१. कूट, ३२. जिम्ह, ३३. किल्विष, ३४. अनाचरणता, ३५. गूहनता, ३६. वंचनता, ३७. पलिकुंचनता, ३८. सातियोग—ये सत्तरह नाम माया कषाय के हैं। ३९. लोभ, ४०. इच्छा, ४१. मूर्च्छा, ४२. कांक्षा, ४३. गृद्धि, ४४. तृष्णा, ४५. भिध्या, ४६. अभिध्या, ४७. कामाशा, ४८. भोगाशा, ४९. जीविताशा, ५०. मरणाशा, ५१. नन्दी, ५२. राग- ये चौदह नाम लोभ-कषाय के हैं।

Fifty two names have been calculated of Delusion nama karmas as :- 1. Anger, 2. Rage, 3. Indignation, 4. Aversion, 5. Not forgiving, 6. Flicker, 7. Quarrelsome, 8. Fierce (Chandika), 9. Outburst, 10. Argument. The above mentioned ten synonymous of passion of anger. 11. Conceit, 12. Pride, 13. Boastfulness, 14. Stambh (pillar like), 15. Self praise, 16. Arrogance, 17. Reproaching, 18. Upkarsh (despise), 19. Degradation, 20. To be high in Pride, 21. Unnama - These eleven names are names of passion of conceit. 22. Deceit, 23. Title, 24. Nikriti, 25. Valaya (crookedness), 26. Dense, 27. Nyavam, 28. Kalk, 29. Kuruk, 30. Hypocrisy, 31. Diplomatic, 32. Jimh, 33. Wretched, 34. Misconduct, 35. Excrement, 36. Deceitful, 37. Palikunchanta, 38. Satiyoga - these seventeen names are of passion of deceit. 39. Greed, 40. Desire, 41. Intense desire (Murchha), 42. Doubt, 43. Captuation, 44. Laughing, 45. Bhidya, 46. Abhidya, 47. Lustful, 48. Want of Enjoyment, 49. Desire to live, 50. Desire to die, 51. Nandi (worldly pleasure), 52. Attachment. These fourteen names are names of greed passion.

२८५–गोथुभस्स णं आवासपव्वयस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ वलयामुहस्स महापायालस्स पच्चच्छिमिल्ले चरमंते, एस णं बावन्नं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। एवं दगभासस्स णं केउगस्स संखस्स जूयगस्स दगसीमस्स ईसरस्स।

गोस्तूभ आवास पर्वत के पूर्वी चरमान्त भाग से वडवामुख महापाताल का पश्चिमी चरमान्त बाधा के बिना बावन हजार योजन अन्तर वाला कहा गया है। इसी प्रकार लवण समुद्र के भीतर अवस्थित दकभास केतुक का शंख नामक जूपक का और दकसीम नामक ईश्वर का, इन चारों महापाताल कलशों का भी अन्तर जानना चाहिए।

From the extreme East part of Gostoobh Mountain the distance of the extreme West end of Vadva Mukh Maha Pataal without any kind of obstruction has been said of fifty two thousand yojanas. Same is way the distance between the four underground great pitchers named Ketuk's Sankh, Jupak and Daksheem naama, Ishwar situated under the lavan ocean.

२८६–णाणावरणिज्जस्स नामस्स अंतरायस्स एतेसि णं तिण्हं कम्मपगडीणं बावन्नं उत्तरपयडीओ पण्णत्ताओ।

ज्ञानावरणीय, नाम और अन्तराय इन तीनों कर्म प्रकृतियों की उत्तर प्रकृतियाँ बावन कही गई हैं जिसमें ज्ञानावरणीय कर्म की पाँच उत्तर प्रकृतियाँ, नामकर्म की बयालीस उत्तर प्रकृतियाँ तथा अन्तराय कर्म की पाँच उत्तर प्रकृतियाँ हैं।

The Uttar tendencies of the karma tendencies of three karmas named as knowledge obscuring karma physique making karmas and obstruction causing karmas have been said has fifty two in which five are of knowledge obscuring karmas forty two Uttar tendencies of body making karmas and five Uttar tendencies of obstruction causing karmas.

२८७–सोहम्म-सणंकुमार-माहिंदेसु तिसु कप्पेसु बावन्नं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

सौधर्म कल्प, सनत्कुमार कल्प और माहेन्द्र कल्प इन तीन कल्पों में बावन लाख विमानावास कहे गए हैं जिनमें सौधर्म कल्प में बत्तीस लाख विमानावास, सनत्कुमार कल्प में बारह लाख विमानावास तथा माहेन्द्र कल्प में आठ लाख विमानावास हैं।

The total strength of the residences of celestial vehicles of three kalpas named Sodharma Kalpa-Sanat Kumar Kalpa-Mahendra Kalpa have been stated as fifty two lacs which comprises of thirty two lacs of Sodharma Kalp, twelve lacs of Sanat Kumar Kalpa and eight lacs of Mahendra Kalpaare said.

।। बावनवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Fifty Second Samvaya)

तिरेपनवां समवाय

The Fifty Third Samvaya

२८८–देवकुरु-उत्तरकुरुयाओ णं जीवाओ तेवन्नं तेवन्नं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं आयामेणं पण्णत्ताओ। महाहिमवंत-रुप्पीणं वासहरपव्वयाणं जीवाओ तेवन्नं तेवन्नं जोयणसहस्साइं नव य एगत्तीसे जोयणसए छच्च एगूणवीसईभागे जोयणस्स आयामेणं पण्णत्ताओ।

देवकुरु और उत्तरकुरु की जीवाओं के विषय में कहा गया है कि ये जीवाएँ तिरेपन-तिरेपन हजार योजन से कुछ अधिक लम्बी हैं। महाहिमवन्त और रुक्मी वर्षधर पर्वतों की जीवाओं की लम्बाई के विषय में कहा गया है कि ये तिरेपन-तिरेपन हजार नौ सौ इकतीस योजन और एक योजन के उन्नीस भागों में से छह भाग प्रमाण लम्बी हैं।

About the diameters of the Devkuru and Uttarkuru it has been said that they are a little more than thirty three thousand yojanas long. In regarding the diameters of the Mahahimvant and Rukmi Varshdhar Mountains it has been said that these are six parts out of nineteen parts of one yojana and fifty three thousand nine hundred thirty one yojanas long.

२८९–समणस्स णं भगवओ महावीरस्स तेवन्नं अणगारा संवच्छरपरियाया पंचसु अणुत्तरेणु महइमहालएसु महाविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना।

श्रमण भगवान महावीर के तिरेपन अनगार एक वर्ष श्रमणपर्याय पालकर महान-विस्तीर्ण एवं अत्यन्त सुखमय पाँच अनुत्तर महाविमानों में देवरूप में उत्पन्न हुए।

Fifty three ascetics (disciples) of lord Mahavira after practicing the life of a Shraman for a period of one year eventually reincarnated into the vast and extreme pleasure giving five Unuttar great celestial vehicles in the form of celestial beings.

२९०–संमुच्छिमउरपरिसप्पाणं उक्कोसेणं तेवन्नं वाससहस्सा ठिई पण्णत्ता।

सम्मूर्च्छिम उरपरिसर्प जीवों की उत्कृष्ट स्थिति तिरेपन हजार वर्ष कही गई है।

The life span of spontaneous birth taking chest reptiles has been said of maximum of fifty three thousand years duration.

।। तिरेपनवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Fifty Third Samvaya)

चौपनवां समवाय

The Fifty Fourth Samvaya

२९१–भरहेरवएसु णं वासेसु एगमेगाए उस्सप्पिणीए ओसप्पिणीए चउवन्नं चउवन्नं उत्तमपुरिसा उप्पजिंसु वा, उपज्जंति वा, उप्पज्जिसंति वा, तं जहा–चउवीसं तित्थकरा, बारस चक्कवट्टी, नव बलदेवा, नव वासुदेवा।

–भरत और ऐरवत इन दो क्षेत्रों में एक-एक उत्सर्पिणी व अवसर्पिणी काल में चौपन-चौपन उत्तम पुरुष उत्पन्न हुए हैं, उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न होंगे। यथा – चौबीस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्ती, नौ बलदेव तथा नौ वासुदेव (२४+१२+९+९=५४)।

In two regions i.e. Bharat region and Airavat region in each ascending time cycle and descending time cycles(Utsarpini and Avsarpini Kaal) fifty four

supreme individuals have been born, are born and will be born as:- twenty four Ford Makers (Tirthankars) twelve supreme emperor (Chakravarti), Nine Lords (Vasudev) and nine Co-lords (Baldev) 24 + 12 + 9 + 9 = 54

२१२–अरहा णं अरिट्ठनेमी चउवन्नं राइंदियाइं छउमत्थपरियायं पाउणित्ता जिणे जाए केवली सवन्नू सव्वभावदरिसी।

समणे णं भगवं महावीरे एगदिवसेणं एगनिसिज्जाए चाउप्पन्नाइं वागरणाइं वागरित्था।

अणंतस्स णं अरहओ चउपन्नं [गणा चउपन्नं] गणहरा होत्था।

अरिष्टनेमि अर्हन् ने चौपन रात-दिन छद्मस्थ श्रमण पर्याय पाली, तदुपरान्त वे केवली, सर्वज्ञ, सर्वभावदर्शी जिन हुए।

श्रमण भगवान महावीर ने एक दिन में एक ही आसन में अवस्थित रहकर चौपन प्रश्नों के उत्तर रूप व्याख्यान दिए थे।

अनन्त अर्हन् के गणों और गणधरों की संख्या चौपन-चौपन थी।

Arihant Arishtnemi dwelt fifty four days and nights as Chhadmasth (ascetic without absolute knowledge) shraman. Thereafter he became omniscient, omnipotent and kewal gyani. Shraman Bhagwan Mahavir delivered speech in answer form of fifty four questions sitting in the same posture in a single day.

The number of Gan (Religious organisation) and Gandhar (Head of religious organisation) of Arihant Anantnath were fifty four each.

।। चौपनवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Fifty Fourth Samvaya)

पचपनवां समवाय

The Fifty Fifth Samvaya

२१३–मल्लिस्स णं अरहओ [मल्ली णं अरहा] पणवण्णं वाससहस्साइं परमाउं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे।

मल्ली अर्हन् पचपन हजार वर्ष की परम आयु भोगकर सिद्ध-बुद्ध कर्मों से मुक्त, परिनिर्वाण को प्राप्त और सर्व दुःखों से रहित हुए।

Arihant Malli enjoyed a life of fifty five thousand years. After that he liberating from all his previous karmas attained the salvation i.e. Parinirvana. Eventually he became devoid of all his miseries and sufferings.

२९४–मंदरस्स णं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लओ चरमंताओ विजयदारस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एस णं पणवण्णं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। एवं चाउद्दिसिं पि विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियं ति।

मन्दर पर्वत के विषय में कहा गया है कि इस पर्वत के पश्चिम चरमान्त भाग से पूर्वी विजय-द्वार के पश्चिमी चरमान्त भाग का अन्तर पचपन हजार योजन है। इसी प्रकार चारों ही दिशाओं में विजय-वैजयन्त- जयन्त-अपराजित द्वारों का अन्तर जानना चाहिए।

In respect of Mandar Mountain it has been said that the distance between the west extreme end part of this Mountain and the west extreme end part of the East Vijaydvar is equal to fifty five thousand yojanas. Exactly the same distance in all the four dimensions of Vijay, Vijayant, Jayant and Aprajit dvars should be known.

२९५–समणे णं भगवं महावीरे अंतिमराइयंसि पणवण्णं अज्झयणाइं कल्लाण-फलविवागाइं पणवण्णं अज्झयणाइं पावफलविवागाइं वागरित्ता सिद्धे बुद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे।

श्रमण भगवान महावीर ने अन्तिम रात्रि में पुण्य-पाप फल विपाक वाले पचपन-पचपन अध्यायों का प्रतिपादन किया। तदुपरान्त वे सिद्ध-बुद्ध, कर्मों से मुक्त, परिनिर्वाण को प्राप्त तथा सर्व दुःखों से रहित हुए।

Shraman Bhagwan Mahavir in the last night of his life expounded fifty five chapters each pertaining to the result of auspicious and inauspicious karmas (punya & paap vipak phal). After that he got liberation from all his accumulated karmas he attained salvation in the end i.e. Parinirvana. Eventually he became devoid of all his miseries and sufferings.

२९६–पढम-बिइयासु दोसु पुढवीसु पणवण्णं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

पहली और दूसरी इन दो पृथ्वियों में कुल पचपन लाख नारकावास कहे गए हैं। इनमें प्रथम पृथ्वी में तीस लाख नारक वास तथा द्वितीय पृथ्वी में पच्चीस लाख नारक वास हैं।

In the two (hells) the first hell and second hell in total fifty five lac residences of infernal beings have been said out of which thirty lac are in first hell and twenty five lac are in second hell.

२९७–दंसणावरणिज्ज-नामाउयाणं तिण्हं कम्मपगडीणं पणवण्णं उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ।

तीन कर्म प्रकृतियों — दर्शनावरणीय, नाम व आयु की मिलाकर कुल पचपन उत्तर प्रकृतियाँ कही गई हैं। इनमें दर्शनावरणीय की नौ उत्तर प्रकृति, नामकर्म की बयालीस उत्तर प्रकृति तथा आयु कर्म की चार उत्तर प्रकृति हैं।

The total number of Uttar tendencies of three karma tendencies i.e. intuition obscuring, physique making and life span determining karmas have been said as fifty five in which nine are of intuition obscuring karma, forty two of physique making karma and four uttar tendencies of life span determining karmas.

।। पचपनवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Fifty Fifth Samvaya)

छप्पनवां समवाय

The Fifty Sixth Samvaya

२९८–जंबुद्दीवे णं दीवे छप्पन्नं नक्खत्ता चंदेण सद्धिं जोगं जोइंसु वा, जोइंति वा, जोइस्संति वा।

जम्बूद्वीप नामक इस द्वीप में दो चन्द्रमाओं के परिवार वाले छप्पन नक्षत्र कहे गए हैं जो चन्द्र के साथ योग करते थे, योग करते हैं और योग करेंगे।

In the continent of Jambudweep fifty six constellations belonging to two moons families, have been narrated. They had conjuctured, conjucture and will conjuncture with moon.

२९९–विमलस्स णं अरहओ छप्पन्नं गणा छप्पन्नं गणहरा होत्था।

विमल अर्हन् के गण और गणधरों की संख्या छप्पन-छप्पन कही गई है।

The number of the Gan (group of ascetics), Gandhar (head of ascetic group) of Arihant Vimal Nath has been said as fifty six-fifty six respectively.

।। छप्पनवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Fifty Sixth Samvaya)

सत्तावनवां समवाय

The Fifty Seventh Samvaya

३००–तिण्हं गणिपिडगाणं आयारचूलियावज्जाणं सत्तावन्नं अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–आयारे सूयगडे ठाणे।

आचारचूलिका को छोड़कर तीन गणिपिटकों के सत्तावन अध्ययन कहे गए हैं। यथा — आचारांग के *अन्तिम निशीथ अध्ययन को छोड़कर प्रथम श्रुतस्कन्ध के नौ, द्वितीय श्रुतस्कन्ध के आचार चूलिका* को छोड़कर पन्द्रह, सूत्रकृतांग के प्रथम श्रुतस्कन्ध के सोलह, द्वितीय श्रुतस्कन्ध के सात और स्थानांग के दश, इस प्रकार कुल सत्तावन अध्ययन हैं।

Barring the Acharchulika (conduct annexure) fifty seven chapters of three ganipitak have been said as:- barring the last Nishith chapter of Acharang Sutra nine of the 1st Shrutskandh, barring Acharchulika fifteen of second shrutskandh, sixteen of 1st Shrutskandh of Sutrakritang, seven of 2nd Shrutskandh and ten of Sthanang. Thus there are fifty seven chapters.

३०१–गोथूभस्स णं आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरमंताओ वलयामुहस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभाए एस णं सत्तावन्नं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। एवं दगभागंस्स केउयस्स य संखस्स य जूयस्स य दयसीमस्स ईसरस्स य।

गोस्तूभ आवास पर्वत के विषय में कहा गया है कि इस पर्वत के पूर्वी चरमान्त से बड़वामुख महापाताल के बहु मध्य देशभाग का बिना किसी बाधा के सत्तावन हजार योजन अन्तर है। इसी प्रकार दकभास और केतुक का, संख और यूपक का तथा दकसीम और ईश्वर नामक महापाताल का अन्तर जानना चाहिए।

In respect of Gostubh Mountain it has been said that the distance from the East extreme end of this Mountain to the multiple middle single part of Badva Mukhi bottom without any obstructions is said to be fifty seven thousand yojanas, In the same way is the distance between Dakmas great bottom and Ketuk great bottom, Sankh and Yupak great bottom and Dakseen and Ishwar great bottom should be known.

३०२–मल्लिस्स णं अरहओ सत्तावन्नं मणपज्जवनाणिसया होत्था।

महाहिमवंत-रुप्पीणं वासहरपव्वयाणं जीवाणं धणुपिट्ठं सत्तावन्नं सत्तावन्नं जोयणसहस्साइं दोन्नि य तेणउए जोयणसए दस य एगूणवीसइभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं पण्णत्तं।

मल्लि अर्हत् के संघ में सत्तावन सौ मन:पर्यवज्ञानी मुनि कहे गए हैं।

महाहिमवन्त और रुक्मी वर्षधर पर्वत की जीवाओं के विषय में कहा गया है कि इन जीवाओं का धनुपृष्ठ सत्तावन हजार दो सौ तेरानवै योजन और एक योजन के उन्नीस भागों में से दश भाग प्रमाण परिक्षेप यानि परिधि के रूप से है।

In the congregation of ascetics (sangh) of Arihant Mallififty seven ascetics have been said who had (ManhPrayay Gyani) Mental Mode Knowledge. About the diameters of the Mountain Mahahimvant and Rukmi Varshadhar it has been said that the bow back (Dhanuprisht) of these diameters is equal to the circumference ten parts of nineteen parts of one yojana and fifty seven thousand two hundred and ninety three yojanas.

॥ सत्तावनवां समवाय समाप्त ॥

(The End of Fifty Seventh Samvaya)

अट्ठावनवां समवाय

The Fifty Eighth Samvaya

३०३–पढम-दोच्च-पंचमासु तिसु पुढवीसु अट्ठावन्नं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

प्रथम पृथ्वी–द्वितीय पृथ्वी और पंचम पृथ्वी इन तीन पृथ्वियों में अट्ठावन लाख नारकावास कहे गए हैं। क्रमशः प्रथम पृथ्वी में तीस लाख, द्वितीय पृथ्वी में पच्चीस लाख तथा तृतीय पृथ्वी में तीन लाख नारकावास हैं।

In three lands (hells) - 1st land, 2nd land and 5th landfifty eight lacs hellish beings residences have been said out of which thirty lacs of 1st land, twenty five lacs of 2nd land and three lacs are of 5th land.

३०४–नाणावरणिज्जस्स-वेयणिय-आउय-नाम-अंतराइयस्स एएसि णं पंचण्हं कम्मपगडीणं अट्ठावन्न उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ।

पाँच कर्म प्रकृतियों —ज्ञानावरणीय, वेदनीय, आयु, नाम और अन्तराय की उत्तर प्रकृतियाँ कुल अट्ठावन कही गई हैं, जिन में ज्ञानावरण की पाँच, वेदनीय की दो, आयु की चार, नाम की बयालीस तथा अन्तराय की पाँच उत्तर प्रकृतियाँ हैं।

In case of five karmas i.e. knowledge obscuring karmas pleasure and pain feeling karmas, life span determining karmas, physique making karmas and obstruction causing karmas the uttar tendencies have been said fifty eight in all out of which five are of knowledge obscuring karmas, two of pain and pleasure

feeling karmas four of life span determining karmas, forty two of physique making karmas and five uttar tendencies are of obstruction causing karmas are said.

३०५–गोथूभस्स णं आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरमंताओ वलयामुहस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभाए एस णं अट्ठावन्नं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। एवं चउद्दिसं पि नेयव्वं।

गोस्तूभ आवास पर्वत के पश्चिमी चरमान्त भाग से बड़वामुख महापाताल के बहुमध्य देशभाग का अन्तर अट्ठावन हजार योजन बिना किसी बाधा के कहा गया है। इसी प्रकार चारों ही दिशाओं में जानना चाहिए।

There the Gostubh residence Mountain is situated. The distance from the western extreme end of this mountain to the multiple middle single part of Badvamukhi great bottom without any hinderance has been said of fifty eight thousand yojanas. In the same way the distance in all the four directions should be known.

।। अट्ठावनवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Fifty Eighth Samvaya)

उनसठवां समवाय

The Fifty Nineth Samvaya

३०६–चंदस्स णं संवच्छरस्स एगमेगे उऊ एगूणसट्ठिं राइंदियाइं राइंदियग्गेणं पण्णत्ते।

चन्द्रमा की गति की अपेक्षा से माने जाने वाले संवत्सर को चन्द्रसंवत्सर कहा गया है। इस की एक-एक ऋतु रात-दिन की गणना से उनसठ रात्रि-दिन की कही गई है।

The year which is observed on the basis of moon's movement has been said the moon year (samvatsar). According to the counting in days and nights its each and every season (Ritu) has been said of fifty nine days and nights.

३०७–संभवे णं अरहा एगूणसट्ठिं पुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए।

सम्भव अर्हन् उनसठ लाख पूर्व वर्ष अगार के मध्य यानि गृहस्थावस्था में रहे। तदुपरान्त वे मुंडित हुए और अगार त्याग कर अनगारिता में प्रव्रजित हुए।

Arihant Sambhav Nath remained as a householder for a period of fifty nine Poorva years. After that he got his head tonsured and renouncing the life of a house holder got initiation.

३०८–मल्लिस्स णं अरहओ एगूणसट्ठिं ओहिनाणिसया होत्था।

मल्लि अर्हन् के संघ में उनसठ सौ अवधिज्ञानी थे।

In the congregation of ascetic (order) of Arihant Malli. There were fifty nine hundred clairvoyant monks.

॥ उनसठवां समवाय समाप्त ॥

(The End of Fifty Nineth Samvaya)

साठवां समवाय

The Sixtieth Samvaya

३०९–एगमेगे णं मंडले सूरिए सट्ठिए सट्ठिए मुहुत्तेहिं संघाएइ।

सूर्य एक-एक मण्डल को साठ-साठ मुहूर्त्तों से पूर्ण करता है।

The sun completes one orbit (mandal) in sixty muhurat.

३१०–लवणस्स णं समुद्दस्स सट्ठिं नागसाहस्सीओ अग्गोदयं धारंति।

लवण समुद्र के सोलह हजार ऊँची वेला के ऊपर वाले जल अर्थात् अग्रोदक को साठ हजार नागराज धारण करते हैं।

Sixty thousand great Nagkumar gods hold the excess water at the surface of the sixteen thousand high boundary of Lavan Ocean at its shqres.

३११–विमले णं अरहा सट्ठिं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

विमल अर्हन् की ऊँचाई साठ धनुष थी।

Regarding the height of Arihant Vimal Nath it has beensaid that he was sixty (Dhanush) bow high.

३१२–बलिस्स णं वइरोयणिंदस्स सट्ठिं सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ। बँभस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सट्ठिं सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ।

बलि वैरोचनेन्द्र और ब्रह्म देवेन्द्र देवराज के साठ-साठ हजार सामानिक देव कहे गए हैं।

The co-chief (samanik) gods of Bali Vairochandra and Brahmna Devendra Devraj have been said sixty-sixty thousand.

सौधर्म और ईशान देवलोक में कुल मिलाकर 60 लाख विमानावास होते हैं। ये विमानावास देवलोक के प्रतरों की भूमि के ऊपर होते हैं। प्रत्येक प्रतर स्वच्छ, सुन्दर एवं दर्शनीय होता है। इनमें से कुछ विमान संख्यात और कुछ विमान असंख्यात लम्बे चौड़े होते हैं। इन दोनों देवलोकों में 5 वर्ण के विमान होते हैं - सफेद, लाल, नीला पीला, काला।

सौधर्म और ईशान देवलोक में विमानों की संख्या

ऊर्ध्वलोक में स्थित 12 देवलोकों में से प्रथम व द्वितीय देवलोक सुधर्म तथा ईशान देवलोक हैं। प्रथम सुधर्म देवलोक में 32 लाख विमान हैं तथा द्वितीय ईशान देवलोक में 28 लाख विमान हैं। इस प्रकार प्रथम व द्वितीय देवलोक में मिलाकर कुल 60 लाख विमान या विमानावास हैं।

ये दोनों देवलोक समपृथ्वी से 1½ रज्जू ऊपर हैं तथा इनमें 13 प्रतर हैं। इन देवलोकों में विविध आकार के विमान हैं। जैसे गोल, त्रिकोण, चौरस इत्यादि। कुछ विमान संख्यात योजन विस्तार वाले तथा कुछ असंख्यात योजन विस्तार वाले हैं। यह देवलोक घनोदधि वायु के आधार पर टिके हुये हैं।

—समवाय 60, सूत्र 313

The Number of Vehicles in The Heavens of Saudharma and Ishan.

Out of the twelve heavens, situated into the upper cosmos, Saudharma and Ishan are first and second heaven respectively. Thirty two lac vehicles of gods in the first heaven 'Saudharma' and twenty eight lac vehicles are there in the second heaven 'Ishan'. Therefore, in both the first and second heavens there are sixty Lac or vehicles of gods in all.

These both the heavens are situated one and a half 'Rajju' high from the surface of the earth and there are 13 'Pratara' in it. The celestial vehicles are of different types in these heavens. They are as: round, triangular, rectangular, etc. Some of the vehicles are of numerable yojans and some are of the innumerable yojans expansion. All these vehicles of gods are situated on the foundation of "frozen water and Air"

Samvayang 60 Sutra 313

३१३–सोहम्मीसाणेसु दोसु कप्पेसु सट्ठिं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

सौधर्म कल्प और ईशानकल्प इन दो कल्पों में साठ लाख विमानवास कहे गए हैं, जिनमें सौधर्म कल्प में बत्तीस लाख विमानावास तथा ईशानकल्प में अट्ठाईस लाख विमानावास हैं।

In the two heavens i.e. Sodharma and Ishan kalpas sixty lacs Vimanvas have been said to exist out of thirty two lacs are of Sodharma kalp and twenty eight lcs are of Ishan Kalpa.

।। साठवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Sixtieth Samvaya)

इकसठवां समवाय

The Sixty First Samvaya

३१४–पंचसंवच्छरियस्स णं जुगस्स रिउमासेणं मिज्जमाणस्स इगसट्ठिं उउमासा पण्णत्ता।

पंचसंवत्सर वाले युग के ऋतु-मासों से गिनने पर इकसठ ऋतुमास होते हैं।

According to the counting of the climatic months in an epoch consisting of five years (panch samvatsar) sixty one climatic months are there.

३१५–मंदरस्स णं पव्वयस्स पढमे कंडे एगसट्ठिजोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते।

मन्दर पर्वत का प्रथम काण्ड इकसठ हजार योजन ऊँचा कहा गया है।

The first part (khand) of Meru Mountain has been static to be sixty one thousand yojanas high.

३१६–चंदमंडले णं एगसट्ठिविभागविभाइए समंसे पण्णत्ते। एवं सूरस्स वि।

चन्द्र मण्डल विमान एक योजन के इकसठ भागों में विभाजित करने पर पूरे छप्पन भाग प्रमाण सम-अंश कहा गया है। इसी प्रकार सूर्य भी एक योजन के इकसठ भागों से विभाजित करने पर पूरे अड़तालीस भाग प्रमाणे सम-अंश कहा गया है।

The moon disc vehicle has been said to be equal to full fifty six parts out of sixty one parts of one yojana. In the same way the sun too, has been said of equal to full forty eight parts out of sixty one parts of one yojana.

।। इकसठवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Sixty First Samvaya)

बासठवां समवाय

The Sixty Second Samvaya

३१७–पंच संवच्छरिए णं जुगे वासट्ठिं पुन्निमाओ वासट्ठिं अमावसओ पण्णत्ताओ।

पंचसांवत्सरिक युग में पूर्णिमाएँ व अमावस्याएँ बासठ-बासठ कही गई हैं।

In the epoch consisting of five years (panch samvatsar) the full moon nights and full dark nights have been said to be sixty two-sixty two in numbers.

३१८–वासुपुज्जस्स णं अरहओ वासट्ठिं गणा, वासट्ठिं गणहरा होत्था।

वासुपूज्य अर्हन् के गणों और गणधरों की संख्या बासठ-बासठ कही गई है।

The number of ascetic groups and heads of the ascetic group of Arihant Vasupujya has been stated to be sixty two each.

३१९–सुक्कपक्खस्स णं चंदे वासट्ठिं भागे दिवसे दिवसे परिवड्ढइ। ते चेव बहुलपक्खे दिवसे-दिवसे परिहायइ।

शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा दिन-दिन अर्थात् प्रतिदिन बासठवें भाग प्रमाण एक-एक कला से बढ़ता है तथा कृष्ण पक्ष में चन्द्रमा प्रतिदिन उतना ही घटता है।

In the bright fortnight the moon moves, increases, ahead daily equal to sixty two parts of one-one digit (kala) and the moon decreases daily as same in the dark fortnight.

३२०–सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु पढमे पत्थडे पढमावलियाए एगमेगाए दिसाए वासट्ठिं विमाणा पण्णत्ता। सव्वे वेमाणियाणं वासट्ठिं विमाणपत्थडा पत्थडग्गेणं पण्णत्ता।

दो कल्पों–सौधर्मकल्प और ईशानकल्प में पहले प्रस्तट में पहली आवलिका या श्रेणी में एक-एक दिशा में बासठ-बासठ विमानावास कहे गए हैं। समस्त वैमानिक विमान-प्रस्तट प्रस्तटों की गणना से बासठ कहे गए हैं।

In two heavens (kalpas) i.e. Sodharma kalpa and Ishankalpa in the first row in the first wing, in each direction the number of residential celestial vehicles have been said as sixty two respectively. According to the counting of Vimans wings and rows the entire celestial vehicles have been said sixty two in numbers.

।। बासठवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Sixty Second Samvaya)

तिरेसठवां समवाय

The Sixty Third Samvaya

३२१-उसभे णं अरहा कोसलिए तेसट्ठिं पुव्वसयसहस्साइं महारायमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ उणगारियं पव्वइए।

कौशलिक ऋषभ अर्हन् तिरेसठ लाख पूर्व वर्ष तक महाराज्य के मध्य में रहे अर्थात् राजा के पद पर आसीन रहे। तदुपरान्त वे मुंडित हुए और अगार से अनगारिता में प्रव्रजित हुए।

The king of Ayodhya Arihant Rishabh remained as asking for a period of sixty three poorva years. After that, he got his head tonsured, consecrated as an ascetic from the life of householder.

३२२-हरिवास-रम्मयवासेसु मणुस्सा तेवट्ठिए राइंदिएहिं संपत्तजोव्वणा भवंति।

हरिवर्ष और रम्यक्वर्ष में मनुष्य तिरेसठ रात-दिनों में पूर्ण यौवन को प्राप्त हो जाते हैं अर्थात् उन्हें माता-पिता द्वारा पालन की अपेक्षा नहीं रहती।

In the region of Harivarsh and Ramyakvarsh the human being gets his full youth within a period of sixty three days. So, he does not expect to be brought up by his parents.

३२३-निसढे णं पव्वए तेवट्ठिं सूरोदया पण्णत्ता। एवं नीलवंते वि।

निषध पर्वत और नीलवन्त पर्वत पर तिरेसठ-तिरेसठ सूर्योदय कहे गए हैं।

Sixty three sun-rise on Nishadh Mountain and sixty three on Neelvant Mountain sun have been said.

॥ तिरेसठवां समवाय समाप्त ॥

(The End of Sixty Third Samvaya)

चौसठवां समवाय

The Sixty Fourth Samvaya

३२४-अट्ठट्ठमिया णं भिक्खुपडिमा चउसट्ठीए राइंदिएहिं दोहि य अट्ठासीएहिं भिक्खासएहिं-अहासुत्तं जाव [अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएण फासित्ता पालित्ता सोहित्ता तीरित्ता किट्टित्ता आराहइत्ता आणाए अणुपालित्ता] भवइ।

अष्टाष्टमिका भिक्षु प्रतिमा चौसठ रात-दिनों में, दो सौ अठासी सर्व भिक्षाओं से, सूत्र के अनुसार, यथा-तथ्य, सम्यक् प्रकार काय से स्पर्श कर, पाल कर, शोधन कर, पार कर, कीर्तन कर, आज्ञानुसार अनुपालन कर आराधित होती है।

The (eighth) Ashtashtamika Bhikshu Pratima is basedon two hundred eighty eight total alms in sixty four days and nights, according to the Sutra, as described, by touching, bringing up, reforming, crossing, reciting and obeying the orders through righteous body.

३२५–चउसट्ठिं असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता। चमरस्स णं रन्नो चउसट्ठिं सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ।

असुरकुमार देवों के चौसठ लाख आवास या भवन कहे गए हैं। चमरराज के चौसठ हजार सामानिक देव कहे गए हैं।

Sixty four lacs residences of malevolent demons (Asur Kumar) have been said. Sixty four thousand co-chief (Samanik gods) celestial beings have been mentioned of Chamar-raj Indra.

३२६–सव्वे वि दधिमुहा पव्वया पल्लसंठाणसंठिया सव्वत्थ समा विक्खंभमुस्सेहेणं चउसट्ठिं जोयणसहस्साइं पण्णत्ता।

समस्त दधिमुख पर्वतों के विषय में कहा गया है कि ये पर्वत पल्य यानि ढोल के आकार से अवस्थित हैं, नीचे-ऊपर सर्वत्र समान विस्तार वाले हैं और इनकी ऊँचाई चौसठ हजार योजन है।

In respect of all the Dadhimukh Mountains it has been said that they are situated in the form of a drum, the upper and lower portion of these mountains are of equal expansion and the height is equal to sixty four thousand yojanas.

३२७–सोहम्मीसाणेसु बंभलोए यतिसु कप्पेसुचउसट्ठिं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

तीन कल्पों — सौधर्मकल्प, ईशानकल्प एवं ब्रह्मकल्प में चौसठ लाख विमानावास हैं। इनमें सौधर्मकल्प में बत्तीस लाख विमानावास, ईशानकल्प में अट्ठाईस लाख विमानावास तथा ब्रह्मकल्प में चार लाख विमानावास कहे गए हैं।

In the three heavens namely Sodharma kalpa, Ishankalpa, Brahmna kalpa the number of vimans (residences of celestial beings) are sixty four lacs in which thirty two of Sodharma kalpa, twenty eight lacs of Ishan kalpa and four lacs of Brahmna kalpa residences are stated.

३२८–सव्वस्स वि य णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स चउसट्ठिलट्ठीए महग्घे मुत्तामणिहारे पण्णत्ते।

सभी चातुरन्त चक्रवर्ती राजाओं के पास मुक्ता-मणियों का हार होता है। इसे चौसठ लड़ी वाला बहुमूल्य हार कहा गया है।

All the Chaturant Chakravarti (the supreme lords) have a necklace made of Mukta-Mani (pearl-crystal). This valuable necklace has been said of sixty four strings.

।। चौसठवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Sixty Fourth Samvaya)

पैंसठवां समवाय

The Sixty Fifth Samvaya

३२९–जंबुद्दीवे णं दीवे पणसट्ठिं सूरमंडला पण्णत्ता।

जम्बूद्वीप नामक इस द्वीप में पैंसठ सूर्यमण्डल कहे गए हैं।

In the continent namely Jambudweep sixty five sun (Mandal) orbits have been narrated.

३३०–थेरे णं मोरियपुत्ते पणसट्ठिवासाइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए।

स्थविर मौर्यपुत्र पैंसठ वर्ष अगारवास में रहे। तदुपरान्त वे मुंडित हुए और अगार त्याग कर अनगारिता में प्रव्रजित हुए।

The senior ascetic Mauryaputra remained as a householder for a period of sixty five years. Thereafter he got his head tonsured and renouncing the household consecrated as houseless monk.

३३१–सोहम्मवडिंसियस्स णं विमाणस्स एगमेगाए बाहाए पणसट्ठिं पणसट्ठिं भोमा पण्णत्ता।

सौधर्मावतंसक विमान की एक-एक दिशा में पैंसठ-पैंसठ भवन कहे गए हैं।

Sixty five celestial residences have been said in each direction of Sodharmavantasik Viman.

।। पैंसठवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Sixty Fifth Samvaya)

छियासठवां समवाय

The Sixty Sixth Samvaya

३३२–दाहिणड्ढमाणुस्सखेत्ताणं छावट्ठिं चंदा पभासिंसु वा, पभासंति वा, पभासिस्संति वा। छावट्ठिं सूरिया तविंसु वा, तवंति वा, तविस्संति वा। उत्तरड्ढमाणुस्सखेत्ताणं छावट्ठिं चंदा पभासिंसु वा, पभासंति वा, पभासिस्संति वा, छावट्ठिं सूरिया तविंसु वा, तवंति वा, तविस्संति वा।

दक्षिणार्ध मानुष क्षेत्र को छियासठ चन्द्र प्रकाशित करते थे प्रकाशित करते हैं और प्रकाशित करेंगे। इसी प्रकार मानुष क्षेत्रों में छियासठ सूर्य तपते थे, तपते हैं और तपेंगे। उत्तरार्ध मानुष क्षेत्र को भी छियासठ चन्द्र प्रकाशित करते थे, प्रकाशित करते हैं और प्रकाशित करेंगे। इसी प्रकार उत्तरार्ध मानुष क्षेत्र में भी छियासठ सूर्य तपते थे, तपते हैं और तपेंगे।

In the human beings regions namely South hemisphere and North hemisphere it has been said that the moons and suns illuminate and provide heat here. Sixty six moons have illuminated the South hemispheres of human beings region, illuminate and will illuminate. In the same way Sixty Six Suns had shun of, are shining and will burnt in South hemisphere human beings region. In the human beings North hemisphere, too. Sixty Six Suns had burnt, burn and will burn.

३३३–सेज्जंसस्स णं अरहओ छावट्ठिं गणा छावट्ठिं गणहरा होत्था।

श्रेयांस अर्हत् के गणों और गणधरों की संख्या छियासठ-छियासठ कही गई है।

The number of ascetic groups and the head of ascetic groups (gandhars) of Arihant Shreyans had been said as Sixty six respectively.

३३४–आभिणिबोहियणाणस्स णं उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

आभिनिबोधिक (मति) ज्ञान की उत्कृष्ट स्थिति छियासठ सागरोपम कही गई है।

The maximum time duration of sensory cognitive knowledge (Aabhinibodhik (Mati) Gyan) has been said of Sixty Six Sagropama.

।। छियासठवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Sixty Six Samvaya)

सड़सठवां समवाय

The Sixty Seventh Samvaya

३३५–पंचसंवच्छरियस्स णं जुगस्स नक्खत्तमासेणं भिज्जमाणस्स सत्तसट्ठिं नक्खत्तमासा पण्णत्ता।

पंच सांवत्सरिक युग में नक्षत्र मास से गिनने पर सड़सठ नक्षत्र मास कहे गए हैं।

On counting from the Nakshatra month sixty seven Nakshatra months have been said in the five years epoch/era.

३३६–हेमवय-एरवयाओ णं बाहाओ सत्तसट्ठिं सत्तसट्ठिं जोयणसयाइं पणत्राइं तिण्णि य भागा जोयणस्स आयामेणं पण्णत्ताओ।

हैमवत और एरवत क्षेत्र की भुजाएँ सड़सठ-सड़सठ सौ पचपन योजन और एक योजन के उन्नीस भागों में से तीन भाग प्रमाण कही गई हैं।

The arms of two regions namely Haimvat and Airavat have been said equal to three parts and of nineteen parts of one yojana and Sixty Seven hundred and fifty five yojana.

३३७–मंदरस्स णं पव्वयस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ गोयमदीवस्स पुरच्छिमिल्ले चरमंते एस णं सत्तसट्ठिं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

मन्दर पर्वत के पूर्वी चरमान्त भाग से गौतम द्वीप के पूर्वी चरमान्त भाग का सड़सठ हजार योजन बिना किसी व्यवधान के अन्तर कहा गया है।

The distance from the Eastern extreme end part of Mountain Meru to the Eastern extreme end part of Gautaer island without any obstacle has been said of sixty seven yojanas each.

३३८–सव्वेसिं पि णं णक्खत्ताणं सीमाविक्खंभेणं सत्तट्ठिं भागं भइए समंसे पण्णत्ते।

समस्त नक्षत्रों का सीमा-विष्कम्भ सड़सठ भागों से विभाजित करने पर सम अंश वाला कहा गया है।

After dividing by sixty seven the inter difference of boundaries of all the Nakshatras has been said of even degrees.

।। सड़सठवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Sixty Seventh Samvaya)

अड़सठवां समवाय

The Sixty Eighth Samvaya

३३९–धायइसंडे णं दीवे अडसट्ठिं चक्कवट्टिविजया, अडसट्ठिं रायहाणीओ पण्णत्ताओ। उक्कोसपए अडसट्ठिं अरहंता समुप्पज्जिंसु वा, समुप्पज्जंति वा, समुप्पज्जिस्संति वा। एवं चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा।

धातकीखण्ड द्वीप में अड़सठ चक्रवर्ती कहे गए हैं। इन चक्रवर्तियों के अड़सठ विजय-प्रदेश और अड़सठ राजधानियाँ हैं। उत्कृष्ट पद की अपेक्षा धातकी खण्ड में अड़सठ अरहंत उत्पन्न होते रहे हैं, उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न होंगे। इसी प्रकार चक्रवर्ती, बलदेव और वासुदेव के बारे में भी जानना चाहिए।

Sixty eight supreme lords (Chakravarti) have been said in the continent of Dhatki Khand. The number of the capitals and Vijay provinces of these Supreme lords are Sixty Eight. With regards to superior/eminent position (status, rank) sixty eight Arihant would have taken birth, take birth and will take birth in Dhataki Khand. In the same way it should be known about supreme lords (Chakravarti) lords (Vasudeva) co-lords (Baldeva), too.

३४०–पुक्खरवरदीवड्ढे णं अडसट्ठिं विजया, अडसट्ठिं रायहाणीओ पण्णत्ताओ। उक्कोसपए अडसट्ठिं अरहंता समुप्पज्जिंसु वा, समुप्पज्जंति वा, समुप्पज्जिस्संति वा। एवं चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा।

पुष्करवरद्वीपार्ध में विजय-प्रदेश और राजधानियाँ कही गई हैं जिनकी संख्या अड़सठ-अड़सठ है। वहाँ उत्कृष्ट रूप से अड़सठ अरहन्त उत्पन्न होते रहे हैं, उत्पन्न होते हैं और उत्पन्न होंगे। इसी प्रकार चक्रवर्ती बलदेव और वासुदेव के बारे में भी जानना चाहिए।

Capitals and Vijay Pradesh have been narrated in (Pushkar dweepardh). The number of these capitals and Vijay Pradesh are sixty eight-sixty eight respectively. There at the most sixty eight Arihant have been taking birth, take birth and will take birth. In the same way it should be known about the supreme lords, lords and co-lords, too.

३४१–विमलस्स णं अरहओ अडसट्ठिं समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपया होत्था।

विमलनाथ अर्हन् के संघ में श्रमणों की उत्कृष्ट श्रमण सम्पदा अड़सठ हजार थी।

In the ascetic congregation of Arihant Vimal Nath the maximum ascetic wealth of the Shramans was sixty eight thousand.

।। अड़सठवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Sixty Eight Samvaya)

उनहत्तरवां समवाय

The Sixty Nineth Samvaya

३४२–समयखित्ते णं मंदरवज्जा एगूणसत्तरिं वासा वासधरपव्वया पण्णत्ता, तं जहा– पणत्तीसं वासा, तीसं वासहरा, चत्तारि उसुयारा।

समय क्षेत्र यानि मनुष्य क्षेत्र या अढाई द्वीप में मन्दर पर्वत को छोड़कर उनहत्तर वर्ष और वर्षधर पर्वत कहे गए हैं। यथा—पैंतीस वर्ष (क्षेत्र), तीस वर्षधर (पर्वत) और चार इषुकार पर्वत।

In the Samay Kshetra i.e. human beings region of two and a half continents, barring the Mandar Mountains,Sixty Nine Varsh and Varshdhar Mountains have been said namely thirty five Varsh (mountians), thirty Varshdhar(mountains) and four Ishukar mountains.

३४३–मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरमंताओ गोयमदीवस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एस णं एगूणसत्तरिं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

मन्दर पर्वत के पश्चिमी चरमान्त से गौतम द्वीप का पश्चिम चरमान्त भाग उनहत्तर हजार योजन अन्तर वाला बिना किसी व्यवधान के कहा गया है।

From the western extreme end of the Jambu continent to the western extreme end part of Gautamis land the distance without any gap has been told of sixty nine thousand yojanas.

३४४–मोहणिज्जवज्जाणं सत्तण्हं कम्मपगडीणं एगूणसत्तरि उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ।

मोहनीय कर्म को छोड़कर शेष सातों कर्म प्रकृतियों की उत्तर प्रकृतियाँ उनहत्तर कही गई हैं।

Barring the Deluding Karma the tendencies of remaining seven karmas have been said Sixty nine Uttar tendencies.

॥ उनहत्तरवां समवाय समाप्त ॥

(The End of Sixty Nineth Samvaya)

सत्तरवां समवाय

The Seventieth Samvaya

३४५–समणे भगवं महावीरे वासाणं सवीसराईए मासे वइक्कंते सत्तरिएहिं राइंदिएहिं सेसेहिं वासावासं पज्जोसवेइ।

श्रमण भगवान महावीर चातुर्मास प्रमाण वर्षाकाल के एक मास बीस दिन यानि पचास दिन बीत जाने पर और सत्तर दिनों के शेष रहने पर वर्षावास करते थे।

Shraman Bhagwan Mahavir used to stay for rainy seasons at one place after the expiry of fifty days and before the remaining seventy days of rainy season totalling to four months.

३४६–पासे णं अरहा पुरिसादाणीए सत्तरिं वासाइं बहुपडिपुन्नाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे।

पुरुषादानीय पार्श्व अर्हत् ने परिपूर्ण सत्तर वर्ष तक श्रमण-पर्याय का पालन किया। इसके उपरान्त वे सिद्ध-बुद्ध हुए। कर्मों से मुक्ति पाकर सर्व दुःखों से रहित हुए।

Supreme among human beings Arihant Parshvanath (Purushadaniya) spent the ascetic life for a total period of Seventy years. After that he attained salvation. At last getting liberation from all his accumulated karmas he got Parinirvana. Eventually he became free from worldly miseries.

३४७–वासुपुज्जे णं अरहा सत्तरिं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

वासुपूज्य अर्हत् सत्तर धनुष ऊँचे थे।

The height of Arihant Vasupujya was seventy (bows) Dhanush.

३४८–मोहणिजस्स णं कम्मस्स सत्तरिं सागरोवमकोडाकोडीओ अबाहूणिया कम्मट्ठिई कम्मनिसेगे पण्णत्ते।

मोहनीय कर्म की अबाधाकाल (जब तक बंधा हुआ कर्म उदय में आकर बाधा न देवे) से रहित सत्तर कोड़ा कोड़ी सागरोपम-प्रमाण कर्म स्थिति और कर्म निषेक कहे गए हैं।

Devoid of Abadhakaal (As long as accumulated karmas don't exhibit its effect) deluding karmas have been said equal to seven hundred million Sagropama duration.

३४९–माहिंदस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सत्तरि सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ।

देवेन्द्र देवराज माहेन्द्र के सामानिक देव सत्तर हजार कहे गए हैं।

The numbers of the co-chief of Devendra Devraj Mahender have been stated as seventy thousand.

।। सत्तरवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Seventieth Samvaya)

इकहत्तरवां समवाय

The Seventy First Samvaya

३५०–चउत्थस्स णं चंदसंवच्छरस्स हेमंताणं एक्कसत्तरीए राइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं सव्वबाहिराओ मंडलाओ सूरिए आउट्टिं करेइ।

सूर्य सबसे बाहरी मण्डल (चार क्षेत्र) से आवृत्ति करता है अर्थात् दक्षिणायण से उत्तरायण की ओर गमन करना प्रारम्भ करता है। किन्तु यह स्थिति तब बनती है जब चतुर्थ चन्द्र संवत्सर की हेमन्त ऋतु के इकहत्तर रात-दिन बीत जाते हैं।

The Sun turns from the outermost orbit (four regions) i.e. the Sun begins its rotation to Northward from Southward. This condition takes shape only when seventy one days and nights of the Haimvant (winter) season of moon year has elapsed.

३५१–वीरियप्पवायस्स णं पुव्वस्स एक्कसत्तरिं पाहुडा पण्णत्ता।

वीर्य प्रवाद पूर्व के इकहत्तर प्राभृत (अधिकार) कहे गए हैं।

Seventy one Prabhrat (Adhikar) of Viryapravad Poorvahave been stated.

३५२–अजिते णं अरहा एक्कसत्तरिं पुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए। एवं सगरो वि राया चाउरंतचक्कवट्टी एक्कसत्तरिं पुव्व [सयसहस्साइं] जाव [अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता] पव्वइए।

अजित अर्हन् इकहत्तर लाख पूर्व वर्ष अगारवास में रहे। तदुपरान्त वे मुण्डित होकर अगार से अनगारिता में प्रव्रजित हुए। इसी प्रकार चातुरन्त चक्रवर्ती सगर राजा भी इकहत्तर लाख पूर्व वर्ष अगारवास में रहे। तदुपरान्त वे मुंडित होकर अगार से अनगारिता में प्रव्रजित हुए।

Arihant Ajit remained as a householder for a period of seventy one lac poorvas. After that he got his head tonsured and became initiated as an ascetic. In the sameway the supreme lord (chaturant chakravartis) Emperor Sagar, too, remained as a householder for a period of Seventy one lacs poorvas. After that getting his head he tonsured became an ascetic.

।। इकहत्तरवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Seventy First Samvaya)

बहत्तरवां समवाय

The Seventy Second Samvaya

३५३–वावत्तरिं सुवन्नकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

लवणस्स समुद्दस्स वावत्तरिं नागसाहस्सीओ बाहिरियं वेलं धारंति।

सुपर्ण कुमार देवों के बहत्तर लाख आवास यानि भवन कहे गए हैं।

लवण समुद्र की बाहरी वेला को बहत्तर हजार नाग धारण करते हैं।

Seventy two residences or Bhawans have been said of Suparn Kumar Devas.

३५४–समणे भगवं महावीरे वावत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावय सव्वदुक्खप्पहीणे। थेरे णं अयलभाया वावत्तरिं वासाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे।

श्रमण भगवान महावीर ने बहत्तर वर्ष की सर्व आयु भोगी। तदुपरान्त वे सिद्ध-बुद्ध हो गए, कर्मों से मुक्त होकर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए, तथा सर्व दुःखों से रहित हुए। स्थविर अंचलभ्राता भी बहत्तर वर्ष की आयु पूर्ण कर तथा सिद्ध-बुद्ध हुए, यावत् सर्व दुःखों से रहित हो हुए।

Shraman Bhagwan Mahavir survived a total life span of Seventy two years. After that he attained salvation. After getting liberation from his Karmas he got Parinirvana i.e. the realm of Sidhgati. Eventually he became devoid of all the miseries and sufferings. The senior (sthavir) ascetic Achalbhrata, too, enjoyed a life of seventy two years. After that he attained salvation. He became devoid of all miseries and suffeings.

३५५–अब्भिंतरपुक्खरद्धे णं वावत्तरिं चंदा पभासिंसु वा पभासंति वा, पभासिस्संति वा। [एवं] वावत्तरिं सूरिया तविंसु वा, तवंति वा, तविस्संति वा। एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स वावत्तरिपुरवरसाहस्सीओ पण्णत्ताओ।

आभ्यन्तर पुष्करार्ध द्वीप में चन्द्र और सूर्य का प्रकाशित होना तथा तपना कहा गया है। इस द्वीप में बहत्तर चन्द्र प्रकाश करते थे, प्रकाश करते हैं और आगे प्रकाश करेंगे। इसी प्रकार बहत्तर सूर्य तपते थे, तपते हैं और आगे तपेंगे। प्रत्येक चातुरन्त चक्रवर्ती राजा के बहत्तर हजार उत्तम पुर (नगर) कहे गए हैं।

In the inner half of the continent of Pushkrardh it been said that the sun and moon burn and illuminates. Seventy two moons have illuminated, illuminate and will illuminate in this half continent. In the same way seventy two suns

had burnt, burn and will burn. Seventy two thousand excellent cities of Supreme lords (Chakravarti) have been narrated therein.

३५६–वावत्तरिं कलाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–लेहं १, गणियं २, रूवं ३, नट्टं ४, गीयं ५, वाइयं ६, सरगयं ७, पुक्खरगयं ८, समतालं ९, जूयं १०, जणवायं ११, पोरेकच्चं १२, अट्ठावयं १३, दगमट्टियं १४, अन्नविही १५, पाणविही १६, वत्थविही १७, सयणविही १८, अज्जं १९, पहेलियं २०, मागहियं २१, गाहं २२, सिलोगं २३, गंधजुत्तिं २४, मधुसित्थं २५, आभरणविही २६, तरुणीपडिकम्मं २७, इत्थीलक्खणं २८, पुरिसलक्खणं २९, हयलक्खणं ३०, गयलक्खणं ३१, गोणलक्खणं ३२, कुक्कुडलक्खणं ३३, मिंढयलक्खणं ३४, चक्कलक्खणं ३५, छत्तलक्खणं ३६, दंडलक्खणं ३७, असिलक्खणं ३८, मणिलक्खणं ३९, कागणिलक्खणं ४०, चम्मलक्खणं ४१, चंदचरियं ४२, सूरचरियं ४३, राहुचरियं ४४, गहचरियं ४५, सोभागकरं ४६, दोभागकरं ४७, विज्जागयं ४८, मंतगयं ४९, रहस्सगयं ५०, सभासं ५१, चारं ५२, पडिचारं ५३, बूहं ५४, पडिबूहं ५५, खंधावारमाणं ५६, नगरमाणं ५७, वत्थुमाणं ५८, खंधावारनिवेसं ५९, वत्थुनिवेसं ६०, नगरनिवेसं ६१, ईसत्थं ६२, छरुप्पवायं ६३, आससिक्खं ६४, हत्थिसिक्खं ६५, धणुव्वेयं ६६, हिरण्णपागं सुवण्णपागं मणिपागं धातुपागं ६७, बाहुजुद्धं दंडजुद्धं मुट्ठिजुद्धं अट्ठिजुद्धं जुद्धं निजुद्धं जुद्धाइजुद्धं ६८, सुत्तखेडं नालियाखेडं वट्टखेडं धम्मखेडं चम्मखेडं ६९, पत्तछेज्जं कडगच्छेज्जं ७०, सजीवं निज्जीवं ७१, सउणिरुयं ७२।

बहत्तर कलाएँ कही गई हैं, यथा — १. लेख कला (ब्राह्मी आदि अट्ठारह प्रकार की लिपियों के लिखने का विज्ञान), २. गणित कला, ३. रूपकला, ४. नाट्य कला, ५. गीत कला, ६. वाद्य कला, ७. स्वरगत कला, ८. पुष्करगत कला, ९. समताल कला, १०. द्यूत कला, ११. जनवाद कला, १२. नगर-रक्षा कला, १३. अष्टापद कला (शतरंज, चौसर आदि खेलने की कला), १४. दकमृत्तिका कला, १५. अन्नविधि कला, १६. पानविधि कला (अनेक प्रकार के पेय पदार्थ बनाने की कला), १७. वस्त्रविधि कला, १८. शयन विधि अथवा सदन विधि (गृह-निर्माण) कला, १९. आर्याविधि कला, २०. प्रहेलिका कला, २१. मागधिका (स्तुति-पाठ करने वाले चारण-भाटों की कला), २२. गाथा कला, २३. श्लोक कला, २४. गन्धयुति कला, २५. मधुसिक्थ कला (स्त्रियों के पैरों में लगाया जाने वाला माहुर बनाने की कला), २६. आभरण विधि कला, २७. तरुणी प्रतिकर्म कला, २८. स्त्रीलक्षण कला, २९. पुरुष लक्षण कला, ३०. हयलक्षण कला, ३१. गजलक्षण कला, ३२. गोण लक्षण कला (बैलों के शुभ-अशुभ लक्षणों को जानना), ३३. कुक्कुट लक्षण कला, ३४. मेंढ लक्षण कला, ३५. चक्रलक्षण कला, ३६. छत्र लक्षण कला, ३७. दंडलक्षण कला, ३८. असिलक्षण कला, ३९. मणि लक्षण कला, ४०. काकणी लक्षण कला, ४१. चर्मलक्षण कला, ४२. चन्द्रचर्या कला,

४३. सूर्यचर्या कला, ४४. राहुचर्या कला, ४५. ग्रहचर्या कला, ४६. सौभाग्यकर कला, ४७. दौर्भाग्यकर कला, ४८. विद्यागत कला, ४९. मन्त्रगत कला, ५०. रहस्यगत कला, ५१. समास कला (प्रत्येक वस्तु के वृत का ज्ञान), ५२. चार कला (गुप्तचर जासूसी की कला), ५३. प्रतिचार कला, ५४. व्यूह कला, ५५. प्रतिव्यूह कला, ५६. स्कन्धावारमान कला, ५७. नगरमान कला, ५८. वास्तुमान कला, ५९. स्कन्धावार निवेश कला, ६०. वस्तुनिवेश कला, ६१. नगरनिवेश कला, ६२. इष्वस्त्रकला (बाण चलाने की कला), ६३. छरुप्रवाद कला (तलवार की मूठ आदि बनाना), ६४. अश्व शिक्षा कला, ६५. हस्ति शिक्षा कला, ६६. धनुर्वेद कला, ६७. हिरण्य पाक कला (सुवर्ण पाक, मणिपाक, धातु पाक, धातुओं को गलाने, पकाने और उनकी भस्म आदि बनाने की विधि जानना), ६८. युद्धकला (बाहु युद्ध, दण्ड युद्ध, मुष्टि युद्ध, यष्टि युद्ध, सामान्य युद्ध, नियुद्ध, युद्धातियुद्ध, आदि नाना प्रकार के युद्धों को जानना), ६९. खेडकला (सूत्रखेड, नालिका खेड, वर्त्तखेड, धर्मखेड, चर्मखेड आदि अनेक प्रकार के खेलों को जानना), ७०. पत्रच्छेद्य, कटक छेद्य कला, ७१. सजीव-निर्जीव कला, ७२. शकुनिरुत कला।

Seventy two abilities (Kala) have been described as : 1. Writing Ability (Kala) (the science of writing eighteen scripts as Brahmi scripts etc., 2. Arithmetic, 3. Art of make-up. 4. Dancing, 5. Singing, 6. Music, 7. Vocal, 8. Playing of musical instrument Kala, 9. Rythmic Note, 10. Art of Gambling, 11. Janvad Kala, 12. Pushkargat (vocal instrument's knowledge), 13. Astapad Kala (knowledge of playing disc and chess) etc., 14. Dakmritika Kala (knowledge of making toys of mud), 15. Annavidhi Kala (knowledge of preparing food), 16.Liquid making knowledge, 17. Cloth making Art, 18. Art or building making, 19. Aryavedic, 20. Prehlika Kala (Art of making riddles), 21. Magadhika Kala (the art of bards of flattering) 22. Gatha Kala (the art of writing scriptures), 23. Sloka Kala (knowledge of writing couplets in Sanskrit language), 24. Gandhyuti (knowledge of making scents), 25. Madhusikth Kala (knowledge of making mohar used by women to smear on feet), 26. Ornament making art, 27. Truni Pratikaram Kala (knowledge of entertaining the women folk), 28. Knowledge of interpreting (marks on a woman), 29. Purush lakshan Kala (knowledge of knowing the auspicious and inauspicious symptom of men), 30. Horse symptom knowledge, 31. Elephant symptom interpreting knowledge, 32. Cow symptom knowing kala, 33. Cock symptom knowing kala, 34. Frog symptom knowledge, 35. Chakar symptom, 36. Umbrella symptom knowledge, 37. Stick holding Kala, 38. Jewels symptom knowing Kala, 39.Sword's symptom knowledge, 40. Katani Jewels symptom's knowledge, 41. Leather knowledge symptom Kala, 42. Movement of moon Kala, 43.Movement of sun Kala, 44. Eclipse of Rahu symptom knowledge, 45. Movement of planets knowledge, 46.Saubhagya (fortune) enhancing knowledge, 47. Knowledge of unfortunate

symptom, 48. Vidyagat knowledge of spells chanting, 49. Spells knowledge,50. Occult knowledge Kala, 51. Samas (knowledge of periphery of every matter), 52. Char Kala (knowledge of spy clandestine), 53. Pratichar Kala (knowledge of service offering), 54. Vyuh Kala (knowledge of making army attacking plan), 55. Prativyuh Kala to overcome the foe's army, 56. Skandhavarman (to know the measurement to fix the camp of army), 57. Nagarman (knowledge of constructing cities), 58. Vastuman Architecture, 59. Skandhavar Nivesh (fighting position of infantry), 60. Vastu Nivesh (keeping the utensils at proper place Kala), 61. Nagar Nivesh (to settle a city), 62. Ishvstra Kala (knowledge of fighting with bomb), 63. Chharuppravad Kala (hilt making knowledge), 64. Horse riding art, 65. Elephant controlling Kala, 66. Dhanurvidhya (knowledge of bow fighting), 67. Hiranyapak (knowledge of burning to ashes the gold to prepare medicine for boosting energy, similar to prepare arth pearls, other metals to melt them, heat them and prepare their powder), 68. Art of welfare (Arms battle, stick battle, fist battle, common battle etc.), 69. Knowledge of different types of games (play with string, with dice and the like), 70. Leaf piercing and wood piercing art, 71. Art of making non-living a living being then living being a non-living being or invisibility, 72. Shakunirut (knowledge of the birds languages).

३५७–संमुच्छिम-खहयरपंचिदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं वावत्तरिं वाससहस्साइं ठिई पण्णत्ता।

सम्मूर्च्छिम खेचर पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक जीवों की उत्कृष्ट स्थिति बहत्तर हजार वर्ष की कही गई है।

The maximum life span of avians who take birth spontaneouslyhas been said of seventy two years.

।। बहत्तरवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Seventy Second Samvaya)

तिहत्तरवां समवाय

The Seventy Third Samvaya

३५८–हरिवास-रम्मयवासयाओ णं जीवाओ तेवत्तरिं तेवत्तरिं जोयणसहस्साइं नव य एगुत्तरे जोयणसए सत्तरसय-एगूणवीसइभागे जोयणस्स अद्धभागं च आयामेणं पण्णत्ताओ।

हरिवर्ष और रम्यक वर्ष की जीवाएँ तिहत्तर-तिहत्तर हजार नौ सौ एक योजन और एक योजन के उन्नीस भागों में से साढ़े सत्तरह भाग प्रमाण लम्बी कही गई हैं।

The lengths of the diameters of the region of Harivarsh and Ramyakvarsh have been said of equal to seventeen and a half parts out of nineteen parts of one yojana and seventy three thousand nine hundred one yojanas each.

३५९–विजए णं बलदेवे तेवत्तरिं वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे।

विजय बलदेव तिहत्तर लाख वर्ष की सर्व आयु भोगकर सिद्ध-बुद्ध हुए, कर्मों से मुक्ति पाकर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए तथा सर्व दुःखों से रहित हुए।

After enjoying a life span of seventy three years the co-lords of Vijay (Baldeva) attained salvation. After that annihilating all their karmas got they liberation i.e. Parinirvana. Eventually they became devoid of all the miseries and sufferings.

।। तिहत्तरवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Seventy Third Samvaya)

चौहत्तरवां समवाय

The Seventy Fourth Samvaya

३६०–थेरे णं अग्गिभूई गणहरे चोवत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे।

स्थविर अग्निभूति गणधर चौहत्तर वर्ष की सर्व आयु भोगकर सिद्ध-बुद्ध हुए। तदुपरान्त वे कर्मों से मुक्ति पाकर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए। अन्ततोगत्वा वे सर्व दुःखों से रहित हुए।

After enjoying the total age of seventy four years the senior ascetic head of the ascetic group Agnibhuti attained salvation. After that liberating from all his accumulated karmas he got liberation i.e. Parinirvana. At last he annihilated all his miseries and sufferings.

३६१–निसहाओ णं वासहरपव्वयाओ तिगिञ्छिदहाओ सीतोया महानदी चोवत्तरिं जोयणसयाइं साहियाइं उत्तराहिमुही पवहित्ता वइरामयाए जिब्भियाए चउजोयणायामाए पन्नासजोयणविक्खंभाए वइरतले कुंडे महया घडमुहपवत्तिएणं मुत्तावलिहारसंठाणसंठिएणं पवाहेणं महया सद्देणं पवडइ। एवं सीता वि दक्खिणाहिमुही भाणियव्वा।

निषध वर्षधर पर्वत के तिगिंछ द्रह से सीतोदा महानदी चौहत्तर सौ योजन से कुछ अधिक उत्तराभिमुखी बहती है। वह नदी महान् घटमुख से प्रवेश कर और वज्रमयी, चार योजन लम्बी और पचास योजन चौड़ी जिह्विका से निकलती है। तत्पश्चात् वह नदी मुक्तावलिहार के आकार वाले प्रवाह से भारी शब्द के साथ वज्रतल वाले कुण्ड में गिरती है।

इसी प्रकार सीता नदी भी नीलवन्त वर्षधर पर्वत के केशरी द्रह से चौहत्तर सौ योजन से कुछ अधिक दक्षिण अभिमुखी बहती है। वह महान घटमुख से प्रवेश कर वज्रमयी चार योजन लम्बी पचास योजन चौड़ी जिह्विका से निकलकर मुक्तावलिहार के आकार वाले प्रवाह से भारी शब्द के साथ वज्रतल वाले कुण्ड में गिरती है।

The great river Sitoda flows from the Tiginchh Cave of Nishadh Varshdhar Mountain to northwards a little more than seventy four hundred yojanas enters into the great pitcher like mouth and comes out from thunder bolt like, four yojanas long, fifty yojanas wide tongue falls into a hard bottomed deep basin, tumultuously, with a flow taking a shape of pearl string garland like. In the same way the great river Sita, too, flows from the Kesari lake of Neelvant Varshdhar Mountain to southward. It enters into the great pitcher mouth and emerging from there falls into the hard bottomed deep basin tumultuously taking the shape of pearl string like garland.

३६२–चउत्थवज्जासु छसु पुढवीसु चोवत्तरिं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

चतुर्थ पृथ्वी को छोड़कर शेष छह पृथ्वियों में कुल चौहत्तर लाख नारकावास कहे गए हैं।

Barring the fourth hell the remaining six hells have been said to have seventy four inferno residences in all.

।। चौहत्तरवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Seventy Fourth Samvaya)

पचहत्तरवां समवाय

The Seventy Fifth Samvaya

३६३–सुविहिस्स णं पुप्फदंतस्स अरहओ पन्नत्तरि जिणसया होत्था।

सीतले णं अरहा पन्नत्तरिपुव्वसहस्साइं अगारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए।

संती णं अरहा पन्नत्तरिवाससहस्साइं अगारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए।

सुविधि पुष्पदन्त अर्हन् के संघ में पचहत्तर सौ केवली जिन थे।

शीतल अर्हन् पचहत्तर हजार पूर्व वर्ष अगारवास में रहे। तदुपरान्त वे मुंडित हुए और अगार से अनगारिता में प्रव्रजित हुए।

शान्ति अर्हन् पचहत्तर हजार वर्ष अगार वास में रहे। तदुपरान्त वे मुंडित हुए और अगार से अनगारिता में प्रव्रजित हुए।

In the ascetic organisation (sangh) of Arihant SuvidhiPaushpdant there were seventy five Kewali Jina (omniscients). Arihant Sheetal Nath remained as laity (householder) for a period of seventy five poorvas years after that getting his head tonsured initiated himself as an ascetic. Arihant Shanti Nath spent a life of householder for a period of seventy five thousand years. Thereafter getting his head tonsured he got initiated an ascetic.

।। पचहत्तरवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Seventy Fifth Samvaya)

छिहत्तरवां समवाय

The Seventy Sixth Samvaya

३६४–छावत्तरिं विज्जुकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता। एवं दीव-दिसा-उदहीणं विज्जुकुमारिंद-थणियमग्गीणं, छण्हं पि जुगलयाणं छावत्तरिं सयसहस्साइं।

विद्युत्कुमार देवों के छिहत्तर लाख आवास कहे गए हैं। इसी प्रकार दक्षिण उत्तर दोनों युगल वाले छह देवों — द्वीपकुमार, दिशाकुमार, उदधिकुमार, विद्युत् कुमार, स्तनित कुमार एवं अग्नि कुमार के भी छिहत्तर लाख आवास कहे गए हैं।

Seventy six lacs residences of lightening (Vidyut) gods have been narrated. In the same way six the twin gods of North and South namely Dveep Kumar, Disha Kumar, AgniKumar, Vidyut Kumar, Stanit Kumar and Udadhi Kumar have seventy six lac residences.

।। छिहत्तरवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Seventy Sixth Samvaya)

सततत्तरवां समवाय

The Seventy Seventh Samvaya

३६५–भरहे राया चाउरंतचक्कवट्टी सत्तहत्तरिं पुव्वसयसहस्साइं कुमारावासमज्झे वसित्ता महारायाभिसेयं संपत्ते।

चातुरन्त चक्रवर्ती भरत राजा सतहत्तर लाख पूर्व कोटि वर्ष कुमार अवस्था में रहे फिर महाराज पद को प्राप्त हुए यानि राजा हुए।

Chaturant Chakravarti (the supreme lord) King Bharat remained as a prince for a period of seventy seven poorva years. Thereafter he was coronated as an Emperor i.e. became a King.

३६६–अंगवंसाओ णं सत्तहत्तरि रायाणो मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया।

अंगवंश की परम्परा में सतहत्तर राजा उत्पन्न हुए। वे मुंडित हुए और अगार से अनगारिता में प्रव्रजित हुए।

Seventy seven kings took birth in the family succession of Ang family line. They got their head tonsured and then consecrated as an ascetic.

३६७–गद्दतोय-तुसियाणं देवाणं सत्तहत्तरिं देवसहस्सपरिवारा पण्णत्ता।

गर्दतोय और तुषित इन लोकांतिक देवों का परिवार सत्तहत्तर हजार देवों वाला कहा गया है।

The family of Gardtoy Dev and Tushit Deva among the lokantik gods have been said of seventy seven thousand gods.

३६८–एगमेगे णं मुहुत्ते सत्तहत्तरिं लवे लवग्गेणं पण्णत्ते।

प्रत्येक मुहूर्त्त में लवों (काल के मान-विशेष) की गणना से सतहत्तर लव कहे गए हैं।

According to the counting of time the number of lav (a time measuring Indian unit) in each muhurat (a measure of 48 minutes) has been said of seventy seven, too.

।। सतहत्तरवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Seventy Seventh Samvaya)

अठहत्तरवां समवाय

The Seventy Eighth Samvaya

३६९–सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो वेसमणे महाराया अट्ठहत्तरीए सुवन्नकुमारादीवकुमारा-वाससयसहस्साणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टितं महारायत्तं आणाईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहरइ।

देवेन्द्र देवराज शक्र का वैश्रमण नामक चौथा लोकपाल सुवर्णकुमारों और द्वीपकुमारों के अठहत्तर लाख आवासों का आधिपत्य, अग्रस्वामित्व, स्वामित्व, भर्तृत्व (पोषकत्व), महाराजत्व, सेनानायकत्व करता है और उनका शासन एवं प्रतिपालन करता है।

There are Seventy eight lac residences of Suvarn Kumarsand Dveep Kumars the guardian gods of the fourth guardian loka (lokpal) named of Vaishraman of Devender Devraj Shakra have been out of them thirty eight lacs are of Suvarn Kumar and forty lacs of Dveep Kumar Vaisharaman god is their master, foremost owner, nurtures, commands and leads the army and rules them and brings them up.

३७०–थेरे णं अकंपिए अट्ठहत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव सव्व-दुक्खप्पहीणे।

स्थविर अकम्पित अठहत्तर वर्ष की सर्व आयु भोगकर सिद्ध-बुद्ध हुए, कर्मों से मुक्ति पाकर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए एवं सर्व दुःखों से रहित हुए।

The senior ascetic (sthavir) Akampit attained salvation after enjoying a total life of seventy eight thousand years. Annihilating all his karmas he got liberation i.e. Parinirvana. In the end he became devoid of all miseries and sufferings.

३७१–उत्तरायणनियट्टे णं सूरिए पढमाओ मंडलाओ एगूणचत्तालीसइमे मंडले अट्ठहत्तरिं एगसट्ठिभाए दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेता रयणिखेत्तस्स अभिवुड्ढेत्ता णं चारं चरइ। एवं दक्खिणायणनियट्टे वि।

उत्तरायण से लौटता हुआ सूर्य प्रथम मंडल से उनचालीसवें मण्डल तक एक मुहूर्त के इकसठिए अठहत्तर भाग प्रमाण दिन को कम करके और रजनी क्षेत्र अर्थात् रात्रि को बढ़ाकर संचार करता है। इसी प्रकार दक्षिणायण से लौटता हुआ भी रात्रि और दिन के प्रमाण को घटाता और बढ़ाता हुआ संचार करता है।

Returning from the north the sun moves ahead decreasing the day's time equal to sixty one parts out of seventy eight part of one muhurat (Indian time)

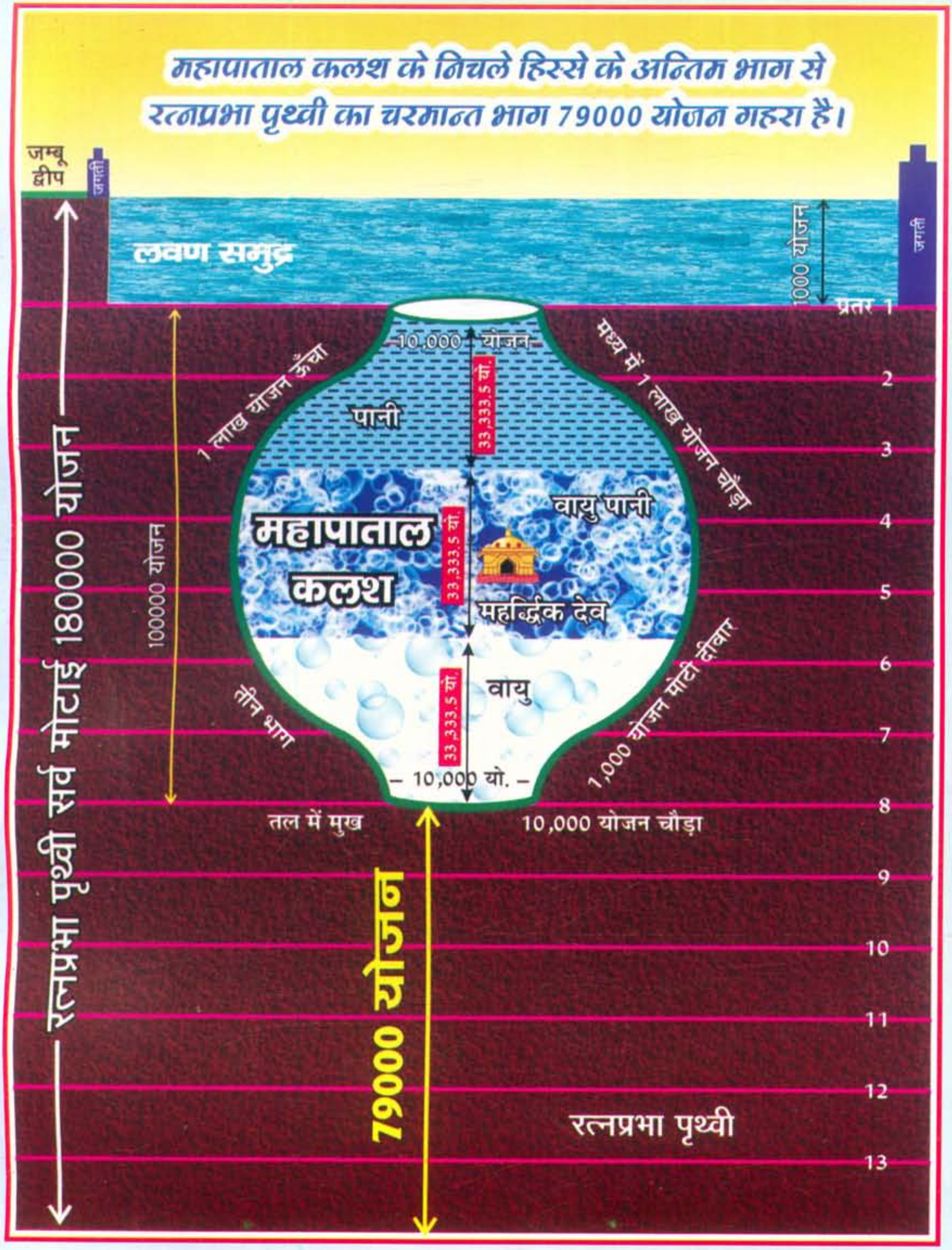
महापाताल कलश के निचले हिस्से के अन्तिम भाग से
रत्नप्रभा पृथ्वी का चरमान्त भाग 79000 योजन गहरा है।
जम्बू द्वीप
जगती
लवण समुद्र
1000 योजन
जगती
प्रतर 1
10,000 योजन
1 लाख योजन ऊँचा
मध्य में 1 लाख योजन चौड़ा
पानी
33,333.5 यो.
2
3
वायु पानी
महापाताल कलश
33,333.5 यो.
महर्द्धिक देव
4
5
वायु
33,333.5 यो.
तीन भाग
1,000 योजन मोटी दीवार
6
7
– 10,000 यो. –
8
तल में मुख
10,000 योजन चौड़ा
100000 योजन
रत्नप्रभा पृथ्वी सर्व मोटाई 180000 योजन
79000 योजन
9
10
11
12
रत्नप्रभा पृथ्वी
13

महापाताल कलश

लवण समुद्र में चारों दिशाओं में बादर पृथ्वीकाय के चार विशाल कलश हैं, जिन्हें महापाताल कलश कहते हैं। इन महापाताल कलशों की ऊँचाई एक लाख योजन है।

जम्बूद्वीप से 95000 योजन लवण समुद्र में जाने पर लवण समुद्र की गहराई 1000 योजन हो जाती है। उस गहराई से शुरू होकर रत्नप्रभा पृथ्वी के एक लाख योजन की गहराई तक यह महापाताल कलश स्थित हैं। महापाताल कलश के अन्तिम भाग से रत्नप्रभा पृथ्वी का चरमांत 79,000 योजन रह जाता है। इसको इस तरह समझ सकते हैं–

रत्नप्रभा पृथ्वी की कुल गहराई	=	1,80,000 योजन
घटाया:लवण समुद्र की गहराई जहाँ महापाताल कलश स्थित है	=	1,000 योजन
शेष	=	1,79,000 योजन
घटाया:महापाताल कलश की ऊँचाई	=	1,00,000 योजन
रत्नप्रभ पृथ्वी का शेष बचा भाग	=	79,000 योजन

–सूत्र सं. 372

Mahapataal Kalash (The Great Subterranean Pitchers)

There are four huge pitchers made of gross earth bodies in the four directions of the "Lavana Ocean", those are called "The Great Subterranean Pitchers." The height of all these great Suterranean Pitchers are one lakh yojana each.

On going 95000 yojanas into the Ocean "Lavana" from the Jambu continent the depth becomes 1000 yojans of the Ocean "Lavana". Beginning from that depth these four pitchers are situated deep up to one lakh yojans of Ratan Prabha Hell. The extreme end of the Ratan Prabha hell remains 79,000 yojans from the end of the great Subterranean Pitchers. It can be understood under as:

The total depth of the Ratan Prabha hell	= 1,80,000 yojana
minus – the depth of the ocean "Lavana" where the great Subterranean pitchers are situated	= 1,000 yojana
Balance	= 1,79,000 yojana
Less–the height of the great pitchers	= 1,00,000 yojana
The remaining part of the Ratan Prabha hell	= 79,000 yojana

and increasing the nights time, from its first orbit to forty Nineth orbit. In the same way returning from the south the sun moves ahead, too, decreasing and increasing the time duration of nights and days respectively.

।। अठहत्तरवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Seventy Eighth Samvaya)

उन्यासीवां समवाय

The Seventy Nineth Samvaya

३७२–वलयामुहस्स णं पायालस्स हिट्ठिल्लाओ चरमंताओ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं एगूणासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। एवं केउस्स वि, जूयस्स वि, ईसरस्स वि।

बड़वामुख नामक महापाताल कलश के अधस्तन चरमान्त भाग से एक लाख अस्सी हजार योजन मोटी इस रत्नप्रभा पृथ्वी का निचला चरमान्त भाग उन्यासी हजार योजन अन्तर वाला कहा गया है। इसी प्रकार केतुक, यूपक, और ईश्वर नाम का महापातालों का अन्तर भी जानना चाहिए।

The distance of the extreme end nether part of the one lac eighty thousand yojanas thick Ratanprabha hell from the extreme end of the lowest part of the great underworld pitcher namely Badvamuk is seventy nine thousand yojans Ketuk underworld pitcher. The distances of Yupak underworld understood the same 79000 yojans and Ishwar underworld pitcher should be known.

३७३–छट्ठीए पुढवीए बहुमज्झदेसभायाओ छट्ठस्स घणोदहिस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं एगूणासीति जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

छठी पृथ्वी तमःप्रभा है। इसके बहुमध्य देश भाग से छठे घनोदधिवात का अधस्तल चरमान्त भाग उन्यासी हजार योजन के अन्तर-व्यवधान वाला कहा गया है।

The sixth hell is called (Tamhprabha hell) from its single great middle part the distance of extreme end lower part of sixth Ganodadhivat has been stated equal to seventy nine thousand yojanas.

३७४–जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स दारस्स य दारस्स य एस णं एगूणासीइं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

जम्बूद्वीप के एक द्वार से दूसरे द्वार का अन्तर उन्यासी हजार योजन से कुछ अधिक कहा गया है।

The distance of one entrance gate to another entrance gate of Jambu continent has been defined a little more than seventy nine thousand yojanas.

।। उन्यासीवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Seventy Nineth Samvaya)

असीवां समवाय

The Eightieth Samvaya

३७५–सेज्जंसे णं अरहा असीइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था। तिविट्ठे णं वासुदेवे असीइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था। अयले णं बलदेवे असीइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था। तिविट्ठे णं वासुदेवे असीइ वाससयसहस्साइं महाराया होत्था।

श्रेयांस अर्हन् की ऊँचाई अस्सी धनुष कही गई है। त्रिपृष्ठ वासुदेव की ऊँचाई भी अस्सी धनुष कही गई है। अचल बलदेव अस्सी धनुष ऊँचे कहे गए हैं। त्रिपृष्ठ वासुदेव अस्सी लाख वर्ष महाराज पद पर आसीन रहे।

The height of Arihant Shreyans Nath was of eighty Dhanush (bows). The height of the Triprishth lord was eighty bows high. Triprishth Vasudev occupied the title of emperor for a period of eighty lacs years. Achal Baldev (co-lord) was eighty Dhanush (bow) height.

३७६–आउबहुले णं कंडे असीइ जोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ते।

रत्नप्रभा पृथ्वी का तृतीय अब्बहुल कांड या भाग अस्सी हजार योजन मोटा कहा गया है।

The third part namely Abhul Kaand of Ratanprabha hell has thousand yojanas thickness.

३७७–ईसाणस्स देविंदस्स देवरन्नो असीइं सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ता।

देवेन्द्र देवराज ईशान के अस्सी हजार सामानिक देव कहे गए हैं।

The total number of the co-chief (Samanik gods) of Devender Devraj of Ishan kalpa is eighty thousand.

३७८–जंबुद्दीवे णं दीवे असीउत्तरं जोयणसयं ओगाहेत्ता सूरिए उत्तरकट्ठोवगए पढमं उदयं करेइ।

जम्बूद्वीप में एक सौ अस्सी योजन भीतर प्रवेश कर सूर्य उत्तर दिशा को प्राप्त हो प्रथम बार यानि प्रथम मण्डल में उदित होता है।

The sun rises into the first orbit i.e. at first moving into the North direction after entering one hundred eighty yojanas deep into the Jambu continent.

।। अस्सीवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Eightieth Samvaya)

इक्यासीवां समवाय

The Eighty First Samvaya

३७९–नवनवमिया भिक्खुपडिमा एक्कासीइं राइंदिएहिं चउहिं य पंचुत्तरेहिं [भिक्खासएहिं] अहासुत्तं जाव आराहिया [भवइ]।

नवनवमिका नामक भिक्षु प्रतिमा इक्यासी रात-दिनों में चार सौ पाँच भिक्षादत्तियों द्वारा यथा सूत्र, यथा मार्ग, यथा तत्त्वस्पृष्ट, पालित, शोभित, तीरित, कीर्तित और आराधित होती है।

The nineth special vow of ascetic (pratima) is based, appreciated, nurtured, touched, performed and obeyed as per scriptures, as per path and as per substance by eating four hundred five morsels of alms in eighty one days.

३८०–कुंथुस्स णं अरहओ एक्कासीतिं मणपज्जवनाणिसया होत्था। विवाहपन्नत्तीए एकासीति महाजुम्मसया पण्णत्ता।

कुन्थु अर्हत् के संघ में इक्यासी सौ मन:पर्यय ज्ञानी थे। व्याख्याप्रज्ञप्ति में इक्यासी महायुग्मशत कहे गए हैं।

There were eighty one Manprayaygyani (ascetics having the knowledge of mental mode) in the ascetic congregation of Arihant Kunthu Nath. In the scripture named Vyakhya pragyapti eighty one Mahayugamsat have been described.

।। इक्यासीवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Eighty First Samvaya)

बयासीवां समवाय

The Eighty Second Samvaya

३८१–जंबुद्दीवे [णं] दीवे वासीयं मंडलसयं जं सूरिए दुक्खुत्तो संकमित्ता णं चारं चरइ। तं जहा–निक्खममाणे य पविसमाणे य।

इस जम्बूद्वीप में सूर्य एक सौ बयासीवें मंडल को दो बार संक्रमण कर संचार करता है। यथा—एक बार निकलते समय और दूसरी बार प्रवेश करते समय।

In the continent of Jambu the sun enters into the eighty secondth orbit moving twice:- once at the time ofcoming out of it and secondly at the time of enteringinto it.

३८२–समणे णं भगवं महावीरे वासीइं राइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं गब्भाओ गब्भं साहरिए।

श्रमण भगवान महावीर बयासी रात-दिन बीतने के बाद देवानन्दा ब्राह्मणी के गर्भ से त्रिशला क्षत्रियाणी के गर्भ में संहृत किए गए।

After the expiry of eighty two days and nights (the foetus of) Shraman Bhagwan Mahavir was placed into the womb of Trishala of kshatriya clan from the womb of Devananda Brahmani.

३८३–महाहिमवंतस्स णं वासहरपव्वयस्स उवरिल्लाओ चरमंताओ सोगंधियस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं वासीइं जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। एवं रुप्पिस्स वि।

महाहिमवन्त वर्षधर पर्वत के ऊपरी चरमान्तभाग से सौगन्धिक काण्ड का अधस्तन चरमान्त भाग बयासी सौ योजन के अन्तर वाला कहा गया है। इसी प्रकार रुक्मी वर्षधर पर्वत का भी अन्तर जानना चाहिए।

From the upper extreme end part of Mahahimvant Varshdhar mountain to the west extreme end part of Sougandhik Kaand the distance has been said equal to eighty two hundred yojanas. In the same way the distance of Mountain Rukami should be known.

।। बयासीवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Eighty Second Samvaya)

तिरासीवां समवाय

The Eighty Third Samvaya

३८४–समणे (णं) भगवं महावीरं वासीइ राइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं तेयासीइमे राइंदिए वट्टमाणे गब्भाओ गब्भं साहरिए।

श्रमण भगवान महावीर स्वामी बयासी रात-दिनों के बाद तिरासीवें रात-दिन के वर्तमान होने पर देवानन्दा के गर्भ से त्रिशला के गर्भ में संहृत हुए।

After completion of eighty two days and nights and on the beginning of the eighty third day Shraman Bhagwan Mahavir was placed into the womb of Trishala from the womb of Devananda.

३८५–सीयलस्स णं अरहओ तेसीइं गणा, तेसीइं गणहरा होत्था। थेरे णं मंडियपुत्ते तेसीइं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे।

शीतल अर्हत् के संघ में गण और गणधरों की संख्या तिरासी-तिरासी कही गई है। स्थविर मंडितपुत्र तिरासी वर्ष की सर्व आयु का पालन करके सिद्ध-बुद्ध हुए, कर्मों से मुक्त होकर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए एवं सर्व दुखों से रहित हुए।

The number of ascetic groups and head of ascetic groups of Arihant Sheetal Nath have been stated of eighty three each. The senior ascetic (sthavir) Mandit Putra attained salvation enjoying a life span of eighty three years in all. He got ultimate liberation annihilating all his karmas i.e. got Parinirvana. Eventually he became devoid of all his miseries and sufferings.

३८६–उसभे णं अरहा कोसलिए तेसीइं पुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइए।

भरहे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी तेसीइं पुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता जिणे जाए केवली सव्वन्नू सव्वभावदरिसी।

कौशलिक ऋषभ अर्हत् तिरासी लाख पूर्व वर्ष अगारवास में रहकर मुंडित हुए। तत्पश्चात् वे अगार से अनगारिता में प्रव्रजित हुए।

चातुरन्त चक्रवर्ती भरत राजा तिरासी लाख पूर्व वर्ष अगारवास में रहे। तदुपरान्त वे सर्वज्ञ, सर्वभावदर्शी केवली जिन हुए।

The King from Kaushal clan Arihant Rishabh Dev got his head tonsured after dwelling a life of householder for a period of eighty three lac poorva years. After that he was consecrated from householder to an ascetic life. The supreme lord (Chaturant Chakravarti) King Bharat remained as a householder for a period of eighty three lac poorva years. After that he became an omniscient, omnipotent and Kewali Jina.

।। तिरासीवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Eighty Third Samvaya)

चौरासीवां समवाय

The Eighty Fourth Samvaya

३८७–चउरासीइ निरयावाससयसहस्सा।

चौरासी लाख नारकावास कहे गए हैं।

The hellish residences have been said as eighty four lacs.

३८८–उसभे णं अरहा कोसलिए चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे। एवं भरहो बाहुबली बंभी सुंदरी।

कौशलिक ऋषभ अर्हत् चौरासी लाख पूर्व वर्ष की सम्पूर्ण आयु भोगकर सिद्ध-बुद्ध हुए। वे कर्मों से मुक्ति पाकर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए। अन्ततोगत्वा वे सर्वदुःखों से रहित हुए। इसी प्रकार भरत, बहुबली, ब्राह्मी और सुन्दरी भी चौरासी-चौरासी लाख पूर्व वर्ष की पूर्ण आयु पालकर सिद्ध-बुद्ध हुए। वे कर्म मुक्ति पाकर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए। अन्ततोगत्वा वे सर्व दुःखों से रहित हुए।

The King of Kaushal clan Arihant Rishabh Dev attained liberation after enjoying the total life of eighty four lac poorva years. He annihilating all his accumulated karmas got Parinirvana (ultimate goal). Ultimately he became devoid of all the miseries and sufferings. Likewise Bharat, Bahubali, Brahmi and Sundry, too, attained salvation enjoying a life span of eighty four lac poorva years. They attained liberation from accumulated karmas. They got their ultimate goal of life i.e. Parinirvana. Eventually they became devoid of all their miseries and sufferings.

३८९–सिज्जंसे णं अरहा चउरासीइं वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे।

श्रेयांस अर्हत् चौरासी लाख वर्ष की आयु भोगकर सिद्ध-बुद्ध हुए। वे कर्मों से मुक्ति पाकर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए। अन्ततोगत्वा वे सर्व दुःखों से रहित हुए।

Enjoying the age of eighty four lac poorva years Arihant Shreyans Nath attained salvation. Thus liberating from all his karmas he got Parinirvana. Ultimately he became devoid of all the miseries and sufferings.

३९०–तिविट्ठे णं वासुदेवे चउरासीइं वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता अप्पइट्ठाणे नरए नेरइयत्ताए उववन्ने।

त्रिपृष्ठ वासुदेव ने चौरासी लाख वर्ष की सर्व आयु भोगी। इसके उपरान्त वे सातवीं पृथ्वी के अप्रतिष्ठान नामक नरक में नारक रूप से उत्पन्न हुए।

Triprishth Vasudeva enjoyed the like eighty four lac years. After that he was reincarnated into the Apritshthan hell of seventh land as a hellish being.

३९१–सक्कस्स णं देविंदस्स देवरन्नो चउरासीई सामाणियसाहस्सीओ पण्णत्ताओ।

देवेन्द्र देवराज शक्र के चौरासी हजार सामानिक देव हैं।

The co-chief of Devendra Devraj Shakra are eighty four thousand.

३९२–सव्वे वि णं बाहिरया मंदरा चउरासीइं चउरासीइं जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता। सव्वे वि णं अंजणगपव्वया चउरासीइं चउरासीइं जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

जम्बूद्वीप से बाहर के चारों मन्दराचल चौरासी-चौरासी हजार योजन ऊँचे कहे गए हैं। नन्दीश्वर द्वीप के चारों अंजनक पर्वत चौरासी-चौरासी हजार योजन ऊँचे कहे गए हैं।

The heights of all the four Mandar Mountains situated out of Jambu continent have been said of eighty four thousand yojana. All the four Anjanak Mountains of Nandishvar continent has been said eighty four yojana high.

३९३–हरिवास-रम्मयवासियाणं जीवाणं-धणुपिट्ठा चउरासीइं जोयणसहस्साइं सोलस जोयणाइं चत्तारि य भागा जोयणस्स परिक्खेवेणं पण्णत्ता।

हरिवर्ष-रम्यक वर्ष की जीवाओं के धनु:पृष्ठ का परिक्षेप या परिधि चौरासी हजार सोलह योजन और एक योजन के उन्नीस भागों में से चार भाग प्रमाण है।

The circumference of the bow back of the regions of Harivarsh and Ramyakvarsh has been said equal to four part out of nineteen parts of one yojana and eighty four thousand and sixteen yojanas.

३९४–पंकबहुलस्स णं कण्डस्स उवरिल्लाओ चरमंताओ हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं चोरासीइं जोयणसयसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

पंकबहुल भाग के ऊपरी चरमान्त भाग से उसी का अधस्तन—नीचे का चरमान्त भाग चौरासी लाख योजन के अन्तर वाला कहा गया है।

The distance from the upper extreme end part of the containing part to its own lower extreme end part has been said of eighty four lacs yojanas.

३९५–विवाहपन्नत्तीए णं भगवतीए चउरासीइं पयसहस्सा पदग्गेणं पण्णत्ता।

पद-गणना की अपेक्षा से व्याख्याप्रज्ञप्ति नामक भगवती सूत्र के चौरासी हजार पद कहे गए हैं।

With regard the counting of couplets (verses) eighty four thousand couplets have been said of Vyakhya Pragyapti namely Bhagwati Sutra.

३९६–चोरासीइं नागकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

चोरासीइं पन्नगसहस्साइं पण्णत्ता।

चोरासीइं जोणिप्पमुहसयसहस्सा पण्णत्ता।

नागकुमार देवों के आवासों यानि भवनों की संख्या चौरासी लाख कही गई है।

चौरासी हजार प्रकीर्णक कहे गए हैं।

जीव-योनियां (जीवों के उत्पत्ति स्थान) चौरासी लाख कही गई हैं।

The number of the residences of the Nagkumar Devashas been stated of eighty four lacs. Eighty four thousand Prakinaks have been said eighty four places of reincarnation of the beings (jeevas) have been narrated.

३९७–पुव्वाइयाणं सीसपहेलियापज्जवसाणाणं सट्ठाणट्ठाणंतराणं चोरासीए गुणकारे पण्णत्ते।

पूर्व की संख्या से लेकर शीर्ष प्रहेलिका नाम की अन्तिम महासंख्या तक स्वस्थान और स्थानान्तर चौरासी लाख के गुणकार वाले कहे गए हैं।

From the counting figure namely poorva to the latest great number namely Shush prehelika the swasthan and sthanantra has been said of the multiple of eighty four lacs.

३९८–उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स चउरासीइं गणा चउरासीइं गणहरा होत्था।

उसभस्स णं अरहओ कोसलियस्स चउरासीइं समणसाहस्सीओ होत्था।

ऋषभ अर्हत् के संघ में गणों तथा गणधरों की संख्या चौरासी-चौरासी कही गई है। ऋषभ अर्हत् के संघ में चौरासी हजार श्रमण-साधु थे।

The number of ascetic groups and the head of the ascetic groups of ascetic congregation Arihant Rishabhhas been said equal to eighty four each respectively. There were eighty four thousand Shramanmonks in the ascetic congregation of Arihant Rishabh.

३९९–सव्वे वि चउरासीइं विमाणावाससयसहस्सा सत्ताणउइं च सहस्सा तेवीसं च विमाणा भवंतीति मक्खायं।

समस्त वैमानिक देवों के चौरासी लाख, सत्तानवें हजार और तेईस विमान होते हैं, ऐसा भगवान् ने कहा है।

It has been expounded by the omniscients that the total numbers of the celestial vehicles of all the celestial beings are eighty four lac ninety seven thousand and thirty.

।। चौरासीवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Eighty Fourth Samvaya)

पचासीवां समवाय

The Eighty Fifth Sthanak Samvaya

४००–आयारस्स णं भगवओ सचूलियागस्स पंचासीइं उद्देसणकाला पण्णत्ता।

चूलिका सहित भगवद् आचारांग सूत्र के पचासी उद्देशन-काल कहे गए हैं।

Including the Chulika (annexures) the total Udeshans (chapters) of Acharang Sutra have been said eighty five.

४०१–धायइसण्डस्स णं मंदरा पंचासीइं जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं पण्णत्ता। रुयए णं मंडलियपव्वए पंचासीइं जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं पण्णत्ते।

धातकी खण्ड के दोनों मन्दराचल भूमिगत अवगाढ़ तल से लेकर सर्वाग्र भाग (अंतिम ऊँचाई) तक पचासी हजार योजन कहे गए हैं। (इसी प्रकार पुष्करवर द्वीपार्ध के दोनों मन्दराचल भी जानने चाहिएं।) रुचक नामक तेरहवें द्वीप का अन्तवर्ती गोलाकार मंडलिक पर्वत भूमिगत अवगाढ़तल से लेकर सर्वाग्र भाग तक पचासी हजार योजन कहा गया है।

The height of both the Mandrachal Mountains of Dhataki Khand from their underground bottom to the highest summit has been said of eighty five thousand yojanas. In the same way the heights of both the Madrachal Mountain of Pushkarvar dveepardh should be known. From the lowest underwater part of the round shape Mandalik Mountains situated in the innermost part of the thirteenth continent namely Ruchak to the uppermost high part has been said of eighty five thousand yojanas.

४०२–नंदणवणस्स णं हेट्ठिल्लाओ चरमंताओ सोगंधियस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं पंचासीइ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

नन्दनवन के विषय में कहा गया है कि इस वन के अधस्तन चरमान्त भाग से लेकर सौगन्धिक काण्ड का अधस्तन चरमान्त भाग पचासी सौ योजन अन्तर वाला है।

In respect of Nandan Van it has been said that from the lower extreme end part of this mountain to the lower extreme end part of Sougandhika Kaand the distance is equal to eighty five hundred yojanas.

।। पचासीवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Eighty Fifth Samvaya)

छियासीवां समवाय

The Eighty Sixth Samvaya

४०३–सुविहिस्स णं पुप्फदंतस्स अरहओ छलसीई गणा छलसीई गणहरा होत्था। सुपासस्स णं अरहओ छलसीई वाइसया होत्था।

सुविधि पुष्पदन्त अर्हत् के गणों और गणधरों की संख्या छियासी-छियासी बतायी गई है।

सुपार्श्व अर्हत् के छियासी सौ वादी मुनि थे।

The numbers of the ascetic groups and the heads of the ascetic groups of Arihant Suvidhi Pushpdant has been told eighty six, eighty six respectively.

There were eighty six monks of Arihant Suparshva Nath expert in discussions.

४०४–दोच्चाए णं पुढवीए बहुमज्झदेसभागाओ दोच्चस्स घणोदहिस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं छलसीई जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

दूसरी पृथ्वी यानि शर्करा पृथ्वी, जिसकी मोटाई एक लाख बत्तीस हजार योजन है, के मध्य भाग से दूसरे घनोदधिवात का अधस्तन-चरमान्त भाग यानि अन्तिम भाग छियासी हजार योजन के अन्तर वाला कहा गया है।

The second hell i.e. the pebble (sharkara) hell. Its thickness is eighty six thousand yojanas, from its middle part to the lower extreme end part it, its means the lastest part has been said of the distance of eighty six thousand yojanas.

॥ छियासीवां समवाय समाप्त ॥

(The End of Eighty Sixth Samvaya)

सत्तासीवां समवाय

The Eighty Seventh Samvaya

४०५–मंदरस्स णं पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरमंताओ गोथूभस्स आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एस णं सत्तासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। मंदरस्स णं पव्वयस्स दक्खिणिल्लाओ चरमंताओ दगभासस्स आवासपव्वयस्स उत्तरिल्ले चरमंते एस णं सत्तासीइं जोयण-सहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। एवं मंदरस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरमंताओ

संखस्सावासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते। एवं चेव मंदरस्स उत्तरिल्लाओ चरमंताओ दगसीमस्स आवासपव्वयस्स दाहिणिल्ले चरमंते एस णं सत्तासीइं जोयणसहस्साहिं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

जम्बूद्वीप के मध्यभाग में अवस्थित मन्दर पर्वत के पूर्वी चरमान्त भाग से गोस्तूप नामक आवास पर्वत का पश्चिमी चरमान्त भाग सत्तासी हजार योजन के अन्तर वाला है। मन्दर पर्वत के दक्षिणी चरमान्त भाग से दकभास आवास पर्वत का उत्तरी चरमान्त सत्तासी हजार योजन के अन्तर वाला है। इसी प्रकार मन्दर पर्वत के पश्चिमी चरमान्त से शंख आवास पर्वत का दक्षिणी चरमान्त भाग सत्तासी हजार योजन के अन्तर वाला है। इसी प्रकार मन्दर पर्वत के उत्तरी चरमान्त से दकसीम नामक आवास पर्वत का दक्षिण चरमान्त भाग सत्तासी हजार योजन के अन्तर वाला है।

The distance from the eastern extreme end part to western end extreme part of residence mountain namely Gostup of Mandar Mountain is situated in the middle part of the Jambu continent is equal to eighty seven thousand yojanas. The distance from the southern extreme end part of Mandar Mountain to the northern extreme end part of Dakabhas residential mountain is equal to eighty seven yojanas. In the same way the western extreme end part of the Mandar Mountain to the southern extreme end of Shankh residential mountain of Mountain Mandar have been said of the distance of eighty seven thousand yojanas. Likewise the distance from the extreme northern part of Mandar Mountain to the extreme southern part of Dakseen residential mountain of Mandar Mountain the distance is equal to eighty seven thousand yojanas.

४०६–छण्हं कम्मपगडीणं आइम–उवरिल्लवज्जाणं सत्तासीई उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ।

आठ कर्मों में से आद्य ज्ञानावरण और अंतिम अन्तराय कर्म को छोड़कर शेष छहों कर्मों की उत्तर प्रकृतियाँ सतासी कही गई हैं।

Barring the first knowledge obscuring and the last obstruction causing karmas out of eight karmas the uttar tendencies of the remaining six karmas have been said eighty seven.

४०७–महाहिमवंत कूडस्स णं उवरिमंताओ सोगंधिस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं सत्तासीइं जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। एवं रुप्पिकूडस्स वि।

महाहिमवन्त कूट के उपरिम अन्तभाग से सौगन्धिक कांड का अधस्तन चरमान्त भाग सतासी सौ योजन के अन्तर वाला है। इसी प्रकार रुक्मी कूट के ऊपरी भाग से सौगन्धिक कांड के अधोभाग का अन्तर भी सत्तासी सौ योजन कहा गया है।

From the upper end part of the summit of Mahahimvant to the lowest extreme end part of Sougandhik Kandhas been said at a distance equal to eighty seven yojanas. In the same way from the upper part of the summit of Rukmit

Mountain to the lower part of Sougandhik Kand, the distance is eighty seven hundred yojanas.

।। सत्तासीवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Eighty Seventh Samvaya)

अठासीवां समवाय

The Eighty Eighth Samvaya

४०८–एगमेगस्स णं चंदिम–सूरियस्स अट्ठासीइ अट्ठासीइ महग्गहा परिवारो पण्णत्तो।

प्रत्येक चन्द्र और सूर्य के परिवार में अठासी-अठासी महाग्रह कहे गए हैं।

In each Lunar system and Solar system (family of Moon and Sun) eighty eight great planets have been described.

४०९–दिट्ठिवायस्स णं अट्ठासीइं सुत्ताइं पण्णत्ताइं, तं जहा–उज्जुसुयं परिणयापरिणयं एवं अट्ठासीइ सुत्ताणि भाणियव्वाणि जहा नंदीए।

दृष्टिवाद नामक बारहवाँ अंग है। इसके सूत्र नामक दूसरे भेद में अठासी सूत्र कहे गए हैं। यथा — ऋजुसूत्र परिणता-परिणत सूत्र। इस प्रकार नन्दीसूत्र के अनुसार अठासी सूत्र जानने चाहिएं।

संकेत- इन का विशेष वर्णन आगे एक सौ सेंतालीसवें स्थानक में किया गया है।

The twelfth limb is Drishtivada. In its second part titled Sutra there are eighty eight aphorisms as :-Rishabhdeva Parinita-Parinat Sutra. In the same way according to Nandi Sutra eighty eight sutra should be said.

Note : The special description of these sutras has been done in the one hundred forty seventh sthanak.

४१०–मंदरस्स णं पव्वयस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पुरच्छिमिल्ले चरमंते एस णं अट्ठासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। एवं चउसु वि दिसासु नेयव्वं।

मन्दर पर्वत के पूर्वी चरमान्त भाग से गोस्तूप आवास पर्वत का पूर्वी चरमान्त भाग अठासी सौ योजन अन्तर वाला कहा गया है। इसी प्रकार चारों दिशाओं में आवास पर्वतों का अन्तर जानना चाहिए।

The eastern extreme end part of Mandar Mountain from the eastern extreme end part of the Gostup residential mountain has been said at a distance of eighty eight hundred yojanas. In the same way the distance of residential

mountain situated in all the four directions should be known.

४११–बाहिराओ उत्तराओ णं कट्ठाओ सूरिए पढमं छम्मासं अयमाणे चोयालीसइमे मंडलगते अट्ठासीति इगसट्ठिभागे मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता सूरिए चारं चरइ। दक्खिणकट्ठाओ णं सूरिए दोच्चं छम्मास्सं अयमाणे चोयालीसतिमे मंडलगते अट्ठासीई इगसट्ठिभागे मुहुत्तस्स रयणीखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिनिवुड्ढित्ता णं सूरिए चारं चरइ।

बाहरी उत्तर दिशा से दक्षिण दिशा को गमन करता हुआ सूर्य प्रथम छह मास में चवालीसवें मण्डल में पहुँचता है। यहाँ पँहुचने पर वह मुहूर्त्त के इकसठिए अठासी भाग दिवसक्षेत्र अर्थात् दिन को घटाकर और रजनीक्षेत्र (रात) को बढ़ाकर संचार करता है। इसी प्रकार दक्षिण दिशा से उत्तर दिशा की ओर जाता हुआ सूर्य दूसरे छह मास पूर्ण कर चवालीसवें मण्डल में पहुँचता है। वहाँ पहुँचने पर वह मुहूर्त्त के इकसठिए अठासी भाग रजनीक्षेत्र यानि रात को घटाकर और दिवसक्षेत्र यानि दिन को बढ़ाकर संचार करता है।

The Sun moving from the outer north direction to the south direction, reaches into forty fourth Mandal (orbit) in first six months. After reaching there the Sun moves decreasing the day time and increasing the night time equal to sixty one out of eighty eight part of one muhurat. In the same way the Sun moving from the south direction to north direction reaches in forty fourth Mandal completing second six months. After reaching there the Sun moves decreasing the night's time and increasing the day's time equal to sixty one part out of eighty eight parts of one muhurat (Indian time).

।। अठासीवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Eighty Eighth Samvaya)

नवासीवां समवाय

The Eighty Nineth Samvaya

४१२–उसभे णं अरहा कोसलिए इमीसे ओसप्पिणीए ततियाए सुसमदूसमाए पच्छिमे भागे एगूणणउइए अद्धमासेहिं [सेसेहिं] कालगए जाव सव्वदुक्खप्पहीणे।

समणे णं भगवं महावीरे इमीसे ओसप्पिणीए चउत्थाए दूसमसुसमाए समाए पच्छिमे भागे एगूणनउइए अद्धमासेहिं सेसेहिं कालगए जाव सव्वदुक्खप्पहीणे।

कौशलिक ऋषभ अर्हत् इसी अवसर्पिणी के तृतीय सुषमदुषमा आरे (काल) के पश्चिम भाग में नवासी अर्धमासों यानि तीन वर्ष आठ माह पन्द्रह दिन के शेष रहने पर काल गत होकर सिद्ध बुद्ध हुए। वे कर्मों से मुक्ति पाकर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए। अन्ततोगत्वा वे सर्व दुःखों से रहित हो गए।

श्रमण भगवान महावीर इसी अवसर्पिणी के चौथे दुःषम सुषमा आरे (काल) के अन्तिम भाग में नवासी अर्धमासों अर्थात् तीन वर्ष आठ मास पन्द्रह दिन के शेष रहने पर कालगत होकर सिद्ध-बुद्ध हुए। वे कर्मों से मुक्ति पाकर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए। अन्ततोगत्वा वे सर्व दुःखों से रहित हो गए।

Kaushalika Arihant Rishaba, after abandoning this physical body, attained liberation at the time when eighty nine fortnights or three years eight months and fifteen days were left in balance of the conclusion of third Ara named Sushama-Sushama of this existing descending (Avsarpini Kaal) time cycle. Then he annihilating all his accumulated karmas got Parinirvana. Ultimately he became devoid of miseries and sufferings.

४१३–हरिसेणे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी एगूणनउइं वाससयाइं महाराया होत्था।

चातुरंग चक्रवर्ती हरिषेण राजा नवासी सौ वर्ष महासाम्राज्य पद पर आसीन रहे।

The supreme lord (Chaturant Chakravarti) King Harishen ensconced in power as an emperor for a period of eighty nine hundred years.

४१४–संतिस्स णं अरहओ एगूणनउइं अज्जासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंपया होत्था।

शांतिनाथ अर्हत् के संघ में नवासी हजार आर्यिकाएँ थीं। यह उनके संघ की उत्कृष्ट आर्यिका सम्पदा थी।

In the ascetic congregation of Arihant Shantinath there were eighty nine thousand nuns (Aryakiyan). It was the maximum nuns wealth of the ascetic congregation (sangh).

।। नवासीवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Eighty Nineth Samvaya)

नब्बेवां समवाय

The Ninetieth Samvaya

४१५–सीयले णं अरहा नउइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

अजियस्स णं अरहओ नउई गणा नउई गणहरा होत्था। एवं संतिस्स वि।

शीतल अर्हत् की ऊँचाई नब्बे धनुष कही गई है।

अजित अर्हत् के गणों और गणधरों की संख्या नब्बे-नब्बे थी। इसी प्रकार शान्ति जिन के गणों और गणधरों की संख्या भी नब्बे-नब्बे कही गई है।

The height of Arihant Sheetal Nath has been ninety Dhanush. The number of the ascetic groups (gan) and the heads of ascetic group (gandhar) of Arihant Ajit has been said ninety-ninety each likewise the number of the Gans (groups) and Gandhars (heads of ascetic groups) of Arihant Shantinath has been said ninety each.

४१६–संयंभुस्स णं वासुदेवस्स णउइवासाइं विजए होत्था।

स्वयम्भू वासुदेव ने नब्बे वर्ष में पृथ्वी को विजय किया था।

Lord (Vasudev) Swayambhu had conquered this earth in ninety years.

४१७–सव्वेसिं णं वट्टवेयड्ढपव्वयाणं उवरिल्लाओ सिहरतलाओ सोगंधियकण्डस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं नउइजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

समस्त वृत्त वैताढ्य पर्वतों के ऊपरी शिखर से सौगन्धिक काण्ड का नीचे का चरमान्त भाग नब्बे सौ योजन अन्तर वाला है।

The distance of the lower extreme end part of Saugandhik Kand from the upper summit of all the circular Vaitaldaya mountains is equal to ninety hundred yojanas.

।। नब्बेवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Ninetieth Samvaya)

इक्यानवां समवाय

The Ninety First Samvaya

४१८–एकाणउईं परवेयावच्चकम्मपडिमाओ पण्णत्ताओ।

परवैयावृत्त्य कर्म प्रतिमाएँ इक्यानवें कही गई हैं। यथा —शुश्रूषा विनय के दस भेद, तीर्थंकरादि के अनाशातनादि साठ भेद, औपचारिक विनय के सात भेद तथा आचार्य आदि के वैयावृत्य के चौदह भेद।

Special vows (Pritama) of the services offered to others have been said of ninety one types as :- Ten types of courtesy of service, sixty types of

Anashatanadi of Ford Makers etc., seven types of informal humility and fourteen division of vaiyavart of Acharyas and Seniors.

४१९–कालोए णं समुद्दे एकाणउई जोयणसयसहस्साइं साहियाइं परिक्खेवेणं पण्णत्ते।

कालोद समुद्र परिक्षेप यानि परिधि की अपेक्षा इक्यानवें लाख योजन कुछ अधिक कहा गया है।

With regard to the circumference of Kalod Ocean in stated as more than ninety one lacs yojanas.

४२०–कुंथुस्स णं अरहओ एकाणउई आहोहियसया होत्था।

कुन्थु अर्हत् के संघ में इक्यानवें सौ नियत क्षेत्र को विषय करने वाले अवधिज्ञानी थे।

There were ninety one hundred clairvoyant ascetics having the visual power of a fixed area in the ascetic congregation of Arihant Kunthu Nath.

४२१–आउय-गोयवज्जाणं छण्हं कम्मपगडीणं एकाणउई उत्तरपयडीओ पण्णत्ताओ।

अष्ट कर्मों में से आयु और गोत्र कर्म को छोड़कर शेष छह कर्मों की उत्तर प्रकृतियाँ इक्यानवें कही गई हैं।

Barring the life span determining karmas and status determining karmas out of eight karmas, the remaining six karmas have ninety one uttar tendencies.

।। इक्यानवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Ninety First Samvaya)

बानवां समवाय

The Ninety Second Samvaya

४२२–बाणउई पडिमाओ पण्णत्ताओ।

प्रतिमाएँ बानवें कही गई हैं।

The number of special vows (Pritamaye) has been stated ninety two.

४२३–थेरे णं इंदभूती बाणउइं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे [जाव सव्व-दुक्खप्पहीणे]।

स्थविर इन्द्रभूति बानवें वर्ष की सर्व आयु भोगकर सिद्ध-बुद्ध हुए। (वे कर्म-मुक्त हुए और परिनिर्वाण को प्राप्त हुए। अन्ततोगत्वा वे सर्व दुःखों से रहित हुए।)

Enjoying a total life span of ninety two years the senior ascetic (sthavir) Indrabhuti attained salvation. He became liberated from karmas and got Parinirvana. Ultimately he became devoid of all the miseries and sufferings.

४२४–मन्दरस्स णं पव्वयस्स बहुमज्झदेसभागाओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एस णं बाणउइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। एवं चउण्हं पि आवास-पव्वयाणं।

मन्दर पर्वत के बहुमध्य देश भाग से गोस्तूप आवास पर्वत का पश्चिमी चरमान्त भाग बानवें हजार योजन के अन्तर वाला है। इसी प्रकार चारों ही आवास पर्वतों का अन्तर जानना चाहिए।

The distance of the western extreme end part of Gostupresidential mountains from the very middle single part of Mandar Mountain is ninety two thousand yojanas. Same is the distance of four residential mountain.

।। बानवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Ninety Second Samvaya)

तिरानवां समवाय

The Ninety Third Sthanak Samvaya

४२५–चंदप्पहस्स णं अरहओ तेणउइं गणा तेणउइं गणहरा होत्था।

संतिस्स णं अरहओ तेणउई चउद्दसपुव्वसया होत्था।

चन्द्रप्रभ अर्हत् के गणों और गणधरों की संख्या तिरानवें-तिरानवें कही गई है। शान्ति अर्हत् के संघ में तिरानवें सौ चतुर्दश पूर्वी कहे गए हैं।

The number of Gan (groups) and Gandhar of Arihant Chanderprabh has been stated as ninety three-ninety three respectively.

४२६–तेणउई मंडलगते णं सूरिए अतिवट्टमाणे निवट्टमाणे वा समं अहोरत्तं विसमं करेइ।

दक्षिणायण से उत्तरायण को जाते हुए अथवा उत्तरायण से दक्षिणायण को लौटते हुए तिरानवें मण्डल पर परिभ्रमण करता हुए सूर्य सम अहोरात्र को विषम करता है।

Moving northward from southward or returning southward from northward rotating over the ninety third orbit the Sun makes uneven, even the days and nights.

।। तिरानवां समवाय समाप्त ।। (The End of Ninety Third Samvaya)

चौरानवां समवाय

The Ninety Fourth Samvaya

४२७–निसह-नीलवंतियाओ णं जीवाओ चउणउइं चउणउइं जोयणसहस्साइं एक्कं छप्पन्नं जोयणसयं दोन्नि य एगूणवीसइभागे जोयणस्स आयामेणं पण्णत्ताओ।

निषध और नीलवन्त वर्षधर पर्वतों की जीवाएँ चौरानवें हजार एक सौ छप्पन योजन तथा एक योजन के उन्नीस भागों में से दो भाग प्रमाण लम्बी कही गई हैं।

The length of the diameters of the Nishadh-Neelvant varsha'dhar mountain has been stated as equal to two parts out of nineteen parts of one yojanas and ninety fourthousand one hundred fifty six yojanas.

४२८–अजियस्स णं अरहओ चउणउई ओहिनाणिसया होत्था।

अजित अर्हत् के संघ में चौरानवें सौ अवधिज्ञानी थे।

There were ninety four clairvoyant practices n the ascetic congregation of Arihant Ajit Nath.

।। चौरानवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Ninety Fourth Samvaya)

पंचानवां समवाय

The Ninety Fifth Samvaya

४२९–सुपासस्स णं अरहओ पंचाणउइगणा पंचाणउइं गणहरा होत्था।

सुपार्श्व अर्हत् के गणों और गणधरों की संख्या पंचानवें-पंचानवें कही गई है।

The number of the Gan (ascetic groups) and the Gandhar (Head of the ascetic groups) of Arihant Suparshva Nath has been stated as ninety five-ninety five respectively.

४३०–जंबुद्दीवस्स णं दीवस्स चरमंताओ चउद्दिसिं लवणसमुद्दं पंचाणउइं पंचाणउइं जोयण-सहस्साइं ओगाहित्ता चत्तारि महापायालकलसा पण्णत्ता, तं जहा–वलयामुहे केऊए जूयए ईसरे। लवणसमुद्दस्स उभयो पासं पि पंचाणउयं पंचाणउयं पदेसाओ उव्वेहुस्सेहपरिहाणीए पण्णत्ता।

इस जम्बूद्वीप के चरमान्त भाग से चारों दिशाओं में लवण समुद्र के भीतर पंचानवें-पंचानवें हजार

योजन अवगाहन करने पर चार महापाताल कलश कहे गए हैं। यथा—१. वड़वामुख महापातल कलश, २. केतुक महापाताल कलश, ३. यूपक महापाताल कलश, ४. ईश्वर महापाताल कलश।

लवण समुद्र के उभय पार्श्व पंचानवें-पंचानवें प्रदेश पर उद्वेध (गहराई) व उत्सेध (ऊँचाई) वाले कहे गए हैं।

From the extreme end part of this Jambu continent in all the four directions going ninety five yojanas further into the Lavan Ocean, there has been said of four underground giant pitchers as :-1. Badvamukh Maha Patal Kalash, 2. Ketuk Maha Patal Kalash, 3. Yupak Maha Patal Kalash, 4. Ishwar Maha Patal Kalash. On both the sides of Ocean Lavan has been said of depth and height at the distance of ninety five-ninety five space points.

४३१–कुंथू णं अरहा पंचाणउइं वाससहस्साइं परमाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे। थेरे णं मोरियपुत्ते पंचाणउइवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे।

कुन्थु अर्हत् पंचानवें हजार वर्ष की आयु भोग कर सिद्ध-बुद्ध हुए। वे कर्मों से मुक्ति पाकर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए। अन्ततोगत्वा वे सर्व दुःखों से रहित हो गए।

इसी प्रकार स्थविर मौर्यपुर पंचानवें वर्ष की आयु सम्पन्न कर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, परिनिवृत्त और सर्व-दुखों से रहित हुए।

Arihant Kunthu Nath attained liberation at the age of ninety five thousand years. After emanciating all the accumulated karmas he got Parinirvana i.e. the ultimate goal of life. Ultimately he became devoid of all the miseries and sufferings.

।। पंचानवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Ninety Fifth Samvaya)

छयानवां समवाय

The Ninety Sixth Samvaya

४३२–एगमेगस्स णं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स छण्णउइं छण्णउइं गामकोडीओ होत्था।

प्रत्येक चातुरन्त चक्रवर्ती राजा के राज्य में छयानवें-छयानवें करोड़ ग्राम थे।

In the kingdom of every supreme lord (Chaturant Chakravarti) there were ninety crore villages.

४३३–वायुकुमाराणं छण्णउइं भवणावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

वायुकुमार देवों के छयानवें लाख आवास कहे गए हैं।

The residences of Vayu Kumar gods have been stated as ninety six lacs.

४३४–ववहारिए णं दंडे छण्णउइं अंगुलाइं अंगुलमाणेणं। एवं धणू नालिया जुगे अक्खे मुसले वि हु।

व्यावहारिक दण्ड अंगुल के माप से छयानवें अंगुल-प्रमाण होता है। इसी प्रकार धनुष, नालिका, युग, अक्ष और मूशल भी जानना चाहिए।

According to the measurement through fingers the measurement of a common stick is equal to ninety six fingers. In the same way the measurement of Dhanush, Nalika, Yuga, Aksh and Mushal also should be known.

४३५–अब्भितरओ आइमुहुत्ते छण्णउइ अंगुलच्छाए पण्णत्ते।

आभ्यन्तर मण्डल पर सूर्य के संचार करते समय आदि (प्रथम) मुहूर्त्त छयानवें अंगुल की छाया वाला कहा गया है।

At the time of sun's movement over the inner orbit the first muhurat has been said when shadow is ninety six fingers.

।। छयानवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Ninety Sixth Samvaya)

सत्तानवां समवाय

The Ninety Seventh Samvaya

४३६–मंदरस्स णं पव्वयस्स पच्चच्छिमिल्लाओ चरमंताओ गोथुभस्स णं आवासपव्वयस्स पच्चच्छिमिल्ले चरमंते एस णं सत्ताणउइजोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। एवं चउदिसिं पि।

मन्दर पर्वत के पश्चिमी चरमान्त भाग से गोस्तुभ आवास-पर्वत का पश्चिमी चरमान्त भाग सत्तानवें हजार योजन अन्तर वाला कहा गया है। इसी प्रकार चारों ही दिशाओं में जानना चाहिए।

The western extreme end part of Gourtubh Residential Mountain from the western extreme end part of Mandar Mountain has been said as the distance of ninety seven thousand yojanas. In all the four directions the same should be known as the distance.

४३७–अट्ठण्हं कम्मपगडीणं सत्ताणउइं उत्तरपगडीओ पण्णत्ताओ।

आठों कर्मों की उत्तर प्रकृतियां सत्तानवें कही गई हैं।

The total number of all the uttar tendencies of all the eight karmas has been stated as ninety seven.

४३८–हरिसेणे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी देसूणाइं सत्ताणउइं वाससयाइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइए।

चातुरन्त चक्रवर्ती हरिषेण राजा कुछ कम सत्तानवें सौ वर्ष अगारवास में रहे। तदुपरान्त वे मुंडित हो अगार से अनगारिता में प्रव्रजित हुए।

(Chaturant Chakravarti) The supreme lord Harisen remained as a householder a little less than ninety seven hundred years. After that he got his head tonsured and became an ascetic.

।। सत्तानवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Ninety Seventh Samvaya)

अट्ठानवां समवाय

The Ninety Eighth Samvaya

४३९–नंदणवणस्स णं उवरिल्लाओ चरमंताओ, पंडुयवणस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं अट्ठाणउइजोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

नन्दन वन के ऊपरी चरमान्त भाग से पांडुक वन के निचले चरमान्त भाग का अन्तर अट्ठानवें हजार योजन है।

The distance of lower extreme end part of Panduk forest from the upper extreme end part of Nandan forest is equal to ninety eight thousand yojanas.

४४०–मंदरस्स णं पव्वयस्स पच्चच्छिमिल्लाओ चरमंताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पुरच्छिमिल्ले चरमंते एस णं अट्ठाणउइ जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। एवं चउद्दिसिं वि।

मन्दर पर्वत के पश्चिमी चरमान्त भाग से गोस्तुभ आवास पर्वत का पूर्वीचरमान्त भाग अट्ठानवें हजार योजन अन्तर वाला कहा गया है। इसी प्रकार चारों ही दिशाओं में स्थित आवास पर्वतों का अन्तर जानना चाहिए।

The distance of the eastern extreme end part of Gostoobh residential

mountain from the western extreme end part of Mandar Mountain has been said equal to ninety eight thousand yojanas. In the same way the distance of all the residential mountains situated in all the four directions should be known.

४४१–दाहिणभरहस्स णं धणुपिट्ठे अट्ठाणउइ जोयणसयाइं किंचूणाइं आयामेणं पण्णत्ते।

दक्षिण भरतक्षेत्र का धनुःपृष्ठ अट्ठानवें सौ योजन से कुछ कम आयाम (लम्बाई) की अपेक्षा कहा गया है।

With regard to the length the bow back part of South Bharat region has been said a little lesser than ninety eight hundred yojanas.

४४२–उत्तराओ कट्ठाओ सूरिए पढमं छम्मासं अयमाणे एगूणपन्नासतिमे मंडलगते अट्ठाणउइ एकसट्ठिभागे मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढित्ता णं सूरिए चारं चरइ। दक्खिणाओ णं कट्ठाओ सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे एगूणपन्नासइमे मंडलगते अट्ठाणउइ एकसट्ठिभाए मुहुत्तस्स रयणिखित्तस्स निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ता णं सूरिए चारं चरइ।

उत्तर दिशा से सूर्य प्रथम छह मास दक्षिण की ओर आता हुआ उनपचासवें मण्डल के ऊपर आकर मुहूर्त के इकसठिए अट्ठानवें भाग दिवसक्षेत्र (दिन) के घटाकर और रजनीक्षेत्र (रात) के बढ़ाकर संचार करता है। इसी प्रकार दक्षिण दिशा से सूर्य दूसरे छह मास उत्तर की ओर जाता हुआ उनपचासवें मंडल के ऊपर आकर मुहूर्त के अट्ठानवें इकसठ भाग रजनी क्षेत्र (रात) के घटाकर और दिवस क्षेत्र (दिन) के बढ़ाकर संचार करता है।

Coming towards south from the direction of North, first six months the sun coming over the fiftieth orbit moves decreasing the length of the day and increasing the length of the night area equal to sixty one part out of ninety eight parts of a muhurat. In the same way in the second six months going from south directions towards north directions coming over the fiftieth mandal the Sun moves decreasing the length night and increasing the length of the day equal to sixty one parts out of ninety eight parts of one muhurat.

४४३–रेवई-पढमजेट्ठापज्जवसाणाणं एगूणवीसाए नक्खत्ताणं अट्ठाणउइ ताराओ तारग्गेणं पण्णत्ताओ।

रेवती से लेकर ज्येष्ठा तक के उन्नीस नक्षत्रों के तारे अट्ठानवें हैं। यथा—रेवती नक्षत्र के बत्तीस तारे, अश्विनी नक्षत्र के तीन तारे, भरणी नक्षत्र के तीन तारे, कृत्तिका नक्षत्र के छह तारे, रोहिणी नक्षत्र के पाँच तारे, मृगशिर नक्षत्र के तीन तारे, आर्द्रा नक्षत्र का एक तारा, पुनर्वसु नक्षत्र के पाँच तारे, पुष्य नक्षत्र के तीन तारे, अश्लेषा नक्षत्र के छह तारे, मघा नक्षत्र के सात तारे, पूर्वाफाल्गुनी के दो तारे,

उत्तराफाल्गुनी के दो तारे, हस्त नक्षत्र के पाँच तारे, चित्रा नक्षत्र का एक तारा, स्वाति नक्षत्र का एक तारा, विशाखा नक्षत्र का एक तारा, अनुराधा नक्षत्र के चार तारे, ज्येष्ठा नक्षत्र के तीन तारे।

The number of the stars from the constellation Revatito Jyeshtha is ninety eight as :- thirty two stars of Nakshatra Revati, three stars of Ashwini Nakshatra, three of Bharani Nakshatra, six stars of Kritika, five stars of Rohini Nakshatra, three stars of Mrigshir Nakshatra, one star of Ardra Nakshatra, five stars of Punarvasu Nakshatra, six stars of Ashlesha Nakshatra, seven stars of Magha Nakshatra, two of Poorva Phalguni Nakshatra, two of Uttar Phalguni Nakshatra, five stars of Hast Nakshatra, one star of Chitra Nakshatra, one star of Swati Nakshatra, one star of Vishakha Nakshatra, four stars of Anuradha Nakshatra, three stars of Jyeshtha Nakshatra.

॥ अट्ठानवां समवाय समाप्त ॥

(The End of Ninety Eighth Samvaya)

निन्यानवां समवाय

The Ninety Nineth Samvaya

४४४–मंदरे णं पव्वए णवणउइजोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते। नंदणवणस्स णं पुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ पच्चच्छिमिल्ले चरमंते एस णं नवनउइजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। एवं दक्खिणिल्लाओ चरमंताओ उत्तरिल्ले चरमंते एस णं णवणउइजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

मन्दर पर्वत की ऊँचाई निन्यानवें हजार योजन कही गई है। नन्दन वन के पूर्वी चरमान्त से पश्चिमी चरमान्त निन्यानवें सौ योजन अन्तर वाला कहा गया है। इसी प्रकार नंदन वन के दक्षिणी चरमान्त से उत्तरी चरमान्त भी निन्यानवें सौ योजन अन्तर वाला है।

The height of Mountain Mandar has been described as ninety nine thousand yojanas. From the extreme eastern end part of Nandan forest to the its extreme western end part the distance has been stated as ninety nine hundred yojanas. In the same way the northern extreme end part from the southern extreme end part of Nandan forest, too, is at as distance of ninety nine hundred yojanas.

४४५–उत्तरे पढमे सूरियमंडले नवनउइजोयणसहस्साइं साइरेगाइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते। दोच्चे सूरियमंडले नवनउइजोयणसहस्साइं साहियाइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते। तइय सूरियमंडले नवनउइजोयणसहस्साइं साहियाइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते।

उत्तर दिशा में प्रथम, द्वितीय व तृतीय सूर्य-मण्डल (सूर्य का आकाश मार्ग से मेरु के चारों ओर परिभ्रमण करना) आयाम-विष्कम्भ की अपेक्षा से कुछ अधिक निन्यानवें-निन्यानवें हजार योजन कहा गया है।

With regard to the length and width (while the Sun is revolving round the Mountain Meru) the first, second and third solar system in the direction of north have been said a little more than ninety nine each yojanas.

४४६–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए अंजणस्स कंडस्स हेट्ठिल्लाओ चरमंताओ वाणमंतर-भोमेज्जविहाराणं उवरिमंते एस णं नवनउइ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते।

इस रत्नप्रभा पृथ्वी के प्रथम खरकाण्ड के सोलह काण्डों में अंजन कांड दशवाँ कहा गया है। इस अंजन कांड के अधस्तन चरमान्त भाग से वानव्यन्तर भौमेयक देवों के विहारों या आवासों का उपरिम अन्तभाग निन्यानवें सौ योजन अन्तर वाला कहा गया है।

Anjan Kand among the sixteen kands of 1st Kharkand of this Ratanprabha hell has been said to be the tenth one. From the lowest extreme end part of this Anjan Kand to the upper residential extreme end part of Peripatetic gods of the distance is ninety nine hundred yojanas.

।। निन्यानवां समवाय समाप्त ।।

(The End of Ninety Nineth Samvaya)

सौवां समवाय

The Hundredth Samvaya

४४७–दसदसमिया णं भिक्खुपडिमा एगेणं राइंदियसतेणं अद्धछट्ठेहिं भिक्खासतेहिं अहासुत्तं जाव आराहिया यावि भवइ।

दशदशमिका भिक्षुप्रतिमा एक सौ रात-दिनों में और साढ़े पाँच सौ भिक्षा-दत्तियों से यथासूत्र, यथामार्ग, यथातत्त्व से स्पृष्ट, पालित, शोभित, तीरित, कीर्तित और आराधित होती है।

The tenth special vow (pratima) of an ascetic is practiced, fostered, decorated, enhanced and based as per Sutras, It is practiced hundred days and nights by accepting fifty five hundred and a half morsels of food.

४४८–सयभिसया नक्खत्ते एक्कसयतारे पण्णत्ते।

शतभिषक् नक्षत्र के एक सौ तारे कहे गए हैं।

One hundred stars have been said of Shatbhisha Nakshatra.

४४९–सुविही पुप्फदंते णं अरहा एगं धणुसयं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

पासे णं अरहा पुरिसादाणीए एक्कं वाससयं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे। एवं थेरे वि अज्जसुहम्मे।

सुविधि पुष्पदन्त अर्हत् की ऊँचाई सौ धनुष थी।

पुरुषादानीय पार्श्व अर्हत् एक सौ वर्ष की समग्र आयु भोगकर सिद्ध-बुद्ध हुए। वे कर्मों से मुक्त हुए और परिनिर्वाण को प्राप्त हुए। अन्ततोगत्वा वे सर्व दु:खों से रहित हो गए।

इसी प्रकार स्थविर आर्य सुधर्मा भी सौ वर्ष की आयुभोग कर सिद्ध-बुद्ध हुए। वे भी कर्मों से मुक्त होकर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए और अन्ततोगत्वा सर्व दु:खों से रहित हो गए।

The height of Arihant Suvidhi Pushpdanta was one hundred Dhanush (Bows). Enjoying the total age of one hundred years the supreme among human beings Arihant Parshvanath attained salvation. He got liberation from his accumulated karmas and attained Parinirvana. Ultimately he became devoid of all miseries and sufferings. Likewise the senior ascetic (sthavir) Arya Sudharma became liberated after enjoying the age of one hundred years. He also getting liberation from all his karmas got Parinirvana and eventually became devoid of all miseries and sufferings.

४५०–सव्वे वि णं दीहवेयड्ढपव्वया एगमेगं गाउयसयं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता। सव्वेवि णं चुल्लहिमवंत-सिहरीवासहरपव्वया एगमेगं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता। एगमेगं गाउयसयं उव्वेहेणं पण्णत्ता। सव्वे वि णं कंचणगपव्वया एगमेगं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता। एगमेगं गाउयसयं उव्वेहेणं पण्णत्ता। एगमेगं जोयणसयं मूले विक्खंभेणं पण्णत्ता।

समस्त दीर्घ वैताढ्य पर्वतों की ऊँचाई एक-एक सौ गव्यूति यानि कोश कही गई है। समस्त क्षुल्लक हिमवन्त-शिखरी वर्षधर पर्वत एक-एक सौ योजन ऊँचे हैं। तथा ये समस्त वर्षधर पर्वत सौ-सौ गव्यूति उद्वेध (भूमि में अवगाह) वाले हैं। समस्त कांचनक पर्वत एक-एक सौ योजन ऊँचे हैं तथा वे सौ-सौ गव्यूति उद्वेध यानि भूमि में अवगाह वाले और मूल में एक-एक सौ योजन विष्कम्भ वाले हैं।

The heights of all the long Vaitadhya Mountains have been said of one hundred gavyuti or kosh (Indian measurement unit). All the Kshulak Himvant and Shikhari Varshidhar mountains are hundred yojanas high. All these Varshdhar Mountains are buried into this earth up to one hundred kosa. All the Kanchan Mountains are of one hundred yojans high respectively and there all are buried into the earth equal to one hundred kosha and at the roots the expensive has been said of one hundred yojana respectively.

।। सौवां समवाय समाप्त ।। (The End of Hundredth Samvaya)

अनेकोत्तरिका-वृद्धि-समवाय

[सार्धशत से कोटाकोटि पर्यन्त]

Multi-differential - Increasing Samvaya

(Beginning from one hundred fiftieth to millions into millions)

४५१–चंदप्पभे णं अरहा दिवड्ढं धणुस्सयं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था। आरणकप्पे दिवड्ढं विमाणावाससयं पण्णत्तं। एवं अच्चुए वि १५०।

चन्द्रप्रभ अर्हत् की ऊँचाई डेढ़ सौ धनुष कही गई है। आरणकल्प में डेढ़ सौ विमानावास कहे गए हैं। अच्युत कल्प में भी डेढ़ सौ विमानावास हैं।

The height of Arihant Chandraprabh has been said of one hundred fifty bows (Dhanush), one hundred fifty celestial residences have been said of Aarnak Kalp. In the Achyut Kalp also there are one hundred fifty heavenly about.

४५२–सुपासे णं अरहा दो धणुसया उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

सुपार्श्व अर्हत् की ऊँचाई दो सौ धनुष कही गई है।

The height of Arihant Suparshva Nath was two hundred bows (Dhanush).

४५३–सव्वे वि णं महाहिमवंत-रुप्पीवासहरपव्वया दो दो जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता। दो दो गाउयसयाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता।

समस्त महाहिमवन्त और रुक्मी वर्षधर पर्वत दो-दो सौ योजन ऊँचे कहे गए हैं। वे सभी दो-दो गव्यूति उद्वेध वाले (गहरे) हैं।

All the Mahahimvant Rukmi Varshadhar Mountains have been said of two hundred yojanas high respectively. They are rooted into the earth equal to two kosh each respectively.

४५४–जंबूद्दीवे णं दीवे दो कंचणपव्वयसया पण्णत्ता २००।

इस जम्बूद्वीप में दो सौ कांचनक पर्वत कहे गए हैं।

The total number of Kanchanak Mountains situated in the Jambu continent has been said equal to two hundred.

४५५–पउमप्पभे णं अरहा अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

पद्मप्रभ अर्हत् की ऊँचाई अढ़ाई सौ धनुष कही गई है।

The height of Arihant Padam Prabh has been said equal to two hundred bows (Dhanush).

४५६–असुरकुमाराणं देवाणं पासायवडिंसगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता २५०।

असुरकुमार देवों के प्रासादावतंसक की ऊँचाई अढ़ाई सौ योजन कही गई है।

The heights of the palaces of the malevolant demons have been said equal to two and a half bows (Dhanush).

४५७–सुमई णं अरहा तिण्णि धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था। अरिट्ठनेमी णं अरहा तिण्णि वाससयाइं कुमारवासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए।

सुमति अर्हत् की ऊँचाई तीन सौ धनुष थी। अरिष्टनेमि अर्हन् तीन सौ वर्ष कुमारवास में रहे, फिर मुंडित हुए और अगार से अनगारिता में प्रव्रजित हो गए।

The height of Arihant Sumati Nath was three hundred bows (Dhanush). Arihant Arishtnemi remained bachelor for a period of three hundred years, then getting his head tonsured and consecrated as an ascetic.

४५८–वेमाणियाणं देवाणं विमाणपागारा तिण्णितिण्णि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

वैमानिक देवों के विमान-प्राकार यानि परकोटा तीन-तीन सौ योजन ऊँचे कहे गए हैं।

The fence or the outer boundary wall of the celestial vehicles of the celestial beings have been said three hundred yojanas high each.

४५९–समणस्स [णं] भगवओ महावीरस्स तिन्नि सयाणि चोद्दसपुव्वीणं होत्था।

पंचधणुसइयस्स णं अंतिमसारीरियस्स सिद्धिगयस्स सातिरेगाणि तिण्णि-धणुसयाणि जीवप्पदेसोगाहणा पण्णत्ता ३००।

श्रमण भगवान महावीर के संघ में तीन सौ चतुर्दश पूर्वी मुनि थे।

पाँच सौ धनुष की अवगाहना वाले चरमशरीरी सिद्धि को प्राप्त पुरुषों यानि सिद्धों के जीव प्रदेशों की अवगाहना तीन सौ धनुष से कुछ अधिक कही गई है।

There were three hundred monks having the knowledge of fourteen Poorvas in the ascetic congregation of Shraman Bhagwan Mahavir. The expansion of space points of jeevas the liberated one, or the human beings who have attained Sidhi (salvation) and the Charamshariri having the body structure of five hundred bows (Dhanush) have been said of the height of a little more than three hundred bows (Dhanush).

४६०–पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अद्धुट्ठसयाइं चोद्दसपुव्वीणं संपया होत्था। अभिनंदणे णं अरहा अद्धुट्ठाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ३५०।

पुरुषादानीय पार्श्व अर्हन् के चतुर्दशपूर्वियों की सम्पदा के विषय में कहा गया है कि यह सम्पदा साढ़े तीन सौ थी। अभिनन्दन अर्हन् की ऊँचाई साढ़े तीन सौ धनुष कही गई है।

Regarding the Sharaman wealth those have the knowledge of fourteen Poorvas of Arihant Parshvanath it has been said that the number of these attainers of fourteen Poorvas knowledge were three hundred. The height of Arihant Abhinandan has been said equal to three and a half hundred bows (Dhanush).

४६१–संभवे णं अरहा चत्तारि धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

संभव अर्हत् चार सौ धनुष ऊँचे कहे गए हैं।

Arihant Sambhav Nath has been said of four hundred bows (Dhanush) high.

४६२–सव्वे वि णं निसढनीलवंता वासहरपव्वया चत्तारि-चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्ते णं [पण्णत्ता]। चत्तारि चत्तारि गाउयसयाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता। सव्वे वि णं वक्खारपव्वया णिसढनीलवंतवासहरपव्वयंतेणं चत्तारि चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं। चत्तारि चत्तारि गाउयसयाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता।

समस्त निषध और नीलवन्त वर्षधर पर्वत चार-चार सौ योजन ऊँचे तथा चार-चार सौ गव्यूति उद्वेध यानि गहराई वाले कहे गये हैं। समस्त वक्षार पर्वत भी निषध और नीलवन्त पर्वतों के समीप चार-चार सौ योजन ऊँचे और चार-चार सौ योजन गव्यूति उद्वेध वाले कहे गए हैं।

All the Nishadh-Neelvant varshdhar mountains have been said of four hundred yojanas each and are rooted into the earth equal to four hundred koshas each. All the Vakshar mountains situated near Nishadh-Neelvant mountains have been described four yojanas high and rooted into the earth equal to four koshas each.

४६३–आणय-पाणएसु दोसु कप्पेसु चत्तारि विमाणसया पण्णत्ता।

दो कल्पों-आनत और प्रानत में कुल चार सौ विमानों का उल्लेख है।

A total number four hundred celestial vehicles of two kalpas namely Anat and Pranat are described.

४६४–समणस्स णं भगवओ महावीरस्स चत्तारि सया वाईणं सदेव-मणुयासुरंमि लोगंमि वाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाइसंपया होत्था ४००।

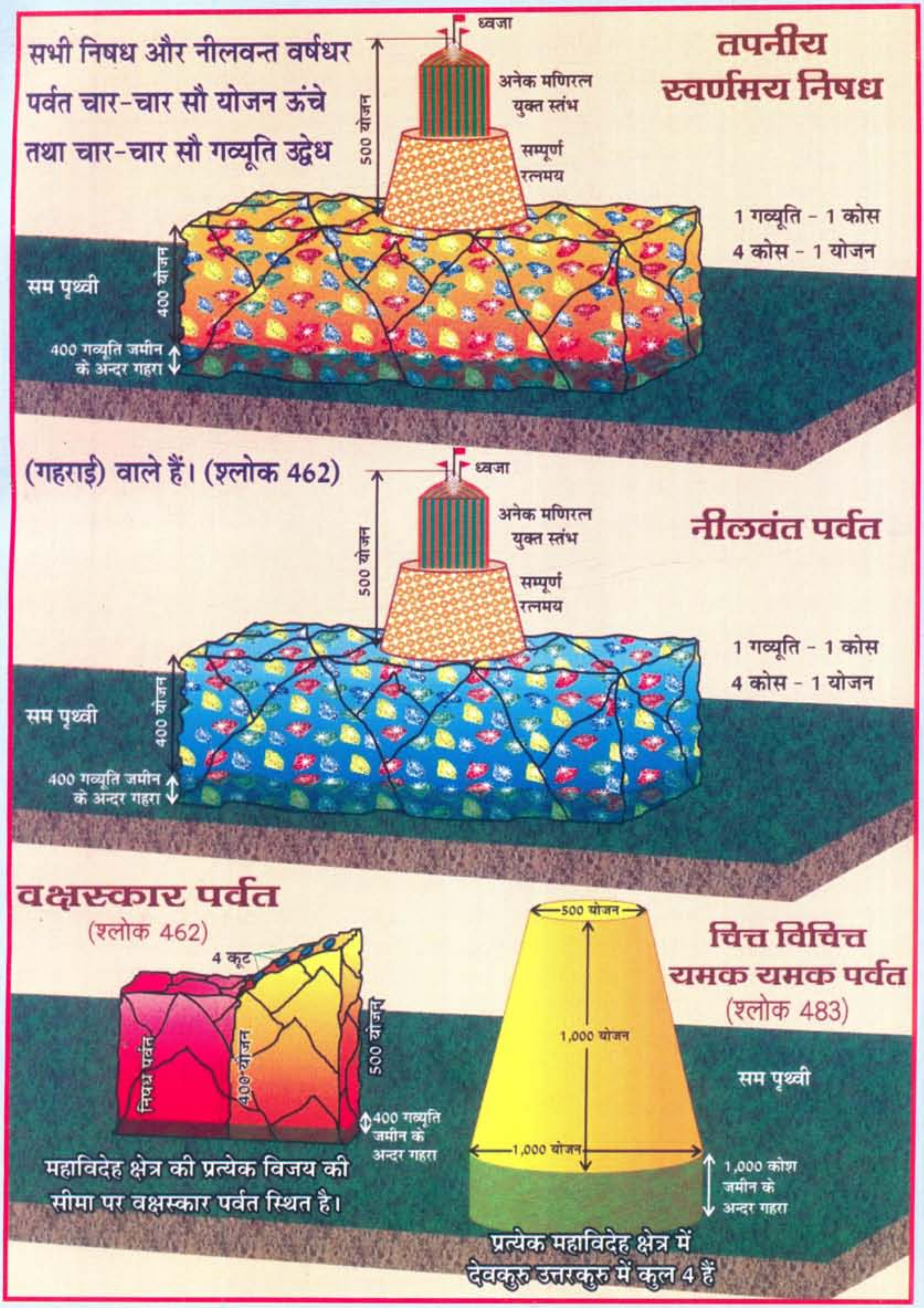

सभी निषध और नीलवन्त वर्षधर
पर्वत चार-चार सौ योजन ऊंचे
तथा चार-चार सौ गव्यूति उद्वेध
(गहराई) वाले हैं। (श्लोक 462)
तपनीय
स्वर्णमय निषध
ध्वजा
अनेक मणिरत्न
युक्त स्तंभ
500 योजन
सम्पूर्ण
रत्नमय
1 गव्यूति - 1 कोस
4 कोस - 1 योजन
सम पृथ्वी
400 योजन
400 गव्यूति जमीन
के अन्दर गहरा
नीलवंत पर्वत
ध्वजा
अनेक मणिरत्न
युक्त स्तंभ
500 योजन
सम्पूर्ण
रत्नमय
1 गव्यूति - 1 कोस
4 कोस - 1 योजन
सम पृथ्वी
400 योजन
400 गव्यूति जमीन
के अन्दर गहरा
वक्षस्कार पर्वत
(श्लोक 462)
4 कूट
निषध पर्वत
400 योजन
500 योजन
400 गव्यूति
जमीन के
अन्दर गहरा
महाविदेह क्षेत्र की प्रत्येक विजय की
सीमा पर वक्षस्कार पर्वत स्थित है।
चित्त विचित्त
यमक यमक पर्वत
(श्लोक 483)
500 योजन
1,000 योजन
1,000 योजन
सम पृथ्वी
1,000 कोश
जमीन के
अन्दर गहरा
प्रत्येक महाविदेह क्षेत्र में
देवकुरु उत्तरकुरु में कुल 4 हैं

निषध, नीलवंत पर्वत

महाविदेह क्षेत्र की दक्षिण सीमा पर निषध तथा उत्तरी सीमा पर नीलवंत पर्वत स्थित है। निषध नीलवंत पर्वत समपृथ्वी से 400 योजन ऊँचे तथा समपृथ्वी के अन्दर 400 गव्यूति अर्थात् 100 योजन गहरे हैं। इन पर्वतों के ऊपर मणिरत्नों से युक्त अनेक कूट हैं। निषध-नीवंत पर्वत पर नौ-नौ कूट हैं। –श्लोक 462

वक्षस्कार पर्वत

ये पर्वत अश्वस्कन्ध के आकार के हैं अर्थात् आगे से ऊँचे और पीछे से कुछ झुके हुए नीचे, इसलिए इन्हें वक्षस्कार पर्वत कहा जाता है। यह पर्वत निषध तथा नीलवंत पर्वतों के पास 400 योजन ऊँचे और 100 योजन गहराई वाले हैं। लम्बाई में विजय प्रमाण लम्बे हैं।

चित्त–विचित्त, यमक–यमक पर्वत

नीलवंत पर्वत से उत्तरकुरु में दक्षिण दिशा में आगे जाने से सीता महानदी के दोनों किनारों पर दो यमक पर्वत स्थित हैं। इसी प्रकार निषध पर्वत से देवकुरु क्षेत्र में उत्तर दिशा में आगे जाने पर सीतोदा नदी के दोनों किनारों पर चित्त-विचित्त पर्वत स्थित हैं। ये चारों पर्वत समपृथ्वी से एक-एक हजार योजन ऊँचे 1,000 कोस समपृथ्वी के अन्दर गहरे हैं। तल में यह पर्वत 1,000 योजन चौड़े हैं तथा ऊपर 500 योजन चौड़े हैं। इनका आकार कोन की तरह है। – श्लोक 480

The Mountain "Nishadha and Neelvanta"

On the North boundary of Mavavideh region the Neelvant and on the South boundary of it 'the Nishadha Mountain are situated. These two mountains are four hundred yojans high and one hundred yojans (400 kosa) from the surface of the earth. There are many summits endowed with gems and jewels on these mountains. Nishadha and Neelvanta Mountain have nine summits each.

Samvayang verse 462

Mountain "Vakshaskar"

These mountains are of the shape of horse body-which means high from the front part and inclined from the rear part So it these mountains are called "Vakshaskar". These mountains are situated near the Nishadha and Neelvanta Mountains at the height of 400 yojans and at the depth of one hundred yojans. The length of these mountains are equal to the length of 'Vijay'.

Samvayang verse 462

The Mountain "Chit-Vichit" and "Yamak-Yamak"

The mountains named Yamak are situated on both the banks of the great river Sita going ahead in the south direction in North Kuru from mountain Neelvant. In the same way the mountains Chit-Vichit are situated on both the banks of great river Sitoda going ahead in the North direction in the area of Dev Kuru from the Mountain Nishidha. These four mountains are one thousand yojans high and 250 yojans deep from the surface of the earth. At the bottom the expansion of these mountains are one thousand yojans wide and at the peak 500 yojans wide. The shape of these mountains are conical.

Samvayang verse 480

श्रमण भगवान महावीर के चार सौ अपराजित वादी थे। भगवान की यह उत्कृष्ट वादिसम्पदा थी। वे वादी देव, मनुष्य और असुरों से भी वाद में अपराजित थे अर्थात् पराजित होने वाले नहीं थे।

There were four hundred invincible debator of Shraman Bhagwan Mahavir. This was the maximum number of his debator wealth. These debators were invincible by none of the gods, human beings and demons i.e. they were not to be defeated.

४६५–अजिते णं अरहा अद्धपंचमाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

सगरे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी अद्धपंचमाइ धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ४५०।

अजित अर्हत् की ऊँचाई साढ़े चार सौ धनुष थी। चातुरन्त चक्रवर्ती सगर राजा की भी ऊँचाई साढ़े चार सौ धनुष कही गई है।

The height of Arihant Ajit was equal to four and a half hundred bows (Dhanush) the height of Chaturant Chakravarti Supreme lord Sagar have been said equal to four hundred bows (Dhanush).

४६६–सव्वे वि णं वक्खारपव्वया सीआ-सीओआओ महानईओ मंदरपव्वयंते णं पंच पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पंच पंच गाउयसयाइं उव्वहेणं पण्णत्ताओ। सव्वे वि णं वासहरकूडा पंच पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था। मूले पंच पंच जोयणसयाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता।

समस्त वक्षार पर्वत सीता-सीतोदा महानदियों के और मन्दर पर्वत के समीप पाँच-पाँच सौ योजन ऊँचे और पाँच-पाँच सौ गव्यूति उद्वेध (गहराई) वाले कहे गए हैं। समस्त वर्षधर कूट पाँच-पाँच सौ योजन ऊँचे और मूल में पाँच-पाँच सौ योजन विष्कम्भ वाले कहे गए हैं।

All the Vakshar mountains situated nearer the great rivers Sita-Sitoda and Mountain Mandar have been said five hundred-five hundred yojanas high and rooted deep into the earth equal to five hundred kosha. All the Varshdhar Kuts have been said five hundred yojanas high and having the expansion at its roots of five hundred yojanas each.

४६७–उसभे णं अरहा कोसलिए पंच धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था। भरहे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

कौशलिक ऋषभ अर्हत् की ऊँचाई पाँच सौ धनुष थी। चातुरन्त चक्रवर्ती राजा भरत भी पाँच सौ धनुष ऊँचे कहे गए हैं।

The height of Kaushalika Arihant Rishabh Dev was five hundred bows (Dhanush). The Chaturant Chakravarti Bharat, too, has been described of the height of five hundred bows (Dhanush).

४६८–सोमणस-गंधमादण-विज्जुप्पभ-मालवंताणं वक्खारपव्वयाणं मंदरपव्वयंतेणं पंच पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, पंच पंच गाउयसयाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता। सव्वे वि णं वक्खारपव्वयकूडा हरि- हरिस्सहकूडवज्जा पंच पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, मूले पंच पंच जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ता। सव्वे वि णं णंदणकूडा बलकूडवज्जा पंच पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, मूले पंच पंच जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ता।

सौमनस, गन्धमादन, विद्युत्प्रभ और मालवन्त—ये चारों वक्षार पर्वत, मन्दर पर्वत के समीप पाँच-पाँच सौ योजन ऊँचे और पाँच-पाँच सौ गव्यूति उद्वेध वाले कहे गए हैं। हरि और हरिस्सह कूट को छोड़कर शेष समस्त वक्षार पर्वत कूट पाँच-पाँच सौ योजन ऊँचे हैं तथा मूल में वे पाँच-पाँच सौ योजन आयाम-विष्कम्भ वाले कहे गए हैं। बलकूट को छोड़कर समस्त नन्दन वनों के कूटों की ऊँचाई पाँच-पाँच सौ योजन है तथा मूल में वे पाँच-पाँच सौ योजन आयाम-विष्कम्भ वाले कहे गए हैं।

The four Vakshar Mountains namely Soumanas-Gandharmadan, Vidyutprabh, Malvant situated nearer to Mountain Mandar have been said of five hundred yojanas each high and rooted deep into the earth equal to five hundred gavyuti (Indian scale). Barring Hari and Harissah Kut all the other Vakshar Kuts are five hundred yojanas high and at the root their expansion has been said equal to five hundred yojanas each. Barring the Bal Kut the heights of other all the Kuts of Nandan forests are five hundred yojanas each and at the root these have been said of the expansion of five hundred yojanas.

४६९–सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणा पंच पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

सौधर्म और ईशान—इन दोनों कल्पों में समस्त विमानों की ऊँचाई पाँच-पाँच सौ योजन कही गई है।

In both the Kalps namely Soudharma and Ishan all the celestial vehicles have the height of five hundred yojanas each.

४७०–सणंकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु विमाणा छजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता। चुल्लहिमवंतकूडस्स उवरिल्लाओ चरमंताओ चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स समधरणितले एस णं छजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। एवं सिहरीकूडस्स वि।

सनत्कुमार और माहेन्द्रकल्पों में विमान छह सौ योजन ऊँचे कहे गए हैं। क्षुल्लक हिमवन्तकूट के उपरिम चरमान्त से क्षुल्लक हिमवन्त वर्षधर पर्वत का सम धरणीतल यानि सम भूमितल छह सौ योजन अन्तर वाला है। इसी प्रकार शिखरी कूट का भी अन्तर जानना चाहिए।

The celestial vehicles in Sanat Kumar and Mahendra Kalpas have been said six hundred yojanas high. The distance from the upper extreme end at

Kshullak Himvant Kut to the surface of Kshullak Himvant Varshdhar Mountain is equal to six hundred yojanas. In the same way the distance of the Shikhari Kut should be known.

४७१–पासस्स णं अरहओ छसया वाईणं सदेवमणुयासुरे लोए वाए अपराजिआणं उक्कोसिया वाइसंपया होत्था। अभिचंदे णं कुलगरे छधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था। वासुपुज्जे णं अरिहा छहिं पुरिससएहिं सद्धिं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए। ६००।

पार्श्व अर्हत् के छह सौ अपराजित वादी थे। यह भगवान की उत्कृष्ट वादिसम्पदा थी। वे वादी मनुष्य, देव और असुरों में से किसी से भी वाद में पराजित होने वाले नहीं थे। अभिचन्द्र कुलकर की ऊँचाई छह सौ धनुष कही गई है। वासुपूज्य अर्हत् छह सौ पुरुषों के साथ मुंडित हुए और अगार से अनगारिता में प्रव्रजित हुए थे।

There were six hundred invincible debators of Arihant Parshva Nath. These debators were not vincible in debate by any human being, gods, demons. The height of Abhichander Kulkar has been said six hundred bows (Dhanush). Arihant Vasupujya got his head tonsured alongwith six hundred men and got consecration as ascetics from the life of householder.

४७२–बंभ-लंतएसु (दोसु) कप्पेसु विमाणा सत्त सत्त जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

दो कल्पों–ब्रह्म और लान्तक–में विमानों की ऊँचाई सात-सात सौ योजन कही गई है।

In two kalpas namely Brahma and Lokantak, the height of the celestial vehicles have been said seven hundred yojanas each.

४७३–समणस्स णं भगवओ महावीरस्स सत्त जिणसया होत्था। समणस्स णं भगवओ महावीरस्स सत्त वेउव्वियसया होत्था। अरिट्ठणेमी णं अरहा सत्त वाससयाइं देसूणाइं केवलपरियागं पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे।

श्रमण भगवान महावीर के संघ में सात सौ केवली और सात सौ वैक्रियलब्धिधारी साधु थे। अरिष्टनेमि अर्हत् सात सौ वर्ष से कुछ कम (पैंतालीस दिन कम) केवलि-पर्याय में रहे और सिद्ध-बुद्ध हुए। वे कर्मों से मुक्त होकर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए। अन्ततोगत्वा वे सर्व दुःखों से रहित हो गए।

There were seven hundred Kewalis and seven hundred transformable body holder monks in the ascetic congregation of Shraman Bhagwan Mahavir. Arihant Arishtnemi remained in Kewali mode a little less than (less than about forty five days) seven hundred years and attained salvation getting liberation

from all the karmas got Parinirvana. Ultimately he became devoid of all the miseries and suffering.

४७४–महाहिमवंतकूडस्स णं उवरिल्लाओ चरमंताओ महाहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स समधरणितले एस णं सत्त जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। एवं रुप्पिकूडस्स वि ७००।

महाहिमवंत कूट के ऊपरी चरमान्त भाग से महाहिमवन्त वर्षधर पर्वत का समधरणीतल या समभूमितल सात सौ योजन अन्तर वाला कहा गया है। इसी प्रकार रुक्मी कूट का भी अन्तर जानना चाहिए।

The distance from the upper extreme end of Mahahimvant Kut to the surface of the Mahahimvant Varshadhar has been said of seven hundred yojanas. In the same way the distance of Rukmi Kut should be known.

४७५–महासुक्क-सहस्सारेसु दोसु कप्पेसु विमाणा अट्ठजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

दो कल्पों—महाशुक्र और सहस्रार में विमानों की ऊँचाई आठ सौ योजन कही गई है।

In two kalpas namely Mahashukra and Sahsrar, the height of the celestial vehicles have been said of eight hundred yojanas.

४७६–इमीसे णं रयणप्पभाए [पुढवीए] पढमे कंडे अट्ठसु जोयणसएसु वाणमंतर-भोमेज्जविहारा पण्णत्ता।

इस रत्नप्रभा पृथ्वी के प्रथम कांड के मध्यवर्ती आठ सौ योजनों में वानव्यन्तर (वनों मे वृक्षादि पर रहने वाले व्यन्तर) भौमेयक (इन के विहार, नगर या आवास स्थान भूमिनिर्मित हैं) देवों के विहार कहे गए हैं।

In the central part of first kand of Ratanprabha hell in the area of eight hundred yojanas, the residences of Paripetic Bhomayak gods (the gods who take birth on trees in forests) have been described.

४७७–समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अट्ठसया अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं गइकल्लाणाणं ठिइकल्लाणाणं आगमेसिभद्दाणं उक्कोसिआ अणुत्तरोववाइयसंपया होत्था।

श्रमण भगवान महावीर के कल्याणमय गति-स्थिति वाले तथा भविष्य में मुक्ति प्राप्त करने वाले अनुत्तरौपपातिक मुनि आठ सौ थे। यह भगवान की उत्कृष्ट मुनि सम्पदा थी।

The number of the Anuttropapatik monks of Shraman Bhagwan Mahavir who were capable of salvation and will attain liberation in future were eight hundred. It was sublime monk treasurer of Lord Mahavira.

४७८–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठहिं जोयण-सएहिं सूरिए चारं चरति।

इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुसम रमणीय भूमिभाग से आठ सौ योजन की ऊँचाई पर सूर्य परिभ्रमण करता है।

The sun revolves at the height of eight hundred yojanas from the smooth surface of this Ratanprabha Prithvi.

४७९–अरहओ णं अरिट्ठनेमिस्स अट्ठसयाइं वाईणं सदेवमणुयासुरंमि लोगंमि वाए अपराजिआणं उक्कोसिया वाईसंपया होत्था। ८००।

अरिष्टनेमि अर्हत् के अपराजितवादी आठ सौ थे। ये भगवान की उत्कृष्ट वादि सम्पदा थी। वे वादी देव, मनुष्य और असुरों में से किसी से भी वाद में पराजित होने वाले नहीं थे, अर्थात् अपराजित वादी थे।

The number of the invincible debators of Arihant Arishtnemi were eight hundred. It was the maximum debators wealth of Bhagwan Arishtnemi. They were invincible, they were not to be defeated in debate by any human, god and demons etc.

४८०–आणय-पाणय-आरण-अच्चुएसु कप्पेसु विमाणा नव-नव जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

निसढकूडस्स णं उवरिल्लाओ सिहरतलाओ णिसढस्स वासहरपव्वयस्स समे धरणितले एस णं नव जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। एवं णीलवंतकूडस्स वि।

चार कल्पों —आनत, प्राणत, आरण, और अच्युत में विमानों की संख्या नौ-नौ सौ कही गई है।

निषध कूट के उपरिम शिखर तल से निषध वर्षधर पर्वत का समधरणीतल या समभूमितल नौ सौ योजन अन्तर वाला कहा गया है। इसी प्रकार नीलवन्त कूट का भी अन्तर जानना चाहिए।

In the four kalpas namely Anat, Pranat, Aran and Achyut the number of the celestial vehicles have been said nine hundred each from the surface of the upper summit of Nishadh Kut, the smooth surface of Nishadh Varshdhar Mountain has been said of nine hundred yojana's distance likewise, the distance of Neelvant Kut, too, should be acknowledged.

४८१–विमलवाहणे णं कुलगरे णं नव धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था।

इमीसे णं रयणप्पभाए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ नवहिं जोयणसएहिं सव्वुवरिमे तारारूवे चारं चरइ।

विमलवाहन कुलकर की ऊँचाई नौ सौ धनुष थी।

इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुसमरमणीय भूमिभाग से नौ सौ योजन की सबसे ऊपरी ऊँचाई पर तारा-मण्डल संचरित है।

The height of Vimal Vahan Kulkar was nine hundred bow (Dhanush). From the very smooth and charmed surface of this Ratanprabha hell the stellar system moves at the extreme height of nine hundred yojanas.

४८२–निसढस्स णं वासहरपव्वयस्स उवरिल्लाओ सिहरतलाओ इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए पढमस्स कंडस्स बहुमज्झदेसभाए एस णं नव जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। एवं नीलवंतस्स वि। ९००।

निषध वर्षधर पर्वत के उपरिम शिखरतल से इस रत्नप्रभा पृथ्वी के प्रथम काण्ड के बहुमध्य देश भाग का अन्तर नौ सौ योजन कहा गया है।

इसी प्रकार नीलवन्त पर्वत का भी अन्तर नौ सौ योजन का जानना चाहिए।

From the upper peaks of Nishadh Varshdhar the distance of the very central single part of 1st Kand of this Ratanprabha hell has been said of nine hundred yojanas. In the same way the distance of Neelvant Mountain, should be acknowledged of nine hundred yojanas, too.

४८३–सव्वे वि णं गेवेज्जविमाणे दस-दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ते।

सव्वे वि णं जमगपव्वया दस-दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता। दस-दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता। मूले दस-दस जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ता। एवं चित्तविचित्त-कूडा वि भाणियव्वा।

समस्त ग्रैवेयक विमानों की ऊँचाई दश-दश सौ योजन कही गई है।

समस्त यमक पर्वत भी दश-दश सौ योजन ऊँचे कहे गए हैं। वे पर्वत दश-दश सौ गव्यूति उद्वेध वाले कहे गए हैं। वे मूल में दश-दश सौ योजन आयाम-विष्कम्भ वाले हैं। इसी प्रकार चित्र-विचित्र कूट भी कहना चाहिए।

The height of all the graivayak celestial vehicles has been said of ten hundred yojanas. All the Yamak Mountains, too, have been said ten hundred yojanas high. These all the mountains are rooted deep into the earth equal to ten hundred gavyuti(Indian scale).

At their roots they are of the expansion of ten hundred yojanas each. In the same way the expansion of Chitra Vichi Kut should be stated.

४८४–सव्वे वि णं वट्टवेयड्ढपव्वया दस-दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता। दस-दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं पण्णत्ता। मूले दस-दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं पण्णत्ता। सव्वत्थ समा पल्लगसंठाणसंठिया पण्णत्ता।

समस्त वृत्त वैताढ्य पर्वतों की ऊँचाई दश-दश सौ योजन कही गई है। उन पर्वतों का उद्वेध (गहराई) दश-दश सौ गव्यूति (कोश) है। वे पर्वत मूल में दश-दश सौ योजन विष्कम्भ वाले हैं। उन पर्वतों का आकार ऊपर-नीचे सर्वत्र पल्यंक (ढोल) के सदृश गोल कहा गया है।

The height of all the circular Vaitadhya Mountains have been said equal to ten hundred yojanas each, the depth in the earth of all the mountains is ten hundred koshas (Indian scale) each. The expansion of these mountains at their roots has been said of ten hundred yojanas. The structure of all these mountains from top to bottom entirely has been said round and are similar to a drum.

४८५–सव्वे वि णं हरि-हरिस्सहकूडा वक्खारकूडवज्जा दस-दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता। मूले दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं (पण्णत्ता)। एवं बलकूड वि नंदणकूडवज्जा।

वक्षार कूट को छोड़कर सभी हरिकूट और हरिस्सहकूट की ऊँचाई दश-दश सौ योजन कही गई है। वे कूट मूल में दश सौ योजन विष्कम्भ वाले हैं। इसी प्रकार नन्दन कूट को छोड़कर सभी बलकूट भी दश सौ योजन विस्तार वाले जानना चाहिए।

Barring the Vakshar Kut the height of all the Harikut-Harrisah Kut have been said of ten hundred yojanas each. These Kuts are of expansion of ten hundred yojanas at their roots. In the same way barring the Nandan forest all the other Bal Kuts should be known of the expansion of ten hundred yojanas, too.

४८६–अरहा णं अरिट्ठनेमी दस वाससयाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव सव्वदुक्खप्पहीणे। पासस्स णं अरहओ दस सयाइं जिणाणं होत्था। पासस्स णं अरहओ दस अंतेवासीसयाइं कालगयाइं जाव सव्वदुक्खप्पहीणाइं।

अरिष्टनेमि अर्हत् ने दश सौ वर्ष की समग्र आयु भोगी और वे सिद्ध-बुद्ध हुए। वे अन्ततः कर्म-मुक्त हुए और परिनिर्वाण को प्राप्त हुए। अन्ततोगत्वा वे सर्व दुःखों से रहित हो गए। पार्श्व अर्हत् के दश सौ अन्तेवासी शिष्य कालगत होकर सिद्ध-बुद्ध हुए। वे कर्म-मुक्त होकर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए। अन्ततोगत्वा वे सर्व दुःखों से रहित हो गए।

Arihant Arishtnemi enjoyed a total life of ten hundred years and attained salvation. Ultimately he got liberated from karmas and attained Parinirvana.

Eventually he became devoid of all the miseries and sufferings. After completing their age, the ten hundred very close disciples of Arihant Parshva Nath attained liberation. Annihilating all their karmas they got salvation i.e. Parinirvana. Ultimately they became devoid of all miseries and sufferings.

४८७–पउमद्दह-पुंडरीयद्दहा य दस दस जोयणसयाइं आयामेणं पण्णत्ता। १०००।

पद्मद्रह व पुण्डरीक द्रह दश-दश सौ योजन लम्बे कहे गए हैं।

Padam cave and Pundrik cave each have been said of ten hundred yojanas long.

४८८–अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं विमाणा एक्कारस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पण्णत्ता।

अनुत्तरौपपातिक देवों के विमानों की ऊँचाई ग्यारह सौ योजन कही गई है।

The heights of celestial vehicles of celestial beings of Anuttropapatik have been said equal to eleven hundred yojanas.

४८९–पासस्स णं अरहओ इक्कारस सयाइं वेउव्वियाणं होत्था। ११००।

पार्श्व अर्हत् के संघ में ग्यारह सौ वैक्रियलब्धि से सम्पन्न साधु थे।

In the ascetic order of Arihant Parshva Nath eleven hundred monks were accomplished with Vaikriyalabdhi (transformable body).

४९०–महापउम-महापुंडरीयदहाणं दो-दो जोयणसहस्साइं आयामेणं पण्णत्ता। २०००।

महापद्म और महापुंडरीक द्रह दो-दो हजार योजन लम्बे कहे गए हैं।

Mahapadam Cave and Mahapundrik Cave each have been said of two thousand yojanas long.

४९१–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए वइरकंडस्स उवरिल्लाओ चरमंताओ लोहियक्खकंडस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एस णं तिन्नि जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। ३०००।

इस रत्नप्रभा पृथ्वी के वज्रकांड के ऊपरी चरमान्त भाग से लोहिताक्षकांड का निचला चरमान्त भाग तीन हजार योजन के अन्तर वाला कहा गया है।

The extreme end below of Lohitaksh Kand from the extreme upper part of Vajrakand of this Ratanprabha hell has been said of the distance of three thousand yojanas.

४९२–तिगिंछ-केसरिदहा णं चत्तारि-चत्तारि जोयणसहस्साइं आयामेणं पण्णत्ता। ४०००।

तिगिंछ और केशरी द्रह चार-चार हजार योजन लम्बे कहे गए हैं।

The Tiginchh and Keshari caves each have been said of four thousand yojanas long.

४९३–धरणितले मंदरस्स णं पव्वयस्स बहुमज्झदेसभाए रुयगनाभीओ चउदिसिं पंच-पंच जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे मंदरपव्वए पण्णत्ते। ५०००।

धरणीतल या समभूमिभाग पर मन्दर पर्वत के ठीक मध्य भाग में रुचक नाभि से चारों ही दिशाओं में मन्दर पर्वत पाँच-पाँच हजार योजन के अन्तर वाला है।

The Mandar Mountain at the surface or the (even earth part), in its very middle part, in all the four directions, from Ruchak Nabhi has been said of the distance of five thousand yojanas each.

४९४–सहस्सारे णं कप्पे छविमाणावाससहस्सा पण्णत्ता। ६०००।

सहस्रार कल्प में छह हजार विमानावास कहे गए हैं।

In Sahsrar kalp the number of the celestial vehicles has been said six thousand.

४९५–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए रयणस्स कंडस्स उवरिल्लाओ चरमंताओ पुलगस्स कंडस्स हेट्ठिले चरमंते एस णं सत्त जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। ७०००।

रत्नप्रभा पृथ्वी के रत्नकांड (प्रथमकाण्ड) के ऊपरी चरमान्त भाग से पुलक कांड (सातवाँ काण्ड) का निचला चरमान्त भाग सात हजार योजन के अन्तर वाला कहा गया है।

The extreme end below part of the seventh Kand namely Pulak Kand from the extreme end upper part of 1st Kand namely Ratan Kand of Ratanprabha hell has been said of the distance of seven thousand yojanas.

४९६–हरिवास-रम्मया णं वासा अट्ठ जोयणसहस्साइं साइरेगाइं वित्थरेणं पण्णत्ता। ८०००।

हरिवर्ष और रम्यकवर्ष आठ हजार योजन से कुछ अधिक विस्तार वाले कहे गए हैं।

Harivansh and Ramyak varsh have been said of the expansion of a little more than eight thousand yojanas.

४९७–दाहिणड्ढ भरहस्स णं जीवा पाईण-पडीणायया दुहओ समुद्दं पुट्ठा नव जोयणसहस्साइं आयामेणं पण्णत्ता। ९०००।

[अजियस्स णं अरहओ साइरेगाइं नव ओहिनाणसहस्साइं होत्था।]

पूर्व और पश्चिम में समुद्र को स्पर्श करने वाली दक्षिणार्ध भरतक्षेत्र की जीवा नौ हजार योजन लम्बी कही गई है।

[अजित अर्हत् के संघ में नौ हजार से कुछ अधिक अवधिज्ञानी थे।]

The diameter of South hemisphere of Bharat region from East to West touching to the ocean has been said nine thousand yojans long. In the ascetic congregation of Arihant Ajit Nath a few more than nine thousand clairvoyants were there.

४९८–मंदरे णं पव्वए धरणितले दस जोयणसहस्साइं विक्खंभेणं पण्णत्ते। १००००।

मन्दर पर्वत धरणीतल पर दश हजार योजन विस्तार वाला कहा गया है।

At the surface of the earth Mandar Mountain has been said of the expansion of ten thousand yojanas.

४९९–जम्बुदीवे णं दीवे एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं पण्णत्ते। १०००००।

जम्बूद्वीप के विषय में कहा गया है कि यह एक लाख योजन आयाम-विष्कम्भ वाला है।

In respect of Jambu continent it has been said that its length and width is equal to one lac yojanas.

५००–लवणे णं समुद्दे दो जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते। २०००००।

लवण समुद्र चक्रवाल विष्कम्भ से दो लाख योजन चौड़ा कहा गया है।

According to the circular expansion of Lavan ocean its width has been said equal to two lacs yojanas.

५०१–पासस्स अरहओ णं तिन्नि सयसाहस्सीओ सत्तावीसं च सहस्साइं उक्कोसिया सावियासंपया होत्था। ३२७०००।

पार्श्व अर्हत् के संघ में तीन लाख सत्ताईस हजार श्राविकाएँ थीं। यह पार्श्व प्रभु के संघ में श्राविकाओं की उत्कृष्ट सम्पदा थी।

In the ascetic congregation of Arihant Parshva Nath there were three lacs twenty seven thousand Shravikas. It was the maximum treasure of Shravikas in the ascetics congregation of Arihant Parshva Nath.

५०२–धायइखंडे णं दीवे चत्तारि जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णत्ते। ४०००००।

धातकी खण्ड द्वीप चक्रवाल विष्कम्भ की अपेक्षा चार लाख योजन चौड़ा कहा गया है।

With regard to the circular expansion the continent of Dhatki Khand has been said of four lac yojanas wide.

५०३–लवणस्स णं समुद्दस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरमंताओ पच्चच्छिमिल्ले चरमंते एस णं पंच जोयणसयसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। ५०००००।

लवण समुद्र के पूर्वी चरमान्त भाग से पश्चिमी चरमान्त भाग का अन्तर पाँच लाख योजन कहा गया है।

From the extreme Eastern end of Lavan ocean to the extreme Western end of Lavan ocean the distance has been said equal to five lacs yojanas.

५०४–भरहे णं राया चाउरंतचक्कवट्टी छपुव्वसयसहस्साइं रायमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए। ६०००००।

चातुरन्त चक्रवर्ती राजा भरत छह लाख पूर्व वर्ष राजपद पर आसीन रहे। तत्पश्चात् वे मुंडित हो अगार से अनगारिता में प्रव्रजित हुए।

Chaturant Chakravarti Supreme lord Bharat occupied the throne for a period of six lac poorva years. After that he got his head tonsured, he consecrated as an ascetic from the life of householder.

५०५–जंबूद्दीवस्स णं दीवस्स पुरच्छिमिल्लाओ वेइयंताओ धायइखंडचक्कवालस्स पच्चच्छिमिल्ले चरमंते सत्त जोयणसयसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। ७०००००।

इस जम्बूद्वीप की पूर्व वेदिका के अन्त से धातकी खण्ड के चक्रवाल-विष्कम्भ का पश्चिमी चरमान्त भाग सात लाख योजन के अन्तर वाला कहा गया है।

The extreme western end of circular expansion of Dhatki Khand from the end of East platform of this Jambu continent has been said of the distance of seven lac yojans.

५०६–माहिंदे णं कप्पे अट्ठ विमाणावाससयसहस्साइं पण्णत्ताइं। ८०००००।

माहेन्द्रकल्प में विमानों के आवासों की संख्या आठ लाख कही गई है।

The numbers of the residences of celestial vehicles in Mahender Kalpa have been said eight lacs.

५०७–अजियस्स णं अरहओ साइरेगाइं नव ओहिनाणिसहस्साइं होत्था। ९०००।

अजित अर्हत् के संघ में नौ हजार से कुछ अधिक संख्या में अवधिज्ञानी थे।

In the ascetic congregation of Arihant Ajit Nath, there were a few more than nine thousand clairvoyants.

५०८–पुरिससीहे णं वासुदेवे दस वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता पंचमाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने। १००००००।

पुरुषसिंह वासुदेव ने दश लाख वर्ष की कुल आयु को भोगा। तदुपरान्त वे पाँचवीं नरक पृथ्वी में नारक रूप से उत्पन्न हुए।

Vasudev Purush Singh enjoyed a total life of ten lac years after-that he reincarnated as a hellish being in the fifth hell.

५०९–समणेणं भगवं महावीरे तित्थगरभवग्गहणाओ छट्ठे पोट्टिलभवग्गहणे एगं वासकोडिं सामन्नपरियागं पाउणित्ता सहस्सारे कप्पे सव्वट्ठविमाणे देवत्ताए उववन्ने। १००००००० ।

श्रमण भगवान महावीर ने तीर्थंकर भव ग्रहण किया किन्तु इससे पूर्व छठे पोट्टिल के भव में एक कोटि वर्ष श्रमण-पर्याय पाली। तदुपरान्त वे सहस्रार कल्प के सर्वार्थ विमान में देव रूप से उत्पन्न हुए थे।

Shraman Bhagwan Mahavir obtained the birth of Tirthankara but before this birth he remained in Shraman mode for a period of One crore years in the sixth Bhav of Pottil. After it he reincarnated as a celestial being in the celestial vehicle namely Sarvarth of Sahsarar Kalpa.

५१०–उसभसिरिस्स भगवओ चरिमस्स य महावीरवद्धमाणस्स एगा सागरोवमकोडाकोडी अबाहाए अंतरे पण्णत्ते। १०००००००००००००० सा–।

भगवान श्री ऋषभदेव का और अन्तिम भगवान महावीर वर्धमान का अन्तर एक कोड़कोड़ी सागरोपम कहा गया है। १०००००००००००००० सा० ।

The difference of the period between the 1st Tirthankar Bhagwan Shri Rishabh Dev and the last Tirthankar Lord Mahavira has been said of One Crore into One Crore = 10000000000000 Sagropama.

○○○

शलाकापुरुष एवं कालचक्र

तीर्थंकर ऋषभ - प्रभु महावीर का अंतराल

शलाकापुरुष एवं कालचक्र

उत्सर्पिणी के छह और अवसर्पिणी के छह-ऐसे कुल बारह आरक से एक कालचक्र बनता है। प्रत्येक उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी में 63-63 शलाका पुरुष होते हैं। इनमें 24 तीर्थंकर, 11 चक्रवर्ती, 9 बलदेव, 9 वासुदेव और 9 प्रतिवासुदेव होते हैं।

The six Ara (spokes) of descending time cycle (Avasarpini Kaal) and six Ara (spokes) of Ascending time cycle (Utsarpini Kaal) as such twelve spokes make a full time cycle. In each time cycle i.e. Avasarpini Kaal and Utsarpini Kaal 63 great personalities take birth-24 (Tirthankar) Ford-makers, 12 Supreme lords (Chakravarti), 9 Vasudeva (lords), 9 Baldeva (co-lords), 9 Prati Vasudeva (Anti-lords).

तीर्थंकर ऋषभ - प्रभु महावीर का अंतराल

भगवान ऋषभदेव और भगवान महावीर का अंतर एक कोटा-कोटि सागरोपम का था।

सूत्र सं. 510

The difference of time period between Bhagwan Rishabh Dev and Bhagwan Mahavir Swami was one 'Kotakoti' Sagropama.

[Sutra No. 510]

द्वादशांग गणि-पिटक

Twelve Canons - Gani Pittak

५११–दुवालसंगे गणिपिडगे पण्णत्ते। तं जहा–आयारे सूयगडे ठाणे समवाए विवाहपन्नत्ती णायाधम्मकहाओ उवासगदसाओ अंतगडदसाओ अणुत्तरोववाइयदसाओ पण्हावागरणाइं विवागसुए दिट्ठिवाए।

गणिपिटक (आचार्यों के सर्वस्वरूप श्रुतरत्नों की मंजूषा) द्वादश अंग स्वरूप कहा गया है। यथा —१.आचारांग, २. सूत्रकृतांग, ३. स्थानाङ्ग, ४. समवायाङ्ग, ५. व्याख्याप्रज्ञप्ति, ६. ज्ञाताधर्मकथा, ७. उपासकदशा, ८. अन्तकृद्दशा, ९. अनुत्तरोपपातिकदशा, १०. प्रश्नव्याकरण, ११. विपाक सूत्र, १२. दृष्टिवाद अंग।

The important ascetic treasure (Gani Pittak) (Tresure of the Shrut jewels of perceptors) has been said in the mode of twelve canons as :–1. Acharang, 2. Sutrakritang, 3. Sthanang, 4. Samvayang, 5. Vyakhya Pragyapati, 6. Gyata Dharam Katha, 7. Upasak Dasha, 8. Antkritdasha, 9. Anuttropapaatik Dasha, 10. Prashan Vyakaran, 11. Vipak Sutra, 12. Drishtivad canon.

५१२–से किं तं आयारे? आयारे णं समणाणं णिग्गंथाणं आयार-गोयर-विणय-वेणइयट्ठाण-गमण-चंकमण-पमाण-जोगजुंजण-भासासमिति-गुत्ती-सेज्जो-वहि-भत्त-पाण-उग्गम-उप्पायण-एसणाविसोहि-सुद्धासुद्धग्गहण-वय-णियम-तवोवहाण-सुप्पसत्थमाहिज्जइ।

द्वादशांग का प्रथम अंग आचारांग क्या है? इसमें क्या-क्या वर्णन है?

आचारांग में श्रमण-निर्ग्रन्थों के कर्त्तव्यों का सुप्रशस्त रूप से कथन किया गया है। यथा—श्रमण-निर्ग्रन्थों का आचार, गोचरी, विनय, वैनयिक (विनयफल) स्थान, गमन, चंक्रमण, प्रमाण, योग-योजन, भाषा, समिति, गुप्ति, शय्या, उपधि, भक्त, पान, उद्‌गम, उत्पादन, एषणाविशुद्धि, शुद्धग्रहण, अशुद्ध-ग्रहण, व्रत, नियम व तप-उपधान इन सबका उत्तम प्रकार से वर्णन हुआ है।

What the Acharang (the first canon of twelve canons)? What has been narrated in it ?

The duties, in excellent form, of Shraman (an unbound ascetic) have been narrated in Acharang Sutra as :- the conduct of Shraman Nirgranth, seeking alms, submissiveness, humility and its fruits, journey, wandering, praman, activity, language, awareness, restraint, couch, utensils, food, liquid, origin, production, purity of searching, purity of taking food, impure taking, fast, vows and observing penance. All these have been narrated excellently.

५१३–से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा–णाणायारे दंसणायारे चरित्तायारे तवायारे विरियायारे। आयारस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जा वेढ, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ।

संक्षेप में आचार पाँच प्रकार का कहा गया है। यथा —१. ज्ञानाचार, २. दर्शनाचार, ३. चारित्राचार, ४. तपाचार, ५. वीर्याचार। इस पाँच प्रकार के आचार का प्रतिपादक शास्त्र भी आचार कहा गया है। आचारांग की परीत (परिमित) सूत्रार्थ प्रदान रूप वाचनाएँ, संख्यात उपक्रम आदि अनुयोगद्वार, संख्यात प्रतिपत्तियाँ, संख्यात वेष्टक, संख्यात श्लोक तथा संख्यात निर्युक्तियाँ हैं।

The description of conduct has been done in brief. It has been said of five types they are:—1. Knowledge conduct (Gyanachar), 2. Faith conduct (Darshnachar), 3. Character conduct (Charitrachar), 4. Penance conduct (Tapachar), 5. Potency conduct (Viryachar). The scripture in which all these five types of conducts are expounded are called 'Achar Sutra'. The texts in the limited form of Sutras of Acharang are as :- Sankhyat Upkaran, Sankhyat Anuyogdvar, Sankhyat Pratipalyan, Veshtak, Sankhyat couplets and Sankhyat Niryuktiyan.

५१४–से णं अंगट्ठयाए पढमे अंगे, दो सुयक्खंधा, पणवीसं अज्झयणा, पंचासीइं उद्देसणकाला, पंचासीइं समुद्देसणकाला, अट्ठारस पदसहस्साइं, पदग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, [अणंता गमा] अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता, थावरा सासया कडा निबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति।

से एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणया आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। से त्तं आयारे।।

गणि-पिटक के द्वादशांग में अंग की (स्थापना की) अपेक्षा से आचार प्रथम अंग है। इसमें दो श्रुतस्कन्ध हैं, और पच्चीस अध्ययन हैं। इसमें उद्देशन-काल व समुद्देशन काल पचासी-पचासी हैं। पद-गणना की अपेक्षा से आचारांग में अठारह हजार पद, संख्यात अक्षर और अनन्त गम हैं। प्रत्येक वस्तु अनन्त धर्मा है अर्थात् प्रत्येक वस्तु में अनन्त धर्म (ग्रहण) होते हैं, अतः उनके जानने रूप ज्ञान के द्वार भी अनन्त ही होते हैं। चूँकि वस्तु के धर्म अनन्त हैं, अतः पर्याय भी अनन्त हैं। त्रस जीव परीत यानि परिमित या सीमित हैं। स्थावर जीव अनन्त हैं। द्रव्यार्थिक नय की अपेक्षा से सभी पदार्थ शाश्वत या नित्य तथा पर्यायार्थिक नय की अपेक्षा से पदार्थ कृत या अनित्य हैं, सर्व पदार्थ सूत्रों में निबद्ध यानि ग्रथित हैं और निकाचित हैं अर्थात् निर्युक्ति, संग्रहणी, हेतु, उदाहरण आदि से प्रतिष्ठित हैं। इस आचारांग में जिनेन्द्र देव द्वारा उपदिष्ट भाव सामान्य रूप से कथित हैं, विशिष्ट रूप से प्ररूपित हैं,

हेतु, दृष्टान्त आदि के द्वारा दर्शित हैं, विशिष्ट रूप से निर्दिष्ट और उपनय-निगम के द्वारा उपदर्शित किए जाते हैं।

आचारांग के अध्ययन से आत्मा वस्तु-स्वरूप का तथा आचार-धर्म का ज्ञाता, गुण-पर्यायों का विशिष्ट ज्ञाता व अन्य मतों का भी विज्ञाता होता है। इस प्रकार आचार-गोचरी आदि चरणधर्मों की तथा पिण्डशुद्धि आदि करणधर्मों की प्ररूपणा—इसमें संक्षेप से की जाती है, विस्तार से की जाती है, हेतु-दृष्टान्त से उसे दिखाया जाता है, विशिष्ट रूप से निर्दिष्ट और उपनय-निगमन के द्वारा उपदर्शित किया जाता है।

With regard to the setting of the twelve canons (Gani Pittak) 'the Achar' is first canon. In it there are two Shrut sections and twenty five chapters. There are eighty five Udeshan Kaal in it. With regard to the counting of the couplets - eighteen thousand couplets, Sankhyat alphabet, infinite beginners (gan) are there in it. Each and every object is of infinite properties it means every object has infinite traits. Hence to know all the modes of these traits, there are infinite gates of knowledge. Since the characteristics of the object are infinite, the numbers of the movable living beings are limited. Every substance is eternal and impermanent. With regard to the substance view point all the substance are eternal and from the mode view point-these are transient. Every substance written in Sutras is Nickachit - endowed with Niryukti, Samgrahni, Hetu and example etc. In the Acharang the ideas expounded by Lord Jindeva are said in generic forum, in peculiar form and are illustrated through parrables etc. All are directed in a peculiar form and are displayed through Upnaya and Nigam.

Through the study of Acharanga the SELF gets the special knowledge of the traits and the mode of substance, knows the conduct, theology and gets the knowledge of other belief, too, the description of purity of food (pind shudhi) purity of going for seeking alms - Charan Dharam and Karan Dharma has been done in brief, elaborately, showed through examples and parrables, directed in special form and is displayed through sub view points.

५१५–से किं तं सूयगडे? सूयगडे णं ससमया सूइज्जंति, परसमया सूइज्जंति, ससमयपरसमया सूइज्जंति, जीवा सूइज्जंति, अजीवा सूइज्जंति, जीवाजीवा सूइज्जंति, लोगो सूइज्जति, अलोगो सूइज्जति लोगालोगो सूइज्जति।

द्वादशांग का द्वितीय अंग सूत्रकृत क्या है? इसमें क्या-क्या वर्णन है?

सूत्रकृत के द्वारा स्वसमय सूचित किए जाते हैं, परसमय सूचित किए जाते हैं, स्वसमय और परसमय सूचित किए जाते हैं, जीव सूचित किए जाते हैं, अजीव सूचित किए जाते हैं, जीव और

अजीव सूचित किए जाते हैं, लोक सूचित किया जाता है, अलोक सूचित किया जाता है, लोक और अलोक सूचित किया जाता है।

What the second canon of twelve canons "the Sutrakrit is?" What is narrated in it?

Swasamaya is pointed out, Prasamaya is pointed out, Swasamaya and Prasamaya are communicated through Sutrakrit, the living beings are indicated, the non-living beings are indicated, living beings are non-living beings are pointed out. Cosmos is indicated, trans-cosmos is indicated, cosmos and trans cosmos are pointed out.

५१६–सूयगडे णं जीवाजीव-पुण्ण-पावासव-संवर-निज्जरण-बंध-मोक्खावसाणा पयत्था सूइज्जंति। समणाणं अचिरकालपव्वइयाणं कुसमयमोह-मोहमइ-मोहियाणं संदेहजायसहजबुद्धि परिणामसंसइयाणं पावकर-मलिनमइ-गुण-विसोहणत्थं असीअस्स किरियावाइयसयस्स, चउरासीए अकिरियवाईणं, सत्तट्ठीए अण्णाणियवाईणं, बत्तीसाए वेणइयवाईणं तिण्हं तेवट्ठीणं अण्णदिट्ठिइयसयाणं बूहं किच्चा ससमए ठाविज्जति। णाणादिट्ठंत-वयण-णिस्सारं सुट्ठु दरिसयंता विविहवित्थाराणुगम-परमसब्भावगुणिविसिट्ठा मोहपहोयारगा उदारा अण्णाणतमंधकारदुग्गेसु दीवभूआ सोवाणा चेव सिद्धिसुगइगिहुत्तमस्स णिक्खोभ-निप्पकंपा सुत्तत्था।

सूत्रकृत के द्वारा समस्त नौ पदार्थ सूचित किए जाते हैं। यथा — १. जीव, २. अजीव, ३. पुण्य, ४. पाप, ५. आस्रव, ६. संवर, ७. निर्जरा, ८. बन्ध, ९. मोक्ष। जो श्रमण अल्पकाल से ही प्रव्रजित हैं, जिनकी बुद्धि कुसमयों या सिद्धान्तों (खोटे समयों-सिद्धान्तों) के सुनने से मोहित है, जिनके अन्तरंग (हृदय) तत्त्व के विषय में सन्देह के उत्पन्न होने से आन्दोलित हो रहे हैं और सहज बुद्धि का परिणमन संशय को प्राप्त हो रहा है, उनकी पाप उपार्जन करने वाली मलिन मति के दुर्गुणों के शोधन करने के लिए क्रियावादियों के एक सौ अस्सी, अक्रियावादियों के चौरासी, अज्ञानवादियों के सड़सठ और विनयवादियों के बत्तीस, इन सब तीन सौ तिरेसठ अन्य वादियों का व्यूह अर्थात् निराकरण करके स्व-समय यानि जैन सिद्धान्त स्थापित किया जाता है। नाना प्रकार के दृष्टान्त पूर्ण युक्तियुक्त वचनों के द्वारा परमत के वचनों की भली-भाँति नि:सारता दिखलाते हुए तथा सत्पद-प्ररूपणा आदि अनेक अनुयोग द्वारों के द्वारा जीवादि तत्त्वों को विविध प्रकार से विस्तारानुगम कर परम सद्भाव गुण-विशिष्ट, मोक्ष मार्ग के अवतारक, सम्यग्दर्शनादि में प्राणियों के प्रवर्तक, सकल सूत्र-अर्थ सम्बन्धी दोषों से रहित, समस्त सद्गुणों से सहित, उदार, प्रगाढ़, अन्धकारमयी दुर्गों में दीपक स्वरूप, सिद्धि और सुगति रूपी उत्तम गृह के लिए सोपान के समान, प्रवादियों के विक्षोभ से रहित निष्प्रकम्प सूत्र और अर्थ सूचित किए जाते हैं।

All the nine substances are indicated through Sutrakrit canon as:- 1. Living being, 2. Non-living being, 3. Merit, 4. Demerit, 5. Influx of Karmas, 6. Stoppage

of Karmas, 7. Annihilation of Karmas, 8. Bondage, 9. Liberation. The Shraman who is consecrated shortly, whose intellect is busy in listening Kusamaya i.e., evil doctrines, whose heart is filled with joy due to growing doubts regarding substances into his inner self and whose straight forward intellect is becoming sceptical, to reform the bad qualities of their foul wisdom, which earns sins of one hundred eighty Kriyavadi, eighty four Akriyavadi, sixty seven Agyanvadi, thirty two Vinayavadi. Removing all these three hundred sixty three formations of non-believers has been established "Swa Samaya" i.e. Jain doctrine. Showing insubstantiality of non-believers through the sermons filled with perfect logics and different types of parables. And the conclusions and unwavering aphorism have been indicated through the real presentation of many Anuyoga Dvars depicting the substances such as beings, in an elaborate form i.e. special quality of supreme true disposition, the propounder. The path of liberation, the originator of being of righteous perception etc. All the scriptures devoid of any defect of conclusion etc., devoid of entire virtues, glow like a lamp in dense dark room of a castle, equal to the ladder for liberation and salvation in the form of a sublime abode devoid of the disturbances of non-believers.

५१७–सूयगडस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ।

सूत्रकृतांग की वाचनाएँ परिमित हैं अनुयोग द्वार संख्यात हैं प्रतिपत्तियाँ, वेढ, श्लोक तथा निर्युक्तियाँ संख्यात हैं।

The texts of Sutrakritanga are limited, are countable by Anuyogadvar, Pratipattiyan, Ved, Couplets and Niryuktiyan are countable.

५१८–से णं अंगट्ठयाए दोच्चे अंगे, दो सुयक्खंधा, तेवीसं अज्झयणा, तेत्तीसं उद्देसणकाला, तेत्तीसं समुद्देसणकाला, छत्तीसं पदसहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ताइं। संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करण-परूवणया आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। से तं सुअगडे २।

अंगों की अपेक्षा से यह दूसरा अंग है। इसके दो श्रुतस्कन्ध हैं, तेईस अध्ययन हैं, उद्देशन काल और समुद्देशन काल तेतीस-तेतीस हैं, पदपरिमाण की अपेक्षा से छत्तीस हजार पद हैं, संख्यात अक्षर, अनन्त गम और अनन्त पर्याय हैं। परिमित त्रस व अनन्त स्थावर जीवों का तथा नित्य-अनित्य सूत्र में साक्षात् कथित एवं निर्युक्ति आदि द्वारा सिद्ध जिनेन्द्र भगवान द्वारा प्ररूपित पदार्थों का सामान्य-विशेष रूप से कथन किया गया है, नाम-स्थापना आदि भेद करके प्रज्ञापन किया है, नामादि के स्वरूप का

कथन करके प्ररूपण किया गया है, उपमाओं द्वारा दर्शित किया गया है, हेतु-दृष्टान्त आदि देकर निर्देशित किया गया है तथा उपनय-निगमन द्वारा उपदर्शित किए गए हैं।

इस अंग का अध्ययन करके अध्येता ज्ञाता और विज्ञाता हो जाता है। इस अंग में चरण-करण (मूलगुण-उत्तर गुण) का कथन किया गया है, प्रज्ञापना-प्ररूपणा की गई है। उनका निदर्शन व उपदर्शन कराया गया है। यह सूत्रकृतांग का परिचय है।

In respect of canons this one is the second canon. It has two divisions, twenty three chapters, the *Udeshan* and *Samudeshan kaals* are thirty three each, with regards the number of couplets it has thirty six couplets, countable alphabets, infinite beginnings and infinite modes are there in it. Limited movable beings and infinite immovable beings and there eternal and impermanent sutras are propounded directly and through Niryukati's by liberated Jinendra Bhagwan. The generic and specific mode of substances has been expounded through making difference of name and symbol etc. It has been depicted by narrating, in the mode of naming, showed through similies, directed through parrables and has been displayed through sub-view points and Nigamam.

Through reading this canon the learner becomes the knower. In this canon tha narration of Charan Karmas, the fundamental virtues and proceedings virtues has been done. Wisdom has been described. Its indication and sub perception have been made. It is the introduction of this canon namely Sutrakritang.

५१९–से किं तं ठाणे? ठाणेणं ससमया ठाविज्जंति, परसमया ठाविज्जंति, ससमय-परसमया ठाविज्जंति, जीवा ठाविज्जंति, अजीवा ठाविज्जंति, जीवाजीवा ठाविज्जंति, लोगे ठाविज्जति, अलोगे ठाविज्जति, लोगालोगे ठाविज्जति।

ठाणेणं दव्व-गुण-खेत्त-काल-पज्जव-पयत्थाणं–

सेला सलिला य समुद्दा सूर-भवण-विमाण-आगर-णदीओ।
णिहिओ पुरिसज्जया सरा य गोत्ता य जोइसंचाला।।१।।

–एक्कविहवत्तव्वयं दुविहवत्तव्वयं जाव दसविहवत्तव्वयं जीवाण पोग्गलाण य लोगट्ठाइं च णं परुवणया आघविज्जति।

द्वादशांग का तृतीय अंग स्थानाङ्ग क्या है? उसमें क्या-क्या वर्णन है?

स्थानाङ्ग में जीवादि पदार्थों का प्रतिपादन है। इसके द्वारा स्वसमय स्थापित किए जाते हैं, पर समय स्थापित किए जाते हैं, स्वसमय-परसमय स्थापित किए जाते हैं, जीव स्थापित किए जाते हैं,

अजीव स्थापित किए जाते हैं, जीव-अजीव स्थापित किए जाते हैं, लोक स्थापित किया जाता है, अलोक स्थापित किया जाता है, लोक-अलोक स्थापित किए जाते हैं। स्थानाङ्ग में जीवादि पदार्थ निरूपित हैं। इन पदार्थों का निरूपण द्रव्य, क्षेत्र, काल और पर्याय की अपेक्षा से हुआ है। इस अंग में शैलों यानि पर्वतों का, गंगा प्रभृति महानदियों का, समुद्रों, सूर्यों, भवनों, विमानों, आकरों यानि स्वर्ण आदि की खानों, सामान्य नदियों, चक्रवर्ती की निधियों एवं पुरुषों की अनेक जातियों का, स्वरों के भेदों, गोत्रों और ज्योतिष्क देवों के संचार का वर्णन किया गया है। इस अंग में एक-एक प्रकार के पदार्थों का यावत् दश-दश प्रकार के पदार्थों का कथन किया गया है। उसके अतिरिक्त इस अंग में जीवों का, पुद्गलों का तथा लोक में अवस्थित धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय आदि द्रव्यों का भी प्ररूपण किया गया है।

What the third canon of twelve canons the Sthanang is? What has been narrated in it?

In Sthanang Sutra the description of substances like living beings etc. has been done. Through it the "Swa Samaya" is established, the Pra Samaya is established, the Swa Samaya and Pra-Samaya have been established, the living beings are established, the non living beings are established, the living beings and non-livings are established. The cosmos is established, the trans cosmos is established, the cosmos and trans cosmos are established, the substances such as living beings etc. are expounded in *Sthanang Sutra*. The description of these substances have been made according to matter, sphere, time and mode. In this canon the description of Mountains, great rivers like Ganges, oceans, suns, residences, celestial vehicles, places or mines of gold, common rivers, the wealth of supreme lord (Chakravarti), the different creeds of men, types of musical notes, sub castes and the movement of stellar gods have been done. In this canon the description of the objects which has one to ten types has been done. In addition to it the description of matters like living beings, puddagles and the medium of movement (Dharmastikaya) the medium of rest (Adharmastikaya) those are present in this cosmos has been done.

५२०–ठाणस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ संगहणीओ।

स्थानाङ्ग की परीत यानि सीमित वाचनाएँ हैं, संख्यात अनुयोग द्वार हैं, संख्यात प्रतिपत्तियाँ हैं, वेढ (छन्द विशेष) भी संख्यात हैं, संख्यात श्लोक हैं तथा संख्यात संग्रहणियाँ हैं।

The texts of Sthanang are limited in number, Anuyogdvar are countable, countable Pratipatiyan, the Ved, too, are countable, the couplets are countable, Samgrahniya are Samkhyat.

५२१–से णं अंगट्ठयाए तइए अंगे, एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा, एक्कवीसं उद्देसणकाला, [एक्कवीसं समुद्देसणकाला] वावत्तरिं पयसहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ताइं। संखेज्जा अक्खरा, अणंता [गमा, अणंता] पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति, परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं णाया एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणया आघविज्जंति–। से तं ठाणे ३।

यह स्थानाङ्ग अंग की अपेक्षा तीसरा अंग है। इस तृतीय अंग में एक श्रुतस्कन्ध है, दश अध्ययन हैं, इक्कीस उद्देशन काल हैं,(इक्कीस समुद्देशन काल हैं), पद गणना की अपेक्षा से इस अंग में बहत्तर हजार पद हैं, संख्यात अक्षर हैं, अनन्त गम यानि ज्ञान के प्रकार हैं, अनन्त पर्याय हैं, परीत त्रस हैं, अनन्त स्थावर हैं द्रव्य दृष्टि से समस्त भाव शाश्वत हैं पर्याय की दृष्टि से अनित्य हैं निबद्ध हैं निकाचित हैं, जिन-प्रज्ञप्त हैं, इन सब भावों का इस अंग में कथन किया जाता है, प्रज्ञापन किया जाता है, प्ररूपण किया जाता है, निदर्शन किया जाता है और उपदर्शन किया जाता है। इस अंग का अध्ययन करने वाला ज्ञाता-विज्ञाता हो जाता है। इस प्रकार चरण-करण प्ररूपणा के द्वारा वस्तु के स्वरूप का कथन, प्रज्ञापन-प्ररूपण, निदर्शन व उपदर्शन किया जाता है। यह तृतीय स्थानांग का परिचय है।

Sthanang is the third canon of twelve canons. In this third canon there is only one section, ten chapters, twenty one Udshan Kaal and Samudeshan Kaal each. With regard the number of couplets there are seventy two thousand couplets in it. Countable alphabets are there, infinite beginnings i.e. the types of knowledge, infinite modes, limited movable beings, infinite immovable are there, from the substantial point of view the entire dispositions are eternal and from the mode point of view all the substances are impermanent, transient, nikachit and has been described by Jinas. In this canon all these kinds of dispositions are indicated, expounded, directed and showed. The reader of this canon becomes knower and knowledgeable. In this way the description through Charan-Karana, the narration, indication, depiction, explanation and sub perception of matter have been done. This one is the introduction of third canon Sthananga.

५२२–से किं तं समवाए? समवाए णं ससमया सूइज्जंति, परसमया सूइज्जंति, ससमय-परसमया सूइज्जंति। जीवा सूइज्जंति, अजीवा सूइज्जंति, जीवाजीवा सूइज्जंति, लोगे सूइज्जति, अलोगे सूइज्जति, लोगालोगे सूइज्जति।

द्वादशांग का चतुर्थ अंग समवायाङ्ग क्या है? इसमें क्या-क्या वर्णन है?

समवायाङ्ग में स्वसमय सूचित किए जाते हैं, परसमय सूचित किए जाते हैं, स्वसमय-परसमय सूचित किए जाते हैं। जीव सूचित किए जाते हैं, अजीव सूचित किए जाते हैं, जीव-अजीव सूचित किए जाते हैं, लोक सूचित किया जाता है, अलोक सूचित किया जाता है, लोक-अलोक सूचित किए जाते हैं।

What the fourth canon of twelve canons " the Samvayang is?" What kinds of description has been made in it?

Swa-Samaya is made indicated in Samvayanga, Pra Samaya is indicated, Swa Samaya and Pra Samaya are indicated in it, the living beings are indicated, the non-living beings are indicated, the living beings and non-living beings are indicated in it, the cosmos (Loka) is indicated, the trans cosmos (Aloka) is indicated, the cosmos and trans cosmos are indicated in it.

५२३–समवाएणं एकाइयाणं एगट्ठाणं एगुत्तरियपरिवुड्ढीए दुवालसंगस्स वि गणिपिडगस्स पल्लवग्गे समणुगाइज्जइ, ठाणगसयस्स बारसविहवित्थरस्स सुयणाणस्स जगजीवहियस्स भगवओ समासेणं समोयारे आहिज्जति। तत्थ य णाणाविहप्पगारा जीवाजीवा य वण्णिया, वित्थरेण अवरे वि य बहुविहा विसेसा नरग-तिरिय-मणु-सुरगणाणं आहारुस्सास-लेसा-आवास-संख-आययप्पमाण-उववाय-चवण-उग्गहणोवहि-वेयणविहाण-उपओग-जोग-इंदिय-कसाया विविहा य जीवजोणी विक्खंभुस्सेहपरिरयप्पमाणं विहिविसेसा य मंदरादीणं महीधराणं कुलगर-तित्थगर-गणहराणं सम्मत्त-भरहाहिवाणचक्कीणं चेव चक्कहर-हलहराण य वासाण य निगमा य समाए एए अण्णे य एवमाइ इत्थ वित्थरेणं अत्था समाहिज्जंति।

समवायाङ्ग में एक, दो, तीन आदि एक-एक स्थान की परिवृद्धि करते हुए शत-सहस्र, कोटा-कोटि पर्यन्त पदार्थों का तथा द्वादशांग गणिपिटक के पल्लवाग्रों (पर्यायों के प्रमाण) का कथन किया जाता है, सौ तक के स्थानों का तथा बारह अंगरूप में विस्तार को प्राप्त, जगत् के जीवों के हितकारक भगवान् श्रुतज्ञान का संक्षेप से समवतार किया जाता है। इस समवायाङ्ग में नाना प्रकार के भेद-प्रभेद वाले जीव-अजीव पदार्थों का वर्णन किया जाता है, विस्तारपूर्वक अन्य भी विविध प्रकार के विशेष तत्त्वों का, नरक, तिर्यञ्च, मनुष्य और देव-गणों के आहार, उच्छ्वास, लेश्या-आवास-संख्या, उनके आयाम-विष्कम्भ का प्रमाण, उपपात (जन्म), च्यवन (मरण), अवगाहना, उपधि, वेदना, विधान (भेद), उपयोग, योग, इन्द्रिय, कषाय, विविध प्रकार की जीव-योनियाँ, पर्वत-कूट आदि के विष्कम्भ, उत्सेध (ऊँचाई) परिरय (परिधि) के प्रमाण, मन्दर आदि महीधरों यानि पर्वतों के विविध भेद विशेष, कुलकरों, तीर्थंकरों, गणधरों समस्त भरत क्षेत्र के अधिपति (स्वामी) चक्रवर्तियों का, चक्रधर-वासुदेवों व हलधरों (बलदेवों) का, क्षेत्रों-निगमों का अर्थात् पूर्व-पूर्व क्षेत्रों से उत्तर के यानि आगे के क्षेत्रों के अधिक विस्तार का तथा इसी प्रकार के अन्य भी पदार्थों का इस समवायांग में सविस्तार वर्णन किया गया है।

In Samvayanga, by increasing the Sthanak from one to hundred, thousand and millions in the number of one, two, three etc., the description of the matter and the proved Knowledge of Modes (Pallvagia) of twelve canons (ganpitak) is

done. The description, in brief, of Bhagwan Shrutgyan (knowledge of scriptures) for the benefit of living beings, the sthanak upto one hundred and detailed form twelve canons have been done. In this canon the description of different types and sub types of objects of living beings and non-living beings has been done. Amid the elaborately description of some other kinds of special substances such as hell, animal realm, human beings, celestial beings and their food, breathings, thought colouration, number of residences, the measurement of its expansion, reincarnation as gods and their descending to other realms, specific form, title, feeling of joy and pain, Bhed, use of consciousness, activities of mind, speech and body, senses, passion, different kinds of yonis, the expansion and height of mountains and its peaks, the measurement of circumferences, the special structural description of Mountain Mandar etc., the description of Kulkars, Ford makers, Head of ascetic groups, the entire supreme lords (Chakravarti) of Bharat Kshetra, Lords (Vasudevas) weilding Chakra, Co-lords (Baldevas) weilding plough, the regional corporations i.e. the more expanded advanced regions from its preceeding regions and likewise of others objects have been elaborately done.

५२४–समवायस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ।

समवायाङ्ग की परीत वाचनाएँ हैं, संख्यात अनुयोग द्वार हैं, संख्यात प्रतिपत्तियाँ हैं, संख्यात वेढ हैं, संख्यात श्लोक हैं तथा संख्यात निर्युक्तियाँ हैं।

The texts of the Samvayanga are limited the Anuyogdvars are countable, Pratipattiyan are countable, Ved is countable, Couplets are countable and Niryuktiyas are countable.

५२५–से णं अंगट्ठयाए चउत्थे अंगे, एगे अज्झयणे, एगे सुयक्खंधे, एगे उद्देसणकाले (एगे समुद्देसणकाले)। चउयाले पदसयसहस्से पदग्गेणं पण्णत्ते। संखेज्जाणि अक्खराणि, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा सासया कडा निबद्धा निकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करण परूवणया आघविज्जंति–। से तं समवाए ४।

यह समवायाङ्ग अङ्ग की अपेक्षा चतुर्थ अंग है। इसमें एक अध्ययन है, एक श्रुतस्कन्ध है, एक उद्देशन काल है, [एक समुद्देशन काल है]। पद-गणना की अपेक्षा से इस अंग के एक लाख चवालीस हजार पद कहे गए हैं। इसमें संख्यात अक्षर हैं, अनन्त गम यानि ज्ञान के प्रकार हैं, अनन्त पर्याय हैं, परीत त्रस, अनन्त स्थावर व शाश्वत कृत (अनित्य), निबद्ध-निकाचित, जिनप्रज्ञप्त भाव इस अंग में कहे जाते हैं, प्रज्ञापित किए जाते हैं, प्ररूपित किए जाते हैं, निर्देशित किए जाते हैं और उपदर्शित किए

जाते हैं। इस अंग का अध्येता आत्मा ज्ञाता-विज्ञाता होता है। इस प्रकार चरण-करण की प्ररूपणा के द्वारा वस्तु-स्वरूप का कथन, प्रज्ञापन, प्ररूपण, निदर्शन-उपदर्शन किया जाता है। यह चतुर्थ अंग समवायाङ्ग का परिचय है।

With regard the canons "the Samavayanga' is fourth one. There is only one chapter in it. One Shrut section, one Udeshan Kaal and one Smudeshan Kaal are there in it. With regard to the couplets one lac forty thousand couplets have been said in it. In it there are countable letters, infinite beginnings i.e., the types of knowledge, infinite modes, limited movable beings, infinite immovable objects and eternal, impermanent, bounded, Nikachit expounded by Jin Deva-dispositions are stated, indicated, propounded, instructed and shown in this canon. The reader of the canon becomes knowledgeable and knower of the SELF, thus through the description of Charan-Karan, the narration, indication, depiction, instructions and the presentation of the modes of the matter have been done, this one is the fourth canon.

५२६–से किं तं विवाहे? विवाहेण ससमया विआहिज्जंति, परसमया विआहिज्जंति, ससमय-परसमया विआहिज्जंति, जीवा विआहिज्जंति, अजीवा विआहिज्जंति, जीवाजीवा विआहिज्जंति, लोगे विआहिज्जइ, अलोए विआहिज्जइ, लोगालोगे विआहिज्जइ।

द्वादशाङ्ग का पंचम अंग व्याख्याप्रज्ञप्ति क्या है? इसमें क्या-क्या वर्णन है?

व्याख्याप्रज्ञप्ति में स्वसमय का व्याख्यान किया जाता है, पर-समय का व्याख्यान किया जाता है, स्वसमय-परसमय का व्याख्यान किया जाता है। जीव व्याख्यात किए जाते हैं, अजीव व्याख्यात किए जाते हैं, जीव-अजीव व्याख्यात किए जाते हैं। लोक व्याख्यात किया जाता है, अलोक व्याख्यात किया जाता है, लोक-अलोक व्याख्यात किए जाते हैं।

What the fifth canon of twelve canons "the Vyakhya Pragyapti is?" what kind of description has been made in it?

In Vyakhya Pragyapti the description of Swa Samaya is done, the description of Pra Samaya is done, the description of Swa Samaya-Pra Samaya is done. Living beings are described, non-living beings are described, Living beings and Non-living beings are described in it. Cosmos (Loka) is described, trans cosmos is described, cosmos and trans cosmos are described.

५२७–विवाहे णं नाणाविहसुर-णरिंद-रायरिसि-विविहसंसइअ-पुच्छिआणं जिणेणं वित्थरेण भासियाणं दव्व-गुण-खेत्त-काल-पज्जव-पदेस-परिणाम-जहत्थिभाव-अणुगम-निक्खेव-णयप्पमाण-सुनिउणोवक्कम-विविहप्पकार-पगडपयासियाणं लोगालोगपयासियाणं

संसारसमुद्द-रुंद-उत्तरण-समत्थाणं सुरवइ-संपूजियाणं भवियजण-पय-हिययाभिनंदियाणं तमरयविद्धंसणाणं सुदिट्ठदीवभूय-ईहामति-बुद्धि-वद्धणाणं छत्तीससहस्समणूणयाणं वागरणाणं दंसणाओ सुयत्थबहुविहप्पगारा सीसहियत्था य गुणमहत्त्था।

व्याख्याप्रज्ञप्ति में नाना प्रकार के देवों, नरेन्द्रों, राजर्षियों तथा अनेक प्रकार के संशयशील लोगों के द्वारा पूछे गए प्रश्न और जिनेन्द्रदेव के द्वारा भाषित उत्तर वर्णित हैं। द्रव्य, गुण, क्षेत्र, काल, पर्याय, प्रदेश-परिमाण यथास्थित भाव, अनुगम, निक्षेप, नय, प्रमाण, सुनिपुण-उपक्रमों के विविध प्रकारों के द्वारा प्रकट रूप से प्रकाशित करने वाले, लोकालोक को प्रकाशित करने वाले, विस्तृत संसार-समुद्र से पार उतारने में समर्थ, इन्द्रों द्वारा संपूजित, भव्यजन प्रजा के अथवा भव्य जनपदों के हृदयों को अभिनन्दित करने वाले, तमोरज के विध्वंसक, सुदृष्ट-सुनिर्णीत दीपक स्वरूप, ईहा, मति और बुद्धि के वर्द्धक ऐसे अन्यून यानि सम्पूर्ण छत्तीस हजार व्याकरणों को दिखाने से यह व्याख्या-प्रज्ञप्ति सूत्रार्थ के अनेक प्रकारों का प्रकाशन करने वाला है, शिष्यों का हित करने वाला है, तथा गुणों से महान अर्थ से परिपूर्ण है।

In Vyakhya Pragyapti the answers given by Jin Deva of the question asked by different kinds of gods, chief gods, crown sages (Raj Rishis) and many kinds of doubtful natured men, have been narrated, the Sutra namely Vyakhyapragyapti is to illuminate substance, traits, space, time, mode, space-points measurement, steadfast disposition, Anugam, Nikshep (starting point for searching truth), philosophical view point (Naya), approved knowledge (Praman) through the different kinds of perfect activities. It is to illuminate cosmos and trans-cosmos, capable to make one to cross this vast mundane ocean, worshipped by chief gods, one who pays obeisance to the hearts of subjects–capable of getting salvation, the destroyer of dark dust (tamahraj), similar to a nicely visible and nicely placed lamp, the enhancer of speculatory (Iha), sensory knowledge (Mati) and intelligence. Thus the Vyakhya Pragyapti Sutra is to bring into light more or less than thirty six thousand (Vyakaran) questions and answers on the subjects mentioned above in different forms of Sutras, it is beneficial to the disciples and is great in qualities, and is entirely meaningful.

५२८–वियाहस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ।

व्याख्याप्रज्ञप्ति की परीत वाचनाएँ हैं, संख्यात अनुयोगद्वार हैं, संख्यात प्रतिपत्तियाँ हैं, संख्यात वेढ (छन्द-विशेष) हैं, संख्यात श्लोक हैं व संख्यात निर्युक्तियाँ हैं।

The texts are limited of Vyakhya Pragyapti Sutra, Anuyoga is countable, Pratipattiyan are countable, Veds are countable, couplets are countable and Niryuktiyan are samkhyat.

५२९–से णं अंगट्ठयाए पंचमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, गऐ साइरेगे अज्झयणसते, दस उद्देसग-सहस्साइं, दस समुद्देसगसहस्साइं, छत्तीसं वागरणसहस्साइं चउरासीइं पयसहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ता। संखेज्जाइं अक्खराइं, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासया कडाणिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति, परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। से एवं आया, से एवं णाया, एवं विण्णाया एवं चरण-करणपरूवणया आघविज्जति। से तं विवाहे ५।

यह व्याख्याप्रज्ञप्ति अंगरूप से पंचम अंग है। इस अंग में एक श्रुतस्कन्ध है, शताधिक अध्ययन हैं, दश हजार उद्देशक हैं, दश हजार समुद्देशक हैं, छत्तीस हजार प्रश्नों के उत्तर हैं। पद-गणना की अपेक्षा से चौरासी हजार पद हैं, संख्यात अक्षर हैं, अनन्त गम यानि ज्ञान के प्रकार हैं, अनन्त पर्याय हैं, परीत त्रस हैं, अनन्त स्थावर हैं, ये समस्त शाश्वत, कृत, निबद्ध, निकाचित, जिन-प्रज्ञप्त-भाव इस अंग में कथित हैं, प्रज्ञापित हैं, प्ररूपित हैं, निदर्शित-उपदर्शित हैं। इस अंग का अध्येता आत्मा ज्ञाता-विज्ञाता होता है। इस प्रकार चरण-करण की प्ररूपणा के द्वारा वस्तु के स्वरूप का कथन, प्रज्ञापन, प्ररूपण, निदर्शन तथा उपदर्शन किया जाता है। यह पंचम अंग व्याख्या-प्रज्ञप्ति का परिचय है।

In the form of canons Vyakhya Pragyapti is fifth canon. There is one Shrut section in it, more than ten chapters are there, Udeshan and Samudeshan are ten thousand each. Answers are of thirty six thousand questions. With regard to the couplets eighty four thousand couplets are there, alphabets are samkhyat, infinite beginnings i.e., types of knowledge, infinite modes, movable beings are limited, immovables beings are infinite. All these eternal, composed, Nikachit, Jina's propounded dispositions have been narrated, indicated, described, instructed, displayed and shown in this canon. The reader of this canon becomes the knower and perceptor of the SELF. In this way through the description of Charan-Karana the explanation, indication, narration, sub perception and vision of the matter is done. This Vyakhya Pragyapti is the fifth canon.

५३०–से किं तं णायाधम्मकहाओ? णायाधम्मकहासु णं णायाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइआइं वणखंडा रायाणो ५, अम्मा-पियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइय-परलोइअइड्ढीविसेसा १०, भोयपरिच्चाया पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं परियागा १५, संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायायाइं २०, पुणबोहिलाभा अंतकिरियाओ २२ य आघविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति।

द्वादशांग का छठा अंग ज्ञाताधर्मकथा क्या है? इसमें क्या-क्या वर्णन है?

ज्ञाताधर्मकथा में ज्ञात (उदाहरण रूप) मेघकुमार प्रभृति पुरुषों के १. नगर, २.उद्यान, ३. चैत्य, ४. वनखण्ड, ५. राजा, ६. माता-पिता, ७. समवसरण, ८. धर्माचार्य, ९. धर्मकथा, १०. इहलौकिक-पारलौकिक ऋद्धि-विशेष, ११. भोग-परित्याग, १२. प्रव्रज्या, १३. श्रुत परिग्रह, १४. तप उपधान, १५. दीक्षा पर्याय, १६. संलेखना, १७. भक्त प्रत्याख्यान, १८. पादपोपगमन, १९. देवलोक-गमन, २०. सुकुल में पुनर्जन्म, २१. पुनः बोधिलाभ, २२. अन्त क्रियाएँ कही गई हैं। इनकी प्ररूपणा की गई है। दर्शन, निदर्शन और उपदर्शन किया गया है।

What the sixth canon of twelve canons "Gyata Dharam Katha" is? What is described in it?

In Gyata Dharam Katha, about the well known persons begin with Megh Kumar has been stated, expounded, shown, instructed and displayed such as :- 1. Cities, 2. Garden, 3. Chaitya, 4. Forests, 5. Kings, 6. Mother-Father, 7. Religious Assembly, 8. Religious dialogue, 9. Religious discourse, 10. Extra ordinary wealth of this world and of metaphysical world, 11. Renunciation of enjoyments, 12. Conservation, 13. Shrut possessiveness, 14. Adopting the penance, 15. Ascetic mode, 16. Samlekhana, 17. Restraint of food, 18. Padopagaman (to lay down in immovable state), 19. Voyage to Devloka, 20. Re-incarnation in religious family, 21. Regain of cognition, 22. Final activities.

५३१-नायाधम्मकहासु णं पव्वइयाणं विणय-करण-जिणसामिसासणवरे संजम-पइण्णपालणधिइ-मइ-ववसायदुब्बलाणं १, तवनियम-तवोवहाण-रण-दुद्धर-भर-भग्गाणिसहय-णिसिट्ठाणं २, घोर-परीसह-पराजियाणंऽसहपारद्ध-रुद्धसिद्धालय-महग्गा-निग्गयाणं ३, विसयसुह-तुच्छ-आसावम-दोसमुच्छियाणं ४, विराहिय-चरित्त-नाण-दंसण-अइगुण-विविहप्पयार-निस्सारसुन्नयाणं ५, संसार-अपार-दुक्खदुग्गइ-भवविविह-परंपरापवंचा ६, धीराण य जियपरिसह-कसाय-सेण्ण-धिइ-धणिय-संजम-उच्छाह-निच्छियाणं, आराहियनाण-दंसण-चरित्तजोग-निस्सल्ल-सुद्धसिद्धालय-मग्गमभिमुहाणं सुरभवण-विमाणसुक्खाइं अणोवमाइं भुत्तूण चिरं च भोगभोगाणि ताणि दिव्वाणि महरिहाणि। ततो य कालक्कमचुयाण जह य पुणो लद्धसिद्धिमग्गाणं अंतकिरिया। चलियाण य सदेव-माणुस्सधीर-करण-कारणाणि बोधण-अणुसासणाणि गुण-दोस दरिसणाणि। दिट्ठंते पच्चये य सोऊण लोगमुणिणो जह य ठियासासणम्मि जर-मरण-नासणकरे आराहिअसंजमा य सुरलोगपडिनियत्ता ओवेन्ति जह सासयं सिवं सव्वदुक्खमोक्खं, एए अण्णे य एवमाइअत्था वित्थरेण य।

ज्ञाताधर्मकथा में प्रव्रजित पुरुषों के विनय-करण-प्रधान, प्रवर जिन-भगवान के शासन की संयम-प्रतिज्ञा के पालन करने में जिनकी धृति, मति और व्यवसाय यानि पुरुषार्थ दुर्बल हैं, तपश्चरण का नियम

और तप का परिपालन करने रूप रण (युद्ध) के दुर्धर भार को वहन करने से भग्न हैं-पराङ्मुख हो गए हैं, अतः अत्यन्त अशक्त होकर संयम-पालन करने का संकल्प छोड़ दिया है, घोर परीषहों से पराजित हो गए हैं, अतः संयम के साथ प्रारम्भ किए गए मोक्ष-मार्ग के अवरुद्ध हो जाने से जो सिद्धालय के कारणभूत महामूल्य ज्ञानादि से पतित हैं, जो इन्द्रियों के तुच्छ विषय-सुखों की आशा के वश होकर रागादि दोषों से मूर्च्छित हो रहे हैं, चारित्र-ज्ञान-दर्शन स्वरूप यति-गुणों से और उनके विविध प्रकारों के अभाव से जो सर्वथा निःसार और शून्य हैं, जो अपार सांसारिक दुःखों की तथा नरक-तिर्यञ्चादि नाना दुर्गतियों की भव-परम्परा के प्रपंच में पड़े हैं, ऐसे पतित पुरुषों की कथाएँ हैं। तथा जो धीर-वीर हैं, परीषहों और काषायिक सेना के विजेता हैं, धैर्य के धनी हैं, संयम में उत्साही और बल-वीर्य के प्रकटीकरण में दृढ़ निश्चयी हैं, ज्ञान-दर्शन-चारित्र तथा समाधि-योग के आराधक हैं मिथ्यादर्शन-माया-निदानादि शल्यों से रहित होकर शुद्ध-निर्दोष सिद्धालय के मार्ग की ओर अभिमुख हैं, ऐसे महापुरुषों भी कथाएँ इस अंग में कथित हैं। तथा जो संयम का परिपालन कर देवेलोक में उत्पन्न हो देव-भवनों व देव-विमानों के अनुपम सुखों को और दिव्य बहुमूल्य, उत्तम भोग-उपभोगों को चिर-काल तक भोग कर कालक्रम के अनुसार वहाँ से च्युत हो पुनः यथा योग्य मुक्ति के मार्ग को प्राप्त कर अन्तक्रिया से समाधिमरण के समय कर्म-वश विचलित हो गए हैं, उनको देवों और मनुष्यों के द्वारा धैर्य धारण कराने में कारण भूत, संबोधनों व अनुशासनों को, संयम के गुण और संयम से पतित होने के दोष-दर्शक दृष्टान्तों को तथा प्रत्ययों को अर्थात् बोधि के कारणभूत वाक्यों को सुनकर शुक परिव्राजक आदि लौकिक मुनिजन भी जन्म-मरण का नाश करने वाले जिन शासन में जिस प्रकार से स्थित हुए, उन्होंने जिस प्रकार से संयम भी आराधना की, पुनः देवलोक में उत्पन्न हुए, वहाँ से आकर मनुष्य हो जिस प्रकार शाश्वत सुख को और सर्व दुःख-विमोक्ष को प्राप्त किया, उनकी तथा इसी प्रकार के अन्य अनेक महापुरुषों की कथाएँ इस अंग में विस्तार पूर्वक कही गई हैं।

In Gyata Dharam Kathanga, the stories pertaining to submissive activities of consecrated people whose efforts and endeavour, sensory knowledge, courage are weak in observing the restraint vows of the Jin-Bhagwan's rule, are devoid of bearing the unbearable weight of the battles in the form of penance to be observed, who have become extrovert, hence who have left the resolution of keeping the vows up after becoming strengthless, have been defeated by frightful afflictions. They, therefore, have been lapsed from the great knowledge which is the means of attaining Sidhalaya, due to the blocking of the liberation path, started with the restoration, who are becoming faint from the vices of attachment, becoming subject in the hope of pleasure of abject pro-vice of senses, those are always zero and worthless from the attributions of conduct, knowledge and perception mode and lack of its various types, who are in the worldly affairs and entangle in birth and death cycle of various sufferings of the hell, Triyanch and mundane yonis miseries. Who are brave, who are the

conqueror of afflictions and passion's army, enriched of courage, energetic in restraint, who are determinded in menifestation of potency, who are the worshipper of knowledge, perception, conduct and activity of perfect meditation, devoid of wrong perception, deceit and Nidan stings, who are turned towards the pure and faultless path of liberation. The stories related to these great people have been narrated in this canon. And who through observing restraint, having reincarnated as the celestial beings and having enjoyed for a long period, the divine, invaluable, sublime enjoyments and repeated enjoyments and enjoyed the miraculous pleasures of the residences and celestial vehicles and descending from these celestial vehicles have deviated from the achieved path of liberation due to the effect of past Kamas at last time, of peaceful death, through Antkriya (last activity). The stories of so many great persons have been told elaborately in this canon like those who have been inspired, to hold courage, by the gods and human beings and the causes to understand and disciplines, the parrable showing attributes of restraint and defect of fallacy from restraint and the ascetic like Shukra, the worldly monks, too, after listening the discourses about the causes of the cognition, made themselves steadfast in the rule of Jin Bhagwan who is the destroyer of the cycle of birth and death, accordingly they performed the practice of restraint, reincarnated as the celestial beings, descending from there they took birth as a human being and attained the ultimate goal of life, the eternal happiness and they annihilated their entire miseries.

५३२–णायाधम्मकहासु णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ।

ज्ञाताधर्मकथा में परीत वाचनाएँ हैं, संख्यात अनुयोग द्वार हैं, संख्यात प्रतिपत्तियाँ हैं, संख्यात वेढ हैं, संख्यात श्लोक हैं, संख्यात निर्युक्तियाँ हैं और संख्यात संग्रहणियाँ हैं।

There are limited texts in Gyata Dharam Kathanga, Anuyog dvar are countable, Pratipattiyan are countable, Veds are samkhyata, couplets are countable, Niryuktiya and Samgrahniyan, too, are countable.

५३३–से णं अंगट्ठयाए छट्ठे अंगे, दो सुअक्खंधा, एगूणवीसं अज्झयणा। ते समासओ दुविहा पण्णत्ता। तं जहा–चरिता य कप्पिया य। दस धम्मकहाणं वग्गा। तत्थ णं एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अक्खाइयासयाइं, एगमेगाए अक्खाइयाए पंच पंच उवक्खाइयासयाइं, एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइय-उवक्खाइयासयाइं, एवमेव सपुव्वावरेणं अद्धुट्ठाओ अक्खाइयाकोडीओ भवंतीति मक्खायाओ।

यह ज्ञाताधर्मकथा अङ्गरूप से छठा अंग है। इसमें दो श्रुतस्कन्ध हैं, उनमें से प्रथम श्रुत-स्कन्ध के उन्नीस अध्ययन हैं। वे संक्षेप में दो प्रकार से कहे गए हैं, यथा — १- चरित, २- कल्पित। इसके प्रारम्भिक दस अध्ययनों में आख्यायिका आदि रूप अवान्तर भेद नहीं हैं। शेष नौ अध्ययनों में से प्रत्येक में पाँच सौ चालीस आख्यायिकाएँ कही गई हैं। प्रत्येक आख्यायिका में पाँच सौ उपाख्यायिकाएँ और प्रत्येक उपाख्यायिका में पाँच सौ आख्यायिका-उपाख्यायिकाएँ हैं।

धर्म कथाओं के दश वर्ग हैं। उनमें से एक-एक धर्म कथा में पाँच-पाँच सौ आख्यायिकाएँ हैं, एक-एक आख्यायिका में पाँच-पाँच सौ उपाख्यायिकाएँ हैं, एक-एक उपाख्यायिका में पाँच-पाँच सौ आख्यायिका-उपाख्यायिकाएँ हैं। इस प्रकार ये समस्त पूर्वापर से गुणित होकर बारह करोड़ पचास लाख होती हैं।

In the form of canons, Gyata Dharam Kathanga is sixth one. There are two sections in it in which the first section has nineteen chapters, these have been said of two types as follows :-1. Charit, 2. Kalpit. In the first ten chapters there is no further division of Akhyayikai etc. and in the remaining nine chapters five hundred forty Akhyayikais and Uppakhyayikais are in it.

There are ten classes of Dharam Kathas each. Out of which in every Dharam Katha there are five hundred Akhyayikais. In every Akhyayikai there are five hundred Uppakhyayikai, and in each Uppakhyayikai there are five hundred Akhyayikai and Uppakhyayikais. Thus, all these become twelve crore fifty lacs multiplicating each other from its beginning.

५३४-एगूणतीसं उद्देसणकाला, एगूणतीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ता। संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासया कडा निबद्धा निकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। से एवं आया, से एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणया आघविज्जंति.। से तं णायाधम्मकहाओ ६।

ज्ञाताधर्मकथा में उनतीस उद्देशन काल हैं, उनतीस समुद्देशन-काल हैं, पद-गणना की अपेक्षा से संख्यात हजार पद हैं, संख्यात अक्षर हैं, अनन्त गम हैं, परीत त्रस हैं, अनन्त स्थावर हैं। ये समस्त शाश्वत, कृत, निबद्ध, निकाचित, जिन-प्रज्ञप्त भाव इस ज्ञाताधर्मकथा में कथित हैं, प्रज्ञपित हैं, निदर्शित-उपदर्शित हैं। इस अंग का अध्येता आत्मा ज्ञाता-विज्ञाता होता है। इस प्रकार चरण-करण की प्ररूपणा के द्वारा वस्तु के स्वरूप का कथन, प्रज्ञापन, प्ररूपण, निदर्शन-उपदर्शन किया गया है। यह छठे अंग ज्ञाता धर्मकथा का परिचय है।

Udeshan Kaals are twenty nine in Gyata Dharam Katha, twenty nine are

the Samudeshan Kaals, with regard the number of couplets, the couplets are countable, alphabets are countable, beginnings are infinite, movable beings are limited, immovable beings are infinite. All these eternal, Krit, Nibadh, Nikachit disposition of Lord Jina have been stated, expounded, instructed and displayed in Gyata Dharam Kathanga. The reader of this canon becomes the knower and realiser of the SELF. In this way through the propoundation of Charan-Karana the mode of the objects has been said, expounded, propounded, instructed and shown. This one is the sixth canon.

५३५–से किं तं उवासगदसाओ? उवासगदसासु उवासयाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइआइं वणखंडा रायाणो अम्मा-पियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइय-परलोइय-इड्ढिविसेसा, उवासयाणं सीलव्वय-वेरमण-गुण-पच्चक्खाण-पोसहोववासपडिवज्जणयाओ सुपरिग्गहा तवोवहाणा पडिमाओ उवसग्गा संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाई पुणो बोहिलाभा अंतकिरियाओ आघविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति।

द्वादशांग का सप्तम अंग उपासकदशा क्या है? इसमें क्या-क्या वर्णन है?

उपासकदशा में उपासकों से सन्दर्भित कथन किया गया है। इसमें दस उपासकों के १. नगर, २. उद्यान, ३. चैत्य, ४. वनखण्ड, ५. राजा, ६. माता-पिता, ७. समवसरण, ८. धर्माचार्य, ९. धर्मकथाएँ, १०. इहलौकिक-पारलौकिक ऋद्धि-विशेष, ११. शीलव्रत, पाप-विरमण, गुण प्रत्याख्यान, पौषधोपवास-प्रतिपत्ति, १२. श्रुत-परिग्रह, १३. तप-उपधान, १४. ग्यारह प्रतिमा, १५. उपसर्ग, १६. संलेखना, १७. भक्त प्रत्याख्यान, १८. पादपोपगमन, १९. देवलोक गमन, २०. सुकुल-प्रत्यागमन, २१. पुनः बोधिलाभ, २२. अन्तक्रिया का कथन, प्ररूपण, दर्शन, निदर्शन और उपदर्शन किया गया है।

What the seventh canon of twelve canons "the Upasak Dshanga" is? What has been described in it?

The description , explanation, illustration and instructions in reference to the Upasakas (householders) have been done in Upasak Dshanga. These are as follows :- 1. The cities of the householders, 2. The gardens of laity, 3. Chaitya of laity, 4. Forests of worshippers, 5. Kings of worshippers, 6. Parents of the householders, 7. Religious assemblies of householders, 8. The perceptions of the laity, 9. Religious stories of householders, 10. The extraordinary wealth of this world and metaphysical world of householders, 11. The observation of celibacy, restraint, attributes to relinquish the sinful activities and observation of Paushadhavart, 12. Possessions of householders, 13. Penance activities of householders, 14. The eleven special vows (pratima) of the householders,

15. Afflictions of laity, 16. Samlekhana of householders, 17. Restraint of food of householders, 18. Padopagaman of householders, 19. Going to Devlokas, 20. Rebirth into the noble families, 21. Again enlightened, 22. The final activities of the householders (Antkrit).

५३६–उवासगदसासु णं उवासयाणं रिद्धिविसेमा परिसा वित्थरधम्मसवणाणि बोहिलाभ-अभिगम-सम्मत्तविसुद्धया थिरत्तं मूलगुण-उत्तरगुणाइयारा ठिईविसेसा पडिमाभिग्गहग्गहणपालणा उवसग्गाहियासणा णिरुवसग्गा य तवा य विचित्ता सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासा अपच्छिममारणंतिया य संलेहणा-झोसणाहिं अप्पाणं जह य भावइत्ता बहूणि भत्ताणि अणसणाए य छेअइत्ता उववण्णा कप्पवरविमाणुत्तमेसु जह अणुभवंति सुरवर-विमाणवर-पोंडरीएसु सोक्खाइं अणोवमाइं कमेण भुत्तूण उत्तमाइं तओ आउक्खएणं चुया समाणा जहा जिणमयम्मि बोहिं लद्धुण य संजमुत्तमं तमरयोघविप्पमुक्का उवैति जह अक्खयं सव्वदुक्खमोक्खं। एते अन्ने य एवमाइअत्था वित्थरेण य।

उपासकदशांग में उपासकों यानि श्रावकों की ऋद्धि-विशेष, परिषद् यानि परिवार, विस्तृत धर्म-श्रवण, बोधि लाभ, धर्माचार्य के समीप अभिगमन, सम्यक्त्व की विशुद्धता, व्रत की स्थिरता, मूलगुण व उत्तरगुणों का धारण, उनके अतिचार, स्थिति-विशेष, प्रतिमाओं का ग्रहण, उनका पालन, उपसर्गों का सहन या निरुपसर्ग-परिपालन, अनेक प्रकार के तप, शील, व्रत, गुण, वेरमण, प्रत्याख्यान, पौषधोपवास, और अपश्चिम मारणान्तिक संलेखना जोषमणा यानि सेवना से आत्मा को यथाविधि भावित कर बहुत-से भक्तों को अनशन तप से छेदन कर, उत्तम श्रेष्ठ देव-विमानों में उत्पन्न होकर, जिस प्रकार वे उन उत्तम विमानों में अनुपम उत्तम सुखों का अनुभव करते हैं, उन्हें भोगकर फिर आयु का क्षय होने पर च्युत होकर यानि मनुष्य योनि में उत्पन्न होकर और जिनमत में बोधि को प्राप्त कर तथा उत्तम संयम धारण कर तमोरज के समूह से विप्रमुक्त होकर जिस प्रकार अक्षय शिव-सुख को प्राप्त हो सर्व दुःखों से रहित होते हैं, ये समस्त और इसी प्रकार के अन्य भी अर्थ, इस उपासक-दशांग में सविस्तार वर्णित हैं।

In Upasak Dashang householder's extraordinary wealth and powers, family, achievement of cognition through listening, going nearer to perceptors, the purity of righteousness, steadfastness in vows, acceptance of fundamental virtues and post virtues, exclusive status, observation of special vows (Pratima), tolerance of afflictions, many type of penances, celibacy, virtues, renunciation, restraint, Paushdhopvas and making ones soul capable of salvation as mentioned above and in the end through observing Samlekhna unto death, abandoning various kinds of foods through fastings, reincarnating into the supreme and excellent celestial vehicles enjoying extraordinary great happiness in these

vehicles, having enjoyed and completing the life span as a celestial beings they descending into realm of human beings, obtaining cognition into the fold of Jina, holding a restraint life, liberating from the heap of dark dust having obtained indestructive beautitutic bliss become devoid of all their miseries, these entire and such like conclusions have been narrated elaborately in Upasak Dasha canon.

५३७–उवासगदसासु णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ।

उपासकदशांग में परित वाचनाएँ हैं, संख्यात अनुयोगद्वार हैं, संख्यात प्रतिपत्तियाँ हैं, संख्यात वेढ हैं, संख्यात श्लोक हैं, संख्यात निर्युक्तियाँ हैं और संख्यात संग्रहणियाँ हैं।

The texts are limited in Upasak Dasha. Anuyogdvars are countable, Pratipattiyan are countable, Veds are countable, couplets are countable, Samkhyat are Niryuktiyan and Samkhyat are Samgrahniya.

५३८–से णं अंगट्ठयाए सत्तमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ताइं। संखेज्जाइं अक्खराइं, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। से एवं आया से एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करण परूवणया आघविज्जंति०। से त्तं उवासगदसाओ ७।

यह उपासकदशा अंग की अपेक्षा सप्तम अंग है। इस अंग में एक श्रुतस्कन्ध है, दश अध्ययन हैं, दश-दश उद्देशन-काल और समुद्देशन-काल हैं। पद-गणना की अपेक्षा से संख्यात लाख पद हैं, संख्यात अक्षर हैं, अनन्त गम हैं, अनन्त पर्याय हैं, परीत त्रस हैं, अनन्त स्थावर हैं, यह सब शाश्वत, अशाश्वत निबद्ध निकाचित जिनप्रज्ञप्त भाव इस अंग में कहे गए हैं, प्रज्ञापित किए गए हैं, प्ररूपित किए गए हैं, निदर्शित उपदर्शित किए गए हैं। इस अंग से आत्मा ज्ञाता-विज्ञाता होता है। इस प्रकार चरण-करण की प्ररूपणा के द्वारा वस्तु के स्वरूप का कथन, प्रज्ञापन, प्ररूपण, निदर्शन-उपदर्शन किया जाता है। यह सप्तम अंग उपासकदशा का विवरण है।

With regards to the canons, Upasak Dasha is seventh canon. There is one section in this canon. There are ten chapters in it. It has ten Udeshan and ten Samudeshan Kaal. With regard to the couplets counting it has lac Samkhyat couplets, Countable alphabets, Beginnings are infinite, modes are infinite, movable beings are limited, Immovable beings are infinite, all these eternal, impermanent, unfounded, Nikachit Jina Bhagwan uttered dispositions have been said, propounded, expounded, instructed and shown in this canon. Thus through the narration of Charan and Karana the mode of the object has been

said, propounded, expounded, instructed and shown in this canon. This one is the seventh canon.

५३९–से किं तं अंतगडदसाओ? अंतगडदसासु णं अंतगडाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणाइं (वणखण्डा) राया अम्मा-पियरो समोसरणा धम्मायरिया धम्मकहा इहलोइअपरलोइअ-इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं पडिमाओ बहुविहाओ खमा अज्जवं मद्दवं च सोअं च सच्चसहियं सत्तरसविहो य संजमो उत्तमं च बंभं आकिंचणया तवो चियाओ समिइगुत्तीओ चेव। तह अप्पमायजोगो सज्झायज्झाणाण य उत्तमाणं दोण्हं पि लक्खणाइं। पत्ताण य संजमुत्तमं जियपरीसहाणं चउव्विहकम्मक्खयम्मि जह केवलस्स लंभो परियाओ जत्तिओ य जह पालिओ मुणिहिं पायोवगयो य, जो जहिं जत्तियाणि भत्ताणि छेअइत्ता अंतगडो मुनिवरो तमरयोघ विप्पमुक्को मोक्खसुहमणुत्तरं पत्ता। एए अन्ने य एवमाइअत्था वित्थरेणं परूवेई।

द्वादशांग का अष्टम अंग अन्तकृद्दशा क्या है? इसमें क्या-क्या वर्णन है?

अन्तकृद्दशा में कर्मों का अन्त करने वाले महापुरुषों का वर्णन किया गया है। उन महापुरुषों के १. नगर, २. उद्यान, ३. चैत्य, ४. वन खण्ड, ५. राजा, ६. माता-पिता, ७. समवसरण, ८. धर्माचार्य, ९. धर्मकथा, १०. इहलौकिक-पारलौकिक ऋद्धि-विशेष, भोग परित्याग, ११. प्रव्रज्या, १२. श्रुत-परिग्रह, १३. तप-उपधान, १४. अनेक प्रकार की प्रतिमाएँ, १५. क्षमा, १६. आर्जव, १७. मार्दव, १८. सत्य, १९. शौच, २०. सत्तरह प्रकार का संयम, २१. उत्तम ब्रह्मचर्य, २२. आकिंचन्य, २३. तप, २४. त्याग, २५. समितियों, २६. गुप्तियों आदि का वर्णन है। अप्रमाद-योग तथा स्वाध्याय-ध्यान योग, इन दोनों उत्तम मुक्ति-साधनों का स्वरूप, उत्तम संयम को प्राप्त करके परीषहों को सहन करने वालों को चार-प्रकार के घातिकर्मों के क्षय होने पर जिस प्रकार केवलज्ञान का लाभ हुआ, जितने काल तक श्रमण पर्याय और केवलि-पर्याय का पालन किया, जिन मुनियों ने जहाँ पादपोपगम-संन्यास किया, जो जहाँ जितने भक्तों का छेदन कर अन्तकृत् मुनिवर अज्ञानान्धकार रूप रज के पुंज से विप्रमुक्त हो अनुत्तर मोक्ष-सुख को प्राप्त हुए, उनका और इसी प्रकार के अन्य अनेक अर्थों का इस अंग में सविस्तार प्ररूपण किया गया है।

— What the eighth canon of twelve canons "Antkrit Dasha" is? What is narrated in it?

In Antkrit Dasha the description of the great persons destroyer of all their accumulated Karmas has been done as :- 1. The cities of Karma destroyer (great persons), 2. Gardens, 3. Chaitya, 4. Forests, 5. Kings, 6. Parents (Mother & Father), 7. Religious assembly, 8. Preceptors, 9. Religious discourse, 10. Extra-ordinary wealth and powers pertaining to this world and metaphysical world,

renunciation of enjoyments, 11. Initiation, 12. Shrut possessions, 13. Observance of penance, 14. Various types of special vows (Pratimas), 15. Foregiveness, 16. Straight forwardness, 17. Simplicity, 18. Truth, 19. Purity, 20. Seventeen types of restraint, 21. Supreme celibacy, 22. Akinchanya, 23. Penance, 24. Renunciation, 25. Samities (awareness), 26. Restrain of mind, body and speech (Guptiya) etc. Lazylessness (Apramat) – activities (yoga) and activities (yoga) of self study (swadhyaya) – meditation, the mode of two supreme source of liberation, having accepted the supreme restraint tolerance of afflictions, having destroyed the four types of destructive karmas one has gained the Kewal Gyan (Omniscience), observing this ascetic life and Kewali mode, they took vows of Padopagaman (vow unto death), these monks attained the bliss of Anuttra Moksha after relinquishing the various foods and liberating from the collection of the dust in the form of darkness of ignorant. These and such other kinds of conclusions have been expounded in this canon.

५४०–अंतगडदसासु णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ।

अंतकृत् दशा में परीत वाचनाएँ हैं, संख्यात अनुयोग द्वार हैं, संख्यात प्रतिपत्तियाँ हैं, संख्यात वेढ और श्लोक हैं, संख्यात निर्युक्तियाँ हैं तथा संख्यात संग्रहणियाँ हैं।

The texts are limited in Antkrit Dasha, Anuyogdvars are countable, Pratipattiyan are countable, Veds and couplets are Samkhyat, Samkhyat are Niryuktiyan and Samkhyat are Samgrahniya.

५४१–से णं अंगट्ठयाए अट्ठमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा, सत्त वग्गा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ताइं। संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं आया, से एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणया आघविज्जंति। से तं अंतगडदसाओ ८।

अंग की अपेक्षा अन्तकृत् अष्टम अंग है। इस अंग में एक श्रुतस्कन्ध है, दश अध्ययन हैं, सात वर्ग हैं, दश-दश उद्देशन काल और समुद्देशन काल हैं, पद-गणना की अपेक्षा से संख्यात हजार पद हैं, संख्यात अक्षर हैं, अनन्त गम हैं, अनन्त पर्याय हैं, परीत त्रस हैं, अनन्त स्थावर हैं। ये सभी शाश्वत-अशाश्वत निबद्ध-निकाचित जिन-प्रज्ञप्त भाव इस अंग में कथित हैं, प्रज्ञप्त हैं, प्ररूपित हैं, निदर्शित-उपदर्शित हैं। इस अंग का अध्येता आत्मा ज्ञाता-विज्ञाता हो जाता है। इस प्रकार चरण-करण की

प्ररूपणा के द्वारा वस्तु के स्वरूप का कथन, प्रज्ञापन, प्ररूपण, निदर्शन व उपदर्शन किया गया है। यह अष्टम अंग अन्तकृत् दशा का प्रतिपाद्य विषय है।

With regard the canons, Antkrit Dasha is eighth canon. There is one section in this canon, ten chapters, seven divisions, Udeshan Kaal and Samudeshan Kaal are ten each. According to the counting of couplets there are thousands samkhyat couplets, alphabets are countable, the beginnings are infinite, modes are infinite, the movable beings are limited and immovable beings are infinite. All these eternal, impermanent, unbounded, nikachit Jina propounded disposition have been narrated, expounded, described, instructed and shown in this canon. The reader of this canon becomes the knower and realiser of the SELF. Thus through the description of Charan-Karana the mode of the substance has been said, propounded expounded, instructed and shown in this canon. The Antkrit Dasha is the eighth canon.

५४२–से किं तं अणुत्तरोववाइयदसाओ? अणुत्तरोववाइयदसासु णं अणुत्तरोववाइयाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणखंडा रायाणो अम्मा-पियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोग-परलोग-इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहणाइं परियागो पडिमाओ संलेहणाओ भत्तपाणपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं अणुत्तरोववाओ सुकुलपच्चायाइं, पुणो बोहिलाभो अंतकिरियाओ य आघविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति।

द्वादशांग का नवम अंग अनुत्तरोपपातिकदशा क्या है? उसमें क्या-क्या वर्णन है?

अनुत्तरोपपातिकदशा में अनुत्तर विमानों में उत्पन्न होने वाले महा अनगारों का वर्णन है। इसमें उन महा अनगारों के नगर, उद्यान, चैत्य, वनखण्ड, राजगण, माता-पिता, समवसरण, धर्माचार्य, धर्मकथाएँ, इहलौकिक-पारलौकिक विशिष्ट ऋद्धियाँ, भोग-परित्याग, प्रव्रज्या, श्रुत का परिग्रहण, तप-उपधान, पर्याय, प्रतिमा, संलेखना, भक्त-प्रत्याख्यान, पादपोपगमन, अनुत्तर विमानों में उत्पाद, फिर सुकुल में जन्म, पुनः बोधि-लाभ और अन्तक्रियाएँ कथित हैं उनकी प्ररूपणा की गई है। उनका दर्शन, निदर्शन और उपदर्शन कराया गया है।

What is the ninth canon of twelve canons "Anuttropapatik Dasha" is? What is narrated in it?

There is the description of great ascetics in Anuttropapatik Dasha who took birth in the Anuttar celestial vehicles. In it the cities of those great monks, Gardens, Chaitya, Forests, Kings and ministers, Father and mother, Religious assembly, Perceptors, Religious discourses, Extraordinary wealth and powers of this world and metaphysical world, Renunciation of enjoyments, Consecration, Adopting of Shrut, Observance of penance, Modes, Special vows (Pratimas), Samlekhana, Renouncing of food intake, Padopagaman, Reincarnation into the

Anuttar celestial vehicles after their births in a noble family, Again gaining of cognition and last activities have been described and propounded. Their perception, illustration and explanation have been narrated in it.

५४३–अणुत्तरोववाइयदसासु णं तित्थकरसमोसरणाइं परममंगल्ल-जगहियाणि जिणातिसेसा य बहुविसेसा जिणसीसाणं चेव समणगण-पवर-गंधहत्थीणं थिरजसाणं परीसहसेण्ण-रिउबल-पमद्दणाणं तव दित्त-चरित्त-णाण-सम्मत्त सार-विविहप्पगार-वित्थर-पसत्थगुणसंजुयाणं अणगारमहरिसीणं अणगारगुणाण वण्णओ, उत्तमवरतव-विसिट्ठणाण-जोगजुत्ताणं, जह य जगहियं भगवओ जारिसा इड्ढिविसेसा देवासुर-माणुसाणं परिसाणं पाउब्भावा य जिणसमीवं, जह य उवासंति, जिणवरं जह य परिकहंति धम्मं लोगगुरु अमर-नर-सुर-गणाणं सोऊण य तस्स भासियं अवसेसकम्मविसयविरत्ता नरा जहा अब्भुवैति धम्ममुरालं संजमं तवं चावि बहुविहप्पगारं जह बहूणि वासाणि अणुचरित्ता आराहियनाण दंसण-चरित्त-जोगा जिणवयणमणुगयमहियं भासिया जिणवराण हिययेणमणुण्णेत्ता जे य जहिं जत्तियाणि भत्ताणि छेअइत्ता लद्धूण य समाहिमुत्तमज्झाण-जोगजुत्ता उववन्ना मुणिवरोत्तमा जह अणुत्तरेसु पावंति जह अणुत्तरं तत्थं विसयसोक्खं। तओ य चुआ कमेण काहिंति संजया जहा य अंतकिरियं एए अन्ने य एवमाइअत्था वित्थरेण।

अनुत्तरोपपातिकदशा में परम मंगलकारी, जगत-हितकारी तीर्थंकरों के समवसरण तथा बहुत प्रकार के जिन-अतिशय वर्णित हैं। तथा जो श्रमण जनों में वरगन्धहस्ती सदृश श्रेष्ठ हैं, स्थिर यश वाले हैं, परीषह-सेनारूपी शत्रु-बल के मर्दन करने वाले हैं, तप से दीप्त हैं, जो चारित्र, ज्ञान, सम्यक्त्व रूप सार वाले अनेक प्रकार के विशाल प्रशस्त गुणों से संयुक्त हैं, ऐसे अनगार महर्षियों के अनगार-गुणों का अनुत्तरोपपातिक दशा में वर्णन है। अतीव श्रेष्ठ तपो विशेष से और विशिष्ट ज्ञान-योग से युक्त हैं, जिन्होंने जगत् हितकारी भगवान् तीर्थंकरों की जैसी परम आश्चर्यकारिणी ऋद्धियों की विशेषताओं को और देव, असुर, मनुष्यों की सभाओं के प्रादुर्भाव को देखा है, वे महापुरुष जिस प्रकार जिनवर के समीप जाकर उनकी जिस प्रकार से उपासना करते हैं तथा असुर, नर, सुरगणों के लोकगुरु वे जिनवर जिस प्रकार से उनको धर्म का उपदेश देते हैं वे क्षीण-कर्मा महापुरुष उनके द्वारा उपदिष्ट धर्म को सुनकर के अपने समस्त काम-भोगों से और इन्द्रियों के विषयों से विरक्त होकर जिस प्रकार से उदार धर्म को और विविध प्रकार से संयम-तप को स्वीकार करते हैं तथा जिस प्रकार से बहुत वर्षों तक उनका आचरण करके ज्ञान, दर्शन, चारित्र योग की आराधना कर जिन-वचन के अनुगत यानि अनुकूल पूजित धर्म का दूसरे भव्य जीवों को उपदेश देकर और अपने शिष्यों को अध्ययन कराकर तथा जिनवरों की अन्तरंग से आराधना कर वे उत्तम मुनि जहाँ पर जितने भक्तों का अनशन के द्वारा छेदन कर, समाधि को प्राप्त कर और उत्तम ध्यान योग से युक्त होते हुए जिस प्रकार से अनुत्तर विमानों में उत्पन्न होते हैं और वहाँ

जैसे अनुपम विषय-सौख्य को भोगते हैं, उस सबका अनुत्तरोपपातिक दशा में वर्णन किया गया है। इसके बाद वहाँ से च्युत होकर वे जिस प्रकार से संयम को धारण कर अन्तक्रिया करेंगे और मोक्ष को प्राप्त करेंगे, इन सबका तथा इसी प्रकार के अन्य अर्थों का सविस्तार इस अंग में वर्णन किया गया है।

In Anuttropapatik Dasha there is the description of supreme auspicious, beneficial to the world the religious assembly of Ford Makers (Tirthankara) and various types of (Atishya) miraculous achievements of Jinas. And those are excellent, similar to a Vargandh Hasti (the elephant having a special odour), among ascetics, are of permanent glory, the killer of afflictions in the form of army power illuminated by penance, who are connected with the broad commendable attributes of various types of gists in the form of conduct, knowledge, righteousness, such as the ascetics and the great sage's ascetic attributions are narrated in Anuttropapatik. Who are endowed with extra-ordinary knowledge activity and particularly with extreme excellent penance. Those who have seen the specialities of the supreme wonderers extraordinary powers of the world's benevolent Ford Makers and manifestation of the assemblies of celestial beings, demons and human beings, going nearer to the Jinavara how these great worshippers worship the Ford Makers and how (Lok Guru) the holy teacher of gods, demons and human beings—the Ford Makers deliver their sermons to them. They the great persons of light Karmas having heard the sermons of Ford Makers, becoming unattached to senses and sexual enjoyment accept the restraint and penance in many forms and accept the liberal religion and making the practice of these rules for many a years and practising the activities of knowledge, perception and conduct, preaching the other beings capable of salvation, the sermons of Jina and after teaching to their disciples and propitiating the Ford Makers with great devotion, the supreme monks, through fasting, attaining the state of supreme meditation, endowed with superior meditation activity of they reincarnated in the celestial vehicle of Anuttra heavens and there they enjoy the extraordinary luxuries and happiness, all these have been narrated in Anuttropapatik. Henceforth descending from these celestial vehicles they will be consecrated, will perform their final activities (Antkriya) and will attain liberation. In this canon the description of all these matters and other such like conclusions have been done.

५४४-अणुत्तरोववाइयदसासु णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ संखेज्जाओ संगहणीओ।

अनुत्तरोपपातिकदशा में परीत वाचनाएँ हैं, संख्यात अनुयोग द्वार हैं, संख्यात प्रतिपत्तियाँ हैं, संख्यात वेढ हैं, संख्यात श्लोक हैं, संख्यात निर्युक्तियाँ हैं तथा संख्यात संग्रहणियाँ हैं।

The texts are limited in Anuttropapatik, Anuyog-dvars are countable, Pratipattiyan are countable, Veds are countable, Couplets are countable, Niryuktiyan are countable and Samgrahniya are countable.

५४५–से णं अंगट्ठयाए नवमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा, तिन्नि वग्गा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ताइं। संखेज्जाणि अक्खराणि, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासया कडा णिबद्ध णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। से एवं आया, से एवं णाया एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणया आघविज्जंति०। से तं अणुत्तरोववाइयदसाओ ९।

अंग की अपेक्षा अनुत्तरोपपातिक दशा नवम अंग है। इस अंग में एक श्रुतस्कन्ध है, दश अध्ययन हैं, तीन वर्ग हैं, दश-दश उद्देशन-काल और समुद्देशन-काल हैं, पद-गणना की अपेक्षा से संख्यात लाख पद कहे गए हैं। इस अंग में संख्यात अक्षर हैं, अनन्त गम हैं, अनन्त पर्याय हैं, परिमित त्रस हैं, अनन्त स्थावर हैं। ये सब शाश्वत, कृत, निबद्ध, निकाचित, जिनप्रज्ञप्त भाव इस अंग में कथित हैं, प्रज्ञप्त हैं, प्ररूपित हैं, निदर्शित और उपदर्शित हैं। इस अंग का अध्येता आत्मा ज्ञाता और विज्ञाता होता है। इस प्रकार चरण-करण की प्ररूपणा के द्वारा वस्तु के स्वरूप का कथन, प्रज्ञापन, प्ररूपण, निदर्शन और उपदर्शन किया जाता है। यह नवम अंग अनुत्तरोपपातिक दशा का परिचय है।

In respect of the canons the Anuttropapatik Dasha is the ninth canon. There is one section, ten chapters, three division, ten Udeshan Kaal and ten Samudeshan Kaal in it. With regard to the counting of couplets Asamkhyat lac couplets have been narrated, the alphabets are countable, the beginnings are infinite, modes are infinite, movable beings are limited and immovable beings are infinite. All these eternal, experienced, unbounded, Nikachit Jina expounded dispositions are said, propounded, illustrated, instructed and shown in the canon, the reader of this canon becomes the knower and realiser of SELF. In this way through the propagation of Charan-Karana the mode of the substance has been said, propounded, expounded, instructed and shown. This Anuttropapatik Dasha is the ninth canon.

५४६–से किं तं पण्हावागरणाणि? पण्हावागरणेसु अट्ठुत्तरं पसिणसयं अट्ठुत्तरं अपसिणसयं अट्ठुत्तरं पसिणापसिणसयं विज्जाइसया नाग-सुवन्नेहिं सद्धिं दिव्वा संवाया आघविज्जंति।

द्वादशांग का दशम अंग प्रश्नव्याकरण अंग क्या है? इसमें क्या-क्या वर्णन है?

प्रश्नव्याकरण अंग में एक सौ आठ प्रश्नों, एक सौ आठ अप्रश्नों और एक सौ आठ प्रश्नाप्रश्नों का, विद्याओं के अतिशयों का तथा नागों-सुपर्णों के साथ दिव्य संवादों का निरूपण किया गया है।

What is the tenth canon of twelve canons the "Prashan Vyakaran" canon is? What has been narrated in this canon?

In this canon "the Prashan Vyakaran" one hundred eight questions, one hundred eight non-questions, one hundred eight questions-non questions, the Atishayas of learning and the divine dialogues with serpents have been expounded.

५४७-पण्हावागरणदसासु णं ससमय-परसमय पण्णवय-पत्तेअबुद्ध-विविहत्थभा-साभासियाणं अइसयगुण-उवसम-णाणप्पगार-आयरियभासियाणं वित्थरेणं वीरमहेसीहिं विविहवित्थरभासियाणं च जगहियाणं अद्दागंगुट्ठ-बाहु-असि-मणि-खोम-आइच्च भासियाणं विविहमहापसिणविज्जा-मणपसिण-विज्जा-देवयपयोग-पहाण-गुणप्पगासियाणं सब्भूयदुगुणप्पभाव-नरगणमइविम्हयकराणं अइसयमईयकाल-समय-दम-सम-तित्थकरुत्तमस्स ठिइकरणकारणाणं दुरहिगम-दुरवगाहस्स सव्वसव्वन्नुसम्मअस्स अबुहजण-विबोहणकरस्स पच्चक्खयपच्चयकराणं पण्हाणं विविहगुणमहत्था जिणवरप्पणीया आघविज्जंति।

प्रश्नव्याकरण दशा में स्वसमय-परसमय के प्रज्ञापक प्रत्येक बुद्धों के विविध अर्थों वाली भाषाओं द्वारा कथित वचनों का, आमर्षौषधि आदि अतिशयों, ज्ञानादि गुणों और उपशम भाव के प्रतिपादक नाना प्रकार के आचार्य-भाषितों का, विस्तार पूर्वक कहे गए वीर महर्षियों के जगत् हितकारी अनेक प्रकार के विस्तृत सुभाषितों का, आदर्श (दर्पण) अंगुष्ठ, बाहु, असि, मणि, क्षौम (वस्त्र) और सूर्य आदि के आश्रय से दिए गए विद्या-देवताओं के उत्तरों का इस अंग में वर्णन किया गया है। अनेक महाप्रश्न विद्याएँ वचन से ही प्रश्न करने पर उत्तर देती हैं, अनेक विद्याएँ मन से चिन्तित प्रश्नों का उत्तर देती हैं अनेक विद्याएँ अनेक अधिष्ठाता देवताओं के प्रयोग-विशेष की प्रधानता से अनेक अर्थों के संवादक गुणों को प्रकाशित करती हैं और अपने सद्भूत द्विगुण प्रभावक उत्तरों के द्वारा जन समुदाय को विस्मित करती हैं। उन विद्याओं के चमत्कारों और सत्य वचनों से लोगों में यह दृढ़ विश्वास उत्पन्न होता है कि अतीत काल के समय में दम और शम के धारक अन्य मतों के शास्ताओं से विशिष्ट जिन तीर्थंकर हुए हैं और वे यथार्थवादी थे, अन्यथा इस प्रकार से सत्य विद्या-मन्त्र संभव नहीं थे, इस प्रकार संशयशील मनुष्यों के स्थिरीकरण के कारणभूत दुरभिगम और दुरवगाह, सभी सर्वज्ञों के द्वारा सम्मत, अज्ञ (अबुध) जनों को प्रबोध करने वाले, प्रत्यक्ष प्रतीति-कारक प्रश्नों के विविध गुण और महान अर्थ वाले जिनवर-प्रणीत उत्तर इस अंग में कथित हैं, प्रज्ञापित हैं, प्ररूपित हैं, निदर्शित और उपदर्शित हैं।

In Prashan Vyakaran Dasha the discourse delivered through language of different conclusions by the enlightened ones the propounders of *Swa-Samaya* and *Pra-Samaya*, Atishaya of medicines, the utterances of different preceptors expounders of attribution of knowledge etc. and sub-sided notions, eloquently spoken elegant speech of the brave sages, for the benefit of the world, the Angushath, mirror, the arms, sword, jewels, cloths and the answers given by the intellectual gods with the help of sun etc., have been narrated in this canon. The goddess of learning gives answers through discourses when questions are asked; many learnings (vidya) give the answer of the questions pondered over by the mind. Many learnings (vidya) illuminate attributions of many conclusions of the eminence of experiment characteristics, so many worshipped deities astonish the gathering through their true bi-attributional impressive answers. Through the miracles of these learnings (vidya) and true preachings a strong belief is emerged among the people that the distinguish Ford Maker have evolved from the persons of past time who dwelt life with restraint and passionless and had belief in different ideologies and were realistic, such kind of (vidya mantra) spells learnings, otherwise, were not possible, thus, for the causes of permanency of the skeptical human beings that was hard to achieve and pains giving to make knowable to the ignorant and conformable persons by all the Omniscient, the Jinvani replied answers full of different qualities and great conclusions of directly asked questions have been said, propounded, expounded, instructed and shown in this canon.

५४८–पण्हावागरणेसु णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ।

प्रश्नव्याकरण अंग में परीत वाचनाएँ हैं, संख्यात अनुयोग द्वार हैं, संख्यात प्रतिपत्तियाँ हैं, संख्यात वेढ हैं, संख्यात श्लोक हैं, संख्यात निर्युक्तियाँ हैं तथा संख्यात संग्रहणियाँ हैं।

The texts are limited in Prashan Vyakaran canon. Anuyogdvars are countable, Pratipattiyan are countable, Veds are countable, couplets are countable, Niryukatiyan and Samgrahniya are countables.

५४९–से णं अंगट्ठयाए दसमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, पणयालीसं उद्देसणकाला, पणयालीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पयग्गेणं पण्णत्ताइं। संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। से एवं आया, से एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणया आघविज्जंति०। से तं पण्हावागरणाइं १०।

अंग की अपेक्षा से प्रश्नव्याकरण दशम अंग है। इस अंग में एक श्रुतस्कन्ध है, पैंतालीस उद्देशन काल हैं, पैंतालीस समुद्देशन काल हैं। पद-गणना की अपेक्षा से संख्यात लाख पद हैं, इस अंग में सख्यात अक्षर हैं, अनन्त गम हैं, अनन्त पर्याय हैं, परीत त्रस हैं, अनन्त स्थावर हैं, इसमें शाश्वत, कृत, निबद्ध, निकाचित, जिन-प्रज्ञप्त भाव कथित हैं, प्रज्ञापित हैं, प्ररूपित हैं, निदर्शित और उपदर्शित हैं। इस अंग का अध्येता आत्मा ज्ञाता और विज्ञाता होता है। इस प्रकार चरण-करण की प्ररूपणा के द्वारा वस्तु के स्वरूप का कथन, प्रज्ञापन, निदर्शन व उपदर्शन किया जाता है। यह दशम अंग प्रश्न-व्याकरण का परिचय है।

In respect of canons "Prashan Vyakaran" is tenth canon. In this canon there is one section Udeshan Kaal are forty five, Samudeshan Kaal are also forty five. With regard to the couplets there are Samkhyat lac couplets in it. The alphabets are countable, beginnings are infinite, modes are infinite, movable beings are limited and immovable beings are infinite in it. In this canon eternal, performed, unbounded, Nikachit disposition pro pounded by Jina are stated, propounded, expounded, instructed and shown. The reader of this canon becomes the knower and realiser of SELF. Thus, through the Charan-Karana the mode of the substance has been said, propounded, expounded, instructed and shown. It is the tenth 'Prashan Vyakaran Dasha' canon.

५५०–से किं तं विवागसुयं? विवागसुए णं सुक्कड-दुक्कडाणं कम्माणं फलविवागे आघविज्जंति। से समासओ दुविहे पण्णत्ते। तं जहा–दुहविवागे चेव, सुहविवागे चेव, तत्थ णं दस दुहविवागाणि, दस सुहविवागाणि।

द्वादशांग का ग्यारहवाँ अंग विपाकसूत्र क्या है? इसमें क्या-क्या वर्णन है?

विपाक सूत्र में सुकृत यानि पुण्य तथा दुष्कृत यानि पाप कर्मों का फल-विपाक वर्णित है। इस विपाक के संक्षेप में दो प्रकार कहे गए हैं। यथा —१. दुःखविपाक, २. सुखविपाक। इस अंग में दुःख विपाक में दश अध्ययन और सुख-विपाक में भी दश अध्ययन हैं।

What the eleventh canon if twelve canons "Vipak Sutra" is? What is narrated in it?

In brief, two types of Vipak Sutra have been mentioned: 1. Suffering Vipak, 2. Pleasure Vipak. Ten chapters of Miseries Vipak and ten chapters of Pleasure Vipak are there in it.

५५१–से किं तं दुहविवागाणि? दुहविवागेसु णं दुहविवागाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणखंडा रायाणो अम्मा-पियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ नगरगमणाइं संसारपबंधे दुहपरंपराओ य आघविज्जंति। से तं दुहविवागाणि।

यह दुःखविपाक क्या है? इसमें क्या-क्या वर्णन है?

दुःखविपाक में दुष्कृत्यों (पापों) के दुःख रूप फलों को भोगने वालों के बारे में वर्णन किया गया है। इसमें दुःखरूप फल भोगने वालों के नगर, उद्यान, चैत्य, वनखण्ड, राजा, माता-पिता, समवसरण, धर्माचार्य, धर्मकथाएँ, (गौतम स्वामी का भिक्षा हेतु) नगर-गमन, संसार-प्रबन्धों में घिर कर दुःख-परम्पराओं को भोगने का विवरण है। यह दुःख विपाक का परिचय है।

What is the suffering Vipak? What is narrated in it?

In suffering Vipak the description has been done about the sufferer beings who suffer the miseries afflicted by the fruits of their bad or dis-meritorious Karmas (pap) as: the cities of sufferers, gardens, caitya, forests, kings, mother-father, religious assembly, preceptor, religious discussion, journey to cities, suffering series of worries surrounded by during managing the worldly affairs. This one is the suffering's Vipak.

५५२–से किं तं सुहविवागाणि ? सुहविवागेसु णं सुहविवागाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणखंडा रायाणो अम्मा-पियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइय-परलोइय-इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं परियागा पडिमाओ संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाइं पुणबोहिलाहा अंतकिरियाओ य आघविज्जंति। से तं सुहविवागाणि।

सुखविपाक क्या है? इसमें क्या-क्या वर्णन है?

सुखविपाक में सुकृतों यानि पुण्यकर्मों के सुखरूप फलों को भोगने वालों के बारे में वर्णन किया गया है। इसमें सुकृतों के सुख रूप फलों को भोगने वालों के नगर, उद्यान, चैत्य, वनखण्ड, राजा, माता-पिता, समवसरण, धर्माचार्य, धर्मकथाएँ, इहलौकिक-पारलौकिक ऋद्धि विशेष, भोग-परित्याग, प्रव्रज्या, श्रुत-परिग्रह तप उपधान, दीक्षा पर्याय, प्रतिमाएँ, संलेखनाएँ, भक्तप्रत्याख्यान, पादपोपगमन, देवलोक-गमन, सुकुल-प्रत्यागमन, पुनः बोधिलाभ और उनकी अन्तक्रियाएँ वर्णित हैं।

What the pleasure Vipak is? What is narrated in it?

In pleasure Vipak the description of the enjoyers has been made who enjoy the fruits of their good or meritorious Karmas in the pleasure mode as: the cities, enjoyers gardens, caitya, forests, kings, mother-father, religious assembly, preceptor, religious discussion, the extraordinary wealth and power pertaining to this world and metaphysical world, renunciation enjoyments, consecration, Shrut possessions, observance of pleasure, ascetic mode, special vowes (Pritman, Samalekhana restraint of food, Padopagaman, goint to celestial vehicles, reincarnation in noble families. Again gaining cognition and final activities (Antkriya).

५५३–दुहविवागेसु णं पाणाइवाय-अलियवयण-चोरिक्करण-परदारमेहुण-ससंगयाए महतिव्वकसाय-इंदियप्पमाय-पावप्पओय-असुहज्झवसाणसंचियाणं कम्माणं पावगाणं पाव अणुभागफलविवागा णिरयगति-तिरिक्खजोणि-बहुविहवसण-सय-परंपराबद्धाणं मणुयत्ते वि आगयाणं जहा पावकम्मसेसेण पावगा होंति फलविवागा वह-वसण-विणास-नासा-कन्नुट्ठंगुट्ठकर-चरण-नहच्छेयण जिब्भ-च्छेअण-अंजणकडग्गिदाह-गयचलण-मलण-फलाण-उल्लंवण-सूललया-लउड-लट्ठि-भंजण-तउसीसगततत्तेल्ल-कलकल-अहिसिंचण-कुंभिपाग-कंपण-थिरबंधण-वेह-वज्झ-कत्तण-पतिभय-कर-करपल्लीवणादि-दारुणाणि दुक्खाणि अणोवमाणि बहुविविहपरंपराणुबद्धा ण मुच्चंति पावकम्मवल्लीए। अवेयइत्ता हु णत्थि मोक्खो तवेण धिइधणियबद्धकच्छेण सोहेणं तस्स वावि हुज्जा।

दुःखविपाक के प्राणातिपात, असत्य वचन, स्तेय, पर-दार-मैथुन, ससंगता, तीव्र कषाय, इन्द्रिय-विषय सेवन, प्रमाद, पाप-प्रयोग और अशुभ अध्ययवसायों से संचित पापकर्मों के उन पापरूप अनुभाग—फल-विपाकों का वर्णन किया गया है जिन्हें नरकगति, तथा तिर्यग् योनि में अनेक प्रकार से शताधिक संकटों का सामना करना पड़ता है, यानि भोगना पड़ता है। वहाँ से निकलकर मनुष्य भव में आने पर भी जीवों को पाप-कर्मों के शेष रहने से अनेक पापरूप अशुभ फल विपाक भोगने पड़ते हैं। यथा — १. वध यानि दण्ड आदि से ताड़न, २. वृषण-विनाश अर्थात् नपुंसकीकरण, ३. नासा-कर्त्तन, ४. कर्ण-कर्त्तन, ५. ओष्ठ-छेदन, ६. अंगुष्ठछेदन, ७. हस्तकर्त्तन, ८. चरण-छेदन, ९. नखछेदन, १०. जिह्वा-छेदन, ११. अंजन-दाह, १२. कटाग्रिदाह, १३. हाथी के पैरों तले शरीर को कुचलवाना, १४. फरसे आदि से शरीर को फाड़ना, १५. रस्सियों से बाँध कर वृक्षों पर लटकाना, त्रिशूल-लता, लकुट और लकड़ी से शरीर को भग्न करना, १६. तप्त कड़कड़ते रांगा, सीसा व तेल से शरीर का अभिसिंचन करना, १७. कुम्भी यानि लोह-भट्ठी में पकाना, १८. शीतकाल में शरीर पर कंपकंपी पैदा करने वाला अति शीतल जल डालना, १९. काष्ठ आदि में पैर फँसाकर दृढ़ता से बाँधना, २०. भाले आदि शस्त्रों से छेदन-भेदन करना, २१. वर्द्धकर्त्तन यानि शरीर की चमड़ी (खाल) उधेड़ना, २२. अति भय-कारक कर प्रदीपन यानि वस्त्र लपेटकर और शरीर पर तेल डालकर दोनों हाथों में अग्नि लगाना आदि अति दारूण दुःख भोगना। अनेक भव-परम्परा में बँधे हुए पापी जीव पापकर्म रूपी वल्ली के दुःखरूप फलों को भोगे बिना नहीं छूटते हैं। क्योंकि कर्मों के फलों को भोगे बिना नही छूटते हैं। क्योंकि कर्मों के फलों को भोगे बिना उन से मुक्ति नहीं मिलती। हाँ, चित्त-समाधि रूप धैर्य के साथ दृढ़ संकल्पित होकर जो तप करता है उसके पापकर्मों का भी शोधन हो जाता है।

The killing of beings, telling lies, stealing, sexual intercourse with other's wife, Sasangata, very acute passions, enjoy the province of severe inertia, sinful activities and demeritoreous Karmas accumulation through inauspicious

endeavours and its sinful sub-division (fruits of Karma) of sorrow have been described in it. The description of the beings who have to suffer more than hundred agonies of the hell and Triyanch Yoni is done in it.

Coming out of these yonis and reincarnated as human beings. They will have to suffer the inauspicious fruits of sinful activities which are not suffered so far they are as : 1. Killing i.e. beating with stick, 2. Bull-deteriortation the impotency of Ox, 3. Nose piercing, 4. ears piercing, 5. lips cut, 6- piercing of thumb, 7. chopping the hands, 8. feet piercing, 9. nail piercing, 10. tongue cut, 11. eyes fire kataagni fire, 12. to get the body stamped under this elephant feet, 13. to goad the body with spear, 14. Hanging on trees tying up with ropes, 15. to chop the body into pieces with trident and log of wood, 16. to pour boiled oil, lead and zink on the body, 17. to boil in iron furnace, 18. to pour too cold water in the season of winter that produces shivering, 19. to tie strongly clinching into wood, 20. to cut into pieces with spears like weapons, 21. to stripe of the skin, 22. After wrapping clothes and pouring oil on both the hands to burn the frightful fire. To suffer the acute agonizing miseries. So many sinful beings, bounded in many birth and death series, do not escaped without suffering painful fruits of the sinful Karmas, because one can't attain liberation without suffer the fruits of sinful activities. But, one who performs penance with strong resolution through perseverance in the mode of cit-samadhi (perfect meditation state) gets his inauspicious deeds purified.

५५४–एत्तो य सुहविवागेसु णं सील-संजम-नियम-गुण-तवोवहाणेसु साहूसु सुविहिएसु अणुकंपासयप्पओग–तिकालमइ विसुद्ध-भत्त-पाणाइं पययमणसा हिय-सुह-नीसेस-तिव्व-परिणाम-निच्छिय मई पयच्छिऊणं पओगसुद्धाइं जह य निव्वत्तेंति उ बोहिलाभं जह य परित्तीकरेंति नर-नरय-तिरिय-सुरगमण-विपुलपरियट्ट-अरति-भय-विसाय-सोग-मिच्छत्तसेलसंकडं अण्णाणतमंधकार-चिक्खिल्लसुदुत्तारं जरा-मरण-जोणिसंखुभियचक्कवालं सोलसकसाय-सावय-पयंडचंडं अणाइअं अणवदग्गं संसारसागरमिणं जह य णिबंधंति आउगं सुरगणेसु, जह य अणुभवंति सुरगणविमाणसोक्खाणि अणोवमाणि। ततो य कालंतरे चुआणं इहेव नरलोगमागयाणं आउ-वपु-पुण्ण-रूप-जाति-कुल-जम्म-आरोग्ग-बुद्धि-मेहाविसेसा मित्त-जण-सयण-धण-धण्ण-विभव-समिद्धसार-समुदयविसेसा बहुविहकामभोगुब्भवाण सोक्खाण सुहविवागोत्तमेसु अणुवरय-परंपराणुबद्धा।

असुभाणं सुभाणं चेव कम्माणं भासिआ बहुविहा विवागा विवागसुयम्मि भगवया जिणवरेण संवेगकरणत्था, अन्नेवि य एवमाइया बहुविहा वित्थरेणं अत्थपरूवणया आघविज्जंति।

सुखविपाकों का वर्णन इस प्रकार से निरूपित है—जो शील, संयम, नियम, गुण और तप में संलग्न हैं, जो अपने आचार का भली-भाँति पालन करते हैं, ऐसे साधुजनों में अनेक प्रकार की अनुकम्पा का प्रयोग करते हैं, उनके प्रति तीनों ही कालों में विशुद्ध बुद्धि रखते हैं यानि यति-जनों को आहार दूँगा, यह विचार करके जो हर्ष का अनुभव करते हैं, आहार देते समय और देने के पश्चात् भी हर्षित रहते हैं, उनको अति सावधान मन से हितकारक, सुखकारक, निःश्रेयसकारक उत्तम शुभ परिणामों से प्रयोग-शुद्ध भक्त-पान देते हैं, वे मनुष्य जिस प्रकार पुण्य कर्म का उपार्जन करते हैं, बोधि-लाभ को प्राप्त होते हैं तथा नर, नारक, तिर्यंच एवं देवगति-गमन सम्बन्धी अनेक परावर्तनों को परीत करते हैं तथा जो अरति, भय, विस्मय, शोक और मिथ्यात्व रूप शैल यानि पर्वत से संकीर्ण हैं, गहन अज्ञान-अन्धकाररूप कीचड़ से परिपूर्ण हैं तथा इससे परिपूर्ण होने से जिसका पार उतरना अति कठिन है, जिसका चक्रवाल जरा, मरण योनिरूप मगरमच्छों से क्षोभित हो रहा है, जो अनन्तानुबन्धी आदि सोलह कषाय रूप श्वापदों यानि खूंखार हिंसक-प्राणियों से अति प्रचण्ड है एवं भयंकर है, ऐसे अनादि अनन्त इस संसार-सागर को वे जिस प्रकार पार करते हैं और जिस प्रकार देव-गणों में आयु बांधते-देवायु का बंध करते हैं तथा जिस प्रकार सुर-गणों के अनुपम विमानोत्पन्न सुखों का अनुभव करते हैं, इसके बाद कालान्तर में वहाँ से च्युत होकर इसी मनुष्य लोक में आकर दीर्घ आयु, परिपूर्ण शरीर, उत्तम रूप, जाति-कुल में जन्म लेकर आरोग्य, बुद्धि, मेधा-विशेष से सम्पन्न होते हैं, मित्रजन-स्वजन, धन-धान्य और वैभव से समृद्ध एवं सारभूत सम्पदा के समूह से संयुक्त होकर बहुत प्रकार के काम-भोग जनित, सुख-विपाक से प्राप्त उत्तम सुखों की अविच्छिन्न परम्परा से परिपूर्ण रहते हुए सुखों को भोगते हैं। ऐस पुण्यशाली जीवों का इस सुख विपाक में निरूपण किया गया है।

इस प्रकार अशुभ-शुभ कर्मों के अनेक प्रकार के विपाक इस विपाक सूत्र में भगवान् जिनेन्द्रदेव ने सांसारिक प्राणियों को संवेग उत्पन्न करने के लिए कहे हैं। इसी प्रकार से अन्य भी बहुत प्रकार की अर्थ-प्ररूपणा विस्तार पूर्वक इस अंग में की गई है।

Pleasure fruits of Karma (Sukh Vipak) has been described as under : one who is indulged in celibacy, restraints, code of conduct, virtues and penance, who observes meticulously his conduct, the persons like it use their compassion in different ways. They keep their intellect, all the three times, pure towards them i.e. I will give alms to the monk, they feel pleasure in thinking so, they feel pleasure at time of food donation and after donating the meal. Experienced with beneficial, joyful, beatitutic, sublime auspicious conclusions through full attentive mind they give pure food and water to them. So these people earn the auspicious karma, gain cognition, and limit their various transformations related to births in the realms of gods, plant and animal, hellish beings and human beings, and who crosses the mountains in the mode of apathy, fear, dismay, grief and wrong faith, i.e., mixed together as the mountains, filled with dense

ignorant and dark form of mud, and it is too difficult to cross it because of this dense mud and its cycle in the form of birth and death is being disturbed by the crocodiles, and which are very much fear-some from the blood thirsty violent beings, i.e., sixteen Anantanubandh (dense) passions, it is terrible, how will they cross this beginningless infinite mundane ocean and how will they bind the life span of celestial beings and experience the unique pleasures after taking birth into celestial vehicles of gods. Henceforth after completing their age of the gods descending from there coming in the world of human beings obtaining long life span, strong and healthy physique, excellent features and taking birth into a noble creed and clan become abundant in health, intellect, wisdom, and endowed abundantly with friends, relatives, wealth and grandeur & having joined with the group of essential possessions enjoy many sorts of sexual enjoyments, pleasures fulfilled with the continuous series of joys obtained through pleasure giving Karmas. The description of such fortunate beings in the Sukh Vipak (pleasure going Karmas) is made.

Thus, Bhagwan Jinendra Deva has stated various types of auspicious and inauspicious fruits of karmas to bring about the religious activities in the beings in this Sutra. So the other many different kinds of conclusions, narrations have been done in the canon.

५५५–विवागसुयस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ संखेज्जाओ संगहणीओ।

विपाकसूत्र की परीत वाचनाएँ हैं, संख्यात अनुयोग द्वार हैं, संख्यात प्रतिपत्तियाँ हैं, संख्यात वेढ हैं, संख्यात श्लोक हैं, संख्यात निर्युक्तियाँ हैं और संख्यात संग्रहणियाँ हैं।

The texts are limited of Vipak Sutra. Anuyoga-dwars are countable, Pratipattiyan are countable, Veds, Couplets, Niryuktiyas and Samgrahniyas are countable.

५५६–से णं अंगट्ठयाए एक्कारसमे अंगे, वीसं अज्झयणा, वीसं उद्देसणकाला, वीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ताइं। संखेज्जाणि अक्खराणि, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। से एवं आया, से एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणया आघविज्जंति–। से तं विवागसुए ११।

अंग की अपेक्षा से यह विपाक सूत्र ग्यारहवाँ अंग है। इस अंग में बीस अध्ययन हैं, बीस उद्देशन

काल हैं, बीस ही समुद्देशन काल हैं, पद-गणना की अपेक्षा से संख्यात लाख पद हैं, संख्यात अक्षर हैं अनन्त गम हैं अनन्त पर्याय हैं परीत त्रस हैं अनन्त स्थावर हैं। इसमें शाश्वत, कृत, निबद्ध, निकाचित भाव कथित हैं, प्रज्ञापित हैं, प्ररूपित हैं, निदर्शित और उपदर्शित हैं। इस अंग का अध्येता आत्मा ज्ञाता और विज्ञाता होता है। इस प्रकार चरणकरण की प्ररूपणा के द्वारा वस्तु के स्वरूप का कथन, प्रज्ञापन, निदर्शन-उपदर्शन किया जाता है। यह ग्यारहवाँ विपाक सूत्र अंग है।

In respect of canons the Vipak Sutra is eleventh canon. In this canon there are twenty chapters, twenty Udeshen Kaal, twenty Samudeshan Kaal. With regard to the number of couplets there are Samkhyat lac couplets. Alphabets are countable, the beginnings are infinite, the modes are infinite, the mobile beings are limited, the stationary are infinite. The eternal, performed, unbounded, nikacit dispositions are said, propounded, expounded, instructed and shown in this canon.

The reader of this canon becomes known and realizer of SELF. Thus, through the description of Charan and Karan the mode of substance has been stated, propounded, instructed and illustrated in it. This one is the eleventh canon in the name of Vipak Sutra.

५५७-से किं तं दिट्ठिवाए? दिट्ठिवाए णं सव्वभावपरूवणया आघविज्जंति। से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा-परिकम्मं सुत्ताइं पुव्वगयं अणुओगो चूलिया।

यह दृष्टिवाद अंग क्या है? इसमें क्या-क्या वर्णन है?

दृष्टिवाद अंग में सर्व भावों की प्ररूपणा निरूपित है। संक्षेप में उसके पाँच प्रकार कहे गए हैं। ४ १. परिकर्म, २. सूत्र, ३. पूर्वगत, ४. अनुयोग, ५. चूलिका।

What the canon "Drishthivad is? What is narrated in it?

In 'Drishthivad canon' the propagation of entire dispositions has been propounded. In brief, its five types have been narrated as : 1. Parikarma, 2. Sutra, 3. Poorvagata, 4. Anuyoga, 5. Chulika.

५५८-से किं तं परिकम्मे? परिकम्मे सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा-सिद्धसेणियापरिकम्मे मणुस्ससेणियापरिकम्मे पुट्ठसेणियापरिकम्मे ओगाहणसेणियापरिकम्मे उवसंपज्जसेणियापरिकम्मे विप्पजहसेणियापरिकम्मे चुआचुअसेणियापरिकम्मे।

परिकर्म क्या है? परिकर्म के सात प्रकार कहे गए हैं। यथा —१. सिद्ध श्रेणिका-परिकर्म, २. मनुष्य श्रेणिका परिकर्म, ३. पृष्ठश्रेणिका परिकर्म, ४. अवगाहनश्रेणिका परिकर्म, ५. उपसंपद्यश्रेणिका परिकर्म, ६. विप्रजहतश्रेणिका परिकर्म, ७. च्युताच्युतश्रेणिका परिकर्म।

What is Parikarma?

Parikarmas have been said of seven types as : 1. Sidhshrenika Parikarma, 2. Human beings Shrenika-Parikarma, 3. Prishath-shrenika Parikarma, 4. Avagahana-shernika Parikarma, 5. Upsampadya-shrenika Parikarma, 6. Viprajahat-shrenika Parikarma, 7. Chayut-achayuta-shrenika Parikarma.

५५९–से किं तं सिद्धसेणियापरिकम्मे? सिद्धसेणिआपरिकम्मे चोद्दसविहे पण्णत्ते, तं जहा–माउयापयाणि एगट्ठियपयाणि पादोट्ठपयाणि आगासपयाणि केउभूयं रासिबद्धं एगगुणं दुगुणं तिगुणं केउभूयपडिग्गहो संसारपडिग्गहो नंदावत्तं सिद्धबद्धं। से तं सिद्धसेणियापरिकम्मे।

सिद्ध श्रेणिका परिकर्म क्या है? सिद्ध श्रेणिका परिकर्म के चौदह प्रकार कहे गए हैं। यथा — १. मातृ पद परिकर्म, २. एकार्थक पद परिकर्म, ३. अर्थ पद परिकर्म, ४. पाठ परिकर्म, ५. आकाशपद परिकर्म, ६. केतुभूत परिकर्म, ७. राशिबद्ध परिकर्म, ८. एकगुण परिकर्म, ९. द्विगुण परिकर्म, १०. त्रिगुण परिकर्म, ११. केतुभूत प्रतिग्रह परिकर्म, १२. संसार-प्रतिग्रह परिकर्म, १३. नन्द्यावर्त परिकर्म, १४. सिद्ध बुद्ध परिकर्म। यह सब सिद्ध श्रेणिका परिकर्म है।

What is Sidh-shrenika Parikarma?

Fourteen types of Sidh-shrenika Parikarma have been said as : 1. Bhatrika-pada Parikarma, 2. Ekarth-pada Parikarma, 3. Arth-pada Parikarma, 4. Patha Parikarma, 5. Akash-pada Parikarma, 6. Ketubhoot Parikarma, 7. Rashi-badha Paikarma, 8. Ekguna Parikarma. 9. Dviguna Parikarma, 10. Triguna Parikarma, 11. Ketubhoot Pratigrah Parikarma, 12. Samsar Pratigrah Parikarma, 13. Nandyavart Parikarma, and 14. Sidh-Baadha Parikarma.

५६०–से किं तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे? मणुस्ससेणियापरिकम्मे चोद्दसविहे पण्णत्ते। तं जहा–ताइं चेव माउआपयाणि जाव नंदावत्तं मणुस्सबद्धं। से तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे।

मनुष्यश्रेणिका परिकर्म क्या है? मनुष्य श्रेणिका-परिकर्म चौदह प्रकार के कहे गए हैं। यथा — पूर्वोक्त मातृका पद से लेकर नन्द्यावर्त तक तथा मनुष्य बद्ध परिकर्म। यह सब मनुष्यश्रेणिका परिकर्म है।

What is Manushya-shrenika Parikarma?

Manushya-shrenika Parikarmas have been said of fourteen types as : from above mentioned Matrikapada to Nandyavarta and Manushya-badha Parikarma.

५६१–अवसेसा परिकम्माइं पुट्ठाइयाइं एक्कारसविहाइं पन्नत्ताइं। इच्चेयाइं सत्त परिकम्माइं ससमइयाइं, सत्त आजीवियाइं, छ चउक्कणइयाइं, सत्त तेरासियाइं। एवामेव सपुव्वावरेणं सत्त परिकम्माइं तेसीति भवंतीतिमक्खायाइं। से तं परिकम्माइं।

श्रेणिका परिकर्म से लेकर शेष परिकर्म ग्यारह-ग्यारह प्रकार के कहे गए हैं। पूर्वोक्त सातों परिकर्म स्वसामयिक हैं अर्थात् जैन मत के अनुसार हैं सात आजीविक मत के अनुसार हैं छह परिकर्म चतुष्कनय वालों के मत के अनुसार हैं तथा सात परिकर्म त्रैराशिक मत के अनुसार हैं। इस प्रकार ये सातों परिकर्म पूर्वापर भेदों की अपेक्षा तिरासी होते हैं। ये सब परिकर्म हैं।

Beginning from Prishatha Shrenik Parikarman the remaining Parikarmas are of eleven types each. Above said first seven Parikarma belong to *Swa-samay*, i.e. according to the Jainism, the next seven parikarma are of *Ajeevika faith*, Six Parikarmas are according to the faith of Chatushak naya. Seven Parikarmas are based on Trai-rashik faith. Thus, with regards to the pre and post divisions of all these seven Parikarmas the total number of these parikarmas are eighty three.

५६२–से किं तं सुत्ताइं ? सुत्ताइं अट्ठासीति भवंतीतिमक्खायाइं। तं जहा–उजुगं परिणयापरिणयं बहुभंगियं विप्पच्चइयं [विन (ज) यचरियं] अणंतरं परंपरं समाणं संजूहं (मासाणं) संभिन्नं अहाच्चयं (अहव्वायं) सोवत्थि (वत्तं) णंदावत्तं बहुलं पुट्ठापुट्ठं वियावत्तं एवंभूयं दुआवत्तं वत्तमाणप्पयं समभिरूढं सव्वओ भद्दं पणामं (पण्णासं) दुपडिग्गहं इच्चेयाइं वावीसं सुत्ताइं छिण्णछेअणइआइं ससमय-सुत्तपरिवाडीए, इच्चेआइं वावीसं सुत्ताइं अछिन्नछेयनइयाइं आजीवियसुत्तपरिवाडीए, इच्चेआइं वावीसं सुत्ताइं तिकणइयाइं तेरासियसुत्तपरिवाडीए, इच्चेआइं वावीसं सुत्ताइं चउक्कणइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए। एवामेव सपुव्वावरेण अट्ठासीति सुत्ताइं भवंतीतिमक्खयाइं। से तं सुत्ताइं।

सूत्र क्या है? सूत्र अठासी प्रकार के कहे गए हैं। यथा —१. ऋजुक सूत्र, २. परिणतापरिणत सूत्र, ३. बहुभंगिक सूत्र, ४. विजयचर्चा सूत्र, ५. अनन्तर सूत्र, ६. परम्पर सूत्र, ७. समान (समानस) सूत्र, ८. संजूह–संयूथ (जूह) सूत्र, ९. संभिन्न सूत्र, १०. अहाच्चाय सूत्र, ११. सौवस्तिक सूत्र, १२. नन्द्यावर्त सूत्र, १३. बहुल सूत्र, १४. पृष्टापृष्ट सूत्र, १५. व्यावृत्त सूत्र, १६. एवंभूत सूत्र, १७. द्वयावर्त्त सूत्र, १८. वर्तमानात्मक सूत्र, १९. समभिरूढ़ सूत्र, २०. सर्वतोभद्र सूत्र, २१. पणाम (पण्णास) सूत्र, २२. दुष्प्रतिग्रह सूत्र। ये बाईस सूत्र स्वसमय सूत्र परिपाटी से छिन्नच्छेदनयिक हैं। ये ही बाईस सूत्र आजीविक सूत्र परिपाटी से अच्छिन्न छेदनयिक हैं। ये ही बाईस सूत्र त्रैराशिक सूत्र परिपाटी से त्रिकनयिक हैं तथा ये ही बाईस सूत्र स्वसमय सूत्र परिपाटी से चतुष्कनयिक हैं। इस प्रकार ये समस्त पूर्वापर भेद मिलकर अठासी सूत्र होते हैं। यह सूत्र नाम का दूसरा भेद है।

What is Sutra?

Sutras have been stated of eighty eight types as: 1. Rizuk Sutra, 2. Parinata-Parinat Sutra, 3. Bahubhangik Sutra, 4. Vijay Charca Sutra, 5. Anautar Sutra, 6. Parampar Sutra, 7. Saman (samanas) Sutra, 8. Samjubh-Samyuth (Juhu) Sutra, 9. Sambhin Sutra, 10. Ahachchaya Sutra, 11. Sauvanstik Sutra,

12. Nandyavart Sutra, 13. Bahul Sutra, 14, Prishth-aprishtha Sutra, 15. Vyakrit Sutra, 16. Aivambhoot Sutra, 17. Dvayavart Sutra, 18. Vartmanatamak Sutra, 19. Sambhirudh Sutra, 20. Sarvatobhadra Sutra, 21. Pannam (pannas) Sutra, 22. Yushpratigraha Sutra, These twenty two sutras are Swa-Samaya Sutras according to tradition these are Chhinac chhedanayik. According to the tradition of *Ajeevika* Sutras these twenty two sutras are called 'Achhinach-chhedanayika Sutras'. According to the tradition of Trerashik Sutra these twenty two Samayan are 'Chatashak Nayika Sutras'. Thus all these sutras become eighty eight. This one is the second division of Sutra-nama.

५६३–से किं तं पुव्वगयं? पुव्वगयं चउद्दसविहं पन्नत्तं, तं जहा–उप्पायपुव्वं अग्गेणीयं वीरियं अत्थिनत्थिप्पवायं नाणप्पवायं सच्चप्पवायं आयप्पवायं कम्मप्पवायं पच्चक्खाणप्पवायं विज्जाणुप्पवायं अबंझप्पवायं पाणाउप्पवायं किरियाविसालं लोगबिन्दुसारं १४।

यह पूर्वगत क्या है? इसमें क्या-क्या वर्णन है?

पूर्वगत चौदह प्रकार के कहे गए हैं। यथा — १. उत्पाद पूर्व, २. अग्रायणी पूर्व, ३. वीर्यप्रवादपूर्व, ४. अस्तिनास्तिप्रवाद पूर्व, ५. ज्ञान प्रवाद पूर्व, ६. सत्यप्रवाद पूर्व, ७. आत्मप्रवाद पूर्व, ८. कर्मप्रवाद पूर्व, ९. प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व, १०. विद्यानुप्रवादपूर्व, ११. अबन्ध्यपूर्व, १२. प्राणायुर्पूर्व, १३. क्रियाविशाल पूर्व, १४. लोक-बिन्दुसार पूर्व।

What this Poorvagata is? What has been narrated in it?

Poorvagata has been said of fourteen types as : 1. Utpad Poorva, 2. Agrayani Poorva, 3. Viryapravad Poorva, 4. Astinasti Pravad Poorva, 5. Gyan Pravad Poorva, 6. Satya Pravad Poorva, 7. Atama Pravad Poorva, 8. Karam Pravad Poorva, 9. Pratyakhyan Pravad Poorva, 10. Vidyanupravad Poorva, 11. Abandhya Poorva, 12. Pranayu Poorva, 13. Kriyavishal Poorval, and 14. Lokbindusar Poorva.

५६४–उप्पायपुव्वस्स णं दस वत्थू पण्णत्ता। चत्तारि चूलियावत्थू पण्णत्ता। अग्गेणियस्स णं पुव्वस्स चोद्दस वत्थू, बारस चूलियावत्थू पण्णत्ता। वीरियप्पवायस्स णं पुव्वस्स अट्ठ वत्थू अट्ठ चुलियावत्थू पण्णत्ता। अत्थिणत्थिप्पवायस्स णं पुव्वस्स अट्ठारस वत्थू दस चूलियावत्थू पण्णत्ता। नाणप्पवायस्स णं पुव्वस्स बारस वत्थू पण्णत्ता। सच्चप्पवायस्स णं पुव्वस्स दो वत्थू पण्णत्ता। आयप्पवायस्स णं पुव्वस्स सोलस वत्थू पण्णत्ता। कम्मप्पवायपुव्वस्स णं तीसं वत्थू पण्णत्ता। पच्चक्खाणस्स णं पुव्वस्स वीसं वत्थू पण्णत्ता। विज्जाणुप्पवायस्स णं पुव्वस्स पन्नरस वत्थू पण्णत्ता। अबंझस्स णं पुव्वस्स बारस वत्थू पण्णत्ता। पाणाउस्स णं पुव्वस्स तेरस वत्थू पण्णत्ता। किरियाविसालस्स णं पुव्वस्स तीसं वत्थू पण्णत्ता। लोगबिन्दुसारस्स णं पुव्वस्स पणवीसं वत्थू पण्णत्ता।

चौदह पूर्वों के अधिकार आदि का वर्णन इस प्रकार से है। उत्पाद पूर्व की दश वस्तु यानि दश अधिकार हैं और चार चूलिकावस्तु हैं। अग्रायणीय पूर्व की चौदह वस्तु और बारह-चूलिका वस्तु हैं। वीर्य प्रवाद पूर्व की आठ वस्तु और आठ चूलिका वस्तु हैं। अस्तिनास्तिप्रवाद पूर्व की अठारह वस्तु और दश चूलिका वस्तु हैं। ज्ञान प्रवाद पूर्व की बारह वस्तु हैं। सत्य प्रवाद पूर्व की दो वस्तु हैं। आत्मप्रवाद पूर्व की सोलह वस्तु हैं। कर्म प्रवाद पूर्व की तीस वस्तु हैं। प्रत्याख्यान पूर्व की बीस वस्तु हैं। विद्यानुप्रवादपूर्व की पन्द्रह वस्तु हैं। अबन्ध्य पूर्व की बारह वस्तु हैं। प्राणायुपूर्व की तेरह वस्तु हैं। क्रियाविशाल पूर्व की तीस वस्तु हैं। लोकबिन्दुसार पूर्व की पच्चीस वस्तु कही गई हैं।

Jurisdictions etc of the fourteen Poorvas are described as such:– There are ten objects i.e. ten authorities of Utpada-poorva and four Chulikas (annexure), fourteen object and twelve Chulikas of Agrayani Poorva, eight objects and eight Chulikas of Virya Pramad Poorva, eighteen objects and ten chulikas of Astinaastic Pravad Poorva, twelve Objects of Gyan Pravad Poorva, two objects of Satya Pravad Poorva, sixteen objects of Atamn Pravad Poorva, thirty objects of Karama Pravad Poorva, twenty objects of PratyaKhyan Poorva, fifteen objects of Vidyanupravad Poorvas. There are twelve objects of Abandhya Poorva, Prannaya Poorva has thirteen objects. Thirty objects are of Kriyavishal, fifty five objects have been said of Lokbindusaar.

५६५ – **दस चोद्दस अट्ठट्ठारसे व बारस दुवे य वत्थूणि।**
सोलस तीसा वीसा पन्नरस अणुप्पवाययंमि।।१।।

बारस एक्कारसमे बारसमे तेरसमे वत्थूणि।
तीसा पुण तेरसमे चउदसमे पन्नवीसाओ।।२।।

चत्तारि दुवालस अट्ठ चेव दस चेव चूलवत्थूणि।
आइल्लाण चउण्हं सेसाणं चूलिया णत्थि।।३।।

से तं पुव्वगयं।

उपर्युक्त वस्तुओं की संख्याओं का प्रतिपादन करने वाली गाथाएँ इस प्रकार हैं– प्रथम पूर्व में दश, दूसरे में चौदह, तीसरे में आठ, चौथे में अठारह, पाँचवें में बारह, छठे में दो, सातवें में सोलह, आठवें में तीस, नवमें में बीस, दशवें विद्यानुप्रवाद में पन्द्रह, ग्यारहवें में बारह, बारहवें में तेरह, तेरहवें में तीस और चौदहवें में पच्चीस वस्तु नाम महाधिकार हैं। आदि के चार पूर्व में क्रम से चार, बारह, आठ और दश चूलिका नामक अधिकार हैं। शेष दश पूर्वों में चूलिका नामक अधिकार नहीं हैं। यह पूर्वगत है।

The couplets explaining the numbers of these aforesaid objects are as follows:

Ten in first poorva, fourteen in second, eight in third, eighteen in fourth, twelve in fifth, two in sixth, sixteen in seventeen, thirty in eighth, twenty in nineth, fifteen in tenth vidyanu pravad, thirteen in twelfth pravad, thirty in thirteenth and twenty five in fourteenth pravad are the great entitlement of the objects. In the first four Poorvas in sequence of four, twelve, eight and ten Chulika naamak entitlement are there. In the remaining ten Poorvas there is no object entitlement in the name of chulika (annexure). It is Poorvagat.

५६६–से किं तं अणुओगे? अणुओगे दुविहे पण्णत्ते। तं जहा–मूलपढमाणुओगे य गंडियाणुओगे य। से किं तं मूलपढमाणुओगे? एत्थ णं अरहंताणं भगवंताणं पुव्वभवा देवलोगगमणाणि आउं चवणाणि जम्मणाणि अ अभिसेया रायवरसिरीओ सीयाओ पव्वज्जावो तवा य भत्ता केवलणाणुप्पाया अ तित्थपवत्तणाणि अ संघयणं संठाणं उच्चत्तं आउं वन्नविभागो सीसा गणा गणहरा य अज्जा पवत्तणीओ संघस्स चउव्विहस्स जं वावि परिणामं जिण-मणपज्जव-ओहिनाण-सम्मत्त-सुयनाणिणो य वाई अणुत्तरगई य जत्तिया सिद्धा पाओवगआ य जे जहिं जत्तियाइं भत्ताइं छेअइत्ता अंतगडा मुणिवरुत्तमा तम-रओघविप्पमुक्का सिद्धिपहमणुत्तरं च पत्ता, एए अन्ने य एवमाइया भावा मूलपढमाणुओगे कहिआ आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। से तं मूलपढमाणुओगे।

अनुयोग क्या है? उसमें क्या-क्या वर्णन है। अनुयोग दो प्रकार का कहा गया है। यथा–१. मूल प्रथमानुयोग, २. गंडिकानुयोग। इस मूल प्रथमानुयोग में क्या-क्या है?

मूल प्रथमानुयोग में अरहन्त-भगवन्तों के पूर्वभव, देवलोक गमन, देवभव सम्बन्धी आयु, च्यवन, जन्म, जन्माभिषेक, राज्यवरश्री, शिविका, प्रव्रज्या, तप, भक्त (आहार), केवलज्ञानोत्पत्ति, वर्ण, तीर्थ-प्रवर्तन, संहनन, संस्थान, शरीर-उच्चाता, आयु, शिष्य, गण, गणधर, आर्या, प्रवर्तिनी, चतुर्विधसंघ का परिमाण, केवलि-जिन, मन: पर्यवज्ञानी, अवधिज्ञानी, सम्यक् मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी, वादी, अनुत्तर विमानों में उत्पन्न होने वाले साधु, सिद्ध, पादपोपगत, जो जहाँ जितने भक्तों का छेदन कर उत्तम मुनिवर अन्तकृत हुए, तमोरज-समूह से विप्रमुक्त हुए, अनुत्तर सिद्धिपथ को प्राप्त हुए, इन महापुरुषों का तथा इसी प्रकार के अन्य भाव मूल प्रथमानुयोग में कथित हैं, वर्णित हैं, प्रज्ञापित हैं, प्ररूपित हैं, निर्देशित और उपदर्शित हैं। यह मूल प्रथमानुयोग है।

What is Anuyoga? What has been narrated in it?

Anuyoga has been said of two types as : 1. Fundamental Pratham Anuyoga and Gandika Anuyoga. What is there in fundamental Prathama Anuyoga? In the fundamental or in the original Pratham Anuyoga the previous lives of Arihant Bhagwan and their journey to celestial vehicles, the life span during the birth as a celestial being, descending from god's life, birth, birth celebrations, enjoyment of kingdom, Palanquin, consecration, penance, Ahar

(food), attaining omniscience, complexion, establishment of ford (Tirth) molecules joints (samhanan), structure (sansthan), height of the body, age, disciples, ascetic groups, head of the ascetic groups, Aryakas, Pravartin, Size of four fold religious organization and Chaturvidh Sangh, omniscient lords, mental mode knowledge holder, clairvoyant, right sensory knowledge holder, scriptures knowledge holder, debater, his monks who reincarnated into Annuttar celestial vehicles. Sidha, padapogata, renouncing the food the great monks became the Antkrit, became liberated from the accumulated dark dust of Karmas & got the not returnable path of Sidha. The description of all these great persons and the other persons similar to them has been stated, narrated, propounded, instructed and shown and expounded in this fundamental Prathama Anuyoga-Sutra. This one is the fundamental Anuyoga.

५६७–से किं तं गंडियाणुओगे? [गंडियाणुओगे] अणेगविहे पण्णत्ते, तं जहा–कुलगर-गंडियाओ तित्थगरगंडियाओ गणहरगंडियाओ चक्कहरगंडियाओ दसारगंडियाओ बलदेवगंडियाओ वासुदेवगंडियाओ हरिवंसगंडियाओ भद्दबाहुगंडियाओ तवोकम्मगंडियाओ चित्तंतरगंडियाओ उस्सप्पिणीगंडियाओ ओसप्पिणीगंडियाओ अमर-नर-तिरिय-निरयगइगमण-विविहपरियट्टणाणुओगे, एवमाइयाओ गंडियाओ आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। से तं गंडियाणुओगे।

इस गंडिकानुयोग में क्या-क्या है? गंडिकानुयोग अनेक प्रकार का कहा गया है। यथा — १. कुलकरगंडिका, २. तीर्थंकरगंडिका, ३. गणधर गंडिका, ४. चक्रवर्ती गंडिका, ५. दशारगंडिका, ६. बलदेव गंडिका, ७. वासुदेव गंडिका, ८. हरिवंश गंडिका, ९. भ्रदबाहु गंडिका, १०. तपः कर्म गंडिका, ११. चित्रान्तर गंडिका, १२. उत्सर्पिणी गंडिका, १३. अवसर्पिणी गंडिका, १४. देव, मनुष्य, तिर्यञ्च और नरक गतियों में गमन तथा विविध योनियों में परिवर्तनानुयोग इत्यादि। उपरोक्त गंडिकाएँ इस गंडिकानुयोग में कथित हैं, प्ररूपित हैं, निर्देशित और उपदर्शित हैं। यह गंडिकानुयोग है।

What has been narrated in this Gandika Anuyoga?

Gandika Anuyoga has been said of many types as : 1. Kulkar gandika, 2. Fordmaker gandika, 3. Head of the aseptic group gandika (gandhar gandika), 4. Chakarvarti (Supreme lord) gandika, 5. Dashar gandika, 6. Co-lord (Beldeva) gandika, 7. Lord (Vasudeva gandika), 8. Harivansh gandika, 9. Bhadrabahu gandika, 10. Taph-karma gandika, 11. Chitrantar gandika, 12. Utsarpini (ascending time cycle) gandika, 13. Avasarpini (descending time cycle) gandika, 14. Going in realms of celestial being, human being, plant and animal being and hellish being and taking birth in different yonies i.e., Parivartana Anuyoga etc. The above mentioned gandikas have been said, propounded, expounded, instructed and illustrated in it. This one is the Gandika-Anuyoga.

५६८–से किं तं चूलियाओ ? जण्णं आइल्लाणं चउण्हं पुव्वाणं चूलियाओ, सेसाइं पुव्वाइं अचूलियाइं। से तं चूलियाओ।

यह चूलिका क्या है?

आदि के चार पूर्वों में चूलिका नामक अधिकार है। शेष दश पूर्वों में चूलिकाएँ नहीं हैं। यह चूलिका है।

What is Chulika (Annexure)?

In first four Poorvas the entitlement in the name of Chulika has been given. In the remaining ten poorvas there is no chulikas. This is narrated as Chulika.

५६९–दिट्ठिवायस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ संगहणीओ।

दृष्टिवाद की परीत वाचनाएँ हैं, संख्यात अनुयोग द्वार हैं, संख्यात प्रतिपत्तियाँ हैं, संख्यात निर्युक्तियाँ हैं, संख्यात श्लोक हैं, और संख्यात संग्रहणियाँ हैं।

The texts are limited of Drishtivad, Anuyogadwars are countable, Pratipattiya are countable, Niryukatiyas are countable, couplets are countable and Samgrahamyas are countable.

५७०–से णं अंगट्ठयाए बारसमे अंगे, एगे सुअक्खंधे, चउद्दस पुव्वाइं, संखेज्जा वत्थू, संखेज्जा चूलवत्थू, संखेज्जा पाहुडा, संखेज्जा पाहुड-पाहुडा, संखेज्जाओ पाहुडियाओ, संखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ, संखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पयग्गेणं पण्णत्ताइं। संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासया कडा णिबद्धा णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। से एवं आया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणया आघविज्जंति। से तं दिट्ठिवाए। से तं दुवालसंगे गणिपिडगे।

अंगरूप से यह दृष्टिवाद बारहवाँ अंग है। इस अंग में एक श्रुतस्कन्ध है, चौदह पूर्व हैं, संख्यात वस्तु हैं, संख्यात चूलिकावस्तु हैं, संख्यात प्राभृत हैं, संख्यात प्राभृत-प्राभृत हैं, संख्यात प्राभृतिकाएँ हैं, संख्यात प्राभृत-प्राभृतिकाएँ हैं। पद-गणना की अपेक्षा से संख्यात लाख पद कहे गए हैं। संख्यात अक्षर हैं, अनन्त गम हैं, अनन्त पर्याय हैं, परीत त्रस हैं, अनन्त स्थावर हैं। ये सब शाश्वत, कृत, निबद्ध, निकाचित, जिन-प्रज्ञप्त भाव इस दृष्टिवाद मे कथित हैं, प्रज्ञापित हैं, प्ररूपित हैं, दर्शित हैं निदर्शित हैं तथा उपदर्शित हैं। इस अंग का अध्येता आत्मा ज्ञाता और विज्ञाता होता है, इस प्रकार चरण और करण की प्ररूपणा के द्वारा वस्तु के स्वरूप का कथन, प्रज्ञापन, निदर्शन व उपदर्शन किया जाता है। यह बारहवाँ दृष्टिवाद अंग है। यह द्वादशांग गणि-पिटक का वर्णन है।

In the forms of canons this Drishthivad is the twelfth canon. There is one Shrut section in it, fourteen poorvas, countable objects, countable Chulika objects, countable Prabharat-Prabharat, countable prabharitikas, with respect to the number of couplets countable lac couplets have been stated.

Alphabets are countable, beginnings are infinite, modes are infinite, mobile beings are limited, stationary beings are infinite. All these eternal, performed, unbounded, Nikachit dispositions Lord Arihant has stated propounded, expounded, instructed and shown in the Drishtivad. The reader of this canon becomes the knower and realiser of the SELF. In this way through the description of Charan-Karma the mode of the matter has been said, propounded, expounded, instructed and illustrated. This twelfth canon is called Dristhivada. Thus the description of Gani Pitak has been made.

५७१–इच्चेइंय दुवालसंगं गणिपिडगं अतीतकाले अणंता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिंसु। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पणे काले परित्ता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टंति। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिस्संति।

इस द्वादशांग गणिपिटक की सूत्र-रूप, अर्थरूप, उभयरूप आज्ञा का विराधन करके अर्थात् दुराग्रह के वशीभूत होकर अन्यथा सूत्रपाठ करके, अन्यथा अर्थ कथन करके व अन्यथा सूत्रार्थ-उभय की प्ररूपणा करके अनन्त जीवों ने भूतकाल (अतीत काल) में चतुर्गति रूप संसार-कान्तार में परिभ्रमण किया है, इस द्वादशांग गणि-पिटक की सूत्र-अर्थ-उभयरूप आज्ञा का विराधन करके वर्तमान काल में परीत जीव चतुर्गति रूप संसार-कान्तार में परिभ्रमण कर रहे हैं और इसी द्वादशांग गणि-पिटक की सूत्र-अर्थ-उभय रूप आज्ञा का विराधन कर भविष्य काल में अनन्त जीव चतुर्गति रूप संसार-कान्तार में परिभ्रमण करेंगे।

Being overpowered by the excessive stubbornness or reciting the Sutras in other way, making the conclusion in another way of it, not obeying the orders of sutras-mode, conclusion mode and either mode of this Gani Pitak (twelve canons), the infinite beings have wandered in this four fold realms of worldly ocean. In present time the limited beings are traveling in this four fold realms of world ocean by not obeying the commands of this Ganipitak (twelve canons) and infinite beings will be going in future in this four fold realms of world ocean by not obeying the sutras, meaning and both of the Gani Pitak (twelve canons).

५७२–इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अतीतकाले अणंता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंत-संसारकंतारं वीईवइंसु। एवं पडुप्पणेऽवि [परित्ता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतसंसारकंतारं

वीईवंति] एवं अणागए वि [अणंता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतसंसारकंतारं वीईवइस्संति]।

इस द्वादशांग गणि-पिटक की सूत्र-अर्थ उभयरूप आज्ञा का आराधन करके अनन्त जीवों ने भूतकाल में, परिमित जीव वर्तमान काल में तथा अनन्त जीव भविष्य काल में चतुर्गति रूप संसार-कान्तार को पार किया है, पार कर रहे हैं, और पार करेंगे।

Through propitiating this Gani Pitak (twelve canons) meanings and in the both forms, infinite beings in past, limited beings in present and infinite beings in future will cross, are crossing and have crossed this four fold realms of world ocean.

५७३–दुवालसंगे णं गणिपिडगे ण कयाइ णासी, ण कयावि णत्थि, ण कयाइ ण भविस्सइ। भुंवि च, भवति य, भविस्सति य। धुवे नितिए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे। से जहा णामए पंच अत्थिकाया ण कयाइ ण आसि, ण कयाइ णत्थि, ण कयाइ ण भविस्संति। भुविं च, भवति य, भविस्संति य, धुवा णितिया सासया अक्खया अव्वया अवट्ठिया णिच्चा। एवामेव दुवालसंगे गणिपिडगे ण कयाइ ण आसि, ण कयाइ णत्थि, ण कयाइ ण भविस्सइ। भुविं च, भवति य, भविस्सइ य। धुवे जाव अवट्ठिए णिच्चे।

यह द्वादशांग गणि पिटक भूतकाल मैं कभी नहीं था, ऐसा नहीं है, वर्तमान काल में कभी नहीं है, ऐसा नहीं है तथा भविष्य काल में कभी नहीं रहेगा; ऐसा भी नहीं है। किन्तु भूतकाल में भी यह द्वादशांग गणि-पिटक था, वर्तमान काल में भी है और भविष्य काल में भी रहेगा। क्योंकि यह द्वादशांग गणि पिटक मेरु पर्वत सदृश ध्रुव है, लोक व काल सदृश नियत और शाश्वत है, निरन्तर-वाचना देने पर भी इसका क्षय नहीं होने के कारण अक्षय है, गंगा-सिन्धु नदियों के प्रवाह के समान अव्यय है, जम्बूद्वीप आदि के सदृश अवस्थित है और आकाश सदृश नित्य है। जिस प्रकार पंचास्तिकाय द्रव्य भूतकाल में कभी नहीं थे, ऐसा नहीं है, वर्तमान काल और भविष्य काल में कभी नहीं हैं, कभी नहीं रहेंगे, ऐसा भी नहीं है। किन्तु ये पाँचों अस्तिकाय द्रव्य भूतकाल में भी थे, वर्तमानकाल में भी हैं और भविष्यकाल में भी रहेंगे। अस्तु, ये पंचास्तिकाय द्रव्य ध्रुव हैं, नियत हैं, शाश्वत हैं अक्षय हैं, अव्यय हैं, अवस्थित हैं और नित्य हैं। इसी प्रकार यह द्वादशांग गणि पिटक भूतकाल में, कभी नहीं था, ऐसा नहीं है, इसी प्रकार यह द्वादशांग गणि पिटक वर्तमानकाल में भी और भविष्यकाल में भी कभी नहीं है और कभी नहीं रहेगा, ऐसा भी नहीं है। किन्तु भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल अर्थात् तीनों काल में भी यह था, यह है और यह रहेगा। अतः यह ध्रुव है, नियत है, शाश्वत है, अक्षय है, अव्यय है, अवस्थित है तथा नित्य है।

It is not so that these twelve canon (Ganipitak) ever were not in past, are not in present or will not be in future. But these were even in past, these are

even in present and will even be in future. Because these twelve canons Gani Pitak are as permanent as Mountain Meru, eternal and fixed like as cosmos and time. These are indestructible after reading them constantly. It is inexhaustible inflow like the river Ganga and Sindhu, it is permanent similar to sky and fixed as like as Jambu continent. It is not so that the five elements having physical body were not in past, are not in present, and will not be in future. But all these five physical bodied substances were even in past, are even in present and will even be in future. Therefore, all these five physical bodied matter are permanent, fixed, eternal, indestroyable, inexhaustible, established and perpetual. Thus it is not that it was not in past, it is not so that it is not in present and it is not so that the twelve canons Gani Pitak will not be in future. But it was even in past, it is even in present and it will even be in future i.e. in all the three times–past, present and future. Hence, it is permanent fixed, eternal, indestroyable, inexhaustible, established and perpetual.

५७४–एत्थ णं दुवालसंगे गणिपिडगे अणंता भावा, अणंता अभावा, अणंता हेऊ, अणंता अहेऊ, अणंता कारणा, अणंता अकारणा, अणंता जीवा, अणंता अजीवा, अणंता भवसिद्धिया, अंणता अभवसिद्धिया, अंणता सिद्धा, अणंता असिद्धा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। एवं दुवालसंगं गणिपिडगं ति।

इस द्वादशांग गणि पिटक में अनन्त भाव (जीवादि स्वरूप से सत् पदार्थ) तथा अनन्त अभाव (पररूप से असत् जीवादि वही पदार्थ), अनन्त हेतु, उनके प्रतिपक्षी अनन्त हेतु, इसी प्रकार अनन्त कारण, अनन्त अकारण, अनन्त जीव, अनन्त अजीव, अनन्त भव्यसिद्धिक, अनन्त अभव्य-सिद्धिक, अनन्त सिद्ध तथा अनन्त असिद्ध कहे जाते हैं, प्रज्ञापित किए जाते हैं, प्ररूपित किये जाते हैं, दर्शित, निदर्शित व उपदर्शित किए जाते हैं।

In these twelve canons (Gani Pitak), there are infinite dispositions (real matter, in beings forms) and indispositions (the same matter in unreal mode of beings), infinite matter, infinite opposite motives. In this way infinite causes, infinite non-causes, infinite non-causes, infinite living beings, infinite non-living beings, infinite capable of salvation, infinite incapable of salvation, infinite siddha, infinite not-liberated beings are said, propounded, expounded, shown, instructed and displayed.

५७५–एवं दुवालसंगं गणिपिडगं ति।

इस प्रकार द्वादशांग गणि पिटक का वर्णन समाप्त हुआ।

The end of twelve canons Gani Pitakas description.

○○

विविध विषय निरूपण

Description of various Titles

५७६–दुवे रासी पन्नत्ता, तं जहा–जीवरासी अजीवरासी य। अजीवरासी दुविहा पन्नत्ता। तं जहा–रूवी अजीवरासी अरूवी अजीवरासी य।

राशियाँ दो प्रकार की कही गई हैं। यथा–1. जीव राशि, 2. अजीव राशि। अजीव राशि भी दो प्रकार की कही गई है। यथा–1.रूपी अजीवराशि, 2. अरूपी अजीवराशि।

Rashiyas (Mass) have been said of two types as : 1. Jeeva-rashi (Mass of living beings), 2. Ajeeva-rashi (mass of non-living beings). The ajeeva-rashi, too, have been said of two types : 1. concrete Ajeeva-rashi (having physical form, 2. Abstract Ajeeva-rashi (formless).

५७७–से किं तं अरूवी अजीवरासी? अरूवी अजीवरासी दसविहा पन्नत्ता, तं जहा–धम्मत्थिकाए जाव [धम्मत्थिकायदेसा, धम्मत्थिकायपदेसा, अधम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकायदेसा, अधम्मत्थिकायपदेसा, आगासत्थिकाए, आगासत्थिकायदेसा, आगासत्थिकायपदेसा] अद्धासमए।

अरूपी अजीवराशि क्या है?

अरूपी अजीव राशि दश प्रकार की कही गई है। यथा–धर्मास्तिकाय यावत् (धर्मास्तिकाय देश, धर्मास्तिकाय प्रदेश, अधर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय देश, अधर्मास्तिकाय प्रदेश, आकाशास्तिकाय, आकाशास्तिकाय देश, आकाशास्तिकाय प्रदेश) और अद्धासमय।

What is formless (Aroopy) Ajeeva-rashi?

Abstract (formless) Aroop-Ajeeva-Rashi has been said of ten types as : 1. medium of movment (Dharmastikaya) as partial medium of movement, space point medium of movement. Medium of rest (Adharmastikaya) as partial Dharmastikaya space point. Space bodied (Akashestikay) as partial space bodies and space bodies space points and Adha-Time (Samaya)

५७८–रूवी अजीवरासी अणेगविहा पन्नत्ता जाव.....

रूपी अजीव राशि क्या है?

रूपी अजीवराशि अनेक प्रकार की कही गई है।

यावत्.....।

विविध - विषय

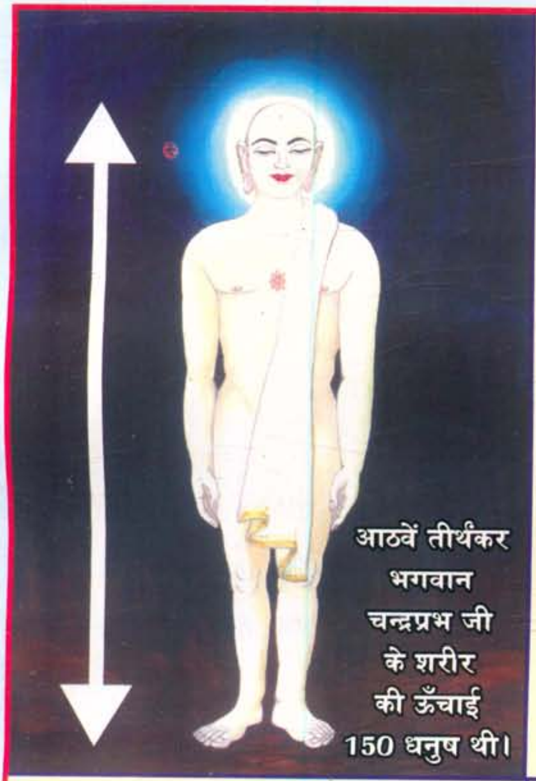

राशि दो : जीव राशि, अजीव राशि

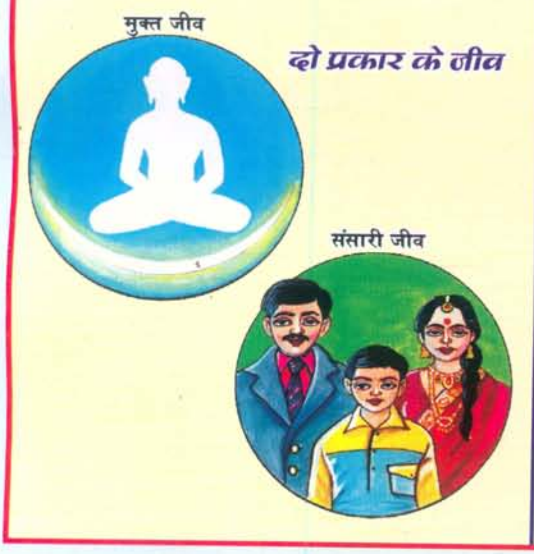

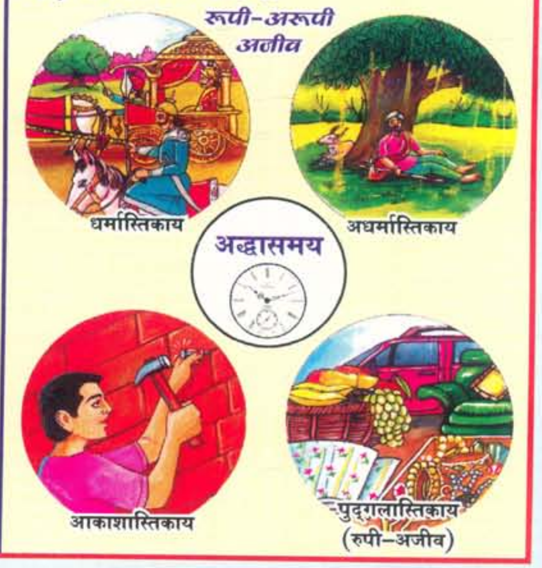

विविध - विषय

आठवें अर्हत् भगवान चन्द्रप्रभ डेढ़ सौ धनुष ऊँचे थे।

सूत्र सं. 451

The height of the eighth Ford-maker Bhagwan Chander Prabhu was one hundred fifty bows. [Sutra No. 451]

गुणों के गण (समूह) के धारक को गणि (आचार्य) कहा जाता है। पिटक का अर्थ मंजूषा (पेटी) है। गणियों के सर्वस्वरूप श्रुतरत्नों की मंजूषा को गणिपिटक कहा जाता है। गणिपिटक 12 हैं जिनका उल्लेख चित्र में किया गया है।

The holder of the group (gan) of attributions is called Acharya (Gani). The meaning of "Pitak" is the 'Box' (Container). The box of magnificent form Shrut Jewels of Acharyas has been said "Ganipitak". Ganipitak are twelve in numbers that have been shown in the picture.

जीव दो प्रकार के हैं–(1) संसारी जीव एवं (2) मुक्त जीव। संसारी जीवों में चारों गतियों के जीव आते हैं एवं सभी सिद्धि-प्राप्त जीव मुक्त जीवों में गिने जाते हैं।

सूत्र सं. 579

The living beings are of two types : 1. the transmigatory one, 2. The liberated one. The transmigatory beings are consist of all the four "Gatis" and the beings of "Sidh-gati" are counted as liberated one.

[Sutra No. 579]

अरूपी और रूपी अजीवराशि का विवरण। इनमें से पुद्गलास्तिकाय रूपी है, शेष धर्म, अधर्म आदि अरूपी हैं।

सूत्र सं. 577–578

The description of Concrete and Formless Ajeeva Rasi out of them the matter (Pudgalastikaya) is concrete and the remaining Dharamastikaya etc. are formless. [Sutra No. 577 – 578.

What is concrete (having form) Ajeeva-rashi? Having form Ajeeva-Rashi have been said of many types as : ....

५७९–[जीवरासी दुविहा पण्णत्ता। तं जहा–संसारसमावन्नगा य असंसारसमावन्नगा य। तत्थ असंसारसमावन्नगा दुविहा पण्णत्ता जाव।]

जीव-राशि क्या है?

(जीव-राशि के दो प्रकार कहे गए हैं। यथा–1. संसारसमापन्नक यानि संसारी जीव, 2. असंसारसमापन्नक यानि मुक्त जीव। इस प्रकार दोनों राशियों के भेद-प्रभेद प्रज्ञापना-सूत्र के अनुसार अनुत्तरोपपातिक सूत्र तक जानना चाहिए।)

What is Jeeva-rashi (living being mass)?

Two types of Jeeva Rashi have been said as : Empirical (state of transmigration) living beings, 2. Liberated living beings.

According from the Pragyapna Sutra upto Anuttaropapatik Sutra many divisions and sub-divisions of both the rashies (masses) should be known.

५८०–से किं तं अणुत्तरोववाइया? अणुत्तरोववाइआ पंचविहा पन्नत्ता। तं जहा–विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजित-सव्वट्ठसिद्धिआ। से तं अणुत्तरोववाइया। से तं पंचिंदियसंसार-समावण्ण-जीवरासी।

वे अनुत्तरोपपातिक देव क्या हैं?

अनुत्तरोपपातिक देवों के पाँच प्रकार कहे गए हैं। यथा–1. विजय-अनुत्तरोपपातिक देव 2. वैजयन्त अनुत्तरोपपातिक देव, 3. जयन्त-अनुत्तरोपपातिक देव, 4. अपराजित-अनुत्तरोपपातिक देव, 5. सर्वार्थसिद्धिक-अनुत्तरोपपातिक देव। ये समस्त अनुत्तरोपपातिक देव संसार समापन्नक जीवराशि हैं यानि संसारी जीव है। ये समस्त पंचेन्द्रिय संसार समापन्नक–जीवराशि हैं।

What the Anuttaropopatik celestial beings are? The types of Anuttorpapatik celestial beings have been said five as: 1. Celestial beings of Vijay Anuttarpapatik celestial vehicle, 2. Vijayant Anuttarpapatik Gods, 3. Jayant Anuttarpapatik Gods, 4. Aprajit Anuttarpapatik Gods and 5. Sarvarthsidhik Anuttarpapatik Gods. All these Anuttarpapatik Gods are to destroy this mundane life cycle i.e., are in state of transmigration. These all the five senses living beings are in the state of transmigration jeeva-rashies.

५८१–दुविहा णेरइया पण्णत्ता। तं जहा–पज्जत्ता य अपज्जत्ता य। एवं दंडओ भाणियव्वो जाव वेमाणिय त्ति।

नारक जीव दो प्रकार के कहे गए हैं। यथा–पर्याप्त नारक जीव, और अपर्याप्त नारक जीव। यहाँ पर भी (प्रज्ञापना सूत्र के अनुसार) वैमानिक देवों तक अर्थात् नारक, असुर कुमार, स्थावरकाय, द्वीन्द्रिय आदि, मनुष्य, व्यन्तर, ज्योतिष्क तथा वैमानिक का सूत्र-दंडक कहना चाहिए अर्थात् वर्णन समझ लेना चाहिए।

Hellish beings have been said of two types as : 1. Matured (paryapt) hellish beings, 2. Immatured (aparyapt) hellish beings. Even here, too, (according to Pragyapana Sutra) from hellish beings to gods of celestial vehicles, Asur Kumar (fiendish beings, stationary beings) bisensual beings, human beings, peripatetic, stellar and heavenly beings should be said 'Sutra-Dandak'.

५८२–इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए केवइयं खेत्तं ओगाहेत्ता केवइया णिरयावासा पण्णत्ता? गोयमा! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स-बाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं ओगाहेत्ता हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जेत्ता मज्झे अट्ठसत्तरिं जोयणसयसहस्से एत्थ णं रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयाणं तीसं णिरयावाससयसहस्सा भवंतीतिमक्खाया। ते णं णिरयावासा अंतो वट्टा, बाहिं चउरंसा जाव असुभा णिरया, असुभाओ णिरएसु वेयणाओ। एवं सत्त वि भाणियव्वाओ जं जासु जुज्जइ–

इस रत्नप्रभा पृथ्वी में कितना क्षेत्र अवगाहन कर कितने नारकवास कहे गए हैं? गौतम! रत्नप्रभा पृथ्वी एक लाख अस्सी हजार योजन मोटी है। इस पृथ्वी के ऊपर से एक हजार योजन अवगाहन कर, तथा सबसे नीचे के एक हजार योजन क्षेत्र को छोड़कर मध्यवर्ती एक लाख अठहत्तर हजार योजन वाले रत्नप्रभा पृथ्वी के भाग में तीस लाख नारकावास हैं। वे नारक-आवास भीतर की ओर गोल तथा बाहर की ओर चौकोर हैं यावत् वे नरक अशुभ कहे गए हैं और उन नरकों में अशुभ वेदनाएँ हैं। इसी प्रकार सातों ही पृथ्वियों का वर्णन जिनमें जो युक्त हो, करना चाहिए।

How many infernal residences have been said of this Ratanprabh Land and in how much deep area?

Hey Gautam! The Ratanprabha hell is one lac eighty thousand yojans thick. There are thirty lacs hellish residencies situated in the middle part measuring one lac seventy eight thousand yojans of this Ratan Prabha hell barring the one thousand yojana deep from its upper part and one thousand yojan of its lower part. These hell-residences are circular or round shaped in its inner part and quadrangular outwardly. So, all these hells have been said inauspicious and suffering are inauspicious there in these hells. Thus the description of all the seven hells, whatever is fit, should be done.

५८३ – आसीयं बत्तीसं अट्ठावीसं तहेव वीसं च।
अट्ठारस सोलसगं अट्ठुत्तरमेव बाहल्लं।।१।।

तीसा य पण्णवीसा पन्नरस दसेव सयसहस्साइं।
तिण्णेगं पंचूणं पंचेव अणुत्तरा नरगा।।२।।

चउसट्ठी असुराणं चउरासीइं च होइ नागाणं।
बावत्तरि सुवन्नाणं वाउकुमाराणं छण्णउई।।३।।

दीव-दिसा-उदहीणं विज्जुकुमारिंद-थणियमग्गीणं।
छण्हं पि जुवलयाणं छावत्तरिमो य सयसहस्सा।।४।।

बत्तीसट्ठावीसा बारस अट्ठ चउरो य सयसहस्सा।
पण्णा चत्तालीसा छच्च सया सहस्सारे।।५।।

आणय-पाणयकप्पे चत्तारि सयाऽऽरणच्चुए तिन्नि।
सत्त विमाणसयाइं चउसु वि एएसु कप्पेसु।।६।।

एक्कारसुत्तरं हेट्ठिमेसु सत्तुत्तरं च मज्झिमए।
सयमेगं उवरिमए पंचेव अणुत्तर विमाणा।।७।।

रत्नप्रभा सहित सातों पृथ्वियों की मोटाई यानि बाहल्य इस प्रकार से वर्णित है। यथा–1. रत्नप्रभा पृथ्वी का बाहल्य एक लाख अस्सी हजार योजन, 2. शर्करा पृथ्वी का बाहल्य एक लाख बत्तीस हजार योजन, 3. बालुका पृथ्वी का बाहल्य एक लाख अट्ठाईस हजार योजन, 4. पंकप्रभा पृथ्वी का बाहल्य एक लाख बीस हजार योजन, 5. धूमप्रभा पृथ्वी का बाहल्य एक लाख अट्ठारह हजार योजन, 6. तम:प्रभा पृथ्वी का बाहल्य एक लाख सोलह हजार योजन, 7. महातम:प्रभा पृथ्वी का बाहल्य एक लाख आठ हजार योजन।

रत्नप्रभा सहित सातों पृथ्वियों के नारकों के आवास इस प्रकार से कहे गए हैं। यथा – 1. रत्नप्रभा पृथ्वी में तीस लाख नारकावास, 2. शर्करा पृथ्वी में पच्चीस लाख नारकावास, 3. वालुका पृथ्वी में पन्द्रह लाख नारकावास, 4. पंक पृथ्वी में दश लाख नारकावास, 5. धूमप्रभा पृथ्वी में तीन लाख नारकावास, 6. तम:प्रभा पृथ्वी में पांच कम एक लाख नारकावास, 7. महातम: पृथ्वी में पाँच अनुत्तर नारकावास।

असुरकुमारों के चौसठ लाख भवन हैं। नागकुमारों के चौरासी लाख भवन हैं। सुपर्ण कुमारों के बहत्तर लाख भवन हैं। वायु कुमारों के छियानवें लाख भवन हैं।

द्वीप कुमार, दिशा कुमार, उदधि कुमार, विद्युत्कुमार, स्तनित कुमार, अग्नि कुमार, इन छहों युगलों के छियत्तर लाख भवन हैं।

विभिन्न कल्पों में विमानों की संख्या के विषय में कहा गया हैं कि सौधर्म कल्प में बत्तीस लाख विमान हैं। ईशानकल्प में अट्ठाईस लाख विमान हैं। सनत्कुमार कल्प में बारह लाख विमान हैं। माहेन्द्र कल्प में आठ लाख विमान हैं। ब्रह्मकल्प में चार लाख विमान हैं। लान्तक कल्प में पचास हजार विमान हैं। महाशुक्र विमान में चालीस हजार विमान हैं। सहस्रार कल्प में छह हजार विमान हैं।

आनत, प्राणत कल्प में चार सौ विमान हैं। आरण और अच्युत कल्प में तीन सौ विमान हैं। इस प्रकार इन चारों ही कल्पों में विमानों की संख्या सात सौ जानना चाहिए।

अधस्तन–नीचे के तीनों ही ग्रैवेयकों में एक सौ ग्यारह विमान हैं। मध्यम तीनों ही ग्रैवेयकों में एक सौ सात विमान हैं। उपरिम तीनों ही ग्रैवेयकों में एक सौ विमान हैं। अनुत्तर विमान की संख्या पाँच कही गई है।

Including Ratan Prabha Hell the thickness of all the seven hells has been described as follows : 1. one lac eighty thousand yojans of Ratan Prabha hell, 2. One lac thirty two thousand yojans of Pebble hue hell (Sarkaraprabha hell), 3. one lac twenty eight thousand yojans of sand hue hell (Balukaprabha hell), 4. One lac twenty thousand yojans of mud hue hell (Pankprabha hell), 5. one lac eighteen thousand yojans of smoke hue hell (Dhumrprabha hell), 6. one lac sixteen thousand yojans of dark hue hell (Tamprabha hell), 7. one lac eight thousand yojans of pitch dark hue hell (Mahatamhprabha hell).

The residences of these hellish beings of all the seven hells including this Ratanprabha hell have been said as follows : 1. Thirty lacks in Ratanprabha hell, 2. twenty five lacs in pebble hue hell, 3. fifteen lacs in sand hue hell, 4. ten lacs in mud hue hell, 5. three lacs in smoke hue hell, 6. less five of one lac yojans of dark hue hell, 7. in the pitch dark hue hell five Anuttar internal residences. The (Bhavan) residences of the malevolent (Asur kumar) are sixty four lacs. Eighty four of serpentinic (Naag Kumar), seventy two lacs of vulturine (Suparna kumar), ninty six lacs of storm (Vayu kumar) residences are there.

Island youth (Dveep Kumar), directions youth (Disha Kumar), ocean youth (Udadhi Kumar), lightening youth (Vidyut Kumar), Stanik Kumar and fiery youth (Agni Kumar) all these six twins have seventy six lacs residencies.

In reference to the numbers of the celestial vehicles of different heavens it has been said that there are thirty two lacs in Saudharma Kalp, twenty eight lacs in Ishan Kalp, twelve lacs in Sanat Kumar Kalpa, eight lacs in Mahender Kalpas, four lacs in Brahma Kalpa, fifty thousand in Mahashukra Kalpa, six thousand in Sahasrar Kalpa, four hundred in Aran and Achyut celestial vehicles are there. The total number of the last four heavens should be known seven hundred.

There are one thousand one hundred celestial vehicles of the three lower situated Graivayak heavens. The celestial vehicles of the three Gravayak heavens situated in the middle are one hundred seven and the number of celestial vehicles of all the three upper situated Graveyak heaven, is one hundred. The number of the Anuttar celestial vehicles is five.

५८४–दोच्चाए णं पुढवीए, तच्चाए णं पुढवीए, चउत्थीए पुढवीए, पंचमीए पुढवीए, छट्ठीए पुढवीए, सत्तमीए पुढवीए गाहाहिं भाणियव्वा। [-------]

इसी प्रकार उपर्युक्त गाथाओं के अनुसार दूसरी, तीसरी, चौथी, पाँचवीं, छठी व सातवीं पृथ्वी में नरक बिलों-नारकावासों की संख्या कहनी चाहिए।

(इसी प्रकार उपर्युक्त गाथाओं के अनुसार दशों प्रकार के भवनवासी देवों के भवनों की, बारह कल्पवासी देवों के विमानों की तथा ग्रैवेयक व अनुत्तर देवों के विमानों की भी संख्या जाननी चाहिए।)

Thus, according to the above mentioned verses (Gathas) the number of hellish residencies of the second, third, fourth, fifth, sixth and seventh hells should be stated.

In the same way according to the above mentioned verses (Gathas) the number of the residencies of all the ten types of residential gods, the celestial vehicles of celestial beings of the twelve heavens and the numbers of the celestial vehicles of the Graivayak and Anuttar gods should be known.

५८५–सत्तमाए पुढवीए पुच्छा? गोयमा! सत्तमाए पुढवीए अट्ठुत्तरजोयणसयसहस्साइं बाहल्लाए उवरिं अद्धतेवन्नं जोयणसहस्साइं ओगाहेत्ता हेट्ठा वि अद्धतेवन्नं जोयणसहस्साइं वज्जित्ता मज्झे तिसु जोयणसहस्सेसु एत्थ णं सत्तमाए पुढवीए नेरइयाणं पंच अणुत्तरा महइमहालया महानिरया पण्णत्ता, तं जहा–काले महाकाले रोरुए महारोरुए अपइट्ठाणे नामं पंचमे। ते णं निरया वट्टे य तंसा य। अहे खुरप्पसंठाणसंठिया जाव असुभा नरगा, असुभाओ नरएसु वेयणाओ।

भगवन्! सातवीं पृथ्वी महातम:प्रभा में कितना क्षेत्र अवगाहन कर कितने नारकावास हैं?

भगवान ने कहा–गौतम! सातवीं पृथ्वी महातमः प्रभा है जो एक लाख आठ हजार योजन बाहल्य वाली यानि मोटी है। इस पृथ्वी में ऊपर से साढ़े बावन हजार योजन अवगाहन कर और नीचे भी साढ़े बावन हजार योजन छोड़कर मध्यवर्ती तीन हजार योजन में सातवीं पृथ्वी के नारकों के पाँच अनुत्तर, बहुत विशाल महानरक कहे गये हैं। यथा–1. काल, 2. महाकाल, 3. रोरुक, 4. महारोरुक, 5. अप्रतिष्ठान। ये पाँचों महानरक गोल व त्र्यस्र हैं, अर्थात् मध्यवर्ती अप्रतिष्ठान नरक गोल आकार वाला है तथा शेष चारों दिशावर्ती चारों नरक त्रिकोण आकार वाले हैं। नीचे तलभाग में वे नरक क्षुरप्र यानि खुरपा की आकृति के हैं।

यावत् ये नरक अशुभ हैं और इन नरकों में अशुभ वेदनाएँ हैं।

How much area of the Pitch Dark Hell the seventh hell and how many hellish residencies are stated there? such a question was aksed to Mahavira. Bhagwan replied:–Gautam ! The seventh hell is called Pitch Dark hell which is one lac eight thousand yojanas thick. In this hell going deep from its upper part equal to fifty two thousand and half yojans and leaving fifty two thousand and a half yojans from its bottom, too, in the middle part of this seventh hell five Anuttar, very huge Mahanarak have been said they are as : 1. Kaal, 2. Mahakall, 3. Roruk, 4. Maha roruk, and 5. Apratishthan hell.

All these five giant hells are round and triangular, i.e., the Apratishtan Narak situated in the middle is of round shape and remaining other, four hells situated in all the four directions are of triangular shape. At the bottom all these hells have the shape of short handle shape (Khurpa). Thus, all these hells are inauspicious and pains are inauspicious in these hells.

५८६–केवइया णं भंते! असुरकुमारावासा पण्णत्ता? गोयमा! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर जोयणसयसहस्स-बाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं ओगाहेत्ता हेट्ठा चेगं जोयण-सहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरि जोयणसयसहस्से एत्थ णं रयणप्पभाए पुढवीए चउसट्ठिं असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता। ते णं भवणा बाहिं वट्टा, अंतो चउरंसा, अहे पोक्खरकण्णिआ-संठाणसंठिया उक्किण्णंतर विउल-गंभीर-खाय-फलिहा अट्टालय-चरिय-दार-गोउर-कवाड-तोरण-पडिदुवार-देसभागा जंत-मुसल-भुसंढ-सयग्घि-परिवारिया अउज्झा अडयालकोट्ठरइया अडयालकयवणमाला लाउल्लोइयमहिया गोसीस-सरस-रत्तचंदण-दद्दर-दिण्णपंचंगुलितला कालागुरु-पवरकुंदुरुक्क तुरुक्कडज्झंत-धूवमघमघेंतगंधुद्धुयाभिरामा सुगंधिया गंधवट्टिभूया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सप्पभा समरीया सउज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा। एवं जं जस्स कमइ तं तस्स, जं जं गाहाहिं भणियं तह चेव वण्णओ।

भगवन्! असुर कुमार के आवासों की संख्या कितनी कही गई है?

गौतम! पहली पृथ्वी रत्नप्रभा पृथ्वी है जो एक लाख अस्सी हजार योजन बाहल्य वाली कही गई है। इस पृथ्वी में ऊपर से एक हजार योजन अवगाहन कर और नीचे एक हजार योजन छोड़कर मध्यवर्ती एक लाख अठहत्तर हजार योजन में इस पृथ्वी के भीतर असुरकुमारों के चौसठ लाख भवनावास कहे गए हैं। वे भवन बाहर से गोल हैं, भीतर से चौकोण हैं और नीचे से कमल की कर्णिका के आकार से स्थित हैं। उनके चारों ओर खाई व परिखा खुदी हुई हैं, जो बहुत गहरी हैं। खाई व परिखा के मध्य में पाल बंधी हुई है। वे भवन अट्टालक, चरिका, द्वार, गोपुर, कपाट, तोरण, प्रतिद्वार, देश

रूप भाग वाले हैं, यंत्र, मूसल, भुसुंढी, शतघ्नी, इन शस्त्रों से संयुक्त हैं। शत्रुओं की सेनाओं से अजेय हैं। अड़तालीस कोठों से व अड़तालीस ही वन-मालाओं से रचित और शोभित हैं। उनके भूमिभाग और भित्तियाँ उत्तम लेपों से लिपी व चिकनी हैं, गोशीर्ष चन्दन और लाल चन्दन के सरस व सुगन्धित लेप से उन भवनों की भित्तियों पर पाँचों अंगुलियों सहित हस्त तल यानि हाथ अंकित हैं। इसी प्रकार भवनों की सीढ़ियों पर भी गोशीर्ष चन्दन और लाल चन्दन के रस से पाँचों अंगुलियों सहित हाथ अंकित हैं। वे भवन कालागुरु, प्रधान कुन्दरु और तुरुष्क यानि लोभान युक्त धूप से जलते रहते हैं जिनके जलते रहने से वे मघमघायमान, सुगन्धित और सुन्दरता से अभिराम हैं। वहाँ सुगन्धित अगर-बत्तियाँ जल रही हैं। वे भवन आकाश के समान स्वच्छ और स्फटिक के समान कान्ति युक्त हैं, अत्यन्त चिकने, घिसे हुए व पालिश किए हुए हैं। वे भवन नीरज-निर्मल हैं, अन्धकार-रहित हैं, विशुद्ध हैं, प्रभा-युक्त हैं, मरीचियों यानि किरणों से युक्त हैं, उद्योत से युक्त हैं, मन को प्रसन्न करने वाले हैं। वे भवन दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप यानि रमणीय हैं।

जिस प्रकार से असुर कुमारों के भवनों का वर्णन किया गया है, उसी प्रकार नाग कुमार आदि शेष भवनवासी देवों के भवनों का भी वर्णन जहाँ जैसा घटित और उपयुक्त हो, वैसा करना चाहिए तथा ऊपर कही गई गाथाओं से जिसके जितने भवन कहे गए हैं, उनका तदनुरूप वर्णन करना चाहिए।

Oh Lord ! How many number of the residencies of the fiendish youth (Asur kumar) have been narrated?

Lord Mahavira replied :–Hey Gautam! The thickness of the first hell the jewels hue land (Ratanprabha) has been stated of one lac eighty thousand yojans. Going deep equal to one thousand yojans from the upper part of this hell and leaving one thousand yojans from its bottom in its middle part measuring one lac seventy eight thousand yojans, sixty four lacs residencies of the fiendish youths (Asur Kumar) have been said. All these residencies outwardly are round shaped and inwardly these are rectangular and their lower part is situated in the shape of a lotus petal. Ditch and trenches have been dug around. These hells are very deep. In between these ditches and trenches dike has been tied up. These residences are having Attalak Charika, Gates, Gopur, Doors, Archs, Antigate. All are fixed with Yantra (Amulets), Musal (Pestle), Bhushendi and Shatghani. Invincible by the army of enemies. These are decorated and constructed by forty eight cells and forty eight forest sequences. The floors and the walls are white washed with sublime plasters and are smooth. On the walls of these residencies the print of five fingers i.e. of hand smeared with fresh and fragrant of goshirsh sandal and red sandal are stamped.

In the same way on the steps of these residences, too, the prints of the five fingers i.e., hand smeared with goshirsh sandal and red sandal are stamped.

The incense made of black ochre, main roddle and gum-resin always keep burning in the residences, due to the burning of these incense these residences are full of fragrant elegancy. Incense sticks are burning here. These residences are clear like the sky and bright like the crystels, are very smooth, rubbed, and have been polished. These are clean and are devoid of dusts and darkness. These are pure, full of hue, full of rays, full of lusters and are pleasing to mind. These are picturesque, lovely and charming. The way in which the description of the residences of the fiendish youth (Asur Kumar) has been done such as the description of the residences, where it seems fit and happens, of serpentenic and other remaining residential gods should be done. According to the above said Gathas whose and how many residencies have been described, the description should be done accordingly.

५८७–केवइया णं भंते! पुढविकाइयावासा पण्णत्ता ? गोयमा! असंखेज्जा पुढविकाइया वासा पण्णत्ता। एवं जाव मणुस्स त्ति।

भगवन्! पृथ्वीकायिक जीवों के आवासों की संख्या कितनी कही गयी है?

गौतम! पृथ्वीकायिक जीवों के आवासों की संख्या असंख्यात कही गई है। इसी प्रकार जलकायिक जीवों से लेकर यावत्-मनुष्यों तक के आवासों की संख्या जाननी चाहिए।

O Lord ! the residencies of earth-bodied beings (Prithvikaya Jeeva) are mentioned. How many number of these residences have been said? Prithvakaya-jeevas have been said innumerable (Asankhyat). Thus, the number of the residencies of water-bodies beings to human beings should be known innumerable.

५८८–केवइया णं भंते वाणमंतरावासा पण्णत्ता ? गोयमा! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स-जोयणसहस्स-बाहल्लस्स उवरिं एगं जोयणसयं ओगाहेत्ता हेट्ठ चेगं जोयणसयं वज्जेत्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु एत्थ णं वाणमंतराणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा भोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा पण्णत्ता। ते णं भोमेज्जा नगरा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा। एवं जहा भवणवासीणं तहेव णेयव्वा। णवरं पडागमालाउला सुरम्मा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा।

भगवन्! वाणव्यन्तरों के आवासों की संख्या कितनी कही गई है?

गौतम! रत्नप्रभा पृथ्वी के एक हजार योजन मोटा रत्नमय कांड है जिसके एक सौ योजन ऊपर से अवगाहन कर और एक सौ योजन नीचे के भाग को छोड़कर मध्य के आठ सौ योजनों में वाणव्यन्तर के असंख्यात लाख भौमेयक नगरावास कहे गए हैं, जो तिरछे फैले हुए हैं। वे भौमेयक नगर बाहर

से गोल और भीतर से चौकोर हैं। इस प्रकार भवनवासी देवों के भवनों का जैसा वर्णन किया गया है, वैसा ही वर्णन वाणव्यन्तर देवों के भवनों का जानना चाहिए। केवल इतना वैशिष्ट्य है कि ये पताका-मालाओं से व्याप्त हैं। ये भवन सुरम्य हैं, मन को प्रसन्न करने वाले हैं, दर्शनीय हैं, अभिरूप-प्रतिरूप हैं।

O Lord! How many number of the residences of peripatetic (Vanvayantric) gods has been narrated.

O Gautam! In Ratanprahba hell there is a jewel like wing (Ratan Kand) thickness of one thousand yojans of which, going deep equal to one hundred yojans from upper side and barring one hundred yojans from the bottom, in the eight hundred yojans of middle part innumerable lacs Bhomayak residences have been said. They are spreading obliquely. These residences are round and rectangular from outside and inside. Thus the description of the residences of the residential gods has been done, even such as the description of residences of Peripatetic gods should be known. The only specialization of these residences is that they have flags-garlands. These are charming, mind pleasing, picturesque and elegant and beautiful.

५८९-केवइया णं भंते! जोइसियाणं विमाणावासा पण्णत्ता? गोयमा! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सत्तनउयाइं जोयणसयाइं उड्ढं उप्पइत्ता एत्थ णं दसुत्तरजोयणसयबाहल्ले तिरियं जोइसविसए जोइसियाणं देवाणं असंखेज्जा जोइसियविमाणावासा पण्णत्ता। ते णं जोइसियविमाणावासा अब्भुग्गयमूसियपहसिया विविहमणिरयणभत्तिचित्ता वाउद्धुयविजय-वेजयंती-पडाग-छत्ताइछत्तकलिया तुंगा गगणतल मणुलिहंतसिहरा जालंतर-रयणपंजरुम्मिलियव्व मणिकणगथूभियागा वियसिय-सयपत्त-पुण्डरीय-तिलय-रयणद्धचंदचित्ता अंतो वाहिं च सण्हा तवणिज्ज-वालुआ पत्थडा सुहफासा सस्सिरीयरूवा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा।

भगवन्! ज्योतिष्क देवों के विमानावासों की संख्या कितनी कही गयी है?

गौतम! रत्नप्रभा पृथ्वी का बहुसम रमणीय भूमिभाग है। उससे सात सौ नब्बे योजन ऊपर एक सौ दश योजन बाहल्य वाले तिरछे ज्योतिष्क-विषयक आकाश भाग है। उस भाग में ज्योतिष्क देवों के असंख्यात विमानावास कहे गए हैं। वे विमानावास अपने में से निकलती हुई और सर्व दिशाओं में फैलती हुई प्रभा से उज्ज्वल हैं। वे अनेक प्रकार के मणि व रत्नों की चित्रकारी से मण्डित हैं। वे विमानावास वायु से उड़ती हुई विजय-वैजयन्ती पताकाओं से तथा छत्रातिछत्रों से युक्त हैं। वे गगनचुम्बी ऊँचे शिखर वाले हैं, उन विमानावासों की जालियों के भीतर रत्न लगे हुए हैं। जैसे पंजर से तत्काल निकाली वस्तु सश्रीक-चमचमाती है वैसे ही वे सश्रीक हैं। वे मणि-सुवर्ण की स्तूपिकाओं से युक्त हैं,

विकसित शतपत्रों तथा पुण्डरीकों यानि श्वेत कमलों से, तिलकों से, रत्नों की अर्धचन्द्राकार चित्रावलियों से व्याप्त हैं। वे विमानावास भीतर और बाहर अत्यन्त स्निग्ध, तप्त सुवर्ण सदृश वालुकामयी प्रस्तटों या प्रस्तारों वाले हैं। वे सुखद स्पर्श का अनुभव कराने वाले, शोभामय, मन को प्रसन्न करने वाले तथा दर्शन के योग्य हैं।

O Lord! How many numbers of the celestial vehicles of Stellar gods have been stated?

O Gautam! The ground of Ratanprabha hell is very smooth and charming. At the height of seven hundred ninety yojans of it, there is slanting part of sky of stellar province having the thickness of one hundred and ten yojans in which innumerable (celestial vehicles) residences of stellar gods have been said. All these celestial vehicles are illuminated by the hue emits from themselves spreading in all the directions.

These are decorated with the art built of so many kinds of gems and jewels. These celestial vehicle are ornamented with the flying flags and umbrellas. These are of high pinnacle soaring high in the sky, in the nets of these residences various kinds of gems have been fitted. These are so bright as an object immediately taken out of furnace, are endowed with stupikas made of gold and gems, are pervaded with fully blossomed white lotus and petals and half moon shaped arts made of jewels. These are very smooth from the outside and inside of it, and are like of burning gold. These are great pleasure giving, splendid and mind pleasing and worthy of seeing.

५९०–केवइया णं भंते! वेमाणियावासा पण्णत्ता? गोयमा! इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं वीइवइत्ता बहूणि जोयणाणि बहूणि जोयणसयाणि बहूणि जोयणसहस्साणि [बहूणि जोयणसयसहस्साणि] बहुइओ जोयणकोडीओ बहुइओ जोयणकोडाकोडीओ असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं वीइवइत्ता एत्थ णं वेमाणियाणं देवाणं सोहम्मीसाण-सणंकुमार-माहिंद-बंभ-लंतग-सुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय-आरण-अच्चुएसु गेवेज्जगमणुत्तरेसु य चउरासीइं विमाणावाससयसहस्सा सत्ताणउइं च सहस्सा तेवीसं च विमाणा भवंतीतिमक्खाया।

भगवन्! वैमानिक देवों के आवासों भी संख्या कितनी कही गई है।

गौतम! रत्नप्रभा पृथ्वी का बहुसभ भूमिभाग रमणीय है। उससे ऊपर चन्द्र, सूर्य, ग्रहगण, नक्षत्र और तारकाओं को उल्लंघन कर, अनेक योजन, अनेक शत योजन, अनेक सहस्र योजन (अनेक शत-सहस्र योजन) अनेक कोटि योजन, अनेक कोटाकोटि योजन और असंख्यात कोटा-कोटि योजन ऊपर सुदूर तक आकाश का उल्लंघन कर अनेक वैमानिक देव कहे गए हैं, यथा–सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार,

माहेन्द्र, ब्रह्म, लान्तक, शुक्र, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण, अच्युत कल्पों में वैमानिक देव, ग्रैवेयकों में वैमानिक देव तथा अनुत्तरों में वैमानिक देव। उन वैमानिक देवों के विमानों की संख्या चौरासी लाख सत्तानवें हजार और तेईस कही गई है।

O Lord! What the counting of residences of the gods of heaven has been said?

O Gautam! The very smooth surface of the Ratanprabha hell is very charming. About it, it has been stated that crossing the moon, sun, planets, constellations and stars going high many yojans, many a hundred yojans, many a thousand yojans, many a hundred thousand yojans, many a crore yojans, many crore into crore yojans and innumerable crore into crore yojans crossing the sky so many celestial beings (Vaimanik Dev) have been residing there as :– Saudharma, Ishan, Sanat Kumar, Mahendera, Brahma, Lantak, Shukra, Sahsrar, Anat, Pranat, Aran, Achyut Kalpas, celestial beings of Graivayak and Anuttar celestial vehicles. The total number of all these celestial vehicles has been said eighty four lacs ninety seven thousand and twenty three.

५९१–ते णं विमाणा अच्चिमालिप्पभा भासरासिवण्णाभा अरया निरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा घट्ठा मट्ठा णिप्पंका णिक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा।

वे विमान सूर्य-प्रभा सदृश प्रभा युक्त हैं, प्रकाश पुंजों के सदृश भासुर हैं। वे रज-रहित–नीरज हैं, निर्मल व अन्धकार रहित हैं, विशुद्ध हैं, मरीचि-युक्त हैं, उद्योत-सहित हैं, मन को प्रसन्नता का अनुभव कराने वाले दर्शनीय हैं, अभिरूप–प्रतिरूप हैं।

These celestial vehicles are endowed with the same hue as the sun and lustrous like the sunshine. These are without any dust, devoid of dirt, clean and devoid of darkness. These are pure, pervaded by radiant, are with luster, and are worth seeing and mind pleasing.

५९२–सोहम्मे णं भंते! कप्पे केवइया विमाणावासा पण्णत्ता?

गोयमा! बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता। एवं ईसाणाइसु अट्ठावीसं वारस अट्ठ चत्तारि एयाइं सयसहस्साइं पण्णासं चत्तालीसं छ-एयाइं सहस्साइं आणए पाणए चत्तारि आरणच्चुए तिन्नि एयाणि सयाणि एवं गाहाहिं भाणियव्वं।

भगवन्! सौधर्मकल्प में विमानावासों की संख्या कितनी कही गयी है?

गौतम! सौधर्मकल्प में विमानावासों की संख्या बत्तीस लाख कही गयी है। इसी प्रकार ईशानादि

शेष कल्पों में सहस्रार तक क्रमशः अट्ठाईस लाख, बारह लाख, आठ लाख, चार लाख, पचास हजार, छह सौ तथा आनत-प्राणत कल्प में चार सौ और आरण-अच्युत कल्प में तीन सौ विमान कहना चाहिए। ये समस्त कथन पूर्वोक्त गाथाओं के अनुसार जानना चाहिए।

O Lord ! What the number of the residences of celestial beings of Soudharma Kalpa has been said?

O Gautam ! the number of the celestial vehicles of Soudharma Kalpa has been said thirty two lacs. In the same way the number of celestial vehicles of Ishan to Sahasrar Kalpas has been said twenty eight lacs, twelve lacs, eight lacs, four lacs, twenty five thousand, six hundred respectively and the number of Anat and Pranat Kalpas are four hundred of each and in Aran and Achyut three hundred of each should be said. The whole description should be known according to the verses (Gathas) already mentioned above.

५९३–नेरइयाणं भंते! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता। अपजत्तगाणं नेरइयाणं भंते! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वि अंतोमुहुत्तं। पजत्तगाणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं। इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए एवं जाव।

भगवन्! नारक कितने स्थिति काल के कहे गए हैं?

गौतम! नारकों की जघन्य स्थिति दश हजार वर्ष की तथा उत्कृष्ट स्थिति तेतीस सागरोपम कही गई है।

भगवन्! अपर्याप्तक नारक कितने स्थिति काल के कहे गए हैं?

गौतम! अपर्याप्तक नारकों की जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त की कही गई है। पर्याप्तक नारकों की जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति क्रमशः अन्तर्मुहूर्त कम दश हजार वर्ष की और अन्तर्मुहूर्त्त कम तेतीस सागरोपम की कही गई है। इसी प्रकार इस रत्नप्रभा पृथ्वी से लेकर महातमःप्रभा पृथ्वी तक अपर्याप्तक नारकों की जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त की तथा पर्याप्तकों की स्थिति वहाँ भी सामान्य, जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति से अन्तर्मुहूर्त-अन्तर्मुहूर्त कम जानना चाहिए।

विशेषः–इसी प्रकार भवनवासियों, वाणव्यन्तरों, ज्योतिष्कों, कल्पवासियों और ग्रैवेयकवासी देवों की पर्याप्तक-अपर्याप्तक काल-भावी जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति प्रज्ञापना सूत्र के अनुसार जानना चाहिए।

O Lord! How much the life span of the immature (Aparyaptak) hellish beings has been said?

O Gautam ! The life duration of immature (Aprayaptak) hellish beings minimum and maximum has been said of Antarmuhrat, the life span of the mature or complete (Prayaptak) hellish beings minimum and maximum has been said equal to Antramuhrat less than thousand years and Antramuhrat less thirty three sagropama respectively. Hence the life duration of the immature hellish beings from Ratanprabha hell to pitch Dark hell, minimum and maximum, equal to Antramuhrat should be known and in the same way the life duration of the mature hellish beings in general, minimum and maximum, should be known.

Note: Thus the maximum and minimum life duration of the mature and immature beings of residential, peripatetic, stellar, celestial beings gods of Graivayak heavens should be known according to Pragyapana Sutra.

५९४–विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियाणं देवाणं केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं बत्तीसं सागरोवमाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं। सव्वट्ठे अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता।

भगवन्! विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित विमानवासी देव कितने स्थिति काल के कहे गए हैं?

गौतम! विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित विमानवासी देवों की जघन्य स्थिति बत्तीस सागरोपम तथा उत्कृष्ट स्थिति तेतीस सागरोपम कही गई है। सर्वार्थसिद्ध नामक अनुत्तर विमानों में समस्त देव तेतीस सागरोपम अजघन्य-अनुत्कृष्ट स्थिति के कहे गए हैं।

O Lord ! How much long the life duration of the celestial beings of Vijay, Vijayant, Jayant, Aprajit and Sarvarthasidha has been said?

O Gautam ! Minimum duration of thirty two sagropama and maximum of thirty three sagropama of the celestial beings of Vijay, Vijayant, Jayant, Aprajit heavens have been said, and the life duration of all the celestial beings of celestial vehicle namely Sarvarth Sidha un-minimum-un maximum has been said equal to thirty three sagropama.

५९५–कति णं भंते! सरीरा पन्नत्ता? गोयमा! पंच सरीरा पन्नत्ता, तं जहा–ओरालिए वेउव्विए आहारए तेयए कम्मए।

भगवन्! शरीर कितने प्रकार के कहे गए हैं?

गौतम! पाँच प्रकार के शरीर कहे गए हैं। यथा–1. औदारिक शरीर, 2. वैक्रिय शरीर, 3. आहारक शरीर, 4. तैजस शरीर, 5. कार्मण शरीर।

O Lord ! How many types of physical bodies have been said?

Gautam ! Five types of physical bodies have been said as : 1. the Gross body, 2. proteen or transformable body, 3. Conveyance or Assimilative body, 4. Fiery or luminous body, and 5. Karmic body.

५९६–ओरालियसरीरे णं भंते! कइविहे पन्नत्ते? गोयमा! पंचविहे पन्नत्ते। तं जहा–एगिंदिय-ओरालियसरीरे जाव गब्भवक्कंतिय मणुस्स-पंचिंदिय-ओरालियसरीरे य।

भगवन्! औदारिक शरीर कितने प्रकार के कहे गए हैं?

गौतम! औदारिक शरीर पाँच प्रकार के कहे गए हैं। यथा–1.एकेन्द्रिय औदारिक शरीर, 2.द्वीन्द्रिय औदारिक शरीर, 3.त्रीन्द्रिय औदारिक शरीर, 4.चतुरिन्द्रिय औदारिक शरीर, 5.पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर (गर्भज मनुष्य पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर तक।)

O Lord ! How many kinds of gross bodies are said?

Gautam ! the gross bodies have been said of five types as : one sense gross body, 2. two senses gross body, 3. three senses gross body, 4. four senses gross body, and 5. five senses gross body (uteruseous human beings upto the five senses beings).

५९७–ओरालियसरीरस्स णं भंते! के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता? गोयमा! जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं साइरेगं जोयणसहस्सं एवं जहा ओगाहण-संठाणे ओरालियपमाणं तहा निरवसेसं (भाणियव्वं।)। एवं जाव मणुस्से त्ति उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं।

भगवन्! औदारिक शरीर वाले जीव की जघन्य और उत्कृष्ट शरीर अवगाहना कितनी कही गई है?

गौतम! औदारिक शरीर वाले जीव की जघन्य शरीर अवगाहना अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण कही गई है। यह कथन पृथ्वीकायिक आदि की अपेक्षा से है। इसी प्रकार औदारिक शरीर वाले जीव की उत्कृष्ट शरीर-अवगाहना कुछ अधिक एक हजार योजन कही गई। यह कथन बादर वनस्पति-कायिक की अपेक्षा से है।

इस प्रकार जैसे अवगाहना संस्थान नामक प्रज्ञापना-पद में औदारिक शरीर की अवगाहना का प्रमाण कहा गया है, वैसा ही यहां सम्पूर्ण रूप से कहना चाहिए। इस प्रकार यावत् मनुष्य की उत्कृष्ट शरीर-अवगाहना तीन गव्यूति (कोश) कही गई है।

O Lord ! How many, minimum and maximum, structures of gross bodies beings are said?

Gautam ! The minimum structure of the gross-bodies beings has been said equal to the innumerable (Asamkhyatava) part of a finger. This statement is with regard to earth-bodies etc. Thus the maximum body structure of gross-

bodied beings has been said a little more than one thousand yojans. This statement is in reference to gross plant vegetation. Thus, such as the measurement of the structure of gross-bodied beings according to Pragyapana has been said, so as the immature form should be said here. In this way the maximum structure of the human being has been said equal to three kosa (Indian scale).

५९८–कइविहे णं भंते! वेउव्वियसरीरे पन्नत्ते? गोयमा! दुविहे पन्नत्ते, तं जहा–एगिंदिय वेउव्वियसरीरे य पंचिंदिय-वेउव्वियसरीरे य। एवं जाव सणंकुमारे आढत्तं जाव अनुत्तराणं भवधारणिज्जा जाव तेसिं रयणी परिहायइ।

भगवन्! वैक्रियिक शरीर कितने प्रकार के कहे गए हैं?

गौतम! वैक्रियिक शरीर दो प्रकार के कहे गए हैं।

यथा–1. एकेन्द्रिय वैक्रियिक शरीर, 2.पंचेन्द्रिय वैक्रियिक शरीर।

इस प्रकार यावत् सनत्कुमार-कल्प से लेकर अनुत्तर विमान पर्यन्त तक के देवों का वैक्रियिक भवधारणीय शरीर जानना चाहिए। वह क्रमशः एक-एक रत्नि कम होता है।

O Lord ! How many kinds of protein bodies are said?

Gautam ! Two types of transformable body have been narrated as : One sense transformable body, 2. five senses transformable body.

Thus, the physical bodies of the celestial beings from Sanat Kumar heaven to the Anuttar Celestial vehicles should be known as a Transformable body (Vaikariya Sharir).

५९९–आहारयसरीरे णं भंते! कइविहे पन्नत्ते? गोयमा! एगाकारे पन्नत्ते।

जइ एगाकारे पन्नत्ते, किं मणुस्स-आहारयसरीरे अमणुस्स-आहारयसरीरे?

गोयमा! मणुस्स-आहारयसरीरे, णो अमणुस्स-आहारयसरीरे। एवं जइ मणुस्स आहारयसरीरे, किं गब्भवक्कं तियमणुस्स-आहारयसरीरे, संमुच्छिममणुस्स-आहारयसरीरे?

गोयमा! गब्भवक्कंतिय-मणुस्स-आहारयसरीरे नो संमुच्छिम-मणुस्स-आहारयसरीरे।

जइ गब्भवक्कंतिय-मणुस्स-आहारयसरीरे, किं कम्मभूमिग० अकम्मभूमिग०?

गोयमा! कम्मभूमिग०, नो अकम्मभूमिग०।

जइ कम्मभूमिग०, किं संखेज्जवासाउय० असंखेज्जवासाउय०?

गोयमा! संखेज्जवासाउय०, नो असंखेज्जवासाउय०?

जइ संखेज्जवासाउय०, किं पज्जत्तय० अपज्जत्तय०?

गोयमा! पज्जत्तय०, नो अपज्जत्तय०।

जइ पज्जत्तय० किं सम्मद्दिट्ठी० मिच्छदिट्ठी० सम्मामिच्छदिट्ठी०?

गोयमा! सम्माद्दिट्ठी०। नो मिच्छदिट्ठी नो सम्मामिच्छदिट्ठी।

जइ सम्मदिट्ठी० किं संजय० असंजय० संजयासंजय०?

गोयमा! संजय०, नो असंजय० नो संजयासंजय०।

जइ संजय० किं पमत्तसंजय०, अप्पमत्तसंजय?

गोयमा! पमत्तसंजय०, नो अपमत्तसंजय०।

जइ पमत्तसंजय०, किं इड्ढिपत्त० अणिड्ढिपत्त?

गोयमा! इड्ढिपत्त०, नो अणिड्ढिपत्त०।

वयणा वि भाणियव्वा।

भगवन्! आहारक शरीर कितने प्रकार का कहा गया है?

गौतम! आहारक शरीर एक ही प्रकार का कहा गया है।

भगवन्! यदि आहारक शरीर एक ही प्रकार का कहा गया है तो क्या वह मनुष्य-आहारक शरीर है या अमनुष्य-आहारक शरीर है?

गौतम! जो आहारक शरीर एक प्रकार का कहा गया है, वह मनुष्य आहारक शरीर है, अमनुष्य-आहारक शरीर नहीं।

भगवन्! यदि वह मनुष्य-आहारक शरीर है तो कौनसा मनुष्य आहारक शरीर है—गर्भोपक्रान्तिक या सम्मूर्च्छिम?

गौतम! वह मनुष्य आहारक शरीर है गर्भोप-क्रान्तिक। सम्मूर्छिम मनुष्य-आहारक शरीर नहीं है।

भगवन्! यदि वह गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य आहारक शरीर है, तो क्या वह कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य-आहारक शरीर है, अथवा अकर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य-आहारक शरीर है?

गौतम! कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य आहारक शरीर है, अकर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य-आहारक शरीर नहीं है।

भगवन्! यदि वह कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य आहारक शरीर है, तो क्या वह संख्यात वर्षा-युष्क कर्म भूमिज गर्भोपक्रान्ति मनुष्य आहारक शरीर है या असंख्यात वर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य आहारक शरीर है? गौतम! संख्यात वर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य आहारक शरीर है, असंख्यात वर्षायुक्त कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य आहारक शरीर नहीं है।

भगवन्! यदि संख्यात--वर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य आहारक शरीर है, तो क्या वह पर्याप्तक संख्यातवर्षायुष्क कर्म भूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य-आहारक शरीर है या अपर्याप्तक संख्यात वर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य-आहारक शरीर है?

गौतम! पर्याप्तक संख्यातवर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रांतिक मनुष्य-आहारक शरीर है, अपर्याप्तक संख्यातवर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य-आहारक शरीर नहीं है।

भगवन्! यदि वह पर्याप्तक संख्यातवर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य-आहारक शरीर है, तो क्या वह सम्यग्दृष्टि पर्याप्तक संख्यातवर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य आहारक शरीर है या मिथ्यादृष्टि पर्याप्तक संख्यातवर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य आहारक शरीर है अथवा सम्यग्मिथ्यादृष्टि पर्याप्तक संख्यातवर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य-आहारक शरीर है?

गौतम! वह सम्यग्दृष्टि पर्याप्तक संख्यातवर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य आहारक शरीर है। वह न तो मिथ्यादृष्टि पर्याप्तक संख्यात वर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य आहारक शरीर है और न सम्यग्मिथ्यादृष्टि पर्याप्तक संख्यात, वर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य आहारक शरीर है।

भगवन्! यदि वह सम्यग्दृष्टि पर्याप्तक संख्यात वर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य आहारक शरीर है, तो क्या वह संयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्तक संख्यातवर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य आहारक शरीर है, अथवा असंयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्तक संख्यात वर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य आहारक शरीर है अथवा संयतासंयत पर्याप्तक संख्यात वर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य आहारक शरीर है?

गौतम! वह संयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्तक संख्यात वर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य आहारक शरीर है, वह न तो असंयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्तक संख्यातवर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य आहारक शरीर है और न संयतासंयत पर्याप्तक संख्यातवर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य आहारक शरीर है।

भगवन्! यदि वह संयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्तक संख्यात वर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य आहारक शरीर है, तो क्या प्रमत्त संयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्तक संख्यातवर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य आहारक शरीर है, या अप्रमत्तसंयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्तक संख्यात वर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य-आहारक शरीर है?

गौतम! वह प्रमत्तसंयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्तक संख्यातवर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य-आहारक शरीर है, अप्रमत्तसंयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्तक संख्यातवर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य आहारक शरीर नहीं है।

भगवन्! यदि वह प्रमत्तसंयम सम्यग्दृष्टि पर्याप्तक संख्यात वर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक

मनुष्य आहारक शरीर है, तो क्या वह ऋद्धि-प्राप्त प्रमत्तसंयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्तक संख्यात वर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य-आहारक शरीर है अथवा अनृद्धि-प्राप्त प्रमत्त-संयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्तक संख्यातवर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य-आहारक शरीर है।

गौतम! वह ऋद्धि-प्राप्त प्रमत्त संयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्तक संख्यात वर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य आहारक शरीर है, अनृद्धि प्राप्त प्रमत्तसंयत सम्यग्दृष्टि पर्याप्तक संख्यातवर्षायुष्क कर्मभूमिज गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य आहारक शरीर नहीं है।

O Lord! How many types of the Assimilating body have been said?

Gautam! The Assimilating body (Aharak Sharir) has been said of single type. O Lord ! If the assimilation body has been said of single type then whether it is human assimilating body or non-human-assimilating body?

Gautam! The assimilating body that has been said of single type, it is human-assimilating body not a non human-assimilating body.

O Lord! If it is a human assimilating body then which one the human-assimilating body is this-uteruseous, or Sammuichhan (Spontaneously birth taking)? Gautam ! this human assimilating body is (Garbhaj) uteruseous not a sammuchhana.

O Lord ! If it is Grabhayakrantik human assimilating body then whether it is of labour land Grabhayakrantik human assimilating or of non-labour land Grabhayakrantik human assimilating body?

Gautam ! It is of labour land Grabhayakrantik human-assimilating body but not a non-human assimilating body of non-labour land.

O Lord ! If it is the Grabhayakrantik human assimilating body of labour land, then, whether it is the Grabhayakrantik human body of labour land of countable years life duration or innumerable life duration?

Gautam ! It is of the life duration of countable Grabhayakrantik human-assimilating body of labour land but not the innumerable life duration of Grabhayakrantik human-assimilating body of labour land.

O Lord! If it is of the age of countable Grabhayakrantik human-assimilating body of labour land, then, whether it is mature or complete (Paryaptak) Grabhayakrantik human-assimilating body of labour land or immature or incomplete Grabhayakrantik human-assimilating body of labour land having countable life duration?

Gautam ! it is mature of countable life duration Grabhayakrantik human-assimilating body of labour land but not the immature countable life span of Grabhayakrantik human-assimilating body of labour land.

O Lord! If it is a mature of countable life span, uteruseous human-assimilating body, then, whether it is of a righteous faith, mature, countable life duration uteruseous faith human-assimilating body of this labour land or it is of a wrong belief or a right erroneous faith, countable life span uteruseous human-assimilating body of this labour land.

Gautam! It is of a righteous belief, mature, countable life duration uteruseous human assimilating body of this labour land but not of a wrong belief or wrong righteous faith mature countable life duration uteruseous human-assimilating body of this labour land.

O Lord! If it of is a righteous faith, mature, countable life span, uteruseous, human assimilating body of this labour land then whether he is a restraint righteous belief, mature, countable life span, uteruseous, human-assimilating body of this labor land or he is a unrestraint righteous belief, mature, countable life span uteruseous human-assimilating body of Labour land or a restraint-unrestraint righteous belief, mature, countable life span, uteruseous human-assimilating body at labour land?

Gautam! It is a restraint righteous faith, mature, countable life span, uteruseous human-assimlating body of labour land not a un-restraint-nor a restraint-unrestraint righteous faith, mature, countable life span, uteruseous human-assimilating body of labour land.

O Lord ! It he is a restrained righteous belief, mature, countable life span uteruseous, human-assimilating body of labour land, then, whether it is a laxity (Pramat) restrained righteous faith, mature, countable life duration uteruseous, human-assimilating body of labour land or awakened (Apramat) restrained righteous human-assimilating body of labour land?

Gautam ! It is a laxity (Pramat) restraint righteous faith, mature, countable life span, uteruseous, human assimilating body of labour-land but not an awakend (Apramat) restraint, righteous faith, mature, countable life duration, uteruseous human-assimilating body of labour land.

O Lord ! If it is a laxity restraint righteous belief, mature, countable life-span, uteruseous, human-assimilating body of labour land, then, whether it is of an extra-ordinary power or wealth, laxity restraint, righteous belief, mature, countable life span uteruseous, human-assimilating body of labour land or of without extra-ordinary power of wealth, laxity, restraint, righteous belief, mature, countable life span uteruseous human-assimilating body of labour land?

Gautam ! It is of an extra ordinary power, wealth, laxity, restraint, righteous belief, mature, countable life span, uteruseous human-assimilating body of labour land but not a un-extraordinary power or wealth, laxity,

restraint, righteous belief, mature, countable life span uteruseous human-assimilating body of labour land.

६००–आहारयसरीरे समचउरंससंठाणसंठिए।

आहारक शरीर समचतुरस्र संस्थान वाला कहा गया है।

The assimilating body has been said of equi-quaderant structure.

६०१–आहारयसरीरस्स के महालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता?
गोयमा! जहण्णेणं देसूणा रयणी, उक्कोसेणं पडिपुण्णा रयणी।

भगवन्! आहारक शरीर की शरीर-अवगाहना कितनी बड़ी कही गई है?

गौतम! आहारक शरीर की जघन्य शरीर अवगाहना कुछ कम एक रत्नि और उत्कृष्ट शरीर अवगाहना परिपूर्ण एक रत्नि कही गई है।

O Lord ! How much big the structure of the assimilating body has been said?

Gautam ! The minimum structure of the assimilating body has been said a little less than a Ratni (Indian scale) and the maximum body structure has been said of full one Ratni (Indian scale).

६०२–तेआसरीरे णं भंते कतिविहे पन्नत्ते? गोयमा! पंचविहे पन्नत्ते–
एगिंदिय तेयसरीरे, वि-ति-चउ-पंच०। एवं जाव०।

भगवन्! तैजस शरीर के कितने प्रकार कहे गए हैं?

गौतम! तैजस शरीर के पाँच प्रकार कहे गए हैं। यथा–1. एकेन्द्रिय तैजस शरीर, 2.द्वीन्द्रिय तैजस-शरीर 3.त्रीन्द्रिय तैजस शरीर, 4.चतुरिन्द्रिय तैजस शरीर, 5.पंचेन्द्रिय तैजस शरीर।

इस प्रकार आरण-अच्युत कल्प तक जानना चाहिए।

O Lord ! How many kinds of fiery bodies are said?

Gautam ! Five types of fiery body have been narrated as : 1. one sense, 2. two senses fiery body, 3. three senses fiery body, 4. four senses fiery body, 5. five senses fiery body. In the same manner from Aaran to the Achyut heavens should be known.

६०३–गेवेज्जस्स णं भंते! देवस्स णं मारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्स समाणस्स के महालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता? गोयमा! सरीरप्पमाणमेत्ता विक्खंभबाहल्लेणं, आयामेणं जहन्नेणं अहे जाव विज्जाहरसेढीओ। उक्कोसेणं जाव अहोलोइयग्गामाओ। उड्ढं जाव सयाइं विमाणाइं, तिरियं जाव मणुस्सखेत्तं। एवं जाव अणुत्तरोववाइया। एवं कम्मयसरीरं भाणियव्वं।

भगवन्! वे ग्रैवेयक देव जो मारणान्तिक समुद्घात को प्राप्त हुए हैं, उनके शरीर की अवगाहना कितनी बड़ी कही गई है?

गौतम! मारणान्तिक समुद्घात को प्राप्त हुए ग्रैवेयक देव की शरीर-अवगाहना शरीर-प्रमाण मात्र कही गयी है, यह विष्कम्भ-बाहल्य की अपेक्षा से है किन्तु आयाम की अपेक्षा से नीचे जघन्य यावत् विद्याधर श्रेणी तक तथा उत्कृष्ट यावत् अधोलोक के ग्रामों तक एवं ऊपर अपने विमानों तक और तिरछी मनुष्य क्षेत्र तक ग्रैवेयक देव की शरीर-अवगाहना कही गई है।

इसी प्रकार अनुत्तरोपपातिक देवों की शरीर–अवगाहना जाननी चाहिए। इसी प्रकार कार्मण शरीर का भी वर्णन कहना चाहिए।

O Lord ! the celestial beings of Gravayak celestial vehicles who have attained the situation of Marantik Samud Ghat (space points expansion at the time of death, how big the structures of these bodies have been said?

Gautam ! The body structure of the celestial beings of Gravayak celestial vehicles who have attained maranantik Samudghat merely is equal to the its physical body, this one is with regard of expansion and thickness but with regard to extension the structures of the gods of Gravayak heavens have been said minimum upto the mountains of Vidyadhars and maximum upto the villages of the lower lokas and towards upside it is upto its own celestial vehicles and obliquely upto the regions of human beings.

In the same manner the body structure of the celestial beings of Anuttarpapatik celestial vehicles should be known. In the same way the description of Karmic body should be said.

६०४–कइविहे णं भंते! ओही पन्नत्ता?

गोयमा! दुविहा पन्नत्ता–भवपच्चइए य खओवसमिए य।

एवं सव्वं ओहिपदं भणियव्वं।

भगवन्! अवधिज्ञान के कितने प्रकार कहे गए हैं?

गौतम! अवधिज्ञान के दो प्रकार कहे गए हैं। यथा–1.भवप्रत्यय अवधिज्ञान 2.क्षायोपशमिक अवधिज्ञान। इस प्रकार प्रज्ञापना सूत्र का सम्पूर्ण अवधिज्ञान पद कहना चाहिए।

O Lord! How many types of Clairvoyance have been said?

Gautam ! Two types of Clairvoyance have been said as : 1. Bhav Prataya Clairvoyance, 2. Destructive-subsideous Clairvoyance. In this manner the entire Clairvoyance description verses of Pragyapana Sutra should be said.

**६०५– सीया य दव्व सारीर साया तह वेयणा भवे दुक्खा।
अब्भुवगमुवक्कमिया णीयाए चेव अणियाए।।१।।**

वेदना के विषय में जो द्वार ज्ञातव्य हैं, वे इस प्रकार हैं। यथा–1. शीत, 2. द्रव्य, 3. शरीर, 4. साता, 5. दुःखा, 6. आभ्युपगमिकी, 7. औपक्रमिकी, 8. निदा, 9. अनिदा।।1।।

In respect of sufferings whatever is known is such as : 1. cold, 2. matter, 3. physical body, 4. pain. 5. Abhyupagamini, 6. Oapakarmiki, 7. slumber, 8. non-slumber.

६०६– नेरइया णं भंते! किं सीतं वेयणं वेयंति, उसिणं वेयणं वेयंति, सीतोसिणं वेयणं वेयंति? गोयमा! नेरइया० एवं चेव वेयणापदं भाणियव्वं।

भगवन्! नारक कौनसी वेदना वेदन करते हैं–शीत वेदना, उष्ण वेदना या शीतोष्ण वेदना?

गौतम! नारकी शीत वेदना वेदन करते हैं, इस प्रकार से वेदना पद कहना चाहिए।

O Lord ! Whichever suffering the hellish beings suffer, either suffering of cold or suffering of heat or suffering of cold and heat both?

Gautam ! The hellish beings suffer the sufferings of cold, thus the suffering verses should be said.

६०७–कइ णं भंते! लेसाओ पन्नत्ताओ? गोयमा! छ लेसाओ पन्नत्ताओ, तं जहा–किण्हा नीला काऊ तेऊ पम्हा सुक्का। लेसापयं भाणियव्वं।

भगवन्! लेश्याओं की कितनी संख्या कही गई है?

गौतम! लेश्याएँ छह प्रकार की कही गई हैं। यथा–1. कृष्ण लेश्या, 2. नील लेश्या, 3. कापोत लेश्या, 4. तेजो लेश्या, 5. पद्म लेश्या, 6. शुक्ल लेश्या। इस प्रकार लेश्या पद कहना चाहिए।

O Lord ! How many number of the thought colouration (Leshyas) are said?

Gautam ! Thought colours (Leshyas) have been said of six types : 1. Dark thought colour, 2. Blue thought colour, 3. grey thought colour, 4. red thought colour, 5. yellow thought colour and 6. white thought colour. In this manner the thought colours should be said.

**६०८– अणंतरा य आहारे आहार भोगणा इ य।
पोग्गला नेव जाणंति अज्झवसाणे य सम्मत्ते।।१।।**

आहार के सन्दर्भ में अनन्तर-आहारी, आभोग-आहारी, अनाभोग-आहारी, आहार-पुद्गलों के नहीं जानने-देखने वाले और जानने-देखने वाले आदि चतुर्भंगी, प्रशस्त-अप्रशस्त, अध्यवसान वाले और अप्रशस्त अध्यवसान वाले तथा सम्यक्त्व और मिथ्यात्व को प्राप्त जीव ज्ञातव्य हैं।।1।।

In reference to the food the (jeevas) beings are known as Anantar Ahari (taking food at interval), Abhoga Ahari (taking food for comfort), Anobhaga Ahari (taking food not for comfort), the Chaturbhangi who are knower and seer of the Pudgal of food and who are not the knower and seer of the Pudgal of food, Prashast (right food), Aprashast (not right food), Adhyayavasan and unpraised Adhyayavasan and the beings attainer of right path and wrong faith.

६०९–नेरइया णं भंते! अणंतराहारा तओ निव्वत्तणया तओ परियाइयणया तओ परिणामणया तओ परियारणया तओ पच्छा विकुव्वणया? हंता गोयमा! एवं। आहारपदं भाणियव्वं।

भगवन्! नारक अनन्तराहारी हैं? तत्पश्चात् वे निर्वर्तनता करते हैं? तदुपरान्त पर्यादानता करते हैं? तदनन्तर परिणामनता करते हैं? तत्पश्चात् परिचारणा करते हैं? तत्पश्चात् विकुर्वणा करते हैं?

हाँ गौतम! ऐसा ही है। यहाँ पर (प्रज्ञापना सूत्रोक्त) आहार पद कहना चाहिए।

O Lord ! What the hellish beings are Anantar Ahari? After it if they do Nirvartanta? If they do paryadanata? If they do Parinamanta? If they do Parikarma? If they do Vikuvarna?

Yes Gautam ! It is so. Here the food verses should be said according to Pragyapana Sutra.

६१०–कइविहे णं भंते! आउगबंधे पन्नत्ते?

गोयमा! छव्विहे आउगबंधे पन्नत्ते, तं जहा–जाइनामनिहत्ताउए गतिनामनिहत्ताउए ठिइनामनिहत्ताउए पएसनामनिहत्ताउए अणुभागनामनिहत्ताउए ओगाहणानामनिहत्ताउए।

– भगवन्! आयुकर्म का बन्ध कितने प्रकार का कहा गया है?

गौतम! आयुकर्म का बन्ध छह प्रकार का कहा गया है। यथा–1. जातिनामनिधत्तायुष्क, 2. गतिनामनिधत्तायुष्क, 3. स्थितिनामनिधत्तायुष्क, 4. प्रदेशनामनिधत्तायुष्क, 5. अनुभागनामनिधत्तायुष्क, 6. अवगाहनानामनिधत्तायुष्क।

O Lord ! How many kinds of the bondage of the life span determining karmas have been said?

Gautam ! The life span determining karmas have been said of six types as: 1. Jatinamnidhantayushak (caste determining). 2. Gatinamani- dhantayushak (realm determining karmas), 3. Stithinamanidhantayushak (duration determining), 4. Pradesh- namanidhantayushak (space points determining, 5. Anubhagnamanidhantayushak) (fruit determining), and 6. Avagahahanama-nidhantayushak (structure determining).

६११–नेरइयाणं भंते! कइविहे आउगबंधे पन्नत्ते? गोयमा! छव्विहे पन्नत्ते, तं जहा–जातिनाम० गइनाम० ठिइनाम० पएसनाम० अणुभागनाम० ओगाहणानाम०। एवं जाव वेमाणियाणं।

भगवन्! नारकों का आयुबन्ध कितने प्रकार का कहा गया है?

गौतम! नारकों का आयुबन्ध छह प्रकार का कहा गया है। यथा–1. जातिनामनिधत्तायुष्क, 2. गतिनामनिधत्तायुष्क, 3. स्थितिनाम निधत्तायुष्क, 4. प्रदेशनामनिधत्तायुष्क, 5. अनुभागनामनिधत्तायुष्क, 6. अवगाहनानाम निधत्तायुष्क। इसी प्रकार असुरकुमारों से लेकर वैमानिक देव पर्यन्त समस्त दण्डकों में छह-छह प्रकार का आयुबन्ध जानना चाहिए।

O Lord ! How many bondages of life span determining Karmas of hellish being are said?

Gautam ! The life span determining Karmas of hellish beings have been said of six types as : 1. Jatinamanidhantayushak (caste determining), 2. Gati namanidhantayushak (realm datamining) 3. Stithinamanidhantayushak (duration determining), 4. Pradeshnamanidhantayushak (space points determining, 5. Anubhagnamanidhantayushak (fruit determining), and 6. Avagahahanamanidhantayushak (structure determining). In the same manner the life span determining Karmas bondages of malevolent demons to celestial beings and of all the Dandak six of each should be known.

६१२– निरयगई णं भंते! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं बारस मुहुत्ते।

भगवन्! नरकगति में कितने विरह काल के बाद नारकों का उपपात यानि जन्म कहा गया है?

गौतम! जघन्य से एक समय और उत्कर्ष से बारह मुहूर्त्त नारकों का विरहकाल कहा गया है।

O Lord ! After how much long interval the hellish beings reincarnate in the hell?

Gautam ! The interval of the re-incarnation of the hellish beings has been said (one muhurat with regard the minimum and twelve muhrat (Indian time) with regard the maximum duration.

६१३–एवं तिरियगई मणुस्सगई देवगई।

चउवीसई मुहुत्ता सत्त अहोरत्त तह य पन्नरसा।
मासो य दो य चउरो छम्मासा विरहकालो त्ति।।२।।

इसी प्रकार तीनों गतियों–तिर्यग्गति, मनुष्य गति, देव गति–का भी जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर काल जानना चाहिए।

In the same way the minimum and maximum time of all the remaining three realms i.e. realm of plants animals, human beings and celestial beings should be known.

६१४–सिद्धगई णं भंते! केवइयं कालं विरहिया सिज्झणयाए पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं छम्मासे। एवं सिद्धिवज्जा उव्वट्टणा।

भगवन् सिद्धगति कितने काल तक विरहित रहती है? अर्थात् कितने समय तक कोई भी जीव सिद्ध नहीं होता?

गौतम! सिद्धगति जघन्य से एक समय और उत्कर्ष से छह मास सिद्धि प्राप्त करने वालों से विरहित रहती है। अर्थात् सिद्धगति का विरहकाल छह मास है।

इसी प्रकार सिद्ध गति को छोड़कर शेष समस्त जीवों की उद्वर्तना यानि मरण का विरह भी जानना चाहिए।

O Lord ! How long time the Sidha realm remains in the state of interval—it means for how long even a single being not gets the realm of Sidha?

Gautam ! The realm of Sidha remains bereft of beings those who have attained liberation minimum of one Antar-muhurat and maximum of six months duration. Hence the interval time of the Sidhagati is six months. In this manner the interval of the deaths of remaining all the beings barring the Sidhagati beings should be known.

६१५–इमीसे णं भंते! रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता? एवं उववायदंडओ भाणियव्वो उव्वट्टणादंडओ य।

भगवन्! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के नारक कितने विरह-काल के उपरान्त उपपात वाले कहे गए हैं?

उक्त प्रश्न के उत्तर में यहाँ पर (प्रज्ञापनासूत्रोक्त) उपपात-दण्डक कहना चाहिए। इसी प्रकार उद्वर्तना दण्डक भी कहना चाहिए।

O Lord ! After how much interval the hellish beings of this Ratanprabh hell long take birth?

In reply of this question here "Utpat Dandak" of Pragyapana Sutra should be narrated. In the same way "Udvartana Dandak" must he said, too.

६१६–नेरइया णं भंते! जातिनामनिहत्ताउगं कति आगरिसेहिं पगरंति? गोयमा! सिय एक्केणं, सिय दोहिं, सिय तीहिं, सिय चउहिं, सिय पंचहिं, सिय छहिं, सिय सत्तहिं, सिय अट्ठहिं [आगरिसेहिं पगरंति] नो चेव णं नवहिं। एवं सेसाण वि आउगाणि जाव वेमाणिय त्ति।

भगवन्! नारक जीव जातिनामनिधत्तायुष्क कर्म का कितने आकर्षों से बन्ध करते हैं? गौतम! नारक जीव जातिनामनिधत्तायुष्क कर्म का स्यात् यानि कदाचित् एक आकर्ष से, स्यात् दो आकर्षों से, स्यात् तीन आकर्षों से, स्यात् चार आकर्षों से, स्यात् पाँच आकर्षों से, स्यात् छह आकर्षों से, स्यात् सात आकर्षों से, तथा स्यात् आठ आकर्षों से बन्ध करते हैं किन्तु नौ आकर्षों से बन्ध नहीं करते हैं।

इसी प्रकार शेष आयुष्क कर्मों का बन्ध जानना चाहिए। इसी प्रकार असुरकुमारों से लेकर वैमानिक कल्प तक समस्त दण्डकों में आयुबन्ध के आकर्ष जानना चाहिए।

O Lord ! With how many attractions the hellish beings bind the "Jatinamani- dhantayushak Karma?

Hey Gautam ! The hellish beings bind Jatinamanidhantayushak Karma perhaps sometime by one attraction, some time by two attractions, sometime by three attractions, sometime by four attractions, sometime five attractions, sometime by six attractions, sometime by eight attractions, but they do not bind through nine attractions.

In the same manner the bondages of the remaining life span determining Karmas should be known. In the same way the attractions of bondages of life span of malevolent demons (Asur Kumar) upto the celestial beings of heavens (of all the dandak) should be known.

६१७–कइविहे णं भंत्ते! संघयणे पन्नत्ते? गोयमा! छव्विहे संघयणे पन्नत्ते, तं जहा– वइरोसभनारायसंघयणे १, रिसभनारायसंघयणे २, नारायसंघयणे ३, अद्धनारायसंघयणे ४, कीलियासंघयणे ५, छेवट्ठसंघयणे ६।

भगवन्! संहनन के कितने प्रकार कहे गए हैं?

गौतम! संहनन के छह प्रकार कहे गए हैं। यथा–1. वज्रर्षभ नाराच संहनन, 2. ऋषभ नाराच संहनन, 3. नाराच संहनन, 4. अर्धनाराच संहनन, 5. कीलिका संहनन, 6. सेवार्त संहनन।

O Lord ! How many kinds of (Samhanan) molecule joints of body have been said?

Gautam ! The molecule joints have been said of six types as: Varjashabh narach Samhanan, 2. Rishbhnarach Samhanan, 3. Narach Samhanan, 4. Ardhanarach Samhanan, 5. Kilika Samhanan, 6. Sevart Samhanan.

६१८–नेरइया णं भंते! किंसंघयणी (पन्नत्ता)? गोयमा! छहं संघयणाणं असंघयणी। णेव अट्ठी णेव सिरा णेव ण्हारू। जे पोग्गला अणिट्ठा अकंता अप्पिया अणाएज्जा असुभा अमणुण्णा अमणामा अमणाभिरामा, ते तेसिं असंघयणत्ताए परिणमंति।

भगवन्! नारक किस संहनन वाले कहे गए हैं?

गौतम! नारकों में छह संहननों में से कोई भी संहनन नहीं होता है। वे असंहननी होते हैं। इसका कारण है कि उनके शरीर में अस्थियों (हड्डियों) का अभाव होता है। उनके शरीर में न तो शिराएँ (धमनियाँ) होती हैं और न स्नायु (आंतें)। वहाँ जो पुद्गल हैं वे अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अनादेय, अशुभ, अमनोज्ञ, अमनाम और अमनोभिराम हैं, उनसे नारकों का शरीर संहनन-रहित ही बनता है।

O Lord ! Of what molecule joint body of the hellish beings are stated?

Gautam ! None of these above mentioned six molecule joints body (Samhanan) the hellish beings have. The hellish beings are without of any Samhanan. The main cause behind it is that they have no bones in their bodies. There are neither veins nor nervous system in their bodies. The bodies of the hellish beings are devoid of Samhanan and are made of harmful, non-pleasing, not beloved, unbeneficial, inauspicious, unattractive, discarded and uncharming pudgals (matter).

६१९–असुरकुमारा णं भंते! किंसंघयणा पन्नत्ता? गोयमा! छण्हं संघयणाणं असंघयणी। णेवट्ठी नेव छिरा णेव ण्हारू। जे पोग्गला इट्ठा कंता पिया (आएज्जा) मणुण्णा (सुभा) मणामा मणाभिरामा, ते तेसिं असंघयणत्ताए परिणमंति। एवं जाव थणियकुमाराणं।

भगवन्! असुरकुमार देव किस संहनन वाले कहे गए हैं?

गौतम! असुरकुमार देवों के छहों संहननों में से कोई भी संहनन नहीं होता है। वे असंहननी होते हैं। इसका कारण है कि उन देवों के शरीर में अस्थियों का अभाव होता है। उनके शरीर में न शिराएँ होती हैं और न ही स्नायु होती हैं। जो पुद्गल इष्ट कान्त, प्रिय-शुभ, मनोज्ञ, मनाम तथा मनोभिराम होते हैं, उनसे उनका शरीर संहनन-रहित ही बनता है।

इस प्रकार नागकुमारों से लेकर स्तनितकुमार पर्यन्त देवों के विषय में जानना चाहिए अर्थात् उनके कोई संहनन नहीं होता।

Bhagwan! Of What Samhanan the malevolent demons are stated?

Gautam ! None of these six molecule joints body the malevolent demons have. They are Asamhanan. Because of it in the bodies of these gods there are no bones. Even there is no vein and nervous system in their bodies. Their bodies are devoid of Samhanan and made of desirable, pleasing, lovable, auspicious, attractive, beautiful and charming pudgalas (matters). In the same manner in respect to the Samahanan of the bodies of the gods namely Satanik etc. onward should be known i.e. they have not any moleculic joints body.

६२०–पुढवीकाइया णं भंते! किंसंघयणी पन्नत्ता? गोयमा! छेवट्ठसंघयणी पन्नत्ता। एवं जाव संमुच्छिम-पंचिंदियतिरिक्खजोणिय त्ति। गब्भवक्कंतिया छव्विहसंघयणी। संमुच्छिममणुस्सा छेवट्ठसंघयणी। गब्भवक्कंतियमणुस्सा छव्विहसंघयणी। जहा असुरकुमारा तहा वाणमंतर-जोइसिय- वेमाणिया य।

भगवन्! पृथ्वीकायिक जीव किस संहनन वाले कहे गए हैं?

गौतम! पृथ्वीकायिक जीव सेवार्त संहनन वाले कहे गए हैं।

इसी प्रकार अप्कायिक से लेकर सम्मूर्च्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक पर्यन्त समस्त जीव सेवार्त संहनन वाले कहे गए हैं। गर्भोपक्रान्तिक तिर्यंचों के छहों प्रकार के संहनन होते हैं। सम्मूर्च्छिम मनुष्य सेवार्त संहनन वाले कहे गए हैं। गर्भोपक्रान्तिक मनुष्यों के भी छहों प्रकार के संहनन होते हैं।

जिस प्रकार असुरकुमार देव संहनन-रहित हैं, उसी प्रकार वाणव्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक देव भी संहनन-रहित कहे गए हैं।

O Lord ! Of what Samhanamn the earthen body beings have been stated?

Gautam ! The earthen body beings have been said of Sevart Samhanan. In this way the beings of water beings to the spontaneous originated five senses trinyank nuclic beings, all the beings have been said of Sevart Samhanan. The uteruseous beings are said of all the six moleculic joints body. The spontaneous originated human beings (Samuarchhim Manushaya) have been said of Sevart Samhanan. The uteruseous human beings have moleculous joint body of all the six types, too.

६२१–कइविहे णं भंते! संठाणे पन्नत्ते? गोयमा! छव्विहे संठाणे पन्नत्ते। तं जहा–समचउरंसे १, णिग्गोहपरिमंडले २, साइए ३, वामणे ४, खुज्जे ५, हुंडे ६।

भगवन्! संस्थान कितने प्रकार के कहे गए हैं?

गौतम! संस्थान छह प्रकार के कहे गए हैं। यथा–1. समचतुरस्र संस्थान, 2. न्यग्रोधपरिमंडल संस्थान, 3. सादि या स्वाति संस्थान, 4. वामन संस्थान, 5. कुब्जक संस्थान, 6. हुंडक संस्थान।

O Lord ! How many types of body structure is said?

Gautam ! The body structures have been said of six types as : 1. Samchaturash structure, 2. Nayogradh parimandal structure, 3. Sadi or Swati structure, 4. Vaman structure, 5. Kubj structure, 6. Hundak structure.

६२२–णेरइया णं भंते! किंसंठाणी पन्नत्ता। गोयमा! हुंडसंठाणी पन्नत्ता। असुरकुमारा किंसंठाणी पन्नत्ता? गोयमा! समचउरंससंठाणसंठिया पन्नत्ता। एवं जाव थणियकुमारा।

भगवन्! नारक जीव किस संस्थान वाले होते हैं?

गौतम! नारक जीव हुंडक संस्थान वाले होते हैं।

भगवन्! असुरकुमार देव किस संस्थान वाले कहे गए हैं?

गौतम असुरकुमार समचतुरस्र संस्थान वाले कहे गए हैं।

इसी प्रकार स्तनितकुमार पर्यन्त समस्त भवनवासी देव भी समचतुरस्र संस्थान वाले कहे गए हैं।

O Lord ! Of what structure the hellish beings are said?

Gautam ! The hellish beings are stated of Hundak Structure.

Bhagwan ! Of what structure the fiendish gods have been said?

Gautam ! The fiendish Gods (Asur kumar) have been said of Samchaturash structure. In the same manner from Satanik Kumar onward to all the residential gods have been said of Samchaturash structure.

६२३–पुढवी मसूरसंठाणा पन्नत्ता। आऊ थिबुयसंठाणा पन्नत्ता। तेऊ सूईकलावसंठाणा पण्णत्ता। वाऊ पडागासंठाणा पन्नत्ता। वणस्सई नाणासंठाणसंठिया पन्नत्ता।

पृथ्वीकायिक जीव मसूर संस्थान वाले होते हैं। अप्कायिक जीव स्तिबुक (बिन्दु) संस्थान वाले कहे गए हैं। तेजस्कायिक जीवों में सूचीकलाप संस्थान होता है। वायुकायिक जीवों में पताका संस्थान होता है। वनस्पतिकायिक जीवों में नाना प्रकार के संस्थान होते हैं।

The earthen body beings are of lentil pulse like structures. The water body beings have been said of drop (Bindoo) structures. The fiery beings have been said of suchikolap structures. The air body beings are said of flag structure. The plant and vegetable beings are said of various kinds of structure.

६२४–बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-सम्मुच्छिम-पंचेंदियतिरिक्खा हुंडसंठाणा पन्नत्ता। गब्भवक्कंतिया छव्विहसंठाणा (पन्नत्ता)। संमुच्छिममणुस्सा हुंडसंठाणसंठिया पन्नत्ता। गब्भवक्कंतियाणं मणुस्साणं छव्विहा संठाणा पन्नत्ता। जहा असुरकुमारा तहा वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया वि।

जिन जीवों में हुंडक संस्थान होता है, वे जीव हैं–द्वीन्द्रिय जीव, त्रीन्द्रिय जीव, चतुरिन्द्रिय जीव तथा सम्मूर्च्छिम पंचेन्द्रिय जीव। गर्भोपक्रान्तिक तिर्यंचों में छहों संस्थान कहे गए हैं। सम्मूर्च्छिम मनुष्य हुंडक संस्थान वाले तथा गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य छहों संस्थान वाले होते हैं। जिस प्रकार असुरकुमार देव समचुरस्र संस्थान वाले कहे गए हैं, उसी प्रकार वाणव्यन्तर, ज्योतिष्क तथा वैमानिक देव भी समचतुरस्र संस्थान वाले कहे गए हैं।

The beings who have Hundak Structure are as follows : two senses beings, three senses beings, four senses beings and spontaneous originated five senses beings. The uteruseous originated animal beings have been said of six structures. The spontaneous originated human beings have been said of Hundak structure but the uteruseous originated human beings have six structure body. As such the malevolent demons have been said of Samchaturash structure so as the peripatetic gods, stellar gods and celestial beings have been said of Samchaturash structure.

६२५–कइविहे णं भंते! वेए पन्नत्ते? गोयमा! तिविहे वेए पन्नत्ते, तं जहा–इत्थीवेए पुरिसवेए नपुंसवेए।

भगवन्! वेद कितने प्रकार के कहे गए हैं? गौतम! वेद तीन प्रकार के कहे गए हैं। यथा– 1. स्त्री वेद, 2. पुरुष वेद, 3. नपुंसक वेद।

O Lord ! How many kinds of genders (Ved) have been narrated?

Gautam ! Genders have been said of three kinds as : 1. Feminine gender, 2. Masculine gender, and 3. Neuter gender.

६२६–नेरइया णं भंते! किं इत्थीवेया पुरिसवेया णपुंसगवेया पन्नत्ता? गोयमा! णो इत्थीवेया, णो पुंवेया, णपुंसगवेया पण्णत्ता।

भगवन्! नारक जीव किस वेद के अन्तर्गत आते हैं? क्या वे स्त्री वेद वाले हैं, पुरुष वेद वाले हैं या नपुंसक वेद वाले हैं?

गौतम! नारक जीव न स्त्री वेद वाले हैं, न पुरुष वेद वाले हैं। वे नपुंसक वेद वाले कहे गए हैं।

O Lord ! Under what category the hellish beings come? Are they of feminine category gender, or masculine gender or neuter gender?

Gautam ! the hellish beings are neither of feminine gender nor of masculine gender but belong to the category of neuter gender.

६२७–असुरकुमारा णं भंते! किं इत्थीवेया पुरिसवेया णपुंसगवेया? गोयमा! इत्थीवेया, पुरिसवेया। णो णपुंसगवेया। जाव थणियकुमारा।

भगवन्! असुरकुमार देव किस वेद के अन्तर्गत आते हैं? क्या वे स्त्री वेद वाले हैं, पुरुष वेद वाले हैं या नपुंसक वेद वाले हैं?

गौतम! असुरकुमार देव स्त्रीवेद वाले तथा पुरुषवेद वाले हैं किन्तु वे नपुंसक वेद वाले नहीं होते हैं। इसी प्रकार स्तनितकुमार देवों तक जानना चाहिए।

Bhagwan! In what category the malevolent demons are counted? Are they fall in the feminine gender or in masculine gender in neuter gender, category?

Gautam ! The malevolent demons belong to feminine and masculine gender but not to neuter gender. In the same way upto the stanik gods should be known.

६२८–पुढवी आऊ तेऊ वाऊ वणस्सई वि-ति-चउरिंदिय-संमुच्छिमपंचिंदिय-तिरिक्खसंमुच्छिम-मणुस्सा णपुंसगवेया। गब्भवक्कंतियमणुस्सा पंचिंदियतिरिया य तिवेया। जहा असुरकुमारा, तहा वाणमंतरा जोइसिय-वेमाणिया वि।

जो जीव नपुंसक वेद वाले कहे गए हैं, वे इस प्रकार हैं–1.पृथ्वीकायिक जीव, 2. अप्कायिक जीव, 3. तेजस्कायिक जीव, 4. वायुकायिक जीव, 5. वनस्पतिकायिक जीव, 6. द्वीन्द्रिय जीव 7. त्रीन्द्रिय जीव, 8. चतुरिन्द्रिय जीव, 9. सम्मूर्च्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंच जीव, 10. सम्मूर्च्छिम मनुष्य। पुरुष, स्त्री व नपुंसक वेद वाले दो प्रकार के जीव होते हैं। यथा–1. गर्भोपक्रान्तिक मनुष्य, 2. गर्भोपक्रान्तिक तिर्यंच। 1. असुर कुमार देव, 2. वाण व्यन्तर, 3. ज्योतिष्क, और 4. वैमानिक देव-स्त्री वेद और पुरुष वेद वाले होते हैं।

विशेष:–ग्रैवेयक और अनुत्तर विमानवासी देव तथा लौकान्तिक देव केवल पुरुष वेद वाले होते हैं।

The beings those have been said neuter gender are as follows : 1. Earthen body beings, 2. Water body beings, 3. Fiery body beings, 4. Air body beings, 5. Vegetable body beings, 6. Two senses beings, 7. Three senses beings, 8. Four senses beings, 9. Spontaneous originated five senses beings, 10. Spontaneous originated human beings.

The beings having the feminine gender, masculine gender and neutar gender are of two types as : 1. Uteruseous originated human beings, 2. Uteruseous originated animal beings. 1. feminine and masculine beings take birth only in these four categories i.e., 1. Malevolent demons, 2. Peripatetic gods, 3. stellar, 4. celestial beings.

Note : The celestial beings of Graivayak and Anuttar celestial vehicles are only of masculine gender.

OO

अतीत-अनागतकालिक महापुरुष

GREAT PERSONS OF PAST AND FUTURE

६२९–तेणं कालेणं तेणं समएणं कप्पस्स समोसरणं णेयव्वं जाव गणहरा सावच्चा निरवच्चा वोच्छिण्णा।

उस काल (दु:षम-सुषमा) में तथा उस समय में (जब भगवान महावीर धर्मोपदेश करते हुए विहार कर रहे थे, तब) कल्पभाष्य के अनुसार समवसरण का वर्णन वहाँ तक करना चाहिए, जब तक कि सापत्य यानि शिष्य-सन्तान-युक्त सुधर्मास्वामी और निरपत्य यानि शिष्य-सन्तान रहित शेष समस्त गणधर देव व्युच्छिन्न अर्थात् सिद्ध हो गए।

According to the Kalpabhashya the description of religious assembly (Samvasran) should be done from the period of (Dushama-Shushama) and the time when Bhagwan Mahavir was traveling delivering his sermons till the time when Sudharma Swami with his disciples, and the remaining all the head of the ascetic group (Gandhar) devoid of any disciple, had attained the salvation.

६३०–जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे तीयाए उस्सप्पिणीए सत्त कुलगरा होत्था। तं जहा–

मित्तदामो सुदामे य सुपासे य सयंपभे।
विमलघोसे सुघोसे य महाघोसे य सत्तमे।।१।।

इस जम्बूद्वीप के भारतवर्ष में अतीत काल की उत्सर्पिणी में जो कुलकर उत्पन्न हुए थे, उनकी संख्या सात कही गई है। यथा–1. मित्रदाम, 2. सुदाम, 3. सुपार्श्व, 4. स्वयम्प्रभ, 5. विमलघोष, 6. सुघोष, 7. महाघोष।

The twins (Kulkurs) those who took birth in past in the area of Bharat of this Jambu continent in the ascending period of time (Utsarpini Kaal) were as follows : 1. Mitradam, 2. Sudama, 3. Suparshava, 4. Swayamprabha, 5. Vimal Ghosh, 6. Sughosh, 7. Mahaghosha.

६३१–जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे तीयाए ओसप्पिणीए दस कुलगरा होत्था। तं जहा–

संयजले सयाऊ य अजियसेणे अणंतसेणे य।
कज्जसेणे भीमसेणे महाभीमसेणे य सत्तमे।।२।।

दढरहे दसरहे सयरहे।

इस जम्बूद्वीप के भारतवर्ष में अतीतकाल की अवसर्पिणी में जो कुलकर उत्पन्न हुए थे, उनकी

संख्या दश कही गई है। यथा–1. शतंजल, 2. शतायु 3. अजितसेन, 4. अनन्तसेन, 5. कार्यसेन, 6. भीमसेन, 7. महाभीम सेन, 8. दृदरथ, 9. दशरथ, 10. शतरथ ।।2।।

The number of the twins (Kulkur) who took birth in past in the area of Bharat of Jambu continent in descending period of time (Avasarpini Kaal) has been said ten as : 1. Shantajal, 2. Shatayu, 3. Ajit Sen, 4. Anant Sen , 5. Karya Sen, 6. Bhim Sen, 7. Mahabhira Sen, 8. Dridhrath, 9. Dasharath, 10. Shatarath.

६३२–(जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए समाए सत्त कुलगरा होत्था। तं जहा–

पढमेत्थ विमलवाहण [चक्खुम जसमं चउत्थमभिचंदे।
तत्तो पसेणइए मरुदेवे चेव नाभी य]।।३।।

एतेसिं णं सत्तण्हं कुलगराण सत्त भारिआ होत्था। तं जहा–

चंदजसा चंदकंता [सुरूव पडिरूव चक्खुकंता य।
सिरिकंता मरुदेवी कुलगरपत्तीण णामाइं]।।४।।

इस जम्बूद्वीप के भारतवर्ष में इस अवसर्पिणी काल में जो कुलकर उत्पन्न हुए, उनकी संख्या सात कही गई है। यथा–1. विमलवाहन, 2. चक्षुष्मान्, 3. यशष्मान्, 4. अभिचन्द्र 5. प्रसेनजित, 6. मरुदेव, 7. नाभिराय ।।3।।

इन सातों कुलकरों की भार्याओं की संख्या सात कही गई है। यथा–1. चन्द्रयशा, 2. चन्द्रकान्ता, 3. सुरूपा, 4.प्रतिरूपा, 5. चक्षुष्कान्ता, 6. श्रीकान्ता, 7. मरुदेवी। ये उपर्युक्त कुलकरों की पत्नियाँ हैं ।।4।।

The twins (Kulkur) who took birth in past in the area of Bharatvarsh of Jambu continent in descending period of time (Avasarapini Kaal) are as follows : 1. Vimal Vahan, 2. Chakshuman, 3. Yashashman, 4. Abhi chander, 5. Prasenijit, 6. Marudeva, 7. Nabhiraya.

The description of the consorts of these Kulkurs are also made and the number of the consorts has been said seven as : 1. Chandrayasha, 2. Chandrakanta, 3. Suroopa, 4. Pratiroopa, 5. Chakshukanta, 6. Shreekanta, and 7. Marudevi. These above mentioned are the wives of the Kulkuras.

६३३–जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे णं ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थगराणं पियरो होत्था। तं जहा–

णाभी य जियसत्तू य [जियारी संवरे इय।
मेहे धरे पइट्ठे य महसेणे य खत्तिए।।५।।

सुग्गीवे दढरहे विण्हू वसुपुज्जे य खत्तिए।
कयवम्मा सीहसेणे भाणू विस्ससेणे इय।।६।।

सूरे सुदंसणे कुंभे सुमित्तविजए समुद्दविजये य।
राया य आससेणे य सिद्धत्थे च्चिय खत्तिए।।७।।

उदितोदिय कुलवंसा विसुद्धवंसा गुणेहिं उववेया।
तित्थप्पवत्तयाणं एए पियरो जिणवराणं]।।८।।

इस जम्बूद्वीप के भारतवर्ष में इस अवसर्पिणी काल में चौबीस तीर्थंकरों के चौबीस पिता हुए। यथा–1. नाभिराय, 2. जितशत्रु, 3. जितारि, 4. संवर, 5. मेघ, 6. धर, 7. प्रतिष्ठ, 8. महासेन, 9. सुग्रीव, 10. दृढ़रथ, 11. विष्णु, 12. वसुपूज्य, 13. कृतवर्मा, 14. सिंहसेन, 15. भानु, 16. विश्वसेन, 17. सूरसेन, 18. सुदर्शन, 19. कुम्भराज, 20. सुमित्र, 21. विजय, 22. समुद्रविजय, 23. अश्वसेन, 24. सिद्धार्थ क्षत्रिय ।।5-8।।

तीर्थ प्रवर्त्तक तीर्थंकरों के पिताओं का वंश और कुल उच्च व विशुद्ध था। वे सभी उत्तम गुणों से संयुक्त थे।।8।।

Twenty four fathers had been of twenty four fordmakers in Bharatvarsh of Jambu Continent in this degrading time (Avasarpini Kaal) they were as : 1- Nabhiraya, 2. Jitshatru, 3. Jitari, 4. Samvar, 5. Megh, 6. Dhar, 7. Pratishth, 8. Mahasen, 9. Sugriv, 10. Dridharatha, 11. Vishnu, 12. Vashupujya, 13. Kritvarma, 14. Singhsen, 15. Bhanu, 16. Vishava Sen, 17. Sur Sen, 18. Sudrshan, 19. Kumbharaj, 20. Sumitra, 21. Vijay, 22. Samudra Vijay, 23. Ashava Sen, and 24. Shidharth (the warriors).

The clans of the fathers of these Ford Makers were noble and pure. They all were endowed with supreme attributes.

६३४–जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थगराणं मायरो होत्था। तं जहा–

मरुदेवी विजया सेणा [सिद्धत्था मंगला सुसीमा य।
पुहवी लक्खणा रामा नंदा विण्हू जया सामा]।
सुजसा सुव्वया अइरा सिरिया देवी पभावई पउमा।।९।।

वप्पा सिवा य वामा य तिसलादेवी य जिणमाया।।१०।।

इस जम्बूद्वीप के भारतवर्ष में इस अवसर्पिणी काल में चौबीस तीर्थंकरों की चौबीस माताएँ हुई हैं, जिनका उल्लेख इस प्रकार है–1. मरुदेवी, 2. विजया, 3. सेना, 4. सिद्धार्था, 5. मंगला, 6. सुसीमा,

7. पृथ्वी, 8. लक्ष्मणा, 9. रामा, 10. नन्दा, 11. विष्णु, 12. जया, 13. श्यामा, 14. सुयशा, 15. सुव्रता 16. अचिरा, 17. श्री, 18. देवी, 19. प्रभावती, 20. पद्मा, 21. वप्रा, 22. शिवा, 23. वामा, 24. त्रिशलादेवी। ये चौबीस जिन माताएँ हैं। ।।9-10।।

Twenty four mothers of twenty four Ford Makers in Bharatvarsh of Jambu continent in this degrading period of time (Avasarpini Kaal) have been as : 1. Maru Devi, 2. Vijaya, 3. Sena, 4. Sidhartha, 5. Mangla, 6. Suseema, 7. Prithavi, 8. Lakshmana, 9. Rama, 10. Nanda, 11. Vishnu, 12. Jaya, 13. Shyama, 14. Suyasha, 15. Suvarta, 16. Achira, 17. Shree, 18. Devi, 19. Prabhavati, 20. Padama, 21. Vapra, 22. Shiva, 23. Vama, and 24. Trishala Devi.

These all are mothers of Jina Bhagwan.

६३५–जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थगरा होत्था। तं जहा–उसभे १, अजिये २, संभवे ३, अभिणंदणे ४, सुमई ५, पउमप्पहे ६, सुपासे ७, चंदप्पभे ८, सुविहि-पुप्फदंते ९, सीयले १०, सिज्जंसे ११, वासुपुज्जे १२, विमले १३, अणंते १४, धम्मे १५, संती १६, कुंथू १७, अरे १८, मल्ली १९, मुणिसुव्वए २०, णमी २१, णेमी २२, पासे २३, वड्ढमाणो २४ य।

इस जम्बूद्वीप के भारतवर्ष में इस अवसर्पिणी काल में चौबीस तीर्थंकर हुए हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं–1. ऋषभ, 2. अजित 3. संभव, 4. अभिनन्दन, 5. सुमति, 6. पद्मप्रभ, 7. सुपार्श्व, 8. चन्द्रप्रभ, 9. सुविधि-पुष्पदन्त, 10-शीतल, 11. श्रेयांस 12. वासुपूज्य, 13. विमल, 14. अनन्त, 15. धर्म, 16. शान्ति, 17. कुन्थु, 18. अर, 19. मल्ली, 20. मुनिसुव्रत, 21. नमि, 22. नेमि, 23. पार्श्व, 24. वर्धमान।

There have been twenty four Ford Makers (Tirthankar) in Bharatvarsh of Jambu continent in this descending period (Avasarpini Kaal). The name of those Ford Makers are as follows : 1. Rishabh, 2. Ajit, 3. Sambhava, 4. Abhinandan, 5. Sumati, 6. Padamprabh, 7. Suparshava, 8. Chanderprabha, 9. Suvidhi – Pushapdant, 10. Shital, 11. Shreyans, 12. Vasu Pujya, 13. Vimal, 14 Anant, 15. Dharam, 16. Shanti, 17. Kunthu, 18. Aranath, 19. Mallinath, 20. Muni Suvrat, 21. Nami, 22. Nemi, 23. Parshava, and 24. Vardhaman.

६३६–एएसिं चउवीसाए तित्थगराणं चउव्वीसं पुव्वभवया णामधेया होत्था। तं जहा–

पढमेत्थ वइरणाभे विमले तह विमलवाहणे चेव।
तत्तो य धम्मसीहे सुमित्त तह धम्ममित्ते य।।११।।

सुंदरबाहु तह दीहबाहू जुगबाहू लट्ठबाहू य।
दिण्णे य इंददत्ते सुंदर माहिंदरे चेव।।१२।।

सीहरहे मेहरहे रुप्पी अ सुदंसणे य बोद्धव्वे।
तत्तो य णंदणे खलु सीहगिरी चेव वीसइमे।।१३।।

अदीणसत्तु संखे सुदंसणे नंदणे य बोद्धव्वे।
[इमीसे] ओसप्पिणीए एए तित्थयराणं तु पुव्वभवा।।१४।।

इन चौबीस तीर्थंकरों के पूर्वभव के चौबीस नाम थे। उनका उल्लेख इस प्रकार से है–1. वज्रनाभ, 2. विमल, 3. विमलवाहन, 4. धर्मसिंह, 5. सुमित्र, 6. धर्ममित्र, 7. सुन्दरबाहु, 8. दीर्घबाहु, 9. युगबाहु, 10. लष्ठबाहु, 11. दत्त, 12. इन्द्रदत्त, 13. सुन्दर 14. माहेन्द्र, 15. सिंहरथ, 16. मेघरथ, 17. रुक्मी, 18. सुदर्शन, 19. नन्दन, 20. सिंहगिरि, 21. अदीनशत्रु, 22. शंख, 23. सुदर्शन, 24. नन्दन। ये इसी अवसर्पिणी काल के चौबीस तीर्थंकरों के पूर्वभव के नाम कहे गए हैं।।11-14।।

The names of these twenty four Ford Makers of their previous births have been mentioned as follows : 1. Vajrnabha, 2. Vimal, 3. Vimalvahan, 4. Dharma Singh, 5. Sumitra, 6. Dhram-mitra, 7. Sunderbahu, 8. Dirghbahu, 9. Yugabahu, 10. Lasthbahu, 11. Dutt, 12. Inder Dutt, 13. Sunder, 14. Mahendra, 15. Singhratha, 16. Meghratha, 17. Rumi, 18. Sudarshan, 19. Nandan, 20. Singhgiri, 21. Adeenshatru, 22. Shankha, 23. Sudarshan, and 24. Nandan. The names those have been mentioned above are of twenty four Fordmakers of their previous lives.

६३७– एएसिं चउव्वीसाए तित्थयराणं चउव्वीसं सीयाओ होत्था। तं जहा–

सीया सुदंसणा[१] सुप्पभा[२] य सिद्धार्थ[३] सुप्पसिद्धा[४] य।
विजया[५] य वेजयंती[६] जयंती[७] अपराजिआ[८] चेव।।१५।।

अरुणप्पभ[९] चंदप्पभ[१०] सूरप्पह[११] अग्गि[१२] सुप्पभा[१३] चेव।
विमला[१४] य पंचवण्णा[१५] सागरदत्ता[१६] णागदत्ता[१७] य।।१६।।

अभयकर[१८] णिव्वुइकरा[१९] मणोरमा[२०] तह मणोहरा[२१] चेव।
देवकुरु[२२] उत्तरकुरा[२३] विसाल चंदप्पभा[२४] सीया।।१७।।

एयाओ सीआओ सव्वेसिं चेव जिणवरिंदाणं।
सव्वजगवच्छलाणं सव्वोउयसुभाए छायाए।।१८।।

इन चौबीस तीर्थंकरों के लिए चौबीस शिविकाएँ (पालकियाँ) थीं, जिन पर विराजमान होकर तीर्थंकर प्रव्रज्या हेतु वन में गए। इन शिविकाओं की नामावली इस प्रकार है–1. सुदर्शना, 2. सुप्रभा, 3. सिद्धार्था, 4. सुप्रसिद्धा, 5. विजया, 6. वैजयन्ती, 7. जयन्ती, 8. अपराजिता 9. अरुण-प्रभा, 10-चन्द्रप्रभा, 11. सूर्यप्रभा, 12. अग्नि-प्रभा, 13. सुप्रभा, 14. विमला, 15. पंचवर्णा, 16. सागरदत्ता,

17. नागदत्ता, 18. अभयकरा, 19. निर्वृतिकरा, 20. मनोरमा, 21. मनोहरा, 22. देवकुरा, 23. उत्तरकुरा, 24. चन्द्रप्रभा शिविका। ये समस्त शिविकाएँ विशाल व भव्य थीं। ।15-17।। सर्वजगत-वत्सल सभी चौबीस जिनवरेन्द्रों की ये शिविकाएँ समस्त ऋतुओं में सुखदायिनी, उत्तम व शुभकान्ति से युक्त होती हैं। ।।18।।

There were twenty four palanquins of these twenty four Fordmakers, through embarking on these the Formmakers (tirthankars), went to forests for initiation. The description of these palanquins is as : 1. Sudarshana, 2. Suprabha, 3. Sidhartha, 4. Suprasidha, 5. Vijaya, 6. Vaijayanti, 7. Jayanti, 8. Aprajit, 9. Arunprabha, 10. Chandprapha, 11. Suryaprabha, 12. Agniprabha, 13. Suprabha, 14. Vimala, 15. Panchvarani, 16. Sagardutta, 17. Nagdutta, 18. Abhayakara, 19. Nivartikara, 20. Manorama, 21. Manohara, 22. Devkura, 23. Uttarkura, and 24. Chandraprabha palanquin. All these palanquins were huge and grandeur. These palanquins have been pleasure giving, supreme and of auspicious luster in all the seasons to the almighty, the protector of this universe Jinendra Bhagwan.

६३८ — पुव्विं ओक्खित्ता माणुसेहिं साहट्टु (ड्ड) रोमकूवेहिं।
पच्छा-वहंति सीयं असुरिंद-सुरिंद-नागिंदा।।१९।।

चल-चवल-कुंडलधरा सच्छंदविउव्वियाभरणधारी।
सुर-असुर-वंदिआणं वहंति सीअं जिणिंदाणं।।२०।।

पुरओ वहंति देवा नागा पुण दाहिणम्मि पासम्मि।
पच्चच्छिमेण असुरा गरुला पुण उत्तरे पासे।।२१।।

जिन-दीक्षा ग्रहण करने के लिए जाते समय तीर्थंकरों की इन शिविकाओं को सर्वप्रथम हर्षित व रोमांचित मनुष्य अपने कन्धों पर उठाकर ले जाते हैं। उनके पीछे असुरेन्द्र, सुरेन्द्र और नागेन्द्र उन शिविकाओं को लेकर चलते हैं।।19।।

चंचल चपल कुण्डलों के धारक और अपनी इच्छा के अनुसार विक्रियामय आभूषणों को धारण करने वाले वे देवगण सुर-असुरों से वन्दित जिनेन्द्रों की शिविकाओं को वहन करते हैं।।20।।

इन शिविकाओं को पूर्व की ओर वैमानिक देव, दक्षिण पार्श्व में नाग कुमार, पश्चिम पार्श्व में असुर कुमार तथा उत्तर पार्श्व में गरुड़ कुमार देव वहन करते हैं।।21।।

At top priority the delighted and cheerful persons lift on their shoulders and carry these palanquin of the fordmakers (Tirthankars) going for accepting the Jin-initiation.

Taking these palanquins the Asurenderas, Surendra and Nagendras walk following them ||19||. Bearing the flickering, dangling earnings and the ornaments changeable in mode according to their will these group of gods carry the palanquins of the Jinendera worshiped by Gods and demons ||20||. The gods carry these palanquins in the four directions as : 1. in the East direction, the celestial beings carry these Palanquin, Southward the serpentine, Westward the fiendish and towards North the Eagle (Garur gods) carries them.

६३९– उसभो य विणीयाए बारवईए अरिट्ठवरणेमी।
अवसेसा तित्थयरा निक्खंता जम्मभूमीसु।।२२।।

दीक्षा-ग्रहण के लिए चौबीस तीर्थंकरों में से दो तीर्थंकरों को छोड़कर शेष बाईस तीर्थंकर अपनी-अपनी जन्म भूमियों से निकले थे। ये दो तीर्थंकर हैं—ऋषभदेव और अरिष्टनेमि। ऋषभदेव विनीता नगरी से और अरिष्टनेमि द्वारावती से दीक्षा-ग्रहणार्थ बाहर निकले थे।

Barring two, the twenty two Fordmakers out of these twenty four Fordmakers, going for consecration, have set out of their birth places. The names of the two Fordmakers are Rishabh Dev and Arishth Nemi of these two. Rishabh Dev had setout from the city of Vinita and Arishthnemi had set out from Dvaravati for consecration.

६४०– सव्वे वि एगदूसेण [णिग्गया जिणवरा चउव्वीसं]।
ण य णाम अण्णलिंगे ण य गिहिलिंगे कुलिंगे व।।२३।।

सभी चौबीस जिनवर जिन-लिंग से ही दीक्षित हुए थे। वे जिनवर इन्द्र-समर्पित दिव्य वस्त्र अर्थात् एक दूष्य से ही दीक्षा-ग्रहणार्थ निकले थे। इन जिनवरों में से कोई भी जिनवर न अन्य पाखण्डी लिंग से, न गृहिलिंग से और न कुलिंग से दीक्षित हुए।

All these twenty four Fordmakers had been initiated only through Jina-linga. They had set out to accept consecration with only one covering divine cloth dedicated by Indra. Not even one of them, the Jinvaras were consecrated neither through the other hypocrite lings, nor through household lingas and nor through unholy linga (Kulinga).

६४१– एक्को भगवं वीरो [पासो मल्ली य तिहिं तिहिं सएहिं]।
भगवं वि वासुपुज्जो छहिं पुरिससएहिं निक्खंतो]।।२४।।
उग्गाणं भोगाणं राइण्णाणं [च खत्तियाणं च।
चउहिं सहस्सेहिं उसभो सेसा उ सहस्स-परिवारा]।।२५।।

दीक्षा-ग्रहणार्थ चौबीस जिनवरों के साथ घर से निकलते समय पुरुषों की संख्या अलग-अलग कही गई है। इन चौबीस जिनवरों में से भगवान महावीर ऐसे अकेले जिनवर थे जो अकेले ही घर से निकले थे। भगवान पार्श्वनाथ और मल्ली जिन तीन-तीन सौ पुरुषों के साथ तथा भगवान वासुपूज्य छह सौ पुरुषों के साथ दीक्षा ग्रहण करने के लिए घर से निकले थे।।24।।

भगवान ऋषभदेव के विषय में कहा गया है कि वे चार हजार उग्र, भोग, राजन्य और क्षत्रिय जनों के परिवार के साथ दीक्षा ग्रहण करने के लिए घर से निकले थे। शेष उन्नीस जिनवर एक-एक हजार पुरुषों के साथ निकले थे।।25।।

The number of the persons who accompanied the twenty four Jinvara while they were setting out for consecration has been said different, out of these twenty four Formakers Bhagwan Mahavir was the only one who set out for consecration solely. Bhagwan Parshava Nath and Fordmaker Mallinath were accompanied by three hundred Individuals each. At the time when Bhagwan Vasupujya had set out from his residence six hundred men were along with him for consecration. About Bhagwan Rishabh Dev—It has been said that he set out for consecration from palace along with the four thousand household of Ugra, Bhog, Rajanya and Warrior people. The rest of the Nineteen Jinvara set out along with one thousand men each.

६४२– सुमइत्थ णिच्चभत्तेण [णिग्गओ वासुपुज्ज चोत्थेणं।
पासो मल्ली य अट्ठमेणं सेसा उ छट्ठेणं]।।२६।।

सुमति देव, वासुपूज्य, पार्श्व और मल्ली जिनवरों को छोड़कर शेष बीस जिनवर षष्ठ भक्त के नियम के साथ दीक्षित हुए थे। किन्तु सुमति देव नित्य भक्त के साथ, वासुपूज्य चतुर्थ भक्त के साथ, पार्श्व व मल्ली अष्टम भक्त के साथ दीक्षित हुए थे।।26।।

Apart from Sunmati Deva, Vasupujya, Parshava and Mallinath remaining all the twenty Jinvera get consecrated observing the rule of two days fast (Shast Bhagktpani). But Sumati Nath got consecration observing routine fast, Vasupujya observing one day fast and Parshava Nath and Malli Nath got consecration observing three days fast.

६४३– एएसिं णं चउवीसाए तित्थगराणं चउव्वीसं पढम भिक्खादायारो होत्था। तं जहा–

सिज्जंस बंभदत्ते सुरिंददत्ते य इंददत्ते य।
पउमे य सोमदेवे माहिंदे तह य सोमदत्ते य।।२७।।

पुस्से पुणव्वसू पुण्णणंद सुणंदे जये य विजये य।
तत्तो य धम्मसीहे सुमित्त तह वग्गसीहे अ।।२८।।

अवराजिय विस्ससेणे वीसइमे होइ उसभसेणे य।
दिण्णे वरदत्ते धणे बहुले य आणुपुव्वीए।।२९।।
एए विसुद्धलेसा जिणवरभत्तीइ पंजलिउडा उ।
तं कालं तं समयं पडिलाभेई जिणवरिंदे।।३०।।

जिन महापुरुषों ने इन चौबीस तीर्थंकरों को प्रथम बार भिक्षा दी उनकी नामावली इस प्रकार है–1. श्रेयान्स, 2. ब्रह्मदत्त, 3. सुरेन्द्रदत्त, 4. इन्द्रदत्त, 5. पद्म, 6. सोमदेव, 7. माहेन्द्र, 8. सोमदत्त, 9. पुष्य, 10. पुनर्वसु, 11. पूर्णनन्द, 12. सुनन्द, 13. जय, 14. विजय, 15. धर्मसिंह, 16. सुमित्र, 17. वर्ग (वग्ग) सिंह, 18. अपराजित, 19. विश्वसेन, 20. वृषभसेन, 21. दत्त, 22. वरदत्त, 23. धनदत्त, 24. बहुल। ये नाम क्रमशः जानना चाहिए जिन्होंने चौबीस तीर्थंकरों को प्रथम बार आहार दान दिया। ये महापुरुष विशुद्ध लेश्या वाले थे जिन्होंने जिनवरों की भक्ति से प्रेरित होकर अंजलिपुट से उस काल और उस समय में जिनवरेन्द्र तीर्थंकरों को आहार का प्रतिलाभ कराया।।27-30।।

The number of the great persons who have given alms to these twenty four Formakers (Tirthankars), at first, have been said twenty four as : 1. Shreyansh, 2. Brahamdutt, 3. Surender dut, 4. Inder Dutt, 5. Padam, 6. Somdev, 7. Mahendra, 8. Somdutt, 9. Pushya, 10. Punarvasu, 11. Puranand, 12, Sunand, 13. Jay, 14. Vijay, 15. Dharam Singh, 16. Sumitra, 17. Vagg Singh, 18. Aprajit, 19. Vishav Sen, 20. Vrishabh Sen, 21. Dutt, 22. Vardutt, 23. Dhandutt, 24. Bahul. These names should be known respectively who donated food to twenty four Formakers (Tirthankars) respectively, at first. All these great men were of pure thought colour (leshya) who through the inspiration of the devotion of these Jinvara, made the Fordmakers to take food, then and there, from their hands.

६४४– संवच्छरेण भिक्खा [लद्धा उसभेण लोगणाहेण।
सेसेहिं बीयदिवसे लद्धाओ पढम भिक्खाओ।।३१।।]

लोकनाथ भगवान ऋषभदेव को छोड़कर शेष तेईस तीर्थंकरों को, जो जितने भक्त के नियम के साथ दीक्षित हुए, उसके दूसरे दिन प्रथम भिक्षा प्राप्त हुई किन्तु भगवान ऋषभदेव को एक वर्ष के उपरान्त प्रथम भिक्षा प्राप्त हुई।।31।।

Apart from the Lord of the Cosmos Bhagwan Rishabh Dev, the remaining twenty three Fordmakers consecrated observing the fast for the days they required, got the alms on the next day of it. But Bhagwan Rishabh Dev got the alms after a gap of one year ||31||.

६४५– उसभस्स पढम भिक्खा खोयरसो आसि लोगणाहस्स।
सेसाणं परमण्णं अमियरस रसोवमं आसि।।३२।।

सव्वेसिं पि जिणाणं जहियं लद्धाउ पढमभिक्खाउ।
तहियं वसुधाराओ सरीरमेत्तीओ वुद्वाओ।।३३।।

लोकनाथ ऋषभदेव को प्रथम भिक्षा में इक्षुरस प्राप्त हुआ। शेष तेईस तीर्थंकरों को प्रथम भिक्षा में अमृत-रस के समान परम-अन्न यानि खीर की प्राप्ति हुई।।32।।

सभी जिनों तीर्थंकरों ने जहाँ-जहाँ प्रथम भिक्षा प्राप्त की वहाँ-वहाँ शरीर प्रमाण ऊँची वसुधारा की वर्षा हुई।।33।।

In his first alms Bhagwan Rishabh Dev got sugarcane juice. In their first alm the remaining twenty three Fordmakers got; equal to nectar, the supreme food i.e. *Kheer*–a dish boiled in milk and rice with sugar. Wherever the Fordmakers got the first alms it rained Vasudhara (Wealth) there equal to the height of body.

६४६–एएसिं चउव्वीसाए तित्थगराणं चउवीसं चेइयरुक्खा होत्था। तं जहा–

णग्गोह सत्तिवण्णे साले पियए पियंगु छत्ताहे।
सिरिसे य णागरुक्खे साली य पिलंखुरुक्खे य।।३४।।

तिंदुग पाडल जंबू आसत्थे खलु तहेव दहिवण्णे।
णंदीरुक्खे तिलए अंबयरुक्खे य असोगे य।।३५।।

चंपय वउले य तहा वेडसरुक्खे य धायई रुक्खे।
साले य वड्ढमाणस्स चेइयरुक्खा जिणवराणं।।३६।।

इन चौबीस तीर्थंकरों के क्रमशः चौबीस चैत्यवृक्ष थे। इन चैत्यवृक्षों के नाम इस प्रकार से हैं– 1. न्यग्रोध (वट), 2. सप्तपर्ण, 3. शाल, 4. प्रियाल, 5. प्रियंगु, 6. छत्राह, 7. शिरीष, 8. नागवृक्ष, 9. साली, 10-पिलंखुवृक्ष, 11. तिन्दुक, 12. पाटल, 13. जम्बू, 14. अश्वत्थ (पीपल), 15. दधिपर्ण, 16. नन्दीवृक्ष, 17. तिलक, 18. आम्रवृक्ष, 19. अशोक, 20–चम्पक, 21. बकुल, 22. वेत्रसवृक्ष, 23. धातकी वृक्ष, 24. शालवृक्ष।।34-36।।

There were twenty four Chaitya trees respectively of these twenty four Fordmakers. The names of these Chaitya trees are as follows:—

1. Nyagrodh (Banyan tree), 2. Suptparn, 3. Shal (teak), 4. Priyal, 5. Priangu, 6. Chhatrah, 7. Shirish, 8. Nagvarkash, 9. Sali, 10. Pilankhu tree, 11. Tinduk, 12. Patal, 13. Jambu, 14. Ashvasth (Pipal), 15. Dadhi leaf, 16. Nandi Tree, 17. Tilak, 18. Mango tree, 19. Ashok, 20. Champak, 21. Bakul, 22. Vetrash tree, 23. Dhataki tree, 24. Shal tree.

६४७– बत्तीसं धणुयाइं चेइयरुक्खो य वद्धमाणस्स।
णिच्चोउगो असोगे ओच्छण्णे सालरुक्खेणं।।३७।।
तिण्णेव गाउआइं चेइयरुक्खो जिणस्स उसभस्स।
सेणाणं पुण रुक्खा सरीरओ वारस गुणा उ।।३८।।
सच्छत्ता सपडागा सवेइया तोरणेहिं उववेया।
सुर-असुर-गरुलमहिआ चेइयरुक्खा जिणवराणं।।३९।।

इन चौबीस तीर्थंकरों के जो चैत्यवृक्ष थे उनकी ऊँचाई आदि के बारे में कहा गया है कि वर्धमान भगवान का चैत्यवृक्ष बत्तीस धनुष ऊँचा था। वह नित्य-ऋतुक था अर्थात् प्रत्यैक ऋतु में वह वृक्ष सदा पत्र-पुष्पों से समृद्ध रहता था। अशोकवृक्ष सालवृक्ष से सदा आच्छन्न अर्थात् ढँका हुआ था।।37।।

ऋषभ जिन का चैत्यवृक्ष तीन गव्यूति अर्थात् तीन कोश ऊँचा था। शेष तीर्थंकरों के चैत्यवृक्षों की ऊँचाई उनके शरीर की ऊँचाई से बारह गुनी ऊँची थी।।38।।

जिनवरों के ये सभी चैत्यवृक्ष छत्र-युक्त, ध्वजा-पताका सहित, वेदिका सहित, तोरणों से सुशोभित और सुरों, असुरों तथा गरुडदेवों से पूजित थे।।39।।

There were Chaitya tree of the twenty four Fordmaker, about the height of these trees it has been said that the Chaitya tree belongs to Lord Vardhaman was thirty two (Dhanush) bow high. It was evergreen and was full of flowers fruits and leaves in every season The tree of Ashoka was always covered by Sal tree.

The height of the Chaitya tree of Lord Rishabh Dev was three Kosha (three Gavyuti). The heights of Chaitya trees of the remaining other Fordmakers were equal to twelve into the height of their own bodies.

That all the Chaitya trees of the Jinvaras were endowed with umbrellas, flags, platforms, Arches and were worshiped by gods, demons and eagle gods.

६४८–एएसिं चउव्वीसाए तित्थगराणं चउव्वीसं पढमसीसा होत्था। तं जहा–

पढमेत्थ उसभसेणे बीइए पुण होई सीहसेणे य।
चारु य वज्जणाभे चमरे तह सुव्वय विदब्भे य।।४०।।
दिण्णे य वराहे पुण आणंदे गोथुभे सुहम्मे य।
मंदर जसे अरिट्ठे चक्काह सयंभु कुंभे य।।४१।।
इंदे कुंभे य सुभे वरदत्ते दिण्ण इंदभूई य।
उदितोदित-कुलवंसा विसुद्धवंसा गुणेहिं उववेया।।४२।।
तित्थप्पवत्तयाणं पढमा सिस्सा जिणवराणं।

इन चौबीस तीर्थंकरों के क्रमशः चौबीस प्रथम शिष्य थे। यथा—1. ऋषभसेन, 2. सिंहसेन, 3. चारु, 4. वज्रनाभ, 5. चमर, 6. सुव्रत, 7. विदर्भ, 8. दत्त, 9. वराह, 10-आनन्द, 11. गोस्तुभ, 12. सुधर्म, 13. मन्दर, 14. यश, 15. अरिष्ट, 16. चक्ररथ, 17. स्वयम्भू, 18. कुम्भ, 19. इन्द्र, 20-कुम्भ 21. शुभ, 22. वरदत्त, 23. दत्त, 24. इन्द्रभूति। ये समस्त शिष्य तीर्थ-प्रवर्त्तक जिनवरों के प्रथम शिष्य थे और सभी उत्तम उच्चकुल वाले, विशुद्ध वंश वाले व गुणों से सर्व सम्पन्न थे॥40-42॥

There were twenty four principal disciples of these twenty four Fordmakers respectively as : 1. Rishabh Sen, 2. Singh Sen, 3. Charu, 4. Vajranath, 5. Chamar, 6. Suvert, 7. Vidharbh, 8. Dutt. 9. Varah, 10. Anand, 11. Gostubh, 12. Sudharm, 13. Mandar, 14. yash, 15. Aristh, 16. Chakarrath, 17. Swayambhu, 18. Kumbh, 19. Inder, 20. Kumbh, 21. Shubha, 22. Vardutt, 23. Dutt, 24. Inderbhuti.

All these above mentioned disciples were the chief of the Fordmakers and all were of the noble class, pure hierarchy and endowed with excellent attributes.

६४९—एएसिं णं चउवीसाए तित्थगराणं चउवीसं पढम सिस्सिणी होत्था। तं जहा—

बंभी य फग्गु सामा अजिया कासवी रई सोमा।
सुमणा वारुणि सुलसा धारणि धरणी य धरणिधरा।।४३।।

पउमा सिवा सुई तह अंजुया भावियप्पा य रक्खी य।
बंधुवती पुप्फवती अज्जा अमिला य अहिया।।४४।।

जस्सिणी पुप्फचूला य चंदणऽज्जा आहिया उ।
उदितोदियकुलवंसा विसुद्धवंसा गुणेहिं उववेया।।४५।।

तित्थप्पवत्तयाणं पढमा सिस्सी जिणवराणं।

इन चौबीस तीर्थंकरों की क्रमशः चौबीस प्रथम शिष्यायें थीं। यथा—1.ब्राह्मी, 2.फल्गु, 3.श्यामा, 4.अजिता, 5.काश्यपी, 6.रति, 7.सोमा, 8.सुमना, 9.वारुणी, 10.सुलसा, 11.धारिणी, 12.धरणी, 13. धरणिधरा, 14.पद्मा, 15.शिवा, 16.शुचि, 17.अंजुका, 18.भावितात्मा, 19.बन्धुमती, 20–पुष्पवती, 21. आर्या अमिला, 22.यशस्विनी, 23.पुष्पचूला, 24.आर्या चन्दना। ये समस्त उत्तम उन्नत कुल वाली, विशुद्ध वंश वाली तथा सर्वगुणों से सम्पन्न थीं॥43-45॥

There were twenty four chief female disciples of these of Twenty four Fordmakers as : 1. Brahmi, 2. Phalgu, 3. Shyama, 4. Ajita, 5. Kashyapi, 6. Rati, 7. Soma, 8. Suvarna, 9. Varuni, 10. Sulasa, 11. Dharani, 12. Dharni, 13. Dharnidhara, 14. Padama, 15. Shiva, 16. Shuchi, 17. Anjuka, 18. Bhavitatma,

19. Badhumati, 20. Pushpawati, 21. Arya-Amita, 22. Yashasvani, 23. Pushpchula, and 24. Arya-Chandana. These all were the chief female disciples of the Fordmakers and was from the noble family, pure heirarchy and endowed with all the virtues.

६५०–जंबुद्दीवे णं [दीवे] भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए बारस चक्कवट्टिपियरो होत्था। तं जहा–

उसभे सुमित्ते विजए समुद्दविजए य आससेणे य।
विस्ससेणे य सूरे सुदंसणे कत्तवीरिए चेव।।४६।।
पउमुत्तरे महाहरी विजए राया तहेव य।
बंभे बारसमे उत्ते पिउनामा चक्कवट्टीणं।।४७।।

इस जम्बूद्वीप में स्थित भारतवर्ष में इसी अवसर्पिणी काल में चक्रवर्ती उत्पन्न हुए। ये चक्रवर्ती बारह कहे गए हैं। इन बारह चक्रवर्तियों के पिताओं के नाम इस प्रकार से हैं – 1. ऋषभजिन, 2. सुमित्र, 3. विजय, 4. समुद्रविजय, 5. अश्वसेन, 6. विश्वसेन, 7. सूरसेन, 8. कार्तवीर्य, 9. पद्मोत्तर, 10. महाहरि, 11. विजय, 12. ब्रह्म।।46-47।।

Supreme Lords (Chakarvarti) have taken birth in this degenerated (Avasarpini Kaal). Time cycle, in this Bharat area, situated in Jambu continent. The number of these Supreme Lords have been said twelve, the names of the fathers of these twelve supreme lords were as follows :

1. Rishabh jina, 2. Sumitra, 3. Vijay, 4. Samunder-Vijay, 5. Ashavsen, 6. Vishav Sen, 7. Sur Sen, 8. Kart-Virya, 9. Padamottar, 10. Mahahari, 11. Vijay, 12. Brahmn.

६५१–जंबुद्दीवे [णं दीवे] भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए बारस चक्कवट्टिमायरो होत्था। तं जहा–सुमंगला जसवती भद्दा सहदेवी अइरा सिरिदेवी तारा जाला मेरा वप्पा चुल्लिणि अपच्छिम।

इसी जम्बूद्वीप में स्थित भारतवर्ष में इसी अवसर्पिणीकाल में बारह चक्रवर्ती उत्पन्न हुए। उन चक्रवर्तियों की माताओं के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं–1. सुमंगला, 2. यशस्वती, 3. भद्रा, 4. सहदेवी, 5. अचिरा, 6. श्री, 7. देवी, 8. तारा, 9. ज्वाला, 10. मेरा, 11. वप्रा, 12. चुल्लिनी।

Twelve supreme lords (Chakarvarti) have taken birth in Bharat Varsh situated in this Jambu continent in this descending time cycle (Avasarpini Kaal). The names of the mothers of these twelve supreme lords were as follows respectively : 1. Sumangla, 2. Yashaswati, 3. Bhadra, 4. Sahadevi, 5. Achira, 6. Shree, 7. Devi, 8. Tara, 9. Jwala, 10. Maira, 11. Vapra, and 12. Chulini.

६५२–जंबुद्दीवे [णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए] बारस चक्कवट्टी होत्था। तं जहा–

भरहो सगरो मघवं [सणंकुमारो य रायसद्दूलो।
संती कुंथू य अरो हवइ सुभूमो य कोरव्वो।।४८।।

नवमो य महापउमो हरिसेणो चेव रायसद्दूलो।
जयनामो य नरवई बारसमो बंभदत्तो य।।४९।।

इसी जम्बूद्वीप में स्थित भारतवर्ष में इसी अवसर्पिणी काल में बारह चक्रवर्ती उत्पन्न हुए। यथा–1. भरत, 2. सगर 3. मघवा, 4. राजशार्दूल सनत्कुमार, 5. शान्ति, 6. कुन्थु, 7. अर, 8. कौरव वंशी सुभूम, 9. महापद्म, 10. राजशार्दूल हरिषेण, 11. जय, 12. नरपति ब्रह्मदत्त।।48-49।।

In Bharat Varsh, situated in this Jambu continent and in this degenerated time cycle (Avasarpini Kaal) twelve supreme lords have taken birth as : 1. Bharat Supreme Lord, 2. Sagar (Chakarvarti), 3. Maghava, 4. Rajashardul Sanat Kumar, 5. Shanti, 6. Kunthu Supreme Lord, 7. Arr-Chakarvarti, 8. OF Kourav clan Subhum-Chakarvarti, 9. Maha-Padam-Chakarvarti, 10. Rajshardul Hari Sen supreme lord, 11. Jaya-Chakarvarti, 12. Narpati Brahmdutt.

६५३–एएसिं बारसण्हं चक्कवट्टीणं बारस इत्थिरयणा होत्था। तं जहा–

पढमा होइ सुभद्दा भद्द सुणंदा जया य विजया य।
किण्हसिरी सूरसिरी पउमसिरी वसुंधरा देवी।।५०।।

लच्छिमई कुरुमई इत्थीरयणाण नामाइं।

इन बारह चक्रवर्तियों के बारह स्त्री रत्न कहे गए हैं। यथा–1. सुभद्रा, 2. भद्रा, 3. सुनन्दा, 4. जया, 5. विजया, 6. कृष्णश्री 7. सूर्य श्री, 8. पद्म श्री, 9. वसुन्धरा, 10. देवी, 11. लक्ष्मीमती 12. कुरुमती। ये स्त्रीरत्नों के नाम हैं।।।50।।

There were twelve consort jewels of these twelve supreme lords as : 1. Subhadra, 2. Bhadra, 3. Sunanda, 4. Jaya, 5. Vijaya, 6. Krishanshree, 7. Suryashree, 8. Padamshree, 9. Vasundhara, 10. Devi, 11. Lakshami-mati, and 12. Kuru-mati. These above mentioned are the names of the consort jewels.

६५४–जंबुद्दीवे [णं दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए] नवबलदेव-नववासुदेवपितरो होत्था। तं जहा–

पयावई य बंभो [सोमो रुद्दो सिवो महसिवो य।
अग्गिसिहो य दसरहो नवमो भणिओ य वसुदेवो।। ५१।।]

इसी जम्बूद्वीप के भारतवर्ष में इसी अवसर्पिणी काल में नौ बलदेवों और नौ वासुदेवों के नौ पिता हुए। यथा–1. प्रजापति, 2. ब्रह्म, 3. सोम, 4. रुद्र, 5. शिव, 6. महाशिव, 7. अग्निशिख, 8. दशरथ, 9. वसुदेव।।51।।

In Bharat Varsh of this Jambu continent in this descending time cycle (Avasarpini Kaal) there have been nine fathers of nine co-lords (Baldeva) and nine lords (Vasudeva) as follows : 1. Prajapati, 2. Braham, 3. Som, 4. Rudra, 5. Shiva, 6. Maha-Shiva, 7. Agani Shikha, 8. Dashrath, 9. Vasudea.

६५५–जंबुद्दीवे णं [दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए] णव वासुदेवमायरो होत्था। तं जहा–

मियावई उमा चेव पुहवी सीया य अम्मया।
लच्छिमई सेसमई केकई देवई तहा।।५२।।

इसी जम्बूद्वीप के भारतवर्ष में इसी अवसर्पिणी काल में नौ वासुदेवों की नौ माताएँ हुई हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं–

1. मृगावती, 2. उमा, 3. पृथ्वी, 4. सीता, 5. अमृता, 6. लक्ष्मीमती, 7. शेषमती, 8. कैकेयी, 9. देवकी।।52।।

In Bharat Varsh of Jambu continent in this degenerated time cycle (Avasarapini Kaal) there have been nine mothers of nine lords (vadudeva) as follows : 1. Mrigabala, 2. Uma, 3. Prithvi, 4. Sita, 5. Amrita, 6. Lakshmi Mati, 7. Sheshmati, 8. Kaikayee, and 9. Devaki.

६५६–जंबुद्दीवे णं [दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए] णव बलदेवमायरो होत्था। तं जहा–

भद्दा तह सुभद्दा य सुप्पभा य सुदंसणा।
विजया वेजयंती य जयंती अपराजिया।।५३।।

णवमीया रोहिणी य बलदेवाण मायरो।

इसी जम्बूद्वीप में स्थित भारतवर्ष में इसी अवसर्पिणी काल में नौ बलदेवों की नौ माताएँ हुईं। उन माताओं के नाम इस प्रकार हैं–

1. भद्रा, 2. सुभद्रा, 3. सुप्रभा, 4. सुदर्शना, 5. विजया, 6. वैजयन्ती, 7. जयन्ती 8. अपराजिता, 9. रोहिणी।।53।।

There have been nine mothers of nine co-lords (Baldeva) in Bharat Vasrsh of Jambu Continent in this degenerated time cycle (Avasarpini Kaal) as follows :

1. Bhadra, 2. Subhadra, 3. Suprabha, 4. Sudarshana, 5. Vijaya, 6. Vaijayanti, 7. Jayanti, 8. Aprajita, and 9. Rohani.

६५७–जंबुद्दीवे णं [दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए] नव दसारमंडला होत्था। तं जहा–उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी छायंसी कंता सोमा सुभगा पियदंसणा सुरूवा सुहसीला सुहाभिगमा सव्वजणणयणकंता ओहबला अतिबला महाबला अनिहता अपराइया सत्तुमद्दणा रिपुसहस्समाणमहणा साणुक्कोसा अमच्छरा अचवला अचंडा मियमंजुलपलावहसिया गंभीरमधुर-पडिपुण्णसच्चवयणा अब्भुवगयवच्छला सरण्णा लक्खण-वंजणगुणोववेआ माणुम्माणपमाणपडिपुण्ण-सुजायसव्वंगसुंदरंगा ससिसोमागार-कंतपियदंसणा अमरिसणा पयंडदंडप्पभारा गंभीरदरिसणिज्जा तालद्धओव्विद्ध-गरुलकेऊ, महाधणु-विकड्ढया महासत्तसाअरा दुद्धरा धणुद्धरा धीरपुरिसा जुद्धकित्तिपुरिसा विउल-कुलसमुब्भवा महारयणविहाडगा अद्धभरहसामी सोमा रायकुलवंसतिलया अजिया अजियरहा हल-मुसल-कणक-पाणी संख-चक्क-गय-सत्ति-नंदगधरा पवरुज्जल-सुक्कंत-विमल-गोत्थुभ-तिरीडधारी कुंडल-उज्जोइयाणणा पुंडरीयणयणा एकावलि-कण्ठ-लइयवच्छा सिरिवच्छ-सुलंछणा वरजसा सव्वोउयसुरभि-कुसुम-रचित-पलंब-सोभंत-कंत-विकसंत-विचित्तवर-मालरइय-वच्छा अट्ठसय-विभत्त-लक्खण-पसत्थ-सुंदर-विरइयंगमंगा मत्तगयवरिंद-ललिय-विक्कम-विलसियगई सारय-नव थिणिय-महुर-गंभीर-कोंच-निग्घोस-दुंदुभिसरा कडिसुत्तग-नील-पीय-कोसेज्जवाससा पवरदित्ततेया नरस्सीहा नरवई नरिंदा नरवसहा मरुयवसभकप्पा अब्भहियरायतेयलच्छीए दिप्पमाणा नीलग-पीयगवसण दुवे दुवे राम-केसवा भायरो होत्था। तं जहा–

इस जम्बूद्वीप में स्थित भारतवर्ष में इस अवसर्पिणी काल में नौ दशार मण्डल अर्थात् बलदेव और वासुदेव समुदाय हुए हैं। सूत्रकार उनका वर्णन इस प्रकार करते हैं–

उन समस्त दशारमण्डल (बलदेव और वासुदेव) का जन्म उत्तम कुल में हुआ और वे श्रेष्ठ पुरुष कहलाए, वे तीर्थंकरादि शलाका-पुरुषों के मध्यवर्ती होने से मध्यम पुरुष कहे गए, अथवा तीर्थंकरों के बल की अपेक्षा कम और सामान्यजनों के बल की अपेक्षा अधिक बलशाली होने से वे मध्यम पुरुष कहे गए। वे दशार-मण्डल अपने समय के पुरुषों के शौर्यादि गुणों की प्रधानता की अपेक्षा प्रधान पुरुष कहे गए। मानसिक बल से सम्पन्न होने के कारण ओजस्वी कहे गए। वे तेजस्वी थे क्योंकि वे देदीप्यमान शरीरों के धारक थे। वे शारीरिक बल से संयुक्त थे जिसके कारण वे वर्चस्वी कहे गए। उन्होंने पराक्रम के द्वारा प्रसिद्धि पायी जिसके कारण वे यशस्वी थे। वे छायावन्त थे क्योंकि उनका शरीर छाया यानि प्रभा से युक्त था। वे कान्त थे क्योंकि उनका शरीर कान्ति से युक्त था। वे चन्द्र के समान सौम्य मुद्रा के धारक थे। वे सर्वजनों के वल्लभ होने से सुभग या सौभाग्यशाली कहे

गए। नेत्रों को अतिप्रिय होने से वे प्रियदर्शन कहलाए। वे समचतुरस्र संस्थान के धारक थे, अस्तु वे सुरूप थे। शुद्ध स्वभावी होने के कारण वे शुभशील कहे गए। सुखपूर्वक सरलता से प्रत्येक जन उनसे मिल सकता था, अत: वे सुखाभिगम्य थे। वे सर्वजनों के नयनों के प्यारे थे। कभी नहीं थकने वाले अविच्छिन्न प्रवाह युक्त बलशाली होने से वे ओघबली थे। वे अपने समय के सभी पुरुषों के बल का अतिक्रमण करने से तथा महान प्रशस्त या श्रेष्ठ बलशाली होने से अतिबली और महाबली कहलाए। वे निरूपक्रम आयुष्य के धारक होने से अनिहत थे। अर्थात् दूसरे के द्वारा होने वाले घात या मरण से रहित थे। वे अपराजित थे क्योंकि मल्ल-युद्ध में कोई उनको पराजित नहीं कर सकता था। बड़े-बड़े युद्धों में शत्रुओं का मर्दन करने से वे शत्रुमर्दन थे, सहस्रों शत्रुओं के मान का मथन करने वाले थे। आज्ञा या सेवा करने वालों पर द्रोह छोड़कर कृपा करने वाले थे। वे मात्सर्य-रहित थे, क्योंकि दूसरों के लेशमात्र भी गुणों के ग्राहक थे। वे अचपल यानि चपलता रहित थे क्योंकि उनमें मन-वचन-काय की प्रवृत्ति स्थिर थी। वे प्रचण्ड क्रोध से रहित थे, परिमित मंजुल वचनालाप और मृदुहास्य से युक्त थे। वे गम्भीर, मधुर व परिपूर्ण सत्य वचन बोलते थे। वे अधीनता स्वीकार करने वालों पर वात्सल्यभाव रखते थे। वे शरण में आने वाले के रक्षक थे। वे वज्र, स्वस्तिक, चक्र आदि लक्षणों से तथा तिल, मसा आदि व्यंजनों के गुणों से संयुक्त थे। वे शरीर के मान, उन्मान, और प्रमाण से परिपूर्ण थे, वे जन्म-जात सर्वांग सुन्दर शरीर के धारक थे। वे चन्द्र के समान सौम्य आकार वाले, कान्त और प्रियदर्शन थे। वे अमसृण अर्थात् कर्त्तव्य-पालन में आलस्य-रहित थे अथवा अमर्षण यानि अपराध करने वालों पर भी क्षमाशील थे। वे उद्दण्ड पुरुषों पर प्रचण्ड दण्ड नीति के धारक थे, गम्भीर व दर्शनीय थे। बलदेव तालवृक्ष के चिह्नवाली ध्वजा के और वासुदेव गरुड़ के चिह्न वाली ध्वजा के धारक थे। वे दशारमण्डल कर्ण-पर्यन्त महाधनुषों को खींचने वाले, महासत्त्व के सागर थे। रणभूमि में उनके प्रहार का सामना करना अशक्य था। वे महान धनुषों के धारक थे, पुरुषों में धीर-वीर थे, और युद्धों में प्राप्त कीर्ति के धारक पुरुष थे। वे विशाल कुलों में उत्पन्न हुए थे। वे इतने शक्तिशाली थे कि महारत्न वज्र यानि हीरा को भी अंगूठे और तर्जनी दो अंगुलियों से चूर्ण कर देते थे। वे आधे भरतक्षेत्र के अर्थात् तीन खण्ड के अधिपति थे, स्वामी थे। उनका स्वभाव सौम्य था। वे राजकुलों और राजवंशों के तिलक थे। वे अजित यानि किसी से भी नहीं जीते जाते थे तथा अजितरथ थे। बलदेव हल और मूशलरूप शस्त्रों के धारक थे जबकि वासुदेव शारंग धनुष, पांचजन्य शंख, सुदर्शन चक्र, कौमुदी गदा, शक्ति और नन्दक नामा खड्ग के धारक थे। वे प्रवर, उज्ज्वल, सुकान्त, विमल कौस्तुभ मणियुक्त मुकुट के धारी थे। उनका मुख कुण्डलों में लगे मणियों के प्रकाश से युक्त रहता था। वे कमल सदृश नेत्र वाले कमलनयन थे। एकावली हार कण्ठ से लेकर वक्ष:स्थल तक शोभित रहता था। उनका वक्ष:स्थल श्रीवत्स के सुलक्षण से चिह्नित था। वे विश्वविख्यात यश वाले थे। सभी ऋतुओं में उत्पन्न होने वाले, सुगन्धित पुष्पों से रची गई, लम्बी, शोभायुक्त, कान्त, विकसित, पंचवर्णी श्रेष्ठ माला से उनका वक्ष:स्थल सदा सुशोभित था। उनके सुन्दर अंग-प्रत्यंग एक सौ आठ प्रशस्त लक्षणों से सम्पन्न थे।

वे मद-मत्त गजराज के समान ललित, विक्रम और विलास युक्त गति वाले थे। वे शरद ऋतु के नव-उदित मेघ के समान मधुर, गम्भीर क्रौंच पक्षी के निर्घोष और दुन्दुभि के समान स्वर वाले थे। बलदेव कटिसूत्र वाले नील कौशेयक वस्त्र से तथा वासुदेव कटिसूत्र वाले पीत कौशेयक वस्त्र से युक्त रहते थे। वे प्रकृष्ट दीप्ति और तेज से युक्त थे। वे प्रबल बलशाली थे। वे मनुष्यों में सिंह के समान होने से नरसिंह, मनुष्यों के पति होने से नरपति, परम ऐश्वर्यशाली होने से नरेन्द्र तथा सर्वश्रेष्ठ होने से नर-वृषभ कहलाते थे। अपने कार्य-भार का पूर्णरूपेण निर्वाह करने से वे मरुद्वृषभकल्प अर्थात् देवराज की उपमा को धारण करते थे। अन्य राजा-महाराजाओं से अधिक राजतेज रूप लक्ष्मी से देदीप्यमान थे। इस प्रकार नील-वसन वाले नौ राम (बलदेव) और पीत-वसन वाले नौ केशव (वासुदेव) दोनों भाई-भाई हुए हैं।

In Bharat Varsh, situated in Jambu Continant, in this descending time cycle (Avasarpini Kaal) there have been nine Dashar Mandal i.e., community of lords and co-lords (Vasudeva & Baldeva), the propounders of Sutras describe them up follows: All these Dashar Mandal (Vasudeva & Baldeva) have taken birth in noble families and they were called supreme individuals. Being exist between the sixty three sublime persons as Fordmakers etc. they were called average (Madhayam Purasha) individuals, or with regard the strength and power of Fordmakers they were less in strength and power and with regard to the common man they were more powerful. So they were called average individuals. With regard to the superiority of the virtues of valour and heroism of persons of that time the Dashar Mandal have been said the chief-men (souls). Being empowered with the mental powers they have been said Brilliant. They were energetic because they bore a radiant physique. They were endowed with physical strength because of that they were called vigorous. Through they earned fame and celebrity so that they were called glorious and honored. They were shadowy because their shadow of the body was endowed with hue. They were lovely and pleasing because their physical body was endowed with luster. They have placidity like moon. They have been said fortunate beings the beloved of all. Having so much lovely eyes they were called of lovable appearance. They bore the Samchaturasr Structure i.e. they were handsome. Being the pure natured they were called auspicious. Every person could see them straight way and with great pleasure so they were pleasure giver. They were loved by every one. Being powerful through the continuous ebbing and never fatiguing powers they were Oghbali (Indestructible power). By transgressing the powers of all the men of that time and being the great or supreme powerful they were called Atibali and Mahabali (very powerful). Being the bearer of incomparable age they were beyond any injury i.e. devoid of any attack or death afflicted by

others. They were invincible because none could defeat them in wrestling. They were enemy killer because they had killed the enemies in great battles and wars. They were to churn the pride of myriads enemies. They were the compassionate towards their servants and retinue leaving aside any cruelity. They were devoid of any laxity and pride because they were the adopter of the least virtues of the others. They were devoid of flickerness the activities of mind, body and speech were stable. They were devoid of any kind of baseless terrible anger. They were endowed with the virtues of limited melodious speeches and sweet laugh. They were very sincere, sweet and speak absolutely true language. They were very lovable for those who have accepted their domination. They were the protector of those who come under your shelter. They were endowed with the marks of thunderbolt, Swastik and discuss and with the spot like mole, wart etc. They were perfect regarding the measurement, proportion and size of the body by birth. They were the most full body handsome. They were lustreous and attractive like placid size moon. They were devoid of laxity in abide by the duties. They were of forgiving disposition even to the offender criminals. They were serious spectacular and terrible punishment holder against the notorious persons. The co-lord (Baldeva) was the holder of the flag with Banyan tree sign and Lord (Vasudeva) of the flag of Eagle sign. They, the Dashar Mandal, were the ocean of the great essence and they were who could draw the strings of great bows upto the ears. To bear their various attacks in the battle field was undoubtful. They were the wielder of great bows, were brave among men and were the achiever of glory in wars. They were born in great noble clans. They were so powerful that they could churn even the great jewel thunderbolt and diamond by using their thumb and little fingers. They were the emperor or the rulers of the half of the Bharat region or the three khands. Their temperament was of placid disposition. They were the Tilak (ornamental mark on the heads) for the kingdoms and monarchies. They were invincible-means they could not be conquered by any one. The co-lord (Baldeva) was the wielder of plough and club whereas the lord (Vasudeva) was the wielder of bow and arrows Panchjanya conch, Sudarshan discus, Koumudiki mace, sword namely Shakti and Nandan. They were the bearer of the crowns embedded with lustreous, charming, clean Kaustoobh jewels. Their countenances were endowed with the jewels embedded in their earings. They were lotus eyed because their eyes were like the lotus flowers. Their chest were decorated with the Ekawali necklace dangling from throat to chest. Their chest were marked with auspicious sign of Shreevats. They were endowed with global famous glory. Their breast were constantly decorated with long, supreme garlands made of lustreous, charming, blossomed, five coloured fragrant flowers growing in all the reasons. There

beautiful canons and organs were endowed with one hundred eight auspicious sign (symptoms). They have the gait like the charming, orderly and romantic gait of intoxicating elephant. They were sweet, sincere alike the newly rise clouds of winter season, were of the sound alike the large drum or the sound of the crane, and Baldeva (co-lords) had worn the waist shawl/cloth made of blue coloured fibre and the vasudeva (lords) had worn the waist garment made of yellow coloured fibre. They were endowed with sublime luster and brilliance. They were tremendous powerful due to it were like a lion among human beings were called Narsingh, being the lord of the human kings were called lord of man, being endowed with superhuman grandeur were called Narrender and being the supreme they were called Nar-Vrishabh. By accomplishing absolutely their responsibilities they were called Marud-Vrishabh Kalpa, i.e., bore the title of Devaraj (lords of gods). They were shining, intensely through having more kingdom wealth in comparison of other kings and emperors. Thus, the nine co-lords (Ram Baldevas) of blue clothing and lords (Vasudeven) of new yellow clothing both were brothers.

६५८ – तिविट्ठे य [दुविट्ठे य सयंभू पुरिसुत्तमे पुरिससीहे।
तह पुरिसपुंडरीए दत्ते नारायणे कण्हे।।५४।।
अयले विजये भद्दे सुप्पभे य सुदंसणे।
आनंदे नंदणे पउमे रामे यावि] अपच्छिमे।।५५।।

उनमें नौ वासुदेवों के नाम इस प्रकार हैं, यथा–1. त्रिपृष्ठ, 2. द्विपृष्ठ, 3. स्वयम्भू 4. पुरुषोत्तम, 5. पुरुषसिंह, 6. पुरुष पुंडरीक, 7. दत्त, 8. नारायण (लक्ष्मण) 9. कृष्ण।।54।।

नौ बलदेवों के नाम इस प्रकार हैं। यथा–1. अचल 2. विजय, 3. भद्र, 4. सुप्रभ, 5. सुदर्शन, 6. आनन्द, 7. नन्दन, 8. पद्म, 9. राम।।55।।

The names of Nine (Vasudeva) lords are as follows : 1. Triprishth, 2. Dviprishth 3. Swayambhu, 4. Purushotama, 5. Purush singh, 6. Purush Pundrik, 7. Danta, 8. Narayana, 9. Lakshaman, 9. Krishan.

The names of nine co-lords (Baldeva) are as follows : 1. Achal, 2. Vijay, 3. Bhadra, 4. Suprabh, 5. Sudarshan, 6. Anand, 7. Nandan, 8. Padam, and 9. Ram.

६५९–एएसिं णं णवण्हं बलदेव-वासुदेवाणं पुव्वभविया नव-नव नामधेज्जा होत्था। तं जहा–

विस्सभूई पव्वयए धणदत्त समुद्दत्त इसिवाले।
पियमित्त ललियमित्ते पुणव्वसू गंगदत्ते य।।५६।।

एयाइं नामाइं पुव्वभवे आसि वासुदेवाणं।
एत्तो बलदेवाणं जहक्कमं कित्तइस्सामि।।५७।।

विसनन्दी य सुबन्धू सागरदत्ते असोगललिए य।
वाराह धम्मसेणे अपराइय रायललिए य।।५८।।

इन नौ बलदेवों और वासुदेवों के पूर्वभव के नौ नाम क्रमशः इस प्रकार थे–

1. विश्वभूति, 2. पर्वत, 3. धनदत्त, 4. समुद्रदत्त, 5. ऋषिपाल, 6. प्रियमित्र, 7. ललित मित्र, 8. पुनर्वसु 9. गंगदत्त। ये वासुदेवों के पूर्वभव के नाम कहे गए हैं।।56-57।।

नौ बलदेवों के पूर्वभव के नाम इस प्रकार हैं–

1. विश्वनन्दी, 2. सुबन्धु, 3. सागरदत्त, 4. अशोक, 5. ललित, 6. वाराह, 7. धर्मसेन, 8. अपराजित; 9. राजललित।।58।।

The names of the nine co-lords (Baldeva) and Lords (Vasudeva) of there previous births were, respectively, as follows : the names of Vasudevas : 1 Vishavabhuti, 2. Parvat, 3. Dhandutt, 4. Samuderdutt, 5. Rishipal, 6. Priya-Mitra, 7. Lalit-mitra, 8. Punarvasu, 9. Gangdutt.

The names of the nine co-lords : 1. Vishavanandi, 2. Subandhu, 3. Sagardutt, 4. Ashok, 5. Lalit, 6. Varaha, 7. Dharam Sen, 8. Aprajit, 9. Raj lalit.

६६०–एएसिं नवण्हं बलदेव-वासुदेवाणं पुव्वभविया नव धम्मायरिया होत्था। तं जहा–

संभूय सुभद्द सुदंसणे य सेयंस कण्हे गंगदत्ते य।
सागर समुद्दनामे दुमसेणे य णवमए।।५९।।

एए धम्मायरिया कित्तीपुरिसाण वासुदेवाणं।
पुव्वभवे एयासिं जत्थ नियाणाइं कासी य।।६०।।

इन नव बलदेवों और वासुदेवों के पूर्वभव में नौ धर्माचार्य थे। उनके नाम इस प्रकार हैं–1. संभूत, 2. सुभद्र, 3. सुदर्शन, 4. श्रेयान्स, 5. कृष्ण, 6. गंगदत्त, 7. सागर, 8. समुद्र 9. द्रुमसेन।।।59।।

ये नौ ही आचार्य कीर्तिपुरुष वासुदेवों के पूर्वभव में धर्माचार्य थे। जहाँ वासुदेवों ने पूर्वभव में निदान किया था, उन नगरों के नाम आगे कहते हैं–।।।60।।

There were nine religious preceptors of these nine co-lords (Baldeva) and lords (Vasudeva) as follows : 1- Sambhuj, 2. Subhadra, 3. Sudarshan, 4. Shreyans, 5. Krishan, 6. Gangdutt, 7. Sagar, 8. Samundera, 9. Dhramsen.

Only these nine were the preceptors of these glorious nine lords (Vasudeva) in their previous births. Next the name of cities have been mentioned where the

lords (Vasudeva) had desired of Nidan (to desire for something mundane achievements against the religious performance).

६६१–एएसिं नवण्हं वासुदेवाणं पुव्वभवे नव नियाणभूमीओ होत्था। तं जहा–

महुरा य कण्णगवत्थू सावत्थी पोयणं य रायगिहं।
कायंदी कोसम्बी मिहिलपुरी हत्थिणाउरं च।।६१।।

इन नवों वासुदेवों की पूर्वभव में नौ निदान–भूमियाँ थीं। यथा–1. मथुरा, 2. कनकवस्तु, 3. श्रावस्ती, 4. पोदनपुर, 5. राजगृह, 6. काकन्दी, 7. कौशाम्बी 8. मिथिलापुरी, 9. हस्तिनापुर।।61।।

In their previous births of these nine lords (Vasudeva) the following were the Nidan cities : 1. Mathura, 2. Kanakvastu, 3. Shravasti, 4. Podanpur, 5. Rajgrah, 7. Kakandi, 7. Kaushambi, 8. Mithilapuri, and 9. Ahistanapur.

६६२–एते सिं णं नवण्हं वासुदेवाणं नव नियाणकारणा होत्था। तं जहा–

गावि जुवे संगामे तह इत्थी पराइओ रंगे।
भज्जाणुराग गोट्ठी परइड्ढी माउआ इय।।६२।।

इन नवों वासुदेवों के निदान करने के नौ कारण थे। वे कारण इस प्रकार हैं–1. गावी (गाय), 2. यूपस्तम्भ, 3. संग्राम, 4. स्त्री, 5. युद्ध में पराजय, 6. स्त्री–अनुराग, 7. गोष्ठी, 8. परऋद्धि, 9. मातृका (माता)।।62।।

The reasons behind the Nidans of these nine lords (Vasudeva) were as follows : 1. Gavi (cow), 2. Yupastambha, 3. Samgram, 4. Istri (lady), 5. Defeat in battle, 6. Istri-Anuroga, 7. Goshthi (meeting), 8. Para-Ridhi, 9. Matrika (Mother).

६६३–एएसिं नवण्हं वासुदेवाणं नव पडिसत्तू होत्था। तं जहा–

अस्सग्गीवे तारए मेरए महुकेढवे निसुंभे य।
बलिपहराए तह रावणे य नवमे जरासंधे।।६३।।

एए खलु पडिसत्तू कित्ती पुरिसाण वासुदेवाणं।
सव्वे वि चक्कजोही सव्वे वि हया सचक्केहिं।।६४।।

एक्को य सत्तमीए पंच य छट्ठीए पंचमी एक्को।
एक्को य चउत्थीए कण्हो पुण तच्च पुढवीए।।६५।।

अणियाणकडा रामा सव्वे वि य केसवा नियाणकडा।
उड्ढंगामी रामा केसव सव्वे अहोगामी।।६६।।

अट्ठंतकडा रामा एगो पुण बंभलोयकप्पंमि।
एक्कस्स गब्भवसही सिज्झिस्सइ आगमिस्सेणं।।६७।।

इन नौ वासुदेवों के नौ प्रतिशत्रु यानि प्रतिवासुदेव कहे गए हैं। यथा–1. अश्वग्रीव 2. तारक, 3. मेरक, 4. मधु-कैटभ, 5. निशुम्भ, 6. बलि, 7. प्रभराज (प्रह्लाद), 8. रावण, 9. जरासन्ध।।63।।

ये कीर्तिपुरुष थे और वासुदेवों के प्रतिशत्रु थे। ये सभी चक्रयोधी थे तथा सभी अपने ही चक्रों से युद्ध में मारे गए।।।64।।

ऊपर कहे गए नौ वासुदेवों में से एक मरकर सातवीं पृथ्वी में, पाँच वासुदेव छठी पृथ्वी में, एक पाँचवीं में, एक चौथी में और कृष्ण तीसरी पृथ्वी में गए।।65।।

समस्त राम यानि बलदेव अनिदानकृत होते हैं तथा समस्त वासुदेव पूर्वभव में निदान करते हैं। समस्त राम (बलदेव) मरण को प्राप्त हो कर ऊर्ध्वगामी होते हैं जबकि समस्त वासुदेव मरण को प्राप्त हो कर अधोगामी होते हैं।।66।।

आठ राम (बलदेव) अन्तकृत अर्थात् कर्मों का क्षय करके संसार का अन्त करने वाले कहलाए। एक अन्तिम बलदेव ब्रह्मलोक में उत्पन्न हुए जो आगामी भव में एक गर्भ-वास लेकर सिद्ध होंगे।।।67।।

The nine Anti-lords (Prati-Vasudeva) enemies have been narrated of these nine lords (Vasudeva) as follows : 1- Ashavagriva, 2. Tarak, 3. Merak, 4. Madhu-Kaitav, 5. Nishumbh, 6, Bali, 7. Prabh-raj, (Prahalad), 8. Ravan, 9. Jarasandh.

These men were famous and were the enemies of lords (Vasudeva). All these were the wielder of the discus and were killed with their own discus in the battle.

Having died, one, out of above mentioned nine lords (Vasudeva) reincarnated in seventh hell, five lords in sixth hell, one in fifth land, one in fourth and Krishana Vasudev reincarnated in third hell.

All the co-lords (Ram-Baldeva) have been Anidan Krit (those who have not desired for mundane possessions in next birth) but all the lords (Vasudeva) do Nidan in their previous lives. After death all the co-lords (Ram-Baldeva) soar upward, whereas all these (Vasudeva) lords after their death go downward .

Eight lords (Ram-Baldeva) were said, liberated i.e. the antkrit the destroyer of cycle of birth and death through annihilating their Karmas. The last lord (Baldeva) reincarnated in Brahamloka who will be (Sidha) liberated after taking one birth in his next Bhava as a human being.

६६४–जंबुद्दीवे [णं दीवे] एरवए वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउव्वीसं तित्थयरा होत्था। तं जहा–

चंदाणणं सुचंदं अग्गीसेणं च नंदिसेणं च।
इसिदिण्णं ववहारिं वंदिमो सोमचंदं च।।६८।।

वंदामि जुत्तिसेणं अजियसेणं तहेव सिवसेणं।
बुद्धं च देवसम्मं सययं निक्खित्तसत्थं च।।६९।।

असंजलं जिणवसहं वंदे य अणंतयं अमियणाणिं।
उवसंतं च धुयरयं वंदे खलु गुत्तिसेणं च।।७०।।

अइपासं च सुपासं देवेसरवंदियं च मरुदेवं।
निव्वाणगयं च धरं खीणदुहं सामकोट्ठं च।।७१।।

जियरागमग्गिसेणं वंदे खीणरायमग्गिउत्तं च।
वोक्कसियपिज्जदोसं वारिसेणं गयं सिद्धिं।।७२।।

इसी जम्बूद्वीप के ऐरावत वर्ष में इसी अवसर्पिणी काल में चौबीस तीर्थंकर हुए हैं। इन समस्त तीर्थंकरों की मैं वन्दना करता हूँ। इन तीर्थंकरों के नामों के क्रम में कहीं-कहीं भिन्नता भी दिखाई देती है। इन चौबीस तीर्थंकरों के नाम इस प्रकार हैं। यथा–1. चन्द्र सदृश मुख वाले सुचन्द्र, 2. अग्निसेन, 3. नन्दिसेन, 4. व्रतधारी ऋषिदत्त, 5. सोमचन्द्र।।।68।।, 6. युक्तिसेन, 7. अजितसेन, 8. शिवसेन, 9. बुद्ध, 10–देवशर्म, 11. निक्षिप्त शस्त्र (श्रेयान्स)।।69।।, 12 असंज्वल, 13. जिनवृषभ, 14. अमितज्ञानी अनन्त जिन, 15. कर्म–रज रहित उपशान्त, 16. गुप्ति सेन।।।70।। 17. अतिपार्श्व, 18. सुपार्श्व, 19. देवेश्वरों से वन्दित मरुदेव, 20–निर्वाण को प्राप्त धर, 21. प्रक्षीण दुःख वाले श्याम कोष्ठ, 22. रागविजेता अग्निसेन, 23. क्षीणरागी अग्निपुत्र और 24. राग–द्वेष का क्षय करने वाले, सिद्धि को प्राप्त वारिषेण।।।71-72।।

In the area of Airavat of this Jambu continent of this degeneration (Avasarapini Kaal) time cycle there have been twenty four ford-makers. I, too, bow to these ford-makers. Somewhere in the order of the names of these Ford-makers the difference is visible even. The names of these Ford-makers are as follows : 1. Suchander (countenance same as of moon), 2. Agani Sen. 3. Nandi Sen, 4. Vatary Rishidutt, 5. Somchandra, 6. Yukati Sen, 7. Ajit Sen, 8. Shiva Sen, 9. Budha, 10. Devasharm, 11. Shreyans (weapons renunciaters), 12. Asamjwal, 13. Jin-Rishab, 14. Amit Jnani Anantgina 15. Upshant (devoid of karam dust), 16. Gupti Sen, 17. Jin-Rishabh, 18. Suparshava, 19. Maru Dev (worshiped by gods), 20. Dhar (liberated one), 21. Shyam kosh (destroyer of miseries),

22. Agnisen (conqueror of attachment), 23. Agniputra (destroyer of attachment and aversion) 24. Vari-Sen (Attainer of Sidhi).

६६५–जंबुद्दीवे [णं दीवे] आगमिस्साए उस्सप्पिणीए भारहे वासे सत्त कुलगरा भविस्संति। तं जहा–

मियवाहणे सुभूमे य सुप्पभे य सयंपभे।
दत्ते सुहुमे सुबंधू य आगमिस्साण होक्खंति।।७३।।

इसी जम्बूद्वीप में स्थित भारतवर्ष में आगामी उत्सर्पिणी काल में सात कुलकरों का होना कहा गया है। उन कुलकरों के नाम इस प्रकार से हैं–1. मितवाहन, 2. सुभूम, 3. सुप्रभ, 4. स्वयम्प्रभ, 5. दत्त, 6. सूक्ष्म, 7. सुबन्धु। ये सातों कुलकर आगामी उत्सर्पिणी काल में उत्पन्न होंगे।।73।।

In ensuing regenerated time cycle (Utsarpini Kaal) in Bharat Varsh situated in this Jambu continent seven Kulkars have been said to be there. The names of these Kulkars are as follows : 1. Mitvahan, 2. Subhum, 3. Suprabh, 4. Swayamprabh, 5. Dutt, 6. Suksham, and 7. Subandhu. These seven Kulkars would be born in the proceeding ascending time cycle (Utsarpini Kaal).

६६६–जंबुद्दीवे णं दीवे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए एरवए वासे दस कुलगरा भविस्संति। तं जहा–विमलवाहणे सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे दढधणू दसधणू सयधणू पडिसूई सुमइ त्ति।

इसी जम्बूद्वीप के ऐरावत वर्ष में आगामी उत्सर्पिणी काल में दश कुलकरों का होना बताया गया है। वे दश कुलकर इस प्रकार से कहे गए हैं–1. विमलवाहन, 2. सीमंकर, 3. सीमंधर, 4. क्षेमंकर, 5. क्षेमंधर, 6. दृढ धनु, 7. दश धनु, 8. शत धनु, 9. प्रतिश्रुति, 10–सुमति।

It has been told that there have been ten Kulkars in ensuing ascending time cycle (Utsarapini Kaal) in the area of Airavat of this Jambu continent. These ten Kulkar are said as follows: 1. Vimal Vahan, 2. Simankar, 3. Simandhar, 4. Kshem Kar, 5. Kshem Dhar, 6. Dridh Dhanu, 7. Dash-Dhanu, 6. Shat-Dhanu 9. Prati-shruti, and 10. Sumati.

६६७–जंबूद्दीवे णं दीवे भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउवीसं तित्थगरा भविस्संति। तं जहा–

महापउमे सूरदेवे सूपासे य सयंपभे।
सवाणुभूई अरहा देवस्सुए य होक्खइ।।७४।।

उदए पेढालपुत्ते य पोट्टिले सत्तकित्ति य।
मुणिसुव्वए य अरहा सव्वभावविऊ जिणे।।७५।।

अममे णिक्कसाए य निप्पुलाए य निम्ममे।
चित्तउत्ते समाही य आगमिस्सेण होक्खइ।।७६।।

संवरे अणियट्टी य विजए विमले ति य।
देवोववाए अरहा अणंतविजए इ य।।७७।।

एए वुत्ता चउव्वीसं भरहे वासम्मि केवली।
आगमिस्सेण होक्खंति धम्मतित्थस्स देसगा।।७८।।

इसी जम्बूद्वीप में स्थित भारत वर्ष में आगामी उत्सर्पिणी काल में चौबीस तीर्थंकर होंगे। यथा–1. महापद्म, 2. सुरदेव, 3. सुपार्श्व, 4. स्वयम्प्रभ, 5. सर्वानुभूति, 6. देवश्रुत, 7. उदय, 8. पेढालपुत्र, 9. प्रोष्ठिल, 10. शत कीर्ति, 11. मुनिसुव्रत, 12. सर्वभावविद् 13. अमम, 14. निष्कषाय, 15. निष्पुलाक, 16. निर्मम, 17. चित्रगुप्त, 18. समाधिगुप्त, 19. संवर, 20. अनिवृत्ति, 21. विजय, 22. विमल, 23. देवोपपात, 24. अनन्त विजय। इन चौबीस तीर्थंकरों के विषय में कथन है कि ये तीर्थंकर भारतवर्ष में आगामी उत्सर्पिणी काल में धर्म तीर्थ की देशना करने वाले होंगे।।।74-78।।

There will be twenty four Ford-makers in Bharat Varsh situated in Jambu continent in the coming regenerated time cycle (Utasarpini Kaal) as : 1. Maha-Padam, 2. Sur-Dav, 3. Suparshava, 4. Swayamprabh, 5. Sarvanubhuti, 6. Dev-shrut, 7. Uday, 8. Pedhalputra, 9. Proshthil, 10. shat-Kirti, 11. Muni-Suvrat, 12. Sarvabhavakit, 13. Amam, 14. Nishkashya, 15. Niv-pulak, 16. Nirmum, 17. Chitragupt, 18. Samadhi-gupt, 19. Samvar, 20. Anivriti, 21. Vijay, 22. Vimal, 23. Devopapat, and 24. Anant Vijay. In reference to these twenty four Ford-makers it has been said that they would be the propounder of four fold religious Ford in Bharat Varsh in the ensuing Ascending time cycle (utsarapinikaal).

६६८–एएसिं णं चउव्वीसाए तित्थकराणं पुव्वभविया चउव्वीसं नामधेज्जा भविस्संति (होत्था।) तं जहा–

सेणिय सुपास उदए पोट्टिल्ल तह दढाऊ य।
कत्तिय संखे य तहा नंद सुनन्दे य सतए य।।७९।।
बोधव्वा देवई य सच्चइ तह वासुदेव बलदेवे।
रोहिणी सुलसा चेव तत्तो खलु रेवई चेव।।८०।।
तत्तो हवइ सयाली बोधव्वे खलु तहा भयाली य।
दीवायणे य कण्हे तत्तो खलु नारए चेव।।८१।।
अंबड दारुमडे य साई बुद्धे य होइ बोद्धव्वे।
भावी तित्थगराणं णामाइं पुव्वभवियाइं।।८२।।

इन भविष्यकालीन चौबीस तीर्थंकरों के पूर्वभव के चौबीस नाम क्रम से इस प्रकार हैं–1. श्रेणिक, 2. सुपार्श्व, 3. उदय, 4. प्रोष्ठिल अनगार, 5. दृढायु, 6. कार्तिक, 7. शंख, 8. नन्द, 9. सुनन्द, 10. शतक, 11. देवकी, 12. सात्यकि, 13. वासुदेव, 14. बलदेव, 15. रोहिणी, 16. सुलसा 17. रेवती, 18. शताली, 19. भयाली, 20. द्वीपायन, 21. नारद, 22. अंबड, 23. स्वाति, 24. बुद्ध। ये भावी तीर्थंकरों के पूर्वभव के नाम कहे गए हैं।।79-82।।

The names of the previous births of these futuristic twenty four Ford-makers are as follows respectively : 1. Shrenik, 2. Suparshava, 3. Uday, 4. Proshthil Anagar, 5. Dridhayu, 6. Kartik, 7. Shankh, 8. Nand, 9. Sunand, 10. Shatak, 11. Devaki, 12. Satyaki, 13. Vasudeva, 14. Baldeva, 15. Rohini, 16. Sulasa, 17. Revati, 18. Shatali, 19. Bhayali, 20. Dviyapan, 21. Narad, 22. Amband, 23. Swati and 24. Budh.

These are the names of previous births of the upcoming Tirthankars, it should be known.

६६९–एएसिं णं चउव्वीसाए तित्थगराणं चउव्वीसं पियरो भविस्संति, चउव्वीसं मायरो भविस्संति, चउव्वीसं पढमसीसा भविस्संति, चउव्वीसं पढमसिस्सणीओ भविस्संति, चउव्वीसं पढमभिक्खादायगा भविस्संति, चउव्वीसं चेइयरुक्खा भविस्संति।

उक्त चौबीस तीर्थंकरों के चौबीस पिता होंगे, चौबीस माताएं होंगी, चौबीस प्रथम शिष्य होंगे, चौबीस प्रथम शिष्याएं होंगी, चौबीस प्रथम भिक्षादाता होंगे और चौबीस चैत्यवृक्ष होंगे।

There would be twenty four fathers, twenty four mothers, twenty four chief disciples, twenty four chief female disciples, twenty four pioneer alms donor and twenty four chaitya trees of these above mentioned twenty four Ford-makers.

६७०–जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए बारस चक्कवट्टिणो भविस्संति। तं जहा–

भरहे य दीहदंते गूढदंते य सुद्धदंते य।
सिरिउत्ते सिरिभूई सिरिसोमे य सत्तमे।।८३।।

पउमे य महापउमे विमलवाहणे (लेतह) विपुलवाहणे चेव।
रिट्ठे बारसमे वुत्ते आगमिस्सा भरहाहिवा।।८४।।

इसी जम्बूद्वीप के भारतवर्ष में आगामी उत्सर्पिणी काल में बारह चक्रवर्ती का होना कहा गया है। यथा–1. भरत, 2. दीर्घदन्त, 3. गूढ़दन्त, 4. शुद्धदन्त, 5. श्री पुत्र, 6. श्री भूति, 7. श्री सोम, 8. पद्म, 9. महापद्म, 10. विमलवाहन, 11. विपुलवाहन, 12. रिष्ट। ये बारह चक्रवर्ती आगामी उत्सर्पिणी काल में भरत क्षेत्र के अधिपति यानि स्वामी होंगे।।83-84।।

It has been said that there will be twelve Supreme Lords (Chakaravarti) in coming Ascending time cycle (Utsarpini Kaal) in Bharat Varsh of Jambu continant as : 1. Bharat, 2. Dirghdanta, 3. Gudh-danta, 4. Shudha-danta, 5. Shreeputra, 6. Shree-bhuti, 7. Shree som, 8. Padam, 9. Maha-Padam, 10. Vimal-Vahan, 11. Vipul-Vahan, 12. Rishth. These twelve supreme lords (Chakarvarti) would be the rulers of Bharat area in coming ascending time cycle (Utsarapini Kaal).

६७१–एएसिं णं बारसण्हं चक्कवट्टीणं बारस पियरो, बारस मायरो भविस्संति, बारस इत्थीरयणा भविस्संति।

इन बारह चक्रवर्तियों के बारह पिता, बारह माता तथा बारह ही स्त्रीरत्न होंगे।

There will be twelve fathers, twelve mothers and even twelve consort jewels of these twelve supreme lords.

६७२–जंबुद्दीवे णं दीवे भारहे वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए नव बलदेव-वासुदेव-पियरो भविस्संति, नव वासुदेवमायरो भविस्संति, नव बलदेवमायरो भविस्संति, नव दसारमंडला भविस्संति। तं जहा–उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा ओयंसी तेयंसी। एवं सो चेव वण्णओ भाणियव्वो जाव नीलगपीतगवसणा दुवे दुवे राम-केसवा भायरो भविस्संति। तं जहा–

नंदे य नंदमित्ते दीहबाहू तहा महाबाहू।
अइबले महाबले बलभद्दे य सत्तमे।।८५।।
दुविट्ठू य तिवट्ठू य आगमिस्साण वण्हिणो।
जयंते विजए भद्दे सुप्पभे य सुदंसणे।।८६।।
आणंदे नंदणे पउमे संकरिसणे य अपच्छिमे।

इसी जम्बूद्वीप में स्थित भारतवर्ष में आगामी उत्सर्पिणी काल में नौ बलदेवों और नौ वासुदेवों के पिता, नौ वासुदेवों की माताएँ, नौ बलदेवों की माताएँ तथा नौ दशार-मंडल होंगे। वे उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, प्रधान पुरुष, ओजस्वी व तेजस्वी आदि पूर्वोक्त विशेषणों से युक्त होंगे। पूर्व की गाथाओं में जो दशार मण्डल का विस्तृत वर्णन किया है, वह सब यहाँ पर भी यावत् बलदेव नील वसन वाले और वासुदेव पीत वसन वाले होंगे। यहाँ तक ज्यों का त्यों कहना चाहिए। इस प्रकार भविष्य काल में दो-दो राम और केशव भाई होंगे। उनके नाम इस प्रकार होंगे–

1. नन्द, 2. नन्दमित्र, 3. दीर्घबाहु, 4. महाबाहु, 5. अतिबल, 6. महाबल, 7. बलभद्र, 8. द्विपृष्ठ 9. त्रिपृष्ठ। ये सभी आगामी उत्सर्पिणीकाल में नौ वृष्णी या वासुदेव होंगे। इसी प्रकार बलदेव के विषय में कहा गया है। जो नौ बलदेव आगामी उत्सर्पिणी काल में होंगे, उनके नाम इस प्रकार हैं–1. जयन्त, 2. विजय, 3. भद्र, 4. सुप्रभ, 5. सुदर्शन, 6. आनन्द, 7. नन्दन, 8. पद्म, 9. संकर्षण।।85-86।।

In the coming ascending time cycle (Utsarapini Kaal) there would be nine fathers of nine co-lords (Baldeva) and of nine lords (Vasudeva), nine mothers of co-lords, nine mothers of lords and nine Dashar Mandal in Bharat Varsh situated in Jambu continent. These excellent, moderate, principal persons, resplendent and brilliant etc. will be endowed with qualities mentioned earlier. The elaborate description of the Dashar-Mandal that has been mentioned in the earlier verses (gathas) that entire descriptions will be applicable for Baldeva (co-lords) and Vasudeva (Lords) of blue clothing and yellow clothing respectively in coming time cycle, even it should be taken as it is. Thus, there will be two brothers namely Ram and Vasudeva respectively in future. The names of these lords and co-lords will be as : 1. Nand, 2. Nand-Mitra, 3. Dirghbahu, 4. Mahabahu, 5. Atibala, 6. Mahabal, 7. Balbhadra, 8. Dviprishtha, 9. Triprishth. All these nine lords (Vasudeva) will be there in ensuing regenerated time cycle (Utsarpini Kaal). Such has been said regarding co-lords (Baldeva). The names of the co-lords are as follows who will be in coming ascending time cycle (Utasarpini Kaal) 1. Jayant, 2. Vijay, 3. Bhadra, 4. Suprabh, 5. Sudarshan, 6. Anand, 7. Nandan, 8. Padam, 9. Samkrishan.

६७३–एएसिं णं नवण्हं बलदेव-वासुदेवाणं पुव्वभविया णव नामधेज्जा भविस्संति, णव धम्मायरिया भविस्संति, नव नियाणभूमीओ भविस्संति, नव नियाणकारणा भविस्संति, नव पडिसत्तू भविस्संति। तं जहा–

तिलए य लोहजंघे वइरजंघे य केसरी पहराए।
अपराइए य भीमे महाभीमे य सुग्गीवे।।८७।।

एए खलु पडिसत्तू कित्तीपुरिसाण वासुदेवाणं।
सव्वे वि चक्कजोही हम्महिंति सचक्केहिं।।८८।।

इन नौ बलदेवों और वासुदेवों के पूर्वभव के नौ नाम होंगे, नौ धर्माचार्य होंगे, नौ निदान-भूमियाँ होंगी, नौ निदान-कारण होंगे तथा नौ प्रतिशत्रु होंगे। यथा–

1. तिलक 2. लोहजंघ, 3. वज्रजंघ, 4. केशरी, 5. प्रभराज, 6. अपराजित, 7. भीम, 8. महाभीम, 9. सुग्रीव। कीर्तिपुरुष वासुदेवों के ये नौ प्रतिशत्रु होंगे। ये सभी चक्रयोधी होंगे और युद्ध में अपने चक्रों से मारे जायेंगे।।87-88।।

These nine co-lords and lords (Baldeva and Vasudeva) have nine names of their previous births there will be nine preceptors, nine Nidan lands, nine reasons of Nidan and there will be nine counter-enemies as follows:—1. Tilak, 2. Lohjangh, 3. Vajrajangha, 4. Keshari, 5. Prabhraj, 6. Aprajit, 7. Bhim, 8. Mahabhima, 9. Sugreeva.

These above mentioned famous persons will be nine counter-enemies (Prati Vasudeva) of Lords (Vasudevas). These all will be the discus warrior and will get killed from their own discus.

६७४–जंबुद्दीवे [णं दीवे] एरवए वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउव्वीसं तित्थयरा भविस्संति। तं जहा–

सुमंगले य सिद्धत्थे णिव्वाणे य महाजसे।
धम्मज्झए य अरहा आगमिस्साण होक्खई।।८९।।

सिरिचंदे पुप्फकेऊ महाचंदे य केवली।
सुयसागरे य अरहा आगमिस्साण होक्खई।।९०।।

सिद्धत्थे पुण्णघोसे य महाघोसे य केवली।
सच्चसेणे य अरहा आगमिस्साण होक्खई।।९१।।

सूरसेणे य अरहा महासेणे य केवली।
सव्वाणंदे य अरहा देवउत्ते य होक्खई।।९२।।

सुपासे सुव्वए अरहा अरहे य सुकोसले।
अरहा अणंतविजए आगमिस्साण होक्खई।।९३।।

विमले उत्तरे अरहा अरहा य महाबले।
देवाणंदे य अरहा आगमिस्साण होक्खई।।९४।।

एए वुत्ता चउव्वीसं एरवयम्मि केवली।
आगमिस्साण होक्खंति धम्मतित्थस्स देसगा।।९५।।

इसी जम्बूद्वीप के ऐरावत वर्ष में आगामी उत्सर्पिणी काल में चौबीस तीर्थंकरों के होने का उल्लेख है। इन चौबीस तीर्थंकरों के नाम इस प्रकार हैं–1. सुमंगल, 2. सिद्धार्थ, 3. निर्वाण, 4. महायश, 5. धर्मध्वज, 6. श्रीचन्द्र, 7. पुष्पकेतु, 8. महाचन्द्र केवली, 9. श्रुतसागर अर्हन्, 10. सिद्धार्थ, 11. पूर्णघोष, 12. महाघोष केवली, 13. सत्यसेन अर्हन्, 14. सूरसेन अर्हन् 15. महासेन, केवली, 16. सर्वानन्द, 17. देवपुत्र अर्हन्, 18. सुपार्श्व, 19. सुव्रत अर्हन्, 20. सुकोशल अर्हन्, 21. अनन्तविजय अर्हन्, 22. विमल अर्हन् 23. महाबल अर्हत् और 24. देवानंद अर्हन्। आगामी उत्सर्पिणी काल में उपरोक्त चौबीस तीर्थंकर ऐरावत वर्ष में उत्पन्न होकर धर्म-तीर्थ की देशना करने वाले होंगे।।89-95।।

In the Airavat Varsh of this Jambu continent, in this coming ascending time cycle (Utsarpini Kaal), it has been described that there will be twenty four Fordmakers as follows: 1. Sumangal, 2. Siddharth, 3. Nirvana, 4. Mahayash,

5. Daramdhvaj, 6. Shree Chander, 7. Pushpaketu, 8. Maha Chander Kevli, 9. Shrut Sagar, 10. Sidharth, 11. Puran ghosha, 12. Maha Ghosha Kevali, 13. Satya Sen, 14. Sursen, 15. Mahasen, 16. Sarvanand, 17. Devputra, 18. Suparshava, 19. Suvart (Arihant), 20. Arihant Sukaushal, 21. Anant Vijay, 22. Arihant Vimal, 23. Arihant Mahabal, 24. Arihant Devanand. These above mentioned twenty four Ford-makers will be the propounder of religious ford after taking birth in Airavat Continent in coming ascending time cycle (Utsarapini Kaal).

६७५-[जंबुद्दीवे णं दीवे एरवए वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए] बारस चक्कवट्टिणो भविस्संति, बारस चक्कवट्टिपियरो भविस्संति, बारस मायरो भविस्संति, बारस इत्थीरयणा भविस्संति। नव बलदेव-वासुदेवपियरो भविस्संति, नव वासुदेवमायरो भविस्संति, नव बलदेवमायरो भविस्संति। नव दसारमंडला भविस्संति, उत्तिमा पुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा जाव दुवे दुवे राम-केसवा भायरो, भविस्संति, णव पडिसत्तू भविस्संति, नव पुव्वभवनामधेज्जा, णव धम्मायरिया, णव णियाणभूमीओ, णव णियाणकारणा भविस्संति, आयाए एरवए आगमिस्साए भाणियव्वा।

(इसी जम्बूद्वीप के ऐरावत वर्ष में आगामी उत्सर्पिणी काल में) बारह चक्रवर्ती होंगे, बारह चक्रवर्तियों के पिता होंगे, बारह चक्रवर्तियों की बारह माताएँ होंगी, उनके बारह स्त्रीरत्न होंगे। नौ दशार मंडल होंगे, जो उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, प्रधान पुरुष यावत् सर्वाधिक राजतेज रूप लक्ष्मी से देदीप्यमान दो-दो बलदेव-वासुदेव (राम-केशव) भाई-भाई होंगे। उन बलदेवों-वासुदेवों के नौ प्रतिशत्रु होंगे, उनके नौ पूर्वभव के नाम होंगे, उनके नौ धर्माचार्य होंगे, उनकी नौ निदान भूमियां होंगी, निदान के नौ कारण होंगे। इसी प्रकार से आगामी उत्सर्पिणी काल में ऐरावत क्षेत्र में उत्पन्न होने वाले बलदेव आदि का मुक्ति-गमन, स्वर्ग से आगमन मनुष्यों में उत्पत्ति और मुक्ति का भी कथन करना चाहिए।

In the ensuing Ascending Time Cycle in Airavat Varsh of Jambu continent there will be twelve supreme-lords (Chakravarti), twelve fathers of these supreme lords, twelve mothers, twelve consort jewels, nine dashar-mandal. These superior, moderate and principal persons resplendent with Kingdom's lustreous wealth will be two co-lords and lords (Baldeva and Vasudeva) Ram-kesheva as brothers. There were nine names of all these co-lords and lords of their previous births. There will be nine perceptors (Dharma-Acharya), nine Nidan Lands, the nine reasons of these nine Nidan. In the same way the description of attaining the liberation, arrival from heaven, reincarnation as human beings and salvation of these nine co-lords (Baldeva) who will take birth in the area of Airavat of this Jambu continent in the coming Ascending Time Cycle (Utsarpini Kaal) should be said.

६७६–एवं दोसु वि आगमिस्साए भाणियव्वा।

इसी प्रकार भरत और ऐरावत इन दोनों क्षेत्रों में आगामी उत्सर्पिणी काल में होने वाले वासुदेव आदि का कथन करना चाहिए।

In the same manner the narration of the Lords (Vasudeva) of Bharat and Airavat of both the regions, who will take birth in coming Ascending Time Cycle (Utsarapini Kaal) should be made.

६७७–इच्चेयं एवमाहिज्जति। तं जहा–कुलगरवंसेइ य, एवं तित्थयरवंसेइ य, चक्कवट्टिवंसेइ य, दसारवंसेइ वा, गणधरवंसेइ य, इसिवंसेइ य, जइवंसेइ य, मुणिवंसेइ य, सुएइ वा, सुअंगेइ वा, सुयसमासेइ वा, सुयखंधेइ वा, समवाएइ वा, संखेइ वा, समत्तमंगमक्खायं अज्झयणं, ति बेमि।

इस प्रकार यह अधिकृत समवायांग सूत्र अनेक प्रकार के भावों और पदार्थों का वर्णन करने के रूप में कहा गया है। उदाहरणार्थ–इसमें कुलकरों के वंशों का वर्णन किया गया है। इसी प्रकार तीर्थंकरों के वंशों का, चक्रवर्तियों के वंशों का, दशार-मंडलों का, गणधरों के वंशों का, ऋषियों के वंशों का, यतियों के वंशों का, और मुनियों के वंशों का भी वर्णन किया गया है। परोक्षरूप से त्रिकालवर्ती समस्त अर्थों का परिज्ञान कराने से यह श्रुतज्ञान है, श्रुतरूप प्रवचन-पुरुष का अंग होने से यह श्रुताङ्ग है, इसमें समस्त सूत्रों का अर्थ संक्षेप से कहा गया है, अतः यह श्रुत समास है, श्रुत का समुदाय रूप वर्णन करने से यह 'श्रुतस्कन्ध' है, समस्त जीवादि पदार्थों का समुदायरूप कथन करने से यह 'संख्या' नाम से भी कहा जाता है। इसमें आचारादि अंगों के समान श्रुतस्कन्ध आदि का विभाग न होने से यह अंग 'समस्त' अर्थात् परिपूर्ण अंग कहलाता है। तथा इसमें उद्देश आदि का विभाग न होने से इसे 'अध्ययन' भी कहते हैं। इस प्रकार श्री सुधर्मा स्वामी जम्बू स्वामी को लक्ष्य करके कहते हैं कि इस अंग को भगवान् महावीर के समीप जैसा मैंने सुना, उसी प्रकार से मैंने तुम्हें कहा है।

Thus, this authentic Samvayanga Sutra has been said in the mode of narrating many sorts of dispositions and objects. For example, the description of Kulkar has been made in it. In the same way the dynasty of the Ford-makers, the family succession of supreme lords, the clan of the head of ascetic groups (gandhar), Dashar-Mandal, sages, yati and the clan of monks have been narrated. By making it possible to access the knowledge of the entire conclusions of all the three (Kaal) times indirectly, it is Shrutgyan, being the canon in the form of shrut of omniscient it is called Shrutanga. The conclusions of all the sutras have been narrated briefly in Samvayanga Sutra. Therefore, this Sutra is a combination. By narrating the Sutras in collective form, it is called Shrut-Skand. By narrating the entire living beings and a matters in collection

form it has also been called in the name of 'Number' (Sankhya). There is no division of this sutra in Sutraskand as of Acharanga etc. the Samvayanga Sutra is said joint into a single unit and complete. And being not divided into topics (Udeshan) it is also called "Adhyayan". Thus, Shri Sudharma Swamy says Jambu to Swamy that he has listened this canon near to lord Mahavira the same he has narrated him.

।। समवायाङ्ग सूत्र समाप्त ।।

|| The End of Samvayanga Sutra ||

विश्व में पहली बार जैन साहित्य के इतिहास में एक नये ज्ञान युग का शुभारम्भ

(जैन आगम, हिन्दी एवं अंग्रेजी भावार्थ और विवेचन के साथ। शास्त्र के भावों को उद्घाटित करने वाले बहुरंगे चित्रों सहित)

1. **सचित्र उत्तराध्ययन सूत्र** **मूल्य 500/-**

भगवान महावीर की अन्तिम वाणी। आदर्श जीवन विज्ञान तथा तत्त्वज्ञान से युक्त मोक्षमार्ग के सम्पूर्ण अंगों का सारपूर्ण वर्णन। एक ही सूत्र में सम्पूर्ण जैन आचार, दर्शन और सिद्धान्तों का समग्र सद्बोध।

2. **सचित्र दशवैकालिक सूत्र** **मूल्य 500/-**

जैन श्रमण की अहिंसा व यतनायुक्त आचार संहिता। जीवन में पद-पद पर काम आने वाले विवेकयुक्त, संयत व्यवहार, भोजन, भाषा, विनय आदि की मार्गदर्शक सूचनाएँ। आचार विधि को रंगीन चित्रों के माध्यम से आकर्षक और सुबोध बनाया गया है।

3. **सचित्र नन्दी सूत्र** **मूल्य 600/-**

मतिज्ञान–श्रुतज्ञान आदि पाँचों ज्ञानों का विविध उदाहरणों सहित विस्तृत वर्णन।

4. **सचित्र अनुयोगद्वार सूत्र (भाग 1, 2)** **मूल्य 1, 200/-**

यह शास्त्र जैनदर्शन और तत्वज्ञान को समझने की कुंजी है। नय, निक्षेप, प्रमाण, जैसे दार्शनिक विषयों के साथ ही गणित, ज्योतिष, संगीतशास्त्र, काव्यशास्त्र, प्राचीन लिपि, नाप-तौल आदि सैकड़ों विषयों का वर्णन है। यह सूत्र गम्भीर भी है और बड़ा भी है। अतः दो भागों में प्रकाशित किया गया है।

5. **सचित्र आचारांग सूत्र (भाग 1, 2)** **मूल्य 1,000/-**

यह ग्यारह अंगों में प्रथम अंग है। भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित अहिंसा, सम्यक्त्व, संयम, तितिक्षा आदि आधारभूत तत्वों का बहुत ही सुन्दर वर्णन है। भगवान महावीर का जीवन-चरित्र,

उनकी छद्मस्थ चर्या का आँखों देखा वर्णन तथा जैन श्रमण का आचार-विचार दूसरे भाग में है। दोनों भाग विविध ऐतिहासिक व सांस्कृतिक चित्रों से युक्त हैं।

6. सचित्र स्थानांग सूत्र (भाग 1, 2) **मूल्य 1, 200/-**

यह चौथा अंग सूत्र है। अपनी खास संख्या प्रधान शैली में संकलित यह शास्त्र ज्ञान, विज्ञान, ज्योतिष, भूगोल, गणित, इतिहास, नीति, आचार, मनोविज्ञान, पुरुष-परीक्षा आदि सैकड़ों प्रकार के विषयों का ज्ञान देने वाला बहुत ही विशालकाय शास्त्र है। भावार्थ और विवेचन के कारण प्रत्येक पाठक के लिए समझने में सरल और ज्ञानवर्धक है।

7. सचित्र ज्ञाताधर्मकथा सूत्र (भाग 1, 2) **मूल्य 1, 000/-**

भगवान महावीर द्वारा प्रवचनों में प्रयुक्त धर्मकथाएँ, उद्‌बोधक, रूपक, दृष्टान्त आदि जिनके माध्यम से तत्त्वज्ञान सहज ही ग्राह्य हो गया है। विविध रोचक रंगीन चित्रों से युक्त। दो भागों में सम्पूर्ण आगम।

8. सचित्र उपासकदशा एवं अनुत्तरौपपातिकदशा सूत्र **मूल्य 600/-**

सप्तम अंग उपासकदशा में भगवान महावीर के प्रमुख 10 श्रावकों का जीवन-चरित्र तथा उनके श्रावक धर्म का रोचक वर्णन है। नवम अंग अनुत्तरौपपातिकदशा में उत्कृष्ट तपः साधना करने वाले 33 श्रमणों की तप ध्यान-साधना का रोमांचक वर्णन है। भावों को स्पष्ट करने वाले कलात्मक रंगीन चित्रों सहित।

9. सचित्र निरयावलिका एवं विपाक सूत्र मूल्य 600/-

निरयावलिका में पाँच उपांग हैं। भगवान महावीर के परम भक्त राजा कूणिक के जन्म आदि का वर्णन तथा वैशाली गणतंत्राध्यक्ष चेटक के साथ हुए महाशिलाकंटक युद्ध का रोमांचक चित्रण तथा भगवान अरिष्टनेमि एवं भगवान पार्श्वनाथ के शासन में दीक्षित अनेक श्रमण-श्रमणियों का चरित्र इनमें है।

विपाक सूत्र में अशुभ कर्मों के अत्यन्त कटु फल का वर्णन है, जिसे सुनते ही हृदय द्रवित हो जाता है, तथा सुखविपाक में दान, तप आदि शुभ कर्मों के महान् सुखदायी पुण्य फलों का मुँह बोलता वर्णन है।

भावपूर्ण रोचक कलापूर्ण चित्रों के साथ

10. सचित्र अन्तकृद्‌दशा सूत्र **मूल्य 500/-**

आठवें अंग अन्तकृद्‌दशा सूत्र में मोक्षगामी 90 महान् आत्म-साधक श्रमण-श्रमणियों के तपोमय साधना जीवन का प्रेरक वर्णन है। यह सूत्र पर्युषण में विशेष रूप में पठनीय है। विविध चित्र व तपों के चित्रों से समझने में सरल सुबोध है।

11. सचित्र औपपातिक सूत्र **मूल्य 600/-**

यह प्रथम उपांग है। इसमें राजा कूणिक का भगवान महावीर की वन्दनार्थ प्रस्थान, दर्शन-यात्रा तथा भगवान की धर्मदेशना, धर्म प्ररूपणा आदि विषयों का बहुत ही विस्तृत लालित्ययुक्त वर्णन है। इसी में अम्बड़ परिव्राजक आदि अनेक परिव्राजकों की तपः साधना का वर्णन भी है।

12. सचित्र रायपसेणिय सूत्र **मूल्य 600/-**

यह द्वितीय उपांग है। धर्मद्वेषी प्रदेशी राजा को धर्मबोध देकर धार्मिक बनाने वाले ज्ञानी आचार्य केशीकुमार श्रमण के साथ आत्मा, परलोक, पुनर्जन्म आदि विषयों पर हुई अध्यात्म-चर्चा प्रत्येक जिज्ञासु के लिए पठनीय ज्ञानवर्द्धक है। आत्मा और शरीर की भिन्नता समझाने वाले उदाहरणों के चित्र भी बोधप्रद हैं।

13. सचित्र कल्पसूत्र **मूल्य 600/-**

कल्पसूत्र का पठन, पर्युषण में विशेष रूप में होता है। इसमें 24 तीर्थंकरों का जीवन-चरित्र है। साथ ही भगवान महावीर का विस्तृत जीवन-चरित्र, श्रमण समाचारी तथा स्थविरावली का वर्णन है। 24 तीर्थंकरों के जीवन से सम्बन्धित सुरम्य चित्रों के कारण सभी के लिए आकर्षक उपयोगी है।

14. सचित्र छेद सूत्र (दशा-कल्प-व्यवहार) **मूल्य 600/-**

आचार-शुद्धि के लिए जिन आगमों में विशेष विधान है, उन्हें 'छेद सूत्र' कहा गया। है छेद सूत्रों में आचार-शुद्धि के सूक्ष्म से सूक्ष्म नियमों का वर्णन है। चार छेद सूत्रों में दशाश्रुतस्कन्ध, बृहत्कल्प तथा व्यवहार-ये तीन छेद सूत्र सभी श्रमण-श्रमणियों के लिए विशेष पठनीय हैं। प्रस्तुत भाग में तीनों छेद सूत्रों का भाष्य आदि के आधार पर विवेचन है। यह अंग्रेजी अनुवाद तथा 15 रंगीन चित्रों सहित है।

15. सचित्र भगवती सूत्र (भाग 1, 2, 3) **मूल्य 1800/-**

पंचम अंग व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र 'भगवती' के नाम से अधिक प्रसिद्ध है। इसमें जीव, द्रव्य, पुद्गल, परमाणु, लोक आदि चारों अनुयोगों से सम्बन्धित हजारों प्रश्नोत्तर हैं। यह विशाल आगम जैन तत्त्व विद्या का महासागर है। संक्षिप्त और सुबोध अनुवाद व विवेचन के साथ यह आगम लगभग 6 भाग में पूर्ण होने की सम्भावना है। प्रथम भाग 1 से 4 शतक तक तथा 15 रंगीन चित्रों सहित प्रकाशित है। द्वितीय भाग में 5 से 7 शतक सम्पूर्ण तथा 9वें शतक का प्रथम उद्देशक लिया गया है। इस भाग में 15 रंगीन चित्र लिये गये हैं। तृतीय भाग में आठवें शतक के द्वितीय उद्देशक से नवें शतक तक सम्पूर्ण लिया गया है। साथ ही यह विषय को स्पष्ट करने वाले 22 रंगीन भाव पूर्ण चित्रों से युक्त है।

16. सचित्र जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र **मूल्य 600/-**

यह छठा उपांग है। इस सूत्र का मुख्य विषय जम्बूद्वीप का विस्तृत वर्णन है। जम्बूद्वीप में आये

मानव क्षेत्र, पर्वत, नदियाँ, महाविदेह क्षेत्र, मेरु पर्वत तथा मेरु पर्वत की प्रदक्षिणा करते सूर्य-चन्द्र आदि ग्रह नक्षत्र, अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी आदि के विस्तृत वर्णन के साथ ही चौदह कुलकर, प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का चरित्र, सम्राट् भरत चक्रवर्ती की षट्खण्ड विजय आदि अनेक विषयों का वर्णन भी इस सूत्र में आता है। इसमें दिये रंगीन चित्र जम्बूद्वीप की भौगोलिक स्थिति, सूर्य-चन्द्र आदि ग्रहों की गति समझने में काफी उपयोगी सिद्ध होंगे। यह सूत्र जैन, भूगोल, खगोल और इतिहास का ज्ञानकोष है।

17. सचित्र प्रश्नव्याकरण सूत्र **मूल्य 600/-**

प्रश्नव्याकरण अर्थात् प्रश्नों का व्याकरण, समाधान, उत्तर। मानव मन में सदा से यह प्रश्न उठता रहा है कि राग-द्वेष जनित वे कौन–से भंयकर विकार हैं जो आत्मा को मलिन करके दुर्गति में ले जाते हैं और इनसे कैसे बचा जाए? इन प्रश्नों के समाधान स्वरूप प्रश्नव्याकरण सूत्र में इनका विस्तृत वर्णन किया गया है। इन्हें आगम की भाषा में आश्रव कहते हैं। ये आश्रव हैं–हिंसा, असत्य , चौर्य, अब्रह्मचर्य और परिग्रह। इन आश्रवों का स्वरूप और इनसे होने वाले दुःखों को इस सूत्र में भलीभाँति समझाया गया है।

साथ ही इन पाँच आश्रवरूपी शत्रुओं से बचने हेतु अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह–ये पाँच संवर बताये गये हैं। संवर से भावित आत्मा, राग-द्वेष जनित विकारों से दूर रहती है। आश्रव–संवर वर्णन में ही समग्र जिन प्रवचन का सार आ जाता है।

इस प्रकार 23 जिल्दों में 24 आगम तथा कल्पसूत्र प्रकाशित हो चुके हैं। प्राकृत अथवा हिन्दी का साधारण ज्ञान रखने वाले व्यक्ति भी अंग्रेजी माध्यम से जैनशास्त्रों का भाव, उस समय की आचार-विचार प्रणाली आदि को अच्छी प्रकार से समझ सकते हैं। अंग्रेजी शब्द कोष भी दिया गया है। पुस्तकालयों, ज्ञान–भण्डारों तथा संत-सतियों, स्वाध्यायियों के लिए विशेष रूप से संग्रह करने योग्य है।

इस आगममाला के प्रकाशन में परम श्रद्धेय उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक गुरुदेव भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म. की अत्यन्त बलवती प्रेरणा रही है। उनके शिष्यरत्न जैन शासन दिवाकर आगमज्ञाता उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक श्री अमर मुनि जी म. द्वारा सम्पादित हैं, इनके सह–सम्पादक हैं प्रसिद्ध विद्वान् श्रीचन्द सुराना। अंग्रेजी अनुवादकर्त्ता हैं श्री सुरेन्द्र बोथरा तथा सुश्रावक श्री राजकुमार जी जैन।

○○○

IN THE HISTORY OF JAIN LITERATURE BEGINNING OF A NEW ERA OF KNOWLEDGE FOR THE FIRST TIME IN THE WORLD

(Jain Agams published with free flowing translation in Hind and English Also included are multicoloured illustrations vividly exemplifying various themes contained in scriptures)

1. **Illustrated Uttaradhyayan Sutra** **Price Rs. 500/-**

   The last sermon of Bhagavan Mahavir. Essence of the ideal way of life and path of liberation based on philosophical knowledge contained in all Angas. The pious discoures encapsulating complete Jain conduct, philosophy and principles.

2. **Illustrated Dashavaikalik Sutra** **Price Rs. 500/-**

   The Simple rule book of ahimsa and caution based Shraman conduct rendered vividly with the help of multicoloured illustrations. Useful at every step in life, even of common man, as a guide book of good behaviour, balanced conduct and norms of etiquette, food and speech.

3. **Illustrated Nandi Sutra** **Price Rs. 600/-**

   All enveloping discussion of the five facts of knowledge including Matijnana and Shrut-jnana.

4. **Illustrated Anuyogadvar Sutra (Parts 1 and 2)** **Price Rs. 1,200/-**

   This scripture is the key to understanding Jain philosophy and metaphysics. Besides philosophical topics like Naya, Nikshep and Praman it contains discussion about hundreds of other subjects including mathematics, astrology, music, poetics, ancient scripts and weights and measures. The complexity and volume of this could be covered only in two volumes.

5. **Illustrated Acharanga Sutra (Parts 1 and 2)** **Price Rs. 1,000/-**

   This is the first among the eleven Angas. It contains lucid description of ahimsa, samyaktva, samyam, titiksha and other fundamentals propagated by Bhagavan Mahavir. Eye-witness-like description of the life of Bhagavan Mahavir and his pre-omniscience praxis as well as details about ascetic conduct and praxis form the second part. Both parts contain multi-coloured illustrations on a variety of historical and cultural themes.

6. **Illustrated Sthananga Sutra (Parts 1 and 2)** **Price Rs. 1,200/-**

This is the fourth Anga Sutra. Compiled in its unique numerical placement style, this scripture is a voluminous work containing information about scriptural knowledge, science, astrology, geography, mathematics, history, ethics, conduct, psychology, judging man and hundreds of other topics. The free flowing translation and elaboration make the contents easy to understand and edifying even for common readers.

7. **Illustrated Jnata Dharma Katha Sutra (Parts 1 and 2)** **Price Rs. 1,000/-**

Famous inspiring and enlightening religious tales, allegories and incidents told by Bhagavan Mahavir presented with attractive colourful illustrations. This works makes the abstract philosophical principles easy to understand. This is the sixth Anga complete in two volumes.

8. **Illustrated Upasak Dasha and Anuttaraupap -atik Dasha Sutra** **Price Rs. 500/-**

This book contains the seventh and the ninth Angas. The seventh Anga, Upasak Dasha, contains the stories of life of ten prominent Shravak disciples of Bhagavan Mahavir with a special emphasis on their religious conduct. The ninth Anga Anuttaraupapatik Dasha contains thrilling description of the lofty austerities and meditation done by thirty three specific ascetics. With colourful illustrations.

9. **Illustrated Niryavalika and Vipaak Sutra** **Price Rs. 600/-**

Niryavalika has five Upangas that contain the story of the birth of king Kunik, a devout disciple of Bhagavan Mahavir. This also contains the thrilling and illustrated description of the famous Mahashilakantak war between Kunik and Chetak, the president of the republic of Vaishali. Besides these it also has life-stories of many Shramans and Shramanis of the lineage of Bhagavan Parshva Naath.

Vipaak Sutra contains the description of the extremely bitter fruits of ignoble deeds. This touching description inspires one towards noble deeds like charity and austerities the fruits of which have been lucidly described in its second section titled Sukha-vipaak. The colourful artistic illustrations add to the attraction.

10. **Illustrated Antakriddasha Sutra** **Price Rs. 500/-**

This eighth Anga contains the inspiring stories of the spiritual pursuits of ninety great men destined to be liberated. This Sutra is specially read during the Paryushan period. The illustrations related to austerities are specially informative.

11. **Illustrated Aupapatik Sutra** **Price Rs. 600/-**

This the first Upanga. This contains lucid and poetic description of numerous topics including King Kunik's preparations to go to pay homage to Bhagavan Mahavir,

Bhagavan's sermon and establishment of the religious order. This also contains the description of austerities obseved by Ambad and many other Parivrajaks.

12. Illustrated Raipaseniya Sutra **Price Rs. 600/-**

This is the third Upanga. It provides an interesting and edifying reading of the discussion between Acharya Keshi Kumar Shraman and the antireligious king Pradeshi on topics like soul, next life, and rebirth. This dialogue turned him into a gteat religionist. The illustrations of the examples showing the difference between soul and body are also instructive.

13. Illustrated Kalpa Sutra **Price Rs. 600/-**

Kalpa Sutra is widely read and recited during the Paryushan festival. It contains stories of life of 24 Tirthankars with more details about Bhagavan Mahavir's life. It also contains the disciple lineage of Bhagavan Mahavir and detailed ascetic praxis. The illustration connected with the 24 Tirthankars add to its attraction as well as utility.

14. Illustrated Chheda Sutra **Price Rs. 600/-**

The Agams that contain special procedures for purity of conduct are called Chheda Sutra.These Sutras enumerate subtle rules for purity of conduct. Of the four Chheda Sutras three should be specially read by all asectics-Dashashrut-skandh, Brihatkalpa and Vyavahar. This edition contains these three Chhed Sutras with elaboration based on commentaries (Bhashya) and other works. It also includes English translation and 15 multicolour illustrations.

15. Illustrated Bhagavati Sutra (Parts 1,2 & 3) **Price Rs. 1800/-**

Vyakhyaprajnapti, the fifth Anga, is popularly Known as Bhagavati. It contains thousands of question and answers on various topics from four Anuyogas, Such as soul, entities, matter, ultimate particles and universe. This voluminous Agam is an ocean of Jain metaphysics. With simple translation and brief elaboration it is expected to be completed in six volumes. The first volume contains one to four Shataks and 15 illustrations. The second volume contains five to seven Shataks complete and first Uddeshak of the eighth Shatak. As usual 15 colourful illustrations have also been included. The third volume contains second Uddeshak of the eighth Shatak and complete ninth Shatak. 22 colourful illustrations have also been included. These will make the complex topics simple and easy to understand. This is probably for the first time that an English translation of this Agam is being published.

16. Illustrated Jambudveep Prajnapti Sutra **Price Rs. 600/-**

This is the sixth Upanga. The central theme of this Sutra is detailed description of Jambudveep. The list of topics discussed in this include inhabited areas of Jambudveep

continent, mountains, rivers, Mahavideh area, Meru mountain, the sun, the moon, planets, and constellations moving around the Meru; regressive and progressive cycles of time; people like the fourteen Kulakars, the first Tirthankar Bhagavan Risabhadeva; and incidents like the conquest of the six division of the Bharat area. The colourful illustrations included in this volume will be helpful in understanding the geographical conditions of Jambudveep as well as the movement of the sun, the moon and planets. The readers will find the beautiful multicoloured illustrations of incidents from Bhagavan Risabhadeva's life very lively. This Sutra is a compendium of Jain geography, cosmology and history.

17. Illustrated Prashnavyakaran Sutra **Price Rs. 600/-**

Prashnavyakaran means the grammer of questions, solutions and answers. Human mind is always faced with the question that what are those terrible perversions caused by attachment and aversion that tarnish the soul and push it to a tormenting rebirth, and how to avoid them? In order to answer these questions Prashnavyakaran Sutra starts by giving detailed description of these perversions. In Agamic terms they are called Aashravas. They are-violence, falsity, stealing, non-celibacy and covetousness. This Sutra vividly explains the definitions of these Aashravas and the miseries caused by them.

In order to protect oneself from these five Aashravas, the tormenters of mind, five Samvars have been defined. They are-Ahimsa, truth, nonstealing, celibacy and non-covetousness. A soul energized by Samvar remains free of the perversions caused by attachment and aversion. The descriptions of Aashrava and Samvar encapsulate the gist of the whole sermon of the Jina.

- Till date 24 Agams (including three parts of Bhagavati) and Kalpa Sutra have been published in 23 books. The English translation makes it possible for those with passing knowledge of Prakrit and Hindi to understand the content of Jain Agams including the religious practices as prevalent in ancient times. Also included in some of these editions are glossaries of Jain terms with their meaning in English.
- Due to its demand by libraries, Jnana Bhandars, ascetics and lay readers this unique series may soon go out of print.
- The publication of this Agam series has been inspired by Uttar Bharatiya Pravartak Gurudev Bhandari Shri Padmachandra Ji M.S. Its editor is his able disciple Uttar Bharatiya Pravartak Shri Amar Muni Ji Maharaj. His team includes renowned scholar Shri Shrichand Surana as associate editor, Shri Surendra Bothara and Sushravak Shri Raj Kumar Jain, as English translators.

○○○

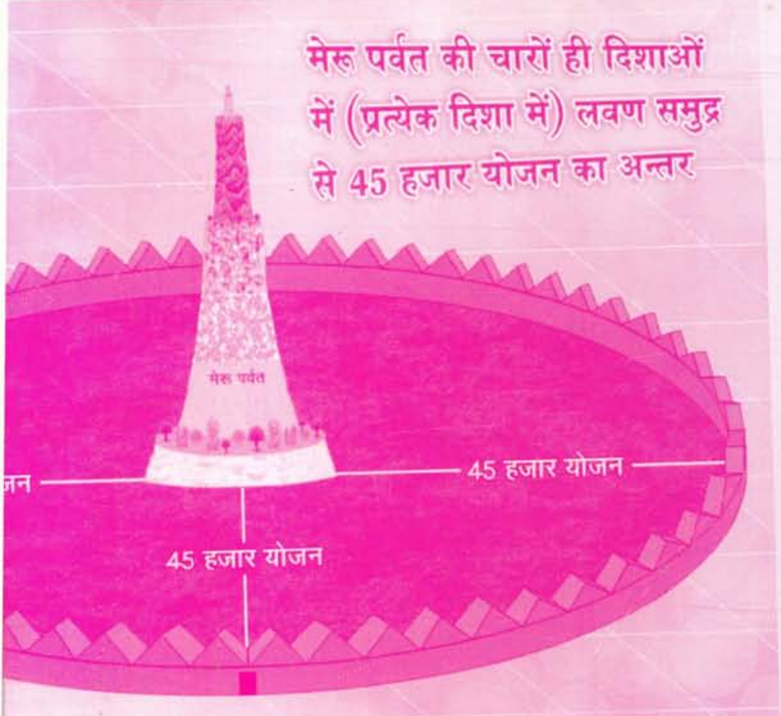

...वायाङ्ग सूत्र

श्रुत आचार्य प्रवर्तक श्री अमर मुनि

...ATED

...VAYANG SUTRA

...Acharya Pravartak Shri Amar Muni

...योजन प्रमाण समय क्षेत्र की आकृति

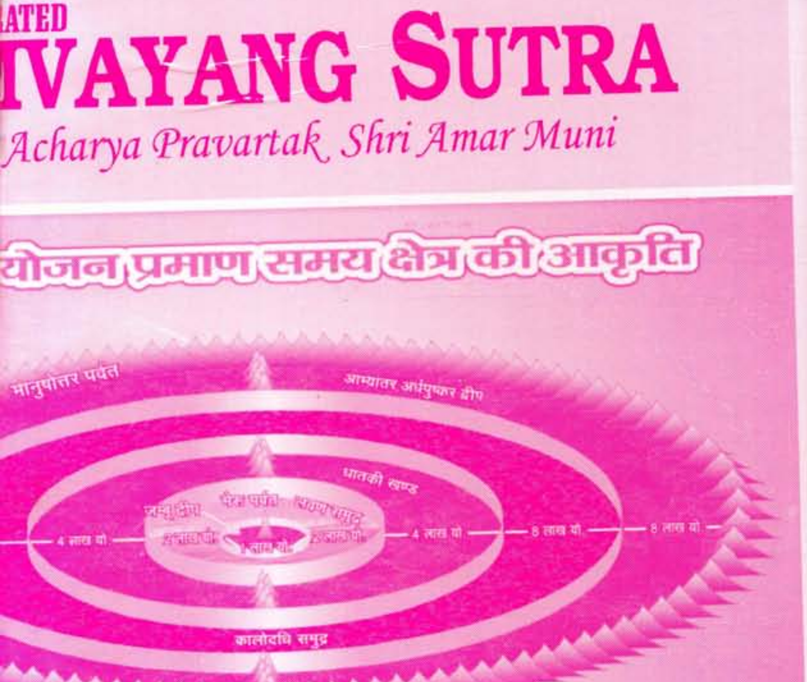

श्रुताचार्य प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी म.

प्रस्तुत सूत्र के सम्पादक श्रुताचार्य प्रवर्त्तक श्री अमरमुनि जी, श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रमणसंघ के एक तेजस्वी संत थें।

जिनवाणी के परम उपासक गुरुभक्त श्री अमरमुनि जी का जन्म वि.सं. 1993 भादवा सुदि 5 (सन् 1936), क्वेटा (बलूचिस्तान) के मल्होत्रा परिवार में हुआ।

11 वर्ष की लघुवय में आप जैनागम रत्नाकर आचार्य सम्राट् श्री आत्माराम जी महाराज की चरण-शरण में आये और आचार्य देव ने अपने प्रिय शिष्यानुशिष्य भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी महाराज को इस रत्न को तराशने / सँवारने का दायित्व सौंपा। गुरुदेव श्री भण्डारी जी महाराज ने अमर मुनि जी को सचमुच अमरता के पथ पर बढ़ा दिया। आपने संस्कृत-प्राकृत-आगम-व्याकरण-साहित्य आदि का अध्ययन करके एक ओजस्वी प्रवचनकार, तेजस्वी धर्म-प्रचारक तथा जैन आगम साहित्य के अध्येता और व्याख्याता के रूप में जैन समाज में प्रसिद्धि प्राप्त की।

आपश्री ने भगवती सूत्र (4 भाग), प्रश्नव्याकरण सूत्र, सूत्रकृतांग सूत्र (2 भाग) आदि आगमों की सुन्दर विस्तृत व्याख्याएँ की हैं।

Shrutacharya Pravartak Shri Amar Muni Ji M.

The editor-in-chief of this Sutra, was a brilliant ascetic affliated with Shri Vardhaman Sthanakvasi Jain Shraman Sangh.

A great worshiper of the tenets of Jina and a devotee of his Guru, Shri Amar Muni Ji was born in a Malhotra family of Queta (Baluchistan) on Bhadva Sudi 5th in the year 1993 V.

He took refuge with Jainagam Ratnakar Acharya Samrat Shri Atmaram Ji M. at an immature age of eleven years. Acharya Samrat entrusted his dear grand-disciple, Bhandari Shri Padmachandra Ji M. with the responsibility of cutting and polishing this raw gem. Gurudev Shri Bhandari Ji M. indeed, put Amar (immortal) on the path of immortality. He studied Sanskrit, Prakrit, Agams, Grammar and Literature to gain fame in the Jain society as an eloquent orator, an effective religions preacher and a scholar and interpreter of Jain Agam literature.

He has written nice and detailed commentaries of Bhagavati Sutra (in four parts), Prahsnavyakaran Surtra (in two parts), Sutrakritanga Sutra (in two parts) and some other Agams.

सचित्र आगम साहित्य

PUBLISHERS & DISTRIBUTORS :

PADAM PRAKASHAN

Padam Dham, Narela Mandi, Delhi-110040
President : Mahendra Jain 09810027225
E-mail : padamprakashan108@yahoo.com